फकत अरबी मतन

कुरआन मजीद

अरबी मतन

तर्जुमा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

एम० ए० (अलीग०)

1 सूरतुल्-फ़ातिहति 5

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 123 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन (1) अर्रह्मानिर्रहीम (2) मालिकि यौमिद्दीन (3) इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन (4) इह्दिनस्-सिरातल्-मुस्तक़ीम (5) सिरातल्लज़ी-न अन्अ़म्-त अ़लैहिम् (6) ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन (7) ❖

سورة ٢ الفاتحة ١

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

المنزل الاول

ع

منزل

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

2 सूरतुल् ब-क्-रति 87

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 20000 अक्षर, 6021 शब्द 286 आयतें और 40 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) ज़ालिकल्-किताबु ला रै-ब फ़ीहि हुदल्लिल्-मुत्तक़ीन (2) अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3) वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क व बिल्-आख़ि-रति हुम् यूक़िनून (4)

उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (6) ख़-तमल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व अ़ला सम्अिहिम् व अ़ला अब्सारिहिम् ग़िशा-वतुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (7) ❖

व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि व मा हुम् बिमुअ्मिनीन ✣ (8) युख़ादिअ़ूनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू, व मा यख़्दअ़ू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अ़ुरून (9) फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् फ़ज़ा-दहुमुल्लाहु म-रज़न् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्ज़िबून (10) व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून (11) अला इन्नहुम् हुमुल्- मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्अ़ुरून (12) व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आ-मनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु कमा आ-मनस्-सु-फ़हा-उ, अला इन्नहुम् हुमुस्-सु-फ़हा-उ व लाकिल्ला यअ़्लमून (13) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना म-अ़कुम् इन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िऊन (14) अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ़्महून (15) उला-इकल्लज़ीनश्त-रवुज़्-ज़ला-ल-त बिल्हुदा फ़मा रबिहत्-तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (16) म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौ-क़-द नारन् फ़-लम्मा अज़ा-अत् मा हौ-लहू ज़-हबल्लाहु बिनूरिहिम्

البقرة ٢ ٤ الم ١

أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ۝٥ إن الذين
كفروا سواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ۝٦ ختم
الله على قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة ولهم
عذاب عظيم ۝٧ ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم
الآخر وما هم بمؤمنين ۝٨ يخادعون الله والذين آمنوا وما
يخدعون إلا أنفسهم وما يشعرون ۝٩ في قلوبهم مرض
فزادهم الله مرضا ولهم عذاب أليم بما كانوا يكذبون ۝١٠
وإذا قيل لهم لا تفسدوا في الأرض قالوا إنما نحن مصلحون ۝١١
ألا إنهم هم المفسدون ولكن لا يشعرون ۝١٢ وإذا قيل لهم
آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما آمن السفهاء ألا إنهم
هم السفهاء ولكن لا يعلمون ۝١٣ وإذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا
وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم إنما نحن مستهزئون ۝١٤
الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون ۝١٥ أولئك
الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم وما كانوا
مهتدين ۝١٦ مثلهم كمثل الذي استوقد نارا فلما أضاءت
ما حوله ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون ۝١٧

منزل ١

❖ रु. 1/7/1 ✣ व. लाज़िम

व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (17) सम्मुम्- बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअून (18) औ क-सय्यिबिम्-मिनस्समा-इ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव्-व रअ्दुंव्-व बर्कुन्, यज्अलू-न असाबि-अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् मिनस्सवाअिक़ि ह-ज़रल्मौति वल्लाहु मुहीतुम्-बिल्काफ़िरीन (19) यकादुल्-बर्कु यख़्तफ़ु अब्सा-रहुम्, कुल्लमा अज़ा-अ लहुम् मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्ल-म अलैहिम् क़ामू, व लौ शा-अल्लाहु ल-ज़-ह-ब बिसम्अिहिम् व अब्सारिहिम्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (20) ❖

या अय्युहन्नासुअ्बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (21) अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्अर्-ज़ फ़िराशंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल् लकुम् फ़ला तज्अ़लू लिल्लाहि अन्दादंव्-व अन्तुम् तअ्लमून (22) व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसू-रतिम् मिम्-मिस्लिही वद्अू शु-हदाअकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (23) फ़-इल्लम तफ़्अ़लू व लन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु उअिद्दत् लिल्काफ़िरीन (24) व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्-न लहुम् जन्नातिन तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्-रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना

البقرة ۲ ۵ الم ۱

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْیٌ فَهُمْ لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۱۸﴾ اَوْ كَصَیِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ
فِیْهِ ظُلُمٰتٌ وَّ رَعْدٌ وَّ بَرْقٌ ۚ یَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ
مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَ اللّٰهُ مُحِیْطٌۢ بِالْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۹﴾
یَكَادُ الْبَرْقُ یَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَاۤ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا
فِیْهِ ۙۗ وَ اِذَاۤ اَظْلَمَ عَلَیْهِمْ قَامُوْا ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ
بِسَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۰﴾ ع
یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِیْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۲۱﴾ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ
الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾
وَ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ
مِّثْلِهٖ ۪ وَ ادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۳﴾
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَ لَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَ قُوْدُهَا
النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۴﴾ وَ بَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ
كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِیْ رُزِقْنَا

منزل ۱

मिन् क़ब्लु व उतू बिही मु-तशाबिहन्, व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मु-तह्ह-रतुंव्- व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (25) इन्नल्ला-ह ला यस्तह्यी अंय्यज़्रि-ब म-सलम्मा बअ़ू-ज़तन् फ़मा फ़ौ-क़हा, फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-यअ़्लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्, व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन् ✣ युज़िल्लु बिही कसीरंव्-व यह्दी बिही कसीरन्, व मा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिक़ीन (26) अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अ़ह्दल्लाहि मिम्-बअ़्दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि, उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (27) कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़-अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून (28) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न्, सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन्-न सब्-अ़ समावातिन्, व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (29) ❖

البقرة ٢ ٦ الٓمّٓ ١

من قبل واتوا به متشابها ولهم فيها ازواج مطهرة
وهم فيها خلدون ان الله لا يستحي ان يضرب مثلا
ما بعوضة فما فوقها فاما الذين امنوا فيعلمون انه
الحق من ربهم واما الذين كفروا فيقولون ماذا اراد الله
بهذا مثلا يضل به كثيرا ويهدي به كثيرا وما يضل
به الا الفسقين الذين ينقضون عهد الله من بعد
ميثاقه ويقطعون ما امر الله به ان يوصل ويفسدون
في الارض اولئك هم الخسرون كيف تكفرون بالله و
كنتم امواتا فاحياكم ثم يميتكم ثم يحييكم ثم اليه ترجعون
هو الذي خلق لكم ما في الارض جميعا ثم استوى الى
السماء فسوىهن سبع سموت وهو بكل شيء عليم واذ
قال ربك للملئكة اني جاعل في الارض خليفة قالوا
اتجعل فيها من يفسد فيها ويسفك الدماء ونحن نسبح
بحمدك ونقدس لك قال اني اعلم ما لا تعلمون وعلم
ادم الاسماء كلها ثم عرضهم على الملئكة فقال انبئوني
باسماء هؤلاء ان كنتم صدقين قالوا سبحنك لا علم لنا

منزل ١

व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़तन्, क़ालू अ-तज्अ़लु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क, क़ा-ल इन्नी अअ़्लमु मा ला तअ़्लमून (30) व अ़ल्ल-म आ-दमल्-अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्-मलाइ-कति फ़क़ा-ल अम्बिऊनी बिअस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् सादिक़ीन (31) क़ालू सुब्हा-न-क ला अ़िल्-म लना इल्ला मा

अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल्-हकीम **(32)** क़ा-ल या आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा-इहिम् फ़-लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल अलम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ्लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून **(33)** व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्लीस्, अबा वस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन **(34)** व क़ुल्ना या आ-दमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्-जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्- ज़ालिमीन **(35)** फ़-अज़ल्-लहुमश्- शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्र-जहुमा मिम्मा काना फ़ीही व कुल्-नह्बितू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन **(36)** फ़-त-लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ता-ब अ़लैहि, इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम **(37)** क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न् फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ़ हुदा-य फ़ला ख़ौफुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(38)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(39)** ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बि-अ़ह्दी ऊफ़ि बि-अ़ह्दिकुम् व इय्या-य फ़र्हबून **(40)** व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़ल्लिमा म-अ़कुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् बिही व ला तश्तरू बिआयाती स-मनन् क़लीलंव्-व

الٓمٓ ٢ البقرة

إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾ قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم
بِأَسْمَائِهِمْ ۖ فَلَمَّا أَنبَأَهُم بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي
أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ
تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ
أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ
وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ
الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾ فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي
الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا
فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي
أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ
فَارْهَبُونِ ﴿٤٠﴾ وَآمِنُوا بِمَا أَنزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ
كَافِرٍ بِهِ ۖ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا

इय्या-य फ़त्तक़ून (41) व ला तल्बिसुल्-हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्लमून (42) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्-कअू म-अर्राकिअीन (43) अ-तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्-किता-ब, अ-फ़ला तअ्क़िलून (44) वस्तअीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, व इन्नहा ल-कबी-रतुन् इल्ला अ़लल्-ख़ाशिअीन (45) अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम्-मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअून ◆ (46) ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मति-यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन (47) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्-नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ा-अ़तुंव्-व ला युअ्-ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव्-व ला हुम् युन्सरून (48) व इज़् नज्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमू-नकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (49) व इज़् फ़-रक़्ना

الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾ وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ
وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرّٰكِعِينَ ﴿٤٣﴾ أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ
تَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾ وَاسْتَعِينُوا
بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخٰشِعِينَ ﴿٤٥﴾ الَّذِينَ
يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلٰقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رٰجِعُونَ ﴿٤٦﴾ يٰبَنِي إِسْرٰٓءِيلَ
اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿٤٧﴾
وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِذْ
نَجَّيْنٰكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ
أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِنْ رَبِّكُمْ
عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنٰكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾ وَإِذْ وٰعَدْنَا مُوسٰى أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظٰلِمُونَ ﴿٥١﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ
وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ
إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوٓا إِلٰى بَارِئِكُمْ

बिकुमुल्-बह्-र फ़-अन्जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (50) व इज़् वाअ़द्ना मूसा अर्बअ़ी-न लै-लतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्- अिज्-ल मिम्-बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (51) सुम्-म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्-बअ्दि ज़ालि-क लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (52) व इज़् आतैना मूसल्-किता-ब वल्फ़ुरक़ा-न लअ़ल्लकुम् तह्तदून (53) व इज़् क़ा-ल मूसा

लिक़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम् अन्फ़ु-सकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्-अ़िज्-ल फ़तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अ़िन्-द बारिइकुम्, फ़ता-ब अ़लैकुम् इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम **(54)** व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नुअ्मि-न ल-क हत्ता नरल्ला-ह जह्-रतन् फ़-अ-ख़ज़त्कुमुसाअि-क़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून **(55)** सुम्-म बअ़स्नाकुम् मिम्-बअ़्दि मौतिकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(56)** व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(57)** व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू हाज़िहिल्-क़र्-य-त फ़कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् र-ग़दंव्-वद्ख़ुलुल्-बा-ब सुज्जदंव्-व क़ूलू हित्ततुन् नग़्फ़िर् लकुम ख़तायाकुम्, व स-नज़ीदुल् मुह्सिनीन **(58)** फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अन्ज़ल्ना अ़लल्लज़ी-न ज़-लमू रिज्ज़म्-मिनस्-समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(59)** ❖

الٓمّٓ ٩ البقرة ٢

فَاقْتُلُوٓا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ
حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَظَلَّلْنَا
عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ
شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطٰيٰكُمْ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ
السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ
وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ
نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ
الْاَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا

منزل ١

व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़-क़ुल्नज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र, फ़न्फ़-जरत् मिन्हुस्-नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(60)** व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नस्बि-र अ़ला तआमिंव्वाहिदिन् फ़द्अु लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु

मिम्-बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-सलिहा, क़ा-ल अ-तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी हु-व ख़ैरुन्, इह्बितू मिस्रन् फ़-इन्-न लकुम् मा सअल्तुम, व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्क-नतु व बाऊ बि-ग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि, ज़ालि-क बिअन्न-हुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्-नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ़्तदून (61) ❖

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल् -आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम वला हुम् यह्ज़नून (62) व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ़्ना फ़ौ-क़कुमुत्तू-र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (63) सुम्-म तवल्लैतुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (64) व लक़द् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ़्तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-दतन् ख़ासिईन (65) फ़-जअ़ल्नाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअ़ि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन (66) व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क़्-रतन्, क़ालू अ-तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन्, क़ा-ल अअ़ूज़ु बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (67) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य, क़ा-ल

الٓمّٓ ١   ١٠   البقرة ٢

قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِیْ هُوَ اَدْنٰی بِالَّذِیْ هُوَ خَیْرٌ اِهْبِطُوْا
مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَیْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ
اللّٰهِ وَیَقْتُلُوْنَ النَّبِیّٖنَ بِغَیْرِ الْحَقِّ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا
یَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِیْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰی وَ
الصّٰبِـِٕیْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ خُذُوْا مَاۤ اٰتَیْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾ ثُمَّ تَوَلَّیْتُمْ مِّنْ
بَعْدِ ذٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ
الْخٰسِرِیْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِیْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِی السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕیْنَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَیْنَ
یَدَیْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِیْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰی
لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ یَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً قَالُوْۤا اَتَتَّخِذُنَا
هُزُوًا قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِیْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ یُبَیِّنْ لَّنَا مَا هِیَ قَالَ اِنَّهٗ یَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا

ع ٧

منزل ١

इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला-फ़ारिजुवं-व ला बिक्रुन्, अ़वानुम् बै-न ज़ालि-क, फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून **(68)** क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा लौनुहा, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन् सफ़्रा-उ फ़ाक़िअुल् लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन **(69)** कालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य इन्नल् ब-क़-र तशाब-ह अ़लैना, व इन्ना इन्शा- अल्लाहु लमुह्तदून **(70)** क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल् ला ज़लूलुन् तसीरुल्-अर्-ज़ व ला तस्क़िल्-हर्-स मुसल्ल-मतुल्--लाशिय-त फ़ीहा, क़ालुल्आ-न जिअ्-त बिल्हक़्क़ि, फ़-ज़-बहूहा व मा कादू यफ़्अ़लून **(71)** ❖

व इज़् क़तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा, वल्लाहु मुख़्रिजुम्-मा कुन्तुम् तक्तुमून **(72)** फ़-क़ुल्नज़्रिबूहु बि-बअ्ज़िहा, कज़ालि-क युह्यिल्लाहुल्-मौता व युरीकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून **(73)** सुम्-म क़सत् क़ुलूबुकुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़हि-य कल्हिजा-रति औ अशद्दु क़स्वतन्, व इन्-न मिनल्-हिजारति लमा य-तफ़ज्जरु मिन्हुल्-अन्हारु, व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़-यख़्रुजु मिन्हुल्मा-उ, व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून **(74)** अ-फ़तत्मअ़ू-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मअ़ू-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्-बअ़्दि मा अ-क़लूहु व हुम् यअ्लमून **(75)** व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न

فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ۝٦٨
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ۝٦٩ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝٧٠ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ
تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا
الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝٧١ وَاِذْ
قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ
تَكْتُمُوْنَ ۝٧٢ فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْىِ اللّٰهُ
الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٧٣ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ
الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ
مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٧٤ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ
وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ
مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़ला बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् क़ालूं अतुहद्दिसू-नहुम् बिमा फ़-तहल्लाहु अ़लैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही अ़िन्-द रब्बिकुम, अ-फ़ला तअ्क़िलून (76) अ-व ला यअ्लमू-न अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्लिनून (77) व मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ्लमूनल् किता-ब इल्ला अमानिय्-य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून ● (78)

फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न यक्तुबूनल्-किता-ब बिऐदीहिम, सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़वैलुल्लहुम् मिम्मा क-तबत् ऐदीहिम व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (79) व क़ालू लन् तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ्दू-दतन्, क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि अ़हदन् फ़-लंय्-युख़्लिफ़ल्लाहु अ़ह्दहु अम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (80) बला मन् क-स-ब सय्यि-अतंव्-व अहातत् बिही ख़तीअतुहू फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्-नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (81) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (82) ❖

الٓمّٓ ١ ١٢ البقرة ٢

قَالُوٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ
بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ
وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ
ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ
مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ
قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ
اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً
وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ

منزل

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल ला तअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह, व बिल्वालिदैनि इह्सानंव्-व ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नंव्-व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त, सुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम्

मुअ्‌रिज़ून **(83)** व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् ला तस्फ़िकू-न दिमा-अकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फ़ु-सकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्ररतुम् व अन्तुम् तश्हदून **(84)** सुम्-म अन्तुम् हा-उला-इ तक़्तुलू-न अन्फ़ु-सकुम् व तुख़्रिजू-न फ़रीक़म् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम तज़ाहरू-न अ़लैहिम बिल्इस्मि वल्-अुद्‌वानि, व इंय्यअ्तूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु-व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़्राजुहुम, अ-फ़-तुअ्मिनू-न बिबअ्ज़िल्-किताबि व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन् फ़मा जज़ा-उ मंय्यफ्अ़लु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौमल्-क़ियामति युरद्दू-न इला अशद्दिल्-अ़ज़ाबि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून **(85)** उला-इकल्लज़ीनश्-त-र-वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्सरून **(86)** ❖

व लक़द् आतैना मूसल्-किता-ब व क़फ़्फ़ैना मिम्-बअ्दिही बिर्रुसुलि व आतैना ईसब्-न मर्‌यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, अ-फ़कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्तक्बर्तुम् फ़-फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून **(87)** व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् ल-अ़-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम फ़-क़लीलम्मा युअ्मिनून **(88)** व लम्मा जाअहुम् किताबुम् मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़हुम् व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू, फ़-लम्मा जा-अहुम् मा अ़-रफ़ू क-फ़रू

الٓمّٓ ١٣ البقرة٢

وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ
وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ
تَشْهَدُوْنَ ۝ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ
فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ
اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَآءُ
مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ بِمَا لَا تَهْوٰٓى
اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ۝ وَ
قَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَ
كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَآءَهُمْ

منزل

❖ रु. 10/4/10

बिही फ़-लअ्नतुल्लाहि अ़लल्-काफ़िरीन **(89)** बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फ़ु-सहुम् अंय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही फ़-बाऊ बि-ग़-ज़बिन् अ़ला ग़-ज़बिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन **(90)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अ़लैना व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू, व हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्-लिमा म-अ़हुम, क़ुल् फ़लि-म तक़्तुलू-न अम्बिया-अल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(91)** व लक़द् जाअकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अ़िज्-ल मिम्-बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून **(92)** व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ्ना फ़ौ-क़कुमुत्-तू-र, ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्-वस्मअू, क़ालू समिअ्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अ़िज्-ल बिकुफ़्रिहिम, क़ुल् बिअ्समा यअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(93)** क़ुल् इन् कानत् लकुमुद्-दारुल्-आख़िरतु अ़िन्दल्लाहि ख़ालि-सतम् मिन् दूनिन्नासि फ़-तमन्नवुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(94)** व लंय्य-तमन्नौहु अ-बदम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालिमीन **(95)** व ल-तजिदन्नहुम् अह्रसन्नासि अ़ला हयातिन्, व मिनल्लज़ी-न अश्रकू यवद्दु अ-हदुहुम् लौ युअम्मरु अल्-फ़ स-नतिन्, व मा हु-व बिमुज़ह्ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अंय्युअम्म-र, वल्लाहु बसीरुम् बिमा

مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ
اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ وَهُوَ
الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ
قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا
مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا
قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ
قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ
كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ
عَلٰى حَيٰوةٍ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ
سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ

यअ्मलून (96) ❖

क़ुल् मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहू नज़्ज़-लहू अ़ला क़ल्बि-क बि-इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन (97) मन् का-न अ़दुव्वल्-लिल्लाहि व मला-इ-कतिही व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़-इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्-लिल्काफ़िरीन (98) व लक़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्- बय्यिनातिन् व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल्-फ़ासिक़ून (99) अ-व कुल्लमा आ़-हदू अ़ह्दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम् मिन्हुम, बल् अक्सरुहुम् ला युअ्मिनून (100) व लम्मा जाअहुम् रसूलुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्-लिमा म-अ़हुम् न-ब-ज़ फ़रीक़ुम् मिनल्--लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ्लमून (101) वत्त-बअ़ू मा तत्लुश्-शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न व मा क-फ़-र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्सिह्-र, व मा उन्ज़ि-ल अ़लल् म-लकैनि बिबाबि-ल हारू-त व मारू-त, व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यक़ूला इन्नमा नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर्, फ़-य-तअ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल्-मर्इ व ज़ौजिही, व मा हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व य-तअ़ल्लमू-न मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अ़ुहुम, व लक़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाक़िन्, व

بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى
قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ
وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍ
بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ۝ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا
نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَمَّا جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ
وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ
السِّحْرَ ۤ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ
فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ وَمَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ
وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۭ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝

लबिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ु-सहुम, लौ कानू यअ्लमून (102) व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ ल-मसू-बतुम् मिन् अिन्दिल्लाहि ख़ैरुन्, लौ कानू यअ्लमून (103) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअिना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअू, व लिल्काफ़िरी-न अज़ाबुन् अलीम (104) मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्- किताबि व लल्-मुश्रिकी-न अंय्युनज़्ज़-ल अलैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम, वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिही मय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम (105) मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा, अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (106) अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (107) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लु, व मंय्-य-तबद्दलिल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील (108) वद्-द कसीरुम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्-बअ्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ह-सदम्-मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्-बअ्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हक़्क़ु फ़अ्फ़ू वस्फ़हू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर ▲ (109) व अक़ीमुस्-सला-त व आतुज़्ज़का-त, व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि,

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا
وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ مَّا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن
رَّبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ۝ مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ
مِثْلِهَا أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ
مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوسَىٰ مِن قَبْلُ وَمَن يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُم
مِّن بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّن
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَ
آتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ
اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ

इन्नल्ला-ह बिमा तअ्मलू-न बसीर **(110)** व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल् जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा, तिल्-क अमानिय्युहुम, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(111)** बला, मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-लहू अज्रुहू अिन्-द रब्बिही व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम व ला हुम् यह्ज़नून **(112)** ❖

व क़ालतिल् यहूदु लैसतिन्नसारा अ़ला शैइंव्-व क़ालतिन्नसारा लैसतिल् यहूदु अ़ला शैइंव्-व हुम् यत्लूनल्-किता-ब, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न मिस्-ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(113)** व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ़ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्क-र फ़ीहस्मुहू व सआ़ फ़ी ख़राबिहा, उलाइ-क मा का-न लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा-इफ़ी-न, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(114)** व लिल्लाहिल् मश्रिक़ु वल्-मग़्रिबु फ़-ऐनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि, इन्नल्ला-ह वासिअ़ुन् अ़लीम **(115)** व क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, बल्-लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्लहू क़ानितून **(116)** बदीअ़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(117)** व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन्, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम्, तशाब-हत् क़ुलूबुहुम, क़द् बय्यन्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यूक़िनून **(118)** इन्ना अर्सल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-

إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾ وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَ
قَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ
الْكِتَابَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾ وَ
مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ
وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا
إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ
اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ
بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ﴿١١٦﴾ بَدِيعُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا
آيَةٌ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ

व नज़ीरंव्-व ला तुस्अलु अ़न् अस्हाबिल् जहीम **(119)** व लन् तर्ज़ा अ़न्कल्-यहूदु व लन्-नसारा हत्ता तत्तबि-अ़ मिल्ल-तहुम, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्-हुदा, व ल-इनित्त-बअ़्-त अह्वा-अहुम् बअ़्दल्लज़ी जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(120)** अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यत्लूनहू हक़्-क़ तिलावतिही, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(121)** ❖

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ़्मति--यल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन **(122)** वत्तक़ू यौमल्ला-तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्-नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा अ़दलुंव्-व ला तन्फ़अ़ुहा शफ़ाअ़तुंव्-व ला हुम् युन्सरून **(123)** व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बि-कलिमातिन् फ़-अ-तम्म-हुन्-न, क़ा-ल इन्नी जाअ़िलु-क लिन्नासि इमामन्, क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती, क़ा-ल ला यनालु अ़ह्दिज़्-

البقرة ٢ ١٨ الم

قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ
بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾ وَلَنْ
تَرْضَىٰ عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَ
الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١٢٠﴾
الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ
بِهِ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٢١﴾ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى
الْعَالَمِينَ ﴿١٢٢﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ
مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٣﴾ وَإِذِ ابْتَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا
قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٤﴾ وَإِذْ
جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ
إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا
بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿١٢٥﴾ وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ

منزل ١

ज़ालिमीन **(124)** व इज़् जअ़ल्नल्बै-त मसा-बतल् लिन्नासि व अम्नन्, वत्तख़िज़ू मिम्-मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन्, व अ़हिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल अन् तह्हिरा बैति-य लित्ता-इफ़ी-न वल्-आ़किफ़ी-न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद **(125)** व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा ब-लदन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्स-मराति मन् आम-न मिन्हुम्

बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, क़ा-ल व मन् क-फ़-र फ़-उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तर्रुहू इला अ़ज़ाबिन्नारि, व बिअ्सल्-मसीर **(126)** व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल् क़वाअि-द मिनल्-बैति व इस्माअ़ीलु, रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीअुल्- अ़लीम **(127)** रब्बना वज्अ़ल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्म-तम् मुस्लि-मतल् ल-क व अरिना मनासि-कना व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्- रहीम **(128)** रब्बना वब्अ़स् फ़ीहिम् रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयाति-क व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व युज़क्कीहिम, इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(129)** ❖

व मंय्यर्ग़बु अ़म्-मिल्लति इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू, व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन **(130)** इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम् क़ा-ल अस्लम्तु लि-रब्बिल् आ़लमीन **(131)** व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ़्क़ूबु, या बनिय्-य इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दी-न फ़ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम्-मुस्लिमून **(132)** अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् ह-ज़-र यअ़्क़ूबल्-मौतु इज़् क़ा-ल लि-बनीहि मा तअ़्बुदू-न मिम्-बअ़्दी, क़ालू नअ़्बुदु इलाह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ इलाहंव्-वाहिदंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून **(133)** तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा

الٓمٓ ١٩ البقرة ٢

مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ
قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗٓ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٢٦ وَ
اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰھٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ رَبَّنَا تَقَبَّلْ
مِنَّا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١٢٧ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ
عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝١٢٨ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٢٩ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ
اِبْرٰھٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ۚ
وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٣٠ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ
قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٣١ وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰھٖمُ بَنِيْهِ
وَيَعْقُوْبُ ۭ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ
اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٣٢ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ
الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ۭ قَالُوْا نَعْبُدُ
اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰھٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا
وَّاحِدًا ښ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝١٣٣ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا

منزل ١

मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्मलून **(134)** व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू, क़ुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन **(135)** क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्-अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अ़ीसा व मा ऊतियन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम्-मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून **(136)** फ़-इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् फ़-सयक्फ़ी-कहुमुल्लाहु व हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम **(137)** सिब्ग़तल्लाहि व मन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़-तंव्-व नह्नु लहू आ़बिदून **(138)** क़ुल् अतुहाज्जू-नना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअ़्मालुना व लकुम् अअ़्मालुकुम् व नह्नु लहू मुख़्लिसून **(139)** अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्-अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा, क़ुल् अ-अन्तुम् अअ़्लमु अमिल्लाहु, व मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-दतन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून **(140)** तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्मलून **(141)** ❖

الۤمّۤ ٢٠ البقرة ٢

كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾ وَ
قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ
حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾ قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ
رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾
فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا
هُمْ فِيْ شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾
صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾
قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَ
لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ
اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ
كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾

منزل ١

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरतुल् ब-क्-रति (आयत 142 से 252)

स-यक़ूलुस्सु-फ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अ़न् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अ़लैहा, क़ुल् लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु, यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(142)** व कज़ालि-क जअ़ल्नाकुम् उम्मतंव्-व-स-तल्लितकूनू शु-हदा-अ अ़लन्-नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन्, व मा जअ़ल्नल्-क़िब्लतल्लती कुन्-त अ़लैहा इल्ला लिनअ़्ल-म मंय्यत्तबिअ़ुर्रसू-ल मिम्-मंय्यन्क़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि, व इन् कानत् ल-कबी-रतन् इल्ला अ़लल्लज़ी-न हदल्लाहु, व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ़ ईमानकुम, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम **(143)** क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ फ़-लनुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजू-हकुम् शत्रहू, व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ़्लमू-न अन्नहुल्- हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्मलून **(144)** व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअ़ू क़िब्ल-त-क व मा अन्-त बिताबिअ़िन् क़िब्ल-तहुम् व मा बअ़्ज़ुहुम् बिताबिअ़िन् क़िब्ल-त बअ़्ज़िन्, व ल-इनित्तबअ़्-त अह्वा-अहुम् मिम्-बअ़्दि मा जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि इन्न-क इज़ल्- लमिनज़्ज़ालिमीन ✣ **(145)** अल्लज़ी-न

سيقول ٢ ‏ ٢١ ‏ البقرة ٢

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي
كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا
جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ
مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى
الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ
فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ
وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾
وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا
أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ
الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

منزل ١

✣ व. लाज़िम

आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्रिफ़ूनहू कमा यअ्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम, व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् ल-यक्तुमूनल्-हक़्-क़ व हुम् यअ्लमून (146) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन (147) ❖

व लिकुल्लिव्विंज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति, ऐ-न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअ़न्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (148) व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व इन्नहू लल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (149) व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्-मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजूहकुम् शत्रहू लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लैकुम् हुज्जतुन्, इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी, व लि-उतिम्-म निअ्मती अ़लैकुम् व लअ़ल्लकुम् तह्तदून (150) कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमुकुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ्लमून (151) फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वश्कुरू ली व ला तक्फ़ुरून (152) ❖

البقرة ٢ ٢٢ سيقول ٢

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ
هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ
جَمِيعًا إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ
فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ
وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ
وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ
وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝
وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ
وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ
وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَ
بَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا

منزل ١

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन (153) व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन्, बल् अह्याउंव्-व लाकिल्ला तश्अुरून (154) व ल-नब्लुवन्नकुम् बिशैइम्-मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम् मिनल्-

अम्वालि वल्-अन्फ़ुसि वस्स-मराति, व बश्शिरिस्साबिरीन (155) अल्लज़ी-न इज़ा असाबतूहुम् मुसीबतुन् क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (156) उलाइ-क अ़लैहिम स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन्, व उलाइ-क हुमुल्-मुह्तदून (157) इन्नस्सफ़ा वल्मर्-व-त मिन् शआ-इरिल्लाहि फ़-मन् हज्जल्बै-त अविअ्त-म-र फ़ला जुना-ह अ़लैहि अंय्यत्तव्व-फ़ बिहिमा, व मन् त-तव्व-अ़ ख़ैरन् फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अ़लीम (158) इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल् बय्यिनाति वल्हुदा मिम्-बअ़्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्-किताबि उलाइ-क यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़नुहुमुल्-लाअ़िनून (159) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़-उलाइ-क अतूबु अ़लैहिम् व अ-नत्तव्वाबुर्रहीम (160) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइ-क अ़लैहिम् लअ़्नतुल्लाहि वल्-मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन (161) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (162) व इलाहुकुम् इलाहुंव्- वाहिदुन् ला इला-ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम (163) ❖

سيقول ٢ ٢٣ البقرة ٢

لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ
وَرَحْمَةٌ ۟ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ
مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ
شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ
وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ
يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا
وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ
عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاۗءِ مِنْ مَّاۗءٍ
فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ
وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ

منزل ١

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्समा-इ वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (164) व मिनन्नासि

मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बू-नहुम् कहुब्बिल्लाहि, वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बल्-लिल्लाहि, व लौ यरल्लज़ी-न ज़-लमू इज़् यरौनल्-अ़ज़ा-ब अन्नल्-क़ुव्व-त लिल्लाहि जमीअंव्-व अन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़ज़ाब **(165)** इज़् त-बर्रअल्लज़ीनत्तुबिअू मिनल्लज़ीनत्-त-बअू व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब व त-क़त्तअ़त् बिहिमुल् अस्बाब **(166)** व क़ालल्लज़ीनत्त-बअू लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-न-तबर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना, कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ्मालहुम् ह-सरातिन् अ़लैहिम्, व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार **(167)** ❖

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्-अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-वला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन **(168)** इन्नमा यअ्मुरुकुम् बिस्सू-इ वल्-फ़ह्शा-इ व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून **(169)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा अल्फ़ैना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला यअ्क़िलू-न शैअंव्-व ला यह्तदून **(170)** व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू क-म-सलिल्लज़ी यन्अ़िक़ु बिमा ला यस्मअ़ु इल्ला दुआअंव्-व निदाअन्, सुम्मुम् बुक्मुन् अ़ुम्युन् फ़हुम् ला यअ्क़िलून **(171)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून **(172)** इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्-मै-त-त वद्द-म व लह्मल् ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल बिही लिग़ैरिल्लाहि

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۞ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا
لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ
لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۞ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ
اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ
الْاَسْبَابُ ۞ وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ
مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ
عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ۞ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا
مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۞ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَ
اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۞ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ
كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۞ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ
صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۞

❖ रु. 20/4/4

फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(173)** इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल्-किताबि व यश्तरू-न बिही स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल्-क़ियामति व ला युज़क्कीहिम व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(174)** उला-इकल्लज़ीनश्त-रवुज़्-ज़लाल-त बिल्हुदा वल्-अ़ज़ा-ब बिल्-मग़्फ़ि-रति फ़मा अस्ब-रहुम् अ़लन्नार **(175)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़िल्-किताबि लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद ◆ **(176)** ❖

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजू-हकुम् क़ि-बलल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व लाकिन्नल्-बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वल्मलाइ-कति वल्किताबि वन्नबिय्यी-न व आतल्मा-ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी-न वब्नस्सबीलि वस्सा-इली-न व फ़िर्रिक़ाबि, व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त वल्मूफ़ू-न बि-अ़ह्दिहिम इज़ा आ़-हदू वस्साबिरी-न फ़िल्-बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व हीनल्-बअ्सि, उलाइ-कल्लज़ी-न स-दक़ू, व उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून **(177)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला, अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वल्-उन्सा बिल्-उन्सा, फ़-मन् अ़ुफ़ि-य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाअ़ुम् बिल्मअ्रूफ़ि व अदाउन् इलैहि

انما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهل
به لغير الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا اثم عليه
ان الله غفور رحيم ۝ ان الذين يكتمون ما انزل الله من
الكتب ويشترون به ثمنا قليلا اولئك ما ياكلون في
بطونهم الا النار ولا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم
ولهم عذاب اليم ۝ اولئك الذين اشتروا الضللة بالهدى
والعذاب بالمغفرة فما اصبرهم على النار ۝ ذلك بان
الله نزل الكتب بالحق وان الذين اختلفوا في الكتب
لفي شقاق بعيد ۝ ليس البر ان تولوا وجوهكم قبل
المشرق والمغرب ولكن البر من امن بالله واليوم
الاخر والملئكة والكتب والنبين واتى المال على حبه
ذوي القربى واليتمى والمسكين وابن السبيل والسائلين
وفي الرقاب واقام الصلوة واتى الزكوة والموفون بعهدهم
اذا عهدوا والصبرين في الباساء والضراء وحين الباس
اولئك الذين صدقوا واولئك هم المتقون ۝ يايها الذين
امنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الحر بالحر والعبد

बि-इह्सानिन्, ज़ालि-क तख़्फ़ीफ़ुम्-मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन्, फ़-मनिअ्तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम **(178)** व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(179)** कुति-ब अ़लैकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल्-वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न बिल्मअ्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुत्तक़ीन **(180)** फ़-मम् बद्-द लहू बअ्-द मा समि-अ़हू फ़-इन्नमा इस्मुहू अ़लल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू, इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम **(181)** फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्-मूसिन् ज-नफ़न् औ इस्मन् फ़-अस्ल-ह बैनहुम् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(182)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुस्- -सियामु कमा कुति-ब अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(183)** अय्यामम्-मअ्दूदातिन्, फ़-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़-अ़िद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख़-र, व अ़लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन्, फ़-मन् त-तव्व-अ़ फ़हु-व ख़ैरुल्लहू, व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(184)** शह्रु र-मज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्-मिनल्हुदा वल्फ़ुर्क़ानि फ़-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु, व मन् का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अ़िद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख़-र, युरीदुल्लाहु बिकुमुल्-

بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ۚ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ
فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ۗ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ
خَيْرَا ۖ ۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَمَنْ ۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ
عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ
مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝
اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۗ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۗ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ
مِسْكِيْنٍ ۗ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۗ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ
الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ

युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्- अुस्-र व लितुक्मिलुल्- अिद्-द-त व लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(185)** व इज़ा स-अ-ल-क अिबादी अ़न्नी फ़-इन्नी क़रीबुन्, उजीबु दअ़्-वतद्दाअि इज़ा दआ़नि फ़ल्यस्तजीबू ली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून **(186)** उहिल्-ल लकूम् लै-लतस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा-इकूम, हुन्-न लिबासुल्लकूम् व अन्तुम् लिबासुल्-लहुन्-न, अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू-न अन्फु-सकुम् फ़ता-ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् फ़लूआ-न बाशिरूहुन्-न वब्तग़ू मा क-तबल्लाहु लकुम् व कुलू वश्रबू हत्ता य-तबय्य-न लकुमुल्ख़ैतुल्-अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल्-अस्वदि मिनल्-फ़ज्रि सुम्-म अतिम्मुस्-सिया-म इलल्लैलि व ला तुबाशिरूहुन्-न व अन्तुम् आ़किफ़ू-न फ़िल्-मसाजिदि, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तक़्रबूहा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(187)** व ला तअ्कुलू अम्वा-लकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल्-हुक्कामि लितअ्कुलू फ़रीक़म् मिन् अम्वालिन्नासि बिल्इस्मि व अन्तुम् तअ़्लमून **(188)** ❖

यस्अलून-क अ़निल्-अहिल्लति, क़ुल् हि-य मवाक़ीतु लिन्नासि वल्-हज्जि, व लैसल्बिर्रु

سیقول۲ ۲۷ البقرة۲

شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَنْ كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ
سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۗ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ
بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٨٥﴾ وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ
أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي
لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾ أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ
نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ
أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۖ
فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا
حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ
الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ
عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ
أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ۖ
قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا

منزل۱

बि-अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा व ला किन्नल्बिर्-र मनित्तक़ा वअ्तुल्-बुयू-त मिन् अब्वाबिहा वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(189)** व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न युक़ातिलू-नकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्तदीन **(190)** वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् व अख़्रिजूहुम् मिन् हैसु अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्-क़त्लि व ला तुक़ातिलूहुम् अ़िन्दल्-मस्जिदिल्- हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि, फ़-इन् क़ा-तलूकुम् फ़क़्तुलूहुम्, कज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन **(191)** फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(192)** व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु लिल्लाहि, फ़-इनिन्तहौ फ़ला अ़ुद्वा-न इल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन **(193)** अश्शह्रुल्-हरामु बिश्शह्रिल्-हरामि वल्-हुरुमातु क़िसासुन्, फ़-मनिअ्तदा अ़लैकुम् फ़अ्तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ्तदा अ़लैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह म-अ़ल्मुत्तक़ीन **(194)** व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहिं व ला तुल्क़ू बिऐदीकुम् इलत्तह्लुकति, व अह्सिनू इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुह्सिनीन **(195)** व अतिम्मुल्-हज्-ज वल्-अ़ुम्र-त लिल्लाहि, फ़-इन् उह्सिर्तुम् फ़-मस्तै-स-र मिनल्-हद्यि व ला तह्लिक़ू रुऊ-सकुम् हत्ता यब्लुग़ल्-हद्यु महिल्लहू, फ़-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ़-फ़िद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ स-द-क़तिन् औ नुसुकिन् फ़-इज़ा अमिन्तुम फ़-मन् तमत्त-अ़ बिल्-उ़म्रति इलल्-हज्जि

الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَأْتُوا الْبُيُوتَ
مِنْ أَبْوَابِهَا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٨٩﴾ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ
مِنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ
فَاقْتُلُوهُمْ ۗ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾ فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٢﴾ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾
الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ ۚ فَمَنِ
اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾ وَأَنْفِقُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَأَحْسِنُوا ۛ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ
أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ

फ़-मस्तै-स-र मिनल्-हद्यि फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्-हज्जि व सब्-अतिन् इज़ा रजअ्तुम, तिल्-क अ-श-रतुन् कामि-लतुन्, ज़ालि-क लिमल्-लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल्-मस्जिदिल्-हरामि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब **(196)** ❖

अल्हज्जु अश्हुरुम्-मअ्लूमातुन् फ़-मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-हज्-ज फ़ला र-फ़-स व ला फ़ु-सू-क़ व ला जिदा-ल फ़िल्-हज्जि, व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिंय्-यअ्लम्हुल्लाहु, व तज़व्वदू फ़-इन्-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा वत्तक़ूनि या उलिल्-अल्बाब **(197)** लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम, फ़-इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ़-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अ़िन्दल्-मश्अ़रिल्-हरामि वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल-मिनज़्ज़ाल्लीन **(198)**

سيقول ٢ ٢٩ البقرة ٢

أذى من رأسه ففدية من صيام أو صدقة أو نسك
فإذا أمنتم فمن تمتع بالعمرة إلى الحج فما استيسر
من الهدي فمن لم يجد فصيام ثلثة أيام في الحج و
سبعة إذا رجعتم تلك عشرة كاملة ذلك لمن لم يكن
أهله حاضري المسجد الحرام واتقوا الله واعلموا أن الله
شديد العقاب ۞ الحج أشهر معلومت فمن فرض فيهن
الحج فلا رفث ولا فسوق ولا جدال في الحج وما تفعلوا
من خير يعلمه الله وتزودوا فإن خير الزاد التقوى و
اتقون يأولي الألباب ۞ ليس عليكم جناح أن تبتغوا
فضلا من ربكم فإذا أفضتم من عرفت فاذكروا الله
عند المشعر الحرام واذكروه كما هدىكم وإن كنتم من
قبله لمن الضالين ۞ ثم أفيضوا من حيث أفاض الناس
واستغفروا الله إن الله غفور رحيم ۞ فإذا قضيتم
مناسككم فاذكروا الله كذكركم آباءكم أو أشد ذكرا فمن
الناس من يقول ربنا آتنا في الدنيا وما له في الآخرة من
خلاق ۞ ومنهم من يقول ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي

منزل ١

सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(199)** फ़-इज़ा क़ज़ैतुम् मनासि-ककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क-ज़िक्रिकुम् अबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन्, फ़-मिनन्नासि मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्-आख़ि-रति मिन् ख़लाक़ **(200)** व मिन्हुम् मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्-

आख़ि-रति ह-स-नतंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार (201) उलाइ-क लहुम् नसीबुम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु सरीअ़ुल् हिसाब ● (202) वज़्कुरुल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ़्दूदातिन् फ़-मन् त-अ़ज्ज-ल फ़ी यौमैनि फ़ला इस्-म अ़लैहि व मन् त-अख़्ख़-र फ़ला इस्-म अ़लैहि लि-मनित्तक़ा, वत्तक़ुल्ला-ह वअ़्लमू अन्नकुम् इलैहि तुह्शरून (203) व मिनन्नासि मंय्युअ़्जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्हयातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अ़ला मा फ़ी क़ल्बिही व हु-व अलद्दुल्-ख़िसाम (204) व इज़ा तवल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि लियुफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल्-हर्-स वन्नस्-ल, वल्लाहु ला युहिब्बुल् फ़साद (205) व इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला-ह अ-ख़ज़त्हुल्-अ़िज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ़-हस्बुहू जहन्नमु, व लबिअ्सल्-मिहाद (206) व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि, वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्-अ़िबाद (207) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव्-व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन (208) फ़-इन् ज़लल्तुम् मिम्-बअ़्दि मा जा-अत्कुमुल्-बय्यिनातु फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (209) हल्

سيقول ٢ | ٣٠ | البقرة ٢

الآخرة حسنة وقنا عذاب النار ۝ أولئك لهم نصيب مما
كسبوا والله سريع الحساب ۝ واذكروا الله في أيام معدودات
فمن تعجل في يومين فلا إثم عليه ومن تأخر فلا إثم
عليه لمن اتقى واتقوا الله واعلموا أنكم إليه تحشرون ۝
ومن الناس من يعجبك قوله في الحيوة الدنيا ويشهد
الله على ما في قلبه وهو ألد الخصام ۝ وإذا تولى سعى
في الأرض ليفسد فيها ويهلك الحرث والنسل والله لا
يحب الفساد ۝ وإذا قيل له اتق الله أخذته العزة بالإثم
فحسبه جهنم ولبئس المهاد ۝ ومن الناس من يشري
نفسه ابتغاء مرضات الله والله رءوف بالعباد ۝ يأيها
الذين امنوا ادخلوا في السلم كافة ولا تتبعوا خطوت
الشيطن إنه لكم عدو مبين ۝ فإن زللتم من بعد ما
جاءتكم البينت فاعلموا أن الله عزيز حكيم ۝ هل ينظرون
إلا أن يأتيهم الله في ظلل من الغمام والملئكة و
قضي الأمر وإلى الله ترجع الأمور ۝ سل بني إسراءيل
كم اتينهم من اية بينة ومن يبدل نعمة الله من بعد

منزل

यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति-यहुमुल्लाहु फ़ी ज़ु-ललिम् मिनल्-ग़मामि वल्-मलाइ-कतु व कुज़ियल्-अमूरु, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर **(210)** ❖

सल् बनी इस्राई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम् बय्यि-नतिन्, व मंय्युबद्दिल् निअ्-मतल्लाहि मिम्-बअ्दि मा जाअत्हु फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल् अिक़ाब **(211)** ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-हयातुद्दुन्या व यस्ख़रू-न मिनल्लज़ी-न आमनू ✣ वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौ-क़हुम् यौमल्-क़ियामति, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(212)** कानन्नासु उम्म-तंव्-वाहि-दतन्, फ़-ब-अ़सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि लियह्कु-म बैनन्नासि फ़ी मख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु बग़्यम्- बैनहुम् फ़-हदल्लाहुल्लज़ी-न आमनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्-हक़्क़ि बि-इज़्निही, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(213)** अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम् म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम, मस्सत्हुमुल्- बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू हत्ता यक़ूलर्- रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू मता नस्रुल्लाहि, अला इन्-न नस्रल्लाहि क़रीब **(214)** यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ू-न, क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन्

سيقول ٢ ٣١ البقرة ٢

مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا
فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾
كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا
الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ
الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ
مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَ
الْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ
لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا

منزل ١

फ़-लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि, व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम **(215)** कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् व अ़सा अन् तुहिब्बू शैअंव्-व हु-व शर्रुल्लकुम, वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून **(216)** ❖

यस्अलून-क अ़निश्शह्रिल्-हरामि क़ितालिन् फ़ीहि, क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन्, व सद्दुन् अ़न् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वल्मस्जिदिल्-हरामि, व इख़्राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु अि़न्दल्लाहि वल्-फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्-क़त्लि, व ला यज़ालू-न युक़ातिलू-नकुम् हत्ता यरुद्दूकुम् अ़न् दीनिकुम् इनिस्तताअ़ू, व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़-यमुत् व हु-व काफ़िरुन् फ़-उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(217)** इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यर्जू-न रह्मतल्लाहि, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(218)** यस्अलून-क अ़निल्-ख़म्रि वल्-मैसिरि क़ुल् फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव्-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़्अि़हिमा, व यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ू-न, क़ुलिल्-अ़फ़्-व कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् त-तफ़क्करून **(219)** फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व यस्अलून-क अ़निल्-यतामा, क़ुल् इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन्, व इन् तुख़ालितूहुम् फ़-इख़्वानुकुम, वल्लाहु यअ़्लमुल्-

شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ
عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌ ۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ
مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ
يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۗ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ
وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ
مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ەۗ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۝ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ
الْيَتٰمٰى ۗ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۗ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۗ

मुस्फ़ि-द मिनल्-मुस्लिहि, व लौ शाअल्लाहु ल-अअ्न-तकुम, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (220) व ला तन्किहुल् मुश्रिकाति हत्ता युअ्मिन्-न, व ल-अ-मतुम् मुअ्मि-नतुन् ख़ैरुम्-मिम्-मुश्रि-कतिंव्-व लौ अअ्-जबत्कुम् व ला तुन्किहुल् मुश्रिकी-न हत्ता युअ्मिनू, व ल-अ़ब्दुम्-मुअ्मिनुन् ख़ैरुम् मिम्-मुश्रिकिंव्-व लौ अअ्ज-बकुम, उलाइ-क यदअू-न इलन्नारि वल्लाहु यदअू इलल्-जन्नति वल्-मग़्फ़िरति बि-इज़्निही व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (221) ❖

व यस्अलून-क अ़निल्-महीज़ि क़ुल् हु-व अ-ज़न् फ़अ्तज़िलुन्निसा-अ फ़िल्-महीज़ि वला तक़्रबूहुन्-न हत्ता यत्हुर्-न फ़-इज़ा त-तह्हर्-न फ़अ्तूहुन्-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल् मु-त-तह्हिरीन (222) निसाउकुम् हर्सुल्लकुम् फ़अ्तू हर्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् व क़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नकुम् मुलाक़ूहु, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (223) व ला तज्अ़लुल्ला-ह अुर्-ज़तल् लिऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (224) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क-सबत् क़ुलूबुकुम, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (225) लिल्लज़ी-न युअ्लू-न मिन्निसा-इहिम् तरब्बुसु अर्-ब-अ़ति अश्हुरिन् फ़-इन् फ़ाऊ फ़-इन्नला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (226) व इन् अ़-ज़मुत्तला-क़ फ़-इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (227) वल्मुतल्लक़ातु य-तरब्बस्-न बि-अन्फ़ुसिहिन्-न

سيقول ٢ ٣٣ البقرة ٢

وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تُنكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۖ وَاللَّهُ يَدْعُو
إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ ۖ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ ۖ قُلْ هُوَ أَذًى
فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝ نِسَاؤُكُمْ
حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُم مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَ
تُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَّا يُؤَاخِذُكُمُ
اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ
قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَائِهِمْ
تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ۖ فَإِن فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ

منزل ١

सलास-त क़ुरूइन्, व ला यहिल्लु लहुन्-न अंय्यक्तुम्-न मा ख़-लक़ल्लाहु फ़ी अर्हामिहिन्-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व बुअू-लतुहुन्-न अहक़्क़ु बि-रद्दिहिन्-न फ़ी ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाहन्, व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन्-न बिल्मअ़रूफ़ि व लिर्रिजालि अ़लैहिन्-न द-र-जतुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(228)** ❖

अत्तलाक़ु मर्रतानि फ़-इम्साकुम्-बिमअ़रूफ़िन् औ तस्रीहुम् बि-इह्सानिन्, व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्-न शैअन् इल्ला अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि, फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तअ्तदूहा व मंय्य-तअ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(229)** फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला तहिल्लु लहू मिम्-बअ़्दु हत्ता तन्कि-ह ज़ौजन् ग़ैरहू, फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्य-तरा-जआ़ इन् ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि युबय्यिनुहा लिक़ौमिंय्यअ़्लमून **(230)** व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बिमअ़रूफ़िन् औ सर्रिहूहुन्-न बिमअ़रूफ़िंव्-व ला तुम्सिकूहुन्-न ज़िरारल् लितअ्-तदू व मंय्यफ़अ़ल् ज़ालि-क फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-वज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिनल्-किताबि वल्हिक्मति यअिज़ुकुम्

يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ
مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۭ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ
دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
شَيْـــًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ
حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْھَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ
ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ۭ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ
اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
فَاَمْسِكُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْھُنَّ
ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَا
تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ ھُزُوًا ۡ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ

बिही, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्‌लमू अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ▲ (231) ❖

व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ला तअ्‌ज़ुलूहुन्-न अंय्यन्किह्-न अज़्वाजहुन्-न इज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिल्मअ्‌रूफ़ि, ज़ालि-क यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न मिन्कुम् युअ्‌मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, ज़ालिकुम् अज़्का लकुम् व अत्हरु, वल्लाहु यअ्‌लमु व अन्तुम् ला तअ्‌लमून **(232)** वल्-वालिदातु युर्ज़िअ्-न औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि-मन् अरा-द अंय्युतिम्मर्रज़ा-अ़-त, व अ़लल्-मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिल्मअ्‌रूफ़ि, ला तुकल्लफ़ु नफ़्सुन् इल्ला वुस्‌अ़हा ला तुज़ार्-र वालि-दतुम् बि-व-लदिहा व ला मौलूदुल्लाहू बि-व-लदिही, व अ़लल्-वारिसि मिस्लु ज़ालि-क फ़-इन् अरादा फ़िसालन् अ़न् तराज़िम् मिन्हुमा व तशावुरिन् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा, व इन् अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअू औलादकुम् फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ्‌रूफ़ि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्‌लमू अन्नल्ला-ह बिमा तअ्‌मलू-न बसीर **(233)** वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंय्य-तरब्बस्-न बिअन्फ़ुसिहिन्-न अर्ब-अ़-त अश्हुरिव्ं-व अ़श्रन् फ़-इज़ा बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न बिल्मअ्‌रूफ़ि, वल्लाहु बिमा तअ्‌मलू-न ख़बीर **(234)** व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम,

عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ
كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۗ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَ
تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا
اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ
يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ
اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا
فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअ़िदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम्-मअ़्रूफ़न्, व ला तअ़्ज़िमू अुक़्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुग़ल्-किताबु अ-ज-लहू, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्-ज़रूहु वअ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम **(235)** ❖

ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसा-अ मा लम् तमस्सूहुन्-न औ तफ़्रिज़ू लहुन्-न फ़री-ज़तंव्-व मत्तिअ़ूहुन्-न अ़लल्-मूसिअ़ि क़-दरुहू व अ़लल्-मुक़्तिरि क़-दरुहू मताअ़म्-बिल्मअ़्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुह्सिनीन **(236)** व इन् तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व क़द् फ़रज़्तुम् लहुन्-न फ़री-ज़तन् फ़-निस्फ़ु मा फ़रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ़्फ़ू-न औ यअ़्फ़ुवल्लज़ी बि-यदिही उ़क़्दतुन्निकाहि, व अन् तअ़्फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा, व ला तन्सवुल्-फ़ज़्-ल बैनकुम, इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(237)** हाफ़िज़ू अ़लस्स-लवाति वस्सलातिल्-वुस्ता व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन **(238)** फ़-इन् ख़िफ़्तुम् फ़-रिजालन् औ रुक्बानन् फ़-इज़ा अमिन्तुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह कमा अ़ल्ल-मकुम् मा लम् तकूनू तअ़्लमून **(239)** वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंव्-वसिय्यतल् लि-अज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्-हौलि ग़ै-र इख़्राजिन् फ़-इन् ख़रज्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ी मा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न मिम्-मअ़्रूफ़िन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(240)** व लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम्-बिल्मअ़्रूफ़ि, हक़्क़न् अ़लल् मुत्तक़ीन **(241)**

ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء
او اكننتم في انفسكم علم الله انكم ستذكرونهن ولكن
لا تواعدوهن سرا الا ان تقولوا قولا معروفا ولا تعزموا
عقدة النكاح حتى يبلغ الكتب اجله واعلموا ان الله يعلم
ما في انفسكم فاحذروه واعلموا ان الله غفور حليم
لا جناح عليكم ان طلقتم النساء ما لم تمسوهن او
تفرضوا لهن فريضة ومتعوهن على الموسع قدره
وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف حقا على المحسنين
وان طلقتموهن من قبل ان تمسوهن وقد فرضتم
لهن فريضة فنصف ما فرضتم الا ان يعفون او يعفوا
الذي بيده عقدة النكاح وان تعفوا اقرب للتقوى و
لا تنسوا الفضل بينكم ان الله بما تعملون بصير
حافظوا على الصلوت والصلوة الوسطى وقوموا لله قنتين
فان خفتم فرجالا او ركبانا فاذا امنتم فاذكروا الله كما
علمكم ما لم تكونوا تعلمون والذين يتوفون منكم و
يذرون ازواجا وصية لازواجهم متاعا الى الحول غير اخراج

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (242) ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह-ज़रल्मौति फ़क़ा-ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्-म अह्याहुम, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (243) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्लमू अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (244) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअ़ि-फ़हू लहू अज़्आ़फ़न् कसीर-तन्, वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअ़ून (245) अलम् त-र इलल्-म-लइ मिम्-बनी इस्राई-ल मिम्-बअ़्दि मूसा ✣ इज़् क़ालू लि-नबिय्यिल्-लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि, क़ा-ल हल् अ़सैतुम् इन् कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू, क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्ना-इना, फ़-लम्मा कुति-ब अ़लैहिमुल्-क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (246) व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ़-स लकुम् तालू-त मलिकन्, क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह्नु अहक़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्-त स-अ़तम् मिनल्-मालि, क़ा-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ा-दहू बस्त-तन् फ़िल्-इ़ल्मि वल्-जिस्मि, वल्लाहु युअ़्ती मुल्कहू मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (247)

سیقول ٢ ٣٧ البقرة ٢

فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ
مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ اَلَمْ
تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۠ فَقَالَ
لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ
اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ
هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ
اَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ
لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ
بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ

منزل

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्-न आय-त मुल्किही अंय्यअ्ति-यकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम् मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम् मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलु हारू-न तह्मिलुहुल्-मलाइ-कतु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(248)** ❖

फ़-लम्मा फ़-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि क़ा-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम बि-न-हरिन् फ़-मन् शरि-ब मिन्हु फ़लै-स मिन्नी व मल्लम् यत्अ़म्हु फ़-इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग्-त-र-फ़ ग़ुर्-फ़तम् बि-यदिही फ़-शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, फ़-लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू क़ालू ला ता-क़-त लनल्-यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही, क़ालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि कम् मिन् फ़ि-अतिन् क़लीलतिन् ग़-लबत् फ़ि-अतन् कसी-रतम् बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु म-अ़स्साबिरीन **(249)** व लम्मा ब-रज़ू लिजालू-त व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रंव्-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्-क़ौमिल् काफ़िरीन **(250)** फ़-ह-ज़मूहुम् बि-इज़्निल्लाहि व क़-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्-मुल्-क वल्-हिक्म-त व अ़ल्ल-महू मिम्मा यशा-उ, व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़हुम् बिबअ्ज़िल् ल-फ़-स-दतिल्-अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्-आ़लमीन **(251)** तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन **(252)**

عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۖ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ
مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ
أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ
آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ
مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ
فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ ۚ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا
مِنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا
الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُو
اللَّهِ كَمْ مِنْ فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَهَزَمُوهُمْ
بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝
تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

तीसरा पारः तिल्करुसुलु

सूरतुल् ब-क्-रति (आयत 253 से 286)

तिल्करुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्-ज़हुम अ़ला बअ़्ज़िन् ✣ मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व र-फ़-अ़ बअ़्-ज़हुम द-रजातिन्, व आतैना अ़ीसब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलल्लज़ी-न मिम्- बअ़्दिहिम् मिम्-बअ़्दि मा जाअत्हुमुल् -बय्यिनातु व लाकिनिख़्त-लफ़ू फ़-मिन्हुम् मन् आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़-र, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलू, व लाकिन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद (253) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्-व ला शफ़ाअ़तुन्, वल्-काफ़िरू-न हुमुज़्ज़ालिमून (254) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल्-क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुन्, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही, यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम व ला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल् अ़ज़ीम (255) ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि क़त्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्-ग़य्यि फ़-मंय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्स-क

البقرة ٢ — ٣٩ — تلك الرسل ٣

تلك الرسل فضلنا بعضهم على بعض منهم من
كلم الله ورفع بعضهم درجت وآتينا عيسى ابن مريم
البينت وأيدنه بروح القدس ولو شاء الله ما اقتتل الذين
من بعدهم من بعد ما جاءتهم البينت ولكن اختلفوا
فمنهم من آمن ومنهم من كفر ولو شاء الله ما اقتتلوا
ولكن الله يفعل ما يريد ۝ يا أيها الذين آمنوا أنفقوا مما
رزقنكم من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا خلة و
لا شفاعة والكفرون هم الظلمون ۝ الله لا إله إلا هو
الحي القيوم لا تأخذه سنة ولا نوم له ما في السموت
وما في الأرض من ذا الذي يشفع عنده إلا بإذنه يعلم
ما بين أيديهم وما خلفهم ولا يحيطون بشيء من
علمه إلا بما شاء وسع كرسيه السموت والأرض و
لا يؤده حفظهما وهو العلي العظيم ۝ لا إكراه في
الدين قد تبين الرشد من الغي فمن يكفر بالطاغوت
ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام
لها والله سميع عليم ۝ الله ولي الذين آمنوا يخرجهم

منزل

बिल्-अुर्वतिल्-वुस्क़ा लन्फ़िसा-म लहा, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम **(256)** अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, वल्लज़ी-न क-फ़रू औलिया-उहुमुत्तागूतु युख़्रिजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(257)** ❖

अ़लम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल्-मुल्क ✣ इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु क़ा-ल अ-न उह्यी व उमीतु, क़ा-ल इब्राहीमु फ़-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनलमशरिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि फ़-बुहितल्लज़ी क-फ़-र, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(258)** औ कल्लज़ी मर्-र अ़ला क़र्यतिंव्-व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा क़ा-ल अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ़्-द मौतिहा फ़-अमातहुल्लाहु मि-अ-त आ़मिन् सुम्-म ब-अ़-सहू, क़ा-ल कम् लबिस्-त, क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ़्-ज़ यौमिन्, क़ा-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आ़मिन् फ़न्ज़ुर् इला तआ़मि-क व शराबि-क लम् य-तसन्नह् वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज्अ़-ल-क आयतल् लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्-अ़िज़ामि कै-फ नुन्शिज़ुहा सुम्-म नक्सूहा लह्मन्, फ़-लम्मा तबय्य-न लहू क़ा-ल अअ़्लमु अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(259)** व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ तुह्यिल्मौता, क़ा-ल अ-व

مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ
يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖٓ اَنْ
اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۙ
قَالَ اَنَا اُحْىٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ بِالشَّمْسِ
مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ
وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ
فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ
وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا
ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِىْ كَيْفَ تُحْىِ الْمَوْتٰى ؕ
قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ
اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ

लम् तुअ्मिन्, क़ा-ल बला व लाकिल्लियत्-मइन्-न क़ल्बी, क़ा-ल फ़-ख़ुज़् अर्ब-अ़तम् मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अ़ल् अ़ला कुल्लि ज-बलिम् मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मद्अ़ुहुन्-न यअ्ती-न-क सअ़्यन्, वअ़्लम् अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(260)** ❖

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन् अम्ब-तत् सब्-अ़ सनाबि-ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम् मि-अतु हब्बतिन्, वल्लाहु युज़ाअ़िफ़ु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम **(261)** अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअ़ू-न मा अन्फ़क़ू मन्नंव्-व ला अ-ज़ल् लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(262)** क़ौलुम् मअ़्रूफ़ुंव्-व मग़्फ़ि-रतुन् ख़ैरुम् मिन् स-द-क़तिंय्-यत्बअ़ुहा अज़न्, वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम **(263)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुब्तिलू स-दक़ातिकुम् बिल्मन्नि वल्-अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मालहू रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि, फ़-म-सलुहू क-म-सलि सफ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़-असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन्, ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् काफ़िरीन **(264)** व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि व तस्बीतम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम्-बिरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन् फ़-आतत् उकु-लहा ज़िअ़्फ़ैनि फ़-इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ़-तल्लुन्, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(265)** अ-यवद्दु अ-हदुकुम अन् तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिंव्-व

مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ
حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِائَةُ حَبَّةٍ ۗ
وَاللّٰهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا
مَنًّا وَلَا أَذًى ۙ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ
صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ ۙ كَالَّذِي يُنْفِقُ
مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ
كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۖ
لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِمَّا كَسَبُوا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكَافِرِينَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ وَتَثْبِيتًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ
فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِنْ

अअ्नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व असाबहुल्-कि-बरु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन् ज़ु-अ़फ़ा-उ फ़-असाबहा इअ्सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त-रक़त्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम त-तफ़क्करून **(266)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम् मिनल्-अर्ज़ि व ला त-यम्म-मुल्-ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम बि-आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि, वअ्लमू अन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद **(267)** अश्शैतानु यअिदुकुमुल् फ़क़्-र व यअ्मुरुकुम बिल्फ़ह्शा-इ वल्लाहु यअिदुकुम् मग़्फ़ि-रतम् मिन्हु व फ़ज़्लन्, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम **(268)** युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ व मंय्युअ्तल्-हिक्म-त फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन्, व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब **(269)** व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन् औ नज़र्तुम् मिन्-नज़्रिन् फ़-इन्नल्ला-ह यअ्लमुहू, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार **(270)** इन् तुब्दुस्स-दक़ाति फ़-निअि़म्मा हि-य व इन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ु-क़रा-अ फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम व युकफ़्फ़िरु अ़न्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम, वल्लाहु बिमा तअ्मलून ख़बीर **(271)** लै-स अ़लै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-लिअन्फ़ुसिकुम्, व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून **(272)** लिल्फ़ु-क़रा-इल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअू-न

نخيل وأعناب تجري من تحتها الأنهار له فيها من
كل الثمرات وأصابه الكبر وله ذرية ضعفاء فأصابها
إعصار فيه نار فاحترقت كذلك يبين الله لكم الآيات
لعلكم تتفكرون ﴿٢٦٦﴾ يا أيها الذين آمنوا أنفقوا من طيبات
ما كسبتم ومما أخرجنا لكم من الأرض ولا تيمموا
الخبيث منه تنفقون ولستم بآخذيه إلا أن تغمضوا
فيه واعلموا أن الله غني حميد ﴿٢٦٧﴾ الشيطان يعدكم
الفقر ويأمركم بالفحشاء والله يعدكم مغفرة منه
وفضلا والله واسع عليم ﴿٢٦٨﴾ يؤتي الحكمة من يشاء
ومن يؤت الحكمة فقد أوتي خيرا كثيرا وما يذكر إلا
أولو الألباب ﴿٢٦٩﴾ وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم من
نذر فإن الله يعلمه وما للظالمين من أنصار ﴿٢٧٠﴾ إن
تبدوا الصدقات فنعما هي وإن تخفوها وتؤتوها الفقراء
فهو خير لكم ويكفر عنكم من سيئاتكم والله بما تعملون
خبير ﴿٢٧١﴾ ليس عليك هداهم ولكن الله يهدي من يشاء
وما تنفقوا من خير فلأنفسكم وما تنفقون إلا ابتغاء

ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्त-अफ़्फ़ुफ़ि तअ्रिफ़ुहुम बिसीमाहुम् ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफ़न्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम ◆ (273) ❖

अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव्-व अ़लानि-यतन् फ़-लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (274) अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमू-न इल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी य-तख़ब्बतुहुश्-शैतानु मिनल्मस्सि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्- बैअ़ु मिस्लुर्रिबा ✣ व अहल्लल्लाहुल्बै-अ़ व हर्रमर्रिबा, फ़-मन् जा-अहू मौअ़ि-ज़तुम् मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़-लहू मा स-ल-फ़, व अम्रुहू इलल्लाहि, व मन् अ़ा-द फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (275) यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स-दक़ाति, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् असीम (276) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (277) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व ज़रू मा बक़ि-य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (278) फ़-इल्लम् तफ़्अलू फ़अ्-ज़नू बि-हर्बिम् मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ़-लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून (279) व इन् का-न ज़ू अ़ुस्रतिन् फ़-नज़ि-रतुन् इला मैस-रतिन्, व अन्

وجه الله وما تنفقوا من خير يوف اليكم وانتم لا تظلمون
للفقراء الذين احصروا في سبيل الله لا يستطيعون
ضربا في الارض يحسبهم الجاهل اغنياء من التعفف
تعرفهم بسيمهم لا يسئلون الناس الحافا وما تنفقوا
من خير فان الله به عليم الذين ينفقون اموالهم
باليل والنهار سرا وعلانية فلهم اجرهم عند ربهم
ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون الذين ياكلون الربوا
لا يقومون الا كما يقوم الذي يتخبطه الشيطن من
المس ذلك بانهم قالوا انما البيع مثل الربوا واحل
الله البيع وحرم الربوا فمن جاءه موعظة من ربه
فانتهى فله ما سلف وامره الى الله ومن عاد فاولئك
اصحب النار هم فيها خلدون يمحق الله الربوا ويربي
الصدقت والله لا يحب كل كفار اثيم ان الذين امنوا
وعملوا الصلحت واقاموا الصلوة واتوا الزكوة لهم
اجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون
يايها الذين امنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربوا ان

منزل ١

तसद्दक़ू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(280)** वत्तक़ू यौमन् तुर्जऊ-न फ़ीहि इलल्लाहि, सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(281)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बिदैनिन् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़क्तुबूहु, वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम् बिल्अ़द्लि व ला यअ्-ब कातिबुन् अंय्यक्तु-ब कमा अ़ल्ल-महुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् वल्युम्लि-लिल्लज़ी अ़लैहिल्-हक़्क़ु वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन्, फ़-इन् कानल्लज़ी अ़लैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़अ़ीफ़न् औ ला यस्ततीअ़ु अंय्युमिल्-ल हु-व फ़ल्युम्लिल् वलिय्युहू बिल्अ़द्लि, वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् फ़-इल्लम् यकूना रजुलैनि फ़-रजुलुंव्वम्र-अतानि मिम्मन् तर्ज़ौ-न मिनश्शु-हदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा फ़तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़्रा, व ला यअ्बश्-शु-हदा-उ इज़ा मा दुऊ, व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् इला अ-जलिही, ज़ालिकुम् अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहा-दति व अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न तिजारतन् हाज़ि-रतन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा, व अश्हिदू इज़ा तबायअ्तुम् व ला युज़ार्-र कातिबुंव्-व ला शहीदुन्, व इन् तफ़्अ़लू फ़-इन्नहू फ़ुसूक़ुम् बिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह, व युअ़ल्लिमुकुमुल्लाहु, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(282)** व इन् कुन्तुम् अ़ला स-फ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम्

كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾ فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۖ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ
وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾ وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ
وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوا يَوْمًا
تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ
فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ
أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا
شَهِيدَيْنِ مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا
فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ
وَلَا تَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ
أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ إِلَّا

❖ रु. 38/8/6

मक़्बू-ज़तुन्, फ़-इन् अमि-न बअ़्ज़ुकुम् बअ़्ज़न् फ़ल्युअद्दिदल्लज़िअ्तुमि-न अमान-तहू वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू, व ला तक्तुमुश्शहाद-त, व मंय्यक्तुम्हा फ़-इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न अ़लीम (283) ❖

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (284) आ-मनर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून, कुल्लुन् आम-न बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही, ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिर्रुसुलिही, व क़ालू समिअ़्ना व अ-तअ़्ना ग़ुफ़्रान-क रब्बना व इलैकल् मसीर (285) ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा, लहा मा क-सबत् व अ़लैहा मक्त-सबत्, रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्-नसीना औ अख़्तअ्ना, रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहू अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़-त लना बिही वअ़्फ़ु अ़न्ना, वग़्फ़िर् लना, वर्हम्ना, अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन (286) ❖

تلك الرسل ٣ ٤٥ البقرة ٢

اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ۭ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ
كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ڛ وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ۭ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ
عَلٰي سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِھٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ۭ فَاِنْ اَمِنَ
بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ
رَبَّهٗ ۭ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۭ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ
اللّٰهُ ۭ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ۭ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۭ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ
اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا

منزل ١

3 सूरतु आलि इमरान 89

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 15326 अक्षर, 3542 शब्द 200 आयतें और 20 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल्-क़य्यूम (2) नज़्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा-त वल्-इन्जील (3) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़-लल् फ़ुर्क़ा-न, इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (4) इन्नल्ला-ह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ (5) हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै-फ़ यशा-उ, ला इला-ह इल्ला हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम (6) हुवल्लज़ी अन्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब मिन्हु आयातुम् मुह्कमातुन् हुन्-न उम्मुल्-किताबि व उ-ख़रु मु-तशाबिहातुन्, फ़-अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़-यत्तबिअ़ू-न मा तशा-ब-ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्- फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ़्वीलिही, व मा यअ़्लमु तअ़्वी-लहू इल्लल्लाहु ✣ वर्रासिख़ू-न फ़िल्-अ़िल्मि यक़ूलू-न आमन्ना बिही कुल्लुम् मिन् अ़िन्दि रब्बिना व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्अल्बाब (7) रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ़्-द इज़्

تلك الرسل ٣ ٤٦ ال عمران ٣

حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ
لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاغْفِرْ لَنَا ۗ وَارْحَمْنَا ۚ أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾
سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ آيَاتُهَا ٢٠٠ رُكُوعَاتُهَا ٢٠
الم ﴿١﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ﴿٣﴾
مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو
انتِقَامٍ ﴿٤﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا
فِي السَّمَاءِ ﴿٥﴾ هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦﴾ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ
فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ
ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا
اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ
رَبِّنَا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ

منزل ١

✣ व़. लाज़िम

हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क रह्म-तन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब **(8)** रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लियौमिल्-ला रै-ब फ़ीहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल् मीआद **(9)** ❖

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क हुम् वक़ूदुन्नार **(10)** क-दअ्बि आलि फ़िर्औ-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, वल्लाहु शदीदुल् अ़िक़ाब **(11)** क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व तुह्शरू-न इला जहन्न-म, व बिअ्सल् मिहाद **(12)** क़द् का-न लकुम् आ-यतुन् फ़ी फ़ि-अतैनिल् त-क़ता, फ़ि-अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़्रा काफ़ि-रतुंय्यरौ-नहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्-अ़ैनि, वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही मंय्यशा-उ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अ़िब्रतल्-लिउलिल् अब्सार **(13)** ज़ुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुश्श-हवाति मिनन्निसा-इ वल्बनी-न वल्-क़नातीरिल्-मुक़न्त-रति मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्व-मति वल्-अन्आमि वल्हर्सि, ज़ालि-क मताअ़ुल् हयातिद्दुन्या वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुल् मआब **(14)** क़ुल् अ-उनब्बिउकुम् बिख़ैरिम् मिन् ज़ालिकुम्, लिल्लज़ीनत्तक़ौ अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव्-व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अ़िबाद **(15)** अल्लज़ी-न

تلك الرسل ٣ ٤٧ اٰل عمرٰن ٣

اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾
رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ
الْمِيْعَادَ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ
لَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿١٠﴾
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ
وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي
الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ
وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ
وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ
حُسْنُ الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ
اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

منزل ١

यक़ूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर् लना जुनूबना व क़िना अ़ज़ाबन्नार (16) अस्साबिरी-न वस्सादिक़ी-न वल्क़ानिती-न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग़्फ़िरी-न बिल्अस्हार (17) शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व वल्मलाइ-कतु व उलुल्-अ़िल्मि क़ा-इमम् बिल्क़िस्ति, ला इला-ह इल्ला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल् हकीम ● (18) इन्नद्दी-न अ़िन्दल्लाहिल् इस्लामु, व मख़्त-लफ़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जा-अहुमुल् अ़िल्मु बग़्यम् बैनहुम, व मंय्यक्फ़ुर् बिआयातिल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल् हिसाब (19) फ़-इन् हाज्जू-क फ़क़ुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व मनित्त-ब-अ़नि, व क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्- किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न अ-अस्लम्तुम्, फ़-इन् अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ु, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अ़िबाद (20) ❖

इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिआया--तिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व यक़्तुलू-नल्लज़ी-न यअ़्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि फ़- बश्शिर्हुम् बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (21) उलाइ-कल्लज़ी-न हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (22) अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युद्औ़-न इला किताबिल्लाहि लि-यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम् मिन्हुम् व हुम् मुअ़्रिज़ून (23) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लन्

تلك الرسل ٣ — ٤٨ — آل عمران ٣

الذين يقولون ربنا اننا امنا فاغفر لنا ذنوبنا وقنا عذاب
النار ﴿١٦﴾ الصبرين والصدقين والقنتين والمنفقين و
المستغفرين بالاسحار ﴿١٧﴾ شهد الله انه لا اله الا هو
والملئكة واولوا العلم قائما بالقسط لا اله الا هو العزيز
الحكيم ﴿١٨﴾ ان الدين عند الله الاسلام وما اختلف الذين
اوتوا الكتب الا من بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم
ومن يكفر بايت الله فان الله سريع الحساب ﴿١٩﴾ فان
حاجوك فقل اسلمت وجهي لله ومن اتبعن وقل
للذين اوتوا الكتب والاميين ءاسلمتم فان اسلموا فقد
اهتدوا وان تولوا فانما عليك البلغ والله بصير بالعباد ﴿٢٠﴾
ان الذين يكفرون بايت الله ويقتلون النبين بغير حق
ويقتلون الذين يامرون بالقسط من الناس فبشرهم
بعذاب اليم ﴿٢١﴾ اولئك الذين حبطت اعمالهم في الدنيا
والاخرة وما لهم من نصرين ﴿٢٢﴾ الم تر الى الذين اوتوا
نصيبا من الكتب يدعون الى كتب الله ليحكم بينهم ثم
يتولى فريق منهم وهم معرضون ﴿٢٣﴾ ذلك بانهم قالوا لن

منزل ١

तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ्दूदातिंव्-व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून **(24)** फ़कै-फ़ इज़ा जमअ्नाहुम् लियौमिल् ला रै-ब फ़ीहि, व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(25)** क़ुलिल्लाहुम्-म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क मन् तशा-उ व तन्ज़िअुल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ व तुअिज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशा-उ, बि-यदिकल्-ख़ैरु, इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(26)** तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व तुख़्रिजुल् मय्यि-त मिनल्हय्यि व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(27)** ला यत्तख़िज़िल्-मुअ्मिनूनल् काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्- मुअ्मिनी-न व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क फ़लै-स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, व इलल्लाहिल्-मसीर **(28)** क़ुल् इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्लम्हुल्लाहु, व यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(29)** यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम् मा अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम् मुह्ज़रंव्-व मा अ़मिलत् मिन् सूइन् त-वद्दु लौ अन्-न बैनहा व बैनहू अ-मदम् बअ़ीदन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्अ़िबाद **(30)** ❖

क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला-ह फ़त्तबिअ़ूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम,

تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُودٰتٍ ۖ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَّا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۟ وَوُفِّيَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ
الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَ
تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ
وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ
تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ
مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِي
شَيْءٍ إِلَّآ أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَ
إِلَى اللّٰهِ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِنْ تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ
يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ أَمَدًا
بَعِيدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾ قُلْ
إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ

वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(31)** क़ुल् अतीअ़ुल्ला-ह वर्रसू-ल फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् काफ़िरीन **(32)** इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहंव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अ़िम्रा-न अ़लल् आ़लमीन **(33)** ज़ुर्रिय्यतम् बअ़्ज़ुहा मिम्-बअ़्ज़िन्, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम **(34)** इज़् क़ा-लतिम्र-अतु अ़िम्रा-न रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत़्नी मुहर्र-रन् फ़-तक़ब्बल् मिन्नी इन्न-क अन्तस्-समीअ़ुल् अ़लीम **(35)** फ़-लम्मा व-ज़अ़त्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ़्तुहा उन्सा, वल्लाहु अअ़्लमु बिमा व-ज़अ़त्, व लैसज़्ज़-करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा मर्य-म व इन्नी उअ़ीज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्य-तहा मिनश्-शैतानिर्-रजीम **(36)** फ़-तक़ब्ब-लहा रब्बुहा बि-क़बूलिन् ह-सनिंव्-व अम्ब-तहा नबातन् ह-सनंव्-व कफ़्फ़-लहा ज़-करिय्या, कुल्लमा द-ख़-ल अ़लैहा ज़-करिय्यल्- मिह्रा-ब व-ज-द अ़िन्दहा रिज़्क़न् क़ा-ल या मर्यमु अन्ना लकि हाज़ा, क़ालत् हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(37)** हुनालि-क दआ़ ज़-करिय्या रब्बहू क़ा-ल रब्बि हब् ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-बतन् इन्न-क समीअ़ुद्दुआ़-इ **(38)** फ़नादत्हुल् मलाइ-कतु व हु-व क़ा-इमुंय्युसल्ली फ़िल्-मिह्राबि अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बि-यह्या मुसद्दिक़म् बि-कलिमतिम् मिनल्लाहि व सय्यिदंव्-व हसूरंव्-व नबिय्यम् मिनस्सालिहीन **(39)** क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣١ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٢ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّ اٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٣ ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٣٤ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٣٥
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ
بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَ
اِنِّىْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝٣٦ فَتَقَبَّلَهَا
رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ
يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٧ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ
هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ۝٣٨ فَنَادَتْهُ
الْمَلٰۤئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّىْ فِى الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ
بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا
مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٣٩ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِىَ

गुलामुंव्-व क़द् ब-ल-ग़नियल् कि-बरु वम्र-अती आ़क़िरुन्, क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु यफ़अ़लु मा यशा-उ **(40)** क़ा-ल रब्बिज्अ़ल्ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न्, वज़्कुर् रब्ब-क कसीरंव्-व सब्बिह् बिल्-अ़शिय्यि वल्-इब्कार **(41)** ❖

व इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह-रकि वस्तफ़ाकि अ़ला निसा-इल् आ़लमीन **(42)** या मर्यमुक्नुती लिरब्बिकि वस्जुदी वर्कई मअ़र्राकिई़न **(43)** ज़ालि-क मिन् अम्बा-इल् ग़ैबि नूहीहि इलै-क, व मा कुन्-त लदैहिम इज़् युल्कू-न अक़्ला-महुम् अय्युहुम् यक्फ़ुलु मर्य-म व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून **(44)** इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्ला-ह युबश्शिरुकि बि-कलि-मतिम् मिन्हुस्मुहुल्-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि-रति व मिनल् मुक़र्रबीन **(45)** व युकल्लिमुन्ना-स फ़िल्महि्द व कह्लंव्-व मिनस्सालिहीन **(46)** क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुन्, क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशा-उ, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(47)** व युअ़ल्लिमुहुल्- किता-ब वल्-हिक्म-त वत्तौरा-त वल्-इन्जील **(48)** व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल अन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम्

الْكِبَرُ وَامْرَاَتِیْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ ۝۴۰ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً ؕ قَالَ اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَیَّامٍ
اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِیْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِیِّ وَالْاِبْكَارِ ۝۴۱
وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓىِٕكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفٰىكِ عَلٰی نِسَآءِ الْعٰلَمِیْنَ ۝۴۲ یٰمَرْیَمُ اقْنُتِیْ لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِیْ وَارْكَعِیْ مَعَ الرّٰكِعِیْنَ ۝۴۳ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ
نُوْحِیْهِ اِلَیْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَیُّهُمْ
یَكْفُلُ مَرْیَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ یَخْتَصِمُوْنَ ۝۴۴ اِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓىِٕكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ اللّٰهَ یُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖۗ اسْمُهُ الْمَسِیْحُ
عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ وَجِیْهًا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ۝۴۵
وَیُكَلِّمُ النَّاسَ فِی الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝۴۶ قَالَتْ رَبِّ
اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ وَلَدٌ وَّلَمْ یَمْسَسْنِیْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ
یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰۤی اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ۝۴۷
وَیُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِیْلَ ۝۴۸ وَرَسُوْلًا
اِلٰی بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ اَنِّیْ قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّیْۤ
اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّیْنِ كَهَیْـَٔةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَكُوْنُ

मिर्रब्बिकुम् अन्नी अख़्लुक़ु लकुम् मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि फ़-अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़-यकूनु तैरम् बि-इज़्निल्लाहि व उब्रिउल्-अक्म-ह वल्-अब्र-स व उह्यिल्मौता बि-इज़्निल्लाहि व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न फ़ी बुयूतिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(49)** व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व लि-उहिल्-ल लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी हुर्रि-म अ़लैकुम् व जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम् मिर्रब्बिकुम्, फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून **(50)** इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम **(51)** फ़-लम्मा अ-हस्-स अ़ीसा मिन्हुमुल् कुफ़्-र क़ा-ल मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि वश्हद् बि-अन्ना मुस्लिमून **(52)** रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्त-बअ्नर्-रसू-ल फ़क्तुब्ना म-अ़श्शाहिदीन **(53)** व म-करू व म-करल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल् माकिरीन ▲ **(54)** ❖

इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसा इन्नी मु-तवफ़्फ़ी-क व राफ़िअ़ु-क इलय्-य व मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअ़िलुल्लज़ीनत्-त-बऊ-क फ़ौक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला यौमिल्- क़ियामति सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-अह्कुमु बैनकुम् फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(55)** फ़-अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-उअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्- आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन **(56)** व अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम्

طَيْرًا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِ الْمَوْتٰى
بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۗ
إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ
عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾
إِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۗ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّا
أَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِيْ إِلَى اللّٰهِ ۗ قَالَ
الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾
رَبَّنَا اٰمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَ
مَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ۗ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰى إِنِّيْ
مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ
جَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾
فَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾

उजूरहुम्, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन **(57)** ज़ालि-क नत्लूहु अ़लै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल् हकीम **(58)** इन्-न म-स-ल अ़ीसा अ़िन्दल्लाहि क-म-सलि आद-म, ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन् सुम्-म क़ा-ल लहू कुन् फ़-यकून **(59)** अल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकुम् मिनल्-मुम्तरीन **(60)** फ़-मन् हाज्ज-क फ़ीहि मिम्-बअ़्दि मा जाअ-क मिनल् अ़िल्मि फ़क़ुल् तआ़लौ नद्अु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम्, सुम्-म नब्तहिल् फ़-नज्अ़ल्-लअ़्-नतल्लाहि अ़लल्काज़िबीन **(61)** इन्-न हाज़ा लहुवल् क़-ससुल्-हक़्क़ु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु, व इन्नल्ला-ह ल-हुवल्- अ़ज़ीज़ुल् हकीम **(62)** फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिल्मुफ़्सिदीन **(63)** ❖

कुल् या अह्लल्-किताबि तआ़लौ इला कलि-मतिन् सवा-इम् बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़्बु-द इल्लल्ला-ह व ला नुश्रि-क बिही शैअंव्-व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़्ज़ुना बअ़्ज़न् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़ूलुश्-हदू बिअन्ना मुस्लिमून **(64)** या अह्लल्-किताबि लि-म तुहाज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा उन्ज़ि-लतित्तौरातु वल्-इन्जीलु इल्ला मिम्-बअ़्दिही, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(65)** हा-अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अ़िल्मुन् फ़लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अ़िल्मुन्, वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून **(66)** मा का-न इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व लाकिन् का-न हनीफ़म् मुस्लिमन्, व मा का-न

تلك الرسل ٣ ٥٣ ال عمران ٣

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى
عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ
مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ
وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ
لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَ
مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى
كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ
شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ
فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ
تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا
مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ

منزل

मिनल् मुश्रिकीन (67) इन्-न औलन्नासि बि-इब्राही-म लल्लज़ीनत्त-बअूहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू, वल्लाहु वलिय्युल् मुअ्मिनीन (68) वद्दत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ युज़िल्लू-नकुम, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यश्अुरून (69) या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून (70) या अह्लल्-किताबि लि-म तल्बिसूनल् हक़्-क़ बिल्-बातिलि व तक्तुमूनल्-हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्लमून (71) ❖

व क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह्लिल्-किताबि आमिनू बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल अ़लल्लज़ी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आख़ि-रहू लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (72) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ दीनकुम, कुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अंय्युअ्ता अ-हदुम् मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अ़िन्-द रब्बिकुम्, कुल् इन्नल् फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (73) यख़्तस्सु बिरह्मतिही मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम (74) व मिन् अह्लिल्-किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बिक़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै-क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारिल् ला युअद्दिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अ़लैहि क़ा-इमन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लै-स अ़लैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ्लमून (75) बला मन् औफ़ा बि-अ़ह्दिही वत्तक़ा फ़-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन (76) इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न

لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ
وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ
اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ
اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ
اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ
تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ
لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا
لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

बि-अ़ह्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क ला ख़ला-क़ लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्-क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(77)** व इन्-न मिन्हुम् ल-फ़रीक़य्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि लि-तह्सबूहु मिनल्- किताबि व मा हु-व मिनल्-किताबि व यक़ूलू-न हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि व मा हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब व हुम् यअ़्लमून **(78)** मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युअ्ति-यहुल्लाहुल् किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यक़ू-ल लिन्नासि कूनू अ़िबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम् तुअ़ल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून **(79)** व ला यअ्मु-रकुम् अन् तत्तख़िज़ुल्- मलाइ-क-त वन्नबिय्यी-न अर्बाबन्, अ-यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ़्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून **(80)** ❖

व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसाक़न्-नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव्-व हिक्मतिन् सुम्-म जा-अकुम् रसूलुम् मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़कुम् लतुअ्मिनुन्-न बिही व ल-तन्सुरुन्नहू, क़ा-ल अ-अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अ़ला ज़ालिकुम् इस्री, क़ालू अक़्रर्ना, क़ा-ल फ़श्हदू व अ-न म-अ़कुम् मिनश्शाहिदीन **(81)** फ़-मन् तवल्ला बअ़्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून **(82)** अ-फ़ग़ै-र दीनिल्लाहि यब्ग़ू-न व लहू अस्ल-म

تلك الرسل ٣ ٥٥ آل عمران ٣

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ
اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ
لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ
وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ۭ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ ع
وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ
ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۭ
قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰي ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ۭ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ۭ
قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ فَمَنْ تَوَلّٰى
بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ

منزل ١

मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव्-व कर्हंव्-व इलैहि युर्जअून (**83**) क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल अ़लैना व मा उन्ज़ि-ल अ़ला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अ़ीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (**84**) व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन्हु व हु-व फ़िल्-आख़ि-रति मिनल् ख़ासिरीन (**85**) कै-फ़ यह्दिल्लाहु क़ौमन् क-फ़रू बअ़्-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसू-ल हक़्क़ुंव्-व जा-अहुमुल्बय्यिनातु, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (**86**) उलाइ-क जज़ाउहुम् अन्-न अ़लैहिम् लअ़्-नतल्लाहि वल्मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन (**87**) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (**88**) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (**89**)

وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ
يُرْجَعُوْنَ ۝ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ
عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ
وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۠ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ
الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ
الْخٰسِرِيْنَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ
وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا
يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ
لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰۗىِٕكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا
مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ
تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الضَّاۗلُّوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَ
هُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ
افْتَدٰى بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ ع

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बअ़्-द ईमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्-लन् तुक़्ब-ल तौबतुहुम् व उलाइ-क हुमुज़्ज़ाल्लून (**90**) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन् अ-हदिहिम् मिल्उल्-अर्ज़ि ज़-हबंव्-व लविफ़्तदा बिही, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुंव्-व मा लहुम् मिन्नासिरीन (**91**) ❖

चौथा पारः लन् तनालू

सूरतु आलि इमरान (आयत 92 से 200)

लन् तनालुल्बिर्-र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बू-न, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम **(92)** कुल्लुत्तआ़मि का-न हिल्लल् लि-बनी इस्राई-ल इल्ला मा हर्र-म इस्राईलु अ़ला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि अन् तुनज़्ज़लत्तौरातु, क़ुल् फ़अ्तू बित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(93)** फ़-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि-ब मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(94)** क़ुल् स-दक़ल्लाहु फ़त्तबिअ़ू मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन **(95)** इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुज़ि-अ़ लिन्नासि लल्लज़ी बि-बक्क-त मुबा-रकव्ं-व हुदल्-लिल्आ़लमीन **(96)** फ़ीहि आयातुम् बय्यिनातुम् मक़ामु इब्राही-म, व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन्, व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ़ इलैहि सबीलन्, व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल् आ़लमीन **(97)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ़्मलून **(98)** क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अ़ि-वजंव्-व अन्तुम् शु-हदा-उ, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून **(99)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअ़ू फ़रीक़म्

لن تنالوا ٤ — ٥٧ — آل عمران ٣

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا
لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ
قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۟ فَاتَّبِعُوْا
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّ
اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى
لِّلْعٰلَمِيْنَ ۚ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ
كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ
اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ
عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَ
مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا
فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब यरुद्दूकुम् बअ़्-द ईमानिकुम् काफ़िरीन (100) व कै-फ़ तक्फ़ुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू, व मंय्यअ़्तसिम् बिल्लाहि फ़-क़द् हुदि-य इला सिरातिम् मुस्तक़ीम (101) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (102) वअ़्तसिमू बि-हब्लिल्लाहि जमीअ़ंव्-व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ़्दा-अन् फ़-अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम् फ़-अस्बह्तुम् बिनिअ़्मतिही इख़्वानन् व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ़्रतिम् मिनन्नारि फ़-अन्क़-ज़कुम् मिन्हा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तह्तदून (103) वल्तकुम् मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अ़ू-न इलल्ख़ैरि व यअ़्मुरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि, व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून (104) व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू मिम्-बअ़्दि मा जा-अहुमुल्-बय्यिनातु, व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (105) यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन् फ़-अम्मल्लज़ीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम्, अ-कफ़र्तुम् बअ़्-द ईमानिकुम् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (106) व अम्मल्लज़ीनब्- -यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़-फ़ी रह्मतिल्लाहि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (107) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल् लिल्आ़लमीन (108) व

كٰفرين ۝ وكيف تكفرون وانتم تتلى عليكم ايٰت الله و
فيكم رسوله ومن يعتصم بالله فقد هدي الى صراط
مستقيم ۝ يايها الذين امنوا اتقوا الله حق تقته ولا ع
تموتن الا وانتم مسلمون ۝ واعتصموا بحبل الله جميعا
ولا تفرقوا واذكروا نعمت الله عليكم اذ كنتم اعداء
فالف بين قلوبكم فاصبحتم بنعمته اخوانا وكنتم
على شفا حفرة من النار فانقذكم منها كذلك يبين
الله لكم ايٰته لعلكم تهتدون ۝ ولتكن منكم امة
يدعون الى الخير ويامرون بالمعروف وينهون عن
المنكر واولٰئك هم المفلحون ۝ ولا تكونوا كالذين
تفرقوا واختلفوا من بعد ما جاءهم البينٰت واولٰئك
لهم عذاب عظيم ۝ يوم تبيض وجوه وتسود وجوه
فاما الذين اسودت وجوههم اكفرتم بعد ايمانكم
فذوقوا العذاب بما كنتم تكفرون ۝ واما الذين
ابيضت وجوههم ففي رحمة الله هم فيها خٰلدون ۝
تلك ايٰت الله نتلوها عليك بالحق وما الله يريد ظلما

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअुल् उमूर (109) ❖

कुन्तुम् ख़ौ-र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व तुअ्मिनू-न बिल्लाहि, व लौ आम-न अह्लुल्-किताबि लका-न ख़ैरल्लहुम, मिन्हुमुल् मुअ्मिनू-न व अक्सरुहुमुल् फ़ासिक़ून (110) लंय्यज़ुर्रूकुम् इल्ला अज़न्, व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लूकुमुल् अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून (111) ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू इल्ला बि-हब्लिम् मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बाऊ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुल्-मस्क-नतु, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्- अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िन्, ज़ालि-क बिमा अ़-सव्-व कानू यअ्तदून (112) लैसू सवाअन्, मिन् अह्लिल्-किताबि उम्मतुन् क़ाइ-मतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि आनाअल्लैलि व हुम् यस्जुदून (113) युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति, व उलाइ-क मिनस्सालिहीन (114) व मा यफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-लंय्युक्फ़रूहु, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्- मुत्तक़ीन (115) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (116) म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फ़ी

لن تنالوا ٤ ٥٩ ال عمرٰن ٣

للعلمين ۝ ولله ما في السموت وما في الارض ۚ والى الله
ترجع الامور ۝ كنتم خير امة اخرجت للناس تامرون
بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله ۗ ولو امن
اهل الكتب لكان خيرا لهم ۚ منهم المؤمنون واكثرهم
الفسقون ۝ لن يضروكم الا اذى ۚ وان يقاتلوكم يولوكم
الادبار ۗ ثم لا ينصرون ۝ ضربت عليهم الذلة اين ما ثقفوا
الا بحبل من الله وحبل من الناس وباءو بغضب من
الله وضربت عليهم المسكنة ۚ ذلك بانهم كانوا يكفرون
بايت الله ويقتلون الانبياء بغير حق ۚ ذلك بما عصوا و
كانوا يعتدون ۝ ليسوا سواء ۚ من اهل الكتب امة قائمة
يتلون ايت الله اناء اليل وهم يسجدون ۝ يؤمنون بالله
واليوم الاخر ويامرون بالمعروف وينهون عن المنكر و
يسارعون في الخيرت ۚ واولئك من الصلحين ۝ وما يفعلوا
من خير فلن يكفروه ۗ والله عليم بالمتقين ۝ ان الذين
كفروا لن تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله
شيئا ۚ واولئك اصحب النار ۚ هم فيها خلدون ۝ مثل ما

منزل

हाज़िहिल् हयातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर्-स क़ौमिन् ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-अह्ल-कत्हु, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(117)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू बितान-तम् मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन्, वद्दू मा अ़नित्तुम् क़द् ब-दतिल्- बग़्ज़ा-उ मिन् अफ़्वाहिहिम् व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति इन् कुन्तुम् तअ्क़िलून **(118)** हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि कुल्लिही व इज़ा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल्-अनामि-ल मिनल्-ग़ैज़ि, क़ुल् मूतू बिग़ैज़िकुम्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(119)** इन् तम्सस्कुम् ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्कुम् सय्यि-अतुंय्यफ़्रहू बिहा, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यजुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह बिमा यअ्मलू-न मुहीत **(120)** ❖

लन تنالوا ٤   ٦٠   آل عمران ٣

يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ
حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ
لٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا
بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ
بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚۖ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ
وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا ۖۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ
مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ اِنْ
تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ
وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ
مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ

منزل

व इज़् ग़दौ-त मिन् अह्लि-क तुबव्विउल्-मुअ्मिनी-न मक़ाअि-द लिल्क़ितालि, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम **(121)** इज़् हम्मत्ता-इ-फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला वल्लाहु वलिय्युहुमा, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून **(122)** व लक़द् न-स-रकुमुल्लाहु बि-बद्रिंव्-व अन्तुम् अज़िल्लतुन् फ़त्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(123)** इज़् तक़ूलु लिल्- मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम्

रब्बुकुम् बि-सलासति आलाफ़िम् मिनल्- मलाइ-कति मुन्ज़लीन **(124)** बला इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद्कुम् रब्बुकुम् बि-ख़म्सति आलाफ़िम् मिनल् मलाइ-कति मुसव्विमीन ◆ **(125)** व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् व लि-ततमइन्-न क़ुलूबुकुम् बिही, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अिन्दिल्लाहिल् अज़ीज़िल् हकीम **(126)** लि-यक़्त-अ त-रफ़म् मिनल्लज़ी-न क-फ़रू औ यक्बि-तहुम् फ़-यन्क़लिबू ख़ा-इबीन **(127)** लै-स ल-क मिनल् अम्रि शैउन् औ यतू-ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़ि-बहुम् फ़-इन्नहुम् ज़ालिमून **(128)** व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(129)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्आफ़म् मुज़ा-अ-फ़तन् वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(130)** वत्तक़ुन्-नारल्लती उअ़िद्दत् लिल्-काफ़िरीन **(131)** व अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(132)** व सारिअू इला मग़्फ़ि-रतिम् मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्- समावातु वल्-अर्ज़ु उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन **(133)** अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ वज़्ज़र्रा-इ वल्काज़िमीनल्-ग़ै-ज़ वल्आफ़ी-न अ़निन्नासि, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(134)** वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् औ ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग़्फ़रू लिज़ुनूबिहिम्, व

اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ۞
بَلٰٓى اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ۞ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۙ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ۞ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۞ وَ
لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۞ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۞ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۞ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۞ الَّذِيْنَ
يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا
فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ

मंय्यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्लल्लाहु व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़-अ़लू व हुम् यअ़्लमून **(135)** उलाइ-क जज़ाउहुम् मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व निअ़्-म अज्रुल् आ़मिलीन **(136)** क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् सु-ननुन् फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़कि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन **(137)** हाज़ा बयानुल्-लिन्नासि व हुदंव्-व मौअ़ि-ज़तुल् लिल्मुत्तक़ीन **(138)** व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ़्लौ-न इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(139)** इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सल्क़ौ-म क़र्हुम् मिस्लुहू, व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि व लि-यअ़्-लमल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शु-हदा-अ, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन **(140)** व लियुमह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्ह-क़ल् काफ़िरीन **(141)** अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ़्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व यअ़्-लमस्साबिरीन **(142)** व ल-क़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु फ़-क़द् रऐतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून **(143)** ◆

व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अ़ला अअ़्क़ाबिकुम्, व मंय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबैहि फ़-लंय्यज़ुर्रल्ला-ह शैअन्, व स-यज्ज़िल्लाहुश्शाकिरीन **(144)** व मा का-न लि-नफ़्सिन् अन् तमू-त इल्ला

وَمَن يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَ
هُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝
قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى
وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ
الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ
مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا
يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ
الْكَافِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ
الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمَنَّوْنَ
الْمَوْتَ مِن قَبْلِ أَن تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ ۝ ع
وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۚ أَفَإِن مَّاتَ
أَوْ قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ ۚ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ
فَلَن يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝ وَمَا كَانَ

बि-इज़्निल्लाहि किताबम् मुअज्जलन्, व मंय्युरिद् सवाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मंय्युरिद् सवाबल्-आख़ि-रति नुअ्तिही मिन्हा, व स-नज्ज़िश्शाकिरीन **(145)** व क-अय्यिम् मिन् नबिय्यिन् क़ा-त-ल म-अ़हू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् फ़मा व-हनू लिमा असाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफ़ू व मस्तकानू, वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन **(146)** व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्-क़ौमिल् काफ़िरीन **(147)** फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आख़ि-रति, वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन **(148)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअुल्लज़ी-न क-फ़रू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन **(149)** बलिल्लाहु मौलाकुम् व हु-व ख़ैरुन्-नासिरीन **(150)** सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु, व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन **(151)** व ल-क़द् स-द-क़कुमुल्लाहु वअ्दहू इज़् तहुस्सूनहुम् बि-इज़्निही हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ्तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्-बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू-न, मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल्-आख़ि-र-त सुम्-म स-र-फ़कुम् अ़न्हुम् लि-यब्तलि-यकुम् व ल-क़द् अ़फ़ा अ़न्कुम्, वल्लाहु ज़ू

لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ
ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ
مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۞ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِىٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَاۤ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا
ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۞ وَمَا
كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا
فِىْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۞
فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۞ بَلِ اللّٰهُ
مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۞ سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ
مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۞ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ
اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ
تَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ

फ़ज़्लिन् अ़लल् मुअ्मिनीन **(152)** इज़् तुस्अ़िदू-न व ला तल्वू-न अ़ला अ-हदिंव्-वर्रसूलु यद्अूकुम् फ़ी उख़्राकुम् फ़-असाबकुम् ग़म्मम्-बिग़म्मिल् लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम, वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ्मलून **(153)** सुम्-म अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिम्-बअ्दिल्-ग़म्मि अ-म-नतन् नुआसंय्यग़्शा ता-इ-फ़तम् मिन्कुम् व ता-इ-फ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नू-न बिल्लाहि ग़ैरल्-हक़्क़ि ज़न्नल्-जाहिलिय्यति, यक़ूलू-न हल्-लना मिनल्-अम्रि मिन् शैइन्, क़ुल् इन्नल्-अम्-र कुल्लहू लिल्लाहि, युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल-क, यक़ूलू-न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम् मा क़ुतिल्ना हाहुना, क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतीकुम् ल-ब-रज़ल्लज़ी-न कुति-ब अ़लैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअ़िहिम् व लि-यब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लियु-मह्हि-स मा फ़ी क़ुलूबिकुम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(154)** इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-तक़ल् जम्आ़नि इन्नमस्तज़ल्लहुमुश्शैतानु बि-बअ्ज़ि मा क-सबू व ल-क़द् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हुम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम **(155)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ालू लि-इख़्वानिहिम् इज़ा ज़-रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्-लौ कानू अ़िन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू लि-यज्अ़लल्लाहु

صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو
فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝ إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰ
أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ
لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً
نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ ۖ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ
هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ ۗ
يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ
لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُل لَّوْ كُنتُمْ فِي
بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ
وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا

ज़ालि-क हस्र-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु युह्यी व युमीतु, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर **(156)** व ल-इन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल-मग़्फ़ि-रतुम् मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम् मिम्मा यज्मअून **(157)** व ल-इम्- मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल-इलल्लाहि तुह्शरून **(158)** फ़बिमा रह्मतिम् मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् व लौ कुन्-त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलि-क फ़अ्फ़ु अ़न्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुम् व शाविर्हुम् फ़िल्-अम्रि फ़-इज़ा अ़ज़म्-त फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मु-तवक्किलीन **(159)** इंय्यन्सुर्कुमुल्लाहु फ़ला ग़ालि-ब लकुम् व इंय्यख़्ज़ुल्कुम् फ़-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्-बअ्दिही, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून **(160)** व मा का-न लि-नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल, व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल्-क़ियामति सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून **(161)** अ-फ़ मनित्त-ब-अ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि-स-ख़तिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर **(162)** हुम् द-रजातुन् अ़िन्दल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्मलून **(163)** ल-क़द् मन्नल्लाहु अ़लल् मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ़-स फ़ीहिम् रसूलम्-मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् मुबीन ● **(164)** अ-व-

فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَّوْ كَانُوا عِندَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا
لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَ
لَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ۖ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانفَضُّوا
مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي
الْأَمْرِ ۖ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝
إِن يَنصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي
يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَغُلَّ ۚ وَمَن يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَنِ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَن بَاءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ ۚ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ هُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ

लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा क़ुल्तुम् अन्ना हाज़ा, क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(165)** व मा असाबकुम् यौमल्-तक़ल् जमूआनि फ़बि-इज़्निल्लाहि व लि-यअ्-लमल् मुअ्मिनीन **(166)** व लि-यअ्-लमल्लज़ी-न नाफ़क़ू व क़ी-ल लहुम् तआ़लौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अू, क़ालू लौ नअ्लमु क़ितालल्-लत्त-बअ्नाकुम, हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल्-ईमानि यक़ूलू-न बिअफ़्वाहिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु अअ्लमु बिमा यक्तुमून **(167)** अल्लज़ी-न क़ालू लि-इख़्वानिहिम् व क़-अ़दू लौ अताअूना मा क़ुतिलू, क़ुल् फ़द्रऊ अ़न् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(168)** व ला तह्सबन्नल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन्, बल् अह्याउन् अिन्-द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून **(169)** फ़रिही-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व यस्तब्शिरू-न बिल्लज़ी-न लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ✣ **(170)** यस्तब्शिरू-न बिनिअ्मतिम् मिनल्लाहि व फ़ज़्लिंव्-व अन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल् मुअ्मिनीन **(171)** ❖

अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्-बअ्दि मा असाबहुमुल्क़र्हु, लिल्लज़ी-न अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अ़ज़ीम **(172)** अल्लज़ी-न क़ा-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द्

لن تنالوا ٤ ٦٦ آل عمران ٣

والحكمة وان كانوا من قبل لفي ضلل مبين ﴿١٦٤﴾ اولما
اصابتكم مصيبة قد اصبتم مثليها قلتم انى هذا قل
هو من عند انفسكم ان الله على كل شيء قدير ﴿١٦٥﴾ وما
اصابكم يوم التقى الجمعن فباذن الله وليعلم المؤمنين ﴿١٦٦﴾
وليعلم الذين نافقوا وقيل لهم تعالوا قاتلوا في سبيل
الله او ادفعوا قالوا لو نعلم قتالا لاتبعنكم هم للكفر
يومئذ اقرب منهم للايمان يقولون بافواههم ما ليس
في قلوبهم والله اعلم بما يكتمون ﴿١٦٧﴾ الذين قالوا لاخوانهم
وقعدوا لو اطاعونا ما قتلوا قل فادرءوا عن انفسكم
الموت ان كنتم صدقين ﴿١٦٨﴾ ولا تحسبن الذين قتلوا في
سبيل الله امواتا بل احياء عند ربهم يرزقون ﴿١٦٩﴾ فرحين
بما اتىهم الله من فضله ويستبشرون بالذين لم يلحقوا
بهم من خلفهم الا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿١٧٠﴾
يستبشرون بنعمة من الله وفضل وان الله لا يضيع
اجر المؤمنين ﴿١٧١﴾ الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما
اصابهم القرح للذين احسنوا منهم واتقوا اجر عظيم ﴿١٧٢﴾

منزل

ज-मअू लकुम् फ़ख़्शौहुम् फ-ज़ादहुम् ईमानंव्-व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ्मल् वकील **(173)** फ़न्क़-लबू बिनिअ्मतिम्- मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्-लम् यम्सस्हुम् सूउंव्-वत्त-बअू रिज़्वानल्लाहि, वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़ज़ीम **(174)** इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया-अहू फ़ला तख़ाफ़ूहुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(175)** व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि इन्नहुम् लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन्, युरीदुल्लाहु अल्ला यज्अ-ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्-आख़िरति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(176)** इन्नल्लज़ीनश्-त-रवुल्-कुफ़्-र बिल्-ईमानि लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(177)** व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल् लिअन्फ़ुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लि-यज़्दादू इस्मन् व लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन **(178)** मा कानल्लाहु लि-य-ज़रल् मुअ्मिनी-न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि हत्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि, व मा कानल्लाहु लियुत्लि-अ़कुम् अ़लल्-ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशा-उ फ़-आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ़-लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीम **(179)** व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम्, बल् हु-व शर्रुल्लहुम्, सयुतव्वक़ू-न मा बख़िलू बिही यौमल्-क़ियामति, व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु बिमा

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ
فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝ فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ
مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ
أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا
اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن
يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا
إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مَّا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ
عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ
اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِن رُّسُلِهِ
مَن يَشَاءُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ
مِن فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُم بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ

तअ्मलू-न ख़बीर (180) ❖

ल-क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह्नु अग़्निया-उ ✣ सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल् हरीक़ (181) ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल् लिल्-अ़बीद (182) अल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अ़हि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न लि-रसूलिन् हत्ता यअ्ति-यना बिक़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु, क़ुल् क़द् जा-अकुम् रुसुलुम् मिन् क़ब्ली बिल्-बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़लि-म क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (183) फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़द् कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क जाऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्-किताबिल् मुनीर (184) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ा-इ-क़तुल्मौति, व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न उजू-रकुम् यौमल्-क़ियामति, फ़-मन् ज़ुह्ज़ि-ह अ़निन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़, व मल्हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअ़ुल् ग़ुरूर (185) लतुब्लवुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, व ल-तस्मअ़ुन्-न मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लज़ी-न अश्रकू अज़न् कसीरन्, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़-इन्-न ज़ालि-क मिन् अ़ज़्मिल् उमूर (186) व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मिसाक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब लतु-बय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू

مَا بَخِلُوا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَاۗءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ
الْاَنْۢبِيَاۗءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝
اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى
يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَاۗءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ
قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْھُمْ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
جَاۗءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ
الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ
النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ
الْغُرُوْرِ ۝ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى
كَثِيْرًا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝
وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ

फ़-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़-बिअ्-स मा यश्तरून **(187)** ला तह्सबन्नल्लज़ी-न यफ़्रहू-न बिमा अतव्-व युहिब्बू-न अंय्युह्मदू बिमा लम् यफ़्अ़लू फ़ला तह्सबन्नहुम् बि-मफ़ाज़तिम् मिनल्-अ़ज़ाबि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(188)** व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(189)** ❖

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लिउलिल् अल्बाब **(190)** अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव्- व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिहिम् व य-तफ़क्करू-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा ख़लक़्-त हाज़ा बातिलन् सुब्हान-क फ़क़िना अ़ज़ाबन्नार **(191)** रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन्-ना-र फ़-क़द् अख़्ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार **(192)** रब्बना इन्नना समिअ्ना मुनादियंय्युनादी लिल्ईमानि अन् आमिनू बि-रब्बिकुम् फ़-आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अ़न्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअ़ल् अब्रार **(193)** रब्बना व आतिना मा व-अ़त्तना अ़ला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति, इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआ़द **(194)** फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअ़ु अ़-म-ल आ़मिलिम् मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा बअ्‌ज़ुकुम् मिम्-बअ्‌ज़िन् फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम्

وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا
قَلِيْلًا فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ
بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ
بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ فِيْ
خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ
لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّ
عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝
رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ
مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ
اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا
وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَ
لَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ فَاسْتَجَابَ
لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ

सय्यिआतिहिम् व ल-उद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु सवाबम् मिन् अिन्दिल्लाहि, वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुस्सवाब **(195)** ला यग़ुर्रन्न-क त-क़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िल्बिलाद **(196)** मताअुन् क़लीलुन्, सुम्-म मअ्वाहुम् जहन्न-मु, व बिअ्सल् मिहाद **(197)** लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम् मिन् अिन्दिल्लाहि, व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुल्-लिल्-अब्रार ▲ **(198)** व इन्-न मिन् अह्लिल्-किताबि ल-मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् ख़ाशिअी-न लिल्लाहि ला यश्तरू-न बिआयातिल्लाहि स-मनन् क़लीलन्, उलाइ-क लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम्, इन्नल्ला-ह सरीअुल् हिसाब **(199)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू, वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(200)** ❖

دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
ثَوَابًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝
لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ
ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا
رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ ۝ وَإِنَّ
مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ
وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَ
نِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ

4 सूरतुन्निसा-इ 92

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 16667 अक्षर, 3720 शब्द, 177 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

बिास्मल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ख़-ल-क़

मिन्हा ज़ौजहा व बस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव्- व निसाअन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसाअलू-न बिही वल्अर्हा-म, इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम् रक़ीबा (1) व आतुल्-यतामा अम्वालहुम् व ला त-तबद्दलुल्ख़बी-स बित्तय्यिबि व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम्, इन्नहू का-न हूबन् कबीरा (2) व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा-इ मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़ फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ़्दिलू फ़वाहि-दतन् औ मा म-लकत् ऐमानुकुम्, ज़ालि-क अद्ना अल्ला तअ़ूलू (3) व आतुन्-निसा-अ सदुक़ातिहिन्-न निह्ल-तन्, फ़-इन् तिब्-न लकुम् अ़न् शैइम् मिन्हु नफ़्सन् फ़कुलूहु हनीअम्-मरीआ (4) व ला तुअ्तुस्सु-फ़हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ़लल्लाहु लकुम् क़ियामंव्-वर्ज़ुक़ूहुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम् मअ़्रूफ़ा (5) वब्तलुल्-यतामा हत्ता इज़ा ब-लग़ुन्निका-ह फ़-इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फ़द्फ़अ़ू इलैहिम् अम्वालहुम् व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव्-व बिदारन् अंय्यक्बरू, व मन् का-न

النسآء ٤ ٧١ لن تنالوا ٤

كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝١ وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ
حُوبًا كَبِيرًا ۝٢ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَانْكِحُوا
مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ ۖ فَإِنْ خِفْتُمْ
أَلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَلَّا
تَعُولُوا ۝٣ وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَيْءٍ مِنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَرِيئًا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا
السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ
فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝٥ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا
إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ
وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا
عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ
الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۝٧ وَإِذَا

منزل ١

ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ़्फ़िफ़् व मन् का-न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिल्मअ़्रूफ़ि, फ़-इज़ा द-फ़अ़्तुम् इलैहिम् अम्वालहुम् फ़-अश्हिदू अ़लैहिम्, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा (6) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न व लिन्निसा-इ नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न मिम्मा क़ल्-ल मिन्हु औ कसु-र, नसीबम् मफ़्रूज़ा (7) व इज़ा ह-ज़रल् क़िस्म-त उलुल्क़ुर्बा वल्-यतामा वल्मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम्

मअ्रूफ़ा **(8)** वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्यतन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अ़लैहिम् फ़ल्यत्तक़ुल्ला-ह वल्-यक़ूलू क़ौलन् सदीदा **(9)** इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् नारन्, व स-यस्लौ-न सअ़ीरा **(10)** ❖

यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम्, लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल्-उन्सयैनि फ़-इन् कुन्-न निसाअन् फ़ौक़स्-नतैनि फ़-लहुन्-न सुलुसा मा त-र-क व इन् कानत् वाहि-दतन् फ़-लहन्निस्फ़ु, व लि-अ-बवैहि लिकुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् फ़-इल्लम् यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरि-सहू अ-बवाहु फ़-लिउम्मिहिस्सुलुसु फ़-इन् का-न लहू इख़्वतुन् फ़-लिउम्मिहिस्सुदुसु मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्-यूसी बिहा औ दैनिन्, आबाउकुम् व अब्नाउकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अ़न्, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा **(11)** व लकुम् निस्फ़ु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् युकुल्लहुन्-न व-लदुन् फ़-इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़-लकुमुर्रुबुअ़ु मिम्मा तरक्-न मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसी-न बिहा औ दैनिन्, व लहुन्नर्रुबुअ़ु मिम्मा तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन् फ़-इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ़-लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्-बअ्दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औ दैनिन्, व इन् का-न रजुलुंय्यू-रसु कलाल-तन् अविम्र-अतुंव्-व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन् फ़-लिकुल्लि

لن تنالوا ٤ ٧٢ النساء ٤

حضر القسمة اولوا القربى واليتمى والمسكين فارزقوهم
منه وقولوا لهم قولا معروفا ۝ وليخش الذين لو تركوا
من خلفهم ذرية ضعفا خافوا عليهم فليتقوا الله
وليقولوا قولا سديدا ۝ ان الذين ياكلون اموال اليتمى
ظلما انما ياكلون في بطونهم نارا وسيصلون سعيرا ۝ ع
يوصيكم الله في اولادكم للذكر مثل حظ الانثيين
فان كن نساء فوق اثنتين فلهن ثلثا ما ترك وان
كانت واحدة فلها النصف ولابويه لكل واحد منهما
السدس مما ترك ان كان له ولد فان لم يكن له ولد
وورثه ابوه فلامه الثلث فان كان له اخوة فلامه
السدس من بعد وصية يوصي بها او دين اباؤكم و
ابناؤكم لا تدرون ايهم اقرب لكم نفعا فريضة من
الله ان الله كان عليما حكيما ۝ ولكم نصف ما ترك
ازواجكم ان لم يكن لهن ولد فان كان لهن ولد فلكم
الربع مما تركن من بعد وصية يوصين بها او دين
ولهن الربع مما تركتم ان لم يكن لكم ولد فان كان

منزل ١

वाहिदिम् मिन्हुमस्सुदुसु फ़-इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम् शु-रका-उ फ़िस्सुलुसि मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा औ दैनिन् ग़ै-र मुज़ार्रिन् वसिय्यतम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हलीम **(12)** तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम **(13)** व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू व य-तअ़द्-द हुदू-दहू युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन **(14)** ❖

वल्लाती यअ्तीनल्-फ़ाहि-श-त मिन्निसा-इकुम् फ़स्तश्हिदू अ़लैहिन्-न अर्ब-अ़तम् मिन्कुम् फ़-इन् शहिदू फ़-अम्सिकूहुन्-न फ़िल्बुयूति हत्ता य-तवफ़्फ़ाहुन्नल्मौतु औ यज्अ़लल्लाहु लहुन्-न सबीला **(15)** वल्लज़ानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़-आज़ूहुमा फ़-इन् ताबा व अस्लहा फ़-अअ्रिज़ू अ़न्हुमा, इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा **(16)** इन्नमत्तौबतु अ़लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् क़रीबिन् फ़-उलाइ-क यतूबुल्लाहु अ़लैहिम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(17)** व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सय्यिआति हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दहुमुल्मौतु का-ल इन्नी तुब्तुल्-आ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुफ़्फ़ारुन्, उलाइ-क अअ्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(18)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा-अ

لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ
امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ
كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ
وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ ۗ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَ
ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ
حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٤﴾
وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ
أَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ
يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا
مِنْكُمْ فَآذُوهُمَا ۖ فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿١٦﴾ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ
السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ

करहन्, व ला तअ्ज़ुलूहुन्-न लि-तज़्हबू बि-बअ्ज़ि मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यिनतिन् व आशिरूहुन्-न बिल्- मअ्रूफ़ि फ़-इन् करिह्तुमूहुन्-न फ़-अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्अ़लल्लाहु फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा **(19)** व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा-ल ज़ौजिम् मका-न ज़ौजिंव्-व आतैतुम् इह्दाहुन्-न क़िन्तारन् फ़ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन्, अ-तअ्ख़ुज़ूनहू बुह्तानंव्-व इस्मम् मुबीना **(20)** व कै-फ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्ज़ुकुम् इला बअ्ज़िंव्-व अख़ज़्-न मिन्कुम् मिसाक़न् ग़लीज़ा **(21)** व ला तन्किहू मा न-क-ह आबाउकुम् मिनन्निसा-इ इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नहू का-न फ़ाहि-शतंव्-व मक़्तन्, व सा-अ सबीला **(22)** ❖

हुर्रिमत् अ़लैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बनातुल्-अख़ि व बनातुल्-उख़्ति व उम्महातु-कुमुल्लाती अर्ज़अ्नकुम् व अ-ख़वातुकुम् मिनर्रज़ा-अ़ति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबुकुमुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन्निसा-इकुमुल्लाती दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़-इल्लम् तकूनू दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् व हला-इलु अब्ना-इकुमुल्लज़ी-न मिन् अस्लाबिकुम् व अन् तज्मअ़ू बैनल्-उख़्तैनि इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा **(23)**

حتى اذا حضر احدهم الموت قال اني تبت الئن ولا الذين
يموتون وهم كفار اولئك اعتدنا لهم عذابا اليما ﴿١٨﴾ يايها
الذين امنوا لا يحل لكم ان ترثوا النساء كرها ولا تعضلوهن
لتذهبوا ببعض ما اتيتموهن الا ان ياتين بفاحشة مبينة
وعاشروهن بالمعروف فان كرهتموهن فعسى ان تكرهوا شيئا
ويجعل الله فيه خيرا كثيرا ﴿١٩﴾ وان اردتم استبدال زوج مكان
زوج واتيتم احدىهن قنطارا فلا تاخذوا منه شيئا اتاخذونه
بهتانا واثما مبينا ﴿٢٠﴾ وكيف تاخذونه وقد افضى بعضكم الى
بعض واخذن منكم ميثاقا غليظا ﴿٢١﴾ ولا تنكحوا ما نكح اباؤكم
من النساء الا ما قد سلف انه كان فاحشة ومقتا وساء
سبيلا ﴿٢٢﴾ حرمت عليكم امهتكم وبنتكم واخوتكم وعمتكم وخلتكم
وبنت الاخ وبنت الاخت وامهتكم التي ارضعنكم واخوتكم من
الرضاعة وامهت نسائكم وربائبكم التي في حجوركم من نسائكم
التي دخلتم بهن فان لم تكونوا دخلتم بهن فلا جناح عليكم
وحلائل ابنائكم الذين من اصلابكم وان تجمعوا بين
الاختين الا ما قد سلف ان الله كان غفورا رحيما ﴿٢٣﴾

منزل ١

पाँचवाँ पारः वल्-मुह्सनातु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 24 से 147)

वल्-मुह्सनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-लकत् ऐमानुकुम् किताबल्लाहि अ़लैकुम् व उहिल्-ल लकुम् मा वरा-अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बिअम्वालिकुम् मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न, फ़मस्तम्तअ़्तुम् बिही मिन्हुन्-न फ़आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फ़री-ज़तन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा तराज़ैतुम् बिही मिम्-बअ़्दिल् फ़री-ज़ति, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा **(24)** व मल्लम् यस्ततिअ़् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल् मुह्सनातिल्-मुअ़्मिनाति फ़-मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-तयातिकुमुल्-मुअ़्मिनाति, वल्लाहु अअ़्लमु बिईमानिकुम्, बअ़्ज़ुकुम् मिम्-बअ़्ज़िन् फ़न्किहूहुन्-न बि-इज़्नि अह्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिल्मअ़्रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़ै-र मुसाफ़िहातिंव्वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दानिन् फ़-इज़ा उह्सिन्-न फ़-इन् अतै-न बिफ़ाहि-शतिन् फ़-अ़लैहिन्-न निस्फ़ु मा अ़लल् मुह्सनाति मिनल्-अ़ज़ाबि, ज़ालि-क लिमन् ख़शियल् अ़-न-त मिन्कुम्, व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(25)** ❖

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ
مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۗ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ
فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ
بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ
لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۗ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ
اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ
نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ
الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۗ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا
عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ

युरीदुल्लाहु लि-युबय्यि-न लकुम् व यह्दि-यकुम् सु-ननल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व

❖ रु. 4/3/1

यतू-ब अ़लैकुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(26)** वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अ़लैकुम्, व युरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअूनश्श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमा **(27)** युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ़ अ़न्कुम् व ख़ुलिक़ल्-इन्सानु ज़अ़ीफ़ा **(28)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू-न तिजा-रतन् अ़न् तराज़िम् मिन्कुम्, व ला तक़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्, इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा **(29)** व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क अ़ुद्वानंव्-व ज़ुल्मन् फ़सौ-फ़ नुस्लीहि नारन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा **(30)** इन् तज्तनिबू कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अ़न्हु नुकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्-ख़लन् करीमा **(31)** व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ़्ज़कुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्-मक्त-सबू, व लिन्निसा-इ नसीबुम् मिम्-मक्त-सब्-न, वस्अलुल्ला-ह मिन् फ़ज़्लिही, इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा **(32)** व लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मवालि-य मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न, वल्लज़ी-न अ़-क़दत् ऐमानुकुम् फ़-आतूहुम् नसीबहुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा **(33)** ❖

अर्रिजालु क़व्वामू-न अ़लन्निसा-इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ़्ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िंव्-व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम्, फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल्-लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु, वल्लाती तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन्-न फ़-अ़िज़ूहुन्-न वह्जुरूहुन्-न फ़िल्मज़ाजिअ़ि वज़्रिबूहुन्-न

ضَعِيفًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِنْكُمْ ۚ وَ
لَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝ وَمَنْ يَفْعَلْ
ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ
عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا
مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ
مِمَّا اكْتَسَبُوا ۖ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَاسْأَلُوا اللَّهَ
مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا
مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ
فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝
الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ
بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ
لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَاللَّاتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ ۖ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا
عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ

❖ रु. 5/8/2

फ़-इन् अ-तअ्नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सबीलन्, इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कबीरा **(34)** व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क़ बैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह-कमम् मिन् अह्लिही व ह-कमम् मिन् अह्लिहा इय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु बैनहुमा, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् ख़बीरा **(35)** वअ़्बुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्-वालिदैनि इह्सानंव्-व बि-ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्-क़ुर्बा वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल्-जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म-लकत् ऐमानुकुम्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा **(36)**

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्-ना-स बिल्-बुख़्लि व यक्तुमू-न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्-मुहीना **(37)** वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआअन्नासि व ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि, व मंय्यकुनिश्शैतानु लहू क़रीनन् फ़सा-अ क़रीना **(38)** व माज़ा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़-क़-हुमुल्लाहु, व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमा **(39)** इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् व इन् तकु ह-स-नतंय्युज़ाअिफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमा **(40)** फ़कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा **(41)** यौमइज़िंय्- यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू व अ़-सवुर्-रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्-अर्ज़ु, व ला यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा **(42)** ❖

والمحصنٰت ٥ — ٧٧ — النسآء ٤

بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ
يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾
وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى
وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ﴿٣٦﴾ الَّذِيْنَ
يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٣٧﴾
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا
فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ
بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ۗ وَلَا يَكْتُمُوْنَ

منزل ١

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्रबुस्सला-त व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ्लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आबिरी सबीलिन् हत्ता तग़्तसिलू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्ममू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा **(43)** अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल् किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील **(44)** वल्लाहु अअ्लमु बि-अअ्दा-इकुम्, व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंव्-व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा **(45)** मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफ़ूनल् कलि-म अ़म्मवाज़िअ़िही व यक़ूलू-न समिअ़्ना व अ़सैना वस्मअ् ग़ै-र मुस्मअिंव्-व राअिना लय्यम् बि-अल्सिनतिहिम् व तअ्नन् फ़िद्दीनि, व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ्ना व अ-तअ्ना वस्मअ् वन्ज़ुर्ना लका-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्व-म व लाकिल्-ल-अ-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला **(46)** या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म-अ़कुम् मिन् क़ब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ़-नरुद्दहा अ़ला अद्बारिहा औ नल्अ़-नहुम् कमा ल-अ़न्ना अस्हाबस्सब्ति, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला **(47)** इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लिमंय्यशा-उ व मंय्युश्रिक्

النساء ٤ — ٨٥ — والمحصنت ٥

اللهَ حَدِيثًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ
سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ
حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ۗ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ
مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً
فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ۗ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا
السَّبِيْلَ ۝ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۗ وَّ
كَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ
مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ۗ وَلَوْ
اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا
لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ
اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ۗ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝

منزل ١

बिल्लाहि फ़-क़दिफ़्तरा इस्मन् अ़ज़ीमा **(48)** अलम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फ़ुसहुम, बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशा-उ व ला युज़्लमू-न फ़तीला **(49)** उन्ज़ुर् कै-फ़ यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब, व कफ़ा बिही इस्मम् मुबीना **(50)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युअ्मिनू-न बिल्-जिब्ति वत्ताग़ूति व यक़ूलू-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला **(51)** उला-इकल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु, व मंय्यल्अ़निल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू नसीरा **(52)** अम् लहुम् नसीबुम् मिनल्-मुल्कि फ़-इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा **(53)** अम् यह्सुदूनन्ना-स अ़ला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही फ़-क़द् आतैना आ-ल इब्राहीमल्-किता-ब वल्हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा **(54)**

फ़-मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अ़न्हु, व कफ़ा बि-जहन्न-म सओ़रा **(55)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम् नारन्, कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि-यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब, इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा ◆ **(56)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुतह्ह-रतुंव्-व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला **(57)** इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तु-अद्दुल् अमानाति इला

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۭ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾ ۧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾ اُولٰۤئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۭ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾ ۭ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾ ۙ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۭ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٥٦﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ

अह्लिहा व इज़ा हकम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अ़द्लि, इन्नल्ला-ह निअिम्मा यअिज़ुकुम् बिही, इन्नल्ला-ह का-न समीअम् बसीरा **(58)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् फ़-इन् तनाज़अ्तुम् फ़ी शैइन् फ़रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला **(59)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अंय्य-तहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही, व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम् बअ़ीदा **(60)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि रऐतल्-मुनाफ़िक़ी-न यसुद्दू-न अ़न्-क सुदूदा **(61)** फ़कै-फ़ इज़ा असाबत्हुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् सुम्-म जाऊ-क यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन् अरद्ना इल्ला इह्सानंव्-व तौफ़ीक़ा **(62)** उलाइ-कल्लज़ी-न यअ्लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम्, फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् व अिज़्हुम् व क़ुल्-लहुम् फ़ी अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा **(63)** व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लियुता-अ़ बि-इज़्निल्लाहि, व लौ अन्नहुम् इज़्-ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् जाऊ-क फ़स्तग़्फ़रुल्ला-ह वस्तग़्फ़-र लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा **(64)** फ़ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता युहक्किमू-क

اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ
بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿۵۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِىْ
شَىْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۵۹﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ
قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْۤا
اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿۶۰﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ
الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿۶۱﴾ فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ
مُّصِيْبَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ
اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿۶۲﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا
فِىْ قُلُوْبِهِمْ ۗ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ
قَوْلًاۢ بَلِيْغًا ﴿۶۳﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ

ع ۵

फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-रजम्-मिम्मा क़ज़ै-त व युसल्लिमू तस्लीमा **(65)** व लौ अन्ना कतब्ना अ़लैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ु-सकुम् अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अ़लूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम, व लौ अन्नहुम् फ़-अ़लू मा यू-अ़ज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीता **(66)** व इज़ल्-लआतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अ़ज़ीमा **(67)** व ल-हदैनाहुम् सिरातम् मुस्तक़ीमा **(68)** व मंय्युतिअ़िल्ला-ह वर्रसू-ल फ़-उलाइ-क मअ़ल्लज़ी-न अन्अ़-मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी-न वश्शु-हदा-इ वस्सालिही-न व हसु-न उलाइ-क रफ़ीक़ा **(69)** ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि अ़लीमा **(70)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीअ़ा **(71)** व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्लयुबत्तिअन्-न फ़-इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़ा-ल क़द् अन्अ़-मल्लाहु अ़लय्-य इज़् लम् अकुम् म-अ़हुम् शहीदा **(72)** व ल-इन् असाबकुम् फ़ज़्लुम् मिनल्लाहि ल-यक़ूलन्-न क-अल्लम् तकुम् बैनकुम् व बैनहू मवद्दतुंय्-यालैतनी कुन्तु म-अ़हुम् फ़-अफ़ू-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा **(73)** फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-हयातद्दुन्या बिलआख़ि-रति, व मंय्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा **(74)** व मा

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا
وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ
ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا
تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِ
اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ اَنَّهُمْ
فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا ﴿٦٦﴾
وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا
مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ
اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ
فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾ وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ
فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ
اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ
لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ

ع

लकुम् ला तुक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क वलिय्यंव्-वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा **(75)** अल्लज़ी-न आमनू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न क-फ़रू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क़ातिलू औलिया-अश्शैतानि इन्-न कैदश्शैतानि का-न ज़अ़ीफ़ा **(76)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न क़ी-ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदी-यकुम् व अक़ीमुस्-सला-त व आतुज़्ज़का-त फ़-लम्मा कुति-ब अ़लैहिमुल्-क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यख़्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् व क़ालू रब्बना लि-म कतब्-त अ़लैनल्-क़िता-ल लौ ला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन्, क़ुल् मताअ़ुद्दुन्या क़लीलुन् वल्-आख़ि-रतु ख़ैरुल्-लि-मनित्तक़ा, व ला तुज़्लमू-न फ़तीला **(77)** ऐ-न मा तकूनू युद्रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम् मुशय्य-दतिन्, व इन् तुसिब्हुम् ह-स-नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अ़िन्दिल्लाहि व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अ़िन्दि-क, क़ुल् कुल्लुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि, फ़मालि हा-उला-इल्क़ौमि ला यकादू-न यफ़्क़हू-न हदीसा **(78)** मा असाब-क मिन् ह-स-नतिन् फ़मिनल्लाहि व मा असाब-क मिन् सय्यि-अतिन् फ़-मिन्नफ़्सि-क, व अर्सल्ना-क लिन्नासि

مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧٣﴾ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٧٤﴾ وَ
مَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ
الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ۚ
وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ﴿٧٥﴾ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ
فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ
يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوا رَبَّنَا
لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۗ
قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَ
لَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧٧﴾ أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ
فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَإِن تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَٰذِهِ مِنْ

रसूलन्, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा **(79)** मंय्युतिअिर्-रसू-ल फ़-क़द् अताअ़ल्ला-ह व मन् तवल्ला फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़ा **(80)** व यक़ूलू-न ताअ़तुन् फ़-इज़ा ब-रज़ू मिन् अ़िन्दि-क बय्य-त ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु, वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् व तवक्कल् अ़लल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(81)** अ-फ़ला य-तदब्बरूनल्-क़ुर्आ-न, व लौ का-न मिन् अ़िन्दि ग़ैरिल्लाहि ल-व-जदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरा **(82)** व इज़ा जा-अहुम् अम्रुम् मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअू बिही, व लौ रद्दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल-अ़लि-महुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम्, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लत्त-बअ्तुमुश्शैता-न इल्ला क़लीला **(83)** फ़क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ बअ्सल्लज़ी-न क-फ़रू, वल्लाहु अशद्दु बअ्संव्-व अशद्दु तन्कीला **(84)** मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् ह-स-नतंय्यकुल्लहू नसीबुम् मिन्हा व मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् सय्यि-अतंय्यकुल्लहू किफ़्लुम् मिन्हा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़ीता **(85)** व इज़ा हुय्यीतुम् बि-तहिय्यतिन् फ़हय्यू बि-अह्स-न मिन्हा औ रुद्दूहा, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन्

عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ
قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ
يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝٧٨ مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ؗ وَ مَاۤ
اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَ اَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ
وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝٧٩ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ
وَ مَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝٨٠ وَ يَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ؗ
فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ
تَقُوْلُ ؕ وَ اللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ تَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٨١ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَ لَوْ كَانَ
مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝٨٢ وَ اِذَا جَآءَهُمْ
اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
وَ اِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ
وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ۝٨٣ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ
اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ۝٨٤ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ

हसीबा ● **(86)** अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि हदीसा **(87)** ❖

फ़मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न फ़ि-अतैनि वल्लाहु अर्-क-सहुम् बिमा क-सबू, अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अज़ल्लल्लाहु, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला **(88)** वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा क-फ़रू फ़-तकूनू-न सवा-अन् फ़ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(89)** इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जाऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-सल्ल-तहुम् अ़लैकुम् फ़-लक़ातलूकुम् फ़-इनिअ्-त-ज़लूकुम् फ़-लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्स-ल-म फ़मा ज-अ़लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीला **(90)** स-तजिदू-न आ-ख़री-न युरीदू-न अंय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम्, कुल्लमा रुद्दू इलल्-फ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा फ़-इल्लम् यअ़्-तज़िलूकुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ़्फ़ू ऐदि-यहुम् फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम्, व उला-इकुम् जअ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम् मुबीना **(91)** ❖

لَهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ
مِّنْهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿۸۵﴾ وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا
بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿۸۶﴾
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ
وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿۸۷﴾ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ
فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ۗ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ
اَضَلَّ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا
لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ
وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
قَوْمَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ
اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ
اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ۗ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ

व मा का-न लिमुअ्मिनिन् अंय्यक़्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-तअन् व मन् क़-त-ल मुअ्मिनन् ख़-तअन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मिनतिंव्-व दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू, फ़-इन् का-न मिन् क़ौमिन् अ़दुव्विल्लकुम् व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन्, व इन् का-न मिन् क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मिसाक़ुन् फ़-दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन् फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-तताबिअ़ैनि तौब-तम् मिनल्लाहि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(92)** व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहू व अ-अ़द्-द लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा **(93)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-तबय्यनू व ला तक़ूलू लिमन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् तब्तग़ू-न अ़-रज़ल् हयातिद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि मग़ानिमु कसीरतुन्, कज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़-तबय्यनू, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा **(94)** ला यस्तविल् क़ाअ़िदू-न मिनल् मुअ्मिनी-न ग़ैरु उलिज़्ज़-ररि वल्मुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, फ़ज़्ज़-लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़लल्-क़ाअ़िदी-न द-र-जतन्, व कुल्लंव्-व-अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, व

فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۡ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾ وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾ لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

फ़ज़्ज़-लल्लाहुल् मुजाहिदी-न अ़लल्-क़ाअ़िदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा **(95)** द-रजातिम् मिन्हु व मग़्फ़ि-रतंव्-व रह्म-तन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा **(96)** ❖

इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल् मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम्, क़ालू कुन्ना मुस्तज़्अ़फ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि, क़ालू अलम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ़तन् फ़तुहाजिरू फ़ीहा, फ़-उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु, व साअत् मसीरा **(97)** इल्लल्-मुस्तज़्अ़फ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअ़ू-न ही-लतंव्-व ला यह्तदू-न सबीला **(98)** फ़-उलाइ-क अ़सल्लाहु अंय्यअ़्फ़ु-व अ़न्हुम्, व कानल्लाहु अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा **(99)** व मंय्युहाजिर् फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग़मन् कसीरंव्-व स-अ़तन्, व मंय्यख़्रुज् मिम्-बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्-मौतु फ़-क़द् व-क़-अ़ अज्रुहू अ़लल्लाहि, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा **(100)** ❖

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَ
اَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿۹۵﴾ دَرَجٰتٍ
مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۹۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا
مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿۹۷﴾
اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ۙ﴿۹۸﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ
عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ
مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ
عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۰﴾ وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ
فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ
اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۱۰۱﴾
وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ

व इज़ा ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति इन् ख़िफ़्तुम् अंय्यफ़्ति-नकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू, इन्नल्-काफ़िरी-न कानू लकुम् अ़दुव्वम्-मुबीना **(101)** व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम् फ़-अक़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम्, फ़-इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिंव्वरा-इकुम् वल्तअ्ति

ताइ-फ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू म-अ-क वल्यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न अ़न् अस्लि-हतिकुम् व अम्ति-अ़तिकुम् फ़-यमीलू-न अ़लैकुम् मै-लतंव्वाहि-दतन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् का-न बिकुम् अज़म्-मिम्-म-तरिन् औ कुन्तुम् मर्‌ज़ा अन् त-ज़अू अस्लि-ह-तकुम् व ख़ुज़ू हिज़्रकुम्, इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना **(102)** फ़-इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला-त फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिकुम् फ़-इज़त्मअ्नन्तुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त इन्नस्सला-त कानत् अ़लल् मुअ्मिनी-न किताबम् मौक़ूता **(103)** व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा-इल्- क़ौमि, इन् तकूनू तअ्लमू-न फ़-इन्नहुम् यअ्लमू-न कमा तअ्लमू-न व तर्जू-न मिनल्लाहि मा ला यर्जू-न, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(104)** ❖

इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्-हक़्क़ि लि-तह्कु-म बैनन्नासि बिमा अराकल्लाहु, व ला तकुल् लिल्-ख़ाइनी-न ख़सीमा **(105)**

مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوٓا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَآئِكُمْ
وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ
أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً وَ
لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰ
أَن تَضَعُوٓا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا مُّهِينًا ۝ فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا
وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ إِنَّ الصَّلَوٰةَ
كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا ۝ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ
إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ
اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرَاكَ اللَّهُ وَلَا تَكُن
لِّلْخَآئِنِينَ خَصِيمًا ۝ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ

वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा **(106)** व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न अन्फ़ु-सहुम, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न ख़व्वानन् असीमा **(107)** यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अ़हुम् इज़् युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि, व कानल्लाहु बिमा यअ्मलू-न मुहीता **(108)** हा-अन्तुम् हा-उला-इ

जादल्तुम् अ़न्हुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या, फ़-मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमिल्-क़ियामति अम्-मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला **(109)** व मंय्यअ़्मल् सूअन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूररहीमा **(110)** व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़-इन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(111)** व मंय्यक्सिब् ख़ती-अतन् औ इस्मन् सुम-म् यर्मि बिही बरीअन् फ़-क़दिह्त-म-ल बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना **(112)** ❖

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क व रह्मतुहू ल-हम्मत्ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू-क, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यज़ुर्रून-क मिन् शैइन्, व अन्ज़लल्लाहु अ़लैकल्-किता-ब वल्हिक्म-त व अ़ल्ल-म-क मा लम् तकुन् तअ़्लमु, व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क अ़ज़ीमा ▲ **(113)** ला ख़ै-र फ़ी कसीरिम् मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि-स-द-क़तिन् औ मअ़्रूफ़िन् औ इस्लाहिम् बैनन्नासि, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालिकब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़सौ-फ़ नुअ़्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा **(114)** व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ़् ग़ै-र सबीलिल् मुअ़्मिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म, व साअत् मसीरा **(115)** ❖

इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि-मंय्यशा-उ, व

النسآء ٤ ٨٨ والمحصنت ٥

مِنَ الْقَوْلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿١٠٨﴾ هٰٓاَنْتُمْ
هٰٓؤُلَاۗءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۣ فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ
عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿١٠٩﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ
سُوْۗءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١١٠﴾
وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰي نَفْسِهٖ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
حَكِيْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْۗـــَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْۗـــًٔا فَقَدِ
احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ
لَهَمَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَھُمْ
وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ۭ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾
لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىھُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ
اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ
اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ
مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ
اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ

منزل ١

मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम् बअ़ीदा **(116)** इंय्यद्अू-न मिन् दूनिही इल्ला इनासन् व इंय्यद्अू-न इल्ला शैतानम् मरीदा **(117)** ल-अ़-नहुल्लाहु ✣ व क़ा-ल ल-अत्तख़िज़न्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम् मफ़्रूज़ा **(118)** व ल-उज़िल्लन्नहुम् व ल-उमन्नियन्नहुम् व ल-आमुरन्नहुम् फ़-लयुबत्तिकुन्-न आज़ानल्-अन्आ़मि व ल-आमुरन्नहुम् फ़-लयुग़य्यिरुन्-न ख़ल्क़ल्लाहि, व मंय्यत्तख़िज़िश्शैता-न वलिय्यम् मिन् दूनिल्लाहि फ़-क़द् ख़सि-र ख़ुस्रानम् मुबीना **(119)** यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम्, व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु इल्ला ग़ुरूरा **(120)** उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु व ला यजिदू-न अ़न्हा महीसा **(121)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीला **(122)** लै-स बि-अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि, मंय्यअ़्मल् सूअंय्-युज्-ज़ बिही व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(123)** व मंय्यअ़्मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा **(124)** व मन् अह्सनु दीनम् मिम्-मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्-वत्त-ब-अ़ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, वत्त-ख़ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला **(125)** व लिल्लाहि मा

بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ﴿۱۱۶﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ
اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿۱۱۷﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ
لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۸﴾ وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَ
لَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۹﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۫ وَلَا
يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿۱۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ
اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿۱۲۲﴾ لَيْسَ
بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَ
لَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ
مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ
وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ
اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

وقف لازم

✣ व. लाज़िम

फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइम् मुहीता (126) ❖

व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्-न व मा युत्ला अ़लैकुम् फ़िल्-किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अ़फ़ी-न मिनल्-विल्दानि व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति, व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिही अ़लीमा (127) व इनिम्-र-अतुन् ख़ाफ़त् मिम्-बअ़्लिहा नुशूज़न् औ इअ़्राज़न् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन्, वस्सुल्हु ख़ैरुन्, व उह्ज़ि-रतिल् अन्फ़ुसुश्शुह्-ह, व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा (128) व लन् तस्ततीअ़ू अन् तअ़्दिलू बैनन्निसा-इ व लौ हरस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्-मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्-मुअ़ल्ल-क़ति, व इन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (129) व इंय्य-तफ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्-मिन् स-अ़तिही, व कानल्लाहु वासिअ़न् हकीमा (130) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तक़ुल्ला-ह, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा (131) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (132) इंय्यशअ्

النسآء ٤ ٩٠ والمحصنت ٥

وكان الله بكل شيء محيطا ﴿١٢٦﴾ ويستفتونك في النسآء قل
الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم في الكتب في يتمى
النسآء التي لا تؤتونهن ما كتب لهن وترغبون أن
تنكحوهن والمستضعفين من الولدان وأن تقوموا
لليتمى بالقسط وما تفعلوا من خير فإن الله كان به
عليما ﴿١٢٧﴾ وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا أو إعراضا
فلا جناح عليهما أن يصلحا بينهما صلحا والصلح خير
وأحضرت الأنفس الشح وإن تحسنوا وتتقوا فإن الله
كان بما تعملون خبيرا ﴿١٢٨﴾ ولن تستطيعوا أن تعدلوا بين
النسآء ولو حرصتم فلا تميلوا كل الميل فتذروها
كالمعلقة وإن تصلحوا وتتقوا فإن الله كان غفورا رحيما ﴿١٢٩﴾
وإن يتفرقا يغن الله كلا من سعته وكان الله واسعا
حكيما ﴿١٣٠﴾ ولله ما في السموت وما في الأرض ولقد وصينا
الذين أوتوا الكتب من قبلكم وإياكم أن اتقوا الله وإن
تكفروا فإن لله ما في السموت وما في الأرض وكان الله
غنيا حميدا ﴿١٣١﴾ ولله ما في السموت وما في الأرض وكفى

منزل ١

युह़िब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बिआ-ख़रीन, व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क क़दीरा **(133)** मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़ि-रति, व कानल्लाहु समीअ़म्-बसीरा **(134)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न बिल्क़िस्ति शु-हदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा, फ़ला तत्तबिअ़ुल्-हवा अन् तअ़्दिलू व इन् तल्वू औ तुअ़्रिज़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा **(135)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्--लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु, व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्यौमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-बअ़ीदा **(136)** इन्नल्लज़ी-न आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्-म आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्मज़्--दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लि-यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि-यह्दि-यहुम् सबीला **(137)** बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बिअन्-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(138)** अल्लज़ी-न यत्तख़िज़ूनल्- काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, अ-यब्तग़ू-न अ़िन्दहुमुल्-अ़िज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अ़िज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ़ **(139)** व क़द् नज़्ज़-ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ़्तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़ला तक़्अ़ुदू म-अ़हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही इन्नकुम्

بِاللّٰهِ وَكِيلًا ۝ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلّٰهِ
وَلَوْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا
أَوْ فَقِيرًا فَاللّٰهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا ۚ
وَإِنْ تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي
نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ
آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ
أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ
عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ

इज़म्-मिस्लुहुम्, इन्नल्ला-ह जामिअुल्- मुनाफ़िक़ी-न वल्काफ़िरी-न फ़ी जहन्न-म जमीआ **(140)** अल्लज़ी-न य-तरब्बसू-न बिकुम् फ़-इन् का-न लकुम् फ़त्हुम् मिनल्लाहि क़ालू अलम् नकुम् म-अ़कुम् व इन् का-न लिल्काफ़िरी-न नसीबुन् क़ालू अलम् नस्तह्विज़् अ़लैकुम् व नम्नअ़्कुम् मिनल्- मुअ्मिनी-न, फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति, व लंय्यज्-अ़लल्लाहु लिल्काफ़िरी-न अलल्-मुअ्मिनी-न सबीला **(141)** ❖

इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न युख़ादिअ़ूनल्ला-ह व हु-व ख़ादिअ़ुहुम् व इज़ा क़ामू इलस्-सलाति क़ामू कुसाला युराऊनन्ना-स व ला यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला **(142)** मुज़ब्ज़बी-न बै-न ज़ालि-क ला इला हा-उला-इ व ला इला हा-उला-इ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला **(143)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी-न, अतुरीदू-न अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् मुबीना **(144)** इन्नल् मुनाफ़िक़ी-न फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि व लन् तजि-द लहुम् नसीरा **(145)** इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू वअ़्त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़-उलाइ-क मअ़ल्-मुअ्मिनी-न, व सौ-फ़ युअ्तिल्लाहुल् मुअ्मिनी-न अज्रन् अ़ज़ीमा **(146)** मा यफ़्अ़लुल्लाहु बि-अ़ज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम्, व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमा **(147)**

بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ
إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ
جَمِيعًا ﴿١٤٠﴾ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ
قَالُوا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾ ع ١٧
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى
الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ
إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾ مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ
هَٰؤُلَاءِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ
أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾ إِلَّا الَّذِينَ
تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾ مَّا
يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

छठा पारः ला युहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ (आयत 148 से 176)

ला युहिब्बुल्लाहुल्-जह्-र बिस्सू-इ मिनल्-क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म, व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमा **(148)** इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्फ़ू अ़न् सूइन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा **(149)** इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू-न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु बि-बअ़्ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि-बअ़्ज़िंव्-व युरीदू-न अंय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला **(150)** उलाइ-क हुमुल् काफ़िरू-न हक़्क़न् व अअ़्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना **(151)** वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् उलाइ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूर्ररहीमा **(152)** ❖

यस्अलु-क अह्लुल्-किताबि अन् तुनज़्ज़ि-ल अ़लैहिम् किताबम् मिनस्-समा-इ फ़-क़द् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़क़ालू अरिनल्ला-ह जह्र-तन् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअि-क़तु बिज़ुल्मिहिम् सुम्मत्त-ख़ज़ुल्- अिज्-ल मिम्-बअ़्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु फ़-अफ़ौना अ़न् ज़ालि-क व आतैना मूसा सुल्तानम् मुबीना **(153)** व रफ़अ़्ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बिमीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव्-व क़ुल्ना लहुम्

النساء ٤ ۹۳ لا یحب الله ٦

لا يحب الله الجهر بالسوء من القول الا من ظلم و
كان الله سميعا عليما ۝ ان تبدوا خيرا او تخفوه او
تعفوا عن سوء فان الله كان عفوا قديرا ۝ ان الذين
يكفرون بالله ورسله ويريدون ان يفرقوا بين الله و
رسله ويقولون نؤمن ببعض ونكفر ببعض ويريدون
ان يتخذوا بين ذلك سبيلا ۝ اولئك هم الكفرون
حقا واعتدنا للكفرين عذابا مهينا ۝ والذين امنوا بالله
ورسله ولم يفرقوا بين احد منهم اولئك سوف يؤتيهم
اجورهم وكان الله غفورا رحيما ۝ يسئلك اهل الكتب
ان تنزل عليهم كتبا من السماء فقد سالوا موسى اكبر
من ذلك فقالوا ارنا الله جهرة فاخذتهم الصعقة بظلمهم
ثم اتخذوا العجل من بعد ما جاءتهم البينت فعفونا عن
ذلك واتينا موسى سلطنا مبينا ۝ ورفعنا فوقهم الطور
بميثاقهم وقلنا لهم ادخلوا الباب سجدا وقلنا لهم
لا تعدوا في السبت واخذنا منهم ميثاقا غليظا ۝ فبما
نقضهم ميثاقهم وكفرهم بايت الله وقتلهم الانبياء بغير

منزل ١

ला तअ्दू फ़िस्सब्ति व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा **(154)** फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बिआयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् त-बअ़ल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला **(155)** व बिकुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा **(156)** व क़ौलिहिम् इन्ना क़तल्नल्-मसी-ह ओसब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि व मा क़-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम्, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम् मिन्हु, मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्ज़न्नि व मा क़-तलूहु यक़ीना **(157)** बर्र-फ़-अ़हुल्लाहु इलैहि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा **(158)** व इम्-मिन् अह्लिल्-किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल मौतिही व यौमल्- क़ियामति यकूनु अ़लैहिम् शहीदा **(159)** फ़-बिज़ुल्मिम्- मिनल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना अ़लैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि-सद्दिहिम् अ़न् सबीलिल्लाहि कसीरा **(160)** व अख़्ज़िहिमुर्रिबा व क़द् नुहू अ़न्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि, व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(161)** लाकिनिर्रासिख़ू-न फ़िल्अ़िल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वल्मुक़ीमीनस्सला-त वल्मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, उलाइ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अ़ज़ीमा **(162)** ◆

حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ۭ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰي مَرْيَمَ بُهْتَانًا
عَظِيْمًا ۝ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ
اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۭ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۭ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ
اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۝ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا
لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ
شَهِيْدًا ۝ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝
وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝ لٰكِنِ
الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَنُؤْتِيْهِمْ
اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ

इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न मिम्-बअ़्दिही व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बाति व अ़ीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न व आतैना दावू-द ज़बूरा **(163)** व रुसुलन् क़द् क़सस्नाहुम् अ़लै-क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अ़लै-क, व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा **(164)** रुसुलम् मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ़्दर्रुसुलि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा **(165)** लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज़-लहू बिअ़िल्मिही वल्मलाइ-कतु यश्हदू-न व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा **(166)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम् बअ़ीदा **(167)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लियग़्फ़ि-र लहुम् व ला लियह्दि-यहुम् तरीक़ा **(168)** इल्ला तरी-क़ जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा **(169)** या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़आमिनू ख़ैरल्लकुम्, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा **(170)** या अह्लल्- किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्-हक़्-क़, इन्नमल्-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलि-मतुहू अल्क़ाहा इला मर्य-म व

وَالنَّبِيّٖنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَ
اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَ
هٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝١٦٣ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ
مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۝١٦٤ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ
لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝١٦٥
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
يَشْهَدُوْنَ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝١٦٦ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ۝١٦٧ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۝١٦٨ ۙ
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ۝١٦٩ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ
فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١٧٠ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا
فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ

रूहुम्-मिन्हु फ़आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही, व ला तक़ूलू सलासतुन्, इन्तहू ख़ैरल्लकुम्, इन्नमल्लाहु इलाहुंव्वाहिदुन्, सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ✣ लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला **(171)** ❖

लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अ़ब्दल्-लिल्लाहि व लल्मला-इ-कतुल् मुक़र्रबू-न, व मंय्यस्तन्किफ़् अ़न् अ़िबादतिही व यस्तक्बिर् फ़-सयह्शुरुहुम् इलैहि जमीआ़ **(172)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही व अम्मल्लज़ीनस्-तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ़-युअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(173)** व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(174)** या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुम् बुर्हानुम् मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम् मुबीना **(175)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ़्त-समू बिही फ़-सयुद्ख़िलुहुम् फ़ी रह्मतिम् मिन्हु व फ़ज़्लिंव्-व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम् मुस्तक़ीमा **(176)** यस्तफ़्तून-क, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िल्-कलालति, इनिम्रुउन् ह-ल-क लै-स लहू व-लदुंव्-व लहू उख़्तुन् फ़-लहा निस्फ़ु मा त-र-क व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन्, फ़-इन् का-नतस्नतैनि फ़-लहुमस्- सुलुसानि मिम्मा त-र-क, व इन् कानू इख़्वतर्रिजालंव्-व निसाअन् फ़-लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन्सयैनि, युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(177)** ❖

مِّنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ انتَهُوا خَيْرًا
لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَّهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا
لَّن يَسْتَنكِفَ الْمَسِيحُ أَن يَكُونَ عَبْدًا لِّلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ
الْمُقَرَّبُونَ وَمَن يَسْتَنكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ
إِلَيْهِ جَمِيعًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا
وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُم
مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم
بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا فَأَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ
وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا يَسْتَفْتُونَكَ
قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ
وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن
لَّهَا وَلَدٌ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِن
كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ

5 सूरतुल्माइ-दति 112

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 13464 अक्षर, 2842 शब्द 120 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्-अुक़ूदि, उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आमि इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् ग़ै-र मुहिल्लिस्-सैदि व अन्तुम् हुरुमुन्, इन्नल्ला-ह यह्कुमु मा युरीद (1) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू शआ-इरल्लाहि व लश्शह्रल्-हरा-म व लल्-हद्-य व लल्क़लाइ-द व ला आम्मीनल् बैतल्-हरा-म यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन्, व इज़ा हलल्तुम् फ़स्तादू व ला यज्रिमन्नकुम श-नआनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि अन् तअ़्तदू ✣ व तआ़वनू अ़लल्-बिर्रि वत्तक़्वा व ला तआ़वनू अ़लल्-इस्मि वल्-अुद्वानि वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब ◆ (2) हुर्रिमत् अ़लैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह्मुल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़ानि-क़तु वल्मौक़ूज़तु वल्मु-तरद्दियतु वन्नती-हतु व मा अ-कलस्सबुअ़ु इल्ला मा ज़क्कैतुम्, व मा ज़ुबि-ह अ़लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्अज़्लामि, ज़ालिकुम् फ़िस्क़ुन्, अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ला

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ
الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ
إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ
اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا
حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا ۘ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَ
التَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ
اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَ
لَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ
وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَ
مَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ۚ ذَٰلِكُمْ فِسْقٌ ۗ
الْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ
اخْشَوْنِ ۚ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي

तख़्शौहुम् वख़्शौनि, अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन्, फ़-मनिज़्तुर्-र फ़ी मख़्म-सतिन् ग़ै-र मु-तजानिफ़िल्-लिइस्मिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(3)** यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् क़ुल् उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अ़ल्ल-मकुमुल्लाहु फ़कुलू मिम्मा अम्-सक्-न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहि वत्तक़ुल्ला-ह इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब **(4)** अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु, व तआ़मुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब हिल्लुल्लकुम् व तआ़मुकुम् हिल्लुल्लहुम् वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन्, व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ़-क़द् हबि-त अ़-मलुहू व हु-व फ़िल्-आख़िरति मिनल्- ख़ासिरीन **(5)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बिरुऊसिकुम् व अर्जु-लकुम् इलल्कअ़्बैनि, व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तहहरू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्म-मू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु, मा युरीदुल्लाहु लि-यज्अ़-ल अ़लैकुम् मिन् ह-रजिंव्-व लाकिंय्युरीदु लियुतह्हि-रकुम् व लियुतिम्-म

وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ
مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣﴾ يَسْأَلُونَكَ مَاذَا
أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ ۖ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ
عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ
سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤﴾ الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَهُمْ ۖ وَالْمُحْصَنَاتُ
مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ
قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ
وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ
عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى
الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ
جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا
مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ

निअ्म-तहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(6)** वज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व मीसाक़हुल्लज़ी वास-क़कुम् बिही इज़् क़ुल्तुम् समिअ्ना व अतअ्ना वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(7)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति व ला यज्रिमन्नकुम् श-नआनु क़ौमिन् अ़ला अल्ला तअ्दिलू, इअ्दिलू, हु-व अक़्रबु लित्तक़्वा वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून **(8)** व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम **(9)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम **(10)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् हम्-म क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् फ़-कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् वत्तक़ुल्ला-ह, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून **(11)** ❖

व ल-क़द् अ-ख़ज़ल्लााहु मीसा-क़ बनी इस्राई-ल व बअ़स्ना मिन्हुमुस्नै अ़-श-र नक़ीबन्, व क़ालल्लाहु इन्नी म-अकुम्, ल-इन् अक़म्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज़्ज़का-त व आमन्तुम् बिरुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनल् ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु फ़-मन् क-फ़-र बअ्-द ज़ालि-क मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील **(12)** फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम्

منه ما يريد الله ليجعل عليكم من حرج ولكن يريد
ليطهركم وليتم نعمته عليكم لعلكم تشكرون ﴿٦﴾ و
اذكروا نعمة الله عليكم وميثاقه الذي واثقكم به
إذ قلتم سمعنا وأطعنا واتقوا الله إن الله عليم بذات
الصدور ﴿٧﴾ يا أيها الذين آمنوا كونوا قوامين لله شهداء
بالقسط ولا يجرمنكم شنآن قوم على ألا تعدلوا
اعدلوا هو أقرب للتقوى واتقوا الله إن الله خبير
بما تعملون ﴿٨﴾ وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات
لهم مغفرة وأجر عظيم ﴿٩﴾ والذين كفروا وكذبوا بآياتنا
أولئك أصحاب الجحيم ﴿١٠﴾ يا أيها الذين آمنوا اذكروا نعمت
الله عليكم إذ هم قوم أن يبسطوا إليكم أيديهم فكف
أيديهم عنكم واتقوا الله وعلى الله فليتوكل المؤمنون ﴿١١﴾
ولقد أخذ الله ميثاق بني إسرائيل وبعثنا منهم
اثني عشر نقيبا وقال الله إني معكم لئن أقمتم الصلاة
وآتيتم الزكاة وآمنتم برسلي وعزرتموهم وأقرضتم
الله قرضا حسنا لأكفرن عنكم سيئاتكم ولأدخلنكم

❖ रु. 2/6/6

लअ़न्नाहुम् व जअ़ल्ना क़ुलूबहुम् क़ासि-यतन् युहर्रिफ़ूनल्कलि-म अ़म्-मवाज़िअ़िही व नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअ़ु अ़ला ख़ाइ-नतिम् मिन्हुम् इल्ला क़लीलम् मिन्हुम् फ़अ़्फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(13)** व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा अख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़-अग़्रैना बैनहुमुल् अ़दा-व-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, व सौ-फ़ युनब्बिउहुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअ़ून **(14)** या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्-मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न मिनल्-किताबि व यअ़्फ़ू अ़न् कसीरिन्, क़द् जाअकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व किताबुम् मुबीन **(15)** यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ़ रिज़्वानहू सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि-इज़्निही व यह्दीहिम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(16)**

لايحب الله ١٠٠ المآئدة ٥

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ
لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ
مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ
عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى
اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ
اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ
رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾
يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ
مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ
الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ

منزل

ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्‌य-म, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्- मसीहब्-न मर्‌य-म व उम्म-हू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न्, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(17)** व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु

अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू, क़ुल् फ़लि-म युअ़ज़्ज़िबुकुम् बिज़ुनूबिकुंम्, बल् अन्तुम् ब-शरुम् मिम्-मन् ख़-ल-क़, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व इलैहिल्-मसीर **(18)** या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अ़ला फ़त्रतिम् मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जाअना मिम्-बशीरिंव्-व ला नज़ीरिन् फ़-क़द् जा-अकुम् बशीरुंव्-व नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(19)** ❖

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमिज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् ज-अ़-ल फ़ीकुम् अम्बिया-अ व ज-अ़-लकुम् मुलूकंव्-व आताकुम् मा लम् युअ्ति अ-हदम् मिनल्-आ़लमीन **(20)** या क़ौमिद्ख़ुलुल् अर्ज़ल् मुक़द्द-सतल्लती क-तबल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन **(21)** क़ालू या मूसा इन्-न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी-न व इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा फ़-इंय्यख़्रुजू मिन्हा फ़-इन्ना दाख़िलून **(22)** क़ा-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुल्बा-ब फ़-इज़ा दख़ल्तुमूहु फ़-इन्नकुम् ग़ालिबू-न, व अ़लल्लाहि फ़-तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(23)** क़ालू या मूसा इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा अ-बदम् मा दामू फ़ीहा

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ
اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۚ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ
بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَلِلّٰهِ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ
مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۚ
فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ
مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ
الْمُقَدَّسَةَ الَّتِیْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ
وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ

फ़ज़्हब् अन्-त व रब्बु-क फ़क़ातिला इन्ना हाहुना क़ाअ़िदून (24) क़ा-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल् क़ौमिल् फ़ासिक़ीन (25) क़ा-ल फ़-इन्नहा मुहर्र-मतुन् अ़लैहिम् अर्बअ़ी-न स-नतन् यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि, फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (26) ❖

वत्लु अ़लैहिम् न-बअब्नै आद-म बिल्हक़्क़ि ✣ इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् यु-तक़ब्बल् मिनल्-आख़रि, क़ा-ल लअक़्तुलन्न-क, क़ा-ल इन्नमा य-तक़ब्बलुल्लाहु मिनल् मुत्तक़ीन ● (27) ल-इम् बसत्-त इलय्-य य-द-क लितक़्तु-लनी मा अ-न बिबासितिंय्-यदि-य इलै-क लिअक़्तु-ल-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्- आलमीन (28) इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि-इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन् अस्हाबिन्नारि व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन (29) फ़तव्व-अ़त् लहू नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क़्-त-लहू फ़-अस्ब-ह मिनल्

المآئدة ٥ ١٠٢ لا يحب الله

غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قَالُوْا
يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ
وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ
اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝
قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ يَتِيْهُوْنَ فِى
الْاَرْضِ ۗ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ
نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ۗ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ۗ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ
اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ لَىِٕنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ
اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنِّيْٓ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ
اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰۤؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۚ فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ
قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ فَبَعَثَ اللّٰهُ
غُرَابًا يَّبْحَثُ فِى الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ۗ
قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى اَعَجَزْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ
سَوْءَةَ اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ۛ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛ

منزل

ख़ासिरीन (30) फ़-ब-अ़सल्लाहु गुराबंय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लियुरि-यहू कै-फ़ युवारी सौअ-त अख़ीहि, क़ा-ल या वै-लता अ-अ़जज़्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़ल्गुराबि फ़-उवारि-य सौअ-त अख़ी फ़-अस्ब-ह मिनन्नादिमीन (31) मिन् अज्लि ज़ालि-क कतब्ना अ़ला बनी इस्राई-ल अन्नहू मन् क़-त-ल नफ़्सम् बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-कअन्नमा

क़-तलन्ना-स जमीअ़न् व मन् अह़्याहा फ़-कअन्नमा अह़्यन्ना-स जमीअ़न्, व ल-क़द् जाअत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति सुम्-म इन्-न कसीरम् मिन्हुम् बअ़्-द ज़ालि-क फ़िल्अर्ज़ि ल-मुस्रिफ़ून (32) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ़-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ़ ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्-अर्ज़ि, ज़ालि-क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्- आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (33) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अ़लैहिम् फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (34) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वब्तग़ू इलैहिल् वसी-ल-त व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (35) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लियफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (36)

كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَيْرِ نَفْسٍ
اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا
فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ ۝ اِنَّمَا
جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ
فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ
مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ
اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا
وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ
مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ
وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ؗ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ وَالسَّارِقُ
وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ

युरीदू-न अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम (37) वस्सारिक़ु वस्सारि-क़तु फ़क़्तअू ऐदि-यहुमा जज़ाअम् बिमा क-सबा नकालम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (38) फ़-मन् ता-ब मिम्-बअ़्दि ज़ुल्मिही व अस्ल-ह फ़-इन्नल्ला-ह यतूबु अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (39) अलम् तअ़्लम् अन्नल्ला-ह लहू

मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग्फ़िरु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(40)** या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअ़ू-न फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लज़ी-न क़ालू आमन्ना बिअफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् क़ुलूबुहुम् व मिनल्लज़ी-न हादू सम्माअ़ू-न लिल्कज़िबि सम्माअ़ू-न लिक़ौमिन् आख़री-न लम् यअ्तू-क, युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म मिम्-बअ़्दि मवाज़िअ़िही यक़ूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ्तौहु फ़ह्ज़रू, व मंय्युरिदिल्लाहु फ़ित्न-तहू फ़-लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन्, उला-इकल्लज़ी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र क़ुलूबहुम्, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्- आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम **(41)** सम्माअ़ू-न लिल्कज़िबि अक्कालू-न लिस्सुह्ति, फ़-इन् जाऊ-क फ़ह्कुम् बैनहुम् औ अअ़्रिज़् अ़न्हुम् व इन् तुअ़्रिज़् अ़न्हुम् फ़-लंय्यजुर्रू-क शैअन्, व इन् हकम्-त फ़ह्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुक़्सितीन **(42)** व कै-फ़ युहक्किमून-क व अ़िन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म य-तवल्लौ-न मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन **(43)** ❖

इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरा-त फ़ीहा हुदंव्-व नूरुन् यह्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू

فإن الله يتوب عليه إن الله غفور رحيم ۝ ألم تعلم أن
الله له ملك السموات والأرض يعذب من يشاء ويغفر
لمن يشاء والله على كل شيء قدير ۝ يأيها الرسول
لا يحزنك الذين يسارعون في الكفر من الذين قالوا
امنا بأفواههم ولم تؤمن قلوبهم ومن الذين هادوا
سمعون للكذب سمعون لقوم اخرين لم يأتوك يحرفون
الكلم من بعد مواضعه يقولون إن أوتيتم هذا فخذوه
وإن لم تؤتوه فاحذروا ومن يرد الله فتنته فلن
تملك له من الله شيئا أولئك الذين لم يرد الله أن يطهر
قلوبهم لهم في الدنيا خزي ولهم في الاخرة عذاب
عظيم ۝ سمعون للكذب أكلون للسحت فإن جاءوك
فاحكم بينهم أو أعرض عنهم وإن تعرض عنهم فلن
يضروك شيئا وإن حكمت فاحكم بينهم بالقسط إن
الله يحب المقسطين ۝ وكيف يحكمونك وعندهم
التورىة فيها حكم الله ثم يتولون من بعد ذلك وما
أولئك بالمؤمنين ۝ إنا أنزلنا التورىة فيها هدى ونور

लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु बिमस्तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अ़लैहि शु-हदा-अ फ़ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि व ला तश्तरू बिआयाती स-मनन् क़लीलन्, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल्काफ़िरून (44) व कतब्ना अ़लैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़्-स बिन्नफ़्सि वल्अै-न बिल्अैनि वल्अन्-फ़ बिल्अन्फ़ि वल्उज़ु-न बिल्-उज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि वल्-जुरू-ह क़िसासुन्, फ़-मन् तसद्द-क़ बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (45) व क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिअ़ीसब्नि मर्-य-म मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व आतैनाहुल् इन्जी-ल फ़ीहि हुदंव्-व नूरुंव्-व मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व हुदंव्-व मौअि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन (46) वल्यह्कुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़ीहि व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून (47) व अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनल्-किताबि व मुहैमिनन् अ़लैहि फ़ह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अहुम् अ़म्मा जाअ-क मिनल्-हक़्क़ि, लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मिन्कुम् शिर्-अ़तंव्-व मिन्हाजन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतव्- वाहि-दतंव्-व लाकिल्लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति, इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम्

يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ
وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ
فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا
قَلِيْلًا وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَ
الْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَ
السِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ
كَفَّارَةٌ لَّهٗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ

फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(48)** व अनिह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् वह्ज़र्हुम् अंय्यफ़्तिनू-क अम्बअ्ज़ि मा अन्ज़लल्लाहु इलै-क, फ़-इन् तवल्लौ फ़अ्लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि-बअ्ज़ि ज़ुनूबिहिम्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि लफ़ासिक़ून **(49)** अ-फ़हुक्मल् जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न, व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल् लिक़ौमिंय्यूक़िनून **(50)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल् यहू-द वन्नसारा औलिया-अ ✣ बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन्, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-इन्नहू मिन्हुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन **(51)** फ़-तरल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन् तुसीबना दा-इ-रतुन्, फ़-असल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिल्फ़त्हि औ अम्रिम् मिन् अिन्दिही फ़युस्बिहू अला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन **(52)** व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू अ-हाउला-इल्लज़ी-न अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् इन्नहुम् ल-म-अकुम्, हबितत् अअ्मालुहुम् फ़अस्बहू ख़ासिरीन ▲ **(53)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम् अन् दीनिही फ़सौ-फ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय्-युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू अज़िल्लतिन् अलल्-मुअ्मिनी-न अअिज़्ज़तिन् अलल्काफ़िरी-न युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त ला-इमिन्, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि

لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝
وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَ
احْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۗ فَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۗ
وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۗ
وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ
فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰٓى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ۗ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَ
بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
نٰدِمِيْنَ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا
بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ۗ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا
خٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ

युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (54) इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व रसूलुहू वल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् राकिअून (55) व मंय्य-तवल्लल्ला-ह व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़-इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-ग़ालिबून (56) ❖

فسوف يأتي الله بقوم يحبهم ويحبونه أذلة على المؤمنين
أعزة على الكافرين يجاهدون في سبيل الله ولا يخافون
لومة لائم ذلك فضل الله يؤتيه من يشاء والله واسع
عليم إنما وليكم الله ورسوله والذين آمنوا الذين يقيمون
الصلاة ويؤتون الزكاة وهم راكعون ومن يتول الله
ورسوله والذين آمنوا فإن حزب الله هم الغالبون
يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا الذين اتخذوا دينكم هزوا و
لعبا من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم والكفار أولياء
واتقوا الله إن كنتم مؤمنين وإذا ناديتم إلى الصلاة
اتخذوها هزوا ولعبا ذلك بأنهم قوم لا يعقلون قل
يا أهل الكتاب هل تنقمون منا إلا أن آمنا بالله وما أنزل
إلينا وما أنزل من قبل وأن أكثركم فاسقون قل هل
أنبئكم بشر من ذلك مثوبة عند الله من لعنه الله و
غضب عليه وجعل منهم القردة والخنازير وعبد الطاغوت
أولئك شر مكانا وأضل عن سواء السبيل وإذا جاءوكم
قالوا آمنا وقد دخلوا بالكفر وهم قد خرجوا به والله أعلم

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व लअ़िबम् मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (57) व इज़ा नादैतुम् इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव्-व लअ़िबन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्क़िलून (58) क़ुल् या अह्लल्-किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु व अन्-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून (59) क़ुल् हल् उनब्बिउकुम् बि-शर्रिम् मिन् ज़ालि-क मसू-बतन् अ़िन्दल्लाहि, मल्ल-अ़-नहुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अ़लैहि व ज-अ़-ल मिन्हुमुल् क़ि-र-द-त वल्ख़नाज़ी-र व अ़-बदत्तागू-त, उलाइ-क शर्रुम् मकानंव्-व अज़ल्लु अ़न् सवा-इस्सबील (60) व इज़ा जाऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द् द-ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू बिही, वल्लाहु अअ्लमु बिमा कानू यक्तुमून (61) व तरा कसीरम् मिन्हुम् युसारिअू-न फ़िल्इस्मि वल्-अ़ुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू

यअ्मलून (62) लौ ला यन्हाहुमुर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु अ़न् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू यस्नअून (63) व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन्, ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व लुअिनू बिमा क़ालू ✣ बल् यदाहु मब्सूतातानि युन्फ़िक़ु कै-फ़ यशा-उ, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़रन्, व अल्कैना बैनहुमुल्-अ़दाव-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, कुल्लमा औक़दू नारल्-लिल्-हर्बि अत्-फ़-अहल्लाहु व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन्, वल्लाहु ला युहिब्बुल् मुफ़्सिदीन (64) व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ ल-कफ़्फ़र्ना अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअ़ीम (65) व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल-अ-कलू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम्, मिन्हुम् उम्मतुम् मुक़्तसि-दतुन्, व कसीरुम् मिन्हुम् सा-अ मा यअ्मलून (66) ❖

لا يحب الله ٦ ١٠٨ المائدة ٥

بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَوْلَا
يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ
السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ
مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ
يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ
وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ
وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ۭ وَكَثِيْرٌ
مِّنْهُمْ سَاۗءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ۭ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قُلْ يٰٓاَهْلَ

منزل ٢

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क व इल्लम् तफ़्अल् फ़मा बल्लग़्-त रिसाल-तहू, वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (67) क़ुल् या अह्लल्-किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् हत्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम्, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा

उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-काफ़िरीन **(68)** इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(69)**

ल-क़द् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन्, कुल्लमा जाअहुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून **(70)** व हसिबू अल्ला तकू-न फ़ित्नतुन् फ़-अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्- मिन्हुम्, वल्लाहु बसीरुम् बिमा यअ़्मलून **(71)** ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म, व क़ालल्मसीहु या बनी इस्राईलअ़्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम्, इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् हर्रमल्लाहु अ़लैहिल्- जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु, व मा

المآئدة ١٠٩ لا يحب الله

الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيلَ وَ
مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِينَ ﴿٦٨﴾ إِنَّ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصّٰبِئُونَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ
آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صٰلِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ
لَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَآءِيلَ وَأَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوٰى أَنْفُسُهُمْ فَرِيقًا
كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا
وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ ۚ
وَاللّٰهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يٰبَنِي إِسْرَآءِيلَ اعْبُدُوا
اللّٰهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوٰىهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ
إِلَّآ إِلٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِنْ لَمْ يَنْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ

منزل

लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार **(72)** ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन् ✣ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन्, व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-यमस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(73)** अ-फ़ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहू, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(74)** मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन्

✣ व. लाज़िम

क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, व उम्मुहू सिद्दीक़तुन्, काना यअ्कुलानित्तआ़-म, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्-आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (75) क़ुल अ-तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अ़न्, वल्लाहु हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम (76) क़ुल या अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़ू अह्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू अ़न् सवा-इस्सबील (77) ❖

लुअ़िनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला लिसानि दावू-द व अ़ीसब्नि मर्य-म, ज़ालि-क बिमा अ़सौ-व कानू यअ़्तदून (78) कानू ला य-तनाहौ-न अ़म्-मुन्करिन् फ़-अ़लूहु, लबिअ्-स मा कानू यफ़्अ़लून (79) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-तवल्लौन-ल्लज़ी-न क-फ़रू, लबिअ्-स मा क़द्द-मत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्-अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (80) व लौ कानू युअ्मिनू-न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्त-ख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (81) ल-तजिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दा-वतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू व ल-तजिदन्-न अक़्र-बहुम् मवद्दतल्- लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा, ज़ालि-क बिअन्-न मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानंव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (82)

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۗ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۗ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾ قُلْ
اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۗ وَاللّٰهُ
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ
اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۗ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۗ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ
لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي
الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾
لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ
وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۗ
ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

सातवाँ पारः व इज़ा समिअ़ू

सूरतुल् माइ-दति (आयत 83 से 120)

व इज़ा समिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ़्यु-नहुम् तफ़ीजु मिनद्दम्अ़ि मिम्मा अ़-रफ़ू मिनल्-हक़्क़ि यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन (83) व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्-हक़्क़ि व नत्मअु अंय्युद्ख़ि-लना रब्बुना मअ़ल्- क़ौमिस्सालिहीन (84) फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउल् मुह्सिनीन (85) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल् जहीम (86) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (87) व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (88) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत्आमु अ़-श-रति मसाकी-न मिन् औ-सति मा तुत्अिमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह्रीरु र-क़्-बतिन्, फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन्, ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा हलफ़्तुम् वह्फ़ज़ू ऐमानकुम्,

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ
مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا
مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ
الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝
فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ
بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ
فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا
أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ

❖ रु. 11/9/1

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(89)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-ख़म्रु वल्मैसिरु वलूअन्साबु वलूअज़्लामु रिज्सुम्-मिन् अ़-मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(90)** इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूक़ि-अ़ बैनकुमुल् अ़दा-व-त वल-बग़्ज़ा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व अ़निस्सलाति फ़-हल् अन्तुम् मुन्तहून **(91)** व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रू फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़अ़्लमू अन्नमा अ़ला रसूलिनल् बलाग़ुल् मुबीन **(92)** लै-स अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू इज़ा मत्तक़ौ व आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सुम्मत्तक़ौ व आमनू सुम्मत्तक़ौ व अह्सनू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन **(93)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्न-कुमुल्लाहु बिशैइम् मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि-यअ़्-लमल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि फ़-मनिअ़्तदा बअ़्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम **(94)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्तुलुस्सै-द व अन्तुम् हुरुमुन्, व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ाउम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अ़मि यह्कुमु बिही ज़वा अ़द्लिम्-मिन्कुम् हद्यम् बालिग़ल्-कअ़्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अ़द्लु ज़ालि-क सियामल्-लियज़ू-क़ व बा-ल अम्रिही, अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा स-लफ़, व मन् आ़-द फ़-यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम **(95)** उहिल्-ल लकुम् सैदुल्बह्रि व

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ اِنَّمَا
يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ
الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ
فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ
هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا
لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ
اللّٰهُ مِنْهُ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ

तआ़मुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सय्या-रति व हुर्रि-म अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून **(96)** ज-अ़लल्लाहुल् कअ्-बतल् बैतल्-हरा-म क़ियामल् लिन्नासि वश्शह्रल्-हरा-म वल्हद्-य वल्क़लाइ-द, ज़ालि-क लितअ्लमू अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(97)** इअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाबि व अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(98)** मा अ़लर्रसूलि इल्ललू-बलाग़ु, वल्लाहु यअ्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून **(99)** क़ुल् ला यस्तविल्-ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि फत्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(100)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न् अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्कुम् व इन् तस्अलू अ़न्हा ही-न युनज़्ज़लुल्-क़ुरआनु तुब्-द लकुम्, अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम **(101)** क़द् स-अ-लहा क़ौमुम् मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफ़िरीन **(102)** मा ज-अ़लल्लाहु मिम्-बही-रतिंव्-व ला साइ-बतिंव्-व ला वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-व लाकिन्नल्लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्- कज़ि-ब, व अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून **(103)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला यअ्लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून **(104)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ु-सकुम् ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल्-ल इज़हतदैतुम्, इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा

حرما واتقوا الله الذي اليه تحشرون ﴿٩٦﴾ جعل الله الكعبة
البيت الحرام قيما للناس والشهر الحرام والهدي والقلائد
ذلك لتعلموا ان الله يعلم ما في السموت وما في الارض وان
الله بكل شيء عليم ﴿٩٧﴾ اعلموا ان الله شديد العقاب وان
الله غفور رحيم ﴿٩٨﴾ ما على الرسول الا البلغ والله يعلم ما تبدون
وما تكتمون ﴿٩٩﴾ قل لا يستوي الخبيث والطيب ولو اعجبك كثرة
الخبيث فاتقوا الله يا ولي الالباب لعلكم تفلحون ﴿١٠٠﴾ يايها
الذين امنوا لا تسئلوا عن اشياء ان تبد لكم تسؤكم وان
تسئلوا عنها حين ينزل القران تبد لكم عفا الله عنها والله
غفور حليم ﴿١٠١﴾ قد سالها قوم من قبلكم ثم اصبحوا بها
كفرين ﴿١٠٢﴾ ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة ولا وصيلة و
لا حام ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب واكثرهم
لا يعقلون ﴿١٠٣﴾ واذا قيل لهم تعالوا الى ما انزل الله والى الرسول
قالوا حسبنا ما وجدنا عليه اباءنا اولو كان اباؤهم لا يعلمون
شيئا ولا يهتدون ﴿١٠٤﴾ يايها الذين امنوا عليكم انفسكم لا يضركم
من ضل اذا اهتديتم الى الله مرجعكم جميعا فينبئكم

ع

منزل ٢

कुन्तुम् तअ्मलून **(105)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु हीनल्- वसिय्यतिस्नानि ज़वा अद्लिम् मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति, तह्बिसूनहुमा मिम्-बअ्दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-मनंव्-व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व ला नक्तुमु शहा-दतल्लाहि इन्ना इज़ल् लमिनल्-आसिमीन **(106)** फ़-इन् अुसि-र अला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़-आख़रानि यक़ूमानि मक़ा-महुमा मिनल्लज़ीनस्-तहक़्-क़ अलैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादतिहिमा व मअ्तदैना इन्ना इज़ल् लमिनज़्ज़ालिमीन **(107)** ज़ालि-क अद्ना अंय्यअ्तू बिश्शहा-दति अला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द ऐमानुम् बअ्-द ऐमानिहिम्, वत्तक़ुल्ला-ह वस्मअू, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन **(108)** ❖

यौ-म यज्मअुल्लाहुर्रुसु-ल फ़-यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम्, क़ालू ला अ़िल्-म लना, इन्न-क अन्-त अल्लामुल्-ग़ुयूब **(109)** इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्यमज़्कुर् निअ्मती अलै-क व अला वालिदति-क ✣ इज़् अय्यत्तु-क बिरूहिल्क़ुदुसि, तुकल्लिमुन्ना-स फ़िल्मह्दि व कह्लन् व इज़् अल्लम्तुकल्-किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल व इज़् तख़्लुक़ु मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि बि-इज़्नी फ़तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़-तकूनु तैरम् बि-इज़्नी व तुब्रिउल्-अक्म-ह

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ
أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ
مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةُ
الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ
ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ
اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا
فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ
فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا
إِنَّا إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ
وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاسْمَعُوا ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾ يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ
الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ ۖ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَ
عَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي
الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ
وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنْفُخُ

❖ रु. 14/8/4 ✣ व. लाज़िम

वल्अब्र-स बि-इज़्नी व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बि-इज़्नी व इज़् कफ़फ़्तु बनी इस्राई-ल अ़न्-क इज़् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन **(110)** व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिनू बी व बि-रसूली क़ालू आमन्ना वश्हद् बिअन्नना मुस्लिमून **(111)** इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या अ़ीसब्-न मर्‌य-म हल् यस्ततीअु रब्बु-क अंय्युनज़्ज़ि-ल अ़लैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ, क़ालत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन **(112)** क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्मइन्-न क़ुलूबुना व नअ़्ल-म अन् क़द् सदक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन ◆ **(113)** क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्‌यमल्लाहुम्-म रब्बना अन्ज़िल् अ़लैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ तकूनु लना अ़ीदल् लि-अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्- मिन्-क वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन **(114)** क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अ़लैकुम् फ़-मंय्यक्फ़ुर् बअ़्दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबल्-ला उअ़ज़्ज़िबुहू अ-हदम् मिनल्-आ़लमीन **(115)** ❖

المآئدة ٥ — ١١٥ — واذا سمعوا ٧

فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص باذني
واذ تخرج الموتى باذني واذ كففت بني اسرائيل عنك اذ
جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا
سحر مبين ﴿١١٠﴾ واذ اوحيت الى الحواريين ان امنوا بي و
برسولي قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ﴿١١١﴾ اذ قال
الحواريون يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل
علينا مائدة من السماء قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ﴿١١٢﴾
قالوا نريد ان ناكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد
صدقتنا ونكون عليها من الشهدين ﴿١١٣﴾ قال عيسى ابن مريم
اللهم ربنا انزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا
لاولنا واخرنا واية منك وارزقنا وانت خير الرزقين ﴿١١٤﴾
قال الله اني منزلها عليكم فمن يكفر بعد منكم فاني اعذبه
عذابا لا اعذبه احدا من العلمين ﴿١١٥﴾ واذ قال الله يعيسى ابن
مريم ءانت قلت للناس اتخذوني وامي الهين من دون
الله قال سبحنك ما يكون لي ان اقول ما ليس لي بحق ان كنت
قلته فقد علمته تعلم ما في نفسي ولا اعلم ما في نفسك

منزل ٢

व इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्‌य-म अ-अन्-त क़ुल्-त लिन्नासित्तख़िज़ूनी व उम्मि-य इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि, क़ा-ल सुब्हान-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा लै-स ली बिहक़्क़िन्, इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़-क़द् अ़लिम्तहू तअ़्लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ़्लमु मा फ़ी नफ़्सि-क, इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब **(116)** मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्‌तनी

बिही अनिअ्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् व कुन्तु अ़लैहिम् शहीदम् मा दुम्तु फ़ीहिम् फ़-लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्-त अन्तर्रकी-ब अ़लैहिम्, व अन्-त अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद **(117)** इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(118)** क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम्, लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम **(119)** लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न, व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(120)** ❖

6 सूरतुल् अन्आमि 55

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 12935 अक्षर 3100 शब्द 165 आयतें, और 20 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ़लज़्-ज़ुलुमाति वन्नू-र, सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ़्दिलून **(1)** हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-जलन्, व अ-जलुम् मुसम्मन् अ़िन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून **(2)** व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि, यअ़्लमु सिर्रकुम् व जह्रकुम् व यअ़्लमु मा तक्सिबून **(3)** व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ़्रिज़ीन **(4)** फ़-क़द् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़सौ-फ़ यअ्तीहिम्

إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ
اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ
فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ
فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ
صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا ۚ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾ لِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ
وَالنُّورَ ۖ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم
مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ
تَمْتَرُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ ۖ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ
جَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ﴿٣﴾ وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ
فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٥﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ

अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(5)** अलम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम् मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अ़लैहिम् मिद्रारंव्-व जअ़ल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन **(6)** व लौ नज़्ज़ल्ना अ़लै-क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम् लक़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन **(7)** व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि म-लकुन्, व लौ अन्ज़ल्ना म-लकल् लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्ज़रून **(8)** व लौ जअ़ल्नाहु म-लकल् ल-जअ़ल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना अ़लैहिम् मा यल्बिसून **(9)** व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(10)** ❖

क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन **(11)** क़ुल्-लिमम्-मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़ुल्-लिल्लाहि, क-त-ब अ़ला नफ़्सिहिर्रह्म-त, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्- क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि, अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून **(12)** व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि, व हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम **(13)** क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु-व युत्‌अ़िमु व ला युत्‌अ़मु, क़ुल् इन्नी उमिर्‌तु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व

أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن
لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي
مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا
آخَرِينَ ﴿٦﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ
لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ﴿٨﴾ وَ
لَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ﴿٩﴾
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم
مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ قُل لِّمَن مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
قُل لِّلَّهِ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾ وَلَهُ
مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾ قُلْ أَغَيْرَ
اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ
قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ

ला तकूनन्-न मिनल्मुश्रिकीन (14) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (15) मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन् फ़-क़द् रहि-महू, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्मुबीन (16) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व, व इंय्यम्सस्-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (17) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अ़िबादिही, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (18) क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-दतन्, क़ुलिल्लाहु, शहीदुम् बैनी व बैनकुम्, व ऊहि-य इलय्-य हाज़ल् क़ुर्आनु लिउन्ज़ि-रकुम् बिही व मम्-ब-ल-ग़, अइन्नकुम् लतश्हदू-न अन्-न मअ़ल्लाहि आलि-हतन् उख़्रा, क़ुल् ला अश्हदु क़ुल् इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुंव्-व इन्ननी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून ✣ (19) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल् किता-ब यअ़्रिफ़ूनहू कमा यअ़्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम् ✣ अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (20) ❖

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्-ज़ालिमून (21) व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शु-रकाउ- कुमुल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (22) सुम्-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (23) उन्ज़ुर् कै-फ़ क-ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (24) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअ़ु इलै-क व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी

عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ۚ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ
اِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۚ
قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۚ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ
بِهٖ وَمَنْ بَلَغَ ۚ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ۚ قُلْ
لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۚ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ
نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْۤا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا
مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ
اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ

आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा, हत्ता इज़ा जाऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन **(25)** व हुम् यन्हौ-न अ़न्हु व यन्औ-न अ़न्हु व इंय्युह्लिकू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यश्अुरून **(26)** व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू या-लैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल् मुअ्मिनीन **(27)** बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु, व लौ रुद्दू लआ़दू लिमा नुहू अ़न्हु व इन्नहुम् लकाज़िबून **(28)** व क़ालू इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन **(29)** व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम्, क़ा-ल अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्- अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(30)** ❖

क़द् ख़ासिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि, हत्ता इज़ा जाअत्हुमुस्-सा-अ़तु बग़्-ततन् क़ालू या-हस्र-तना अ़ला मा फ़र्रत़्ना फ़ीहा व हुम् यह्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम्, अला सा-अ मा यज़िरून **(31)** व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला लअ़िबुंव्-व लह्वुन्, व लद्दारुल्- आख़ि-रतु ख़ैरुल् लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न, अ-फ़ला तअ़्किलून **(32)** क़द् नअ़्लमु इन्नहू ल-यह्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम् ला युकज़्ज़िबून-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून **(33)** व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा कुज़्ज़िबू व ऊज़ू

كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَ
يَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَلَوْ
تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ
رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ
مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝
وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ وَلَوْ
تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۗ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوْا بَلٰى وَ
رَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا
عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ۗ اَلَا
سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَلَلدَّارُ
الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ
الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
يَجْحَدُوْنَ ۝ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا
كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ
وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ

हत्ता अताहुम् नस्रुना व ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिल्लाहि व ल-क़द् जाअ-क मिन् न-बइल् मुर्सलीन **(34)** व इन् का-न कबु-र अ़लै-क इअ्राजुहुम् फ़-इनिस्-ततअ्-त अन् तब्तग़ि-य न-फ़क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समा-इ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-म-अ़हुम् अ़लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल् जाहिलीन ● **(35)** इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअू-न, वल्मौता यब्अ़सुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअून **(36)** व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्युनज़्ज़ि-ल आयतंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(37)** व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम् युह्शरून **(38)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुंव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति, मंय्य-शइल्लाहु युज़्लिल्हु, व मंय्यशअ् यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(39)** क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्-सा-अ़तु अग़ैरल्लाहि तद्अू-न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(40)** बल् इय्याहु तद्अू-न फ़-यक्शिफ़ु मा तद्अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून **(41)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् य-तज़र्रअून **(42)** फ़लौ ला इज़् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअू व

وإذا سمعوا ٧ | ١٢٠ | الانعام ٦

إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا
فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ
فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ
وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾ وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَ
لَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ
يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ
فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَنْ يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ
أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ
فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِنْ قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ
وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ
فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا

منزل ٢

लाकिन् क़-सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्मलून **(43)** फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़तह्ना अ़लैहिम् अब्वा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अख़ज़्नाहुम् बग़्-ततन् फ़-इज़ा हुम् मुब्लिसून **(44)** फ़क़ुति-अ़ दाबिरुल् क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू, वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(45)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़ज़ल्लाहु समूअ़कुम् व अब्सारकुम् व ख़-त-म अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम्-म हुम् यस्दिफ़ून **(46)** क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि बग़्-ततन् औ जह्-रतन् हल् युह्लकु इल्लल् क़ौमुज़्ज़ालिमून **(47)** व मा नुर्सिलुल्- मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न फ़-मन् आम-न व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(48)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(49)** क़ुल् ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम् इन्नी म-लकुन् इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य, क़ुल् हल् यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु, अ-फ़ला त-तफ़क्करून **(50)** ❖

व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअ़ुल् लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(51)** व ला तत्रुदिल्लज़ी-न यद्अ़ू-न रब्बहुम्

وَاِذَاسَمِعُوْا ٧ ١٢١ الانعام ٦

اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ
سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ
يَاْتِيْكُمْ بِهٖ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾
قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ
يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّا اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ
وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰى
اِلَيَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَ
اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ مَا عَلَيْكَ
مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ

منزل ٢

बिल्ग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू, मा अ़लै-क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् हिसाबि-क अ़लैहिम् मिन् शैइन् फ़-तत्रु-दहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन **(52)** व कज़ालि-क फ़तन्ना बअ्ज़हुम् बिबअ्ज़िल्-लियक़ूलू अ-हाउला-इ मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम्-बैनिना, अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन **(53)** व इज़ा जा-अकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह्म-त अन्नहू मन् अ़मि-ल मिन्कुम् सूअम् बि-जहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्-बअ्दिही व अस्ल-ह फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम **(54)** व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी-न सबीलुल्- मुज्रिमीन **(55)** ❖

क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्--लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, क़ुल् ला अत्तबिअु अह्वा-अकुम् क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व मा अ-न मिनल् मुह्तदीन **(56)** क़ुल् इन्नी अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही, मा अिन्दी मा तस्तअ्जिलू-न बिही, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, यक़ुस्सुल्हक़्-क़ व हु-व ख़ैरुल्-फ़ासिलीन **(57)** क़ुल् लौ अन्-न अिन्दी मा तस्तअ्जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-अम्रु बैनी व बैनकुम्, वल्लाहु अअ्लमु बिज़्ज़ालिमीन **(58)** व अिन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हु-व, व यअ्लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बहि्र, व मा तस्क़ुतु मिंव्-व-र-क़ातिन् इल्ला यअ्लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन **(59)** व हुवल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम्

لِّيَقُولُوٓا أَهَٰٓؤُلَآءِ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْهِم مِّنۢ بَيْنِنَآ ۗ أَلَيْسَ ٱللَّهُ بِأَعْلَمَ
بِٱلشَّٰكِرِينَ ﴿٥٣﴾ وَإِذَا جَآءَكَ ٱلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِـَٔايَٰتِنَا فَقُلْ سَلَٰمٌ
عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُۥ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ
سُوٓءًۢا بِجَهَٰلَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنۢ بَعْدِهِۦ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُۥ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾
وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾
قُلْ إِنِّى نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ ٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۚ قُل
لَّآ أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾
قُلْ إِنِّى عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى وَكَذَّبْتُم بِهِۦ ۚ مَا عِندِى مَا
تَسْتَعْجِلُونَ بِهِۦٓ ۚ إِنِ ٱلْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ ٱلْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ
ٱلْفَٰصِلِينَ ﴿٥٧﴾ قُل لَّوْ أَنَّ عِندِى مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِۦ لَقُضِىَ ٱلْأَمْرُ
بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٥٨﴾ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ
لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ
إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى
كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ ٱلَّذِى يَتَوَفَّىٰكُم بِٱلَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِٱلنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰٓ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ
ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۖ وَ

बिल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम् मुसम्मन् सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (60) ❖

व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अिबादिही व युर्सिलु अ़लैकुम् ह-फ़-ज़तन्, हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (61) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि, अला लहुल्हुक्मु, व हु-व अस्रअुल्-हासिबीन (62) क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि तद्अूनहू तज़र्रुअंव्-व ख़ुफ़्यतन् ल-इन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (63) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (64) क़ुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्अ़-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम् मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शि-यअंव्-व युज़ी-क़ बअ्ज़कुम् बअ्-स बअ्ज़िन्, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (65) व कज़्ज़-ब बिही क़ौमु-क व हुवल्हक़्क़ु, क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बि-वकील (66) लिकुल्लि न-बइम् मुस्तक़र्रुंव्-व सौ-फ़ तअ्लमून (67) व इज़ा रऐतल्लज़ी-न यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही, व इम्मा युन्सियन्न-कश्शैतानु फ़ला तक़्अुद् बअ्दज़्ज़िक्रा मअ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (68) व मा अ़लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व लाकिन् ज़िक्रा लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (69) व ज़रिल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लअिबंव्-व लह्वंव्-व ग़र्रत्हुमुल् हयातुद्दुन्या व ज़क्किर् बिही अन् तुब्स-ल

يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ
رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ اَلَا
لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ
ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ
هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ
كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ
شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ
لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى
يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ
مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ
ذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

नफ़्सुम्-बिमा क-सबत् लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुन् व इन् तअ्दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्-ला युअ्ख़ज़् मिन्हा, उला-इकल्लज़ी-न उब्सिलू बिमा क-सबू लहुम् शराबुम् मिन् हमीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फ़ुरून **(70)** ❖

क़ुल् अ-नद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ्क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्-तह्वत्हुश्शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि हैरा-न लहू अस्हाबुंय्-यद्अूनहू इलल्-हुदअ्तिना, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा, व उमिर्ना लिनुस्लि-म लिरब्बिल् आ़लमीन **(71)** व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु, व हुवल्लज़ी इलैहि तुह्शरून **(72)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, व यौ-म यक़ूलु कुन् फ़-यकून ▲ **(73)** क़ौलुहुल्-हक़्क़ु, व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि, आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहा-दति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर **(74)** व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लि-अबीहि आज़-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलि-हतन् इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम् मुबीन **(75)** व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म म-लकूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न मिनल् मूक़िनीन **(76)** फ़-लम्मा जन्-न अ़लैहिल्लैलु रआ कौ-कबन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ला उहिब्बुल् आफ़िलीन **(77)** फ़-लम्मा रअल्-क़-म-र बाज़िग़न् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ल-इल्लम् यह्दिनी रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल् क़ौमिज़्ज़ाल्लीन **(78)** फ़-लम्मा रअश्शम्-स बाज़ि-ग़तन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु फ़-लम्मा अ-फ़लत्

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ
بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ
لَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ
الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى
الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ
يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ۗ
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ
لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ
مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ
فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّآلِّيْنَ ۝ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ

क़ा-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून **(79)** इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-तरस्समावाति वल्अर्-ज़ हनीफ़ंव्-व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन **(80)** व हाज्जहू क़ौमुहू, क़ा-ल अतुहाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि, व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अंय्यशा-अ रब्बी शैअन्, वसि-अ रब्बी कुल्-ल शैइन् अिल्मन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून **(81)** व कै-फ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्तानन्, फ़-अय्युल् फ़रीक़ैनि अहक़्क़ु बिल्-अम्नि इन् कुन्तुम् तअ्लमून ✣ **(82)** अल्लज़ी-न आमनू व लम् यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून **(83)** ❖

व तिल्-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अ़ला क़ौमिही, नर्फ़अ़ु द-रजातिम् मन्- नशा-उ, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम **(84)** व वहब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब, कुल्लन् हदैना व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा व हारू-न, व कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(85)** व ज़-करिय्या व यह्या व अ़ीसा व इल्या-स कुल्लुम् मिनस्सालिहीन **(86)** व इस्माअ़ी-ल वल्य-स-अ़ व यूनु-स व लूतन्, व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ़लल् आलमीन **(87)** व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् व इख़्वानिहिम् वज्तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(88)** ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिही, व लौ अश्रकू ल-हबि-त अ़न्हुम् मा कानू यअ़्मलून **(89)**

اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ
لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَ
حَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ
مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ
اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ
اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا
اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ
حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ
وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ
وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا
وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ
وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا

उला-इकल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त फ़-इंय्यक्फ़ुर् बिहा हा-उला-इ फ़-क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन **(90)** उला-इकल्लज़ी-न हदल्लाहु फ़बिहुदाहुमुक़्तदिह्, क़ुल् ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रा लिल्-आलमीन **(91)** ❖

व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला ब-शरिम् मिन् शैइन्, क़ुल् मन् अन्ज़लल्-किताबल्लज़ी जा-अ बिही मूसा नूरंव्-व हुदल्-लिन्नासि तज्अ़लूनहू क़राती-स तुब्दूनहा व तुख़्फ़ू-न कसीरन् व अ़ुल्लिम्तुम् मा लम् तअ़्लमू अन्तुम् व ला आबाउकुम्, क़ुलिल्लाहु सुम्-म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अ़बून **(92)** व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिक़ुल्लज़ी बै-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा, वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्आख़ि-रति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून **(93)** व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य व लम् यू-ह इलैहि शैउंव्-व मन् क़ा-ल स-उन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्ज़लल्लाहु, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल्-मौति वल्मलाइ-कतु बासितू ऐदीहिम् अख़्रिजू अन्फ़ु-सकुम्, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून **(94)** व

لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا
لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ
شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ
هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ
خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ
بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ
اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ
اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

ल-क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम् मा ख़व्वल्नाकुम् वरा-अ ज़ुहूरिकुम् व मा नरा म-अ़कुम् शु-फ़आ-अकुमुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शु-रका-उ, लक़त्त-क़त्त-अ़ बैनकुम् व ज़ल्-ल अ़न्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून **(95)** ❖

इन्नल्ला-ह फ़ालिक़ुल्-हब्बि वन्नवा, युख़्रिजुल् हय्-य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्-हय्यि, ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून **(96)** फ़ालिक़ुल्-इस्बाहि व ज-अ़लल्लै-ल स-कनंव्- वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन्, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम **(97)** व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुन्नुजू-म लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्- यअ्लमून **(98)** व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् फ़मुस्त-क़र्रुंव्-व मुस्तौदअुन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यफ़्क़हून **(99)** व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्रज्ना बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़-अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु-तराकिबन् व मिनन्नख़्लि मिन् तल्अ़िहा क़िन्वानुन् दानियतुंव्-व जन्नातिम् मिन् अअ्नाबिंव्-वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म-र व यन्अ़िही, इन्-न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(100)** व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रकाअल्-जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम्

وإذا سمعوا ٧ ١٢٧ الانعام ٦

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ
وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا
لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ
الْحَبِّ وَالنَّوٰى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ
نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّفْقَهُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ
كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَ
مِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ
وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ
اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنّٰى

منزل ٢

बिग़ैरि अ़िल्मिन्, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून **(101)** ❖

बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव्-व लम् तकुल्लहू साहि-बतुन्, व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(102)** ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ला इला-ह इल्ला हु-व ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ़्बुदूहु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील **(103)** ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु व हु-व युद्रिकुल्-अब्सा-र व हुवल् लतीफ़ुल्-ख़बीर **(104)** क़द् जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् फ़-मन् अब्स-र फ़लिनफ़्सिही व मन् अ़मि-य फ़-अ़लैहा, व मा अ-न अ़लैकुम् बिहफ़ीज़ **(105)** व कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियक़ूलू दरस्-त व लिनुबय्यि-नहू लिक़ौमिंय्-यअ़्लमून **(106)** इत्तबिअ़् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ला इला-ह इल्ला हु-व व अअ़्रिज़् अ़निल् मुश्रिकीन **(107)** व लौ शाअल्लाहु मा अश्रकू, व मा जअ़ल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न् व मा अन्-त अ़लैहिम् ब-वकील **(108)** व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यसुब्बुल्ला-ह अ़द्वम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन्, कज़ालि-क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ़-म-लहुम् सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअुहुम् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ़्मलून **(109)** व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जाअत्हुम् आयतुल् लयुअ्मिनुन्-न बिहा, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अिरुकुम् अन्नहा इज़ा जाअत् ला युअ्मिनून **(110)** व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ़्महून **(111)** ❖

يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُ صَاحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَالِقُ كُلِّ
شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾ لَّا تُدْرِكُهُ
الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ
جَاءَكُم بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ
فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَ
لِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١٠٥﴾ اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ
إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾ وَ
لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۗ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَمَا أَنتَ
عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ
اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾ وَ
أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ
بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

❖ रु. 12/6/18 ❖ रु. 13/10/19

आठवाँ पारः व लौ अन्नना

सूरतुल् अन्आमि (आयत 112 से 166)

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल्-मलाइ-क-त व कल्ल-महुमुल्-मौता व हशर्ना अ़लैहिम् कुल्-ल शैइन् क़ुबुलम् मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व लाकिन्-न अक्स-रहुम् यज्हलून **(112)** व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वन् शयातिनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् ज़ुख़्रुफ़ल्क़ौलि ग़ुरूरन्, व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून **(113)** व लितस्ग़ा इलैहि अफ़्इ-दतुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व लियर्ज़ौहु व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून **(114)** अ-फ़ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह-कमंव्-व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल इलैकुमुल्- किता-ब मुफ़स्सलन्, वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्लमू-न अन्नहू मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन **(115)** व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अ़द्लन्, ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही व हुवस्समीअुल्-अ़लीम **(116)** व इन् तुतिअ् अक्स-र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून **(117)** इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु मंयज़िल्लु अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्तदीन **(118)** फ़-कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا
عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا
شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ
الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۚ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا
يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ۝ اَفَغَيْرَ
اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۚ
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا
وَّعَدْلًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَاِنْ
تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ اِنْ
يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ
اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ فَكُلُوْا
مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا
لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ

मुअ्मिनीन **(119)** व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स्स-ल लकुम् मा हर्र-म अ़लैकुम् इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि, व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ़्लमु बिल्मुअ़्तदीन **(120)** व ज़रू ज़ाहिरल्-इस्मि व बाति-नहू, इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न बिमा कानू यक़्तरिफ़ून **(121)** व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्क़ुन्, व इन्नश्शयाती-न लयूहू-न इला औलिया-इहिम् लियुजादिलूकुम् व इन् अतअ़्तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून **(122)** ❖

अ-व मन् का-न मैतन् फ़-अह्यैनाहु व जअ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि कमम् म-सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् मिन्हा, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्काफ़िरी-न मा कानू यअ़्मलून **(123)** व कज़ालि-क जअ़ल्ना फ़ी कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा लियम्कुरू फ़ीहा, व मा यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अ़ुरून **(124)** व इज़ा जाअत्हुम् आयतुन् क़ालू लन्-नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि ✣ अल्लाहु अअ़्लमु हैसु यज्अ़लु रिसाल-तहू, सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू सग़ारुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम् बिमा कानू यम्कुरून **(125)** फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दि-यहू यश्रह् सद्-रहू लिल्इस्लामि व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अ़ल् सद्-रहू ज़य्यिक़न् ह-रजन् कअन्नमा यस्सअ़्-अ़दु फ़िस्समा-इ, कज़ालि-क यज्अ़लुल्लाहुर्रिज्-स अ़लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून **(126)** व हाज़ा सिरातु रब्बि-क

مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُضِلُّونَ
بِأَهْوَائِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١٢٠﴾
وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١٢١﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ
اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ ۗ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ
أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ ۖ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢٢﴾
أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي
النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ
قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٤﴾ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ
نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ
شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٥﴾ فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ
صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا
حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ

❖ रु. 14/11/1 ✣ व. लाज़िम

मुस्तक़ीमन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यज़्ज़क्करून **(127)** लहुम् दारुस्सलामि अ़िन्-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्मलून **(128)** व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअ़न् या मअ्शरल्-जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्-इन्सि व क़ा-ल औलियाउहुम् मिनल्-इन्सि रब्बनस्तम्त-अ़ बअ्ज़ुना बिबअ्ज़िंव्-व बलग़्ना अ-ज-लनल्लज़ी अज्जल्-त लना, क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी-न फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाहु, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम **(129)** व कज़ालि-क नुवल्ली बअ्ज़ज़्ज़ालिमी-न बअ्ज़म् बिमा कानू यक्सिबून **(130)** ❖

या मअ्शरल्-जिन्नि वल्-इन्सि अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम् मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन **(131)** ज़ालि-क अल्लम् यकुर्रब्बु-क मुह्लिकल्क़ुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा ग़ाफ़िलून **(132)** व लिकुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्मलून **(133)** व रब्बुकल्-ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्-बअ्दिकुम् मा यशा-उ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आख़रीन **(134)** इन्-न मा तू-अ़दू-न लआतिंव्-व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन **(135)** क़ुल् या क़ौमिअ्मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ्लमू-न मन् तकूनु लहू

ولولنا ٨ ١٣١ الانعام ٦

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۭ قَدْ
فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰۗـؤُهُمْ
مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ
بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ۧ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ
يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ
لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾ ذٰلِكَ
اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾
وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾
وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ
بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِنَّ مَا
تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا

منزل ٢

आक़ि-बतुद्दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून **(136)** व ज-अ़लू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्-हर्सि वल्-अन्आ़मि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ़्मिहिम् व हाज़ा लिशु-रकाइना फ़मा का-न लिशु-रकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि व मा का-न लिल्लाहि फ़हु-व यसिलु इला शु-रकाइहिम्, सा-अ मा यह्कुमून **(137)** व कज़ालि-क ज़य्य-न लि-कसीरिम्- मिनल्-मुश्रिकी-न क़त्-ल औलादिहिम् शु-रकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम्, व लौ शाअल्लाहु मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून **(138)** व क़ालू हाज़िही अन्आमुंव्-व हर्सुन् हिज्रुल्ला यत्अ़मुहा इल्ला मन्-नशा-उ बिज़अ़्मिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आ़मुल्ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिराअन् अ़लैहि, सयज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून **(139)** व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आ़मि ख़ालि-सतुल् लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना व इंय्यकुम् मै-ततन् फ़हुम् फ़ीहि शु-रका-उ, सयज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम **(140)** क़द् ख़सिरल्लज़ी-न क़-तलू औलादहुम् स-फ़हम् बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व हर्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन् अ़लल्लाहि, क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन ◆ **(141)** ❖

व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम् मअ़्रूशातिंव्-व ग़ै-र मअ़्रूशातिंव्-वन्नख़्-ल वज़्ज़र्-अ

عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ
عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ
مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَ
هَٰذَا لِشُرَكَائِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَ
مَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿١٣٦﴾
وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ
لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا
فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٧﴾ وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَ
حَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ
ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ
سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ
الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ أَزْوَاجِنَا وَإِن يَكُن
مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ
عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ

मुख़्तलिफ़न् उकुलूहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन **(142)** व मिनल्-अन्‌आमि हमूलतंव्-व फ़र्‌शन्, कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीन **(143)** समानिय-त अज़्वाजिन् मिनज़्ज़अ्‌निस्नैनि व मिनल्-मअ्‌ज़िस्नैनि, क़ुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्‌हामुल्- उन्सयैनि, नब्बिऊनी बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(144)** व मिनल् इबिलिस्नैनि व मिनल् ब-क़रिस्नैनि, क़ुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्‌हामुल्- उन्सयैनि, अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् वस्साकुमुल्लाहु बिहाज़ा फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबल्- लियुज़िल्लन्ना-स बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(145)** ❖

ولوانّنا ٨ ۱۳۳ الانعام ٦

وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا
وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ
حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاَنْعَامِ
حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۚ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ
اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ
اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ
ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ
الْاُنْثَيَيْنِ ۗ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ
مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ
مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا
اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَعَلَى
الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

منزل ٢

क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा ऊहि-य इलय्-य मुहर्रमन् अ़ला ताअ़िमिंय्यत्-अ़मुहू इल्ला अंय्यकू-न मै-ततन् औ दमम्-मस्फ़ूहन् औ लह्-म ख़िन्ज़ीरिन् फ़-इन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्-न रब्ब-क ग़फ़ूरुर्रहीम **(146)** व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् व मिनल् ब-क़रि

वल्ग़-नमि हर्रम्ना अ़लैहिम् शुहू-महुमा इल्ला मा ह-मलत् ज़ुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख़्त-ल-त बिअ़ज़्मिन्, ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् व इन्ना लसादिक़ून **(147)** फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-कुर्रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव्-वासि-अ़तिन् व ला युरद्दु बअ्सुहू अ़निल् क़ौमिल्-मुज़्रिमीन **(148)** स-यक़ूलुल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन्, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता ज़ाक़ू बअ्सना, क़ुल हल् अिन्दकुम् मिन् अ़िल्मिन् फ़-तुख़्रिजूहु लना इन् तत्तबिअ़ू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून **(149)** क़ुल् फ़लिल्लाहिल्- हुज्जतुल्-बालि-ग़तु फ़लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन **(150)** क़ुल् हलुम्-म शु-हदा-अकुमुल्लज़ी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह हर्र-म हाज़ा फ़-इन् शहिदू फ़ला तश्हद् म-अ़हुम् व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्- आख़ि-रति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ़्दिलून **(151)** ❖

क़ुल् तआ़लौ अत्लु मा हर्र-म रब्बुकुम् अ़लैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्वालिदैनि इह्सानन् व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(152)** व ला

حرمنا عليهم شحومهما الا ما حملت ظهورهما او الحوايا
او ما اختلط بعظم ذلك جزينهم ببغيهم وانا لصدقون ﴿١٤٦﴾
فان كذبوك فقل ربكم ذو رحمة واسعة ولا يرد باسه
عن القوم المجرمين ﴿١٤٧﴾ سيقول الذين اشركوا لو شاء الله
ما اشركنا ولا اباؤنا ولا حرمنا من شيء كذلك كذب
الذين من قبلهم حتى ذاقوا باسنا قل هل عندكم من
علم فتخرجوه لنا ان تتبعون الا الظن وان انتم الا
تخرصون ﴿١٤٨﴾ قل فلله الحجة البالغة فلو شاء لهدىكم اجمعين ﴿١٤٩﴾
قل هلم شهداءكم الذين يشهدون ان الله حرم هذا
فان شهدوا فلا تشهد معهم ولا تتبع اهواء الذين كذبوا
باياتنا والذين لا يؤمنون بالاخرة وهم بربهم يعدلون ﴿١٥٠﴾
قل تعالوا اتل ما حرم ربكم عليكم الا تشركوا به شيئا و
بالوالدين احسانا ولا تقتلوا اولادكم من املاق نحن
نرزقكم واياهم ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما
بطن ولا تقتلوا النفس التي حرم الله الا بالحق ذلكم
وصىكم به لعلكم تعقلون ﴿١٥١﴾ ولا تقربوا مال اليتيم الا

तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न बिल्क़िस्ति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा व इज़ा क़ुल्तुम् फ़अ़्दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व बि-अ़ह्दिल्लाहि औफ़ू, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तज़क्करून **(153)** व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअ़ूहु व ला तत्तबिअ़ुस्सुबु-ल फ़-तफ़र्र-क़ बिकुम् अ़न् सबीलिही, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून **(154)** सुम्-म आतैना मूसल्-किता-ब तमामन् अ़लल्लज़ी अह्स-न व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ़्मिनून **(155)** ❖

व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फ़त्तबिअ़ूहु वत्तक़ू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(156)** अन् तक़ूलू इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अ़ला ताइ-फ़तैनि मिन् क़ब्लिना व इन् कुन्ना अ़न् दिरा-सतिहिम् लग़ाफ़िलीन **(157)** औ तक़ूलू लौ अन्ना उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ़-क़द् जाअकुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुन् फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्ज़-ब बिआयातिल्लहि व स-द-फ़ अ़न्हा, स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस्दिफ़ू-न अ़न् आयातिना सूअल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून **(158)** हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्मलाइ-कतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ यअ्ति-य बअ़्ज़ु आयाति रब्बि-क, यौ-म यअ्ती बअ़्ज़ु आयाति

بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ
بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَ
لَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ۙ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِىْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝ ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِىْۤ اَحْسَنَ
وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ
يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ
قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّاۤ
اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّاۤ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا
سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ
تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ
يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

रब्बि-क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् क़ब्लु औ क-सबत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन्, क़ुलिन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून **(159)** इन्नल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-यअ़ल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन्, इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्अ़लून **(160)** मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू अ़श्रु अम्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून **(161)** क़ुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम, दीनन् क़ि-य-मम् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन **(162)** क़ुल् इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन **(163)** ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिर्तु व अ-न अव्वलुल् मुस्लिमीन **(164)** क़ुल् अग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन्, व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़्रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून **(165)** व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ़ बअ़्ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ़्ज़िन् द-रजातिल् लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम्, इन्-न रब्ब-क सरीअ़ुल्- अ़िक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम ● **(166)** ❖

اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ
انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ
كَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى
اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ
فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا
مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَ
مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَ
مَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ
بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۴﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ
اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ
وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۶﴾

نصف ع ۲۰ ۷

7 सूरतुल्-अअ्राफ़ि 39

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 14635 अक्षर, 3387 शब्द 206 आयतें और 24 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्-सॉद् **(1)** किताबुन् उन्ज़ि-ल इलै-क फ़ला यकुन् फ़ी सद्रि-क ह-रजुम् मिन्हु लितुन्ज़ि-र बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन **(2)** इत्तबिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअ़ू मिन् दूनिही औलिया-अ, क़लीलम् मा तज़क्करून **(3)** व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहा फ़जा-अहा बअ्सुना बयातन् औ हुम् क़ा-इलून **(4)** फ़मा का-न दअ्वाहुम् इज़् जा-अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(5)** फ़-लनस्-अलन्नल्लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल् मुर्सलीन **(6)** फ़- ल-नक़ुस्सन्-न अ़लैहिम् बिअ़िल्मिंव्-व मा कुन्ना ग़ा-इबीन **(7)** वल्वज़्नु यौमइज़िनिल्हक़्क़ु फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(8)** व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उला-इकल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून **(9)** व ल-क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श, क़लीलम् मा तश्कुरून **(10)** ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नाकुम् सुम्-म सव्वर्नाकुम् सुम्-म क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म

ولوانّنا ٨ — ١٣٧ — الاعراف ٧

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ — اٰيَاتُهَا ٢٠٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۗ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ
هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ
قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَ
لَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا
غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَ
لَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۗ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۗ لَمْ يَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۗ قَالَ اَنَا خَيْرٌ
مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾ قَالَ فَاهْبِطْ

ع

منزل ٢

फ़-स-जद् इल्ला इब्ली-स, लम् यकुम् मिनस्साजिदीन (11) का़-ल मा म-न-अ़-क अल्ला तस्जु-द इज़् अमर्तु-क, का़-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन (12) का़-ल फ़ह्बित् मिन्हा फ़मा यकूनु ल-क अन् त-तकब्ब-र फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्न-क मिनस्साग़िरीन (13) का़-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (14) का़-ल इन्न-क मिनल् मुन्ज़रीन (15) का़-ल फ़बिमा अग्वैतनी ल-अक़्अुदन्-न लहुम् सिरा-तकल् मुस्तकी़म (16) सुम्-म लआतियन्नहुम् मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् ऐमानिहिम् व अ़न् शमा-इलिहिम्, व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन (17) का़लख़्रुज् मिन्हा मज़्ऊमम्-मद्हूरन्, ल-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् लअम्-लअन्-न जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअ़ीन (18) व या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्जन्न-त फ़-कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्- ज़ालिमीन (19) फ़-वस्व-स लहुमश्- शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अ़न्हुमा मिन् सौआतिहिमा व का़-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अ़न् हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन (20) व का़-स-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन (21) फ़दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्-रक़िल्-जन्नति, व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्हकुमा अ़न् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्-लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अ़दुव्वुम् मुबीन (22) का़ला रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना

منها فما يكون لك ان تتكبر فيها فاخرج انك من
الصغرين ﴿١٣﴾ قال انظرني الى يوم يبعثون ﴿١٤﴾ قال انك
من المنظرين ﴿١٥﴾ قال فبما اغويتني لاقعدن لهم صراطك
المستقيم ﴿١٦﴾ ثم لاتينهم من بين ايديهم ومن خلفهم
وعن ايمانهم وعن شمائلهم ولا تجد اكثرهم شكرين ﴿١٧﴾
قال اخرج منها مذءوما مدحورا لمن تبعك منهم لاملئن
جهنم منكم اجمعين ﴿١٨﴾ ويادم اسكن انت وزوجك الجنة
فكلا من حيث شئتما ولا تقربا هذه الشجرة فتكونا
من الظلمين ﴿١٩﴾ فوسوس لهما الشيطن ليبدي لهما ما
وري عنهما من سواتهما وقال ما نهكما ربكما عن هذه
الشجرة الا ان تكونا ملكين او تكونا من الخلدين ﴿٢٠﴾ و
قاسمهما اني لكما لمن النصحين ﴿٢١﴾ فدلهما بغرور فلما
ذاقا الشجرة بدت لهما سواتهما وطفقا يخصفن عليهما
من ورق الجنة وناداهما ربهما الم انهكما عن تلكما
الشجرة واقل لكما ان الشيطن لكما عدو مبين ﴿٢٢﴾ قالا
ربنا ظلمنا انفسنا وان لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من

व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन (23) क़ालह्बितू बअ्ज़ुकुम् लि-बअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन (24) क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़्रजून (25) ❖

या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् वरीशन्, व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैरुन्, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (26) या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्र-ज अ-बवैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अ़न्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा, इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन्हैसु ला तरौनहुम्, इन्ना जअ़ल्नश्शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (27) व इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् क़ालू वजद्ना अ़लैहा आबा-अना वल्लाहु अ-म-रना बिहा, क़ुल् इन्नल्ला-ह ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्शा-इ, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (28) क़ुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति, व अक़ीमू वुजूहकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-वद्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, कमा ब-द-अकुम् तअ़ूदून (29) फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्-क़ अ़लैहिमुज़्ज़लालतु, इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (30) या बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन (31) ❖

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي
الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ
فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ
لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۚ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۚ
ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ
الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا
لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ
اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا
فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۥ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾
فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا
الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا
وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

क़ुल् मन् हर्र-म ज़ी-नतल्लाहिल्लती अख़्र-ज लिअिबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ि, क़ुल् हि-य लिल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या ख़ालि-सतंय्यौमल्-क़ियामति, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्लमून **(32)** क़ुल् इन्नमा हर्र-म रब्बियल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्इस्-म वल्बग़्-य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून **(33)** व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तंव्-व ला यस्तक़्दिमून **(34)** या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती फ़-मनित्तक़ा व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून **(35)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(36)** फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, उलाइ-क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल्-किताबि, हत्ता इज़ा जाअत्हुम् रुसुलुना य-तवफ़्फ़ौनहुम् क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन **(37)** क़ालद्ख़ुलू फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि फ़िन्नारि, कुल्लमा द-ख़लत् उम्मतुल्-लअ़नत् उख़्तहा, हत्ता इज़द्दा-रकू फ़ीहा

التي اخرج لعباده والطيبت من الرزق قل هي للذين
امنوا في الحيوة الدنيا خالصة يوم القيمة كذلك نفصل
الايت لقوم يعلمون ۝ قل انما حرم ربي الفواحش ما
ظهر منها وما بطن والاثم والبغي بغير الحق وان تشركوا
بالله ما لم ينزل به سلطنا وان تقولوا على الله ما
لا تعلمون ۝ ولكل امة اجل فاذا جاء اجلهم لا يستاخرون
ساعة ولا يستقدمون ۝ يبني ادم اما ياتينكم رسل منكم
يقصون عليكم ايتي فمن اتقى واصلح فلا خوف عليهم
ولا هم يحزنون ۝ والذين كذبوا بايتنا واستكبروا عنها
اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝ فمن اظلم ممن افترى
على الله كذبا او كذب بايته اولئك ينالهم نصيبهم من
الكتب حتى اذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم قالوا اين ما كنتم
تدعون من دون الله قالوا ضلوا عنا وشهدوا على
انفسهم انهم كانوا كفرين ۝ قال ادخلوا في امم قد خلت
من قبلكم من الجن والانس في النار كلما دخلت امة لعنت
اختها حتى اذا اداركوا فيها جميعا قالت اخرىهم لاولىهم ربنا

जमीअ़न् क़ालत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अज़ल्लूना फ़आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ्फ़म्-मिनन्नारि, क़ा-ल लिकुल्लिन् ज़िअ्फ़ुंव्-व लाकिल्ला तअ्लमून **(38)** व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून **(39)** ❖

इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा-इ व ला यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त हत्ता यलिजल्-ज-मलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुज्रिमीन **(40)** लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन्, व कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन **(41)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(42)** व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा, व मा कुन्ना लिनह्तदि-य लौ ला अन् हदानल्लाहु ल-क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि, व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ▲ **(43)** व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् क़द् वजद्ना मा व-अ़-दना रब्बुना हक़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा व-अ़-द रब्बुकुम् हक़्क़न्, क़ालू न-अ़म् फ़-अ़ज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुम् बैनहुम् अल्लअ्-नतुल्लाहि अ़लज़्ज़ालिमीन **(44)** अल्लज़ी-न

ولو اننا ۸ ۱۴۱ الاعراف ۷

هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۬ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ
السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ
وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۴۰﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ
فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۱﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۴۲﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ
غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ
حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا

منزل ۲

यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन् व हुम् बिल्आख़ि-रति काफ़िरून ✣ **(45)** व बैनहुमा हिजाबुन् व अ़लल्-अअ्राफ़ि रिजालुंय्यअ्रिफ़ू-न कुल्लम्-बिसीमाहुम् व नादौ अस्हाबल्-जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम्, लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअू-न **(46)** व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा-अ अस्हाबिन्नारि क़ालू रब्बना ला तज्अ़ल्ना मअ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(47)** ❖

व नादा अस्हाबुल्-अअ्राफ़ि रिजालंय्- यअ्रिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अ़न्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून **(48)** अहा-उला-इल्लज़ी-न अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन्, उद्ख़ुलुल्- जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुम् व ला अन्तुम् तह्ज़नून **(49)** व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अ़लैना मिनल्मा-इ औ मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु, क़ालू इन्नल्ला-ह हर्र-महुमा अ़लल्- काफ़िरीन **(50)** अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअ़िबंव्-व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा व मा कानू बिआयातिना यज्हदून **(51)** व ल-क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अ़ला अ़िल्मिन् हुदंव्-व रह्मतल्- लिक़ौमिंय्- युअ्मिनून **(52)** हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वी-लहू, यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि फ़हल्-लना मिन् शु-फ़अ़ा-अ फ़यश्फ़अ़ू लना औ नुरद्दु

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ
رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ
اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ
قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ
عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَنَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ
الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْۤا
اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۰﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا
وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ
يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ
بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ
نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ
شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَاۤ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 5/8/12

फ़नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्-मलु, क़द् ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून **(53)** ❖

इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, युग़्शिल्लैलन्नहा-र यत्लुबुहू हसीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू-म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही, अला लहुल्-ख़ल्क़ु वल्अम्रु, तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन **(54)** उद्अू रब्बकुम् त-ज़र्रुअंव्-व ख़ुफ़्य-तन्, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन **(55)** व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़ंव्-व त-मअ़न्, इन्-न रह्मतल्लाहि क़रीबुम् मिनल् मुह्सिनीन **(56)** व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम् बै-न यदै रह्मतिही, हत्ता इज़ा अक़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लि-ब-लदिम् मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्-मा-अ फ़अख़्रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-मराति, कज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून **(57)** वल्ब-लदुत्तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बि-इज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु-स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदन्, कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून **(58)** ❖

ولو اننا ٨ ١٤٣ الاعراف ٧

قد خسروا انفسهم وضل عنهم ما كانوا يفترون ۝٥٣ ان
ربكم الله الذى خلق السموت والارض فى ستة ايام ثم
استوى على العرش يغشى اليل النهار يطلبه حثيثا
والشمس والقمر والنجوم مسخرت بامره الا له الخلق و
الامر تبرك الله رب العلمين ۝٥٤ ادعوا ربكم تضرعا و
خفية انه لا يحب المعتدين ۝٥٥ ولا تفسدوا فى الارض
بعد اصلاحها وادعوه خوفا وطمعا ان رحمت الله
قريب من المحسنين ۝٥٦ وهو الذى يرسل الريح بشرا
بين يدى رحمته حتى اذا اقلت سحابا ثقالا سقنه
لبلد ميت فانزلنا به الماء فاخرجنا به من كل الثمرت
كذلك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ۝٥٧ والبلد الطيب يخرج
نباته باذن ربه والذى خبث لا يخرج الا نكدا كذلك
نصرف الايت لقوم يشكرون ۝٥٨ لقد ارسلنا نوحا الى قومه
فقال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره انى اخاف
عليكم عذاب يوم عظيم ۝٥٩ قال الملا من قومه انا لنرىك
فى ضلل مبين ۝٦٠ قال يقوم ليس بى ضللة ولكنى رسول

منزل ٢

ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या-क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम **(59)** क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(60)** क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव्-व

लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन **(61)** उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून **(62)** अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् व लि-तत्तक़ू व लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(63)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन **(64)** ❖

व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून **(65)** क़ालल्-म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन **(66)** क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी सफ़ाहतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्- आ़लमीन **(67)** उबल्लिगुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन **(68)** अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम्, वज़्कुरू इज़् ज-अ-लकुम् खु-लफ़ा-अ मिम्-बअ्दि क़ौमि नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त-तन् फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(69)** क़ालू अजिअ्तना लिनअ्बुदल्ला-ह वह्दहू व न-ज़-र मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन **(70)** क़ा-ल क़द् व-क़-अ अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग़-ज़बुन्,

مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ
بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۭ وَاذْكُرُوْٓا
اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ
بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا
اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاۗؤُنَا ۚ
فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۗءٍ

अतुजादिलू-ननी फ़ी अस्माइन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन **(71)** फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व क़तअ़्ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन **(72)** ❖

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ✣ क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम्, हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आ-यतन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्खु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(73)** वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्-बअ़्दि अ़ादिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव्-व तन्हितूनल् जिबा-ल बुयूतन् फ़ज़्कुरू आलाअल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(74)** क़ालल्-म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्-तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न मिन्हुम् अ-तअ़्लमू-न अन्-न सालिहम् मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही, क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ्मिनून **(75)** क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून **(76)** फ़-अ़-क़रुन्नाक़-त व अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू या सालिहुअ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन **(77)** फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन **(78)** फ़-तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम्

ولواننا ٨ — ١٤٥ — الاعراف ٧

سميتموها انتم واباؤكم ما نزل الله بها من سلطن
فانتظروا اني معكم من المنتظرين ﴿٧١﴾ فانجينه والذين
معه برحمة منا وقطعنا دابر الذين كذبوا بايتنا وما كانوا
مؤمنين ﴿٧٢﴾ والى ثمود اخاهم صلحا قال يقوم اعبدوا الله
ما لكم من اله غيره قد جاءتكم بينة من ربكم هذه
ناقة الله لكم اية فذروها تاكل في ارض الله ولا تمسوها
بسوء فياخذكم عذاب اليم ﴿٧٣﴾ واذكروا اذ جعلكم خلفاء
من بعد عاد وبواكم في الارض تتخذون من سهولها
قصورا وتنحتون الجبال بيوتا فاذكروا الاء الله ولا تعثوا
في الارض مفسدين ﴿٧٤﴾ قال الملا الذين استكبروا من
قومه للذين استضعفوا لمن امن منهم اتعلمون
ان صلحا مرسل من ربه قالوا انا بما ارسل به مؤمنون ﴿٧٥﴾
قال الذين استكبروا انا بالذي امنتم به كفرون ﴿٧٦﴾
فعقروا الناقة وعتوا عن امر ربهم وقالوا يصلح ائتنا
بما تعدنا ان كنت من المرسلين ﴿٧٧﴾ فاخذتهم الرجفة
فاصبحوا في دارهم جثمين ﴿٧٨﴾ فتولى عنهم وقال يقوم

منزل ٢

व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (79) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम् मिनल्-आलमीन (80) इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (81) व मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन् क़र्यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य-ततह्हरून (82) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन (83) व अम्तर्ना अलैहिम् म-तरन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुज्रिमीन (84) ❖

व इला मद्य-न अख़ाहुम् शुअैबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (85) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदू-न व तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अि-वजन् वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्स-रकुम् वन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन (86) व इन् का-न ताइ-फ़तुम् मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ताइ-फ़तुल्-लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बैनना व हु-व ख़ैरुल् हाकिमीन (87)

لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ڮ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۠ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَاۗىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

नवाँ पारः क़ालल् म-लउ

सूरतुल् अअ्राफ़ि (आयत 88 से 206)

क़ालल् म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क या-शुअ़ैबु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़-क मिन् क़र्यतिना औ ल-तअूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना, क़ा-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन (88) क़दिफ़्तरैना अ़लल्लाहि कज़िबन् इन् अ़ुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ्-द इज़् नज्जानल्लाहु मिन्हा, व मा यकूनु लना अन्-नअू-द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुना, वसि-अ़ रब्बुना कुल्-ल शैइन् अ़िल्मन्, अ़लल्लाहि तवक्कल्ना, रब्बनफ़्तह् बैनना व बै-न क़ौमिना बिल्-हक़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्-फ़ातिहीन (89) व क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही ल-इनित्तबअ्तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून (90) फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्फ़तु फ़अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (91) अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल् ख़ासिरीन (92) फ़-तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह्तु लकुम् फ़कै-फ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन (93) ❖

व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला अख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअून (94) सुम्-म बद्दल्ना मकानस्सय्यि-अतिल् ह-स-न-त

١٨٧

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ
أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ۝ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي
مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ
عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ
أَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ
اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ
فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن
لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝
فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ
لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ
مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ
يَضَّرَّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا وَّقَالُوا
قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم

हत्ता अफ़ौ व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्ज़र्रा-उ वस्सर्रा-उ फ़-अख़ज़्नाहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(95)** व लौ अन्-न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़तह्ना अ़लैहिम् ब-रकातिम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून **(96)** अ-फ़अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना बयातंव्-व हुम् ना-इमून **(97)** अ-व अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना ज़ुहंव्वहुम् यल्अ़बून **(98)** अ-फ़अमिनू मक्रल्लाहि फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-ख़ासिरून **(99)** ❖

अ-व लम् यह्दि लिल्लज़ी-न यरिसूनल्-अर्-ज़ मिम्-बअ़्दि अह्लिहा अल्लौ नशा-उ असब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व नत्बअ़ु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअ़ून **(100)** तिल्कल्क़ुरा नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इहा व ल-क़द् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क यत्बअ़ुल्लाहु अ़ला क़ुलूबिल् काफ़िरीन **(101)** व मा वजद्ना लिअक्सरिहिम् मिन् अ़ह्दिन् व इंव्-वजद्ना अक्स-रहुम् लफ़ासिक़ीन **(102)** सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़-ज़-लमू बिहा फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन **(103)** व क़ा-ल मूसा या फ़िर्औ़नु इन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन **(104)** हक़ीक़ुन् अ़ला अल्ला अक़ू-ल अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़, क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यि-नतिम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अर्सिल् मअ़ि-य बनी इस्राईल **(105)** क़ा-ल इन् कुन्-त

بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ
نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ
يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ
اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ
وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا
مِنْ قَبْلُ ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا
لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ
بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا
بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ
اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى
اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

जिअ्-त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (106) फ़अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम् मुबीन (107) व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन (108) ❖

क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम (109) युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् फ़-माज़ा तअ्मुरून (110) क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (111) यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (112) व जाअस्स-ह-रतु फ़िर्औ-न क़ालू इन्-न लना लअज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल् ग़ालिबीन (113) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् लमिनल् मुक़र्रबीन (114) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि-य व इम्मा अन्नकू-न नह्नुल्-मुल्क़ीन (115) क़ा-ल अल्क़ू फ़-लम्मा अल्क़ौ स-हरू अअ्युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जाऊ बिसिह्रिन् अ़ज़ीम (116) व औहैना इला मूसा अन् अल्क़ि अ़सा-क फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (117) फ़-व-क़अ़ल्-हक़्क़ु व ब-त-ल मा कानू यअ्मलून (118) फ़ग़ुलिबू हुनालि-क वन्क़-लबू साग़िरीन (119) व उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (120) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (121) रब्बि मूसा व हारून (122) क़ा-ल फ़िर्औनु आमन्तुम् बिही क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्-न हाज़ा लमक्रुम्-मकर्तुमूहु फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्लहा फ़सौ-फ़ तअ्लमून (123) ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन् सुम्-म ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मईन (124) क़ालू इन्ना

ونزع يده فاذا هي بيضاء للنظرين ۝ قال الملا من قوم
فرعون ان هذا لسحر عليم ۝ يريد ان يخرجكم من
ارضكم فماذا تامرون ۝ قالوا ارجه واخاه وارسل في
المدائن حشرين ۝ ياتوك بكل سحر عليم ۝ وجاء السحرة
فرعون قالوا ان لنا لاجرا ان كنا نحن الغلبين ۝ قال نعم
وانكم لمن المقربين ۝ قالوا يموسى اما ان تلقي واما
ان نكون نحن الملقين ۝ قال القوا فلما القوا سحروا اعين
الناس واسترهبوهم وجاءو بسحر عظيم ۝ واوحينا الى
موسى ان الق عصاك فاذا هي تلقف ما يافكون ۝ فوقع
الحق وبطل ما كانوا يعملون ۝ فغلبوا هنالك وانقلبوا
صغرين ۝ والقي السحرة سجدين ۝ قالوا امنا برب العلمين ۝
رب موسى وهرون ۝ قال فرعون امنتم به قبل ان
اذن لكم ان هذا لمكر مكرتموه في المدينة لتخرجوا منها
اهلها فسوف تعلمون ۝ لاقطعن ايديكم وارجلكم
من خلاف ثم لاصلبنكم اجمعين ۝ قالوا انا الى ربنا
منقلبون ۝ وما تنقم منا الا ان امنا بايت ربنا لما جاءتنا

इला रब्बिना मुन्क़लिबून **(125)** व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जाअत्ना, रब्बना अफ़्रिग़ अ़लैना सब्रंव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन **(126)** ❖

व क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलि-ह-त-क, क़ा-ल सनुक़त्तिलु अब्ना-अहुम् व नस्तह्यी निसा-अहुम् व इन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून **(127)** क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तईनू बिल्लाहि वस्बिरू इन्नल्-अर्-ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, वल्आ़क़ि-बतु लिल्मुत्तक़ीन **(128)** क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति-यना व मिम्-बअ्दि मा जिअ्तना, क़ा-ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि-क अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि--फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून **(129)** ❖

व ल-क़द् अख़ज़्ना आ-ल फ़िर्औ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून **(130)** फ़-इज़ा जाअत्हुमुल् ह-स-नतु क़ालू लना हाज़िही व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्-म-अ़हू, अला इन्नमा ताइरुहुम् अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(131)** व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस्ह-रना बिहा फ़मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन **(132)** फ़-अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा-न वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ़ वद्द-म आयातिम् मुफ़स्सलातिन्, फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् मुज्रिमीन **(133)** व लम्मा व-क़-अ़ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा

قال الملأ ٩ ١٥٠ الاعراف ٧

رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ وَ
يَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ
وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَ
اصْبِرُوْا ۚ إِنَّ الْأَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَ
الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا أُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ
بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَلَقَدْ
أَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَإِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا
بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ
وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا

منزل ٢

अ़हि-द अ़िन्द-क ल-इन् कशफ़्-त अ़न्नर्रिज्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व लनुर्सिलन्-न म-अ़-क बनी इस्राईल (134) फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज्-ज़ इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम् यन्कुसून (135) फ़न्तक़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (136) व औरस्नल् क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्-अ़फ़ू-न मशारिक़ल्-अर्ज़ि व मग़ारि-बहल्लती बारक्ना फ़ीहा, व तम्मत् कलि-मतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्राई-ल बिमा स-बरू, व दम्मर्ना मा का-न यस्नअ़ु फ़िर्औ़नु व क़ौमुहू व मा कानू यअ़्रिशून ◆ (137) व जावज़्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़-अतौ अ़ला क़ौमिंय्यअ़्कुफ़ू-न अ़ला अस्नामिल्लहुम् क़ालू या मूसज्अ़ल्-लना इलाहन् कमा लहुम् आलि-हतुन्, क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (138) इन्-न हाउला-इ मुतब्बरुम् मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम् मा कानू यअ़्मलून (139) क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्-व हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ़लल्-आ़लमीन (140) व इज़् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमूनकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युक़त्तिलू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (141) ❖

व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न लै-लतंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़शिरन् फ़-तम्-म मीक़ातु रब्बिही अर्बअ़ी-न लै-लतन् व क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ़् सबीलल्-मुफ़्सिदीन (142) व लम्मा जा-अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल-महू

عَهِدَ عِنْدَكَ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ
مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٣٤ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى
اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝١٣٥ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝١٣٦
وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ
وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى
عَلٰي بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ڏ بِمَا صَبَرُوْا ۭ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ
فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝١٣٧ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰي قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓي اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا
يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ
تَجْهَلُوْنَ ۝١٣٨ اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٩
قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝١٤٠
وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ ۚ
يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ۭ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَاۗءٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝١٤١ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰي ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰي لِاَخِيْهِ

रब्बुहू क़ा-ल रब्बि अरिनी अन्जुर् इलै-क, क़ा-ल लन् तरानी व लाकिनिन्जुर् इलल्-ज-बलि फ़-इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ-फ़ तरानी फ़-लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल्ज-बलि ज-अ़-लहू दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा सअ़िक़न् फ़-लम्मा अफ़ा-क़ क़ा-ल सुब्हान-क तुब्तु इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन **(143)** क़ा-ल या मूसा इन्निस्तफ़ैतु-क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बि-कलामी फ़ख़ुज़् मा आतैतु-क व कुम् मिनश्शाकिरीन **(144)** व कतब्ना लहू फ़िल्-अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम् मौअ़ि-ज़तंव्-व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइन् फ़ख़ुज़्हा बिकुव्वतिंव्वअ्मुर् क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा, सउरीकुम् दारल्-फ़ासिक़ीन **(145)** सअस्रिफ़ु अ़न् आयातियल्लज़ी-न य-तकब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल्-ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन्, ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन **(146)** वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल् आख़ि-रति हबितत् अअ्मालुहुम्, हल युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्मलून **(147)** ❖

قال الملأ ۹ ۱۵۲ الاعراف ۷

هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ
اِلَيْكَ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا
وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ
وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ
الشّٰكِرِيْنَ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً
وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا
بِاَحْسَنِهَا سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ
الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ
اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ وَالَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ
اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ

منزل ۲

वत्त-ख़-ज़ क़ौमु मूसा मिम्-बअ्दिही मिन् हुलिय्यिहिम् अिज्लन् ज-सदल्लहू ख़ुवारुन्, अलम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला ✣ इत्त-ख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन **(148)** व लम्मा सुक़ि-त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू क़ालू

ल-इल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर् लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन **(149)** व लम्मा र-ज-अ् मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल बिअ्-समा ख़लफ़्तुमूनी मिम्-बअ्दी अ-अ़जिल्तुम् अम्-र रब्बिकुम् व अल्क़ल्-अल्वा-ह व अ-ख़-ज़ बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि, क़ालब्-न उम्-म इन्नल् क़ौमस्तज़्अफ़ूनी व कादू यक़्तुलू-ननी फ़ला तुश्मित् बियल्-अअ्दा-अ व ला तज्अ़ल्नी मअ़ल् क़ौमिज़्-ज़ालिमीन **(150)** क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व लि-अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मति-क व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन **(151)** ❖

इन्नल्लज़ीनत्त-ख़ज़ुल्- अ़िज्-ल स-यनालुहुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुफ़्तरीन **(152)** वल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्-बअ्दिहा व आमनू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(153)** व लम्मा स-क-त अ़म्-मूसल्-ग़-ज़बु अ-ख़ज़ल्-अल्वा-ह व फ़ी नुस्ख़ातिहा हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून **(154)** वख़्ता-र मूसा क़ौमहू सब्अ़ी-न रजुलल् लिमीक़ातिना फ़-लम्मा अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल रब्बि लौ शिअ्-त अह्लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य, अतुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लस्सु-फ़हा-उ मिन्ना इन् हि-य इल्ला फ़ित्नतु-क, तुज़िल्लु बिहा मन् तशा-उ व तह्दी मन् तशा-उ, अन्-त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व

قال الملاء ٩ ١٥٣ الاعراف ٧

حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ ۚ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ
وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا
سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ
يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ
مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ
مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ
بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۭ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ
وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۡ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَاۗءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ
رَحْمَتِكَ ڮ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ
سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَكَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَمَّا
سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ښ وَفِيْ نُسْخَتِهَا
هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝ وَاخْتَارَ مُوْسٰى
قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ

अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन **(155)** वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्आख़ि-रति इन्ना हुद्ना इलै-क, क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशा-उ व रह्मती वसिअ़त् कुल्-ल शैइन्, फ़-सअक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना युअ्मिनून **(156)** अल्लज़ी-न यत्तबिअूनर्रसूलन्नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् अि़न्दहुम् फ़ित्तौराति वल्-इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्-मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युहर्रिमु अ़लैहिमुल् ख़बाइ-स व य-ज़अु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग्लालल्लती कानत् अ़लैहिम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-सरूहु वत्त-बअुन्-नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(157)** ❖

कुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्-नबिय्यिल् उम्मिय्यिल्लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअूहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून **(158)** व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून **(159)** व क़त्तअ्नाहुमुस्नतै अश्र-त अस्बातन् उ-ममन्, व औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र फ़म्ब-जसत् मिन्हुस्नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल् ग़मा-म व

رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَآءُ مِنَّا اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ
تَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
الْغٰفِرِيْنَ ۝ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ
اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ وَرَحْمَتِيْ
وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ
النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ
وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ
وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ ع ١٩
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا الَّذِيْ لَهٗ
مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ فَاٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ
وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ

अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल् मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(160)** व इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त व कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व क़ूलू हित्ततुंव्-वद्ख़ुलुल्-बा-ब सुज्जदन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम्, स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन **(161)** फ़-बद्दलल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्ज़म्- मिनस्-समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून **(162)** ❖

वस्अल्हुम् अ़निल्क़र्यतिल्लती कानत् हाज़ि-रतल्- बह्रि ✣ इज़् यअ्दू-न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् हीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअंव्-व यौ-म ला यस्बितू-न ला तअ्तीहिम् कज़ालि-क नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून ● **(163)** व इज़् क़ालत् उम्मतुम्- मिन्हुम् लि-म तअ़िज़ू-न क़ौ-मनिल्लाहु मुह्लिकुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, क़ालू मअ़ज़ि-रतन् इला रब्बिकुम् व लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून **(164)** फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अ़निस्सू-इ व अख़ज़्नल्लज़ी-न ज़-लमू बिअ़ज़ाबिम् बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(165)** फ़-लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू कि-र-दतन् ख़ासिईन **(166)** व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क लयब्अ़-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्- क़ियामति मंय्यसूमुहुम्

قال الملأ ٩ | الاعراف ٧

بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ
مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَ
السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ
لَكُمْ خَطِيْٓئٰتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ
قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ
بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ
الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ
شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۨ اللّٰهُ
مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا

منزل ٢

सूअल्- अ़ज़ाबि, इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल्-अिक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (167) व क़त्तअ्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-ममन् मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क व बलौनाहुम् बिल्ह-सनाति वस्सय्यिआति लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (168) फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ़्दिहिम् ख़ल्फ़ुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़ हाज़ल्-अद्ना व यक़ूलू-न सयुग़्फ़रु लना व इंय्यअ्तिहिम् अ़-रज़ुम् मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु, अलम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि अल्ला यक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़ व द-रसू मा फ़ीहि, वद्दारुल् आख़िरतु ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न, अ-फ़ला तअ्क़िलून (169) वल्लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्-सला-त, इन्ना ला नुज़ीअु अज्रल् मुस्लिहीन (170) व इज़् न-तक़्नल् ज-ब-ल फ़ौक़हुम् क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअुम् बिहिम् ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (171) ❖

يَفْسُقُوْنَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً
خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚ وَ
إِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ۚ مِنْهُمُ
الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ
يَأْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْأَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَإِنْ
يَّأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَأْخُذُوْهُ ۗ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ
الْكِتٰبِ أَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ۗ وَ
الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ
الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا
أَنَّهٗ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَا اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ
وَأَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ ۚ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا ۛ
أَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝

व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्-बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व अश्ह-दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् क़ालू बला, शहिद्ना अन् तक़ूलू यौमल्-क़ियामति इन्ना

कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन **(172)** औ तक़ूलू इन्नमा अश्र-क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्-बअ्दिहिम् अ-फ़तुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लल्-मुब्तिलून **(173)** व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(174)** वत्लु अ़लैहिम् न-बअल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्शैतानु फ़का-न मिनल्-ग़ावीन **(175)** व लौ शिअ्ना ल-रफ़अ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्ल-द इलल्अर्ज़ि वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-म-सलुहू क-म-सलिल्कल्बि इन् तह्मिल् अ़लैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु यल्हस्, ज़ालि-क म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़क़्सुसिल् क़-स-स लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून **(176)** सा-अ म-स-ल-निल्क़ौमुल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ु-सहुम् कानू यज़्लिमून **(177)** मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्- मुह्तदी व मंय्युज़्लिल् फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(178)** व ल-क़द् ज़रअ्ना लि-जहन्न-म कसीरम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि लहुम् क़ुलूबुल्-ला यफ़्क़हू-न बिहा व लहुम् अअ्युनुल्-ला युब्सिरू-न बिहा व लहुम् आज़ानुल्-ला यस्मअ़ू-न बिहा, उलाइ-क कल्अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु, उलाइ-क हुमुल्-ग़ाफ़िलून **(179)** व लिल्लाहिल्-अस्माउल्- हुस्ना फ़द्अ़ूहु बिहा व ज़रुल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी अस्माइही, सयुज्ज़ौ-न मा कानू यअ्मलून **(180)** व मिम्-मन् ख़लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून **(181)** ❖

قال الملأ ٩ ١٥٧ الاعراف ٧

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ
بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ
اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾
وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ
هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ
تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۗ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَآءَ مَثَلَا ِۨ الْقَوْمُ
الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾
وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ
لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ۭ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ۭ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۠ وَذَرُوا
الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾
وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ

منزل ٢

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सनस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्लमून (182) व उम्ली लहुम् इन्-न कैदी मतीन (183) अ-व लम् य-तफ़क्करू मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (184) अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-लकूतिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा अंय्यकू-न क़दिक़्त-र-ब अ-जलुहुम् फ़बिअय्यि हदीसिम्-बअ्दहू युअ्मिनून (185) मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू, व य-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (186) यस्अलून-क अ़निस्सा-अ़ति अय्या-न मुर्साहा, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु-व ✣ सक़ुलत् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त-तन्, यस्अलून-क कअन्न-क हफ़िय्युन् अ़न्हा, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (187) क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़अंव्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा शाअल्लाहु, लौ कुन्तु अअ्-लमुल्-ग़ै-ब लस्तक्सर्तु मिनल्-ख़ैरि, व मा मस्सनियस्-सू-उ इन् अ-न इल्ला नज़ीरुंव्-व बशीरुल्- लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (188) ❖

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा फ़-लम्मा तग़श्शाहा ह-मलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत् बिही फ़-लम्मा अस्-क़लद्-द-अ़वल्ला-ह रब्बहुमा ल-इन् आतैतना सालिहल् ल-नकूनन्-न मिनश्-शाकिरीन (189)

كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ
لَهُمْ ۭ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِهِمْ
مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى
اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝
مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۭ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ
لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ
اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْۗءُ ۚ
اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ
اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 23/7/13

फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अ़ला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा फ़-तआ़लल्लाहु अ़म्मा युशिरकून (190) अयुशिरकू-न मा ला यख़्लुक़ु शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (191) व ला यस्ततीअ़ू-न लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून (192) व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअूकुम्, सवाउन् अ़लैकुम् अ-दऔ़तुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून (193) इन्नल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्सालुकुम् फ़द्अ़ूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (194) अ-लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू-न बिहा अम् लहुम् अअ़्युनुंय्युब्सिरू-न बिहा अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअ़ू-न बिहा, क़ुलिद्अ़ू शु-रका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून (195) इन्-न वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल्-किता-ब व हु-व य-तवल्लस्सालिहीन (196) वल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिही ला यस्ततीअ़ू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून (197) व इन् तद्अ़ूहुम् इलल्हुदा ला यस्मअ़ू, व तराहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून (198) ख़ुज़िल्-अ़फ़्-व वअ्मुर् बिल्अ़ुर्फ़ि व अअ्रिज़् अ़निल्-जाहिलीन (199) व इम्मा यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू समीअ़ुन् अ़लीम (200) इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम् ताइ-फ़तुम्-मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़-इज़ा हुम् मुब्सिरून (201) व इख़्वानुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्-ग़य्यि

الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا
فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ
يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ
يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ
سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا
لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ
لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ
اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ
فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنَّ وَلِیِّ َۧ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ
يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى
لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝
خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا
يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ

सुम्-म ला युक़्सिरून (202) व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौलज्तबै-तहा, क़ुल् इन्नमा अत्तबिअु मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी हाज़ा बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (203) व इज़ा क़ुरिअल् क़ुर्आनु फ़स्तमिअू लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (204) वज़्कुर् रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क तज़र्रुअंव्-व ख़ी-फ़तंव्-व दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्-आसालि व ला तकुम् मिनल्- ग़ाफ़िलीन (205) इन्नल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबा-दतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ❑ ▲ (206) ❖

تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۝ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي
الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝ وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ رَبِّي ۚ هَٰذَا بَصَائِرُ
مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا
قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝
وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ
الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ
وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

سورة الأنفال مدنية — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۖ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ۖ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ
قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُونَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ

8 सूरतुल्-अन्फ़ालि 88

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5522 अक्षर, 1253 शब्द, 75 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

यस्अलून-क अ़निल्-अन्फ़ालि, क़ुलिल्-अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (1) इन्नमल् मुअ्मिनूनल्--लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (2) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3) उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् द-रजातुन् अ़िन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (4) कमा अख़्र-ज-क

रब्बु-क मिम्-बैति-क बिल्हक़्क़ि व इन्-न फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनी-न लकारिहून (5) युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ्-द मा तबय्य-न कअन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून (6) व इज़् यअि़दुकुमुल्लाहु इह्दत्ताइ-फ़तैनि अन्नहा लकुम् व तवद्‌दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ातिश्शौ-कति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व यक़्त-अ़ दाबिरल्- काफ़िरीन (7) लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क़ व युब्तिलल्-बाति-ल व लौ करिहल्-मुज्रिमून (8) इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्‌दुकुम् बिअल्फ़िम् मिनल्-मलाइ-कति मुर्दिफ़ीन (9) व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम्, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अि़न्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (10) ❖

इज़् युग़श्शीकुमुन्नुआ-स अ-म-नतम् मिन्हु व युनज़्ज़िलु अ़लैकुम् मिनस्समा-इ माअल्-लियुतह्हि-रकुम व युज़्हि-ब अ़न्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लियर्‌बि-त अ़ला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्-अक़्दाम (11) इज़् यूही रब्बु-क इलल्-मलाइ-कति अन्नी म-अ़कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू, सउल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् अअ्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान (12) ज़ालि-क बिअन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब (13) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन्नार (14) या

مَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ
بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝
وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ
اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ
الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ
لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ
اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً
مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ
يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ
بِهِ الْاَقْدَامَ ۝ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَ

अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ज़ह्फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल्-अद्बार **(15)** व मंय्युवल्लिहिम् यौमइज़िन् दुबु-रहू इल्ला मु-तहर्रिफ़ल् लिक़ितालिन् औ मु-तहय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ़-क़द् बा-अ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर **(16)** फ़-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क़-त-लहुम् व मा रमै-त इज़् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह रमा व लियुब्लियल्-मुअ्मिनी-न मिन्हु बलाअन् ह-सनन्, इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम **(17)** ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्-काफ़िरीन **(18)** इन् तस्तफ़्तिहू फ़-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हु व इन् तन्तहू फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तअूदू नअुद् व लन् तुग़्नि-य अ़न्कुम् फ़ि-अतुकुम् शैअंव्-व व लौ कसुरत् व अन्नल्ला-ह मअ़ल्-मुअ्मिनीन **(19)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अ़न्हु व अन्तुम् तस्मअून **(20)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्ना व हुम् ला यस्मअून **(21)** इन्-न शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून **(22)** व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्-ल-अस्म-अ़हुम्, व लौ अस्म-अ़हुम् ल-तवल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून **(23)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्लमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्-मर्इ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून **(24)** वत्तक़ू फ़ित्न-तल्-ला

قال الملاء ١٦٢ الانفال

رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ
يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ
بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝
اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ
وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝ اِنَّ شَرَّ
الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَ
لَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا
وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَ

منزل ٢

तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम् ख़ास्स-तन् वअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (25) वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम् मुस्तज़्अफ़ू-न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न अंय्य-तख़त्त-फ़कुमुन्नासु फ़आवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (26) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ्लमून (27) वअ्लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्नतुंव्-व अन्नल्ला-ह अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (28) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तक़ुल्ला-ह यज्अ़ल्लकुम् फ़ुर्क़ानंव्-व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (29) व इज़् यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क, व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल्-माकिरीन (30) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ्ना लौ नशा-उ लक़ुल्ना मिस्-ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (31) व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्-हक़्-क़ मिन् अिन्दि-क फ़अम्तिर् अ़लैना हिजा-रतम् मिनस्समा-इ अविअ्तिना बिअ़ज़ाबिन् अलीम (32) व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व अन्-त फ़ीहिम्, व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (33) व मा लहुम् अल्-ला

لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا فِتْنَةً
لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ
فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ
اَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا
اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ
اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ
سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَ
اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ
وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ
اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ
هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاۗءِ

ع ٣/١٧

युअ़ज़्ज़ि-बहुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू, इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तक़ू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून **(34)** व मा का-न सलातुहुम् अ़िन्दल्-बैति इल्ला मुकाअंव्-व तस्दि-यतन्, फ़ज़ूक़ुल्- अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(35)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लि-यसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, फ़-सयुन्फ़िक़ूनहा सुम्-म तकूनु अ़लैहिम् हस्-रतन् सुम्-म युग़्लबू-न, वल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म युह्शरून **(36)** लि-यमीज़ल्लाहुल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्अ़लल् ख़बी-स बअ़्ज़हू अ़ला बअ़्ज़िन् फ़-यर्कु-महू जमीअ़न् फ़-यज्अ़-लहू फ़ी जहन्न-म, उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(37)** ❖

क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् स-ल-फ़, व इंय्यअ़ूदू फ़-क़द् मज़त् सुन्नतुल्-अव्वलीन **(38)** व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह बिमा यअ़्मलू-न बसीर **(39)** व इन् तवल्लौ फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम्, निअ़्मल्-मौला व निअ़्मन्-नसीर **(40)**

اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ
فِيْهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ
اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ
تَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ
فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ
مِنَ الطَّيِّبِ وَ يَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ
جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ
وَ اِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَاتِلُوْهُمْ
حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ
انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

❖ रु. 4/9/18

दसवाँ पारः वअ़्लमू

सूरतुल् अन्फ़ालि (आयत 41 से 75)

वअ़्लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमु-सहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्-सबीलि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्-तक़ल्जम्आ़नि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(41)** इज़् अन्तुम् बिल्अ़ुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्अ़ुद्वतिल्-क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम्, व लौ तवाअ़त्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआ़दि व लाकिल्- लियक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलल्-लियह्लि-क मन् ह-ल-क अ़म्बय्यि-नतिंव्-व यह्या मन् हय्-य अ़म्बय्यि-नतिन्, व इन्नल्ला-ह ल-समीअ़ुन् अ़लीम **(42)** इज़् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन्, व लौ अराकहुम् कसीरल् ल-फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ़्तुम् फ़िल्-अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म, इन्नहू अ़लीमुम्- बिज़ातिस्सुदूर **(43)** व इज़् युरीकुमूहूम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ़्युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ़्युनिहिम् लि-यक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलन्, व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर **(44)** ❖

واعلموا ١٦٥ الانفال ٨

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ
وَلِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِنْ
كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾ إِذْ أَنْتُمْ
بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ
مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ وَلَكِنْ لِيَقْضِيَ
اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَ
يَحْيَى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾ إِذْ
يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَفَشِلْتُمْ وَ
لَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾ وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا
وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَ
إِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً
فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾ وَأَطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ

منزل ٢

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अतन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून **(45)** व अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू व ला तनाज़अ़ू फ़-तफ़शलू व

तज़्ह-ब रीहुकुम् वस्बिरू, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन **(46)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् ब-तरंव्-व रिआअन्नासि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लाहु बिमा यअ़्मलू-न मुहीत **(47)** व इज़् ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ़्मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् फ़-लम्मा तरा-अतिल्-फ़ि-अतानि न-क-स अ़ला अ़क़िबैहि व क़ा-ल इन्नी बरीउम् मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह, वल्लाहु शदीदुल्-अ़िक़ाब **(48)** ❖

इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् ग़र्-र हा-उला-इ दीनुहुम्, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(49)** व लौ तरा इज़् य-तवफ़्फ़ल्लज़ी-न क-फ़रुल्मालाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम् व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ **(50)** ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद **(51)** कदअ्बि आलि फ़िर्औ़-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, क-फ़रू बिआयातिल्लाहि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब **(52)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन् निअ़्-मतन् अन्अ़-महा अ़ला क़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् व अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम **(53)** कदअ्बि आलि फ़िर्औ़-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम्

دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾ وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي
جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ
إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ
فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ
كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا
عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٥٠﴾ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿٥١﴾ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً
أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ

❖ रु. 6/4/2

फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग्रक्ना आ-ल फ़िर्औ-न व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन **(54)** इन्-न शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़हुम् ला युअ्मिनून **(55)** अल्लज़ी-न आहत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्कुज़ू-न अह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व हुम् ला यत्तक़ून **(56)** फ़-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्हर्बि फ़-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून **(57)** व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमिन् ख़ियानतन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अ़ला सवाइन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-ख़ाइनीन **(58)** ❖

व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू, इन्नहुम् ला युअ्जिज़ून **(59)** व अअ़िद्दू लहुम् मस्त-तअ्तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अ़दुव्वल्लाहि व अ़दुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम् ला तअ्लमूनहुम् अल्लाहु यअ्लमुहुम्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून **(60)** व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम **(61)** व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअू-क फ़-इन्-न हस्ब-कल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य-द-क बिनस्रिही व बिल्मुअ्मिनीन **(62)** व अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिहिम्, लौ अन्फ़क़्-त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मा अल्लफ़्-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल-फ़ बैनहुम्, इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(63)** या अय्युहन्नबिय्यु हस्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ़-क मिनल्

وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ
عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ
فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى
سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا
تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ
لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ
فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا
مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾

मुअ्मिनीन (64) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़लल्-क़ितालि, इंय्यकुम्-मिन्कुम् अ़िश्रू-न साबिरू-न यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म्-मिनल्लज़ी-न क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून (65) अल्आ-न ख़फ़्फ़-फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लि-म अन्-न फ़ीकुम् ज़अ़्फ़न्, फ़-इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुन् साबि-रतुंय्यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् अल्फ़ुंय्-यग़्लिबू अल्फ़ैनि बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु मअ़स्-साबिरीन (66) मा का-न लि-नबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्ख़ि-न फ़िल्अर्ज़ि, तुरीदू-न अ़-रज़द्-दुन्या वल्लाहु युरीदुल् आख़ि-र-त, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (67) लौ ला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ लमस्सकुम् फ़ीमा अख़ज़्तुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (68) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबंव्- वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (69) ❖
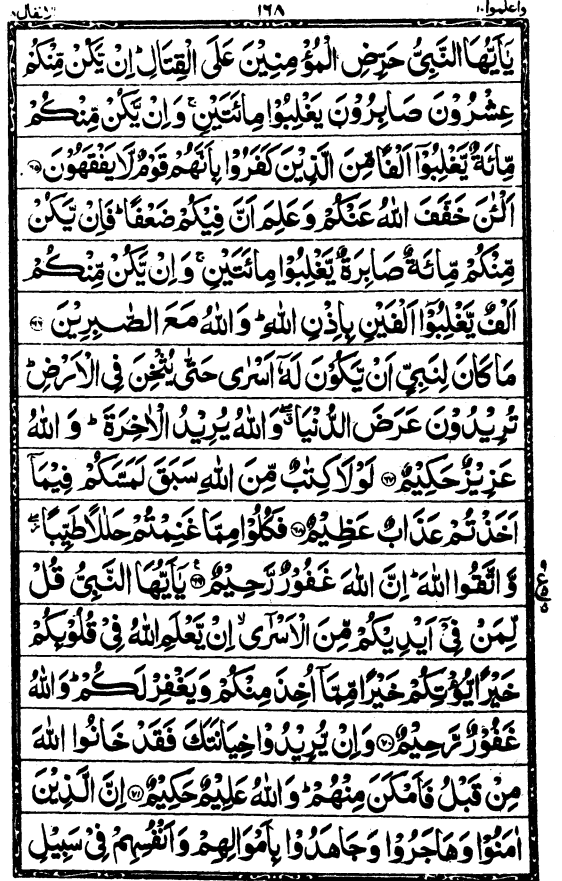
या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्- अस्रा इंय्यअ़्-लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम् ख़ैरम् मिम्मा उख़ि-ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (70) व इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (71) इन्नल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न

واعلموا ١٠ ١٦٨ الانفال ٨

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾
اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا فَاِنْ يَّكُنْ
مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾
مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ
تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ وَاللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ
اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ
لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ
مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ

منزل ٢

आवव्-व न-सरू उलाइ-क बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन्, वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वला-यतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरू व इनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीन फ़-अ़लैकुमुन्नस्रु इल्ला अ़ला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन्, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीर **(72)** वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन्, इल्ला तफ़्अ़लूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर **(73)** वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम **(74)** वल्लज़ी-न आमनू मिम्-बअ़्दु व हाजरू व जाहदू म-अ़कुम् फ़-उलाइ-क मिन्कुम्, व उलुल्-अर्हामि बअ़्ज़ुहुम् औला बिबअ़्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ◆ **(75)** ❖

واعلموا ١٠ ١٦٩ التوبة ٩

اللهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ
النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ
اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ
اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ
رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا
مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ
فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّتِسْعٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوْعًا

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾
فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
مُعْجِزِي اللّٰهِ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ

منزل ٢

9 सूरतुत्तौ-बति 113

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के

11360 अक्षर, 2537 शब्द 129 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बराअतुम्-मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल् मुश्रिकीन **(1)** फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब-अ़-त अश्हुरिंव्वअ़्लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ़्जिज़िल्लाहि व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िल्-काफ़िरीन **(2)** व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अक्बरि

अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल्-मुश्रिकी-न व रसूलुहू, फ़-इन् तुब्तुम् फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तवल्लैतुम् फ़अ्लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्जिज़िल्लाहि, व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बि-अ़ज़ाबिन् अलीम **(3)** इल्लल्लज़ी-न आहत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्क़ुसूकुम् शैअंव्-व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ-हदन् फ़-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्-दहुम् इला मुद्दतिहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तक़ीन **(4)** फ़-इज़न्स-लख़ल् अश्हुरुल्-हुरुमु फ़क्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-ख़ल्लू सबीलहुम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(5)** व इन् अ-हदुम् मिनल् मुश्रिकीनस्तजार-क फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म-अ़ कलामल्लाहि सुम्-म अब्लिग़्हु मअ्म-नहू, ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्लमून **(6)** ❖

कै-फ़ यकूनु लिल्मुश्रिकी-न अ़ह्दुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्-द रसूलिही इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् अ़िन्दल् मस्जिदिल्-हरामि फ़मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन **(7)** कै-फ़ व इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून **(8)** इश्तरौ बिआयातिल्लाहि स-मनन् क़लीलन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिही, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्मलून **(9)** ला यर्क़ुबू-न फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, व उलाइ-क हुमुल्

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا
اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۴﴾
فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ
تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ
فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶﴾ كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ
اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۷﴾ كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ
اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَ
اَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸﴾ اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا

ع

❖ रु. 1/6/7

मुअ्तदून (10) फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि, व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्लमून (11) व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्-बअ्दि अह्दिहिम् व त-अनू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अ-इम्मतल्-कुफ़्रि इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम् लअ़ल्लहुम् यन्तहून (12) अला तुक़ातिलू-न क़ौमन् न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बि-इख़्राजिर्रसूलि व हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन्, अतख़्शौनहुम् फ़ल्लाहु अहक़्क़ु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (13) क़ातिलूहुम् युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू-र क़ौमिम्-मुअ्मिनीन (14) व युज़्हिब् ग़ै-ज़ क़ुलूबिहिम्, व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (15) अम् हसिब्तुम् अन् तुतरकू व लम्मा यअ्-लमिल्ला-हुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वली-जतन्, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (16) ❖

मा का-न लिल्मुश्रिकी-न अंय्यअ्मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि, उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (17) इन्नमा यअ्मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त

عَنْ سَبِيلِهِ ۚ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾ لَا يَرْقُبُونَ
فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾ فَإِنْ
تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ۗ
وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾ وَإِنْ نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ
مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ
إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ﴿١٢﴾ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا
نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ
مَرَّةٍ ۚ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾
قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَ
يَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ ۗ
وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾ أَمْ
حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ
وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ
أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۚ
أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا

व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह, फ़-अ़सा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल् मुह्तदीन **(18)** अ-जअ़ल्तुम् सिक़ा-यतल्-हाज्जि व अ़िमा-रतल् मस्जिदिल्-हरामि कमन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व जाह-द फ़ी सबीलिल्लाहि, ला यस्तवू-न अ़िन्दल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन ✣ **(19)** अल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ़्-ज़मु द-र-जतन् अ़िन्दल्लाहि, व उलाइ-क हुमुल् फ़ाइज़ून **(20)** युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम् मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्-लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्-मुक़ीम **(21)** ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम **(22)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा-अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया-अ इनिस्त-हब्बुल्-कुफ़्-र अ़लल्-ईमानि, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून

يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ
اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ
اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ
مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا
الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَ
اَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ
تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ

(23) क़ुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अ़शीरतुकुम् व अम्वालु-निक़्त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अहब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़-तरब्बसू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन **(24)** ❖

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 3/8/9

ल-क़द् न-स-रकुमुल्लाहु फ़ी मवाति-न कसीरतिंव्-व यौ-म हुनैनिन् इज़् अअ़्-जबत्कुम् कस्-रतुकुम् फ़-लम् तुग्नि अ़न्कुम् शैअंव्-व ज़ाक़त् अ़लैकुमुल् अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म वल्लैतुम् मुद्बिरीन **(25)** सुम्-म अन्ज़लल्लाहु सकीन-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज़-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अ़ज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू, व ज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन **(26)** सुम्-म यतूबुल्लाहु मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(27)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न-जसुन् फ़ला यक़्रबुल् मस्जिदल्-हरा-म बअ़्-द आ़मिहिम् हाज़ा व इन् ख़िफ़्तुम् अ़ै-ल-तन् फ़सौ-फ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् हकीम **(28)** क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमू-न मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू-न दीनल्-हक़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता युअ़्तुल् जिज़्य-त अ़ंय्यदिंव्-व हुम् साग़िरून **(29)** ❖

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِي
مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُ عَلٰى رَسُولِهِ وَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ
كَفَرُوا ۚ وَذٰلِكَ جَزَاءُ الْكٰفِرِينَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ
ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٧﴾ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهِ إِنْ شَاءَ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صٰغِرُونَ ﴿٢٩﴾
وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيحُ
ابْنُ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ ۚ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ أَنّٰى يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾ اتَّخَذُوا

व क़ालतिल्-यहूदु अ़ुज़ैरु-निब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नसारल्-मसीहुब्नुल्लाहि, ज़ालि-क क़ौलुहुम् बिअफ़्वाहिहिम् युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु, क़ात-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून **(30)** इत्त-ख़ज़ू अह्बारहुम् व रुह्बानहुम् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि

❖ रु. 4/5/10

वल्मसीहब्-न मर्-य-म व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदू इलाहंव्वाहिदन् ला इला-ह इल्ला हु-व, सुब्हानहू अ़म्मा युश्रिकून (31) युरीदू-न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहू व लौ करिहल् काफ़िरून (32) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून ● (33) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम् मिनल् अह्बारि वर्रुह्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम (34) यौ-म युह्मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम्, हाज़ा मा कनज़्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून (35) इन्-न अ़िद्द-तश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना अ़-श-र शह्रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ-म ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ मिन्हा अर्ब-अ़तुन् हुरुमुन्, ज़ालिकद्दीनुल्-क़य्यिमु फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन्-न अन्फ़ु-सकुम्, व क़ातिलुल् मुश्रिकी-न काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन्, वअ्लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन (36) इन्नमन्नसी-उ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युहिल्लूनहू आ़मंव्-व युहर्रिमूनहू आ़मल्-लियुवातिऊ अ़िद्द-त मा हर्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा हर्रमल्लाहु, ज़ुय्यि-न लहुम्

أحبارهم ورهبانهم أربابا من دون الله والمسيح ابن
مريم وما أمروا إلا ليعبدوا إلها واحدا لا إله إلا هو
سبحنه عما يشركون ۝ يريدون أن يطفئوا نور الله
بأفواههم ويأبى الله إلا أن يتم نوره ولو كره الكفرون ۝
هو الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره
على الدين كله ولو كره المشركون ۝ يأيها الذين آمنوا
إن كثيرا من الأحبار والرهبان ليأكلون أموال الناس
بالباطل ويصدون عن سبيل الله والذين يكنزون
الذهب والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم
بعذاب أليم ۝ يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى
بها جباههم وجنوبهم وظهورهم هذا ما كنزتم لأنفسكم
فذوقوا ما كنتم تكنزون ۝ إن عدة الشهور عند الله اثنا
عشر شهرا في كتب الله يوم خلق السموت والأرض منها
أربعة حرم ذلك الدين القيم فلا تظلموا فيهن
أنفسكم وقاتلوا المشركين كافة كما يقاتلونكم كافة
واعلموا أن الله مع المتقين ۝ إنما النسيء زيادة في

सू-उ अअ़्मालिहिम्, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (37) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा क़ी-ल लकुमुन्फ़िरू **फ़ी सबीलि**ल्लाहिस्साक़ल्तुम् इलल्-अर्ज़ि, अ-रज़ीतुम् बिल्हयातिद्दुन्या मिनल्-आख़िरति **फ़मा मताअ़**ुल्-हयातिद्दुन्या फ़िल्आख़िरति इल्ला क़लील (38) इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव्-व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (39) इल्ला तन्सुरूहू फ़-क़द् न-सरहुल्लाहु इज़् अख़्र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनी इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तह्ज़न् इन्नल्ला-ह म-अ़ना फ़-अन्ज़-लल्लाहु सकीन-तहू अ़लैहि व अय्य-दहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ़-ल कलि-मतल्लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़्ला, व कलि-मतुल्लाहि हियल्-अ़ुल्या, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (40) इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून (41) लौ का-न अ़-रज़न् क़रीबंव्-व स-फ़रन् क़ासिदल्लत्तबअ़ू-क व लाकिम्-बअ़ुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु, व स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ़्ना ल-ख़रज्ना म-अ़कुम् युह्लिकू-न अन्फ़ु-सहुम् वल्लाहु यअ़्लमु इन्नहुम् लकाज़िबून (42) ❖

अफ़ल्लाहु अ़न्-क लि-म अज़िन्-त लहुम् हत्ता य-तबय्य-न लकल्लज़ी-न स-द-क़ू व

الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ
عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ
لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُم بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ
فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾ إِلَّا تَنفِرُوا
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ
اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ
الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾ انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ
عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا

तअ्-लमल् काज़िबीन (43) ला यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्मुत्तक़ीन (44) इन्नमा यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् य-तरद्ददून (45) व लौ अरादुल्-ख़ुरू-ज ल-अअ़द्दू लहू अ़ुद्दतंव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआ़-सहुम् फ़-सब्ब-तहुम् व क़ीलक़्अ़ुदू मअ़ल् क़ाअ़िदीन (46) लौ ख़-रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम इल्ला ख़बालंव्-व ल-औज़अ़ू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल् फ़ित्न-त व फ़ीकुम् सम्माअ़ू-न लहुम्, वल्लाहुम् अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (47)

ल-क़दिब्त-ग़वुल् फ़ित्न-त मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू ल-कल् उमू-र हत्ता जाअल्-हक़्क़ु व ज़-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून (48) व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी, अला फ़िल्-फ़ित्नति स-क़तू, व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफ़िरीन (49) इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्-क मुसीबतुंय्यक़ूलू क़द् अख़ज़्ना अम्-रना मिन् क़ब्लु व य-तवल्लौ व हुम् फ़रिहून (50) क़ुल् लंय्युसीबना इल्ला मा क-तबल्लाहु लना हु-व मौलाना व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून (51) क़ुल् हल् तरब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल् हुस्-नयैनि, व नह्नु न-तरब्बसु बिकुम् अंय्युसी-बकुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् मिन् अ़िन्दिही औ

واعلموا ١٠ ١٤٧ التوبة ٩

معكم يهلكون انفسهم والله يعلم انهم لكذبون
عفا الله عنك لم اذنت لهم حتى يتبين لك الذين
صدقوا وتعلم الكذبين لا يستاذنك الذين يؤمنون
بالله واليوم الاخر ان يجاهدوا باموالهم وانفسهم
والله عليم بالمتقين انما يستاذنك الذين لا يؤمنون
بالله واليوم الاخر وارتابت قلوبهم فهم في ريبهم
يترددون ولو ارادوا الخروج لاعدوا له عدة ولكن
كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل اقعدوا مع القعدين
لو خرجوا فيكم ما زادوكم الا خبالا ولا اوضعوا خللكم
يبغونكم الفتنة وفيكم سمعون لهم والله عليم
بالظلمين لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا لك الامور
حتى جاء الحق وظهر امر الله وهم كرهون ومنهم
من يقول ائذن لي ولا تفتني الا في الفتنة سقطوا و
ان جهنم لمحيطة بالكفرين ان تصبك حسنة تسؤهم
وان تصبك مصيبة يقولوا قد اخذنا امرنا من قبل
ويتولوا وهم فرحون قل لن يصيبنا الا ما كتب الله

منزل ٢

बिऐदीना फ़-तरब्बसू इन्ना म-अ़कुम् मु-तरब्बिसून **(52)** क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअ़न् औ कर्‌हल्-लंय्यु-तक़ब्ब-ल मिन्कुम्, इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन **(53)** व मा म-न-अ़हुम् अन् तुक़्ब-ल मिन्हुम् न-फ़क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व बि-रसूलिही व ला यअ्तूनस्सला-त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू-न इल्ला व हुम् कारिहून **(54)** फ़ला तुअ्जिब्-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम्, इन्नमा यरीदुल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िल्हयातिद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून **(55)** व यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम्, व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़्रक़ून **(56)** लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्‌द-ख़लल्-लवल्लौ इलैहि व हुम् यज्महून **(57)** व मिन्हुम् मंय्यल्मिज़ु-क फ़िस्स-दक़ाति फ़-इन् उअ्तू मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ्तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्-ख़तून **(58)** व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू व क़ालू हस्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू इन्ना इलल्लाहि राग़िबून **(59)** ❖

لَنَا هُوَ مَوْلٰىنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ
تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۗ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ
اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْۤا
اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ
مِنْكُمْ ۗ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ
مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ
الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ ۗ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ ۝ وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۗ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ
وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ
اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ
يُعْطَوْا مِنْهَاۤ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ
وَرَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ

इन्नमस्स-दक़ातु लिल्फ़ु-क़रा-इ वल्मसाकीनि वल्आ़मिली-न अ़लैहा वल्मुअल्ल-फ़ति क़ुलूबुहुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(60)** व मिन्हुमुल्लज़ी-न युअ्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू-न

हु-व उज़ुनुन्, क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्मुअ्मिनी-न व रह्मतुल् लिल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम्, वल्लज़ी-न युअ्ज़ू-न रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (61) यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् वल्लाहु व रसूलुहू अहक़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मिनीन ▲ (62) अलम् यअ्लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू फ़-अन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा, ज़ालिकल् ख़िज़्युल्-अ़ज़ीम (63) यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अ़लैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुलिस्तह्ज़िऊ इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् मा तह्ज़रून (64) व ल-इन् सअल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अ़बु, क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (65) ला तअ्तज़िरू क़द् कफ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम्, इन्नअ्फ़ु अ़न् ताइ-फ़तिम् मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताइ-फ़तम् बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (66) ❖

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَ
يَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ
لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ
الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ
اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ
كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ
نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ

अल्मुनाफ़िक़ू-न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम् मिम्-बअ्ज़िन् ✣ यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अ़निल्-मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ू-न ऐदि-यहुम्, नसुल्ला-ह फ़-नसि-यहुम्, इन्नल्-

मुनाफ़िक़ी-न हुमुल्-फ़ासिक़ून **(67)** व-अ़दल्लाहुल् मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, हि-य हस्बुहुम् व ल-अ-नहुमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम **(68)** कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद्-द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व अक्स-र अम्वालंव्-व औलादन्, फ़स्तम्तअ़ू बि-ख़ालाक़िहिम् फ़स्तम्तअ़्तुम् बि-ख़ालाक़िकुम् कमस्तम्त-अ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बि-ख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू, उलाइ-क हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून **(69)** अलम् यअ्तिहिम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मद्य-न वल्मुअ्तफ़िकाति, अतत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(70)** वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन् ✣ यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व युतीअ़ूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(71)** व-अ़दल्लाहुल् मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न

يَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ
وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ
وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ
وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

وقف لازم

✣ व. लाज़िम

फ़ीहा व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि अक्बरु, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (72) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल् मसीर (73)

यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू, व ल-क़द् क़ालू कलि-मतल्कुफ़्रि व क-फ़रू बअ़्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व मा न-क़मू इल्ला अन् अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही फ़-इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् व इंय्य-तवल्लौ युअ़ज़्ज़िब्हु-
-मुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलिय्यिंव्वला नसीर (74) व मिन्हुम् मन् आ़-हदल्ला-ह ल-इन् आताना मिन् फ़ज़्लिही लनस्सद्-द-क़न्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (75)
फ़-लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-वल्लौ व हुम् मुअ़्रिज़ून (76) फ़-अअ़्क़-बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी

واعلموا ١٠ ١٨٠ التوبة ٩

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ
طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ
الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ
وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ
اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾
فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿۷۶﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ
بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿۷۷﴾ اَلَمْ
يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿۷۸﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

منزل ٢

क़ुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौनहू बिमा अख़्लफ़ुल्ला-ह मा व-अ़दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (77) अलम् यअ़्लमू अन्नल्ला-ह यअ़्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुल् ग़ुयूब (78) अल्लज़ी-न यल्मिज़ूनल् मुत्तव्विअ़ी-न मिनल् मुअ्मिनी-न फ़िस्स-दक़ाति वल्लज़ी-न ला यजिदू-न इल्ला जुह्दहुम् फ़-यस्ख़रू-न मिन्हुम्, सख़िरल्लाहु मिन्हुम् व लहुम्

❖ रु. 9/6/15

अ़ज़ाबुन् अलीम (79) इस्तग़्फ़िर् लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम्, इन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्अ़ी-न मर्रतन् फ़-लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्, ज़ालि-क बिअन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (80) ❖

फ़रिहल् मुख़ल्लफ़ू-न बिमक़्अ़दिहिम् ख़िला-फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि, क़ुल् नारु जहन्न-म अशद्दु हर्रन्, लौ कानू यफ़्क़हून (81) फ़ल्यज़्हकू क़लीलंव् वल्यब्कू कसीरन् जज़ाअम्-बिमा कानू यक्सिबून (82) फ़-इर्र-ज-अ़कल्लाहु इला ताइ-फ़तिम् मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू-क लिल्ख़ुरूजि फ़क़ुल्-लन् तख़्रुजू मअ़ि-य अ-बदंव्-व लन् तुक़ातिलू मअ़ि-य अ़दुव्वन्, इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क़्अुदू मअ़ल् ख़ालिफ़ीन (83) व ला तुसल्लि अ़ला अ-हदिम् मिन्हुम् मा-त अ-बदंव्-व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही, **इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (84) व ला तुअ्जिब-क** अम्वालुहुम् व औलादुहुम्, इन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (85) व इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ़ रसूलिहिस्तअ्ज़-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम् मअ़ल् क़ाअ़िदीन (86)

فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ
مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٩﴾ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ
أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ
يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ
خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٨١﴾ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا
كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَىٰ
طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا
مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ
بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ
أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٨٤﴾ وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ
وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا
وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾ وَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ

रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून **(87)** लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, व उलाइ-क लहुमुल्-ख़ैरातु व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून **(88)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(89)** ❖

व जाअल् मुअ़ज़्ज़िरू-न मिनल्-अअ़्राबि लियुअ्ज़-न लहुम् व क़-अ़दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला-ह व रसूलहू, सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(90)** लै-स अ़लज़्ज़ु-अ़फ़ा-इ व ला अ़लल्- मर्ज़ा व ला अ़लल्लज़ी-न ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह-रजुन् इज़ा न-सहू लिल्लाहि व रसूलिही, मा अ़लल् मुह़्सिनी-न मिन् सबीलिन्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(91)** व ला अ़लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह़्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु मा अह़्मिलुकुम् अ़लैहि तवल्लौ व अअ़्युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्- दम्अ़ि ह-ज़नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून **(92)** इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनून-क व हुम् अग़्निया-उ रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ़्लमून **(93)**

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ
مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾
لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ؗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ ع ١٧
لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ
وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ
حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ
سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ
لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ
تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ ؕ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ
يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

ग्यारहवाँ पारः यअ्तज़िरू-न

सूरतुत्तौ-बति (आयत 94 से 129)

यअ्तज़िरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ्तुम् इलैहिम्, क़ुल्-ला तअ्तज़िरू लन्नुअ्मि-न लकुम् क़द् नब्ब-अनल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम्, व स-यरल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून **(94)** स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम् लितुअ्रिज़ू अ़न्हुम्, फ़-अअ्रिज़ू अ़न्हुम्, इन्नहुम् रिज्सुंव्-व मअ्वाहुम् जहन्नमु जज़ाअम् बिमा कानू यक्सिबून **(95)** यह्लिफ़ू-न लकुम् लितर्ज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन् तर्ज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यर्ज़ा अ़निल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन **(96)** अल्अअ्राबु अशद्दु कुफ़्रंव्-व निफ़ाक़ंव्-व अज्दरु अल्ला यअ्लमू हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला रसूलिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(97)** व मिनल्- अअ्राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमंव्-व य-तरब्बसु बिकुमुद्दवाइ-र, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्सौ-इ, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम **(98)** व मिनल्-अअ्राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अि़न्दल्लाहि व स-लवातिर्रसूलि, अला इन्नहा क़ुर्-बतुल्लहुम् सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(99)** ❖

वस्साबिक़ूनल् अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त-बअ़ूहुम् बि-इह्सानिर्-

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ۭ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا
لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ۭ وَسَيَرَى اللّٰهُ
عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا
انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ۭ اِنَّهُمْ
رِجْسٌ ۡ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ يَحْلِفُوْنَ
لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى
عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝ اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ
اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝ وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ
بِكُمُ الدَّوَاۗىِٕرَ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝
وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا
يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ۭ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۭ
سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَالسّٰبِقُوْنَ
الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ
رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु व अ-अ़द्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्-तहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (100) व मिम्-मन् हौलकुम् मिनल्-अअ्राबि मुनाफ़िक़ू-न, व मिन् अह्लिल्-मदीनति म-रदू अ़लन्निफ़ाक़ि, ला तअ्लमुहुम्, नह्नु नअ्लमुहुम्, सनुअ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम (101) व आख़रूनअ्-त-रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ़-मलन् सालिहंव्-व आख़-र सय्यिअन्, अ़सल्लाहु अंय्यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (102) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स-द-क़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम्, इन्-न सलात-क स-कनुल्लहुम्, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (103) अलम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ्ख़ुज़ुस्स-दक़ाति व अन्नल्ला-ह हुवत्-तव्वाबुर्रहीम (104) व क़ुलिअ्मलू फ़-स-यरल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-मुअ्मिनू-न, व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (105) व आख़रू-न मुर्जौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (106) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व तफ़रीक़म्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्-लिमन् हा-रबल्ला-ह व रसूलहू मिन् क़ब्लु, व ल-यह्लिफ़ुन्-न इन् अरद्ना इल्लल्-हुस्ना, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम्

يعتذرون ١١ ١٨٤ التوبة ٩

تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ذلك الفوز العظيم ۝ و
ممن حولكم من الاعراب منفقون ومن اهل المدينة
مردوا على النفاق لا تعلمهم نحن نعلمهم سنعذبهم
مرتين ثم يردون الى عذاب عظيم ۝ واخرون اعترفوا
بذنوبهم خلطوا عملا صالحا واخر سيئا عسى الله ان
يتوب عليهم ان الله غفور رحيم ۝ خذ من اموالهم صدقة
تطهرهم وتزكيهم بها وصل عليهم ان صلوتك سكن
لهم والله سميع عليم ۝ الم يعلموا ان الله هو يقبل التوبة
عن عباده ويأخذ الصدقت وان الله هو التواب الرحيم ۝
وقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون و
ستردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما كنتم تعملون ۝
واخرون مرجون لامر الله اما يعذبهم واما يتوب عليهم
والله عليم حكيم ۝ والذين اتخذوا مسجدا ضرارا وكفرا
وتفريقا بين المؤمنين وارصادا لمن حارب الله ورسوله
من قبل وليحلفن ان اردنا الا الحسنى والله يشهد انهم
لكذبون ۝ لا تقم فيه ابدا لمسجد اسس على التقوى من

منزل ٢

लकाज़िबून **(107)** ला तक़ुम् फ़ीहि अ-बदन्, ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अ-हक़्क़ु अन् तक़ू-म फ़ीहि, फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बू-न अंय्यत-तह्हरू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह्हिरीन **(108)** अ-फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम्-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा-र बिही फ़ी नारि जहन्न-म, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन **(109)** ला यज़ालु बुन्यानु--हुमुल्लज़ी बनौ री-बतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन् त-क़त्त-अ़ क़ुलूबुहुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(110)** ❖

इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुअ्मिनी-न अन्फ़ु-सहुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त, युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न, वअ़्दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुरआनि, व मन् औफ़ा बि-अ़हिदही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअ़िकुमुल्लज़ी बायअ़्तुम् बिही, व ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(111)** अत्ता-इबूनल्- आ़बिदूनल्-हामिदूनस्-सा-इहूनर्-राकिअूनस्-साजिदूनल्-आमिरू-न बिल्मअ़्रूफ़ि वन्नाहू-न अ़निल्मुन्करि वल्हाफ़िज़ू-न लिहुदूदिल्लाहि, व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन **(112)** मा का-न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकी-न व लौ कानू उली क़ुर्बा मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्-जहीम **(113)** व मा कानस्तिग़्फ़ारु इब्राही-म लिअबीहि इल्ला अ़म्-मौअ़ि-दतिंव् व-अ़-दहा इय्याहु फ़-लम्मा तबय्य-न लहू अन्नहू अ़दुव्वुल्-लिल्लाहि त-बर्र-अ मिन्हु, इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन्

أول يوم أحق أن تقوم فيه فيه رجال يحبون أن يتطهروا
والله يحب المطهرين ۝ أفمن أسس بنيانه على تقوى
من الله ورضوان خير أم من أسس بنيانه على شفا
جرف هار فانهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم
الظلمين ۝ لا يزال بنيانهم الذي بنوا ريبة في قلوبهم
إلا أن تقطع قلوبهم والله عليم حكيم ۝ إن الله اشترى
من المؤمنين أنفسهم وأموالهم بأن لهم الجنة
يقاتلون في سبيل الله فيقتلون ويقتلون وعدا عليه
حقا في التورىة والإنجيل والقرآن ومن أوفى بعهده من
الله فاستبشروا ببيعكم الذي بايعتم به وذلك هو الفوز
العظيم ۝ التائبون العابدون الحامدون السائحون الراكعون
الساجدون الآمرون بالمعروف والناهون عن المنكر و
الحافظون لحدود الله وبشر المؤمنين ۝ ما كان للنبي و
الذين آمنوا أن يستغفروا للمشركين ولو كانوا أولي قربى
من بعد ما تبين لهم أنهم أصحاب الجحيم ۝ وما كان استغفار
إبرهيم لأبيه إلا عن موعدة وعدها إياه فلما تبين له

हलीम (114) व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम् बअ्-द इज़् हदाहुम् हत्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तक़ू-न, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (115) इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युह्यी व युमीतु, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (116) ल-क़त्ताबल्लाहु अ़लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारिल्लज़ीनत्- त-बअ़ूहु फ़ी सा-अ़तिल्-उ़स्रति मिम्- बअ़्दि मा का-द यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम् मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अ़लैहिम्, इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम (117) व अ़लस्-सला-सतिल्लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाक़त् अ़लैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अ़लैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि, सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् लि-यतूबू, इन्नल्ला-ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम (118) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व कूनू मअ़स्सादिक़ीन (119) मा का-न लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौ-लहुम् मिनल्- अअ़्राबि अंय्य-तख़ल्लफ़ू अ़र्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अ़न् नफ़्सिही, ज़ालि-क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़्-मउंव्-व ला न-सबुंव्-व ला मख़्म-सतुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-तऊ-न मौतिअंय्यग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न मिन् अ़दुव्विन्-नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ़-मलुन् सालिहुन्, इन्नल्ला-ह ला युज़ीअ़ु अज्रल्-मुह्सिनीन (120) व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क़तन् सग़ी-रतंव्- व ला कबी-रतंव्-व ला यक़्तअ़ू-न वादियन् इल्ला कुति-ब लहुम्

يعتذرون ١١ ١٨٦ التوبة ٩

اِنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾
لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ
الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ
وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ
اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ ع
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ مَا كَانَ
لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا
عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ
نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ

منزل ٢

लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा कानू यअ्मलून **(121)** व मा कानल्-मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़-तन्, फ़लौ ला न-फ़-र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् मिन्हुम् ताइ-फ़तुल् लि-य-तफ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा र-जअू इलैहिम् लअ़ल्लहुम् यह्ज़रून **(122)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ातिलुल्लज़ी-न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़-तन्, वअ्लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन ◆ **(123)** व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् फ़-मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व हुम् यस्तब्शिरून **(124)** व अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् फ़ज़ादत्हुम् रिज्सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून **(125)** अ-वला यरौ-न अन्नहुम् युफ़्तनू-न फ़ी कुल्लि आ़मिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम् यज़्ज़क्करून **(126)** व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् न-ज़-र बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन्, हल् यराकुम् मिन् अ-हदिन् सुम्मन्स-रफ़ू, स-रफ़ल्लाहु क़ुलूबहुम् बिअन्नहुम् क़ौमुल् ला यफ़्क़हून **(127)** ल-क़द् जा-अकुम् रसूलुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् हरीसुन् अ़लैकुम् बिल्मुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम **(128)** फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, अ़लैहि तवक्कल्तु व हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-अ़ज़ीम **(129)** ❖

الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً
وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً فَلَوْلَا
نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَ
لِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ
غِلْظَةً وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا فَاَمَّا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا
وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً
اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ
سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوْا صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝
لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا

10 सूरतु यूनुस 51

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7733 अक्षर, 1861 शब्द, 109 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल् किताबिल्-हकीम (1) अका-न लिन्नासि अ्-जबन् अन् औहैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू अन्-न लहुम् क़-द-म सिद्किन् अि़न्-द रब्बिहिम् क़ालल्-काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (2) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि युदब्बिरुल्-अम्-र, मा मिन् शफ़ीअि़न् इल्ला मिम्-बअ़्दि इज़्निही, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, अ-फ़ला तज़क्करून (3) इलैहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न्, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, इन्नहू यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू लियज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति, वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (4) हुवल्लज़ी ज-अ़लश्शम्-स ज़ियाअंव्-वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्द-रहू मनाज़ि-ल लितअ़्लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्हिसा-ब, मा ख़-लक़ल्लाहु ज़ालि-क इल्ला बिल्हक़्क़ि युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्लमून (5) इन्-न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि

فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

سورة يونس مكية وهي مائة وتسع آيات وإحدى عشر ركوعا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا

वन्नहारि व मा ख़-लक़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यत्तक़ून (6) इन्नल्लज़ी-न ला यर्‌जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी-न हुम् अ़न् आयातिना ग़ाफ़िलून (7) उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (8) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (9) दअ्वाहुम् फ़ीहा सुब्हान-कल्लाहुम्-म व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन् व आख़िरु दअ्वाहुम् अनिल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (10) ❖

व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्-शर्रस्तिअ्जा-लहुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम्, फ़-न-ज़रुल्लज़ी-न ला यर्‌जू-न लिक़ा-अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (11) व इज़ा मस्सल् इन्सानज़्-ज़ुर्रु दआ़ना लिजम्बिही औ क़ाअ़िदन् औ क़ाइमन् फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हु ज़ुर्-रहू मर्-र क-अल्लम् यद्‌अुना इला ज़ुर्रिम्-मस्सहू, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ्मलून (12) व ल-क़द् अह्लक्नल्-क़ुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू, कज़ालि-क नज्ज़िल् क़ौमल्-मुज्रिमीन (13) सुम्-म जअ़ल्नाकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्‌अर्ज़ि मिम्-बअ्दिहिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून (14) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न ला यर्‌जू-न लिक़ा-अनअ्तिबिक़ुर्‌आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु, क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दि-लहू मिन् तिल्क़ा-इ

خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ﴿٦﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا
بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٩﴾ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠﴾ ع
وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ
اَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١﴾
وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۖ كَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا ۖ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاِذَا
تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ

नफ़्सी इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम **(15)** क़ुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अ़लैकुम् व ला अद्राकुम् बिही फ़-क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अ़ुमुरम्-मिन् क़ब्लिही, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(16)** फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल् मुज्रिमून **(17)** व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यजुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यक़ूलू-न हा-उला-इ शु-फ़अ़ाउना अ़िन्दल्लाहि, क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला-ह बिमा ला यअ्लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून **(18)** व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-दतन् फ़ख़्त-लफ़ू, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ीमा फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(19)** व यक़ूलू-न लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही फ़क़ुल् इन्नमल्-ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन **(20)** ❖

بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ
تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ
عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ
عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ
كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا
عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي
الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ
اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ
مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ
مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ
رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ
حَتّٰىٓ اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا

ع

व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह़्म-तम् मिम्-बअ़्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्रुन् फ़ी आयातिना, क़ुलिल्लाहु अस्रअ़ु मक्रन्, इन्-न रुसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून **(21)** हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह़्रि, ह़त्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि व जरै-न बिहिम् बिरीहिन् तय्यि-बतिंव्-व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आसिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन्

कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू अन्नहुम् उही-त बिहिम् द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, ल-इन् अन्जैतना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (22) फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ा हुम् यब्गू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, या अय्युहन्नासु इन्नमा बग्युकुम् अ़ला अन्फ़ुसिकुम् मताअ़ल् हयातिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुकुम् फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (23) इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्-अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्-अन्आ़मु, हत्ता इज़ा अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्रु-फ़हा वज़्ज़य्यनत् व ज़न्-न अह़्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू-न अ़लैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़-जअ़ल्नाहा हसीदन् क-अल्लम् तग्-न बिल्अम्सि, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्- आयाति लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (24) वल्लाहु यद्अू इला दारिस्सलामि, व यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्- मुस्तक़ीम (25) लिल्लज़ी-न अह्सनुल्- हुस्ना व ज़िया-दतुन्, व ला यर्हक़ु वुजू-हहुम् क़-तरुंव्-व ला ज़िल्लतुन्, उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (26) वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ा-उ सय्यि-अतिम् बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् क-अन्नमा उग्शियत् वुजूहुहुम् कि-तअ़म् मिनल्लैलि मुज़्लिमन्, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (27) व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म

يونس ١٠ ١٩١ يعتذرون ١١

جَآءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوٓا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا
مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشّٰكِرِينَ ۝ فَلَمَّآ أَنْجٰىهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰىٓ أَنْفُسِكُمْ مَّتَاعَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ
نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتّٰىٓ إِذَآ أَخَذَتِ
الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قٰدِرُونَ عَلَيْهَآ
أَتٰىهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَ
بِالْأَمْسِ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوٓا
إِلٰى دَارِ السَّلٰمِ وَيَهْدِي مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ لِلَّذِينَ
أَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ
جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
عَاصِمٍ كَأَنَّمَآ أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا
أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ

منزل

नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् फ़-ज़य्यल्ना बैनहुम् व क़ा-ल शु-रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ्बुदून (28) फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अ़न् अ़िबादतिकुम् लग़ाफ़िलीन (29) हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम् मा अस्ल-फ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून ● (30) ❖

क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्-मंय्यम्लिकुस्सम्-अ वल्अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र, फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (31) फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़ु फ़-माज़ा बअ्दल्-हक़्क़ि इल्लज़्ज़लालु फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (32) कज़ालि-क हक़्क़त् कलि-मतु रब्बि-क अ़लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून (33) क़ुल् हल् मिन्

يونس ١٠ ١٩٢ يعتذرون ١١

نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ

وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا

بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا

كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ

مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ

يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ

الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا

الضَّلٰلُ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ

مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ

قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ

اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ

منزل ٣

शु-रकाइकुम् मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू, क़ुलिल्लाहु यब्दउल्ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (34) क़ुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्-हक़्क़ि, क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्हक़्क़ि, अ-फ़मंय्यह्दी इलल्हक़्क़ि अ-हक़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ अम्-मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा फ़मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून (35) व मा यत्तबिअु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन्, इन्नज़्ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैअन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यफ़्अ़लून (36) व

मा का-न हाज़ल्- क़ुरआनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन **(37)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अू मनिस्त-तअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(38)** बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअि़ल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुज़्ज़ालिमीन **(39)** व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही, व रब्बु-क अअ्लमु बिल्मुफ़्सिदीन **(40)** ❖

व इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुल्-ली अ़-मली व लकुम् अ़-मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्मलु व अ-न बरीउम्-मिम्मा तअ्मलून **(41)** व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअू-न इलै-क, अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म व लौ कानू ला यअ्क़िलून **(42)** व मिन्हुम् मंय्यन्ज़ुरु इलै-क, अ-फ़अन्-त तह्दिल्-अुम्-य व लौ कानू ला युब्सिरून **(43)** इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमुन्ना-स शैअंव्-व लाकिन्नन्-ना-स अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(44)** व यौ-म यह्शुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिनन्नहारि य-तआ़रफ़ू-न बैनहुम्, क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन **(45)** व इम्मा नुरियन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ़अ़लून **(46)** व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् फ़-इज़ा

يُفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا
بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ
وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِنْ
كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ
وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ
اَفَاَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ
النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ
كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ قَدْ
خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝ وَاِمَّا
نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ فَاِذَا

जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून **(47)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(48)** क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़रूरंव्-व ला नफ़अ़न् इल्ला मा शा-अल्लाहु, लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन्, इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तंव्-व ला यस्तक़्दिमून **(49)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुहू बयातन् औ नहारम् माज़ा यस्तअ़्जिलु मिन्हुल् मुज्रिमून **(50)** अ-सुम्-म इज़ा मा व-क़-अ़ आमन्तुम् बिही, आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ़्जिलून **(51)** सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून **(52)** व यस्तम्बिऊन-क अ-हक़्क़ुन् हु-व, क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू ल-हक़्क़ुन्, व मा अन्तुम् बिमुअ़्जिज़ीन **(53)** ❖

व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-लमत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्त-दत् बिही, व अ-सर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून **(54)** अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, अला इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून **(55)** हु-व युह्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जऊन **(56)** या अय्युहन्नासु क़द् जाअत्कुम् मौअि-ज़तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूरि व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन **(57)** क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह्मतिही फ़बिज़ालि-क फ़ल्यफ़्रहू,

جَآءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ٤٧ وَ
يَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٤٨ قُلْ لَا أَمْلِكُ
لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ٤٩ قُلْ
أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ
الْمُجْرِمُونَ ٥٠ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ
تَسْتَعْجِلُونَ ٥١ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ
هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ٥٢ وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٥٣ وَلَوْ أَنَّ
لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ٥٤ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَلَا إِنَّ
وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٥ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٥٦ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ
رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ٥٧
قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا

हु-व ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअून (58) क़ुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़-जअ़ल्तुम् मिन्हु हरामंव्-व हलालन्, क़ुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ़लल्लाहि तफ़्तरून (59) व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (60) ❖

व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुरआनिंव्-व ला तअ्मलू-न मिन् अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, व मा यअ्ज़ुबु अ़र्रब्बि-क मिम्-मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व ला अस्ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन (61) अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (62) अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (63) लहुमुल्बुश्रा फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति, ला तब्दी-ल लि-कलिमातिल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (64) व ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम ✣ इन्नल्-अिज़्ज़-त लिल्लाहि जमीअ़न्, हुवस्समीअुल्-अ़लीम (65) अला इन्-न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि, व मा यत्तबिअुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि शु-रका-अ, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (66) हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क

يجمعون ﴿٥٨﴾ قل ارءيتم ما انزل الله لكم من رزق فجعلتم
منه حراما وحللا قل آلله اذن لكم ام على الله تفترون ﴿٥٩﴾ و
ما ظن الذين يفترون على الله الكذب يوم القيمة ان
الله لذو فضل على الناس ولكن اكثرهم لا يشكرون ﴿٦٠﴾ وما
تكون في شان وما تتلوا منه من قران ولا تعملون من
عمل الا كنا عليكم شهودا اذ تفيضون فيه وما يعزب
عن ربك من مثقال ذرة في الارض ولا في السماء ولا
اصغر من ذلك ولا اكبر الا في كتب مبين ﴿٦١﴾ الا ان اولياء
الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون ﴿٦٢﴾ الذين امنوا وكانوا
يتقون ﴿٦٣﴾ لهم البشرى في الحيوة الدنيا وفي الاخرة لا
تبديل لكلمت الله ذلك هو الفوز العظيم ﴿٦٤﴾ ولا يحزنك
قولهم ان العزة لله جميعا هو السميع العليم ﴿٦٥﴾ الا ان لله
من في السموت ومن في الارض وما يتبع الذين يدعون
من دون الله شركاء ان يتبعون الا الظن وان هم الا
يخرصون ﴿٦٦﴾ هو الذي جعل لكم اليل لتسكنوا فيه والنهار
مبصرا ان في ذلك لايت لقوم يسمعون ﴿٦٧﴾ قالوا اتخذ الله

❖ रु. 6/7/11 ✣ व. लाज़िम

लआयातिल् लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून (67) क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, हुवल्-ग़निय्यु, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि इन् अ़िन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (68) क़ुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून (69) मताअ़ुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अ़ज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून ▲ (70) ❖

वत्लु अ़लैहिम न-ब-अ नूहिन् ✣ इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़-अ़लल्लाहि तवक्कल्तु फ़-अज्मिअ़ू अम्रकुम् व शु-रका-अकुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अ़लैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला तुन्ज़िरून (71) फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन (72) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व अ़ग्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्- मुन्ज़रीन (73) सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क नत्बअ़ु अ़ला क़ुलूबिल्- मुअ़्तदीन (74) सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिहिम् मूसा व हारू-न

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ
عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾
قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ؕ
مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ
الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ؒ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي
الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ
رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا
كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ
بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ

इला फ़िर्औ़-न व म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (75) फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अि़न्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा लसिह्रुम्-मुबीन (76) क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अकुम्, असिह्रुन् हाज़ा, व ला युफ़्लिहुस्साहिरून (77) क़ालू अजिअ्-तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना व तकू-न लकुमल्-किब्रिया-उ फ़िल्अर्ज़ि, व मा नह्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (78) व क़ा-ल फ़िर्औ़नुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (79) फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम्-मुल्क़ून (80) फ़-लम्मा अल्क़ौ क़ा-ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्-सिह्रु, इन्नल्ला-ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-मलल्-मुफ़्सिदीन (81) व युहिक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही व लौ करिहल्-मुज्रिमून (82) ❖

फ़मा आम-न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम् मिन् फ़िर्औ़-न व म-लइहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम्, व इन्-न फ़िर्औ़-न लआलिन् फ़िल्अर्ज़ि व इन्नहू लमिनल् मुस्रिफ़ीन (83) व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़-अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (84) फ़क़ालू अ़लल्लाहि तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्नतल् लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन (85) व नज्जिना बिरह्मति-क मिनल् क़ौमिल्-काफ़िरीन (86) व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वआ लिक़ौमिकुमा बिमिस्-र बुयूतंव्वज्अ़लू बुयू-तकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त, व बश्शिरिल्-

مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا
اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ
فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ
بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا
مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ
السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى
اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ
اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ
الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ
فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ
مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ

मुअ्मिनीन **(87)** व क़ा-ल मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िरऔ-न व म-ल-अहू ज़ीनतंव्-व अम्वालन् फ़िल्हयातिद्दुन्या रब्बना लियुज़िल्लू अ़न् सबीलि-क रब्बनत्मिस् अ़ला अम्वालिहिम् वश्दुद् अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू हत्ता य-रवुल् अ़ज़ाबल्-अलीम **(88)** क़ा-ल क़द् उजीबद्-दअ्वतुकुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआ़न्नि सबीलल्लज़ी-न ला यअ़्लमून **(89)** व जावज़्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औनु व जुनूदुहू बग़्यंव्-व अ़द्वन्, हत्ता इज़ा अद्-र-कहुल्-ग़-रक़ु क़ा-ल आमन्तु अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लज़ी आ-मनत् बिही बनू इस्राई-ल व अ-न मिनल्-मुस्लिमीन **(90)** आल्आ-न व क़द् अ़सै-त क़ब्लु व कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन **(91)** फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न लिमन् ख़ल्फ़-क आयतन्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि अ़न् आयातिना लग़ाफ़िलून **(92)** ❖

व ल-क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ सिद्क़िंव्-व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति फ़मख़्त-लफ़ू हत्ता जा-अहुमुल्-अ़िल्मु, इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(93)** फ़-इन् कुन्-त फ़ी शक्किम् मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्रऊनल्-किता-ब मिन् क़ब्लि-क ल-क़द् जा-अकल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन **(94)** व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन **(95)** इन्नल्लज़ी-न हक़्क़त् अ़लैहिम् कलि-मतु

مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ
سَبِيْلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ
دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ
بَغْيًا وَّعَدْوًا حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝
آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ
نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا
فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ فَسْـَٔلِ
الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ

रब्बि-क ला युअ्मिनून **(96)** व लौ जाअत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रवुल् अ़ज़ाबल्-अलीम **(97)** फ़लौ ला कानत् क़र्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अ़हा ईमानुहा इल्ला क़ौ-म यूनु-स, लम्मा आमनू कशफ़्ना अ़न्हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या व मत्तअ्नाहुम् इला हीन **(98)** व लौ शा-अ रब्बु-क लआम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न्, अ-फ़अन्-त तुक्रिहुन्ना-स हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन **(99)** व मा का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व यज्अ़लुर्रिज्-स अ़लल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून **(100)** क़ुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा तुग़्निल्-आयातु वन्नुज़ुरु अ़न् क़ौमिल् ला युअ्मिनून **(101)** फ़-हल् यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम्, क़ुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन **(102)** सुम्-म नुनज्जी रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू कज़ालि-क हक़्क़न् अ़लैना नुन्जिल्-मुअ्मिनीन **(103)** ❖

क़ुल् या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम् मिन् दीनी फ़ला अअ्बुदुल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्बुदुल्लाहल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम् व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(104)** व अन् अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न् व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन **(105)** व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क फ़-इन् फ़अ़ल्-त फ़-इन्न-क इज़म् मिनज़्ज़ालिमीन **(106)** व

يعتذرون ١١ — ١٩٩ — يونس ١٠

عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ
حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ
فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝
وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَآمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۚ أَفَأَنْتَ
تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ
تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا
تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ
يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ
فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا
وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا
النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ۖ
وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ

منزل ٣

❖ रु. 10/11/15

इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व व इंय्युरिद्-क बिख़ैरिन् फ़ला राद्-द लिफ़ज़्लिही, युसीबु बिही मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम **(107)** क़ुल् या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा, व मा अ-न अ़लैकुम् बि-वकील **(108)** वत्तबिअ़् मा यूहा इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन **(109)** ❖

11 सूरतु हूदिन् 52

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7924 अक्षर, 1936 शब्द 123 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर **(1)** अल्-ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव्-व बशीर **(2)** व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअ़्कुम् मताअ़न् ह-सनन् इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व युअ्ति कुल्-ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू, व इन् तवल्लौ फ़-इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् कबीर **(3)** इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(4)** अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदू-रहुम् लियस्तख़्फ़ू मिन्हु, अला ही-न यस्तग़्शू-न सियाबहुम् यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनू-न इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर **(5)**

دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَإِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ إِلَّا هُوَ ۚ وَإِنْ
يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۚ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ
وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى
إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ أُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝
أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللّٰهَ ۚ إِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۝ وَّأَنِ
اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا
إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ۚ وَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝ إِلَى اللّٰهِ
مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ أَلَآ إِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ
صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ۚ أَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ إِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

बारहवाँ पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् (आयत 6 से 123)

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ़लल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद-अ़हा, कुल्लुन् फ़ी किताबिम् मुबीन **(6)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अ़र्शुहू अ़लल्मा-इ लि-यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़-मलन्, व ल-इन् क़ुल्-त इन्नकुम् मब्अूसू-न मिम्-बअ्दिल्- मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्- मुबीन **(7)** व ल-इन् अख़्ख़र्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इला उम्मतिम् मअ्दूदतिल्- ल-यक़ूलुन्-न मा यह्बिसुहू, अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स मस्रूफ़न् अ़न्हुम् व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(8)** ❖

व ल-इन् अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् सुम्-म न-ज़अ्नाहा मिन्हु इन्नहू ल-यऊसुन् कफ़ूर **(9)** व ल-इन् अज़क़्नाहु नअ्मा-अ बअ्-द ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न ज़-हबस्सय्यिआतु अ़न्नी, इन्नू ल-फ़रिहुन् फ़ख़ूर **(10)** इल्लल्लज़ी-न स-बरू व अ़मिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(11)** फ़-लअ़ल्ल-क तारिकुम् बअ्-ज़ मा यूहा इलै-क व ज़ाइक़ुम् बिही सद्रु-क अंय्यक़ूलू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अ़हू म-लकुन्, इन्नमा अन्-त नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला

وما من دابة في الأرض إلا على الله رزقها ويعلم
مستقرها ومستودعها كل في كتب مبين ﴿٦﴾ وهو الذي خلق
السموت والأرض في ستة أيام وكان عرشه على الماء
ليبلوكم أيكم أحسن عملا ولئن قلت إنكم مبعوثون من
بعد الموت ليقولن الذين كفروا إن هذا إلا سحر مبين ﴿٧﴾
ولئن أخرنا عنهم العذاب إلى أمة معدودة ليقولن ما
يحبسه ألا يوم يأتيهم ليس مصروفا عنهم وحاق بهم
ما كانوا به يستهزءون ﴿٨﴾ ولئن أذقنا الإنسان منا رحمة ثم
نزعنها منه إنه ليئوس كفور ﴿٩﴾ ولئن أذقنه نعماء بعد ضراء
مسته ليقولن ذهب السيات عني إنه لفرح فخور ﴿١٠﴾ إلا الذين
صبروا وعملوا الصلحت أولئك لهم مغفرة وأجر كبير ﴿١١﴾
فلعلك تارك بعض ما يوحى إليك وضائق به صدرك أن
يقولوا لولا أنزل عليه كنز أو جاء معه ملك إنما أنت نذير
والله على كل شيء وكيل ﴿١٢﴾ أم يقولون افترىه قل فأتوا
بعشر سور مثله مفتريت وادعوا من استطعتم من دون
الله إن كنتم صدقين ﴿١٣﴾ فإلم يستجيبوا لكم فاعلموا أنما

कुल्लि शैइंव्-वकील **(12)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् फ़अ्तू बिअ़शिर सु-वरिम्-मिस्लिही मुफ़्त-रयातिंव्वद्अू मनिस्त-तअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(13)** फ़-इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ़्लमू अन्नमा उन्ज़ि-ल बिअ़िल्मिल्लाहि व अल्ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून **(14)** मन् का-न युरीदुल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ़्मालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून **(15)** उलाइ-कल्लज़ी-न लै-स लहुम् फ़िल्-आख़िरति इल्लन्नारु व हबि-त मा स-नअ़ू फ़ीहा व बातिलुम्-मा कानू यअ़्मलून **(16)** अ-फ़-मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम् मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्मतन्, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही मिनल् अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअ़िदुहू फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु, इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून **(17)** व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन्, उलाइ-क युअ़्रज़ू-न अ़ला रब्बिहिम् व यक़ूलुल्-अश्हादु हा-उलाइल्लज़ी-न क-ज़बू अ़ला रब्बिहिम् अला लअ़्नतुल्लाहि अ़लज़्ज़ालिमीन **(18)** अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन्, व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून **(19)** उलाइ-क लम् यकूनू मुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ ✣ युज़ा-अ़फ़ु लहुमुल् अ़ज़ाबु, मा कानू यस्ततीअ़ूनस्सम्-अ़ व मा कानू युब्सिरून **(20)** उलाइ-कल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून **(21)** ला ज-र-म अन्नहुम्

أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٤
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ
فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝١٥ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦
أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ
قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۗ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۗ وَ
مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٧
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۗ أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ
عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ
أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٨ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۗ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٩ أُولٰٓئِكَ لَمْ
يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
أَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَ
مَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ

✣ व. लाज़िम

फ़िल्-आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून **(22)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अख़्बतू इला रब्बिहिम् उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(23)** म-सलुल्-फ़रीक़ैनि कल्-अअ़्मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअ़ि, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अ-फ़ला तज़क्करून **(24)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही इन्नी लकुम् नज़ीरुम् मुबीन **(25)** अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अलीम **(26)** फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा-क इल्ला ब-शरम् मिस्-लना व मा नराकत्त-ब-अ़-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना बादियर्-रअ्यि व मा नरा लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन **(27)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी रह्म-तम्-मिन् अ़िन्दिही फ़-अ़ुम्मियत् अ़लैकुम्, अनुल्ज़िमुकुमूहा व अन्तुम् लहा कारिहून **(28)** व या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि मालन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लज़ी-न आमनू, इन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून **(29)** व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम्, अ-फ़ला तज़क्करून **(30)** व ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ़्लमुल्-ग़ै-ब व ला अक़ूलु इन्नी म-लकुंव्-व ला अक़ूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ़्युनुकुम् लंय्युअ्ति-यहुमुल्लाहु ख़ैरन्, अल्लाहु अअ़्लमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् इन्नी

الْأَخْسَرُونَ ﴿٢٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا
إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾ مَثَلُ
الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ
مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ
نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٥﴾ أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا
بَشَرًا مِثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ
الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾
قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَانِي
رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنْتُمْ لَهَا
كَارِهُونَ ﴿٢٨﴾ وَيَا قَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى
اللَّهِ ۚ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ إِنَّهُمْ مُلَاقُو رَبِّهِمْ وَلَٰكِنِّي
أَرَاكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾ وَيَا قَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ
طَرَدْتُهُمْ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ
اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ
تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي

इज़ल्-लमिनज़्ज़ालिमीन **(31)** क़ालू या नूहु क़द् जादल्तना फ़-अक्सर्-त जिदालना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(32)** क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन **(33)** व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स-ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग्वि-यकुम्, हु-व रब्बुकुम्, व इलैहि तुर्जअून **(34)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़-अ़लय्-य इज्रामी व अ-न बरीउम्-मिम्मा तुज्रिमून **(35)** ❖

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लंय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द् आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ़्अ़लून **(36)** वस्नअिल्-फ़ुल्-क बिअअ्युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्रक़ून **(37)** व यस्-नअुल्फ़ुल्-क, व कुल्लमा मर्-र अ़लैहि म-लउम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु, क़ा-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़-इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून **(38)** फ़सौ-फ़ तअ्लमू-न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम् मुक़ीम **(39)**

हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु क़ुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अ़लैहिल्-क़ौलु व मन् आम-न, व मा आम-न म-अ़हू इल्ला क़लील **(40)** व क़ालर्-कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(41)** व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि, व नादा नूहु-निब्नहू व

هود ١١ ٢٠٤ وما من دابة ١٢

أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾ قَالُوا يَا نُوحُ قَدْ جَادَلْتَنَا
فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾
قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾ وَ
لَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ
يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِمَّا
تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾ وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ
إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ
الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا
إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِنْ
قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ
كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ
وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٣٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ
التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ
إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ
إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرَاهَا وَمُرْسَاهَا

منزل ٣

का-न फ़ी मअ्ज़िलिंय्-या बुनय्यर्कब् म-अ़ना व ला तकुम् म-अ़ल्- काफ़िरीन (42) क़ा-ल स-आवी इला ज-बलिंय्यअ़सिमुनी मिनल्मा-इ, क़ा-ल ला आ़सिमल्यौ-म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि-म व हा-ल बैनहुमल्-मौजु फ़का-न मिनल्- मुग़्रक़ीन (43) व क़ी-ल या अर्ज़ुब्लई मा-अकि व या समा-उ अक़्लिई व ग़ीज़ल्-मा-उ व क़ुज़ियल्-अम्रु वस्तवत् अ़लल्-जूदिय्यि व क़ी-ल बुअ्दल् लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ◆ (44) व नादा नूहुर्-रब्बहू फ़क़ा-ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अह्ली व इन्-न वअ्-द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (45) क़ा-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अह्लि-क इन्नहू अ़-मलुन् ग़ैरु सालिहिन् फ़ला तस्अल्नि मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नी अअ़िज़ु-क अन् तकू-न मिनल्- जाहिलीन (46) क़ा-ल रब्बि इन्नी अऊज़ु बि-क अन् अस्अ-ल-क मा लै-स ली बिही अ़िल्मुन्, व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम् मिनल्-ख़ासिरीन (47) क़ी-ल या नूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-रकातिन् अ़लै-क व अ़ला उ-ममिम् मिम्-मम्म-अ़-क, व उ-ममुन् सनुमत्तिअ़ुहुम् सुम्-म यमस्सुहुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (48) तिल्-क मिन् अम्बाइल्-ग़ैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअ़्लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा, फ़स्बिर्, इन्नल् आ़क़ि-ब-त लिल्मुत्तक़ीन (49) ❖

اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾ وَهِىَ تَجْرِىْ بِهِمْ فِىْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ
وَنَادٰى نُوْحُ اِبْنَهٗ وَكَانَ فِىْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَىَّ ارْكَبْ مَّعَنَا
وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاٰوِىْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِىْ
مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ
وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ
ابْلَعِىْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِىْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِىَ الْاَمْرُ
وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِىِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَ
نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِىْ مِنْ اَهْلِىْ وَاِنَّ وَعْدَكَ
الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ
اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ
اِنِّىْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّىْۤ اَعُوْذُ بِكَ
اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِىْ وَتَرْحَمْنِىْۤ اَكُنْ مِّنَ
الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ
مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ
مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ

व इला आदिन् अख़ाहुम् हूदन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून **(50)** या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लज़ी फ़-त-रनी, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(51)** व या क़ौमिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-तवल्लौ मुज्रिमीन **(52)** क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बि-बय्यि-नतिंव्-व मा नह्नु बितारिकी आलि-हतिना अ़न् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन **(53)** इन्नक़ूलु इल्लअ्-तरा-क बअ़्ज़ु आलि-हतिना बिसूइन्, क़ा-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून **(54)** मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून **(55)** इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम्, मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम् बिनासि-यतिहा, इन्-न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम **(56)** फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम्, व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूनहू शैअन्, इन्-न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ **(57)** व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ **(58)** व तिल्-क आदुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रुसु-लहू वत्त-बअ़ू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद **(59)** व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या

هود ١١ — ٢٠٦ — وما من دآبة ١٢

هُوْدًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۚ اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى
الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ
تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى
قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا
نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝
اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ۚ قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ
اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ
جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۚ
مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ
قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْئًا ۚ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
حَفِيْظٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَتِلْكَ عَادٌ ۟ جَحَدُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝
وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ عَادًا

منزل ٣

लअ्न-तंव्-व यौमल्-क़ियामति, अला इन्-न आ़दन् क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लिआ़दिन् क़ौमि हूद **(60)** ❖

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ✣ क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, हु-व अन्श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ्म-रकुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी क़रीबुम् मुजीब **(61)** क़ालू या सालिहु क़द् कुन्-त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्-ल हाज़ा अतन्हाना अन्-नअ्बु-द मा यअ्बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूना इलैहि मुरीब **(62)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्म-तन् फ़-मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू, फ़मा तज़ीदू-ननी ग़ै-र तख़्सीर **(63)** व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्खु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीब **(64)** फ़-अ़-क़रूहा फ़क़ा-ल तमत्तअू फ़ी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन्, ज़ालि-क वअ्दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब **(65)** फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव्- वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन्, इन्-न रब्ब-क हुवल् क़विय्युल्- अ़ज़ीज़ **(66)** व अ-ख़ज़ल्लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन **(67)** कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला इन्-न समू-द क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लि-समूद **(68)** ❖

كفروا ربهم الا بعدا لعاد قوم هود ﴿٦٠﴾ والى ثمود اخاهم
صلحا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره هو انشاكم
من الارض واستعمركم فيها فاستغفروه ثم توبوا اليه
ان ربي قريب مجيب ﴿٦١﴾ قالوا يصلح قد كنت فينا مرجوا قبل
هذا اتنهىنا ان نعبد ما يعبد اباؤنا واننا لفي شك مما تدعونا
اليه مريب ﴿٦٢﴾ قال يقوم ارءيتم ان كنت على بينة من
ربي واتىني منه رحمة فمن ينصرني من الله ان عصيته
فما تزيدونني غير تخسير ﴿٦٣﴾ ويقوم هذه ناقة الله لكم اية
فذروها تاكل في ارض الله ولا تمسوها بسوء فياخذكم
عذاب قريب ﴿٦٤﴾ فعقروها فقال تمتعوا في داركم ثلثة
ايام ذلك وعد غير مكذوب ﴿٦٥﴾ فلما جاء امرنا نجينا صلحا
والذين امنوا معه برحمة منا ومن خزي يومئذ ان
ربك هو القوي العزيز ﴿٦٦﴾ واخذ الذين ظلموا الصيحة فاصبحوا
في ديارهم جثمين ﴿٦٧﴾ كان لم يغنوا فيها الا ان ثمودا
كفروا ربهم الا بعدا لثمود ﴿٦٨﴾ ولقد جاءت رسلنا ابرهيم
بالبشرى قالوا سلما قال سلم فما لبث ان جاء بعجل

व ल-क़द् जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् फ़मा लबि-स अन् जा-अ बिअ़िज्लिन् हनीज़ **(69)** फ़-लम्मा रआ ऐदि-यहुम् ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् व औज-स मिन्हुम् ख़ीफ़-तन्, क़ालू ला तख़फ् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत **(70)** वम्र-अतुहू क़ाइ-मतुन् फ़-ज़हिकत् फ़-बश्शर्नाहा बि-इस्हा-क़ व मिंव्वरा-इ इस्हा-क़ यअ़्क़ूब **(71)** क़ालत् या वैलता अ-अलिदु व अ-न अ़जूज़ुंव्-व हाज़ा बअ़्ली शैख़न्, इन्-न हाज़ा लशैउन् अ़जीब **(72)** क़ालू अतअ़्जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि रह्मतुल्लाहि व ब-रकातुहू अ़लैकुम् अह्लल्बैति, इन्नहू हमीदुम्-मजीद **(73)** फ़-लम्मा ज़-ह-ब अ़न् इब्राहीमर्-रौअु व जाअत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत **(74)** इन्-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम् मुनीब **(75)** या इब्राहीमु अअ़्रिज़् अ़न् हाज़ा इन्नहू क़द् जा-अ अम्रु रब्बि-क व इन्नहुम् आतीहिम् अ़ज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद **(76)** व लम्मा जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अ़ंव्-व क़ा-ल हाज़ा यौमुन् अ़सीब **(77)** व जा-अहू क़ौमुहू युह्रअ़ू-न इलैहि, व मिन् क़ब्लु कानू यअ़्मलूनस्-सय्यिआति, क़ा-ल या क़ौमि हा-उला-इ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी, अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद **(78)** क़ालू ल-क़द् अ़लिम्-त मा लना फ़ी बनाति-क मिन् हक़्क़िन् व इन्न-क ल-तअ़्लमु मा नुरीद **(79)** क़ा-ल लौ अन्-न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद **(80)** क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क

حَنِيذٍ ۝ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيْفَةً ۚ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ۝ وَامْرَاَتُهٗ
قَاۤئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَاۤءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ۝
قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ۗ اِنَّ هٰذَا
لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ ۝ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ
بَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ۗ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ فَلَمَّا ذَهَبَ
عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ
لُوْطٍ ۝ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ
عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ
غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ
بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ۝ وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ
اِلَيْهِ ۗ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۗ قَالَ يٰقَوْمِ هٰۤؤُلَاۤءِ
بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ۗ
اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ
بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝ قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ
قُوَّةً اَوْ اٰوِيْۤ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ

लंय्यसिलू इलै-क फ़-अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुन् इल्लम्र-अ-त-क, इन्नहू मुसीबुहा मा असाबहुम्, इन्-न मौअि-दहुमुस्सुब्हु, अलैसस्-सुब्हु बि-क़रीब **(81)** फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहा हिजा-रतम् मिन् सिज्जीलिम्-मन्ज़ूद **(82)** मुसव्व-मतन् अिन्-द रब्बि-क, व मा हि-य मिनज़्ज़ालिमी-न बि-बअ़ीद ● **(83)** ❖

व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअ़ैबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, व ला तन्क़ुसुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा-न इन्नी अराकुम् बिख़ैरिंव्- व इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिम्-मुहीत **(84)** व या क़ौमि औफ़ुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा-न बिल्-क़िस्ति व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(85)** बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न, व मा अ-न अ़लैकुम् बि-हफ़ीज़ **(86)** क़ालू या शुअ़ैबु अ-सलातु-क तअ्मुरु-क अन् नत्रु-क मा यअ्बुदु आबाउना औ अन्-नफ़्अ़-ल फ़ी अम्वालिना मा नशा-उ, इन्न-क ल-अन्तल् हलीमुर्रशीद **(87)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व र-ज़-क़नी मिन्हु रिज़्क़न् ह-सनन्, व मा उरीदु अन् उख़ालि-फ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अ़न्हु, इन् उरीदु इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ़्तु, व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब **(88)** व या क़ौमि ला

لَن يَصِلُوٓا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ
أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَآ أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ
الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً
عِندَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ
شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا تَنقُصُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّيٓ أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ﴿٨٤﴾ وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ وَمَآ أَنَا عَلَيْكُم
بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾ قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ
آبَاؤُنَآ أَوْ أَن نَّفْعَلَ فِيٓ أَمْوَالِنَا مَا نَشَاؤُا إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ
الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾ قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي
وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَآ
أَنْهَاكُمْ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِيٓ
إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿٨٨﴾ وَيَا قَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ

यज्रिमन्नकुम् शिक़ाक़ी अंय्युसी-बकुम् मिस्लु मा असा-ब क़ौ-म नूहिन् औ क़ौ-म हूदिन् औ क़ौ-म सालिहिन्, व मा क़ौमु लूतिम्-मिन्कुम् बि-बअ़ीद **(89)** वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी रहीमुंव्वदूद **(90)** क़ालू या शुअ़ैबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना ज़अ़ीफ़न्, व लौ ला रह्तु-क ल-रजम्ना-क व मा अन्-त अ़लैना बि-अ़ज़ीज़ **(91)** क़ा-ल या क़ौमि अ-रह्ती अ-अ़ज़्ज़ु अ़लैकुम् मिनल्लाहि, वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िहिरय्यन्, इन्-न रब्बी बिमा तअ़्मलू-न मुहीत **(92)** व या क़ौमिअ़्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन्, सौ-फ़ तअ़्लमू-न मंय्यअ़्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन्, वर्तक़िबू इन्नी म-अ़कुम् रक़ीब **(93)** व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुअ़ैबंव्-वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-ख़ा-ज़तिल्-लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन **(94)** कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला बुअ़्दल् लिमद्-य-न कमा बअ़िदत् समूद **(95)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन **(96)** इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़त्तबअ़ू अम्-र फ़िरऔ़-न व मा अम्रु फ़िरऔ़-न बि-रशीद **(97)** यक़्दुमु क़ौमहू यौमल्-क़ियामति फ़औ-र-दहुमुन्ना-र, व बिअ्सल् विर्दुल्-मौरूद **(98)** व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िही लअ़्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति, बिअ्सर्रिफ़्दुल् मर्फ़ूद **(99)** ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अ़लै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद **(100)** व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़मा

شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ
اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ
كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنٰكَ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَاۗءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ
يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ
رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ
مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ
جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ
ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾ اِلٰى
فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ
بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ
الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ
الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا

अग़्नत् अ़न्हुम् आलि-हतुहुमुल्लती यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्-लम्मा जा-अ अम्रु रब्बि-क, व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब **(101)** व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़ज़ल्-क़ुरा व हि-य ज़ालि-मतुन्, इन्-न अख़्ज़हू अलीमुन् शदीद **(102)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल् लिमन् ख़ा-फ़ अ़ज़ाबल्-आख़िरति, ज़ालि-क यौमुम्-मज्मूअ़ुल्-लहुन्नासु व ज़ालि-क यौमुम्-मश्हूद **(103)** व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लि-अ-जलिम् मअ़्दूद **(104)** यौ-म यअ्ति ला तकल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बि-इज़्निही फ़-मिन्हुम् शक़िय्युंव्-व सअ़ीद **(105)** फ़-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व शहीक़ **(106)** ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, इन्-न रब्ब-क फ़अ़्आलुल्लिमा युरीद **(107)** व अम्मल्लज़ी-न सुअ़िदू फ़फ़िल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, अ़ताअन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ **(108)** फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिम्मा यअ़्बुदु हा-उला-इ मा यअ़्बुदू-न इल्ला कमा यअ़्बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु, व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै-र मन्क़ूस **(109)** ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब **(110)** व इन्-न कुल्लल्-लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु-क अअ़्मालहुम्, इन्नहू बिमा यअ़्मलू-न ख़बीर **(111)**

قَآئِمٌ وَّحَصِيدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ
اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
شَىْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿١٠١﴾ وَكَذٰلِكَ
اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ
شَدِيْدٌ ﴿١٠٢﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ذٰلِكَ
يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿١٠٣﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا
لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿١٠٤﴾ يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ فَمِنْهُمْ
شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿١٠٥﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ
وَّشَهِيْقٌ ﴿١٠٦﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿١٠٧﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا
فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾ فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ
هٰٓؤُلَآءِ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِنَّا
لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ
وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ

फ़स्तक़िम् कमा उमिर्-त व मन् ता-ब म-अ़-क व ला ततग़ौ, इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर (112) व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ़-तमस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (113) व अक़िमिस्सला-त त-र-फ़यिन्नहारि व ज़ु-लफ़म् मिनल्लैलि, इन्नल्-ह-सनाति युज़्हिब्नस्- सय्यिआति, ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन (114) वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअ़ु अज्रल्-मुह्सिनीन (115) फ़लौ ला का-न मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौ-न अ़निल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि इल्ला क़लीलम् मिम्-मन् अन्जैना मिन्हुम् वत्त-बअ़ल्लज़ी-न ज़-लमू मा उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन (116) व मा का-न रब्बु-क लियुह्लिकल्- क़ुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा मुस्लिहून (117) व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अ़लन्ना-स उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व ला यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन (118) इल्ला मर्रहि-म रब्बु-क, व लिज़ालि-क ख़ा-ल-क़हुम्, व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअ़ीन (119) व कुल्लन् नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआद-क व जाअ-क फ़ी हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौअ़ि-ज़तुंव्-व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (120) व क़ुल् लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनूनअ्मलू अ़ला मकानतिकुम्, इन्ना आमिलून (121) वन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (122) व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व

اَعْمَالَهُمْ ۭ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا ۭ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ
ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ
الَّيْلِ ۭ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّـيِّاٰتِ ۭ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿١١٤﴾
وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾ فَلَوْلَا كَانَ
مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ
فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى
بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾ وَلَوْ شَاۗءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۭ
وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۭ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ
الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَاۗءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ
مَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا
عَلٰي مَكَانَتِكُمْ ۭ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ

इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्बुद्हु व तवक्कल् अ़लैहि, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून (123) ❖

12 सूरतु यूसुफ़ 53

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7411 अक्षर, 1808 शब्द 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबिल् मुबीन (1) इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (2) नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क अह्स-नल्-क़-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-क़ुर्आ-न व इन् कुन्-त मिन् क़ब्लिही लमिनल्-ग़ाफ़िलीन (3) इज़् क़ा-ल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी रऐतु अ-ह-द अ़-श-र कौकबंव्-वश्शम्-स वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (4) क़ा-ल या बुनय्-य ला तक़्सुस् रुअ्या-क अ़ला इख़्वति-क फ़-यकीदू ल-क कैदन्, इन्नश्शैता-न

غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ
وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الۤرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ
اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ
رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا
عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ
لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ اِذْ قَالُوْا
لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ اِنَّ اَبَانَا
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِۨ اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ
وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ قَالَ قَاۗىِٕلٌ

लिल्इन्सानि अ़दुव्वुम् मुबीन (5) व कज़ालि-क यज्तबी-क रब्बु-क व युअ़ल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्- अहादीसि व युतिम्मु निअ़्म-तहू अ़लै-क व अ़ला आलि यअ़्क़ू-ब कमा अ-तम्महा अ़ला अ-बवै-क मिन् क़ब्लु इब्राही-म व इस्हा-क़, इन्-न रब्ब-क अ़लीमुन् हकीम (6) ❖

ल-क़द् का-न फ़ी यूसु-फ़ व इख़्वतिही आयातुल् लिस्सा-इलीन (7) इज़् क़ालू
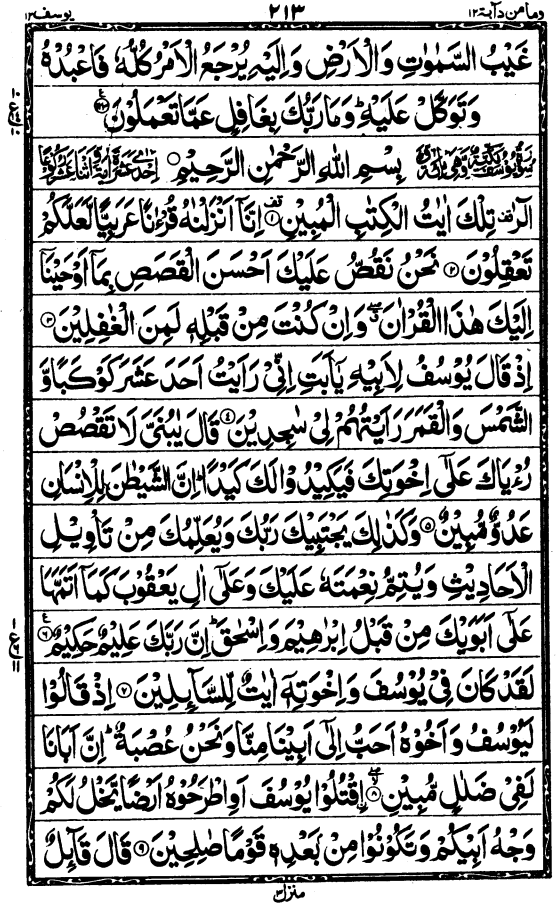
ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु अ़ुस्बतुन्, इन्-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(8)** उक़्तुलू यूसु-फ़ अविख़्रहूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्-बअ़्दिही क़ौमन् सालिहीन **(9)** क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् ला तक़्तुलू यूसु-फ़ व अल्क़ूहु फ़ी ग़या-बतिल्-जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ़्ज़ुस्सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन **(10)** क़ालू या अबाना मा ल-क ला तअ्मन्ना अ़ला यूसु-फ़ व इन्ना लहू लनासिहून **(11)** अर्सिल्हु म-अ़ना ग़दंय्-यर्तअ़् व यल्अ़ब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून **(12)** क़ा-ल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कु-लहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अ़न्हु ग़ाफ़िलून **(13)** क़ालू ल-इन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु अ़ुस्बतुन् इन्ना इज़ल्-लख़ासिरून **(14)** फ़-लम्मा ज़-हबू बिही व अज्मअ़ू अंय्यज्-अ़लूहु फ़ी ग़या-बतिल्-जुब्बि व औहैना इलैहि लतुनब्बि-अन्नहुम् बिअम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश्अ़ुरून **(15)** व जाऊ अबाहुम् अ़िशाअंय्-यब्कून **(16)** क़ालू या अबाना इन्ना ज़हब्ना नस्तबिक़ु व तरक्ना यूसु-फ़ अ़िन्-द मताअ़िना फ़-अ-क-लहुज़्-ज़िअ्बु व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन ▲ **(17)** व जाऊ अ़ला क़मीसिही बि-दमिन् कज़िबिन्, क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, वल्लाहुल्-मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून **(18)** व जाअत् सय्यारतुन् फ़-अर्सलू वारि-दहुम् फ़-अद्ला दल्वहू, क़ा-ल या बुश्रा हाज़ा ग़ुलामुन्, व अ-सर्रूहु बिज़ा-अ़तन्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यअ़्मलून **(19)** व शरौहु बि-स-मनिम् बख़्सिन् दराहि-म

يوسف ١٢ ٢١٤ ومامن دآبة ١٢

مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ
السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ﴿١٠﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ
يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ﴿١١﴾ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ
وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿١٢﴾ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ
أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ﴿١٣﴾ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ
الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿١٤﴾ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَ
أَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم
بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾
قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَاعِنَا
فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾
وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾
وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ
هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَ
شَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾
وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ

منزل ٣

मअ्दू-दतिन् व कानू फ़ीहि मिनज़्ज़ाहिदीन (20) ❖

व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्-मिस्-र लिम्र-अतिही अक्रिमी मस्वाहु अ़सा अंय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदन्, व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि व लिनुअ़ल्लि-महू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि, वल्लाहु ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (21) व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन्, व काज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (22) व रा-वदत्हुल्लती हु-व फ़ी बैतिहा अ़न् नफ़्सिही व ग़ल्ल-क़तिल्- अब्वा-ब व क़ालत् है-त ल-क, क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी अह्स-न मस्वा-य, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (23) व ल-क़द् हम्मत् बिही व हम्-म बिहा लौ ला अर्-रआ बुर्हा-न रब्बिही, कज़ालि-क लिनस्रि-फ़ अ़न्हुस्सू-अ वल्- फ़ह्शा-अ, इन्नहू मिन् अ़िबादिनल् मुख़्लसीन (24) वस्त-बक़ल्बा-ब व क़द्दत् क़मी-सहू मिन् दुबुरिंव्-व अल्फ़या सय्यि-दहा लदल्-बाबि, क़ालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज-न औ अ़ज़ाबुन् अलीम (25) क़ा-ल हि-य रा-वदत्नी अ़न्-नफ़्सी व शहि-द शाहिदुम् मिन् अह्लिहा इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् क़ुबुलिन् फ़-स-दक़त् व हु-व मिनल्-काज़िबीन (26) व इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् फ़-क-ज़बत् व हु-व मिनस्सादिक़ीन (27) फ़-लम्मा रआ क़मी-सहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् क़ा-ल इन्नहू मिन् कैदिकुन्-न, इन्-न कै-दकुन्-न अ़ज़ीम (28) यूसुफ़ु अअ्रिज़् अ़न् हाज़ा वस्तग़्फ़िरी

وما من دآبة ١٢ — ٢١٥ — يوسف ١٢

أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ
وَلِنُعَلِّمَهُ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ
وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا
وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾ وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي
بَيْتِهَا عَن نَّفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ
مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾
وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَن رَّأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ كَذَٰلِكَ
لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِن دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا
الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَن يُسْجَنَ أَوْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَن نَّفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِّنْ أَهْلِهَا إِن كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِن قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ
مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِن كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِن دُبُرٍ فَكَذَبَتْ
وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِن دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ
مِن كَيْدِكُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَٰذَا ۚ
وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكِ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ

منزل ٣

लिज़म्बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्-ख़ातिईन (29) ❖

व क़ा-ल निस्वतुन् फ़िल्-मदीनतिम्र-अतुल्-अ़ज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अ़न्-नफ़्सिही क़द् श-ग़-फ़हा हुब्बन्, इन्ना ल-नराहा फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (30) फ़-लम्मा समिअ़त् बिमक्रिहिन्-न अर्-सलत् इलैहिन्-न व अअ़्त-दत् लहुन्-न मुत्त-कअंव्-व आतत् कुल्-ल वाहि-दतिम् मिन्हुन्-न सिक्कीनंव्-व क़ालतिख़्रुज् अ़लैहिन्-न फ़-लम्मा रऐ-नहू अक्बर्-नहू व क़त्तअ़्-न ऐदियहुन्-न व क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा हाज़ा ब-शरन्, इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (31) क़ालत् फ़ज़ालिकुन्नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि, व ल-क़द् रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही फ़स्तअ़्-स-म, व ल-इल्लम् यफ़्अ़ल् मा आमुरुहू लयुस्ज-नन्-न व ल-यकूनम् मिनस्साग़िरीन (32) क़ा-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्अ़ू-ननी इलैहि व इल्ला तस्रिफ़् अ़न्नी कैदहुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम् मिनल्-जाहिलीन (33) फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ़-स-र-फ़ अ़न्हु कैदहुन्-न, इन्नहू हुवस्-समीअ़ुल्-अ़लीम (34) सुम्-म बदा लहुम् मिम्-बअ़्दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन (35) ❖

وما من دآبة ١٢ ٢١٦ يوسف ١٢

في المدينة امرات العزيز تراود فتىها عن نفسه قد شغفها
حبا انا لنرىها في ضلل مبين ۝ فلما سمعت بمكرهن ارسلت
اليهن واعتدت لهن متكا واتت كل واحدة منهن سكينا
وقالت اخرج عليهن فلما راينه اكبرنه وقطعن ايديهن
وقلن حاش لله ما هذا بشرا ان هذا الا ملك كريم ۝ قالت
فذلكن الذي لمتنني فيه ولقد راودته عن نفسه
فاستعصم ولئن لم يفعل ما امره ليسجنن وليكونا من
الصغرين ۝ قال رب السجن احب الي مما يدعونني اليه
والا تصرف عني كيدهن اصب اليهن واكن من الجهلين ۝
فاستجاب له ربه فصرف عنه كيدهن انه هو السميع
العليم ۝ ثم بدا لهم من بعد ما راوا الايت ليسجننه حتى
حين ۝ ودخل معه السجن فتين قال احدهما اني ارىني
اعصر خمرا وقال الاخر اني ارىني احمل فوق راسي خبزا
تاكل الطير منه نبئنا بتاويله انا نرىك من المحسنين ۝
قال لا ياتيكما طعام ترزقنه الا نباتكما بتاويله قبل ان
ياتيكما ذلكما مما علمني ربي اني تركت ملة قوم

منزل ٣

व द-ख़-ल म-अ़हुस्सिज्-न फ़-तयानि, क़ा-ल अ-हदुहुमा इन्नी अरानी अअ़्सिरु ख़म्रन् व क़ालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह्मिलु फ़ौ-क़ रअ़्सी ख़ुब्ज़न् तअ्कुलुत्तैरु मिन्हु, नब्बिअ़्ना बितअ्वीलिही इन्ना नरा-क मिनल्मुह्सिनीन (36) क़ा-ल ला यअ्तीकुमा तआ़मुन्

तुर्ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्तुकुमा बितअ्वीलिही क़ब्-ल अंय्यअ्ति-यकुमा, ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल-मनी रब्बी, इन्नी तरक्तु मिल्ल-त क़ौमिल् ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून **(37)** वत्तबअ्तु मिल्ल-त आबाई इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब, मा का-न लना अन् नुश्रि-क बिल्लाहि मिन् शैइन्, ज़ालि-क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अ़लैना व अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून **(38)** या साहि-बयिस्सिज्नि अ-अर्बामुम् मु-तफ़र्रिक़ू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल् वाहिदुल्-क़ह्हार **(39)** मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ-म-र अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून **(40)** या साहि-बयिस्सिज्नि अम्मा अ-हदुकुमा फ़-यस्क़ी रब्बहू ख़म्रन् व अम्मल्-आख़रु फ़युस्-लबु फ़-तअ्कुलुत्-तैरु मिर्रअ्सिही, क़ुज़ियल्-अम्रुल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान **(41)** व क़ा-ल लिल्लज़ी ज़न्-न अन्नहू नाजिम् मिन्हुमज़्कुर्नी अिन्-द रब्बि-क, फ़अन्साहुश्शैतानु ज़िक्-र रब्बिही फ़-लबि-स फ़िस्सिज्नि बिज़्-अ़ सिनीन **(42)** ❖

व क़ालल्-मलिकु इन्नी अरा सब्-अ़ ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव्-व सब्-अ़ सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिन्, या अय्युहल् म-लउ

لَا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ
اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ
بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ
مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا
اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ
خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ
قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾ وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ
نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ
فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ
بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْبُلٰتٍ خُضْرٍ
وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ
لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ

अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्बुरून **(43)** क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल्-अह्लामि बिआ़लिमीन **(44)** व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अ-न उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़-अर्सिलून **(45)** यूसुफ़ु अय्युहस्-सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव्-व सब्अि सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिल्-लअ़ल्ली अर्जिअु इलन्नासि लअ़ल्लहुम् यअ्लमून **(46)** क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ सिनी-न द-अबन् फ़मा हसत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तअ्कुलून **(47)** सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल्-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम् मिम्मा तुह्सिनून **(48)** सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क आ़मुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ्सिरून **(49)** ❖

व क़ालल् मलिकुअ्तूनी बिही फ़-लम्मा जा-अहुर्रसूलु क़ालर्जिअ् इला रब्बि-क फ़स्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्--लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न, इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अ़लीम **(50)** क़ा-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन्-न यूसु-फ़ अ़न् नफ़्सिही, क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा अ़लिम्ना अ़लैहि मिन् सूइन्, क़ालतिम्र-अतुल्-अ़ज़ीज़िल्-आ-न हस्ह-सल्हक़्क़ु, अ-न रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन **(51)** ज़ालि-क लि-यअ्ल-म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्-ख़ाइनीन **(52)**

الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِىْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ
اَفْتِنَا فِىْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ لَّعَلِّىْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا فَمَا
حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِىْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ
يَاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ
لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ
ائْتُوْنِىْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ
فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِىْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ
رَبِّىْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ
عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ
قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ
عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّىْ
لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

तेरहवाँ पारः व मा उबर्रिउ

सूरतु यूसुफ़ (आयत 53 से 111)

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़्-स ल-अम्मा-रतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी, इन्-न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम (53) व कालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़-लम्मा कल्ल-महू का-ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन (54) कालजूअल्नी अला ख़ज़ाइनिल्-अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम (55) व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ फ़िल्अर्ज़ि य-तबव्वउ मिन्हा हैसु यशा-उ, नुसीबु बि रह्मतिना मन्-नशा-उ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (56) व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (57) ❖

व जा-अ इख़्वतु यूसु-फ फ़-द-ख़लू अ़लैहि फ़-अ़-र-फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून (58) व लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् क़ालअ्तूनी बि-अख़िल-लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ-न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अ-न ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (59) फ़-इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अिन्दी व ला तक़्रबून (60) क़ालू सनुराविदु अ़न्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअिलून (61) व का-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अ़लू बिज़ा-अ़-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् लअ़ल्लहुम् यअ्रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (62) फ़-लम्मा र-जअू इला अबीहिम् क़ालू या अबाना मुनि-अ़ मिन्नल्कैलु फ़-अर्सिल् म-अ़ना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू

يوسف ١٢ ٢١٩ وما أبرئ ١٣

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِىٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىٓ ۚ إِنَّ رَبِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ ٱلْمَلِكُ ٱئْتُونِى بِهِۦٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِى ۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ ٱجْعَلْنِى عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلْأَرْضِ ۖ إِنِّى حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِى ٱلْأَرْضِ يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ۚ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَن نَّشَآءُ ۖ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَأَجْرُ ٱلْءَاخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَكَانُوا۟ يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾ وَجَآءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا۟ عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ٱئْتُونِى بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّىٓ أُوفِى ٱلْكَيْلَ وَأَنَا۠ خَيْرُ ٱلْمُنزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِى بِهِۦ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِى وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾ قَالُوا۟ سَنُرَٰوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَٰعِلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفِتْيَٰنِهِ ٱجْعَلُوا۟ بِضَٰعَتَهُمْ فِى رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَآ إِذَا ٱنقَلَبُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَبِيهِمْ قَالُوا۟ يَٰٓأَبَانَا مُنِعَ مِنَّا ٱلْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَآ أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ ءَامَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَآ أَمِنتُكُمْ عَلَىٰٓ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۖ فَٱللَّهُ

منزل ٣

❖ रु. 7/8/1

लहाफ़िज़ून **(63)** क़ा-ल हल् आमनुकुम् अ़लैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अ़ला अख़ीहि मिन् क़ब्लु, फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव्-व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन **(64)** व लम्मा फ़-तहू मता-अ़हुम् व-जदू बिज़ाअ़-तहुम् रुद्दत् इलैहिम्, क़ालू या अबाना मा नब्ग़ी, हाज़िही बिज़ा-अ़तुना रुद्दत् इलैना व नमीरु अह्लना व नह्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बअ़ीरिन्, ज़ालि-क कैलुंय्यसीर **(65)** क़ा-ल लन् उर्सि-लहू म-अ़कुम् हत्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् फ़-लम्मा आतौहु मौसि-क़हुम् क़ालल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील **(66)** व क़ा-ल या बनिय्-य ला तद्ख़ुलू मिम्-बाबिंव्-वाहिदिंव्- वद्ख़ुलू मिन् अब्वाबिम् मु-तफ़र्रि-क़तिन्, व मा उग़्नी अ़न्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व अ़लैहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मु-तवक्किलून **(67)** व लम्मा द-ख़लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम्, मा का-न युग़्नी अ़न्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हा-जतन् फ़ी नफ़्सि यअ़्क़ू-ब क़ज़ाहा, व इन्नहू लज़ू अ़िल्मिल्-लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून **(68)** ❖

वमآ أبرئ ١٣ ٢٢٠ يوسف ١٢

خَيْرٌ حٰفِظًا ۖ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ
وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ۗ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ
بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ
بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ
مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ
مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ
لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ
وَمَاۤ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ
اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً
فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ
مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا
تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ

منزل

व लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अख़ाहु क़ा-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ़्मलून **(69)** फ़-लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् ज-अ़लस्सिक़ाय-त फ़ी रह़्लि अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-अ़ीरु इन्नकुम् लसारिक़ून **(70)** क़ालू व अक़्बलू अ़लैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून **(71)** क़ालू नफ़्क़िदु सुवाअ़ल्-मलिकि व लिमन्

जा-अ बिही हिम्लु बओ़रिव्-व अ-न बिही ज़ओ़म (72) क़ालू तल्लाहि ल-क़द् अ़लिम्तुम् मा जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन (73) क़ालू फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन (74) क़ालू जज़ाउहू मंव्वुजि-द फ़ी रह्लिही फ़हु-व जज़ाउहू, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (75) फ़-ब-द-अ बिऔअि-यतिहिम् क़ब्-ल विआ़-इ अख़ीहि सुम्मस्तख़्र-जहा मिंव्विआ़-इ अख़ीहि, कज़ालि-क किद्ना लियूसु-फ़, मा का-न लियअ्खु-ज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्-मलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु, नरफ़उ द-रजातिम् मन्-नशा-उ, व फ़ौ-क़ कुल्लि ज़ी अ़िल्मिन् अ़लीम (76) क़ालू इंय्यस्रिक़् फ़-क़द् स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन् क़ब्लु, फ़-असर्रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् क़ा-ल अन्तुम् शर्रुम्-मकानन् वल्लाहु अअ्लमु बिमा तसिफ़ून (77) क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु इन्-न लहू अबन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़् अ-ह-दना मकानहू इन्ना नरा-क मिनल्- मुह्सिनीन (78) क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि अन् नअ्ख़ु-ज़ इल्ला मंव्व-जद्ना मता-अ़ना अ़िन्दहू इन्ना इज़ल्-लज़ालिमून (79) ❖

وَاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ
وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا
جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا
مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ
فِىْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَ
فَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ
لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ
اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ
لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾
قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ
اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ
اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ
قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِىْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِىْۤ
اَبِىْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِىْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ
فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا

ع ١١/٣

फ़लम्मस्तै-असू मिन्हु ख़ा-लसू नजिय्यन्, क़ा-ल कबीरुहुम् अलम् तअ्लमू अन्-न अबाकुम् क़द् अ-ख़-ज़ अ़लैकुम् मौसिक़म्-मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु-फ़ फ़-लन् अब्र-हल्-अर्-ज़ हत्ता यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन (80) इर्जिअू इला अबीकुम् फ़क़ूलू या अबाना इन्नब्न-क स-र-क़, व मा शहिद्ना

इल्ला बिमा अ़लिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन **(81)** वस्अलिल्-क़र्-य-तल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्ओ़रल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा, व इन्ना लसादिक़ून **(82)** क़ा-ल बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, अ़सल्लाहु अंय्यअ्ति-यनी बिहिम् जमीअ़न्, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम **(83)** व तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा अ़ला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्-हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम **(84)** क़ालू तल्लाहि तफ़्तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ हत्ता तकू-न ह-रज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन **(85)** क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून **(86)** या बनिय्यज़्हबू फ़-तहस्ससू मिंय्यूसु-फ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्रौहिल्लाहि, इन्नहू ला यै-असू मिर्रौहिल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-काफ़िरून **(87)** फ़-लम्मा द-ख़लू अ़लैहि क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु मस्सना व अह्ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ा-अ़तिम्-मुज़्जातिन् फ़औफ़ि लनल्कै-ल व तसद्दक् अ़लैना, इन्नल्ला-ह यज्ज़िल् मु-तसद्दिक़ीन **(88)** क़ा-ल हल् अ़लिम्तुम् मा फ़अ़ल्तुम् बियूसु-फ़ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून **(89)** क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफ़ु, क़ा-ल अ-न यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी, क़द् मन्नल्लाहु अ़लैना, इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन **(90)** क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-रकल्लाहु अ़लैना व इन् कुन्ना लख़ातिईन **(91)** क़ा-ल ला तस्री-ब

كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ
الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ۭ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ
جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى
عَلٰي يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾
قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ
تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ
اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا
مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ
مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا
يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ
فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾
قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾
قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ۭ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ۡ قَدْ
مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۭ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا

अ़लैकुमुल्-यौ-म, यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (92) इज़्हबू बि-क़मीसी हाज़ा फ़अल्क़ूहु अ़ला वज्हि-अबी यअ्ति बसीरन् वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मअ़ीन (93) ❖

व लम्मा फ़-स-लतिल्-ओ़रु क़ा-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ़ लौ ला अन् तुफ़न्निदून (94) क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम ◆ (95) फ़-लम्मा अन् जाअल्-बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वज्हिही फ़र्तद्-द बसीरन्, क़ा-ल अलम् अक़ुल् लकुम् इन्नी अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून (96) क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (97) क़ा-ल सौ-फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (98) फ़-लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अ-बवैहि व क़ालद्ख़ुलू मिस्-र इन्शा-अल्लाहु आमिनीन (99) व र-फ़-अ अ-बवैहि अ़लल्- अ़र्शि व ख़र्रू लहू सुज्जदन् व क़ा-ल या अ-बति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्या-य मिन् क़ब्लु, क़द् ज-अ़-लहा रब्बी हक़्क़न्, व क़द् अह्स-न बी इज़् अख़्र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्-बअ़्दि अन् न-ज़ग़श्शैतानु बैनी व बै-न इख़्वती, इन्-न रब्बी लतीफ़ुल्लिमा यशा-उ, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (100) रब्बि क़द् आतैतनी मिनल्मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल्- अहादीसि फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्-त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन (101)

لَخٰطِئِيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ
اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ
اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾
قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ
اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ
اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ
اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ
ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى
الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ
مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ
مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ
بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا

ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहि इलै-क व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् अज्मअ़ू अम्रहुम् व हुम् यम्कुरून **(102)** व मा अक्सरुन्नासि व लौ हरस्-त बिमुअ्मिनीन **(103)** व मा तस्अलुहुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आ़लमीन **(104)** ❖

व क-अय्यिम्-मिन् आयतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू-न अ़लैहा व हुम् अ़न्हा मुअ्रिज़ून **(105)** व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून **(106)** अ-फ़-अमिनू अन् तअ्ति-यहुम् ग़ाशि-यतुम् मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि औ तअ्ति-यहुमुस्साअ़तु बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(107)** क़ुल् हाज़िही सबीली अद्अू इलल्लाहि, अ़ला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब-
-अ़नी, व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन **(108)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्क़ुरा, अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुल्-लिल्लज़ीनत्तक़ौ, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(109)** हत्ता इज़स्तै-असर्-रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना फ़नुज्जि-य मन् नशा-उ, व ला युरद्दु बअ्सुना अ़निल् क़ौमिल्-मुज्रिमीन **(110)** ल-क़द् का-न फ़ी क़-ससिहिम् अ़िब्रतुल्-लिउलिल्-अल्बाबि, मा का-न हदीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(111)** ❖

يوسف ١٢ ٢٢٤ وما ابرئ ١٣

وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ
اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا
اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ
بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ
اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ
عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾
قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ
اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ
اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٩﴾
حَتّٰٓى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا
جَآءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾ لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ

منزل ٣

13 सूरतुर्-रअ्दि 96

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 3614 अक्षर, 863 शब्द, 43 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

आलिफ़्-लाम्-मीम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबि, वल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (1) अल्लाहुल्लज़ी र-फ़अ़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, युदब्बिरुल्-अम्-र युफ़स्सिलुल्- आयाति लअ़ल्लकुम् बिलिक़ा-इ रब्बिकुम् तूक़िनून (2) व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य व अन्हारन्, व मिन् कुल्लिस्स-मराति ज-अ़-ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल्लैलन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (3) व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-तअुम् मु-तजाविरातुंव्-व जन्नातुम्-मिन् अअ्नाबिंव्-व ज़र्अुंव्-व नख़ीलुन् सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहिदिन्, व नुफ़ज़्ज़िलु बअ्ज़हा अ़ला बअ्ज़िन् फ़िल्उकुलि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (4) व इन् तअ्जब् फ़-अ़-जबुन् क़ौलुहुम् अ-इज़ा कुन्ना तुराबन् अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् व उलाइकल्-अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् व उलाइ-क

مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

سُورَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَأَرْبَعُونَ آيَةً سِتُّ رُكُوعَاتٍ

الٓمٓرٰ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۗ وَالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُم بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾ وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣﴾ وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجَاوِرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾ وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ

अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(5)** व यस्तअ्जिलून-क बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-सनति व क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिमुल्-मसुलातु, व इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिल् लिन्नासि अ़ला ज़ुल्मिहिम् व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अ़िक़ाब **(6)** व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही, इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि क़ौमिन् हाद **(7)** ❖

अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दादु, व कुल्लु शैइन् अ़िन्दहू बिमिक़्दार **(8)** आ़लिमुल्- ग़ैबि वश्शहादतिल् कबीरुल्-मु-तआ़ल **(9)** सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम् बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार **(10)** लहू मुअ़क़्क़िबातुम् मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम्, व इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म-रद्-द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल **(11)** हुवल्लज़ी युरीकुमुल्- बर्-क़ ख़ौफ़ंव्-व त-म-अंव्-व युन्शिउस्- सहाबस्- सिक़ाल **(12)** व युसब्बिहुर्रअ्दु बिहम्दिही वल्मलाइ-कतु मिन् ख़ीफ़तिही व युर्सिलुस्सवाअि-क़ फ़युसीबु बिहा मंय्यशा-उ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि व हु-व शदीदुल्- मिहाल **(13)** लहू दअ्वतुल्-हक़्क़ि, वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम् बिशैइन् इल्ला

وما أبرئ ١٣ ٢٢٦ الرعد ١٣

فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٥﴾ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلَٰتُ ۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ
عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّنْ رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ ۖ وَ
لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾ ع اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ
الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ﴿٨﴾ عَٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَٰدَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾ سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ
الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ
بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾ لَهُ مُعَقِّبَٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ
مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا
بِأَنْفُسِهِمْ ۗ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ﴿١١﴾ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَ
طَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿١٢﴾ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ
وَالْمَلَٰئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا
مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَٰدِلُونَ فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾ لَهُ
دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ

منزل ٣

❖ रु. 1/7/7

कबासिति कफ़्फ़ैहि इललू-मा-इ लियब्लु-ग़ फ़ाहु व मा हु-व बिबालिग़िही, व मा दुआ़उल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल **(14)** व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअ़ंव्-व कर्हंव्-व ज़िलालुहुम् बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसाल ❑ **(15)** क़ुल् मर्रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़ुलिल्लाहु, क़ुल् अ-फ़त्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिही औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् नफ़्अंव्-व ला ज़र्रन्, क़ुल् हल् यस्तविल्-अअ़्मा वल्बसीरु अम् हल् तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु, अम् ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लक़ू क-ख़ल्क़िही फ़-तशाबहल्-ख़ल्क़ु अ़लैहिम्, क़ुलिल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हुवल् वाहिदुल्-क़ह्हार **(16)** अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़सालत् औदि-यतुम् बि-क़-दरिहा फ़ह्त-मलस्सैलु ज़-बदर्-राबियन्, व मिम्मा यूक़िदू-न अ़लैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ हिल्यतिन् औ मताअ़िन् ज़-बदुम्- मिस्लुहू, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल्-हक़्-क़ वल्बाति-ल, फ़-अम्मज़्ज़-बदु फ़-यज़्हबु जुफ़ा-अन् व अम्मा मा यन्फ़अ़ुन्ना-स फ़यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि, कज़ालि-क याज़्रिबुल्लाहुल्-अम्साल **(17)** लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल्-हुस्ना, वल्लज़ी-न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही, उलाइ-क लहुम् सूउल्-हिसाबि व मअ्वाहुम् ज-हन्नमु, व बिअ्सल्-मिहाद ● **(18)** ❖

بِشَیْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَ
مَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ قُلْ
مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ
يَسْتَوِی الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِی الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ
اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۱۶﴾ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا
رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِی النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ
فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِی الْاَرْضِ ؕ
كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ﴿۱۷﴾ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِی الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ
مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ

अ-फ़मंय्यअ्लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु क-मन् हु-व अअ्मा, इन्नमा य-तज़क्करु उलुल्-अल्बाब **(19)** अल्लज़ी-न यूफ़ू-न बिअ़ह्दिल्लाहि व ला यन्क़ुज़ूनल्-मीसाक़ **(20)** वल्लज़ी-न यसिलू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व यख़ाफ़ू-न सूअल्-हिसाब **(21)** वल्लज़ी-न स-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-यतंव्-व यद्रऊ-न बिल्ह-स-नतिस्सय्यि-अ-त उलाइ-क लहुम् अ़ुक़्बद्दार **(22)** जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलू-नहा व मन् स-ल-ह मिन् आबइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् वल्मलाइ-कतु यद्ख़ुलू-न अ़लैहिम् मिन् कुल्लि बाब **(23)** सलामुन् अ़लैकुम् बिमा सबर्तुम् फ़निअ्-म अ़ुक़्बद्दार **(24)** वल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अ़ह्दल्लाहि मिम्-बअ्दि मीसाक़िही व यक़्तअ़ू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ-क लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार **(25)** अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, व फ़रिहू बिल्हयातिद्दुन्या, व मल्हयातुद्दुन्या फ़िल्-आख़िरति इल्ला मताअ़् **(26)** ❖

व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मन् अनाब **(27)** अल्लज़ी-न आमनू व तत्मइन्नु

رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۭ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِيْنَ
يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ
مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْۗءَ
الْحِسَابِ ﴿٢١﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَاۗءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ
وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ
فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ
بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾
اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ
يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿٢٧﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ
قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ۭ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿٢٨﴾ الَّذِيْنَ

क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिल्लाहि, अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब **(28)** अल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब **(29)** कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहा उ-ममुल्-लितत्लु-व अ़लैहिमुल्लज़ी औहैना इलै-क व हुम् यक्फ़ुरू-न बिर्रह्मानि, क़ुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब **(30)**

व लौ अन्-न क़ुर्आनन् सुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्तिअ़त् बिहिल्-अर्-ज़ु औ कुल्लि-म बिहिल्मौता, बल् लिल्लाहिल्-अम्रु जमीअ़न्, अ-फ़लम् यै-असिल्लज़ी-न आमनू अल्-लौ यशाउल्लाहु ल-हदन्ना-स जमीअ़न्, व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स-नअ़ू क़ारि-अ़तुन् औ तहुल्लु क़रीबम् मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति-य वअ़्दुल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआ़द **(31)** ❖

व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अम्लैतु लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम्-म अख़ज़्तुहुम्, फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब **(32)** अ-फ़-मन् हु-व क़ाइमुन् अ़ला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ, क़ुल् सम्मूहुम् अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ़्लमु फ़िल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्क़ौलि, बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू अ़निस्सबीलि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद **(33)** लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशक़्क़ु व मा लहुम्

الرعد ١٣ ٢٢٩ وما أبرئ ١٣

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ﴿٢٩﴾ كَذٰلِكَ
أَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ أُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ
الَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ
لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ أَنَّ قُرْاٰنًا
سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ
لِّلّٰهِ الْأَمْرُ جَمِيْعًا ؕ أَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ
لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ
بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَأْتِيَ
وَعْدُ اللّٰهِ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ
مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ أَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۚ
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ أَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي
الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ

منزل ٣

मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (34) म-सलुल्- जन्नतिल्लती वुअिदल्-मुत्तक़ू-न, तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, उकुलुहा दाइमुंव्-व ज़िल्लुहा, तिल्-क अुक़्बल्लज़ीनत्तक़ौ व उक़्बल् काफ़िरीनन्नार (35) वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ्ज़हू, क़ुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क बिही, इलैहि अद्अू व इलैहि मआब (36) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ़-रबिय्यन्, व ल-इनित्त-बअ्-त अह्वा-अहुम् बअ्-द मा जाअ-क मिनल्-अिल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला वाक़ (37) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम् मिन् क़ब्लि-क व जअ़ल्ना लहुम् अज़्वाजंव्-व ज़ुर्रिय्य-तन्, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, लिकुल्लि अ-जलिन् किताब (38) यम्हुल्लाहु मा यशा-उ व युस्बितु व अिन्दहू उम्मुल्-किताब (39) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ु व अ़लैनल्-हिसाब (40) अ-व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, वल्लाहु यह्कुमु ला मुअ़क़्क़ि-ब लिहुक्मिही, व हु-व सरीअुल्-हिसाब (41) व क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल्-मक्रु जमीअ़न्, यअ्लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन्, व स-यअ्लमुल्-कुफ़्फ़ारु लिमन् अुक़्बद्दार (42) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लस्-त मुर्सलन्,

الْمُتَّقُونَ ۖ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا ۚ تِلْكَ
عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوا ۖ وَّعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِينَ
آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ ۖ وَمِنَ الْأَحْزَابِ
مَن يُنكِرُ بَعْضَهُ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ
بِهِ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُو وَإِلَيْهِ مَآبِ ﴿٣٦﴾ وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ حُكْمًا
عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَمَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا
مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ
أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾ يَمْحُو اللَّهُ
مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾ وَإِن مَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ
وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا
مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ
يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى
الدَّارِ ﴿٤٢﴾ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ

(तफ़सीर पृष्ठ 452) 1. क्योंकि उसको क़बूल करने की क़ुदरत है।

2. पस जिस तरह पानी उनकी दरख़्वास्त क़बूल करने से आजिज़ है इसी तरह उनके माबूद आजिज़ हैं। अगर वे माबूद रूह वाले नहीं हैं तब तो बेबसी ज़ाहिर है, और अगर रूह वाले हैं तब भी क़ादिरे हक़ीक़ी यानी अल्लाह पाक के सामने आजिज़ हैं।

3. ख़ुशी से यह कि अपने इख़्तियार से इबादत करते हैं और मजबूरी के यह मायने हैं कि अल्लाह तआ़ला जिस मख़्लूक़ में जो तसर्रुफ़ करना चाहते हैं वह उसकी मुख़ालफ़त नहीं कर सकता।

4. यानी रब्बे क़दीर साये को जितना चाहे बढ़ाए, जितना चाहे घटाए। और सुबह व शाम के वक़्त चूँकि उनका घटना और बढ़ना ज़ाहिर होता है इसलिए तख़्सीस की गई, वरना साया भी इसी मायने में हर तरह फ़रमाँबर्दार है।

5. यह मिसाल है मुश्रिक और ईमान वाले की।

6. यह मिसाल है शिर्क और तौहीद की।

7. इन दो मिसालों में दो चीज़ें हैं, एक कारामद चीज़ कि असल पानी और असल माल है, और एक नाकारा चीज़ कि कूड़ा-करकट और मैल-कुचैल है।

8. दोनों मिसालों का हासिल यह है कि जैसा इन मिसालों में मैल-कुचैल थोड़ी देर के लिए असली चीज़ के ऊपर नज़र आता है लेकिन अन्जामकार वह फेंक दिया जाता है और असली चीज़ रह जाती है, इसी तरह बातिल अगरचे कुछ वक़्त के लिए हक़ के ऊपर ग़ालिब नज़र आए लेकिन आख़िरकार बातिल मिट जाता और मग़लूब हो जाता है, और हक़ बाक़ी और साबित रहता है।

9. यानी जन्नत।

(तफ़सीर पृष्ठ 454) 1. यानी काफ़िर व मोमिन बराबर नहीं।

2. उस अ़ज़ाब से ख़ौफ़ खाते हैं जो काफ़िरों के साथ ख़ास होगा, इसलिए कुफ़्र से बचते हैं।

3. यानी जैसा मौक़ा होता है।

4. यानी कोई उनके साथ बदसुलूकी करे तो कुछ ख़्याल नहीं करते बल्कि उसके साथ अच्छा सुलूक करते हैं।

5. जो अल्लाह के यहाँ ख़ास और क़रीबी होंगे उनकी बरकत से उनके माँ-बाप और बीवियाँ और औलाद भी उसी दर्जे में ताबे होकर दाख़िल होंगे। चुनाँचे इस आयत की तफ़सीर में इब्ने अबी हातिम और अबू शैख़ ने सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की है कि मोमिन जन्नत में दाख़िल होकर कहेगा कि मेरी माँ कहाँ है, मेरा बेटा कहाँ है, मेरी बीवी कहाँ है। उससे कहा जाएगा कि उनके आमाल तुम्हारे आमाल के जैसे नहीं थे। जन्नती कहेगा कि मैं जो अ़मल करता रहा हूँ अपने लिए भी थे और उनके लिए भी। और औलाद व बाप-दादा से मुराद वे हैं जो बिला वास्ता (यानी प्रत्यक्ष रूप से) हों।

6. यानी वे क़ुरआन के मोजिज़ा होने को नुबुव्वत पर दलालत के लिए काफ़ी समझते हैं, और उल्टी-सीधी फ़रमाइश नहीं करते। फिर ख़ुदा की याद और इताअ़त में उनको ऐसी रग़बत होती है कि काफ़िरों की तरह उनको दुनिया की ज़िन्दगी के समान रग़बत और ख़ुशी नहीं होती।

7. यानी जिस दर्जे का ज़िक्र हो उसी दर्जे का इत्मीनान होता है। चुनाँचे क़ुरआन से ईमान और नेक आमाल और नेकी से हद दर्जा ताल्लुक़ और अल्लाह की तरफ़ तवज्जोह मयस्सर होती है।

(तफ़सीर पृष्ठ 456) 1. ख़ुलासा यह कि काफ़िरों के लिए क़ुरआन के मोजिज़ा होने को नाकाफ़ी समझना और गुमराही, और उससे पहले दुनिया की तरफ़ रग़बत और उसके लुत्फ़ व फ़ायदे का फ़ानी होना। और उसके मुक़ाबले में मोमिनों के लिए क़ुरआन को काफ़ी समझना और हिदायत और आख़िरत की तरफ़ रग़बत और उसके फल और बदले का बाक़ी होना साबित फ़रमाया है, और इस मक़ाम का असल मक़सूद रिसालत की बहस है। आगे इस बहस का बाक़ी हिस्सा है। यानी ये लोग जो आपके रसूल होने पर शुब्हात करते हैं तो आपका रसूल होना कोई अनोखी चीज़ तो है नहीं, पहले भी रसूल होते आए हैं।

2. पस उनको चाहिए था कि इस अ़ज़ीम नेमत की क़द्र करते और इस किताब पर ईमान ले आते जो कि मोजिज़ा भी है।

3. और क़ुरआन पर ईमान नहीं लाते।

4. पस मेरी हिफ़ाज़त के लिए तो अल्लाह तआ़ला काफ़ी है, तुम मुख़ालफ़त करके मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

5. यानी मुर्दा ज़िन्दा हो जाता और कोई उससे बातें कर लेता। ये वे मोजिज़े हैं जिनकी फ़रमाइश काफ़िर लोग अक्सर किया करते थे।

6. वह जिसको तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाते हैं वही ईमान लाता है, और उनकी आ़दत है कि जिसके अन्दर तलब होती है उसको तौफ़ीक़ देते हैं और मुख़ालिफ़ व दुश्मन को महरूम कर देते हैं।

7. चूँकि बाज़ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का जी चाहता था कि ये फ़रमाइशी मोजिज़े ज़ाहिर हो जाएँ, शायद ये ईमान ले आएँ, इसलिए फ़रमाया कि क्या यह सुनकर भी कि ये मुख़ालिफ़ और दुश्मन हैं, हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे, **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् व मन् अ़िन्दहू अ़िल्मुल्-किताब **(43)** ❖

14 सूरतु इब्राहीम 72

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3601 अक्षर, 845 शब्द, 52 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क लितुख़्रिजन्ना-स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्-नूरि बि-इज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद **(1)** अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व वैलुल्-लिल्-काफ़िरी-न मिन् अ़ज़ाबिन् शदीद **(2)** अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अ़लल्-आख़िरति व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन्, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद **(3)** व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन्इल्ला बिलिसानि-क़ौमिही लियुबय्यि-न लहुम्, फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(4)** व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौम-क मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व ज़क्किर्हुम् बिअय्यामिल्लाहि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर **(5)** व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिज़्कुरू निअ़्म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमूनकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि व युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम्

وما ابرئ ١٣ — ٢٣١ — ابراهيم ١٤

شهيدا بيني وبينكم ومن عنده علم الكتب ﴿٤٣﴾

سورة ابراهيم مكية — بسم الله الرحمن الرحيم

الٓرٰ كتب انزلنه اليك لتخرج الناس من الظلمت الى
النور باذن ربهم الى صراط العزيز الحميد ﴿١﴾ الله الذي
له ما في السموت وما في الارض وويل للكفرين من
عذاب شديد ﴿٢﴾ الذين يستحبون الحيوة الدنيا على الاخرة
ويصدون عن سبيل الله ويبغونها عوجا اولئك في
ضلل بعيد ﴿٣﴾ وما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه
ليبين لهم فيضل الله من يشاء ويهدي من يشاء
وهو العزيز الحكيم ﴿٤﴾ ولقد ارسلنا موسى بايتنا ان
اخرج قومك من الظلمت الى النور وذكرهم بايىم
الله ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ﴿٥﴾ واذ قال
موسى لقومه اذكروا نعمة الله عليكم اذ انجىكم من
ال فرعون يسومونكم سوء العذاب ويذبحون ابناءكم
ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ﴿٦﴾
واذ تاذن ربكم لئن شكرتم لازيدنكم ولئن كفرتم

منزل

बलाउम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (6) ❖

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बुकुम् ल-इन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व ल-इन् क-फ़र्तुम् इन्-न अ़ज़ाबी ल-शदीद (7) व क़ा-ल मूसा इन् तक्फ़ुरू अन्तुम् व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् फ़-इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् हमीद (8) अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द, वल्लज़ी-न मिम्-बअ्दिहिम्, ला यअ्लमुहुम् इल्लल्लाहु, जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-रद्दू ऐदि-यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क-फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ▲ (9) क़ालत् रुसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि, यद्अूकुम् लियग़्फ़ि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़ि-रकुम् इला अ-जलिम्- मुसम्मन्, क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना, तुरीदू-न अन् तसुद्दूना अ़म्मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तूना बिसुल्तानिम्- मुबीन (10) क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह्नु इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह यमुन्नु अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व मा का-न लना अन् नअ्ति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्- मुअ्मिनून (11) व मा लना अल्ला न-तवक्क-ल अ़लल्लाहि व क़द् हदाना सुबु-लना, व लनस्बिरन्-न अ़ला मा आज़ैतुमूना, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मु-तवक्किलून (12) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरुसुलिहिम् लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल-तअूदुन्-न

وما أبرئ ١٣ ٢٣٢ ابراهيم ١٤

إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا
الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن
بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ
فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم
بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝ قَالَتْ رُسُلُهُمْ
أَفِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم
مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوا إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن
نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَ
عَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُم مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ

منزل ٣

फ़ी मिल्लतिना, फ़-औहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन **(13)** व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज़ मिम्-बअ्दिहिम्, ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ़ मक़ामी व ख़ा-फ़ वअ़ीद **(14)** वस्तफ़्तहू व ख़ा-ब कुल्लु जब्बारिन् अ़नीद **(15)** मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-माइन् सदीद **(16)** य-तजर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व बि-मय्यितिन्, व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़ **(17)** म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अअ्मालुहुम् क-रमादि-निश्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आ़सिफ़िन्, ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अ़ला शैइन्, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद **(18)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह ख़ा-लक़स्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्- हक़्क़ि, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद **(19)** व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बि-अ़ज़ीज़ **(20)** व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअन् फ़क़ालज़्ज़ु-अ़फ़ा-उ लिल्लज़ीनस्-तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन्, क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम्, सवाउन् अ़लैना अ-जज़िअ्ना अम् सबर्ना मा लना मिम्-महीस **(21)** ❖

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ़-दकुम् वअ्दल्-हक़्क़ि व व-अ़त्तुकुम् फ़-अख़्लफ़्तुकुम्, व मा का-न लि-य अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दऔ़तुकुम् फ़स्त-जब्तुम् ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ु-सकुम्, मा अ-न बिमुस्रिख़िकुम् व

وما أبرئ ١٣ ٢٣٣ ابراهيم ١٤

فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٣﴾ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
الْأَرْضَ مِن بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ
وَعِيدِ ﴿١٤﴾ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾ مِّن وَرَائِهِ
جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ﴿١٦﴾ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ
وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِن وَرَائِهِ
عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿١٧﴾ مَّثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ
اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا
عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ﴿١٨﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ
جَدِيدٍ ﴿١٩﴾ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٢٠﴾ وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا
فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ
أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِن شَيْءٍ قَالُوا لَوْ هَدَانَا
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن
مَّحِيصٍ ﴿٢١﴾ وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن
سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا

منزل ٣

❖ रु. 3/9/15

मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्-य, इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु, इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(22)** व उद्ख़िलल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम्, तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाम **(23)** अलम् त-र कै-फ़ ज़-रबल्लाहु म-सलन् कलि-मतन् तय्यि-बतन् क-श-ज-रतिन् तय्यि-बतिन् अस्लुहा साबितुंव्-व फ़र्अ़ुहा फ़िस्समा-इ **(24)** तुअ्ती उकु-लहा कुल्-ल हीनिम्- बि-इज़्नि रब्बिहा, व यज़्रिबुल्लाहुल्- अम्सा-ल लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून **(25)** व म-सलु कलि-मतिन् ख़बिसतिन् क-श-ज-रतिन् ख़बीसति-निज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार **(26)** युसब्बितुल्-लाहुल्लज़ी-न आमनू बिल्क़ौलिस्-साबिति फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्- आख़िरति व युज़िल्लुल्लाहुज़्ज़ालिमी-न व यफ़्अ़लुल्लाहु मा यशा-उ **(27)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न बद्दलू निअ़्-मतल्लाहि कुफ़्रंव्-व अ-हल्लू क़ौमहुम् दारल्-बवार **(28)** जहन्न-म यस्लौनहा, व बिअ्सल्क़रार **(29)** व ज-अ़लू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू अ़न् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअ़ू फ़-इन्-न मसीरकुम् इलन्नार **(30)** क़ुल् लिअ़िबादियल्लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-यतम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला बैअ़ुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल **(31)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल्लकुम्

وما أبرئ ١٣ ٢٣٤ ابراهيم ١٤

أَنْفُسَكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ إِنِّي كَفَرْتُ
بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا
سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ
حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ
مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا
بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللّٰهُ
الظّٰلِمِينَ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ
اللّٰهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ
الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوا لِلّٰهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا
فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا
الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

منزل ٣

व सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल्-क लितज्रि-य फ़िल्- बह्रि बि-अम्रिही व सख़्ख़-र लकुमुल्-अन्हार (32) व सख़्ख़-र लकुमुश्शम्-स वल्- क़-म-र दाइबैनि व सख़्ख़-र लकुमुल्- लै-ल वन्नहार (33) व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स-अल्तुमूहू, व इन् तअुद्दू निअ्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्- इन्सा-न ल-ज़लूमुन् कफ़्फ़ार (34) ❖

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ल्-ब-ल-द आमिनंव्-वज्नुब्नी व बनिय्-य अन् नअ्बुदल्-अस्नाम (35) रब्बि इन्नहुन्-न अज़्लल्-न कसीरम्-मिनन्नासि फ़-मन् तबि-अ़नी फ़-इन्नहू मिन्नी व मन् अ़सानी फ़इन्न-क ग़फ़ूरुर् रहीम (36) रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि ज़ी-ज़र्अिन् अिन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्अ़ल् अफ़्इ-दतम् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़्हुम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यश्कुरून (37) रब्बना इन्न-क तअ्लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ्लिनु, व मा यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ (38) अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ़लल्-कि-बरि इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़, इन्-न रब्बी ल-समीअ़ुद्-दुआ-इ (39) रब्बिज्अ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व तक़ब्बल् दुआ-इ (40) रब्बनग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल्-हिसाब (41) ❖

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफ़िलन् अ़म्मा यअ्मलुज़्ज़ालिमू-न, इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार (42) मुह्तिअ़ी-न मुक़्निअ़ी रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु

وما أبرئ ١٣ — ٢٣٥ — ابرهيم ١٤

وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ
وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ﴿٣٢﴾ وَ
سَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾
وَآتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا
إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَٰذَا
الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ إِنَّهُنَّ
أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ
عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي
بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ
فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ
الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ
وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ
رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ
الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ إِنَّمَا

منزل

इलैहिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़्इ-दतुहुम् हवा-अ् **(43)** व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल्-अ़ज़ाबु फ़-यक़ूलुल्लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्खिर्ना इला अ-जलिन् क़रीबिन् नुजिब् दअ्व-त-क व नत्तबिअ़िर्रुसु-ल, अ-व लम् तकूनू अक़्सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वाल **(44)** व सकन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् व तबय्य-न लकुम् कै-फ़ फ़अ़ल्ना बिहिम् व ज़रब्ना लकुमुल्- अम्साल **(45)** व क़द् म-करू मक्रहुम् व अ़िन्दल्लाहि मक्रुहुम्, व इन् का-न मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्- जिबाल **(46)** फ़ला तह्स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्दिही रुसु-लहू, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम **(47)** यौ-म तुबद्दलुल्- अर्ज़ु ग़ैरल्-अर्ज़ि वस्समावातु व ब-रज़ू लिल्लाहिल् वाहिदिल्-क़ह्हार **(48)** व तरल्मुज्रिमी-न यौ-मइज़िम् मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद **(49)** सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव्-व तग़्शा वुजू-हहुमुन्नार **(50)** लियज्ज़ियल्लाहु कुल्-ल नफ़्सिम् मा क-सबत्, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब **(51)** हाज़ा बलाग़ुल्-लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लि-यअ्लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव्-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब **(52)** ❖

الحجر ١٥ ٢٣٦ وما ابرئ ١٣

يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٤٢﴾ مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ﴿٤٣﴾ وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ نُجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾ وَسَكَنْتُمْ فِي مَسَاكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ﴿٤٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاوَاتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾ سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هَٰذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

سورة الحجر مكية وهي تسع وتسعون آية وست ركوعات

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ﴿١﴾

منزل ٣

15 सूरतुल्-हिज्रि 54

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2907 अक्षर, 663 शब्द, 99 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा। तिल्-क आयातुल्- किताबि व क़ुर्आनिम्-मुबीन **(1)**

चौदहवाँ पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्रि (आयत 2 से 99)

रु-बमा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (2) ज़र्हुम् यअ्कुलू व य-तमत्तअू व युल्हिहिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ़ यअ्लमून (3) व मा अह्लक्ना मिन् क़र्यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्लूम (4) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (5) व क़ालू या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु इन्न-क ल-मज्नून (6) लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइ-कति इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (7) मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्-मुन्ज़रीन (8) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्-नज़्ज़िक्-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (9) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअ़िल्-अव्वलीन (10) व मा यअ्तीहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (11) कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (12)

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا
وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ
أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ
الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ۝ مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا
مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَ
لَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ
مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي
قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝
وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝
لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ۝
وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝ وَحَفِظْنَاهَا
مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ
شِهَابٌ مُبِينٌ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ
وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا

ला युअ्मिनू-न बिही व क़द् ख़लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (13) व लौ फ़तह्ना अ़लैहिम् बाबम्-मिनस्समा-इ फ़ज़ल्लू फ़ीहि यअ्रुजून (14) लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून (15) ❖

व ल-क़द् जअ़ल्ना फ़िस्समा-इ बुरूजव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन (16) व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्रजीम (17) इल्ला मनिस्त-रक़स्सम्-अ़ फ़अत्ब-अ़हू

शिहाबुम्-मुबीन (18) वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्कैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (19) व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआ़यि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन (20) व इम्मिन् शैइन् इल्ला अ़िन्दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़्-दरिम्-मअ़्लूम (21) व अर्सल्नर्रिया-ह लवाक़ि-ह फ़-अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ माअन् फ़-अस्क़ैनाकुमूहु व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन (22) व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व नह्नुल्-वारिसून (23) व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तअ्ख़िरीन (24) व इन्-न रब्ब-क हु-व यह्शुरुहुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम (25) ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून (26) वल्जान्-न ख़लक़्नाहु मिन् क़ब्लु मिन्-नारिस्समूम (27) व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिक़ुम् ब-शरम्-मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून (28) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अ़ू लहू साजिदीन (29) फ़-स-जदल्-मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअ़ून (30) इल्ला इब्ली-स, अबा अंय्यकू-न मअ़स्साजिदीन (31) क़ा-ल या इब्लीसु मा ल-क अल्ला तकू-न मअ़स्साजिदीन (32) क़ा-ल लम् अकुल्-लिअस्जु-द लि-ब-शरिन् ख़लक़्तहू मिन् सल्सालिम्-मिन् ह-मइम्-मसनून (33) क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (34) व इन्-न अ़लैकल्लअ़्-न-त इला यौमिद्दीन (35) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (36) क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (37) इला यौमिल्

معايش ومن لستم له برازقين ﴿٢٠﴾ وإن من شيء إلا
عندنا خزائنه وما ننزله إلا بقدر معلوم ﴿٢١﴾ وأرسلنا الرياح
لواقح فأنزلنا من السماء ماء فأسقيناكموه وما أنتم له
بخازنين ﴿٢٢﴾ وإنا لنحن نحيي ونميت ونحن الوارثون ﴿٢٣﴾ ولقد
علمنا المستقدمين منكم ولقد علمنا المستأخرين ﴿٢٤﴾ وإن
ربك هو يحشرهم إنه حكيم عليم ﴿٢٥﴾ ولقد خلقنا الإنسان
من صلصال من حمإ مسنون ﴿٢٦﴾ والجان خلقناه من قبل
من نار السموم ﴿٢٧﴾ وإذ قال ربك للملائكة إني خالق بشرا
من صلصال من حمإ مسنون ﴿٢٨﴾ فإذا سويته ونفخت فيه
من روحي فقعوا له ساجدين ﴿٢٩﴾ فسجد الملائكة كلهم أجمعون ﴿٣٠﴾
إلا إبليس أبى أن يكون مع الساجدين ﴿٣١﴾ قال يا إبليس
ما لك ألا تكون مع الساجدين ﴿٣٢﴾ قال لم أكن لأسجد لبشر
خلقته من صلصال من حمإ مسنون ﴿٣٣﴾ قال فاخرج منها
فإنك رجيم ﴿٣٤﴾ وإن عليك اللعنة إلى يوم الدين ﴿٣٥﴾ قال
رب فأنظرني إلى يوم يبعثون ﴿٣٦﴾ قال فإنك من المنظرين ﴿٣٧﴾
إلى يوم الوقت المعلوم ﴿٣٨﴾ قال رب بما أغويتني لأزينن

वक़्तिल्-मअ़्लूम (38) क़ा-ल रब्बि बिमा अग़्वैतनी ल-उज़य्यिनन्-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व ल-उग़्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (39) इल्ला अ़िबाद-क मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन (40) क़ा-ल हाज़ा सिरातुन् अ़लय्-य मुस्तक़ीम (41) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-ग़ावीन (42) व इन्-न जहन्न-म लमौअ़िदुहुम् अज्मअ़ीन (43) लहा सब्-अ़तु अब्वाबिन्, लिकुल्लि बाबिम् मिन्हुम् जुज़्उम्-मक़्सूम (44) ❖

इन्नल् मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (45) उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन् आमिनीन (46) व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्वानन् अ़ला सुरुरिम् मु-तक़ाबिलीन (47) ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न-सबुंव्-व मा हुम् मिन्हा बिमुख़्रजीन (48) नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अनल् ग़फ़ूरुर्रहीम (49) व अन्-न अ़ज़ाबी हुवल् अ़ज़ाबुल् अलीम (50) व नब्बिअ्हुम् अ़न् ज़ैफ़ि इब्राहीम ✣ (51) इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (52) क़ालू ला तौजल् इन्ना नबुश्शिरु-क बिग़ुलामिन् अ़लीम (53) क़ा-ल अ-बश्शर्तुमूनी अ़ला अम्मस्-सनियल्-कि-बरु फ़बि-म तुबश्शिरून (54) क़ालू बश्शर्ना-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकुम् मिनल् क़ानितीन (55) क़ा-ल व मंय्यक़्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून (56) क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (57) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (58) इल्ला आ-ल लूतिन्, इन्ना लमुनज्जूहुम् अज्मअ़ीन (59) इल्लम्-र-अ-तहू क़द्दर्ना इन्नहा

الحجر ١٥ ٢٣٩ ربما ١٤

لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هَٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾ إِنَّ
عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ
أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي
جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي
صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ
فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي
أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾
وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا
قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ
عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ
تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشَّرْنَاكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ الْقَانِطِينَ ﴿٥٥﴾
قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾ قَالَ فَمَا
خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾
إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا

منزل

❖ रु. 3/19/3 ✣ व. लाज़िम

लमिनल्-ग़ाबिरीन **(60)** ❖

फ़-लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्मुर्सलून **(61)** क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुम्-मुन्करून **(62)** क़ालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून **(63)** व अतैना-क बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिक़ून **(64)** फ़-अस्रि बिअह्लि-क बिक़िति़अ्म् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुंव्वम्ज़ू हैसु तुअ्मरून **(65)** व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउला-इ मक़्तूअुम्-मुस्बिहीन **(66)** व जा-अ अह्लुल्-मदीनति यस्तब्शिरून **(67)** क़ा-ल इन्-न हाउला-इ ज़ैफ़ी फ़ला तफ़्ज़हून **(68)** वत्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून **(69)** क़ालू अ-व लम् नन्ह-क अ़निल्-आ़लमीन **(70)** क़ा-ल हाउला-इ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन **(71)** ल-अ़म्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सकरतिहिम् यअ्महून **(72)** फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुश्रिक़ीन **(73)** फ़-जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहिम् हिजा-रतम् मिन् सिज्जील **(74)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिल्-मु-तवस्सिमीन **(75)** व इन्नहा लबि-सबीलिम् मुक़ीम **(76)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन **(77)** व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐ-कति लज़ालिमीन **(78)** फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् ✣ व इन्नहुमा लबि-इमामिम्- मुबीन **(79)** ❖

व ल-क़द् कज़्ज़-ब अस्हाबुल् हिज्रिल्-मुर्सलीन **(80)** व आतैनाहुम् आयातिना फ़कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन **(81)** व कानू यन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् आमिनीन **(82)**

اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ
اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾
وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ
الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ
تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ
مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ
هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾
قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ
كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ
الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿٧٥﴾
وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿٧٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾
وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَ
اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٨٠﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुस्बिहीन (83) फ़मा अ़ग्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (84) व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि, व इन्नस्सा-अ़-त लआति-यतुन् फ़स्फ़हिस्सफ़्हल्-जमील (85) इन्-न रब्ब-क हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (86) व ल-क़द् आतैना-क सब्अ़म् मिनल्-मसानी वल्क़ुरआनल्-अ़ज़ीम (87) ला तमुद्दन्-न अ़ैनै-क इला मा मत्तअ़्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जनाह-क लिल्मुअ्मिनीन (88) व क़ुल् इन्नी अनन्नज़ीरुल्-मुबीन (89) कमा अन्ज़ल्ना अ़लल्-मुक़्तसिमीन (90) अल्लज़ी-न ज-अ़लुल्-क़ुरआ-न अ़िज़ीन (91) फ़-वरब्बि-क लनस्-अलन्नहुम् अज्मअ़ीन (92) अ़म्मा कानू यअ़्मलून ◆ (93) फ़स्दअ़् बिमा तुअ्मरु व अअ़्रिज़् अ़निल्-मुश्रिकीन (94) इन्ना कफ़ैनाकल्- मुस्तह्ज़िइन (95) अल्लज़ी-न यज्अ़लू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़सौ-फ़ यअ़्लमून (96) व ल-क़द् नअ़्लमु अन्न-क यज़ीक़ु सद्रु-क बिमा यक़ूलून (97) फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क व कुम् मिनस्-साजिदीन (98) वअ़्बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-यकल्- यक़ीन (99) ❖

النحل ٢٤١ ربما

فَمَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ
الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ﴿٨٥﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ
آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ
الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ
عِضِينَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾
فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ
الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۚ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ
حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١﴾
يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ

منزل ٣

16 सूरतुन्-नह्लि 70

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7974 अक्षर, 1871 शब्द, 128 आयतें और 16 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अता अम्रुल्लाहि फ़ला तस्तअ़्जिलूहु, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (1) युनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही अन् अन्ज़िरू

अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़त्तक़ून (2) ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (3) ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (4) वल्-अन्आ़-म ख़-ल-क़हा लकुम् फ़ीहा दिफ़्उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्कुलून (5) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून (6) व तह्मिलु अस्क़ा-लकुम् इला ब-लदिल्-लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि, इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्-रहीम (7) वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-नतन्, व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून (8) व अ़लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरुन्, व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअ़ीन (9) ❖

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (10) युम्बितु लकुम् बिहिज़्ज़र्-अ़ वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्- अअ्ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (11) व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्क़-म-र, वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-बिअम्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (12) व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (13) व हुवल्लज़ी सख़्ख़रल्-बह्-र लितअ्कुलू मिन्हु लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्फ़ुल्-क मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (14) व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम्

رُبَمَا ١٤ ٢٤٢ النحل ١٦

اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ
نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ
فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ
تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝ وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ
تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً وَيَخْلُقُ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَآءَ
لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ
شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ
وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا
اَلْوَانُهٗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ
سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً

منزل ٣

व अन्हारंव्-व सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (15) व अ़लामातिन्, व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (16) अ-फ़मंय्यख़्लुक़ु कमल्-ला यख़्लुक़ु, अ-फ़ला तज़क्करून (17) व इन् तअ़ुद्दू निअ़्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (18) वल्लाहु यअ़्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ़्लिनून (19) वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (20) अम्वातुन् ग़ैरु अह्याइन्, वमा यश्अ़ुरू-न अय्या-न युब्अ़सून (21) ❖

इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़ल्लज़ी-न ला युअ़्मिनू-न बिल्आख़िरति क़ुलूबुहुम् मुन्कि-रतुंव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (22) ला ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनू-न, इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्तक्बिरीन (23) व इज़ा क़ी-ल लहुम् माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम् क़ालू असातीरुल्-अव्वलीन (24) लियह्मिलू औज़ारहुम् कामि-लतंय्-यौमल्-क़ियामति व मिन् औज़ारिल्-लज़ी-न युज़िल्लू-नहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, अला सा-अ मा यज़िरून (25) ❖

क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अतल्लाहु बुन्या-नहुम् मिनल्-क़वाअ़िदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अ़ुरून (26) सुम्-म यौमल् क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम्, क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म इन्नल् ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू-अ अ़लल्-काफ़िरीन (27) अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़-अल्क़वुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ़्-मलु

تلبسونها وترى الفلك مواخر فيه ولتبتغوا من فضله و
لعلكم تشكرون ﴿١٤﴾ والقى في الارض رواسي ان تميد بكم
وانهرا وسبلا لعلكم تهتدون ﴿١٥﴾ وعلمت وبالنجم هم
يهتدون ﴿١٦﴾ افمن يخلق كمن لا يخلق افلا تذكرون ﴿١٧﴾
وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها ان الله لغفور رحيم ﴿١٨﴾
والله يعلم ما تسرون وما تعلنون ﴿١٩﴾ والذين يدعون من
دون الله لا يخلقون شيئا وهم يخلقون ﴿٢٠﴾ اموات غير
احياء وما يشعرون ايان يبعثون ﴿٢١﴾ الهكم اله واحد
فالذين لا يؤمنون بالاخرة قلوبهم منكرة وهم
مستكبرون ﴿٢٢﴾ لا جرم ان الله يعلم ما يسرون وما يعلنون
انه لا يحب المستكبرين ﴿٢٣﴾ واذا قيل لهم ماذا انزل
ربكم قالوا اساطير الاولين ﴿٢٤﴾ ليحملوا اوزارهم كاملة يوم
القيمة ومن اوزار الذين يضلونهم بغير علم الا ساء ما
يزرون ﴿٢٥﴾ قد مكر الذين من قبلهم فاتى الله بنيانهم من
القواعد فخر عليهم السقف من فوقهم واتهم العذاب
من حيث لا يشعرون ﴿٢٦﴾ ثم يوم القيمة يخزيهم ويقول

منزل ٣

मिन् सूइन्, बला इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (28) फ़द्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-तकब्बिरीन (29) व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम्, क़ालू ख़ैरन्, लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतुन्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुन्, व लनिअ्-म दारुल्- मुत्तक़ीन (30) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न, कज़ालि-क यज्ज़िल्लाहुल्-मुत्तक़ीन (31) अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु तय्यिबी-न यक़ूलू-न सलामुन् अ़लैकुमुद्ख़ुलुल्-जन्न-त बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (32) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्-मलाइ-कतु औ यअ्ति-य अम्रु रब्बि-क, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (33) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (34) ❖

اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ
سُوْٓءٍ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَقِيْلَ
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا خَيْرًا لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا
الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ
الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝
فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ

व क़ालल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ़बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन्, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-हल् अ़लर्रुसुलि इल्लल् बलाग़ुल्-मुबीन (35) व ल-क़द् बअ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ़्बुदुल्ला-ह वज्तनिबुत्ताग़ू-त फ़मिन्हुम् मन् हदल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त् अ़लैहिज़्ज़लालतु, फ़सीरू

फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन **(36)** इन् तह़्रिस् अ़ला हुदाहुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्-नासिरीन **(37)** व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ला यब्अ़सुल्लाहु मंय्यमूतु, बला वअ़्दन् अ़लैहि ह़क़्क़ंव्-व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून **(38)** लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ़्-लमल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन **(39)** इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अरद्नाहु अन्-नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून **(40)** ❖

वल्लज़ी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्-बअ़्दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व लअज्रुल्-आख़िरति अक्बरु ✣ लौ कानू यअ़्लमून **(41)** अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(42)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्लमून **(43)** बिल्-बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि, व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक्-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून ● **(44)** अ-फ़-अमिनल्लज़ी-न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-अर्-ज़ औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अ़ुरून **(45)** औ यअ्ख़ु-ज़हुम्

ربما ١٤ ٢٤٥ النحل ١٦

من شیء كذلك فعل الذين من قبلهم فهل على
الرسل الا البلغ المبين ﴿٣٥﴾ ولقد بعثنا فی كل امة رسولا
ان اعبدوا الله واجتنبوا الطاغوت فمنهم من هدى
الله ومنهم من حقت عليه الضللة فسيروا فی الارض
فانظروا كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٣٦﴾ ان تحرص على
هدىهم فان الله لا يهدی من يضل وما لهم من
نصرين ﴿٣٧﴾ واقسموا بالله جهد ايمانهم لا يبعث الله من
يموت بلى وعدا عليه حقا ولكن اكثر الناس لا يعلمون ﴿٣٨﴾
ليبين لهم الذی يختلفون فيه وليعلم الذين كفروا
انهم كانوا كذبين ﴿٣٩﴾ انما قولنا لشیء اذا اردنه ان نقول
له كن فيكون ﴿٤٠﴾ والذين هاجروا فی الله من بعد ما
ظلموا لنبوئنهم فی الدنيا حسنة ولاجر الاخرة اكبر
لو كانوا يعلمون ﴿٤١﴾ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ﴿٤٢﴾
وما ارسلنا من قبلك الا رجالا نوحی اليهم فسئلوا اهل
الذكر ان كنتم لا تعلمون ﴿٤٣﴾ بالبينت والزبر وانزلنا اليك
الذكر لتبين للناس ما نزل اليهم ولعلهم يتفكرون ﴿٤٤﴾

وقف لازم ع ٥ ١٦

النصف

منزل ٣

फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ़्जिज़ीन **(46)** औ यअ्ख़ु-ज़हुम् अ़ला तख़व्वुफ़िन् फ़-इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम **(47)** अ-व लम् यरौ इला मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंय्-य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अ़निल्-यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल्-लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून **(48)** व लिल्लाहि यस्जुदू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्-वल्-मलाइ--कतु व हुम् ला यस्तक्बिरून **(49)** यख़ाफ़ू-न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्अ़लू-न मा युअ्मरून ❑ **(50)** ❖

व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्-नैनि इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-इय्या-य फ़र्हबून **(51)** व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तत्तक़ून **(52)** व मा बिकुम् मिन् निअ़्मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम्-म इज़ा मस्सकुमुज़्-ज़ुर्रु फ़-इलैहि तज्अरून **(53)** सुम्-म इज़ा क-शफ़ज़्ज़ुर्-र अ़न्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून **(54)** लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ तअ़्लमून **(55)** व यज्अ़लू-न लिमा ला यअ़्लमू-न नसीबम् मिम्मा रज़क़्नाहुम्, तल्लाहि लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून **(56)** व यज्अ़लू-न लिल्लाहिल्- बनाति सुब्हानहू व लहुम् मा यश्तहून **(57)** व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम **(58)**

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ
اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٤٥﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ
فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٤٦﴾ اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ
فَاِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤٧﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ
شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ
دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ
رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَقَالَ
اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاِيَّايَ
فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾ وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ
وَاصِبًا اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ
ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْئَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ
عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَيْنٰهُمْ فَتَمَتَّعُوْا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ
نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ تَاللّٰهِ لَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا

❖ रु. 6/10/12 ❑ सज्दा 3

य-तवारा मिनल्-क़ौमि मिन् सू-इ मा बुश्शि-र बिही, अयुम्सिकुहू अ़ला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि, अला सा-अ मा यह्कुमून **(59)** लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म-सलुस्सौइ व लिल्लाहिल् म-सलुल्-अअ्ला व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम **(60)** ❖

व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिज़ुल्मिहिम् मा त-र-क अ़लैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तव्-व ला यस्तक़्दिमून **(61)** व यज्अ़लू-न लिल्लाहि मा यक्रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतुहुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना, ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ़्रतून **(62)** तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(63)** व मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न लहुमुल्लज़िख़्त-लफ़ू फ़ीहि व हुदंव्-व रह्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून

النحل ١٦ ٣٤٧ ربما ١٤

بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِن سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ
هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾
لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ
الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ
فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾
وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنَىٰ ۖ لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُم مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾ تَاللَّهِ
لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ ۙ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾ وَاللَّهُ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾
وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن
بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِّلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾ وَمِن

منزل ٣

(64) वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून **(65)** ❖

व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आ़मि लअ़िब्र-तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-बनन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन **(66)** व मिन् स-मरातिन्नख़ीलि

वलअअ्नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-करंव्-व रिज़्कन् ह-सनन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून **(67)** व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्श-जरि व मिम्मा यअ्रिशून **(68)** सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स-मराति फ़स्लुकी सुबु-ल रब्बिकि ज़ुलुलन्, यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्-लिन्नासि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून **(69)** वल्लाहु ख़ा-ल-क़कुम् सुम्-म य-तवफ़्फ़ाकुम् व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अुमुरि लिकै ला यअ्ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन्, इन्नल्ला-ह अलीमुन् क़दीर **(70)** ❖

वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्ज़कुम् अला बअ्ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि फ़-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्दी रिज़्क़िहिम् अला मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउन्, अ-फ़बिनिअ्-मतिल्लाहि यज्हदून **(71)** वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह-फ़-दतंव्-व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून **(72)** व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु रिज़्क़म्-मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि शैअंव्-व ला यस्ततीअून **(73)** फ़ला तज़्रिबू लिल्लाहिल्-अम्सा-ल, इन्नल्ला-ह यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून **(74)**

ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا
حَسَنًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاَوْحٰى رَبُّكَ
اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَ
مِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝ ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ
رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ
شِفَاۗءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ
خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۣ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝ وَاللّٰهُ
فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا
بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ
اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّ
رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ
هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـــًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

ज़-रबल्लाहु म-सलन् अ़ब्दम्-मम्लूकल्-ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह-सनन् फ़हु-व युन्फ़िक़ु मिन्हु सिर्रंव्-व जह्रन्, हल् यस्तवू-न, अल्हम्दु लिल्लाहिं, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(75)** व ज़-रबल्लाहु म-सलर्रजुलैनि अ-हदुहुमा अब्कमु ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अ़ला मौलाहु ऐ-नमा युवज्जिहहु ला यअ्ति बिख़ैरिन्, हल् यस्तवी हु-व व मंय्यअ्मुरु बिल्- अ़द्लि व हु-व अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(76)** ❖

व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा अम्रुस्सा-अ़ति इल्ला क-लम्हिल्-ब-सरि औ हु-व अक़्रबु, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(77)** वल्लाहु अख़्र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ़्लमू-न शैअंव्-व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(78)** अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समा-इ, मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून **(79)** वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-कनंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-अन्आ़मि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ़्निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आ़रिहा असासंव्-व मताअ़न् इला हीन **(80)** वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिम्मा ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिनल् जिबालि अक्नानंव्-व ज-अ़-ल लकुम् सराबी-ल तक़ीकुमुल्हर्-र व

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۴﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى
شَیْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى
شَیْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ
هَلْ يَسْتَوِیْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ
السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۷۷﴾ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ
السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ
لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ
وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَاۤ
اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿۸۰﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا

منزل ۳

सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्सकुम्, कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्लिमून **(81)** फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलागुल्-मुबीन **(82)** यअ्रिफ़ू-न निअ्-मतल्लाहि सुम्-म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल्-काफ़िरून **(83)** ❖

व यौ-म नब्अ़सु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला हुम् युस्तअ्तबून **(84)** व इज़ा रअल्लज़ी-न ज़-लमुल्- अ़ज़ा-ब फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून **(85)** व इज़ा रअल्लज़ी-न अश्रकू शु-रका-अहुम् क़ालू रब्बना हाउला-इ शु-रकाउनल्लज़ी-न कुन्ना नद्अू मिन् दूनि-क फ़अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् लकाज़िबून ▲ **(86)** व अल्क़ौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस्स-ल-म व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून **(87)** अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अ़ज़ाबन् फ़ौक़ल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून **(88)** व यौ-म नब्अ़सु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अ़लैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व जिअ्ना बि-क शहीदन् अ़ला हाउला-इ, व नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह़्मतंव्-व बुशरा लिल्मुस्लिमीन **(89)** ❖

इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल्-अ़द्लि वल्-इह़्सानि व ईता-इ ज़िल्क़ुर्बा व यन्हा

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ
تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُم بَأْسَكُمْ كَذَٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿٨٢﴾ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ﴿٨٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ
ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٥﴾
وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا
الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِن دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ
لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُم
مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾
وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم مِّنْ أَنفُسِهِمْ
وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ

अ़निल्-फ़ह़्शा-इ वल्मुन्करि वल्बग़्यि यअ़िज़ुकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (90) व औफ़ू बि-अ़ह्दिल्लाहि इज़ा आ़हत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमा-न बअ़्-द तौकीदिहा व क़द् जअ़ल्तुमुल्ला-ह अ़लैकुम् कफ़ीलन्, इन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा तफ़्अ़लून (91) व ला तकूनू कल्लती न-क़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्-बअ़्दि क़ुव्वतिन् अन्कासन्, तत्तख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख़लम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन्, इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही, व लयुबय्यिनन्-न लकुम् यौमल्-क़ियामति मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (92) व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिंय्-युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तअ़्मलून (93) व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम् द-ख़लम् बैनकुम् फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ़्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा सदत्तुम् अ़न् सबीलिल्लाहि व लकुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (94) व ला तश्तरू बि-अ़ह्दिल्लाहि स-मनन् क़लीलन्, इन्नमा अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून (95) मा अ़िन्दकुम् यन्फ़दु व मा अ़िन्दल्लाहि बाक़िन्, व ल-नज्ज़ियन्नल्लज़ी-न स-बरू अज्रहुम् बि-अह्सनि मा कानू यअ़्मलून (96) मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-लनुह्यि-यन्नहू हयातन् तय्यि-बतन् व लनज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह्सनि मा कानू यअ़्मलून (97)

وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ اَنْ
تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ
لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا
اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا
عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا

फ़-इज़ा क़रअ्तल्-क़ुर्आ-न फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम (98) इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (99) इन्नमा सुल्तानुहू अ़लल्लज़ी-न य-तवल्लौनहू वल्लज़ी-न हुम् बिही मुश्रिकून (100) ❖

व इज़ा बद्दल्ना आ-यतम् मका-न आयतिंव्-वल्लाहु अअ्लमु बिमा युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन्, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (101) क़ुल् नज़्ज़-लहू रूहुल्- क़ुदुसि मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि लियुसब्बितल्लज़ी-न आमनू व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन (102) व ल-क़द् नअ्लमु अन्नहुम् यक़ूलू-न इन्नमा युअ़ल्लिमुहू ब-शरुन्, लिसानुल्लज़ी युल्हिदू-न इलैहि अअ्-जमिय्युंव्-व हाज़ा लिसानुन् अ़-रबिय्युम् मुबीन (103) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआया--तिल्लाहि ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (104) इन्नमा यफ़्तरिल्-कज़िबल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-काज़िबून (105) मन् क-फ़-र बिल्लाहि मिम्-बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व क़ल्बुहू मुत्मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्-मन् श-र-ह बिल्कुफ़्रि सद्रन् फ़-अ़लैहिम् ग़-ज़बुम्-मिनल्लाहि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (106) ज़ालि-क बिअन्नहुमुस्त-हब्बुल्-हयातद्दुन्या अ़लल्-आख़िरति व अन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (107) उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व सम्अ़िहिम् व

ربما ١٤ ٢٥٢ النحل ١٦

يعملون ﴿٩٧﴾ فاذا قرات القران فاستعذ بالله من الشيطن
الرجيم ﴿٩٨﴾ انه ليس له سلطن على الذين امنوا وعلى
ربهم يتوكلون ﴿٩٩﴾ انما سلطنه على الذين يتولونه والذين
هم به مشركون ﴿١٠٠﴾ واذا بدلنا اية مكان اية والله اعلم
بما ينزل قالوا انما انت مفتر بل اكثرهم لا يعلمون ﴿١٠١﴾
قل نزله روح القدس من ربك بالحق ليثبت الذين
امنوا وهدى وبشرى للمسلمين ﴿١٠٢﴾ ولقد نعلم انهم
يقولون انما يعلمه بشر لسان الذي يلحدون اليه
اعجمي وهذا لسان عربي مبين ﴿١٠٣﴾ ان الذين لا يؤمنون
بايت الله لا يهديهم الله ولهم عذاب اليم ﴿١٠٤﴾ انما
يفتري الكذب الذين لا يؤمنون بايت الله واولئك
هم الكذبون ﴿١٠٥﴾ من كفر بالله من بعد ايمانه الا من
اكره وقلبه مطمئن بالايمان ولكن من شرح بالكفر
صدرا فعليهم غضب من الله ولهم عذاب عظيم ﴿١٠٦﴾
ذلك بانهم استحبوا الحيوة الدنيا على الاخرة وان الله
لا يهدي القوم الكفرين ﴿١٠٧﴾ اولئك الذين طبع الله على

منزل ٣

अब्सारिहिम् व उलाइ-क हुमुल्गाफ़िलून (**108**) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल्-ख़ासिरून (**109**) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्-बअ्दि मा फ़ुतिनू सुम्-म जाहदू व स-बरू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (**110**) ❖

यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ़्सिन् तुजादिलु अ़न् नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हुम् ला युज़्लमून (**111**) व ज़-रबल्लाहु म-सलन् क़र्-यतन् कानत् आमि-नतम्- मुत्मइन्नतंय्-यअ्तीहा रिज़्क़ुहा र-ग़दम्-मिन् कुल्लि मकानिन् फ़-क-फ़रत् बिअन्अुमिल्लाहि फ़-अज़ा-क़हल्लाहु लिबासल्-जूअि वल्ख़ौफ़ि बिमा कानू यस्नअून (**112**) व ल-क़द् जाअहुम् रसूलुम्-मिन्हुम् फ़-कज़्ज़बूहु फ़- अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून (**113**) फ़कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वश्कुरू निअ्-मतल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्बुदून (**114**) इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्-मैत-त वद्द-म व लह्मल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (**115**) व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अल्सि-नतुकुमुल्-कज़ि-ब हाज़ा हलालुंव्-व हाज़ा हरामुल्-लितफ़्तरू अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब, इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून (**116**) मताअुन् क़लीलुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (**117**) व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना मा

النحل ۱۶ ۲۵۳ ربما ۱۴

قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾
لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ
هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ
مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ
عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا
رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا
اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلَقَدْ
جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ
ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ
اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَ
الدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ
بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ
اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱۶﴾
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا

منزل ۳

क़सस्ना अ़लै-क मिन् क़ब्लु व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(118)** सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न अ़मिलुस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ़्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम **(119)** ❖

इन्-न इब्राही-म का-न उम्म-तन् क़ानितल्-लिल्लाहि हनीफ़न्, व लम् यकु मिनल्-मुश्रिकीन **(120)** शाकिरल्-लिअन्अुमिही, इज्तबाहु व हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(121)** व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्-सालिहीन **(122)** सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ़् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन **(123)** इन्नमा जुअ़िलस्सब्तु अ़लल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व इन्-न रब्ब-क ल-यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(124)** उद्अ़ु इला सबीलि रब्बि-क बिल्हिक्मति वल्मौअ़ि-ज़तिल् ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह्सनु, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ़्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ़्लमु बिल्मुह्तदीन **(125)** व इन् आ़क़ब्तुम् फ़आ़क़िबू बिमिस्लि मा अ़ूक़िब्तुम् बिही, व ल-इन् सबर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्-लिस्साबिरीन **(126)** वस्बिर् व मा सब्रु-क इल्ला बिल्लाहि व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून **(127)** इन्नल्ला-ह मअ़ल्लज़ीनत्तक़ौ वल्लज़ी-न हुम् मुह्सिनून **(128)** ❖

ربما ١٤ ٢٥٤ النحل ١٦

حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ
بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ
حَنِيْفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ اِجْتَبٰىهُ وَ
هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَاِنَّهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ
اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِنَّمَا جُعِلَ
السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ
رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ
وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا
بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

منزل

पन्द्रहवाँ पारः सुब्हानल्लज़ी

17 सूरतु बनी इस्राईल 50

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6710 अक्षर, 1582 शब्द, 111 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सुब्हानल्लज़ी अस्‌रा बिअ़ब्दिही लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल् मस्जिदिल्-अक़्सल्लज़ी बारक्ना हौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-बसीर **(1)** व आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राई-ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला **(2)** ज़ुर्रिय्य-त मन् हमल्ना म-अ़ नूहिन् इन्नहू का-न अ़ब्दन् शकूरा **(3)** व क़ज़ैना इला बनी इस्राई-ल फ़िल्-किताबि लतुफ़्सिदुन्-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ़्लुन्-न अ़ुलुव्वन् कबीरा **(4)** फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दु ऊलाहुमा बअ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल्-लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ़जासू ख़िलालद्दियारि, व का-न वअ़्दम्-मफ़्अ़ूला **(5)** सुम्-म रदद्ना लकुमुल्कर्र-त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व जअ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा **(6)** इन् अह्सन्तुम् अह्सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम्, व इन् अ-सअ्तुम् फ़-लहा, फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दुल्-आख़िरति लि-यसूऊ वुजू-हकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा **(7)**

سُوْرَةُ الْاِسْرَاۗءِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهٗ
هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى
لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ مَنْ
حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ
اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۭ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَ
جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ
وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا ۭ فَاِذَا جَاۗءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْۗءٗا وُجُوْهَكُمْ
وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا
تَتْبِيْرًا ۝ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ
هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ

अ़सा रब्बुकुम् अंय्यर्‌ह-मकुम् व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्‌ना ✣ व जअ़ल्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न हसीरा **(8)** इन्-न हाज़ल्क़ुर्‌आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक़्वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् कबीरा **(9)** व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अअ्तद्‌ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा **(10)** ❖

व यद्‌अुल्-इन्सानु बिश्शर्रि दुआ-अहू बिल्ख़ैरि, व कानल्-इन्सानु अ़जूला **(11)** व जअ़ल्नल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ़-महौना आयतल्लैलि व जअ़ल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-रतल्-लितब्तग़ू फ़ज़्लम् मिर्रब्बिकुम् व लितअ्-लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्-हिसा-ब, व कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला **(12)** व कुल्-ल इन्सानिन् अल्ज़म्ना ताइ-रहू फ़ी अ़ुनुक़िही, व नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्-यल्क़ाहु मन्शूरा **(13)** इक्रअ् किता-ब-क, कफ़ा बिनफ़्सिकल्-यौ-म अ़लै-क हसीबा **(14)** मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा, व

لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۙ﴿۹﴾ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۰﴾ وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ۭ ع
وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿۱۱﴾ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ
فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ﴿۱۲﴾ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۭ
وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ﴿۱۳﴾ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ
كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾
وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ
الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا
بَصِيْرًا ﴿۱۷﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَاۗءُ
لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ

ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व मा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबी-न हत्ता नब्‌अ़-स रसूला **(15)** व इज़ा अरद्‌ना अन्नुह्लि-क क़र्-यतन् अमर्‌ना मुत्-रफ़ीहा फ़-फ़-सक़ू फ़ीहा फ़-हक़्-क़ अ़लैहल्क़ौलु फ़-दम्मर्‌नाहा तद्‌मीरा **(16)** व कम् अह्लक्ना मिनल्क़ुरूनि मिम्-बअ्दि नूहिन्, व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(17)** मन् का-न युरीदुल्-आ़जि-ल-त अ़ज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशा-उ लिमन् नुरीदु सुम्-म जअ़ल्ना

लहू जहन्न-म यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरा **(18)** व मन् अरादल्-आख़िर-त व सआ़ लहा सअ़्-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क का-न सअ़्युहुम् मश्कूरा **(19)** कुल्लन्-नुमिद्दु हाउला-इ व हाउला-इ मिन् अ़ता-इ रब्बि-क, व मा का-न अ़ता-उ रब्बि-क मह्ज़ूरा **(20)** उन्ज़ुर् कै-फ फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्-ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, व लल्आख़िरतु अक्बरु द-रजातिंव्-व अक्बरु तफ़्ज़ीला **(21)** ला तज्अ़ल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला **(22)** ❖

व क़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअ़्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल्-वालिदैनि इह्सानन्, इम्मा यब्लुग़न्-न अ़िन्द-कल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा औ किलाहुमा फला तक़ुल्-लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्-लहुमा क़ौलन् करीमा **(23)** वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहज़्ज़ुल्लि मिनर्रह्मति व क़ुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा **(24)** रब्बुकुम् अअ़्लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम् इन् तकूनू सालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न ग़फ़ूरा **(25)** व आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्-मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा **(26)** इन्नल्- मुबज़्ज़िरी-न कानू इख़्वानश्-शयातीनि, व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा **(27)** व इम्मा तुअ़्रिज़न्-न अ़न्हुमुब्तिग़ा-अ रह्मतिम्- मिर्रब्बि-क तर्जूहा फ़क़ुल्-लहुम् क़ौलम्-मैसूरा **(28)** व ला तज्अ़ल् य-द-क मग़्लू-लतन् इला अ़ुनुक़ि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ़-तक़्अु-द मलूमम्-मह्सूरा **(29)** इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(30)** ❖

مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝١٩ كُلًّا نُمِدُّ هَٰؤُلَاءِ
وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝٢٠
انْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ
دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝٢١ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ
مَذْمُومًا مَخْذُولًا ۝٢٢ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَ
بِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ
كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا
كَرِيمًا ۝٢٣ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ
رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا ۝٢٤ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ
إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝٢٥ وَآتِ
ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ۝٢٦
إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ
لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝٢٧ وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ
تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَيْسُورًا ۝٢٨ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً
إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَحْسُورًا ۝٢٩
إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ

❖ रु. 2/12/2 ❖ रु. 3/8/3

व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श्य-त इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम्, इन्-न क़त्लहुम् का-न ख़ित्अन् कबीरा **(31)** व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहि-शतन्, व सा-अ सबीला **(32)** व ला तक़्तुलून्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, व मन् क़ुति-ल मज़्लूमन् फ़-क़द् ज़अ़ल्ना लि-वलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़्-फ़िल्क़त्लि, इन्नहू का-न मन्सूरा **(33)** व ला तक़्रबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ू बिल्अ़ह्दि इन्नल्-अ़ह्-द का-न मस्ऊला **(34)** व औफ़ुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीमि, ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला **(35)** व ला तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नस्सम्-अ़ वल्ब-स-र वल्फ़ुआ-द कुल्लु उलाइ-क का-न अ़न्हु मस्ऊला **(36)** व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन् इन्न-क लन् तख़्रिक़ल्-अर्-ज़ व लन् तब्लुग़ल्-जिबा-ल तूला **(37)** कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू अ़िन्-द रब्बि-क मक्रूहा **(38)** ज़ालि-क मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्-हिक्मति, व ला तज्अ़ल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तुल्क़ा फ़ी जहन्न-म मलूमम्-मद्हूरा **(39)** अ-फ़अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़ा-ज़ मिनल्-मलाइ-कति इनासन्, इन्नकुम् ल-तक़ूलू-न क़ौलन् अ़ज़ीमा **(40)** ❖

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि लि-यज़्ज़क्करू, व मा यज़ीदुहुम् इल्ला

خبیرا بصیرا ﴿٣٠﴾ ولا تقتلوا اولادکم خشیة املاق نحن
نرزقهم وایاکم ان قتلهم کان خطا کبیرا ﴿٣١﴾ ولا تقربوا
الزنی انه کان فاحشة وساء سبیلا ﴿٣٢﴾ ولا تقتلوا النفس
التی حرم الله الا بالحق ومن قتل مظلوما فقد جعلنا
لولیه سلطنا فلا یسرف فی القتل انه کان منصورا ﴿٣٣﴾
ولا تقربوا مال الیتیم الا بالتی هی احسن حتی یبلغ
اشده واوفوا بالعهد ان العهد کان مسؤلا ﴿٣٤﴾ واوفوا
الکیل اذا کلتم وزنوا بالقسطاس المستقیم ذلک خیر
واحسن تاویلا ﴿٣٥﴾ ولا تقف ما لیس لک به علم ان السمع
والبصر والفؤاد کل اولئک کان عنه مسؤلا ﴿٣٦﴾ ولا تمش
فی الارض مرحا انک لن تخرق الارض ولن تبلغ الجبال
طولا ﴿٣٧﴾ کل ذلک کان سیئه عند ربک مکروها ﴿٣٨﴾ ذلک مما
اوحی الیک ربک من الحکمة ولا تجعل مع الله الها
اخر فتلقی فی جهنم ملوما مدحورا ﴿٣٩﴾ افاصفکم ربکم
بالبنین واتخذ من الملئکة اناثا انکم لتقولون قولا
عظیما ﴿٤٠﴾ ولقد صرفنا فی هذا القران لیذکروا وما یزیدهم

नुफ़ूरा **(41)** क़ुल् लौ का-न म-अ़हू आलि-हतुन् कमा यक़ूलू-न इज़ल्-लब्तग़ौ इला ज़िल्-अ़र्शि सबीला **(42)** सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यक़ूलू-न अ़ुलुव्वन् कबीरा **(43)** तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्अ़ु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, व इम्-मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्-ला तफ़्क़हू-न तस्बी-हहुम्, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा **(44)** व इज़ा क़रअ्तल्-क़ुर्आ-न जअ़ल्ना बैन-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति हिजाबम्-मस्तूरा **(45)** व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अय्यंफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इज़ा ज़कर्-त रब्ब-क फ़िल्क़ुरआनि वह्दहू वल्लौ अ़ला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा **(46)** नह्नु अअ़्लमु बिमा यस्तमिअ़ू-न बिही इज़् यस्तमिअ़ू-न इलै-क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यक़ूलुज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअ़ू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा **(47)** उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू लकल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअ़ू-न सबीला ◆ **(48)** व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव्-व रुफ़ातन् अ-इन्ना

بنی اسرآءیل ۱۷ ۲۵۹ سبحٰن الذی ۱۵

إِلَّا نُفُورًا ۝ قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّابْتَغَوْا
إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا
كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ
وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ
إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ
بَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ۝ وَجَعَلْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِذَا
ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ۝
نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ
نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ۝
انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
سَبِيلًا ۝ وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا
جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ
فِي صُدُورِكُمْ ۚ فَسَيَقُولُونَ مَن يُعِيدُنَا ۖ قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ ۖ
قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ

منزل ٤

लमब्अ़ूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा **(49)** क़ुल् कूनू हिजा-रतन् औ हदीदा **(50)** औ खल्क़म्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स-यक़ूलू-न मंय्युअ़ीदुना, क़ुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़-सयुन्ग़िज़ू-न इलै-क रुऊ-सहुम् व यक़ूलू-न मता हु-व, क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न क़रीबा **(51)** यौ-म यद्अ़ूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तजुन्नू-न इल्लबिस्तुम्

इल्ला क़लीला **(52)** ❖

व क़ुल्-लिअ़िबादी यक़ूलुल्लती हि-य अह्सनु, इन्नश्शैता-न यन्ज़गु बैनहुम्, इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम्-मुबीना **(53)** रब्बुकुम् अअ़्लमु बिकुम्, इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् युअ़ज़्ज़िब्कुम्, व मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् वकीला **(54)** व रब्बु-क अअ़्लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व ल-क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ्ज़न्नबिय्यी-न अ़ला बअ्ज़िंव्-व आतैना दावू-द ज़बूरा **(55)** क़ुलिद्अुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश्फ़ज़्ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह्वीला **(56)** उलाइ-कल्लज़ी-न यद्अू-न यब्तग़ू-न इला रब्बिहिमुल्-वसी-ल-त अय्युहुम् अक़्रबु व यर्जू-न रह्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अ़ज़ाबहू, इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क का-न मह्ज़ूरा **(57)** व इम्-मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल यौमिल्-क़ियामति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदन्, का-न ज़ालि-क फ़िल्किताबि मस्तूरा **(58)** व मा म-न-अ़ना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति इल्ला अन् कज़्ज़-ब बिहल्-अव्वलू-न, व आतैना समूदन्ना-क़-त मुब्सि-रतन् फ़-ज़-लमू बिहा, व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा **(59)** व इज़् क़ुल्ना ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त बिन्नासि, व मा जअ़ल्नर्रुअ्यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित्न-तल्-लिन्नासि वश्श-ज-रतल्-मल्अ़ून-त फ़िल्क़ुर्आनि, व नुख़व्विफ़ुहुम् फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला तुग़्यानन्

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ ١٥   ٢٦٠   بنیٓ اسرآءیل ١٧

وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٥٢ وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ
لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝٥٣ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ
اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ۝٥٤ وَرَبُّكَ
اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ
عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝٥٥ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ۝٥٦
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ
وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ
مَحْذُوْرًا ۝٥٧ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٥٨
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ۭ
وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ۭ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ
اِلَّا تَخْوِيْفًا ۝٥٩ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ۭ وَمَا جَعَلْنَا
الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي
الْقُرْاٰنِ ۭ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ۝٦٠ وَاِذْ قُلْنَا

منزل ٤

कबीरा **(60)** ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, क़ा-ल अ-अस्जुदु लिमन् ख़लक़्-त तीना **(61)** क़ा-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ़लय्-य, ल-इन् अख़्ख़र्तनि इला यौमिल्-क़ियामति ल-अह्तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला **(62)** क़ालज़्हब् फ़-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् फ़-इन्-न जहन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा **(63)** वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-तअ़्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि-क व रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्अम्वालि वल्-औलादि व अ़िद्हुम्, व मा यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा **(64)** इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन्, व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला **(65)** रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल्-फ़ुल्-क फ़िल्बहिर लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू का-न बिकुम् रहीमा **(66)** व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िल्बहिर ज़ल्-ल मन् तद्अ़ू-न इल्ला इय्याहु फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्-बर्रि अअ़्रज़्तुम्, व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा **(67)** अ-फ़-अमिन्तुम् अंय्यख़्सि-फ़ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला **(68)** अम् अमिन्तुम् अंय्युअ़ी-दकुम् फ़ीहि ता-रतन् उख़्रा फ़युरसि-ल अ़लैकुम् क़ासिफ़म्-मिनर्-रीहि फ़युग़्रि-ककुम् बिमा कफ़र्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अ़लैना बिही तबीआ़ **(69)** व ल-क़द् कर्रम्ना बनी आद-म व हमल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बहिर व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ
خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ
اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ
اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾
وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ
بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ
سُلْطٰنٌ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾ رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ
فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۶۶﴾ وَاِذَا
مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ
اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿۶۷﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ
بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا
لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿۶۹﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ

❖ रु. 6/8/6

फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़ला कसीरिम्-मिम्मन् ख़लक़्ना तफ़्ज़ीला **(70)** ❖

यौ-म नद्अू कुल्-ल उनासिम् बि-इमामिहिम् फ़-मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-उलाइ-क यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न फ़तीला **(71)** व मन् का-न फ़ी हाज़िही अअ़्मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ़्मा व अज़ल्लु सबीला **(72)** व इन् कादू लयफ़्तिनू-न-क अ़निल्लज़ी औहैना इलै-क लितफ़्तरि-य अ़लैना ग़ैरहू व इज़ल् लत्त-ख़ज़ू-क ख़लीला **(73)** व लौ ला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द् कित्-त तर्-कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला **(74)** इज़ल् ल-अज़क़्ना-क ज़िअ़्फ़ल्-हयाति व ज़िअ़्फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अ़लैना नसीरा **(75)** व इन् कादू लयस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा व इज़ल्-ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला **(76)** सुन्न-त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह्वीला **(77)** ❖

अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल्-फ़ज्रि, इन्-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा **(78)** व मिनल्लैलि फ़-तहज्जद् बिही नाफ़ि-लतल् ल-क अ़सा अंय्यब्अ़-स-क रब्बु-क मक़ामम्-मह्मूदा **(79)** व क़ुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्ख़-ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्र-ज सिद्क़िंव्-वज्अ़ल्-ली मिल्लदुन्-क सुल्तानन् नसीरा **(80)** व क़ुल् जाअल्-हक़्क़ु व ज़-हक़ल्-बातिलु, इन्नल्-बाति-ल का-न ज़हूक़ा **(81)** व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुर्आनि मा हु-व शिफ़ाउंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न

خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ
أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ
فَتِيلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ
وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝ وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا
إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۖ وَإِذًا لَاتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ۝ وَلَوْلَا
أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۝ إِذًا لَأَذَقْنَاكَ
ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۝
وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا ۖ وَإِذًا
لَا يَلْبَثُونَ خِلَافَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ
مِنْ رُسُلِنَا ۖ وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝ أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ
الشَّمْسِ إِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ
مَشْهُودًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ عَسَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ
رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا ۝ وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَ
أَخْرِجْنِي مُخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ۝
وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۚ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۙ وَلَا يَزِيدُ

इल्ला ख़सारा **(82)** व इज़ा अन्अ़म्ना अ़लल्-इन्सानि अअ़्र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु का-न यऊसा **(83)** क़ुल् कुल्लुंय्यअ़्मलु अ़ला शाकि-लतिही, फ़रब्बुकुम् अअ़्लमु बिमन् हु-व अह्दा सबीला **(84)** ❖

व यस्अलून-क अ़निर्रूहि क़ुलिर्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्-अ़िल्मि इल्ला क़लीला **(85)** व ल-इन् शिअ्ना लनज़्ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म ला तजिदु ल-क बिही अ़लैना वकीला **(86)** इल्ला रह्म-तम् मिर्रब्बि-क, इन्-न फ़ज़्लहू का-न अ़लै-क कबीरा **(87)** क़ुल् ल-इनिज्त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़ला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-क़ुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ़्ज़ुहुम् लिबअ़्ज़िन् ज़हीरा **(88)** व ल-क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा **(89)** व क़ालू लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता तफ़्जु-र लना मिनल्-अर्ज़ि यम्बूआ **(90)** औ तकू-न ल-क जन्नतुम् मिन् नख़ीलिंव्-व अ़ि-नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ़्जीरा **(91)** औ तुस्क़ितस्समा-अ कमा ज़अ़म्-त अ़लैना कि-सफ़न् औ तअ्ति-य बिल्लाहि वल्मलाइ-कति क़बीला **(92)** औ यकू-न ल-क बैतुम्-मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा फ़िस्समा-इ, व लन् नुअ्मि-न लिरुक़िय्यि-क हत्ता तुनज़्ज़ि-ल अ़लैना किताबन् नक़्रउहू, क़ुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-शरर्-रसूला **(93)** ❖

الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿۸۲﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَی الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ
نَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ یَئُوْسًا ﴿۸۳﴾ قُلْ كُلٌّ یَّعْمَلُ عَلٰی
شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰی سَبِیْلًا ﴿۸۴﴾ وَیَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ
الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَآ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا
قَلِیْلًا ﴿۸۵﴾ وَلَىِٕنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْٓ اَوْحَیْنَآ اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ
لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًا ﴿۸۶﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ
عَلَیْكَ كَبِیْرًا ﴿۸۷﴾ قُلْ لَّىِٕنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓی اَنْ یَّاْتُوْا
بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ظَهِیْرًا ﴿۸۸﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؗ
فَاَبٰٓی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۸۹﴾ وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفْجُرَ
لَنَا مِنَ الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًا ﴿۹۰﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ
عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًا ﴿۹۱﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا
زَعَمْتَ عَلَیْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓىِٕكَةِ قَبِیْلًا ﴿۹۲﴾ اَوْ یَكُوْنَ
لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰی فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ
حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا
بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۳﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓی

व मा म-नअ़न्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अहुमुल्-हुदा इल्ला अन् क़ालू अ-ब-अ़सल्लाहु ब-शररसूला **(94)** क़ुल् लौ का-न फ़िल्अर्ज़ि मलाइ-कतुंय्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न लनज़्ज़ल्ना अ़लैहिम् मिनस्समा-इ म-लकर्रसूला **(95)** क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा **(96)** व मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ मिन् दूनिही, व नह्शुरुहुम् यौमल्-क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम् अ़ुम्यंव्-व बुक्मंव्-व सुम्मन्, मअ्वाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा ख़बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा ● **(97)** ज़ालि-क जज़ा-उहुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव्-व रुफ़ातन् अ-इन्ना लमब्अ़ूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा **(98)** अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ क़ादिरुन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् व ज-अ़-ल लहुम् अ-जलल्-ला रै-ब फ़ीहि, फ़-अबज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा **(99)** क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न रह्मति रब्बी इज़ल् ल-अम्सक्तुम् ख़श्य-तल्-इन्फ़ाक़ि, व कानल्-इन्सानु क़तूरा **(100)** ❖

व ल-क़द् आतैना मूसा तिस्-अ़ आयातिम्-बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई-ल इज़् जा-अहुम् फ़क़ा-ल लहू फ़िर्ऑनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा **(101)** क़ा-ल ल-क़द् अ़लिम्-त मा अन्ज़-ल हाउला-इ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि बसाइ-र व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्ऑनु मस्बूरा **(102)** फ़-अरा-द अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्-अर्ज़ि

إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ
مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا
رَسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَنْ
تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۖ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ
وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا ۖ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ
سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا أَإِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ
اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ
لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ
الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ ۖ فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ
إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَٰؤُلَاءِ
إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ
مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ

फ़-अग्रक़्नाहु व मम्-म-अ़हू जमीआ (103) व क़ुल्ना मिम्-बअ़्दिही लि-बनी इस्राईलस्कुनुल्-अर्-ज़ फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दुल्-आख़िरति जिअ़्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा (104) व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़-ल, मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ∴ (105) व क़ुर्आनन् फ़रक़्नाहु लितक़्र-अहू अ़लन्नासि अ़ला मुक्सिंव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (106) क़ुल् आमिनू बिही औ ला तुअ़्मिनू, इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्-इ़ल्-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अ़लैहिम् यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा (107) व यक़ूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न वअ़्दु रब्बिना ल-मफ़्अ़ूला (108) व यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूआ ❑ (109) क़ुलिद्-अ़ुल्ला-ह अविद्अ़ुर्रह्मा-न, अय्यम् मा तद्अ़ू फ़-लहुल्- अस्माउल्-हुस्ना व ला तज्हर् बि-सलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला (110) व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्-लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम्- मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा (111) ❖

18 सूरतुल्-कह्फ़ि 69

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6620 अक्षर, 1201 शब्द 110 आयतें और 12 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अ़ला अ़ब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्अ़ल्-लहू

अि-वजा **(1)** क़य्यिमल् लियुन्ज़ि-र बअ्सन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् ह-सना **(2)** माकिसी-न फ़ीहि अ-बदा **(3)** व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदा **(4)** मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिंव्-व ला लि-आबाइहिम्, कबुरत् कलि-मतन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम्, इंय्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा **(5)** फ़-लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अ़ला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्-हदीसि अ-सफ़ा **(6)** इन्ना जअ़ल्ना मा अ़लल्- अर्ज़ि ज़ी-नतल्-लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु अ्-मला **(7)** व इन्ना लजाअ़िलू-न मा अ़लैहा सअ़ीदन् जुरुज़ा **(8)** अम् हसिब्-त अन्-न अस्हाबल्-कह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ्-जबा **(9)** इज़् अवल्-फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ि फ़क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्-क रह्म-तंव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा **(10)** फ़-ज़रब्ना अ़ला आज़ानिहिम् फ़िल्-कह्फ़ि सिनी-न अ्-ददा **(11)** सुम्-म बअ़स्नाहुम् लि-नअ़्ल-म अय्युहल्-हिज़्बैनि अह्सा लिमा लबिसू अ-मदा **(12)** ❖

नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क न-ब-अहुम् बिल्हक़्क़ि, इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व ज़िद्नाहुम् हुदा **(13)** व रबत्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् इज़् क़ामू फ़क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्-नद्अु-व मिन् दूनिही इलाहल्-ल-क़द् क़ुल्ना इज़न् श-तता **(14)** हाउला-इ क़ौमुनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, लौ ला यअ्तू-न अ़लैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन्, फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबा **(15)** व

أَبَدًا ﴿٣﴾ وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ﴿٤﴾ مَا لَهُم بِهِ مِنْ
عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ۚ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِن
يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِن لَّمْ
يُؤْمِنُوا بِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ﴿٦﴾ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً
لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا
صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٨﴾ أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ
كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا
آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾ فَضَرَبْنَا عَلَىٰ
آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ
الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ﴿١٢﴾ نَّحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم
بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾ وَرَبَطْنَا
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَن نَّدْعُوَ مِن دُونِهِ إِلَٰهًا ۖ لَّقَدْ قُلْنَا إِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هَٰؤُلَاءِ قَوْمُنَا
اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ لَّوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾ وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ
وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأْوُوا إِلَى الْكَهْفِ يَنشُرْ لَكُمْ رَبُّكُم مِّن

इज़िअ्-तज़ल्तुमूहुम् व मा यअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह फ़अ्वू इलल्-कह्फ़ि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फ़का (16) व-तरश्शम्-स इज़ा त-लअ़त्तज़ा-वरु अ़न् कह्फ़िहिम् ज़ातल्-यमीनि व इज़ा ग़-रबत् तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फ़ी फ़ज्वतिम् मिन्हु, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि, मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा (17) ❖

व तह्सबुहुम् ऐकाज़ंव्-व हुम् रुकूदुंव्-व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्-यमीनि व ज़ातश्शिमालि व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराअ़ैहि बिल्-वसीदि, लवित्त-लअ्-त अ़लैहिम् लवल्लै-त मिन्हुम् फ़िरारंव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्बा (18) व कज़ालि-क बअ़स्नाहुम् लि-य-तसाअलू बैनहुम्, क़ा-ल क़ाइलुम्- मिन्हुम् कम् लबिस्तुम्, क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन्, क़ालू रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा लबिस्तुम् फ़ब्अ़सू अ-ह-दकुम् बिवरिक़िकुम् हाज़िही इलल्-मदीनति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआ़मन् फ़ल्यअ्तिकुम् बिरिज़्क़िम्- मिन्हु वल्य-त-✪-लत्तफ़् व ला युश्अिरन्-न बिकुम् अ-हदा (19) इन्नहुम् इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् यर्जुमूकुम् औ युअ़ीदूकुम् फ़ी मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न् अ-बदा (20) व कज़ालि-क अअ्सर्ना अ़लैहिम् लि-यअ्लमू अन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व अन्नस्साअ़-त ला रै-ब फ़ीहा, इज़् य-तना-ज़अू-न बैनहुम् अम्रहुम् फ़क़ालुब्नू अ़लैहिम् बुन्यानन्, रब्बुहुम् अअ्लमु बिहिम्, क़ालल्लज़ी-न ग़-लबू अ़ला अम्रिहिम्

رَحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا
طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ
ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مَنْ
يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا
مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ
لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾
وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ
لَبِثْتُمْ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا
لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ
اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ
بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ
فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا اِذْ
يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ
اَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ

ع ٢/٥ ١٤

❖ रु. 2/5/14 ✪ हुरूफ़ की तायदाद के हिसाब से यहाँ आधा क़ुरआन हो गया।

ल-नत्तख़िज़न्-न अ़लैहिम् मस्जिदा **(21)** स-यक़ूलू-न सला-सतुर्-राबिअ़ुहुम् कल्बुहुम् व यक़ूलू-न ख़म्सतुन् सादिसुहुम् कल्बुहुम् रज्मम्-बिल्ग़ैबि व यक़ूलू-न सब्अ़तुंव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम्, क़ुर्रब्बी अअ़्लमु बिअ़िद्दतिहिम् मा यअ़्लमुहुम् इल्ला क़लीलुन्, फ़ला तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव्-व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम् मिन्हुम् अ-हदा **(22)** ❖

व ला तक़ूलन्-न लिशैइन् इन्नी फ़ाअ़िलुन् ज़ालि-क ग़दा **(23)** इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, वज़्कुर्-रब्ब-क इज़ा नसी-त व क़ुल् अ़सा अंय्यह्दि-यनि रब्बी लिअक़्र-ब मिन् हाज़ा र-शदा **(24)** व लबिसू फ़ी कह्फ़िहिम् सला-स मि-अतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्अ़ा **(25)** क़ुलिल्लाहु अअ़्लमु बिमा लबिसू लहू ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि अब्सिर् बिही व अस्मिअ़्, मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-व ला युश्रिकु फ़ी हुक्मिही अ-हदा **(26)** वत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही, व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा **(27)** वस्बिर् नफ़्स-क मअ़ल्लज़ी-न यद्अ़ू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ़्दु अ़ैना-क अ़न्हुम् तुरीदु ज़ी-नतल्-हयातिद्दुन्या व ला तुतिअ़् मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू अ़न् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ़ हवाहु व का-न अम्रुहू फ़ुरुता ▲ **(28)** व क़ुलिल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम्, फ़-मन् शा-अ फ़ल्युअ्मिंव्-व मन् शा-अ फ़ल्यक्फ़ुर् इन्ना अअ़्तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् अहा-त बिहिम् सुरादिक़ुहा, व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल्-वुजू-ह, बिअ्सश्शराबु, व साअत् मुर्त-फ़क़ा **(29)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्-र मन्

مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُولُونَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ
كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَّبِّيْٓ
اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً
ظَاهِرًا وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ
فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ
عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ
ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا لَهٗ
غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ
كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ
فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ
فَلْيَكْفُرْ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَاِنْ
يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَ

अह्स-न अ़-मला **(30)** उलाइ-क लहुम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व यल्बसू-न सियाबन् ख़ुज़्रम्-मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तबरक़िम्-मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल् अराइकि, निअ़्मस्सवाबु, व हसुनत् मुर्‌त-फ़क़ा **(31)** ❖

वज़्रिब् लहुम् म-सलर्-रजुलैनि जअ़ल्ना लि-अ-हदिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ़्नाबिंव्-व हफ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव्-व जअ़ल्ना बैनहुमा ज़र्‌आ़ **(32)** किल्तल्-जन्नतैनि आतत् उकु-लहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फ़ज्जर्‌ना ख़िला-लहुमा न-हरा **(33)** व का-न लहू स-मरुन् फ़क़ा-ल लिसाहिबिही व हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अ़ज़्ज़ु न-फ़रा **(34)** व द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल् लिनफ़्सिही क़ा-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द हाज़िही अ-बदा **(35)** व मा अज़ुन्नुस्सा-अ़-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़-लबा **(36)** क़ा-ल लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू अ-कफ़र्-त बिल्लज़ी ख़-ल-क़-क मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला **(37)** लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बिरब्बी अ-हदा **(38)** व लौ ला इज़् दख़ल्-त जन्न-त-क क़ुल्-त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि अ-न अक़ल्-ल मिन्-क मालंव्-व व-लदा **(39)** फ़-अ़सा रब्बी अंय्युअ्ति-यनि ख़ैरम्-मिन् जन्नति-क व युरसि-ल अ़लैहा हुस्बानम्-मिनस्समा-इ फ़तुस्बि-ह सअ़ीदन् ज़-लक़ा **(40)** औ युस्बि-ह माउहा ग़ौरन् फ़-लन्

سَاءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ
مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُونَ ثِيَابًا
خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ
الثَّوَابُ ۚ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا
لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا
بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّ
فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾ وَّكَانَ لَهُ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ
أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ
قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هٰذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾ وَّمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّ
لَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ
وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾ لٰكِنَّا هُوَ اللّٰهُ رَبِّي وَلَآ أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾ وَلَوْلَآ
إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ ۚ إِنْ تَرَنِ أَنَا
أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّي أَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ أَوْ

तस्तती-अ़ लहू त-लबा **(41)** व उही-त बि-स-मरिही फ़-अस्ब-ह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि अ़ला मा अन्फ़-क़ फ़ीहा व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा व यक़ूलु यालैतनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ-हदा **(42)** व लम् तकुल्लहू फ़ि-अतुंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा **(43)** हुनालिकल्-वला-यतु लिल्लाहिल्-हक़्क़ि, हु-व ख़ैरुन् सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ़ुक़्बा **(44)** ❖

वज़्रिब् लहुम् म-सलल्-हयातिद्दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़अस्ब-ह हशीमन् तज़्रूहुर्रियाहु, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़्तदिरा **(45)** अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-हयातिद्दुन्या वल्बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ-मला **(46)** व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व तरल्-अर्-ज़ बारि-ज़तंव्-व हशर्नाहुम् फ़-लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ-हदा **(47)** व अ़ुरिज़ू अ़ला रब्बि-क सफ़्फ़न्, ल-क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज़अ़म्तुम् अल्-लन् नज्-अ़-ल लकुम् मौअ़िदा **(48)** व वुज़िअ़ल्-किताबु फ़-तरल्-मुज्रिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू-न यावैल-तना मा लि-हाज़ल्-किताबि ला युग़ादिरु सग़ी-रतंव्-व ला कबी-रतन् इल्ला अह्साहा व व-जदू मा अ़मिलू हाज़िरन्, व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-हदा **(49)** ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, का-न मिनल्-जिन्नि फ़-फ़-स-क़ अ़न् अम्रि रब्बिही, अ-फ़-तत्तख़िज़ूनहू व ज़ुर्रिय्य-तहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अ़दुव्वुन्, बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न ब-दला **(50)** मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्-

يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝ وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ
يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَآ أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ
يَٰلَيْتَنِى لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّىٓ أَحَدًا ۝ وَلَمْ تَكُن لَّهُ فِئَةٌ يَنصُرُونَهُ مِن
دُونِ ٱللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝ هُنَالِكَ ٱلْوَلَٰيَةُ لِلَّهِ ٱلْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ
ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝ وَٱضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا كَمَآءٍ
أَنزَلْنَٰهُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ فَٱخْتَلَطَ بِهِۦ نَبَاتُ ٱلْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا
تَذْرُوهُ ٱلرِّيَٰحُ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ ٱلْمَالُ وَٱلْبَنُونَ
زِينَةُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَٱلْبَٰقِيَٰتُ ٱلصَّٰلِحَٰتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ ٱلْجِبَالَ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ بَارِزَةً وَ
حَشَرْنَٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَعُرِضُوا۟ عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا
لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍۭ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ
لَكُم مَّوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ ٱلْكِتَٰبُ فَتَرَى ٱلْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا
فِيهِ وَيَقُولُونَ يَٰوَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا ٱلْكِتَٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا
كَبِيرَةً إِلَّآ أَحْصَىٰهَا وَوَجَدُوا۟ مَا عَمِلُوا۟ حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَٰٓئِكَةِ ٱسْجُدُوا۟ لِءَادَمَ فَسَجَدُوٓا۟ إِلَّآ إِبْلِيسَ
كَانَ مِنَ ٱلْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِۦٓ أَفَتَتَّخِذُونَهُۥ وَذُرِّيَّتَهُۥٓ أَوْلِيَآءَ

समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्-क़ अन्फ़ुसिहिम् व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल्-मुज़िल्ली-न अ़ज़ुदा (51) व यौ-म यक़ूलु नादू शु-रकाइ-यल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व जअ़ल्ना बैनहुम् मौबिक़ा (52) व र-अल् मुज्रिमूनन्ना-र फ़-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा व लम् यजिदू अ़न्हा मस्रिफ़ा (53) ❖

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-दला (54) व मा म-नअ़न्-ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जाअहुमुल्हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु क़ुबुला (55) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व युजादिलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क़ वत्त-ख़ज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा (56) व मन् अज़्लमु मिम्-मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही फ़-अअ़्र-ज़ अ़न्हा व नसि-य मा क़द्दमत् यदाहु, इन्ना जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्न-तन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इन् तद्अुहुम् इलल्-हुदा फ़-लंय्यह्तदू इज़न् अ-बदा (57) व रब्बुकल्-ग़फ़ूरु ज़ुर्रह्मति, लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अ़ज्ज-ल लहुमुल्-अ़ज़ा-ब, बल्-लहुम् मौअिदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (58) व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक्नाहुम् लम्मा ज़-लमू व जअ़ल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअिदा (59) ❖

व इज़् क़ा-ल मूसा लि-फ़ताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लु-ग़ मज्म-अ़ल् बह्रैनि औ अम्ज़ि-य

الكهف ١٨ ٣٧١ سبحٰن الذی ١٥

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ۝ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ
خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ
النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَلَقَدْ
صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَاۗءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا
رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا
هُزُوًا ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ
مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝
وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ
الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝ وَتِلْكَ
الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝ وَاِذْ قَالَ

منزل

हुक़ुबा (60) फ़-लम्मा ब-लग़ा मज्म-अ़ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्त-ख़-ज़ सबीलहू फ़िल्बहि्र स-रबा (61) फ़-लम्मा जा-वज़ा क़ा-ल लि-फ़ताहु आतिना ग़दा-अना, ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना हाज़ा न-सबा (62) क़ा-ल अ-रऐ-त इज़् अवैना इलस्सख़्रति फ़-इन्नी नसीतुल्-हू-त व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कु-रहू वत्त-ख़-ज़ सबी-लहू फ़िल्बहि्र अ़-जबा (63) क़ा-ल ज़ालि-क मा कुन्ना नब़्ग़ि फ़र्तद्दा अ़ला आसारिहिमा क़-ससा (64) फ़-व-जदा अ़ब्दम्-मिन् अ़िबादिना आतैनाहु रह्म-तम् मिन् अ़िन्दिना व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अ़िल्मा (65) क़ा-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअु-क अ़ला अन् तुअ़ल्लि-मनि मिम्मा अ़ुल्लिम्-त रुश्दा (66) क़ा-ल इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा (67) व कै-फ़ तस्बिरु अ़ला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा (68) क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु साबिरंव्-व ला अअ़्सी ल-क अम्रा (69) क़ा-ल फ़-इनित्त-बअ़्तनी फ़ला तस्अल्नी अ़न् शैइन् हत्ता उह्दि-स ल-क मिन्हु ज़िक्रा (70) ❖

سبحن الذى ١٥ ٢٧٢ الكهف ١٨

مُوسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ؗ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ؗ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾ فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً ۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

منزل ٤

फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा रकिबा फ़िस्सफ़ी-नति ख़-र-क़हा, क़ा-ल अ-ख़रक़्तहा लितुग़्रि-क़ अह्लहा ल-क़द् जिअ्-त शैअन् इम्रा (71) क़ा-ल अलम् अक़ुल् इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा (72) क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अ़ुस्रा (73) फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़-क़-त-लहू क़ा-ल अ-क़तल्-त नफ़्सन् ज़किय्य-तम् बिग़ैरि नफ़्सिन्, ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा (74)

सोलहवाँ पारः का-ल अलम्

सूरतुल्-कह्फ़ि (आयत 75 से 110)

का-ल अलम् अक़ुल्-ल-क इन्न-क लन् तस्तती-अ मअि-य सब्रा (75) का-ल इन् सअल्तु-क अ़न् शैइम् बअ़्-दहा फ़ला तुसाहिब्नी क़द् बलग़्-त मिल्लदुन्नी अ़ुज़्रा (76) फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा अ-तया अह्-ल क़र्-यति-निस्तत्-अ़मा अह्लहा फ़-अबौ अंय्युज़य्यिफ़ूहुमा फ़-व-जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्-ज़ फ़-अक़ामहू, क़ा-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज़्-त अ़लैहि अज्रा (77) क़ा-ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि-क स-उनब्बिउ-क बितअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ़् अ़लैहि सब्रा (78) अम्मस्सफ़ी-नतु फ़-कानत् लि-मसाकी-न यअ़्मलू-न फ़िल्बहिर फ़-अरत्तु अन् अअ़ी-बहा व का-न वरा-अहुम् मलिकुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफ़ी-नतिन् ग़स्बा (79) व अम्मल्-ग़ुलामु फ़का-न अ-बवाहु मुअ्मिनैनि फ़-ख़शीना अंय्युर्हि-क़हुमा तुग़्यानंव्-व कुफ़्रा (80) फ़-अरद्ना अंय्युब्दि लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु ज़कातंव्-व अक़्र-ब रुह्मा (81) व अम्मल्-जिदारु फ़का-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्-मदीनति व का-न तह्तहू कन्ज़ुल्-लहुमा व का-न अबूहुमा सालिहन् फ़-अरा-द रब्बु-क अंय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्ज़हुमा रह्मतम् मिर्रब्बि-क व मा फ़अ़ल्तुहू अ़न् अम्री, ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ़् अ़लैहि सब्रा (82) ❖

व यस्अलून-क अ़न् ज़िल्क़र्नैनि, क़ुल् स-अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा (83) इन्ना

قال الم ١٦ ٢٧٣ الكهف ١٨

قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا ۝ قال ان
سالتك عن شيء بعدها فلا تصحبني قد بلغت من
لدني عذرا ۝ فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية استطعما
اهلها فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان
ينقض فاقامه قال لو شئت لتخذت عليه اجرا ۝ قال
هذا فراق بيني وبينك سانبئك بتاويل ما لم تستطع
عليه صبرا ۝ اما السفينة فكانت لمسكين يعملون في البحر
فاردت ان اعيبها وكان وراءهم ملك ياخذ كل سفينة
غصبا ۝ واما الغلم فكان ابوه مؤمنين فخشينا ان يرهقهما
طغيانا وكفرا ۝ فاردنا ان يبدلهما ربهما خيرا منه زكوة و
اقرب رحما ۝ واما الجدار فكان لغلمين يتيمين في المدينة
وكان تحته كنز لهما وكان ابوهما صالحا فاراد ربك ان
يبلغا اشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من ربك وما
فعلته عن امري ذلك تاويل ما لم تسطع عليه صبرا ۝
ويسئلونك عن ذي القرنين قل سأتلوا عليكم منه ذكرا ۝
انا مكنا له في الارض واتينه من كل شيء سببا ۝ فاتبع

منزل ٤

मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-बबा **(84)** फ़-अत्ब-अ़ स-बबा **(85)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मग़्रिबश्शम्सि व-ज-दहा तग़्रुबु फ़ी अ़ैनिन् हमि-अतिंव्-व व-ज-द अ़िन्दहा क़ौमन्, क़ुल्ना या ज़ल्क़र्नैनि इम्मा अन् तुअ़ज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज़ फ़ीहिम् हुस्ना **(86)** क़ा-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्-म युरद्दु इला रब्बिही फ़युअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा **(87)** व अम्मा मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ निल्हुस्ना व स-नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा **(88)** सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा **(89)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत्लिअ़श्शम्सि व-ज-दहा तत्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल्-लम् नज्अ़ल्-लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा **(90)** कज़ालि-क व क़द् अ-हत्ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा **(91)** सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा **(92)** हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ बैनस्सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा क़ौमल्-ला यकादू-न यफ़्क़हू-न क़ौला **(93)** क़ालू या ज़ल्क़र्नैनि इन्-न यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-हल् नज्अ़लु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्अ़-ल बैनना व बैनहुम् सद्दा **(94)** क़ा-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़-अअ़ीनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्अ़ल् बैनकुम् व बैनहुम् रद्मा **(95)** आतूनी ज़ु-बरल्-हदीदि, हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-दफ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू हत्ता इज़ा ज-अ़-लहू नारन् क़ा-ल आतूनी उफ़्रिग़् अ़लैहि क़ित्रा **(96)** फ़-मस्ताअ़ू अंय्यज़्हरूहु व मस्तताअ़ू लहू नक़्बा **(97)** क़ा-ल हाज़ा रह्मतुम्-मिर्रब्बी फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दु रब्बी ज-अ़-लहू दक्का-अ व का-न वअ़्दु रब्बी हक़्क़ा **(98)** व

سببا ٨٥ حتى اذا بلغ مغرب الشمس وجدها تغرب في
عين حمئة ووجد عندها قوما ۛ قلنا يذا القرنين اما
ان تعذب واما ان تتخذ فيهم حسنا ٨٦ قال اما من ظلم
فسوف نعذبه ثم يرد الى ربه فيعذبه عذابا نكرا ٨٧ واما
من امن وعمل صالحا فله جزاء الحسنى وسنقول له
من امرنا يسرا ٨٨ ثم اتبع سببا ٨٩ حتى اذا بلغ مطلع الشمس
وجدها تطلع على قوم لم نجعل لهم من دونها سترا ٩٠
كذلك وقد احطنا بما لديه خبرا ٩١ ثم اتبع سببا ٩٢ حتى
اذا بلغ بين السدين وجد من دونهما قوما لا يكادون
يفقهون قولا ٩٣ قالوا يذا القرنين ان ياجوج وماجوج
مفسدون في الارض فهل نجعل لك خرجا على ان
تجعل بيننا وبينهم سدا ٩٤ قال ما مكني فيه ربي خير فاعينوني
بقوة اجعل بينكم وبينهم ردما ٩٥ اتوني زبر الحديد حتى
اذا ساوى بين الصدفين قال انفخوا حتى اذا جعله نارا
قال اتوني افرغ عليه قطرا ٩٦ فما اسطاعوا ان يظهروه و
ما استطاعوا له نقبا ٩٧ قال هذا رحمة من ربي فاذا جاء

तरक्ना बअ्-ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्ज़िंव्-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-जमअ्नाहुम् जम्आ (99) व अ़रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्-लिल्काफ़िरी-न अ़र्ज़ा (100) अल्लज़ी-न कानत् अअ्युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीअू-न सम्आ (101) ❖

अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया-अ, इन्ना अअ्तद्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न नुज़ुला (102) क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरी-न अअ्माला (103) अल्लज़ी-न ज़ल्-ल सअ्युहुम् फ़िल्- हयातिद्दुन्या व हुम् यह्सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न सुन्आ (104) उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़-हबितत् अअ्मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्-क़ियामति वज़्ना (105) ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू वत्त-ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा (106) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर्दौसि नुज़ुला (107)

قال الم ١٦ ٢٧٥ الكهف ١٨

وعد ربي جعله دكاء وكان وعد ربي حقا ○ وتركنا
بعضهم يومئذ يموج في بعض ونفخ في الصور فجمعنهم
جمعا ○ وعرضنا جهنم يومئذ للكفرين عرضا ○ الذين
كانت اعينهم في غطاء عن ذكري وكانوا لا يستطيعون
سمعا ○ افحسب الذين كفروا ان يتخذوا عبادي من
دوني اولياء انا اعتدنا جهنم للكفرين نزلا ○ قل هل
ننبئكم بالاخسرين اعمالا ○ الذين ضل سعيهم في
الحيوة الدنيا وهم يحسبون انهم يحسنون صنعا ○ اولئك
الذين كفروا بايت ربهم ولقائه فحبطت اعمالهم فلا نقيم
لهم يوم القيمة وزنا ○ ذلك جزاؤهم جهنم بما كفروا
واتخذوا ايتي ورسلي هزوا ○ ان الذين امنوا وعملوا الصلحت
كانت لهم جنت الفردوس نزلا ○ خلدين فيها لا يبغون
عنها حولا ○ قل لو كان البحر مدادا لكلمت ربي لنفد البحر
قبل ان تنفد كلمت ربي ولو جئنا بمثله مددا ○ قل انما انا
بشر مثلكم يوحى الي انما الهكم اله واحد فمن كان يرجوا لقاء
ربه فليعمل عملا صالحا ولا يشرك بعبادة ربه احدا ○

منزل ٤

ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न अ़न्हा हि-वला (108) क़ुल् लौ कानल्-बह्रु मिदादल् लि-कलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बह्रु क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म-ददा (109) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-मन् का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल्यअ्मल् अ़-मलन् सालिहंव्-व ला युश्रिक् बिअ़िबादति रब्बिही अ-हदा (110) ❖

19 सूरतु मर्‌य-म 44

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3986 अक्षर, 968 शब्द 98 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

काफ़्-हा-या-अ़ैन्-सॉद् **(1)** ज़िक्रु रह़्मति रब्बि-क अ़ब्दहू ज़-करिय्या **(2)** इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या **(3)** क़ा-ल रब्बि इन्नी व-हनल्-अ़ज़्मु मिन्नी वश्त-अ़लर्रअ्सु शैबंव्-व लम् अकुम्-बिदुआ़इ-क रब्बि शक़िय्या **(4)** व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्‌र-अती आ़क़िरन् फ़-हब् ली मिल्लदुन्-क वलिय्या **(5)** यरिसुनी व यरिसु मिन् आलि यअ़्क़ू-ब, वज्अ़ल्हु रब्बि रज़िय्या **(6)** या ज़-करिय्या इन्ना नुबश्शिरु-क बिग़ुलामि-निस्मुहू यह़्या लम् नज्अ़ल्-लहू मिन् क़ब्लु समिय्या **(7)** क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व कानतिम्‌र-अती आ़क़िरंव्-व क़द् बलग़्तु मिनल्-कि-बरि अ़ितिय्या **(8)** क़ा-ल कज़ालि-क क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ़लय्-य हय्यिनुंव्-व क़द् ख़लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ **(9)** क़ा-ल रब्बिज्-अ़ल्-ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या **(10)** फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही मिनल्- मिह़्राबि फ़औहा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्र-तंव्-व अ़शिय्या **(11)** या यह़्या ख़ुज़िल्- किता-ब बिक़ुव्वतिन्, व आतैनाहुल्-हुक्-म सबिय्या **(12)** व हनानम्-मिल्लदुन्ना व ज़कातन्, व का-न तक़िय्या **(13)** व बर्रम्-बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या **(14)** व सलामुन् अ़लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु व यौ-म

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ
نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ
شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ
مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾
يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّآ
اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾
قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ
مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ
خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۚ
قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ
مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾ يٰيَحْيٰى
خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۚ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾ وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَزَكٰوةً ۚ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾ وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾ وَ
سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾ وَاذْكُرْ
فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ

युब्अ़सु हय्या (15) ❖

वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्‌य-म ✣ इज़िन्त-बज़त् मिन् अह्लिहा मकानन् शर्क़िय्या (16) फ़त्त-ख़ज़त् मिन् दूनिहिम् हिजाबन्, फ़-अर्सल्ना इलैहा रू-हना फ़-तमस्स-ल लहा ब-शरन् सविय्या (17) क़ालत् इन्नी अऊ़ज़ु बिर्रह्मानि मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (18) क़ा-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि लि-अ-ह-ब लकि गुलामन् ज़किय्या (19) क़ालत् अन्ना यकूनु ली गुलामुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ◆ (20) क़ा-ल कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि हु-व अ़लय्-य हय्यिनुन् व लिनज्अ़-लहू आयतल्-लिन्नासि व रह्म-तम्-मिन्ना व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (21) फ़-ह-मलत्हु फ़न्त-बज़त् बिही मकानन् क़सिय्या (22) फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्अिन्-नख़्लति क़ालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम्-मन्सिय्या (23) फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्ज़नी क़द् ज-अ़-ल रब्बुकि तह्तकि सरिय्या (24) व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अिन्-नख़्लति तुसाक़ित् अ़लैकि रु-तबन् जनिय्या (25) फ़कुली वश्रबी व क़र्री अ़ैनन् फ़-इम्मा त-रयिन्-न मिनल् ब-शरि अ-हदन् फ़क़ूली इन्नी नज़र्तु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल्- यौ-म इन्सिय्या (26) फ़-अतत् बिही क़ौमहा तह्मिलुहू, क़ालू या मर्‌यमु ल-क़द् जिअ्ति शैअन् फ़रिय्या (27) या उख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव्-व मा कानत् उम्मुकि बग़िय्या (28) फ़-अशारत् इलैहि, क़ालू कै-फ नुकल्लिमु मन् का-न फ़िल्मह्दि सबिय्या (29) क़ा-ल इन्नी अ़ब्दुल्लाहि, आतानियल्-किता-ब व ज-अ़-लनी नबिय्या (30) व ज-अ़-लनी मुबा-रकन् ऐ-न मा कुन्तु व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति

مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَآ إِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا
سَوِيًّا ۝ قَالَتْ إِنِّيْٓ أَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝ قَالَ إِنَّمَآ
أَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ
وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ هُوَ
عَلَيَّ هَيِّنٌ وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ أَمْرًا
مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ فَأَجَآءَهَا
الْمَخَاضُ إِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا
وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ أَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ
رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ وَهُزِّيْٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ
رُطَبًا جَنِيًّا ۝ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ
الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُوْلِيْٓ إِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ
الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝ فَأَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ
شَيْئًا فَرِيًّا ۝ يٰٓأُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ أَبُوْكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ
أُمُّكِ بَغِيًّا ۝ فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ
صَبِيًّا ۝ قَالَ إِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۝
وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا

मा दुम्तु हय्या **(31)** व बर्रम् बिवालि-दती व लम् यज्अ़ल्नी जब्बारन् शक़िय्या **(32)** वस्सलामु अ़लय्-य यौ-म वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्अ़सु हय्या **(33)** ज़ालि-क ओ़सब्नु मर्‌य-म क़ौलल्-हक़्क़िल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून **(34)** मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज़ मिंव्व-लदिन् सुब्हानहू, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(35)** व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम **(36)** फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़-वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम **(37)** अस्मिअ़् बिहिम् व अब्सिर् यौ-म यअ़्तूनना लाकिनिज़्ज़ालिमूनल्- यौ-म फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(38)** व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-हस्रति इज़् क़ुज़ियल्-अम्रु ✣ व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिंव्-व हुम् ला युअ्मिनून **(39)** इन्ना नह्नु नरिसुल्-अर्-ज़ व मन् अ़लैहा व इलैना युर्जअून **(40)** ❖

वज़्कुर् फ़िल्किताबि इब्राही-म, इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या **(41)** इज़् क़ा-ल लिअबीहि या अ-बति लि-म तअ़्बुदु मा ला यस्मअ़ु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अ़न्-क शैआ **(42)** या अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अ़िल्मि मा लम् यअ़्ति-क फ़त्तबिअ़्नी अह्दि-क सिरातन् सविय्या **(43)** या अ-बति ला तअ़्बुदिश्शैता-न, इन्नश्शैता-न का-न लिर्रह्मानि अ़सिय्या **(44)** या अ-बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य-मस्स-क अ़ज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ़-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या **(45)** क़ा-ल अराग़िबुन् अन्-त अ़न् आलि-हती या इब्राहीमु ल-इल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी मलिय्या **(46)** क़ा-ल सलामुन् अ़लै-क

قال الم ١٦ ٢٧٨ مريم ١٩

دمت حيا ﴿٣١﴾ وبرا بوالدتي ولم يجعلني جبارا شقيا ﴿٣٢﴾ والسلم
علي يوم ولدت ويوم اموت ويوم ابعث حيا ﴿٣٣﴾ ذلك عيسى
ابن مريم قول الحق الذي فيه يمترون ﴿٣٤﴾ ما كان لله ان
يتخذ من ولد سبحنه اذا قضى امرا فانما يقول له كن
فيكون ﴿٣٥﴾ وان الله ربي وربكم فاعبدوه هذا صراط مستقيم ﴿٣٦﴾
فاختلف الاحزاب من بينهم فويل للذين كفروا من مشهد
يوم عظيم ﴿٣٧﴾ اسمع بهم وابصر يوم ياتوننا لكن الظلمون
اليوم في ضلل مبين ﴿٣٨﴾ وانذرهم يوم الحسرة اذ قضي
الامر وهم في غفلة وهم لا يؤمنون ﴿٣٩﴾ انا نحن نرث
الارض ومن عليها والينا يرجعون ﴿٤٠﴾ واذكر في الكتب
ابرهيم انه كان صديقا نبيا ﴿٤١﴾ اذ قال لابيه يابت لم تعبد
ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيئا ﴿٤٢﴾ يابت اني قد
جاءني من العلم ما لم ياتك فاتبعني اهدك صراطا سويا ﴿٤٣﴾
يابت لا تعبد الشيطن ان الشيطن كان للرحمن عصيا ﴿٤٤﴾
يابت اني اخاف ان يمسك عذاب من الرحمن فتكون
للشيطن وليا ﴿٤٥﴾ قال اراغب انت عن الهتي يابرهيم لئن

منزل٤

स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी, इन्नहू का-न बी हफ़िय्या **(47)** व अअ़्तज़िलुकुम् व मा तद्‌अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्‌अू रब्बी अ़सा अल्ला अकू-न बिदुआ-इ रब्बी शक़िय्या **(48)** फ़-लम्मअ़्-त-ज़-लहुम् व मा यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब, व कुल्लन् जअ़ल्ना नबिय्या **(49)** व व-हब्ना लहुम् मिर्रह्मतिना व जअ़ल्ना लहुम् लिसा-न सिद्‌क़िन् अ़लिय्या **(50)** ❖

वज़्कुर् फ़िल्‌किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़्ल-संव्-व का-न रसूलन् नबिय्या **(51)** व नादैनाहु मिन् जानिबित्-तूरिल्-ऐ-मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या **(52)** व व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अख़ाहु हारू-न नबिय्या **(53)** वज़्कुर् फ़िल्‌किताबि इस्माअ़ी-ल इन्नहू का-न सादिक़ल्-वअ़्दि व का-न रसूलन् नबिय्या **(54)** व का-न यअ्मुरु अह्लहू बिस्सलाति वज़्ज़काति व का-न अ़िन्-द रब्बिही मर्‌ज़िय्या **(55)** वज़्कुर् फ़िल्‌किताबि इद्‌री-स इन्नहू का-न सिद्‌दीक़न् नबिय्या **(56)** व रफ़अ़्नाहु मकानन् अ़लिय्या **(57)** उलाइ-कल्लज़ी-न अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति आद-म, व मिम्-मन् हमल्ना म-अ़ नूहिंव्-व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म व इस्राई-ल, व मिम्-मन् हैदना वज्तबैना, इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुर्रह्मानि ख़र्‌रू सुज्जदंव्-व बुकिय्या ❑ **(58)** फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ़्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअ़ुस्सला-त वत्त-बअ़ुश्श-हवाति फ़सौ-फ़ यल्क़ौ-न ग़य्या **(59)** इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-उलाइ-क यद्‌ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न शैआ **(60)**

لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ سَاَسْتَغْفِرُ
لَكَ رَبِّیْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ﴿٤٧﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿٤٨﴾
فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ
وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ﴿٤٩﴾ وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَ
جَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِیًّا ﴿٥٠﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ع
اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَیْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ اَخَاهُ
هٰرُوْنَ نَبِیًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ
وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ وَكَانَ
عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِیًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِدْرِیْسَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّیْقًا
نَّبِیًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ
مِّنَ النَّبِیّٖنَ مِنْ ذُرِّیَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ
ذُرِّیَّةِ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْرَآءِیْلَ وَمِمَّنْ هَدَیْنَا وَاجْتَبَیْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى
عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِیًّا ﴿٥٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ یَلْقَوْنَ غَیًّا ﴿٥٩﴾

❖ रु. 3/10/6 ❑ सज्दा 5

जन्नाति अ़द्नि-निल्लती व-अ़दर्रह्मानु अ़िबादहू बिल्ग़ैबि इन्नहू का-न वअ़्दुहू मअ़्तिय्या (61) ला यस्मअ़ू-न फ़ीहा लग़्वन् इल्ला सलामन्, व लहुम् रिज़्कुहुम् फ़ीहा बुक्र-तंव्-व अ़शिय्या (62) तिल्कल्-जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अ़िबादिना मन् का-न तक़िय्या (63) व मा न-तनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बि-क लहू मा बै-न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क व मा का-न रब्बु-क नसिय्या (64) रब्बुस्- समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़अ़्बुद्हु वस्तबिर् लिअ़िबा-दतिही, हल् तअ़्लमु लहू समिय्या (65) ❖

व यक़ूलुल्-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु लसौ-फ़ उख़्रजु हय्या (66) अ-व ला यज़्कुरुल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ (67) फ़-व रब्बि-क लनह्शुरन्नहुम् वश्शयाती-न सुम्-म लनुह्ज़िरन्नहुम् हौ-ल जहन्न-म जिसिय्या (68) सुम्-म ल-नन्ज़िअ़न्-न मिन् कुल्लि शी-अ़तिन् अय्युहुम् अशद्दु अ़लर्रह्मानि अ़ितिय्या (69) सुम्-म ल-नह्नु अअ़्लमु बिल्लज़ी-न हुम् औला बिहा सिलिय्या (70) व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा का-न अ़ला रब्बि-क हत्मम्-मक़्ज़िय्या (71) सुम्-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़ौ व न-ज़रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (72) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अय्युल्-फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्-मक़ामंव्-व अह्सनु नदिय्या (73) व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अह्सनु असासंव्-व रिअ़्या (74) क़ुल् मन् का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्यम्दुद् लहुर्रह्मानु मद्दन्, हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न इम्मल्-अ़ज़ा-ब व

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ
وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَٰنُ عِبَادَهُ
بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ
وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ
عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝ وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ
أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝ رَبُّ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ
تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝ وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ
حَيًّا ۝ أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَٰنِ عِتِيًّا ۝
ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝ وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا
وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ۝ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَ
نَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ
الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَقَامًا وَأَحْسَنُ
نَدِيًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِئْيًا ۝

इम्मस्सा-अ़-त, फ़-सयअ्‌लमू-न मन् हु-व शर्रुम्-मकानंव्-व अज़्‌अ़फ़ु जुन्दा **(75)** व यज़ीदुल्लाहुल्लज़ीनह्तदौ हुदन्, वल्-बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अिन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुम् मरद्‌दा **(76)** अ-फ़-रऐतल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल ल-ऊ-तयन्-न मालंव्-व व-लदा **(77)** अत्त-लअ़ल्‌ग़ै-ब अमित्त-ख़-ज़ अिन्दर्रह्‌मानि अ़ह्‌दा **(78)** कल्ला, सनक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्‌दु लहू मिनल्-अ़ज़ाबि मद्‌दा **(79)** व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्‌तीना फ़र्‌दा **(80)** वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल्-लि-यकूनू लहुम् अिज़्ज़ा **(81)** कल्ला, स-यक्फ़ुरू-न बिअि़बादतिहिम् व यकूनू-न अ़लैहिम् ज़िद्‌दा **(82)** ❖

अलम् त-र अन्ना अर्‌सल्नश्-शयाती-न अ़लल्-काफ़िरी-न त-उज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा **(83)** फ़ला तअ्‌जल् अ़लैहिम्, इन्नमा नअुद्‌दु लहुम् अ़द्‌दा **(84)** यौ-म नह्‌शुरुल्-मुत्तक़ी-न इलर्रह्‌मानि वफ़्‌दा **(85)** व नसूक़ुल्-मुज्‍रिमी-न इला जहन्न-म विर्‌दा ✣ **(86)** ला यम्लिकूनश्- शफ़ा-अ़-त इल्ला मनित्त-ख़-ज़ अिन्दर्रह्‌मानि अ़ह्‌दा ✣ **(87)** व क़ालुत्त-ख़ज़र्रह्‌मानु व-लदा **(88)** ल-क़द् जिअ्‌तुम् शैअन् इद्‌दा **(89)** तकादुस्समावातु य-तफ़त्तर्-न मिन्हु व तन्‌शक़्क़ुल्-अर्‌ज़ु व तख़िर्रुल्- जिबालु हद्‌दा **(90)** अन् दऔ लिर्रह्‌मानि व-लदा **(91)** व मा यम्बग़ी लिर्रह्‌मानि अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदा **(92)** इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्‌मानि अ़ब्दा **(93)** ल-क़द् अह्‌साहुम् व अ़द्‌दहुम् अ़द्‌दा **(94)** व कुल्लुहुम्

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰى إِذَا رَأَوْا
مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۗ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ
شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾ وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ﴿٧٦﴾ أَفَرَأَيْتَ
الَّذِي كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ
أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ
لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوا
مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ
عَلَى الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ
عَدًّا ﴿٨٤﴾ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ
إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا
إِدًّا ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ
هَدًّا ﴿٩٠﴾ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ
وَلَدًا ﴿٩٢﴾ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

आतीहि यौमल्-क़ियामति फ़र्दा **(95)** इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति स-यज्अ़लु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा **(96)** फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र बिही क़ौमल्-लुद्दा **(97)** व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन्, हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदिन् औ तस्मअ़ु लहुम् रिक्ज़ा ● **(98)** ❖

20 सूरतु तॉ-हा 45

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5466 अक्षर 1251 शब्द, 135 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लांहिर्रह्मानिर्रहीम

तॉ-हा **(1)** मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुर्आ-न लितश्क़ा **(2)** इल्ला तज़्कि-रतल्-लिमंय्यख़्शा **(3)** तन्ज़ीलम्-मिम्-मन् ख़-लक़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-अ़ुला **(4)** अर्रह्मानु अ़लल्-अ़र्शिस्तवा **(5)** लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह्तस्सरा **(6)** व इन् तज्हर् बिल्क़ौलि फ़-इन्नहू यअ़्लमुस्सिर्-र व अख़्फ़ा **(7)** अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना **(8)** व हल् अता-क हदीसु मूसा ✣ **(9)** इज़् रआ नारन् फ़क़ा-ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क़-बसिन् औ अजिदु अ़लन्नारि हुदा **(10)** फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा **(11)** इन्नी अ-न रब्बु-क फ़ख़्लअ़् नअ़्लै-क इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा **(12)** व अनख़्तर्तु-क फ़स्तमिअ़् लिमा यूहा **(13)** इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अ-न

طٰهٰ ٢٠ ٣٨٢ قال الم ١٦

لَقَدْ اَحْصٰىهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَرْدًا ﴿٩٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ
الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ
وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ
تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ ﴿١﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿٢﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ
يَّخْشٰى ﴿٣﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ﴿٤﴾ اَلرَّحْمٰنُ
عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿٥﴾ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَ
مَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿٦﴾ وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ
السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿٧﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿٨﴾ وَهَلْ
اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿٩﴾ اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾
فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿١١﴾ اِنِّىْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ اِنَّكَ
بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ﴿١٣﴾
اِنَّنِىْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِىْ ﴿١٤﴾

منزل ٤

फ़अ़्बुद्नी व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री **(14)** इन्नस्सा-अ़-त आति-यतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ **(15)** फ़ला यसुद्दन्न-क अ़न्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-तर्दा **(16)** व मा तिल्-क बि-यमीनि-क या मूसा **(17)** क़ा-ल हि-य अ़सा-य अ-तवक्क-उ अ़लैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा **(18)** क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा **(19)** फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ **(20)** क़ा-ल ख़ुज़्हा व ला त-ख़फ़्, सनुअीदुहा सी-र-तहल्- ऊला **(21)** वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-यतन् उख़्रा **(22)** लिनुरि-य-क मिन् आयातिनल्-कुब्रा **(23)** इज़्हब् इला फ़िर्औ़-न इन्नू तग़ा **(24)** ❖

क़ा-ल रब्बिश्रह् ली सद्री **(25)** व यस्सिर् ली अम्री **(26)** वह्लुल् अुक़्द-तम् मिल्-लिसानी **(27)** यफ़्क़हू क़ौली **(28)** वज्अ़ल्-ली वज़ीरम्-मिन् अह्ली **(29)** हारू-न अख़ि- **(30)** -श्दुद् बिही अज़्री **(31)** व अश्रिक्हु फ़ी अम्री **(32)** कै नुसब्बि-ह-क कसीरंव्- **(33)** -व नज़्कु-र-क कसीरा **(34)** इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा **(35)** क़ा-ल क़द् ऊती-त सुअ्ल-क या मूसा **(36)** व ल-क़द् मनन्ना अ़लै-क मर्रतन् उख़्रा **(37)** इज़् औहैना इला उम्मि-क मा यूहा **(38)** अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़ित्ताबूति फ़क़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्युल्क़िहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अ़दुव्वुल्ली व अ़दुव्वुल्लहू, व अल्क़ैतु अ़लै-क म-हब्बतम्-मिन्नी, व लितुस्न-अ़

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ (15)
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ (16)
وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ (17) قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَ
أَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ (18) قَالَ أَلْقِهَا
يَا مُوسَىٰ (19) فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ (20) قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ
سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ (21) وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ (22) لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى (23)
اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ (24) قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي (25) وَ
يَسِّرْ لِي أَمْرِي (26) وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي (27) يَفْقَهُوا قَوْلِي (28)
وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِنْ أَهْلِي (29) هَارُونَ أَخِي (30) اشْدُدْ بِهِ أَزْرِي (31)
وَأَشْرِكْهُ فِي أَمْرِي (32) كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا (33) وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا (34) إِنَّكَ
كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا (35) قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَىٰ (36) وَلَقَدْ
مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ (37) إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ (38) أَنِ
اقْذِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْذِفِيهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ
يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِي وَعَدُوٌّ لَهُ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي وَلِتُصْنَعَ
عَلَىٰ عَيْنِي (39) إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ

अ़ला अ़ैनी ✣ **(39)** इज़् तम्शी उख़्तु-क फ़-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला मंय्यक्फ़ुलुहू, फ़-रजअ़्ना-क इला उम्मि-क कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न, व क़तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़तन्ना-क फ़ुतूनन्, फ़-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्य-न सुम्-म जिअ्-त अ़ला क़-दरिंय्-या मूसा **(40)** वस्त-नअ़्तु-क लिनफ़्सी **(41)** इज़्हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री **(42)** इज़्हबा इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा **(43)** फ़क़ूला लहू क़ौलल्- लय्यिनल्-लअ़ल्लहू य-तज़क्करु औ यख़्शा **(44)** क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु-त अ़लैना औ अंय्यत्ग़ा **(45)** क़ा-ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म-अ़कुमा अस्मअ़ु व अरा **(46)** फ़अ्तियाहु फ़क़ूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम्, क़द् जिअ्ना-क बिआयतिम् मिर्रब्बि-क, वस्सलामु अ़ला मनित्त-बअ़ल्-हुदा **(47)** इन्ना क़द् ऊहि-य इलैना अन्नल्-अ़ज़ा-ब अ़ला मन् कज़्ज़-ब व तवल्ला **(48)** क़ा-ल फ़-मर्रब्बुकुमा या मूसा **(49)** क़ा-ल रब्बुनल्लज़ी अअ़्ता कुल्-ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्-म हदा **(50)** क़ा-ल फ़मा बालुल्-क़ुरूनिल्-ऊला **(51)** क़ा-ल अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला यन्सा **(52)** अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा सुबुलंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन्, फ़-अख़्रज्ना बिही अज़्वाजम् मिन् नबातिन् शत्ता **(53)** कुलू वर्औ अन्आ़-मकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लि-उलिन्नुहा **(54)** ◆

يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ وَقَتَلْتَ
نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۬ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْۤ
اَهْلِ مَدْيَنَ ۙ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى ﴿٤٠﴾ وَاصْطَنَعْتُكَ
لِنَفْسِىْ ﴿٤١﴾ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ﴿٤٢﴾
اِذْهَبَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿٤٣﴾ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ
اَوْ يَخْشٰى ﴿٤٤﴾ قَالَا رَبَّنَاۤ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَاۤ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ
لَا تَخَافَاۤ اِنَّنِىْ مَعَكُمَاۤ اَسْمَعُ وَاَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ
فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَاۤ
اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾
قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْۤ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ
الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ
وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا
سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ
شَتّٰى ﴿٥٣﴾ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿٥٤﴾ ع
مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾

मिन्हा ख़लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम् व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् ता-रतन् उख़्रा **(55)** व ल-क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़-कज़्ज़-ब व अबा **(56)** क़ा-ल अजिअ्तना लितुख़्रि-जना मिन् अर्ज़िना बिसिह्रि-क या मूसा **(57)** फ़-लनअ्तियन्न-क बिसिह्रिम्-मिस्लिही फ़ज्अ़ल् बैनना व बैन-क मौअ़िदल् ला नुख़्लिफ़ुहू नह्नु व ला अन्-त मकानन् सुवा **(58)** क़ा-ल मौअ़िदुकुमुज़्ज़ीनति व अंय्युह्श-रन्नासु ज़ुहा **(59)** फ़-तवल्ला फ़िर्औ़नु फ़-ज-म-अ़ कैदहू सुम्-म अता **(60)** क़ा-ल लहुम् मूसा वै-लकुम ला तफ़्तरू अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़युस्हि-तकुम् बि-अ़ज़ाबिन् व क़द् ख़ा-ब मनिफ़्तरा **(61)** फ़-तनाज़अ़ू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सर्रुन्नज्वा **(62)** क़ालू इन् हाज़ानि लसाहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़्हबा बि-तरी-क़ति-कुमुल्-मुस्ला **(63)** फ़-अज्मिअ़ू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् व क़द् अफ़्ल-हल्यौ-म मनिस्तअ़्ला **(64)** क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा **(65)** क़ा-ल बल् अल्क़ू फ़-इज़ा हिबालुहुम् व अ़िसिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ़ **(66)** फ़-औज-स फ़ी नफ़्सिही ख़ी-फ़तम्-मूसा **(67)** क़ुल्ना ला तख़फ़् इन्न-क अन्तल्-अअ़्ला **(68)** व अल्क़ि मा फ़ी यमीनि-क तल्क़फ़् मा स-नअ़ू, इन्नमा स-नअ़ू कैदु साहिरिन्, व ला युफ़्लिहुस्साहिरु हैसु अता **(69)** फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु सुज्ज-दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा **(70)** क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम्,

قال الم ١٦ — ٣٨٥ — طٰه ٢٠

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾ فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى
فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾
فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾ قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ
لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ
الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ
اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِمَّاۤ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّاۤ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ
مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ
اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾
قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا
صَنَعُوْا ۗ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾
فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ
اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ

منزل ٤

इन्नहू ल-कबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र फ़-ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व ल-उसल्लिबन्नकुम् फ़ी जुज़ूअ़िन्नख़्लि व ल-तअ़्लमुन्-न अय्युना अशद्दु अ़ज़ाबंव्-व अब्क़ा **(71)** क़ालू लन् नुअ़्सि-र-क अ़ला मा जा-अना मिनल्-बय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त-रना फ़क़्ज़ि मा अन्-त क़ाज़िन्, इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्-दुन्या **(72)** इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग़्फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्रह्तना अ़लैहि मिनस्सिह्रि, वल्लाहु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ▲ **(73)** इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म, ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या **(74)** व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-रजातुल्-अ़ुला **(75)** जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ा-उ मन् तज़क्का **(76)** ❖

व ल-क़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह्रि य-बसल्-ला तख़ाफ़ु द-रकंव्-व ला तख़्शा **(77)** फ़-अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औनु बिजुनूदिही फ़-ग़शि-यहुम् मिनल्-यम्मि मा ग़शि-यहुम् **(78)** व अज़ल्-ल फ़िर्औनु क़ौ-महू व मा हदा **(79)** या बनी इस्राई-ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अ़दुव्विकुम् व वाअ़द्नाकुम् जानिबत्तूरिल्- ऐम-न व नज़्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्-मन्-न वस्सल्वा **(80)** कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् व ला तत्ग़ौ फ़ीहि फ़-यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बी व मंय्यह्लिल् अ़लैहि ग़-ज़बी फ़-क़द् हवा **(81)** व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारुल्-लिमन् ता-ब व आम-न व

فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ
جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا لَنْ
نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ
قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿٧٣﴾ اِنَّهٗ
مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾
وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ
الْعُلٰى ﴿٧٥﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾ وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ
بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا
وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ
مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾ ؕ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ
الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ
مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ
يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ

अ़मि-ल सालिहन् सुम्मह्-तदा **(82)** व मा अअ़्ज-ल-क अ़न् क़ौमि-क या मूसा **(83)** क़ा-ल हुम् उला-इ अ़ला अ-सरी व अ़जिल्तु इलै-क रब्बि लितर्ज़ा **(84)** क़ा-ल फ़-इन्ना क़द् फ़तन्ना क़ौम-क मिम्-बअ़्दि-क व अज़ल्लहुमुस्-सामिरिय्यु **(85)** फ़-र-ज-अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न्, क़ा-ल या क़ौमि अलम् यअ़िद्कुम् रब्बुकुम् वअ़्दन् ह-सनन्, अ-फ़ता-ल अ़लैकुमुल्-अ़ह्दु अम् अरत्तुम् अंय्यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ़्तुम् मौअ़िदी **(86)** क़ालू मा अख़्लफ़्ना मौअ़ि-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम् मिन् ज़ीनतिल्-क़ौमि फ़-क़ज़फ़्नाहा फ़-कज़ालि-क अल्क़स्-सामिरिय्यु **(87)** फ़-अख़्र-ज लहुम् अ़िज्लन् ज-सदल्-लहू ख़ुवारुन् फ़क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़-नसि-य **(88)** अ-फ़ला यरौ-न अल्ला यर्जिअु इलैहिम् क़ौलंव्-व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अ़ा **(89)** ❖

व ल-क़द् क़ा-ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्-न रब्बकुमुर्-रह्मानु फ़त्तबिअ़ूनी व अतीअ़ू अम्री **(90)** क़ालू लन् नब्र-ह अ़लैहि आ़किफ़ी-न हत्ता यर्जि-अ़ इलैना मूसा **(91)** क़ा-ल या हारूनु मा म-न-अ़-क इज़् रऐ-तहुम् ज़ल्लू **(92)** अल्ला तत्तबि-अ़नि, अ-फ़-अ़सै-त अम्री **(93)** क़ा-ल यब्नउम्-म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह्यती व ला बिरअ्सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू-ल फ़र्रक़्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम् तर्क़ुब् क़ौली **(94)** क़ा-ल फ़मा ख़त्बु-क या सामिरिय्यु **(95)** क़ा-ल

طٰهٰ ٢٠ ٢٨٧ قال الم ١٦

آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ﴿٨٢﴾ وَمَا أَعْجَلَكَ عَن قَوْمِكَ
يَا مُوسَىٰ ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾
قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾
فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ
رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ﴿٨٦﴾ قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ
بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ
أَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا
هَٰذَا إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ
قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ
مِن قَبْلُ يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي
وَأَطِيعُوا أَمْرِي ﴿٩٠﴾ قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا
مُوسَىٰ ﴿٩١﴾ قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ﴿٩٢﴾ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ
أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ﴿٩٣﴾ قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ
إِنِّي خَشِيتُ أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ
قَوْلِي ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا

منزل ٤

बसुरतु बिमा लम् यब्सुरू बिही फ़-क़बज़्तु क़ब्ज़-तम् मिन् अ-सरिर्रसूलि फ़-नबज़्तुहा व कज़ालि-क सव्वलत् ली नफ़्सी **(96)** क़ा-ल फ़ज़्हब् फ़-इन्-न ल-क फ़िल्हयाति अन् तक़ू-ल ला मिसा-स व इन्-न ल-क मौअिदल् लन् तुख़्ल-फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहि-कल्लज़ी ज़ल्-त अ़लैहि आ़किफ़न्, लनु-हर्रिक़न्नहू सुम्-म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा **(97)** इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व, वसि-अ़ कुल्-ल शैइन् अ़िल्मा **(98)** कज़ालि-क नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इ मा क़द् स-ब-क़ व क़द् आतैना-क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा **(99)** मन् अअ्र-ज़ अ़न्हु फ़-इन्नहू यह़्मिलु यौमल्-क़ियामति विज़्रा **(100)** ख़ालिदी-न फ़ीहि व सा-अ लहुम् यौमल्-क़ियामति हिम्ला **(101)** यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह़्शुरुल्-मुज्रिमी-न यौमइज़िन् ज़ुर्क़ा **(102)** य-तख़ाफ़तू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अ़श्रा **(103)** नह़्नु अअ़्लमु बिमा यक़ूलू-न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरी-क़तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा **(104)** ❖

व यस्अलून-क अ़निल्-जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा **(105)** फ़-य-ज़रुहा क़ाअ़न् सफ़्सफ़ा **(106)** ला तरा फ़ीहा अ़ि-वजंव्-व ला अम्ता **(107)** यौमइज़िंय्-यत्तबिअ़ूनद्दाअ़ि-य ला अ़ि-व-ज लहू व ख़ा-श-अ़तिल्-अस्वातु लिर्रह़्मानि फ़ला तस्मअ़ु इल्ला हम्सा **(108)** यौमइज़िल्-ला तन्फ़अ़ुश्शफ़ा-अ़तु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह़्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला **(109)** यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अ़िल्मा **(110)** व अ़-नतिल्-वुजूहु

قال الم ١٦ ٢٨٨ طٰهٰ ٢٠

بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ
لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ
وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ
عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَآ
اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾ كَذٰلِكَ
نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا
ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ
اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ
طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ
يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا
عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَىِٕذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ
الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَىِٕذٍ لَّا تَنْفَعُ
الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ
مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ

منزل ٤

लिल्हय्यिल्-क़य्यूमि, व क़द् ख़ा-ब मन् ह-म-ल ज़ुल्मा **(111)** व मंय्यअ्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा **(112)** व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ-रबिय्यंव्-व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्-वअ़ीदि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा **(113)** फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु व ला तअ्जल् बिल्क़ुर्आनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै-क वह्युहू व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा **(114)** व ल-क़द् अ़हिद्ना इला आद-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा **(115)** ❖

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, अबा **(116)** फ़क़ुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल्-ल-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्-जन्नति फ़-तश्क़ा **(117)** इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ़ फ़ीहा व ला तअ्रा **(118)** व अन्न-क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा **(119)** फ़-वस्व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु हल् अदुल्लु-क अ़ला श-ज-रतिल्-ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला **(120)** फ़-अ-कला मिन्हा फ़-बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्-रक़िल्-जन्नति, व अ़सा आदमु रब्बहू फ़-ग़वा **(121)** सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता-ब अ़लैहि व हदा **(122)** क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म्-बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मनित्त-ब-अ़ हुदा-य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा **(123)** व मन् अअ्र-ज़ अ़न् ज़िक्री फ़-इन्-न लहू मअ़ी-शतन् ज़न्कंव्-व नह्शुरुहू यौमल्-क़ियामति अअ्मा **(124)** क़ा-ल रब्बि

قال الم ١٦ ٢٨٩ طٰه ٢٠

الوجوه للحي القيوم وقد خاب من حمل ظلما ۝١١١ ومن
يعمل من الصلحت وهو مؤمن فلا يخف ظلما ولا هضما ۝١١٢
وكذلك انزلنه قرانا عربيا وصرفنا فيه من الوعيد
لعلهم يتقون او يحدث لهم ذكرا ۝١١٣ فتعلى الله الملك الحق
ولا تعجل بالقران من قبل ان يقضى اليك وحيه وقل
رب زدني علما ۝١١٤ ولقد عهدنا الى ادم من قبل فنسي و
لم نجد له عزما ۝١١٥ واذ قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا
الا ابليس ابى ۝١١٦ فقلنا يادم ان هذا عدو لك ولزوجك فلا
يخرجنكما من الجنة فتشقى ۝١١٧ ان لك الا تجوع فيها و
لا تعرى ۝١١٨ وانك لا تظموا فيها ولا تضحى ۝١١٩ فوسوس اليه
الشيطن قال يادم هل ادلك على شجرة الخلد وملك لا يبلى ۝١٢٠
فاكلا منها فبدت لهما سواتهما وطفقا يخصفن عليهما من
ورق الجنة وعصى ادم ربه فغوى ۝١٢١ ثم اجتبه ربه
فتاب عليه وهدى ۝١٢٢ قال اهبطا منها جميعا بعضكم لبعض
عدو فاما ياتينكم مني هدى فمن اتبع هداي فلا يضل
ولا يشقى ۝١٢٣ ومن اعرض عن ذكري فان له معيشة ضنكا و

منزل ٤

लि-म हशर्-तनी अअ्मा व क़द् कुन्तु बसीरा **(125)** क़ा-ल कज़ालि-क अतत्-क आयातुना फ़-नसीतहा व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा **(126)** व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ़ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति रब्बिही, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा **(127)** अ-फ़लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिउलिन्नुहा **(128)** ❖

व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्-रब्बि-क लका-न लिज़ामंव्-व अ-जलुम्-मुसम्मा **(129)** फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बि-हम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्-ल ग़ुरूबिहा व मिन् आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह् व अत्राफ़न्नहारि लअ़ल्ल-क तर्ज़ा **(130)** व ला तमुद्दन्-न ऐनै-क इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़हर-तल्- हयातिद्दुन्या लि-नफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व रिज़्क़ु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व अब्क़ा **(131)** वअ्मुर् अह्ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा, ला नस्अलु-क रिज़्क़न्, नह्नु नर्ज़ुक़ु-क, वल्आ़क़ि-बतु लित्तक़्वा **(132)** व क़ालू लौ ला यअ्तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही, अ-व लम् तअ्तिहिम् बय्यि-नतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला **(133)** व लौ अन्ना अह्लक्नाहुम् बि-अ़ज़ाबिम् मिन् क़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व नख़्ज़ा **(134)** क़ुल् कुल्लुम् मु-तरब्बिसुन् फ़-तरब्बसू फ़-सतअ्लमू-न मन् अस्हाबुस्- सिरातिस्- सविय्यि व मनिह्तदा **(135)** ❖

نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ
كُنْتُ بَصِيْرًا ۝ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ
تُنْسٰى ۝ وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۭ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ۝ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ
مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي
النُّهٰى ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ۝
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَاۗئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
تَرْضٰى ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ڏ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝
وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۭ لَا نَسْــَٔـلُكَ رِزْقًا ۭ نَحْنُ
نَرْزُقُكَ ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ
اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۝ وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ
بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ
اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ
فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ۝

सत्रहवाँ पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

21 सूरतुल्-अम्बिया-इ 73

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5154 अक्षर, 1187 शब्द 112 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاۤءِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَ
هُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ
تُبْصِرُوْنَ ۝٣ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاۤءِ وَالْاَرْضِ ۡ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤ بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ
افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ښ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥
مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ
يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ
فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ
جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨ ثُمَّ
صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَاۤءُ وَاَهْلَكْنَا
الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠ وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً

इक़्त-र-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ़्रिज़ून (1) मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिर्रब्बिहिम् मुह्दसिन् इल्लस्त-मअ़ूहु व हुम् यल्अ़बून (2) लाहि-यतन् क़ुलूबुहुम्, व अ-सर्रुन्-नज्वल्लज़ी-न ज़-लमू हल् हाज़ा इल्ला ब-शरुम्- मिस्लुकुम् अ-फ़तअ्तूनस्सिह्-र व अन्तुम् तुब्सिरून (3) क़ा-ल रब्बी यअ़्लमुल्क़ौ-ल फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (4) बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिम्-बलिफ़्तराहु बल् हु-व शाअ़िरुन् फ़ल्यअ्तिना बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून (5) मा आम-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा अ-फ़हुम् युअ्मिनून (6) व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्लमून (7) व मा जअ़ल्नाहुम् ज-सदल्-ला यअ्कुलूनत्तआ-म व मा कानू ख़ालिदीन (8) सुम्-म सदक़्नाहुमुल्- वअ़्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन्-नशा-उ व अह्लक्नल्- मुस्रिफ़ीन (9) ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम्, अ-फ़ला तअ़्क़िलून (10) ❖
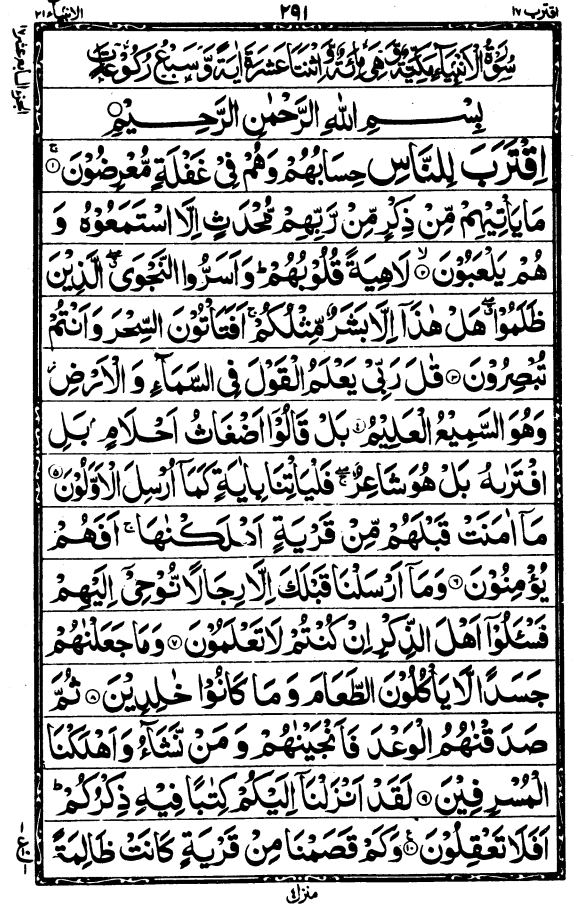
व कम् क़सम्ना मिन् क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-मतंव्-व अन्शअ्ना बअ्-दहा क़ौमन् आ-ख़रीन **(11)** फ़-लम्मा अ-हस्सू बअ्सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून **(12)** ला तर्कुज़ू वर्जिअू इला मा उत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्अलून **(13)** क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(14)** फ़मा ज़ालत् तिल्-क दअ्वाहुम् हत्ता जअ़ल्नाहुम् हसीदन् ख़ामिदीन **(15)** व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन **(16)** लौ अरद्ना अन् नत्तख़ि-ज़ लह्वल्-लत्त-ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअिलीन **(17)** बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ़लल्-बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़-इज़ा हु-व ज़ाहिक़ुन्, व लकुमुल्-वैलु मिम्मा तसिफ़ून **(18)** व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मन् अ़िन्दहू ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबादतिही व ला यस्तह्सिरून **(19)** युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र ला यफ़्तुरून **(20)** अमित्त-ख़ज़ू आलि-हतम् मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून **(21)** लौ का-न फ़ीहिमा आलि-हतुन् इल्लल्लाहु ल-फ़-स-दता फ़-सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून **(22)** ला युस्अलु अ़म्मा यफ़्अलु व हुम् युस्अलून **(23)** अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्-मअि-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमूनल्-हक़्-क़ फ़हुम् मुअ्रिज़ून **(24)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ्बुदून **(25)**

وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿١١﴾ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ
مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿١٢﴾ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ
وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤﴾
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾ لَوْ اَرَدْنَآ
اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾ بَلْ
نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَ
لَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾
يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً
مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ
اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾
لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ
وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ
فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ

व क़ालुत्त-ख़ज़्रर्रह्मानु व-लदन् सुब्हानहू, बल् अिबादुम् मुक्रमून **(26)** ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ़्मलून **(27)** यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अ़ू-न इल्ला लि-मनिर्तज़ा व हुम् मिन् ख़श्यतिही मुश्फ़िक़ून **(28)** व मंय्यक़ुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़ज़ालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन **(29)** ❖

अ-व लम् यरल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्क़न् फ़-फ़तक़्नाहुमा, व जअ़ल्ना मिनल्मा-इ कुल्-ल शैइन् हय्यिन्, अ-फ़ला युअ्मिनून **(30)** व जअ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व जअ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-लअ़ल्लहुम् यह्तदून **(31)** व जअ़ल्नस्-समा-अ सक़्फ़म्-मह्फ़ूज़ंव्-व हुम् अन् आयातिहा मुअ़्रिज़ून **(32)** व हुवल्लज़ी ख़-लक़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्-क़-म-र, कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून **(33)** व मा जअ़ल्ना लि-ब-शरिम्-मिन् क़ब्लिकल्-ख़ुल्-द, अ-फ़इम्-मित्-त फ़हुमुल्-ख़ालिदून **(34)** कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्-मौति, व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्-ख़ैरि फ़ित्-नतन्, व इलैना तुर्जअ़ून **(35)** व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन्, अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि-ह-तकुम्

اِلَّا نُوْحِیْٓ اِلَیْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۝٢٥ وَقَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝٢٦ لَا یَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ یَعْمَلُوْنَ ۝٢٧ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ
خَشْیَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ۝٢٨ وَمَنْ یَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّیْٓ اِلٰهٌ مِّنْ
دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِیْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی الظّٰلِمِیْنَ ۝٢٩ ع
اَوَلَمْ یَرَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا
رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ ؕ
اَفَلَا یُؤْمِنُوْنَ ۝٣٠ وَجَعَلْنَا فِی الْاَرْضِ رَوَاسِیَ اَنْ تَمِیْدَ
بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِیْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ۝٣١
وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۖۚ وَّهُمْ عَنْ اٰیٰتِهَا
مُعْرِضُوْنَ ۝٣٢ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِیْ فَلَكٍ یَّسْبَحُوْنَ ۝٣٣ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ
قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝٣٤ كُلُّ نَفْسٍ
ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَیْنَا
تُرْجَعُوْنَ ۝٣٥ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ یَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا

व हुम् बिज़िक्रिर्रह्मानि हुम् काफ़िरून **(36)** ख़ुलिक़ल्-इन्सानु मिन् अ़-जलिन्, स-उरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ़्जिलून **(37)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(38)** लौ यअ़्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहिहिमुन्ना-र व ला अ़न् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून **(39)** बल् तअ़्तीहिम् बग़्त-तन् फ़-तब्हतुहुम् फ़ला यस्ततीअ़ू-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून **(40)** व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(41)** ❖

क़ुल् मंय्यक्ल-उकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्रह्मानि, बल् हुम् अ़न् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ़्रिज़ून **(42)** अम् लहुम् आलि-हतुन् तम्नअ़ुहुम् मिन् दूनिना, ला यस्ततीअ़ू-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्हबून **(43)** बल् मत्तअ़्ना हाउला-इ व आबा-अहुम् हत्ता ता-ल अ़लैहिमुल्- अ़ुमुरु, अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ़्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, अ-फ़हुमुल्- ग़ालिबून **(44)** क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह्यि व ला यस्मअ़ुस्-सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून **(45)** व ल-इम्-मस्सत्हुम् नफ़्हतुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(46)** व न-ज़अ़ुल्-

هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِیْ یَذْکُرُ اٰلِهَتَکُمْ ۚ وَهُمْ بِذِکْرِ الرَّحْمٰنِ
هُمْ کٰفِرُوْنَ ﴿۳۶﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِیْکُمْ اٰیٰتِیْ
فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۳۷﴾ وَیَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ کُنْتُمْ
صٰدِقِیْنَ ﴿۳۸﴾ لَوْ یَعْلَمُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا حِیْنَ لَا یَکُفُّوْنَ عَنْ
وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ یُنْصَرُوْنَ ﴿۳۹﴾
بَلْ تَاْتِیْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ رَدَّهَا وَ
لَا هُمْ یُنْظَرُوْنَ ﴿۴۰﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِکَ
فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا کَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۴۱﴾ ع
قُلْ مَنْ یَّکْلَؤُکُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ
عَنْ ذِکْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ
دُوْنِنَا ؕ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا
یُصْحَبُوْنَ ﴿۴۳﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰی طَالَ عَلَیْهِمُ
الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا یَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ
اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُکُمْ بِالْوَحْیِ ۫ۖ وَلَا یَسْمَعُ الصُّمُّ
الدُّعَآءَ اِذَا مَا یُنْذَرُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ
عَذَابِ رَبِّکَ لَیَقُوْلُنَّ یٰوَیْلَنَاۤ اِنَّا کُنَّا ظٰلِمِیْنَ ﴿۴۶﴾ وَنَضَعُ

मवाज़िनल्-क़िस्-त लियौमिल्-क़ियामति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन्, व इन् का-न मिस्क़ा-ल हब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन् अतैना बिहा, व कफ़ा बिना हासिबीन **(47)** व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव्-व ज़िक्रल् लिल्मुत्तक़ीन **(48)** अल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्सा-अ़ति मुश्फ़िक़ून **(49)** व हाज़ा ज़िक्रुम् मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु, अ-फ़अन्तुम् लहू मुन्किरून ◆ **(50)** ❖

الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَ
اِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا
حٰسِبِيْنَ ۝٤٧ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً
وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٨ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ
مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۝٤٩ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ
اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٥٠ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ
مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ۝٥١ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا
هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝٥٢ قَالُوْا
وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۝٥٣ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ
وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٥٤ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ
مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝٥٥ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٥٦ وَتَاللّٰهِ
لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٧ فَجَعَلَهُمْ
جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٨ قَالُوْا مَنْ
فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٩ قَالُوْا سَمِعْنَا
فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ۝٦٠ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى

व ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन **(51)** इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून **(52)** क़ालू वजद्‌ना आबा-अना लहा आ़बिदीन **(53)** क़ा-ल ल-क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(54)** क़ालू अजिअ्-तना बिल्हक़्क़ि अम् अन्-त मिनल्-लाअ़िबीन **(55)** क़ा-ल बर्-रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़िल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न व अ-न अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्-शाहिदीन **(56)** व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस्नामकुम् बअ़्-द अन् तुवल्लू मुद्‌बिरीन **(57)** फ़-ज-अ़-लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्-लहुम् लअ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअून **(58)** क़ालू मन् फ़-अ़-ल हाज़ा बिआलि-हतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन **(59)** क़ालू समिअ़्ना फ़-तयंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम **(60)** क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला

अअ्युनिन्नासि लअ़ल्लहुम् यश्हदून **(61)** क़ालू अ-अन्-त फ़-अ़ल्-त हाज़ा बिआलि-हतिना या इब्राहीम **(62)** क़ा-ल बल् फ़-अ़-लहू कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून **(63)** फ़-र-जअ़ू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्ज़ालिमून **(64)** सुम्-म नुकिसू अ़ला रुऊसिहिम् ल-क़द् अ़लिम्-त मा हाउला-इ यन्तिक़ून **(65)** क़ा-ल अ-फ़तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुकुम् शैअंव्-व ला यज़ुर्रुकुम् **(66)** उफ़्फ़िल्-लकुम् व लिमा तअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि, अ-फ़ला तअ़्क़िलून **(67)** क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन **(68)** क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव्-व सलामन् अ़ला इब्राहीम **(69)** व अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अख़्सरीन **(70)** व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़लमीन **(71)** व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब नाफ़ि-लतन्, व कुल्लन् जअ़ल्ना सालिहीन **(72)** व जअ़ल्नाहुम् अ-इम्म-तंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ़्लल्-ख़ैराति व इक़ामस्सलाति व ईताअज़्ज़काति व कानू लना आ़बिदीन **(73)** व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत् तअ़्मलुल्-ख़बाइ-स, इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन **(74)** व अद्ख़ल्नाहु फ़ी रह्मतिना, इन्नहू

اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝٦١ قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا
بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۝٦٢ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْــَٔلُوْهُمْ
اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝٦٣ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ۝٦٤ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ
يَنْطِقُوْنَ ۝٦٥ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ
شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝٦٦ اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٧ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
فٰعِلِيْنَ ۝٦٨ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩ وَ
اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝٧٠ وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا
اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٧١ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝٧٢ وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً
يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ
وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝٧٣ وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا
وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ
اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۝٧٤ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٧٥ وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ

मिनस्-सालिहीन **(75)** ❖

व नूहन् इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्त-जब्ना लहू फ़नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम **(76)** व नसर्नाहु मिनल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन **(77)** व दावू-द व सुलैमा-न इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न-फ़शत् फ़ीहि ग़-नमुल्-क़ौमि व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन **(78)** फ़-फ़हहम्नाहा सुलैमा-न व कुल्लन् आतैना हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व सख़्ख़र्ना म-अ़ दावूदल्-जिबा-ल युसब्बिह्-न वत्तै-र, व कुन्ना फ़ाअ़िलीन **(79)** व अ़ल्लम्नाहु सन्अ़-त लबूसिल्-लकुम् लितुह्सि-नकुम् मिम्-बअ्सिकुम् फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून **(80)** व लिसुलैमानर्री-ह आ़सि-फ़तन् तज्री बिअम्रिही इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा, व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन **(81)** व मिनश्- शयातीनि मंय्यग़ूसू-न लहू व यअ़्मलू-न अ़-मलन् दू-न ज़ालि-क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन **(82)** व अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्-ज़ुर्रु व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन **(83)** फ़स्त-जब्ना लहू फ़-कशफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्म-तम् मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्आ़बिदीन **(84)** व इस्माई़-ल व इद्री-स व ज़ल्किफ़्लि, कुल्लुम् मिनस्साबिरीन **(85)** व अद्ख़ल्नाहुम् फ़ी रह्मतिना, इन्नहुम् मिनस्सालिहीन **(86)** व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न्-न अल्लन् नक़्दि-र अ़लैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۚ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ
نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ
دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۭ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ
صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ
شٰكِرُوْنَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى
الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۭ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝ وَ
مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ
ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝ وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ
مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا
مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ۝ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ
وَذَا الْكِفْلِ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ
اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ

अल्-ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन **(87)** फ़स्त-जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्-ग़म्मि, व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन **(88)** व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन **(89)** फ़स्त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू यह्या व अस्लह्ना लहू ज़ौजहू, इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति व यद्अूनना र-ग़बंव्-व र-हबन्, व कानू लना ख़ाशिअ़ीन **(90)** वल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व जअ़ल्नाहा वब्नहा आयतल् लिल्आ़लमीन **(91)** इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़अ्बुदून **(92)** व त-क़त्तअू अम्रहुम् बैनहुम्, कुल्लुन् इलैना राजिअून **(93)** ❖

फ़-मंय्यअ्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़रा-न लिसअ्यिही व इन्ना लहू कातिबून **(94)** व हरामुन् अ़ला क़र्यतिन् अह्लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून **(95)** हत्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह-दबिंय्-यन्सिलून **(96)** वक़्त-रबल्-वअ्दुल्हक़्क़ु फ़-इज़ा हि-य शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू, या वैलना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन **(97)** इन्नकुम् व मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह-सबु जहन्न-म, अन्तुम् लहा वारिदून **(98)** लौ का-न हाउला-इ आलि-हतम् मा व-रदूहा, व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून **(99)** लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व हुम् फ़ीहा ला

اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ
سُبْحٰنَكَ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ
مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُـْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ
رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ
وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ
فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾
وَالَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا
وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾ اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ
وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾
حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ
يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِىَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِىْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا
ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ
اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا وَ

यस्मअ़ून (100) इन्नल्लज़ी-न स-बक़त् लहुम् मिन्नल्-हुस्ना उलाइ-क अ़न्हा मुब्अ़दून (101) ला यस्मअ़ू-न हसी-सहा व हुम् फ़ी मश्त-हत् अन्फ़ुसुहुम् ख़ालिदून (102) ला यह्ज़ुनुहुमुल् फ़-ज़अ़ुल्-अक्बरु व त-तलक़्क़ाहुमुल्-मलाइ-कतु, हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तूअ़दून (103) यौ-म नत्विस्- समा-अ क-तय्यिस्-सिजिल्लि लिल्कुतुबि, कमा बदअ्ना अव्व-ल ख़ल्क़िन् नुअ़ीदुहू, वअ़्दन् अ़लैना, इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (104) व ल-क़द् कतब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-बअ़्दिज़्ज़िक्रि अन्नल्-अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादि-यस्सालिहून (105) इन्-न फ़ी हाज़ा ल-बलाग़ल्-लिक़ौमिन् आ़बिदीन (106) व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह्म-तल्-लिल्आ़लमीन (107) क़ुल् इन्नमा यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (108) फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवा-इन्, व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बअ़ीदुम् मा तूअ़दून (109) इन्नहू यअ़्लमुल्- जह्-र मिनल्-क़ौलि व यअ़्लमु मा तक्तुमून (110) व इन् अद्री लअ़ल्लहू फ़ित्-नतुल्- लकुम् व मताअ़ुन् इला हीन (111) क़ा-ल रब्बिह्कुम् बिल्हक़्क़ि व रब्बुनर्रह्मानुल्-मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून ● (112) ◆

الانبياء ٢١ — ٢٩٩ — اقترب ١٧

كُلٌّ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَّهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾
إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰىٓ أُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾
لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ
خٰلِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ
كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ وَعْدًا
عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فٰعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْۢ بَعْدِ
الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُونَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ فِي
هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً
لِّلْعٰلَمِينَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُوحٰىٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ آذَنْتُكُمْ عَلٰى
سَوَآءٍ وَإِنْ أَدْرِيٓ أَقَرِيبٌ أَمْ بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُ
يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ
أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتٰعٌ إِلٰى حِينٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ
رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى
مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

منزل ٤

22 सूरतुल्-हज्जि 103

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5432 अक्षर, 1283 शब्द 78 आयतें और 10 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्-न ज़ल्ज़-लतस्सा-अ़ति शैउन् अ़ज़ीम (1) यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा अर्-ज़-अ़त् व त-ज़अ़ु कुल्लु ज़ाति-हम्लिन् हम्लहा व तरन्ना-स सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन्-न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद (2) व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तबिअ़ु कुल्-ल शैतानिम्-मरीद (3) कुति-ब अ़लैहि अन्नहू मन् तवल्लाहु फ़-अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (4) या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिनल्-बअ़्सि फ़-इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज़्-ग़तिम् मुख़ल्ल-क़तिंव्-व ग़ैरि मुख़ल्ल-क़तिल् लिनुबय्यि-न लकुम्, व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशा-उ इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्दकुम् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अ़ुमुरि लिकैला यअ़्ल-म मिम्-बअ़्दि अ़िल्मिन् शैअन्, व तरल्अर्-ज़ हामि-दतन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा-अह्तज़्ज़त् व रबत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज (5) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्नहू युह्यिल्-मौता व

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَاۤءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۗ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاۤءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ

अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(6)** व अन्नस्सा-अ़-त आति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व अन्नल्ला-ह यब्अ़सु मन् फ़िल्क़ुबूर **(7)** व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर **(8)** सानि-य अ़ित्फ़िही लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि, लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व नुज़ीक़ुहू यौमल्-क़ियामति अ़ज़ाबल्-हरीक़ **(9)** ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद **(10)** ❖

व मिनन्नासि मंय्यअ़्बुदुल्ला-ह अ़ला हर्फ़िन् फ़-इन् असा-बहू ख़ैरु-नित्म-अन्-न बिही व इन् असाबत्हु फ़ित्नतु-निन्क़-ल-ब अ़ला वज्हिही, ख़सिरद्दुन्या वल्आख़िर-त, ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन **(11)** यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अ़ुहू, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद **(12)** यद्अू ल-मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अ़िही, लबिअ्सल्-मौला व लबिअ्सल्-अ़शीर **(13)** इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, इन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद **(14)** मन् का-न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सु-रहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति फ़ल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समा-इ सुम्मल्-यक़्तअ़् फ़ल्यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यग़ीज़ **(15)** व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम्-बय्यिनातिंव्-व अन्नल्ला-ह यह्दी मंय्युरीद **(16)** इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا
وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ
فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٨﴾ ثَانِيَ عِطْفِهٖ
لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَ
اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ
اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ
فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا
لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ
اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾ مَنْ كَانَ يَظُنُّ
اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى
السَّمَاۗءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वल्मजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद **(17)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्क़-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम्-मिनन्-नासि, व कसीरुन् हक़्-क़ अ़लैहिल्-अ़ज़ाबु, व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुक्रिमिन्, इन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा यशा-उ ❑ **(18)** हाज़ानि ख़स्मानिख़्त--समू फ़ी रब्बिहिम्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू कुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम्-मिन् नारिन्, युसब्बु मिन् फ़ौक़ि-रुऊसिहिमुल्-हमीम **(19)** युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्जुलूद **(20)** व लहुम् मक़ामिअ़ु मिन् हदीद **(21)** कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उअ़ीदू फ़ीहा, व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्- हरीक़ **(22)** ❖

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्- सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व लुअ्लुअन्, व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर **(23)** व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्-क़ौलि व हुदू इला सिरातिल्-हमीद **(24)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि वल्मस्जिदिल्-हरामिल्लज़ी

الحج ٢٢ ٣٠٢ اقترب ١٧

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ
وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ
اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ
مِنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ مُكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ
اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ
نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي
بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا
أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ
ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ
مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ

منزل

जअ़ल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-आ़किफ़ु फ़ीहि वल्बादि, व मंय्युरिद् फ़ीहि बि-इल्हादिम्-बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (25) ❖

व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही-म मकानल्-बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव्-व तह्हिर् बैति-य लित्ताइफ़ी-न वल्क़ाइमी-न वर्रुक्कअिस्-सुजूद (26) व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्हज्जि यअ्तू-क रिजालंव्-व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अ़मीक़ (27) लि-यश्हदू मनाफ़ि-अ़ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम् मअ्लूमातिन् अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम्-बहीमतिल्-अन्आ़मि फ़कुलू मिन्हा व अत्अ़िमुल्-बाइसल्-फ़क़ीर (28) सुम्मल्-यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफ़ू बिल्बैतिल्-अ़तीक़ (29) ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु-व ख़ैरुल्लहू अ़िन्-द रब्बिही, व उहिल्लत् लकुमुल्-अन्आ़मु इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् फ़ज्तनिबुर्रिज्-स मिनल्-औसानि वज्तनिबू क़ौलज़्ज़ूर (30) हु-नफ़ा-अ लिल्लाहि ग़ै-र मुश्रिकी-न बिही, व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-कअन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ़-तख़्तफ़ुहुत्तैरु औ तह्वी बिहिर्-रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ (31) ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़-इरल्लाहि फ़-इन्नहा मिन् तक़्वल्-क़ुलूब (32) लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु इला अ-जलिम् मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक़ (33) ❖

व लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्-सकल् लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम्

الحج ٢٢ ٣٠٣ اقترب ١٧

لِلنَّاسِ سَوَآءً الْعٰكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍ
بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۞ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ
الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ
الْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۞ وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ
رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۞
لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ
عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا
الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ۞ ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۞ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۗ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ
الزُّوْرِ ۞ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۗ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ
مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۞ ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ
تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۞ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ
مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۞ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا

منزل ٤

मिम्-बहीमतिल्-अन्आ़मि, फ़-इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-लहू अस्लिमू, व बश्शिरिल्-मुख़्बितीन **(34)** अल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा असा-बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(35)** वल्बुद्-न जअ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़-इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ़ फ़-इज़ा व-जबत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्‌अ़िमुल्- क़ानि-अ़ वल्-मुअ़्तर्-र, कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(36)** लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमा-उहा व ला किंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम्, कज़ालि-क सख़्ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम्, व बश्शिरिल्-मुह्सिनीन **(37)** इन्नल्ला-ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी-न आमनू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर ▲ **(38)** ❖

उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू, व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर **(39)** अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बुनल्लाहु, व लौ ला दफ़्अ़ुल्लाहिन्ना-स बअ़्-ज़हुम् बिबअ़्ज़िल्-लहुद्दिमत् सवामिअ़ु व बि-यअ़ुंव्-व स-लवातुंव्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन्, व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहू, इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ **(40)** अल्लज़ी-न इम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला-त व आ-तवुज़्-ज़का-त व अ-मरू बिल्-मअ़्रूफ़ि व नहौ अ़निल्-मुन्करि, व लिल्लाहि

اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى
الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ
مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ
فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ
كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا
وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ
يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾
اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ
لَقَدِيْرُ ﴿۳۹﴾ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا
رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾ اَلَّذِيْنَ
اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا

आ़कि-बतुल्-उमूर **(41)** व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व समूद **(42)** व क़ौमु इब्राही-म व क़ौमु लूत **(43)** व अस्हाबु मद्य-न व कुज़्ज़ि-ब मूसा फ़-अम्लैतु लिल्काफ़िरी-न सुम्-म अ-ख़ज़्तुहुम् कै-फ़ का-न नकीर **(44)** फ़-कअय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा व हि-य ज़ालि-मतुन् फ़हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला उ़रूशिहा व बिअ्रिम् मु-अ़त्त-लतिंव्-व क़स्रिम्-मशीद **(45)** अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-तकू-न लहुम् क़ुलूबुंय्-यअ्क़िलू-न बिहा औ आज़ानुंय्यस्मअू-न बिहा फ़-इन्नहा ला तअ्मल्-अब्सारु व लाकिन् तअ्मल्- क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर **(46)** व यस्तअ्जिलून-क बिल्-अ़ज़ाबि व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्दहू, व इन्-न यौमन् अिन्-द रब्बि-क क-अल्फ़ि स-नतिम्-मिम्मा तअुद्दून **(47)** व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अम्लैतु लहा व हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अख़ज़्तुहा व इलय्यल्-मसीर **(48)** ◆

क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन **(49)** फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम **(50)** वल्लज़ी-न सअ़ौ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम **(51)** व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिंव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही फ़-यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम्-म युह्किमुल्लाहु आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(52)**

الحج ٢٢ ٣٠٥ اقترب ١٧

بالمعروف ونهوا عن المنكر ولله عاقبة الامور ﴿٤١﴾ وان
يكذبوك فقد كذبت قبلهم قوم نوح وعاد وثمود ﴿٤٢﴾ و
قوم ابرهيم وقوم لوط ﴿٤٣﴾ واصحب مدين وكذب موسى
فامليت للكفرين ثم اخذتهم فكيف كان نكير ﴿٤٤﴾ فكاين
من قرية اهلكنها وهي ظالمة فهي خاوية على عروشها
وبئر معطلة وقصر مشيد ﴿٤٥﴾ افلم يسيروا في الارض
فتكون لهم قلوب يعقلون بها او اذان يسمعون بها
فانها لا تعمى الابصار ولكن تعمى القلوب التي في
الصدور ﴿٤٦﴾ ويستعجلونك بالعذاب ولن يخلف الله وعده
وان يوما عند ربك كالف سنة مما تعدون ﴿٤٧﴾ وكاين
من قرية امليت لها وهي ظالمة ثم اخذتها والي
المصير ﴿٤٨﴾ قل يايها الناس انما انا لكم نذير مبين ﴿٤٩﴾
فالذين امنوا وعملوا الصلحت لهم مغفرة ورزق
كريم ﴿٥٠﴾ والذين سعوا في ايتنا معجزين اولئك اصحب
الجحيم ﴿٥١﴾ وما ارسلنا من قبلك من رسول ولا نبي الا
اذا تمنى القى الشيطن في امنيته فينسخ الله ما يلقي

منزل ٤

लि-यज्अ़-ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्न-तल्-लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-क़ासि-यति क़ुलूबुहुम्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद **(53)** व लियअ़्ल-मल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म अन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़युअ्मिनू बिही फ़तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम्, व इन्नल्ला-ह लहादिल्लज़ी-न आमनू इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(54)** व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु हत्ता तअ्ति-यहुमुस्सा-अ़तु बग़्त-तन् औ यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़क़ीम **(55)** अल्मुल्कु यौमइज़िल्-लिल्लाहि, यह्कुमु बैनहुम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम **(56)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन **(57)** ❖

वल्लज़ी-न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू औ मातू ल-यर्ज़ुक़न्न-हुमुल्लाहु रिज़्क़न् ह-सनन्, व इन्नल्ला-ह लहु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन **(58)**

الحج ٢٢ ٣٠٦ اقترب ١٧

الشيطن ثم يحكم الله ايته ۗ والله عليم حكيم ﴿٥٢﴾ ليجعل
ما يلقي الشيطن فتنة للذين في قلوبهم مرض والقاسية
قلوبهم ۗ وان الظلمين لفي شقاق بعيد ﴿٥٣﴾ وليعلم الذين
اوتوا العلم انه الحق من ربك فيؤمنوا به فتخبت له
قلوبهم ۗ وان الله لهاد الذين امنوا الى صراط مستقيم ﴿٥٤﴾
ولا يزال الذين كفروا في مرية منه حتى تاتيهم الساعة
بغتة او ياتيهم عذاب يوم عقيم ﴿٥٥﴾ الملك يومئذ لله ۗ
يحكم بينهم ۗ فالذين امنوا وعملوا الصلحت في جنت
النعيم ﴿٥٦﴾ والذين كفروا وكذبوا بايتنا فاولئك لهم عذاب
مهين ﴿٥٧﴾ والذين هاجروا في سبيل الله ثم قتلوا او ماتوا
ليرزقنهم الله رزقا حسنا ۗ وان الله لهو خير الرزقين ﴿٥٨﴾
ليدخلنهم مدخلا يرضونه ۗ وان الله لعليم حليم ﴿٥٩﴾
ذلك ۚ ومن عاقب بمثل ما عوقب به ثم بغي عليه
لينصرنه الله ۗ ان الله لعفو غفور ﴿٦٠﴾ ذلك بان الله يولج
اليل في النهار ويولج النهار في اليل وان الله سميع
بصير ﴿٦١﴾ ذلك بان الله هو الحق وان ما يدعون من

منزل

लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद्-ख़लंय्-यर्ज़ौनहू, व इन्नल्ला-ह ल-अ़लीमुन् हलीम **(59)** ज़ालि-क व मन् आक़-ब बिमिस्लि मा ऊ़क़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अ़लैहि ल-यन्सुरन्नहुल्लाहु, इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर **(60)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर **(61)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह

हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिही हुवल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल्-अ़लिय्युल्-कबीर (62) अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़तुस्बिहुल्-अर्ज़ु मुख़्ज़र्र-तन्, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (63) लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व इन्नल्ला-ह लहुवल्-ग़निय्युल्-हमीद (64) ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिअम्रिही, व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ़ अ़लल्-अर्ज़ि इल्ला बि-इज़्निही, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम (65) व हुवल्लज़ी अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूर (66) लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्स-कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न-क फ़िल्अम्रि वद्अु इला रब्बि-क, इन्न-क ल-अ़ला हुदम्-मुस्तक़ीम (67) व इन् जादलू-क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्लमु बिमा तअ्मलून (68) अल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (69) अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (70) व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व मा लै-स लहुम् बिही अि़ल्मुन्, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (71) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्रिफ़ु फ़ी वुजूहिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-मुन्क-र, यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अ़लैहिम् आयातिना, क़ुल्

الحج ٢٢ ٣٠٦ اقترب ١٧

دُونِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ
اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ
اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ۝ وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ
ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ وَيَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ
بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ

منزل

अ-फ़-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम्, अन्नारु, व-अ़-दहल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू, व बिअ्सल्-मसीर (72) ❖

या अय्युहन्नासु जुरि-ब म-सलुन् फ़स्तमिअ़ू लहू, इन्नल्लज़ी-न तद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव्-व लविज्त-मअ़ू लहू, व इंय्यस्लुब्हुमुज़्-ज़ुबाबु शैअल्-ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु, ज़अ़ुफ़त्तालिबु वल्मत्लूब (73) मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही, इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (74) अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल्-मलाइ-कति रुसुलंव्-व मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्- बसीर (75) यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम्, व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर (76) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कअ़ू वस्जुदू वअ़्बुदू रब्बकुम् वफ़्अ़लुल्-ख़ै-र लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ❑ (77) व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क़ जिहादिही, हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ़-ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह-रजिन्, मिल्ल-त अबीकुम् इब्राही-म, हु-व सम्माकुमुल्-मुस्लिमी-न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु-हदा-अ अ़लन्नासि फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वअ़्तसिमू बिल्लाहि, हु-व मौलाकुम् फ़-निअ़्मल्-मौला व निअ़्मन्-नसीर (78) ❖

يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ
مِنْ ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا
لَهُ ۖ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ
الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٧٤﴾ اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ
النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٧٥﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ۩ ﴿٧٧﴾ وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ
وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ
إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَٰذَا
لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى
النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ
مَوْلَاكُمْ ۖ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

अट्ठारहवाँ पारः क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून

23 सूरतुल्-मुअ्मिनून 74

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4538 अक्षर, 1070 शब्द 118 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून (1) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी सलातिहिम् ख़ाशिअ़ून (2) वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ़्रिज़ून (3) वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून (4) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून (5) इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन (6) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून (7) वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राअ़ून (8) वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स-लवातिहिम् युहाफ़िज़ून ✣ (9) उलाइ-क हुमुल्-वारिसून (10) अल्लज़ी-न यरिसूनल् फ़िर्दौ-स हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (11) व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम्-मिन् तीन (12) सुम्-म जअ़ल्नाहु नुत्फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन (13) सुम्-म ख़लक़्नन्-नुत्फ़-त अ़-ल-क़तन् फ़-ख़लक़्नल् अ़-ल-क़-त मुज़्-ग़तन् फ़-ख़लक़्नल्-मुज़्ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल्-अ़िज़ा-म लह्मन्, सुम्-म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र, फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन (14) सुम्-म इन्नकुम् बअ़्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून (15) सुम्-म

قد افلح ١٨ — ٣٠٩ — المؤمنون ٢٣

بسم الله الرحمن الرحيم

قد افلح المؤمنون ﴿١﴾ الذين هم في صلاتهم خاشعون ﴿٢﴾
والذين هم عن اللغو معرضون ﴿٣﴾ والذين هم للزكوة
فاعلون ﴿٤﴾ والذين هم لفروجهم حفظون ﴿٥﴾ الا على
ازواجهم او ما ملكت ايمانهم فانهم غير ملومين ﴿٦﴾ فمن
ابتغى وراء ذلك فاولئك هم العدون ﴿٧﴾ والذين هم لامنتهم
وعهدهم راعون ﴿٨﴾ والذين هم على صلوتهم يحافظون ﴿٩﴾ اولئك
هم الوارثون ﴿١٠﴾ الذين يرثون الفردوس هم فيها خلدون ﴿١١﴾
ولقد خلقنا الانسان من سللة من طين ﴿١٢﴾ ثم جعلنه
نطفة في قرار مكين ﴿١٣﴾ ثم خلقنا النطفة علقة فخلقنا العلقة
مضغة فخلقنا المضغة عظما فكسونا العظم لحما ثم
انشانه خلقا اخر فتبرك الله احسن الخالقين ﴿١٤﴾ ثم انكم
بعد ذلك لميتون ﴿١٥﴾ ثم انكم يوم القيمة تبعثون ﴿١٦﴾ ولقد
خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غفلين ﴿١٧﴾
وانزلنا من السماء ماء بقدر فاسكنه في الارض وانا
على ذهاب به لقدرون ﴿١٨﴾ فانشانا لكم به جنت من نخيل

منزل ٤

✣ व. लाज़िम

इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्अ़सून (16) व ल-क़द् ख़लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ़ तराइ-क़ व मा कुन्ना अ़निल्-ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन (17) व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् बि-क़-दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून (18) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्नाबिन् ✣ लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (19) व श-ज-रतन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल् लिल्आकिलीन (20) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आ़मि ल-अ़िब्-रतन्, नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु क़सी-रतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (21) व अ़लैहा व अ़लल्-फ़ुल्कि तुह्मलून (22) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून (23) फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब-शरुम्- मिस्लुकुम् युरीदु अंय्-य-तफ़ज़्ज़-ल अ़लैकुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतम् मा समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-अव्वलीन (24) इन् हु-व इल्ला रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ़-तरब्बसू बिही हत्ता हीन (25) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (26) फ़-औहैना इलैहि अनिस्नअ़िल्-फ़ुल्-क बि-अअ्युनिना व वह्यिना फ़-इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु फ़स्लुक् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अ़लैहिल्-क़ौलु मिन्हुम् व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्-रक़ून (27) फ़-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ़-क

وَّاَعْنَابٍ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَشَجَرَةً
تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝
وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ
فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تُحْمَلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ
عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۖۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا
الْاَوَّلِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى
حِيْنٍ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ
اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ
عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِىْ فِى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ
مُّغْرَقُوْنَ ۝ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ نَجّٰىنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ
اَنْزِلْنِىْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

✣ व. लाज़िम ◆ रु. 1/22/1

अ़लल्-फ़ुल्कि फ़क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (28) व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़-लम् मुबा-रकंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (29) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन (30) सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (31) फ़-अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् अनिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून (32) ❖

व क़ालल्-मल-उ मिन् क़ौमिहिल्-लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्-आख़िरति व अत्रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या मा हाज़ा इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबू मिम्मा तश्रबून (33) व ल-इन् अ-तअ़्तुम् ब-शरम् मिस्-लकुम् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून (34) अ-यअ़िदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून (35) हैहा-त हैहा-त लिमा तूअ़दून (36) इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा नह्नु बिमब्अ़ूसीन (37) इन् हु-व इल्ला रजुलु-निफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबंव्-व मा नह्नु लहू बिमुअ्मिनीन (38) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (39) क़ा-ल अ़म्मा क़लीलिल्-लयुस्बिहुन्-न नादिमीन (40) फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सै-हतु बिल्हक़्क़ि फ़-जअ़ल्नाहुम् ग़ुसा-अन् फ़बुअ़्दल्-लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन (41) सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ़्दिहिम् क़ुरूनन् आ-ख़रीन (42) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (43) सुम्-म अर्सल्ना रुसु-लना तत्रा, कुल्लमा

قد افلح ١٨ ٣١١ المؤمنون ٢٣

وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝
فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَ
كَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا
بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۝
وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝ أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ
إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُمْ مُخْرَجُونَ ۝ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ
لِمَا تُوعَدُونَ ۝ إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَ
مَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ قَالَ عَمَّا
قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ
غُثَاءً فَبُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا
آخَرِينَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ ثُمَّ
أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا كُلَّ مَا جَاءَ أُمَّةً رَسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَأَتْبَعْنَا
بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعْدًا لِقَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝
ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝

منزل ٤

जा-अ उम्मतर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्ना बअ्-ज़हुम् बअ्ज़ंव्-व जअ़ल्नाहुम् अहादी-स फ़बुअ्दल्-लिक़ौमिल्-ला युअ्मिनून **(44)** सुम्-म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू-न बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन **(45)** इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन् आ़लीन **(46)** फ़क़ालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आ़बिदून **(47)** फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन **(48)** व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब लअ़ल्लहुम् यह्तदून **(49)** व जअ़ल्नब्-न मर्य-म व उम्महू आ-यतंव्-व आवैनाहुमा इला रब्वतिन् ज़ाति क़रारिंव्-व मअ़ीन **(50)** ❖

या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ्मलू-न अ़लीम **(51)** व इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़त्तक़ून **(52)** फ़-तक़त्तअू अम्रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून **(53)** फ़-ज़र्हुम् फ़ी ग़म्-रतिहिम् हत्ता हीन **(54)** अ-यह्सबू-न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्-मालिंव्-व बनीन **(55)** नुसारिअु लहुम् फ़िल्- ख़ैराति, बल् ला यश्अुरून **(56)** इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून **(57)** वल्लज़ी-न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून **(58)** वल्लज़ी-न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून **(59)** वल्लज़ी-न युअ्तू-न मा आतौ व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअून **(60)** उलाइ-क युसारिअू-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम् लहा साबिक़ून **(61)** व ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा व लदैना किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्हक़्क़ि

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِۦ فَٱسْتَكْبَرُوا۟ وَكَانُوا۟ قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوٓا۟
أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَٰبِدُونَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوهُمَا
فَكَانُوا۟ مِنَ ٱلْمُهْلَكِينَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ وَجَعَلْنَا ٱبْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُۥٓ ءَايَةً وَءَاوَيْنَٰهُمَآ إِلَىٰ
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿٥٠﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُوا۟ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ
وَٱعْمَلُوا۟ صَٰلِحًا إِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾ وَإِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ
أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱتَّقُونِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ
زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ
حِينٍ ﴿٥٤﴾ أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ ﴿٥٥﴾ نُسَارِعُ
لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ بَل لَّا يَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ
خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾
وَٱلَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَٱلَّذِينَ يُؤْتُونَ مَآ ءَاتَوا۟
وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَٰجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ يُسَٰرِعُونَ
فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَهُمْ لَهَا سَٰبِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
وَلَدَيْنَا كِتَٰبٌ يَنطِقُ بِٱلْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوبُهُمْ
فِى غَمْرَةٍ مِّنْ هَٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَٰلٌ مِّن دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا

व हुम् ला युज़्लमून **(62)** बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी ग़म्रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्मालुम्-मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आ़मिलून **(63)** हत्ता इज़ा अख़ज़्ना मुत्रफ़ीहिम् बिल्-अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्अरून **(64)** ला तज्अरुल्-यौ-म, इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून **(65)** क़द् कानत् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् तन्किसून **(66)** मुस्तक्बिरी-न बिही सामिरन् तह्जुरून **(67)** अ-फ़लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम् मा लम् यअ्ति आबा-अहुमुल्-अव्वलीन **(68)** अम् लम् यअ्रिफ़ू रसूलहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून **(69)** अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन्, बल् जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून **(70)** व लवित्त-बअ़ल्- हक़्क़ु अह्वा-अहुम् ल-फ़-स-दतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, बल् अतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अ़न् ज़िक्रिहिम् मुअ्रिज़ून **(71)** अम् तस्अलुहुम् ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन **(72)** व इन्न-क ल-तद्अूहुम इला सिरातिम्- मुस्तक़ीम **(73)** व इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति अ़निस्सिराति लनाकिबून **(74)** व लौ रहिम्नाहुम् व कशफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल् ल-लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून ◆ **(75)** व ल-क़द् अख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य-तज़र्रअ़ून **(76)** हत्ता इज़ा फ़तह्ना अ़लैहिम् बाबन् ज़ा-अ़ज़ाबिन् शदीदिन् इज़ा हुम् फ़ीहि मुब्लिसून **(77)** ❖

व हुवल्लज़ी अन्श-अ लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा

قد افلح ١٨ — ٣١٣ — المؤمنون ٢٣

عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾
لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۟ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى
عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا
تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ اٰبَآءَهُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ
كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ
وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ڰ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ
اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ
مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ
بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰٓى اِذَا
فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

منزل ٤

तश्कुरून **(78)** व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून **(79)** व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्-लैलि वन्नहारि, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(80)** बल् क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून **(81)** क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून **(82)** ल-क़द् वुअिद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन **(83)** क़ुल् लि-मनिल्-अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(84)** स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तज़क्करून **(85)** क़ुल् मर्रब्बुस्समावातिस्-सब्अि व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम **(86)** स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून **(87)** क़ुल् मम्-बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(88)** स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् फ़-अन्ना तुस्हरून **(89)** बल् अतैनाहुम् बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् लकाज़िबून **(90)** मत्त-ख़ज़ल्लाहु मिंव्-लदिंव्-व मा का-न म-अहू मिन् इलाहिन् इज़ल् ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व ल-अ़ला बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िन्, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून **(91)** आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून **(92)** ❖

क़ुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यूअ़दून **(93)** रब्बि फ़ला तज्अ़ल्नी फ़िल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन **(94)** व इन्ना अ़ला अन् नुरि-य-क मा नअिदुहुम् लक़ादिरून **(95)** इद्फ़अ् बिल्लती हि-य

وهو الذى يحى ويميت وله اختلاف اليل والنهار
افلا تعقلون ﴿٨٠﴾ بل قالوا مثل ما قال الاولون ﴿٨١﴾ قالوا ءاذا
متنا وكنا ترابا وعظاما ءانا لمبعوثون ﴿٨٢﴾ لقد وعدنا نحن
واباؤنا هذا من قبل ان هذا الا اساطير الاولين ﴿٨٣﴾ قل
لمن الارض ومن فيها ان كنتم تعلمون ﴿٨٤﴾ سيقولون
لله قل افلا تذكرون ﴿٨٥﴾ قل من رب السموت السبع و
رب العرش العظيم ﴿٨٦﴾ سيقولون لله قل افلا تتقون ﴿٨٧﴾
قل من بيده ملكوت كل شىء وهو يجير ولا يجار عليه
ان كنتم تعلمون ﴿٨٨﴾ سيقولون لله قل فانى تسحرون ﴿٨٩﴾
بل اتينهم بالحق وانهم لكذبون ﴿٩٠﴾ ما اتخذ الله من ولد
وما كان معه من اله اذا لذهب كل اله بما خلق و
لعلا بعضهم على بعض سبحن الله عما يصفون ﴿٩١﴾
علم الغيب والشهادة فتعلى عما يشركون ﴿٩٢﴾ قل رب اما
تريني ما يوعدون ﴿٩٣﴾ رب فلا تجعلني فى القوم الظلمين ﴿٩٤﴾
وانا على ان نريك ما نعدهم لقدرون ﴿٩٥﴾ ادفع بالتى هى
احسن السيئة نحن اعلم بما يصفون ﴿٩٦﴾ وقل رب اعوذبك

منزل

अह्सनुस्सय्यि-अ-त, नह्नु अअ्लमु बिमा यसिफ़ून **(96)** व क़ुर्रब्बि अऊज़ु बि-क मिन् ह-मज़ातिश्-शयातीन **(97)** व अऊज़ु बि-क रब्बि अंय्यह्ज़ुरून **(98)** हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दहुमुल्-मौतु क़ा-ल रब्बिर्जिऊन **(99)** लअ़ल्ली अअ्मलु सालिहन् फ़ीमा तरक्तु कल्ला, इन्नहा कलि-मतुन् हु-व क़ाइलुहा, व मिंव्वरा-इहिम् बर्-ज़खुन् इला यौमि युब्अ़सून **(100)** फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़ला अन्सा-ब बैनहुन् यौमइज़िंव्-व ला य-तसा-अलून **(101)** फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्- मुफ़्लिहून **(102)** व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-कल्लज़ी-न ख़ासिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़ी जहन्न-म ख़ालिदून **(103)** तल्फ़हु वुजू-हहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून **(104)** अलम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून **(105)** क़ालू रब्बना ग़-लबत् अ़लैना शिक्वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन **(106)** रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अ़ुद्ना फ़-इन्ना ज़ालिमून **(107)** क़ालख़सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून **(108)** इन्नहू का-न फ़रीक़ुम् मिन् अ़िबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन **(109)** फ़त्त-ख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्हकून **(110)** इन्नी जज़ैतुहुमुल्-यौ-म बिमा स-बरू अन्नहुम् हुमुल्-फ़ाइज़ून **(111)** क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़-द-द सिनीन **(112)** क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् फ़स्अलिल्-आ़द्दीन **(113)** क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल्-लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ्लमून **(114)**

مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾
حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾ لَعَلِّىْۤ
اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ
وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَاۤ
اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾
رَبَّنَاۤ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا
وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ
اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ
سِخْرِيًّا حَتّٰۤى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾ اِنِّىْ
جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْۤا اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ
فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ
الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

अ-फ़-हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ़-बसंव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअ़ून (115) फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-करीम (116) व मंय्यद्अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ला बुर्हा-न लहू बिही फ़-इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्-द रब्बिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (117) व क़ुर्रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन (118) ❖

24 सूरतुन्नूरि 102

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 641 अक्षर, 142 शब्द, 64 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सूरतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् बय्यिनातिल् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (1) अज़्ज़ानि-यतु वज़्ज़ानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्- मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्ख़ुज़्कुम् बिहिमा रअ्-फ़तुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वल्यश्-हद् अ़ज़ाबहुमा ताइ-फ़तुम् मिनल्-मुअ्मिनीन (2) अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि-यतन् औ मुश्रि-कतंव्-व वज़्ज़ानि-यतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि-म ज़ालि-क अ़लल्-मुअ्मिनीन (3) वल्लज़ी-न यर्मूनल् मुह्सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि-अर्-ब-अ़ति शु-हदा-अ फ़ज्लिदूहुम् समानी-न जल्दतंव्-व ला तक़्बलू लहुम् शहा-दतन् अ-बदन् व उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (4) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (5) वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम्

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾
فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ ٱلْعَرْشِ ٱلْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾
وَمَن يَدْعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ لَا بُرْهَٰنَ لَهُۥ بِهِۦ فَإِنَّمَا حِسَابُهُۥ
عِندَ رَبِّهِۦٓ إِنَّهُۥ لَا يُفْلِحُ ٱلْكَٰفِرُونَ ﴿١١٧﴾ وَقُل رَّبِّ ٱغْفِرْ وَٱرْحَمْ
وَأَنتَ خَيْرُ ٱلرَّٰحِمِينَ ﴿١١٨﴾

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

سُورَةٌ أَنزَلْنَٰهَا وَفَرَضْنَٰهَا وَأَنزَلْنَا فِيهَآ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ لَّعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾ ٱلزَّانِيَةُ وَٱلزَّانِى فَٱجْلِدُوا۟ كُلَّ وَٰحِدٍ مِّنْهُمَا مِا۟ئَةَ
جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُم بِهِمَا رَأْفَةٌ فِى دِينِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ
تُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ
ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾ ٱلزَّانِى لَا يَنكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَٱلزَّانِيَةُ
لَا يَنكِحُهَآ إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾
وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ ٱلْمُحْصَنَٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا۟ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ
فَٱجْلِدُوهُمْ ثَمَٰنِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا۟ لَهُمْ شَهَٰدَةً أَبَدًا
وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٤﴾ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُوا۟ مِنۢ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَ
أَصْلَحُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾ وَٱلَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَٰجَهُمْ

शु-हदा-उ इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़-शहा-दतु अ-हदिहिम् अर्-बअ़ु शहादातिम्- बिल्लाहि इन्नहू लमिनस्-सादिक़ीन (6) वल्ख़ामि-सतु अन्-न लअ़्-नतल्लाहि अ़लैहि इन् का-न मिनल्-काज़िबीन (7) व यद्रउ अ़न्हल्-अ़ज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्ब-अ़ शहादातिम्- बिल्लाहि इन्नहू लमिनल्-काज़िबीन (8) वल्ख़ामि-स-त अन्-न ग़-ज़बल्लाहि अ़लैहा इन् का-न मिनस्-सादिक़ीन (9) व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन् हकीम (10) ❖

इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल्-इफ़्कि अ़ुस्बतुम्-मिन्कुम्, ला तह़्सबूहु शर्रल्-लकुम्, बल् हु-व ख़ैरुल्-लकुम्, लिकुल्लिम्-रिइम्-मिन्हुम् मक्त-स-ब मिनल्-इस्मि वल्लज़ी तवल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (11) लौ ला इज़् समिअ़्तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न वल्-मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव्-व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम्-मुबीन (12) लौ ला जाऊ अ़लैहि बि-अर्-ब-अ़ति शु-हदा-अ फ़-इज़् लम् यअ्तू बिश्शु-हदा-इ फ़-उलाइ-क अ़िन्दल्लाहि हुमुल्-काज़िबून (13) व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ल-मस्सकुम् फ़ीमा अफ़ज़्तुम् फ़ीहि अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (14) इज़् तलक़्क़ौनहू बिअल्सि-नतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम् बिही अ़िल्मुंव्-व तह़्सबूनहू हय्यिनंव्-व हु-व अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीम (15) व लौ ला इज़् समिअ़्तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न-तकल्ल-म बिहाज़ा सुब्हान-क हाज़ा

وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ
شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ
اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ
أَن تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝
وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِن كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝ ع
إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم
بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ
وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ
ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا
إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا
بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا
أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ
بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ
اللَّهِ عَظِيمٌ ۝ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَا أَن

❖ रु. 1/10/7

बुह्तानुन् अ़ज़ीम (16) यअ़िज़ुकुमुल्लाहु अन् तअ़ूदू लिमिस्लिही अ-बदन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (17) व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (18) इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तशीअ़ल्-फ़ाहि-शतु फ़िल्लज़ी-न आमनू लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (19) व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रहीम ● (20) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि, व मंय्यत्तबिअ़् ख़ुतुवातिश्शैतानि फ़-इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अ-बदंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की मंय्यशा-उ, वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (21) व ला यअ्तलि उलुल्-फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अ़ति अंय्युअ्तू उलिल्-क़ुर्बा वल्मसाकी-न वल्मुहाजिरी-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-यअ्फ़ू वल्-यस्फ़हू, अला तुहिब्बू-न अंय्यग़्फ़िरल्लाहु लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (22) इन्नल्लज़ी-न यर्मूनल्-मुह्सनातिल्-ग़ाफ़िलातिल्-मुअ्मिनाति लुअ़िनू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (23) यौ-म तश्-हदु अ़लैहिम् अल्सि-नतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (24) यौमइज़िंय्-युवफ़्फ़ीहिमुल्लाहु दीनहुमुल्-हक़्-क़ व यअ्लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ुल्-मुबीन (25) अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न वल्ख़बीसू-न लिल्ख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी-न वत्तय्यिबू-न लित्तय्यिबाति उलाइ-क मुबर्रऊ-न मिम्मा

قد افلح ١٨ — ٣١٨ — النور ٢٤

تكلم بهذا سبحنك هذا بهتان عظيم ﴿١٦﴾ يعظكم الله
ان تعودوا لمثله ابدا ان كنتم مؤمنين ﴿١٧﴾ ويبين الله لكم
الايت والله عليم حكيم ﴿١٨﴾ ان الذين يحبون ان تشيع
الفاحشة في الذين امنوا لهم عذاب اليم في الدنيا والاخرة
والله يعلم وانتم لا تعلمون ﴿١٩﴾ ولولا فضل الله عليكم و
رحمته وان الله رءوف رحيم ﴿٢٠﴾ يايها الذين امنوا
لا تتبعوا خطوت الشيطن ومن يتبع خطوت الشيطن
فانه يامر بالفحشاء والمنكر ولولا فضل الله عليكم و
رحمته ما زكى منكم من احد ابدا ولكن الله يزكي من يشاء
والله سميع عليم ﴿٢١﴾ ولا يأتل اولوا الفضل منكم والسعة
ان يؤتوا اولي القربى والمسكين والمهجرين في سبيل الله
وليعفوا وليصفحوا الا تحبون ان يغفر الله لكم والله غفور
رحيم ﴿٢٢﴾ ان الذين يرمون المحصنت الغفلت المؤمنت لعنوا
في الدنيا والاخرة ولهم عذاب عظيم ﴿٢٣﴾ يوم تشهد عليهم
السنتهم وايديهم وارجلهم بما كانوا يعملون ﴿٢٤﴾ يومئذ
يوفيهم الله دينهم الحق ويعلمون ان الله هو الحق المبين ﴿٢٥﴾

منزل ٤

यक़ूलू-न, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम **(26)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र बुयूतिकुम् हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून **(27)** फ़-इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-हदन् फ़ला तद्ख़ुलूहा हत्ता युअ्-ज़-न लकुम् व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअू फ़र्जिअू हु-व अज़्का लकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न अ़लीम **(28)** लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कूनतिन् फ़ीहा मताअुल्-लकुम्, वल्लाहु यअ्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून **(29)** क़ुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू मिन् अब्सारिहिम् व यह्फ़ज़ू फ़ुरू-जहुम्, ज़ालि-क अज़्का लहुम्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा यस्नअून **(30)** व क़ुल् लिल्-मुअ्मिनाति यग़्ज़ुज़्-न मिन् अब्सारिहिन्-न व यह्फ़ज़्-न फ़ुरू-जहुन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला मा ज़-ह-र मिन्हा वल्यज़्रिब्-न बिख़ुमुरिहिन्-न अ़ला जुयूबिहिन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला लिबुअू-लतिहिन्-न औ आबाइ-हिन्-न औ आबाइ-बुअू-लतिहिन्-न औ अब्नाइ-हिन्-न औ अब्ना-इ बुअू-लतिहिन्-न औ इख़्वानिहिन्-न औ बनी इख़्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़वातिहिन्-न औ निसाइ-हिन्-न औ मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न अवित्ताबिअ़ी-न ग़ैरि उलिल्-इर्बति मिनर्-रिजालि अवित्-तिफ़्लिल्लज़ी-न लम् यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसा-इ व ला यज़्रिब्-न बि-अर्जुलिहिन्-न लियुअ्-ल-म मा युख़्फ़ी-न मिन् ज़ीनतिहिन्-न, व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न लअ़ल्लकुम्

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ
وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ
حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ
لَكُمْ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ
مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾
قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ
أَزْكَىٰ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ
مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ
زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ
أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ
أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ
مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ

तुफ़्लिहून (31) व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न मिन् अिबादिकुम् व इमा-इकुम्, इंय्यकूनू फ़ु-क़रा-अ युग्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (32) वल्-यस्तअ़फ़िफ़िल्लज़ी-न ला यजिदू-न हत्ता युग़्नि-यहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लज़ी-न यब्तग़ूनल्-किता-ब मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अ़लिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव्-व आतूहुम् मिम्-मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम्, व ला तुक्रिहू फ़-तयातिकुम् अ़लल्बिग़ा-इ इन् अरद्-न त-हस्सुनल्-लितब्तग़ू अ़-रज़ल्-हयातिद्दुन्या, व मंय्युक्रिह्हुन्-न फ़-इन्नल्ला-ह मिम्-बअ़्दि इक्राहिहिन्-न ग़फ़ूरुर्-रहीम (33) व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिंव्-व म-सलम्-मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् व मौअि-ज़तल्-लिल्मुत्तक़ीन (34) ❖

अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, म-सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन्, अल्-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन्, अज़्ज़ुजा-जतु क-अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्-युंय्यू-क़दु मिन् श-ज-रतिम् मुबार-कतिन् ज़ैतूनतिल्-ला शर्क़िय्यतिंव् व ला ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ी-उ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन्, नूरुन् अ़ला नूरिन्, यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशा-उ, व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (35) फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन् तुर्-फ़-अ़ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्-ग़ुदुव्वि वल्-आसाल (36) रिजालुल् ला तुल्हीहिम् तिजा-रतुंव्-व ला बैअ़ुन् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व

وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوٓا
إِلَى ٱللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ ٱلْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنكِحُوا ٱلْأَيَٰمَىٰ
مِنكُمْ وَٱلصَّٰلِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ إِن يَكُونُوا فُقَرَآءَ
يُغْنِهِمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ
ٱلَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَٱلَّذِينَ
يَبْتَغُونَ ٱلْكِتَٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا وَءَاتُوهُم مِّن مَّالِ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ ءَاتَىٰكُمْ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَٰتِكُمْ
عَلَى ٱلْبِغَآءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَ
مَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ ٱللَّهَ مِنۢ بَعْدِ إِكْرَٰهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ
أَنزَلْنَآ إِلَيْكُمْ ءَايَٰتٍ مُّبَيِّنَٰتٍ وَمَثَلًا مِّنَ ٱلَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾ ٱللَّهُ نُورُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ مَثَلُ نُورِهِۦ
كَمِشْكَوٰةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ٱلْمِصْبَاحُ فِى زُجَاجَةٍ ٱلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا
كَوْكَبٌ دُرِّىٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا
غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِىٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّورٌ عَلَىٰ نُورٍ
يَهْدِى ٱللَّهُ لِنُورِهِۦ مَن يَشَآءُ وَيَضْرِبُ ٱللَّهُ ٱلْأَمْثَٰلَ لِلنَّاسِ
وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾ فِى بُيُوتٍ أَذِنَ ٱللَّهُ أَن تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ

इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफ़ू-न यौमन् त-तक़ल्लबु फ़ीहिल्-क़ुलूबु वल्-अब्सार **(37)** लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा अमिलू व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब **(38)** वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ्मालुहुम् क-सराबिम् बिक़ी-अतिंय्-यह्सबुहुज़्-ज़म्आनु मा-अन्, हत्ता इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हू शैअंव्-व व-जदल्ला-ह अिन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसा-बहू, वल्लाहु सरीअुल्-हिसाब **(39)** औ क-ज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रिल् लुज्जिय्यिंय्-यग़्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही सहाबुन्, ज़ुलुमातुम्-बअ्ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ्ज़िन्, इज़ा अख़्र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा, व मल्लम् यज्अलिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्-नूर **(40)** ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन्, कुल्लुन् क़द् अलि-म सला-तहू व तस्बी-हहू, वल्लाहु अलीमुम् बिमा यफ़्अलून **(41)** व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलल्लाहिल्-मसीर **(42)** अलम् त-र अन्नल्ला-ह युज़्जी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अलुहू रुकामन् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही व युनज़्ज़िलु मिनस्समा-इ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशा-उ व यस्रिफ़ुहू अम्-मंय्यशा-उ, यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार **(43)** युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लअिब्-रतल्-लिउलिल्-अब्सार **(44)** वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम् मिम्-माइन् फ़-मिन्हुम् मंय्यम्शी अला बत्निही व मिन्हुम्

فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝ رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ
تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَوٰةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَوٰةِ
يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۝ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ
أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ
الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِندَهُ
فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ
لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَاتٌ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ
اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَافَّاتٍ ۖ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَ
تَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ
ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَاءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِن بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ
عَن مَّن يَشَاءُ ۖ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ اللَّهُ

मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर्-बअि़न्, यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (45) ल-क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-मुबय्यिनातिन्, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (46) व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ़्ना सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन (47) व इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मुअ़्रिज़ून (48) व इंय्यकुल्-लहुमुल्-हक़्क़ु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन (49) अ-फ़ी क़ुलूबि-हिम् म-रज़ुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यहीफ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू, बल् उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ▲ (50) ❖

इन्नमा का-न क़ौलल्-मुअ्मिनी-न इज़ा दुअ़ू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् अंय्यक़ूलू समिअ़्ना व अतअ़्ना, व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (51) व मंय्युतिअि़ल्ला-ह व रसूलहू व यख़्शल्ला-ह व यत्तक़्हि फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ाइज़ून (52) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् अमर्-तहुम् ल-यख़्रुजुन्-न, क़ुल् ला तुक़्सिमू ता-अ़तुम् मअ़्रू-फ़तुन्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (53) क़ुल् अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्रसू-ल फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैहि मा हुम्मि-ल व अ़लैकुम् मा हुम्मिल्तुम्, व इन् तुतीअ़ूहु तह्तदू, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (54) व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व

الیل والنهار ان فی ذلک لعبرة لاولی الابصار ۝ والله خلق
کل دابة من ماء فمنهم من یمشی علی بطنه ومنهم من
یمشی علی رجلین ومنهم من یمشی علی اربع یخلق الله
ما یشاء ان الله علی کل شیء قدیر ۝ لقد انزلنا ایت مبینت
والله یهدی من یشاء الی صراط مستقیم ۝ ویقولون امنا
بالله وبالرسول واطعنا ثم یتولی فریق منهم من بعد ذلک
وما اولئک بالمؤمنین ۝ واذا دعوا الی الله ورسوله لیحکم
بینهم اذا فریق منهم معرضون ۝ وان یکن لهم الحق یاتوا
الیه مذعنین ۝ افی قلوبهم مرض ام ارتابوا ام یخافون
ان یحیف الله علیهم ورسوله بل اولئک هم الظلمون ۝ انما
کان قول المؤمنین اذا دعوا الی الله ورسوله لیحکم بینهم
ان یقولوا سمعنا واطعنا واولئک هم المفلحون ۝ ومن یطع
الله ورسوله ویخش الله ویتقه فاولئک هم الفائزون ۝
واقسموا بالله جهد ایمانهم لئن امرتهم لیخرجن قل
لا تقسموا طاعة معروفة ان الله خبیر بما تعملون ۝ قل
اطیعوا الله واطیعوا الرسول فان تولوا فانما علیه ما حمل

ربع

منزل ٤

अ़मिलुस्सालिहाति ल-यस्तख़्लिफ़न्नहुम् फ़िल्अर्ज़ि क-मस्तख़्ल-फ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व ल-युमक्किनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लज़िर्-तज़ा लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्-बअ़्दि ख़ौफ़िहिम् अम्नन्, यअ़्बुदू-ननी ला युशिरकू-न बी शैअन्, व मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून **(55)** व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअ़ुर्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्-हमून **(56)** ला तह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मुअ़्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मअ़्वाहुमुन्नारु, व ल-बिअ़्सल्- मसीर **(57)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ़्ज़िन्कुमुल्लज़ी-न म-लकत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न लम् यब्लुग़ुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला-स मर्रातिन् मिन् क़ब्लि सलातिल्-फ़ज्रि व ही-न त-ज़अ़ू-न सिया-बकुम् मिनज़्ज़ही-रति व मिम्-बअ़्दि सलातिल्-अ़िशा-इ, सलासु औ़रातिल्- लकुम्, लै-स अ़लैकुम् व ला अ़लैहिम् जुनाहुम् बअ़्-दहुन्-न, तव्वाफ़ू-न अ़लैकुम् बअ़्ज़ुकुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(58)** व इज़ा ब-लग़ल्-अत्फ़ालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्यस्तअ़्ज़िनू कमस्तअ्-ज़नल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(59)** वल्क़वाअ़िदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाहन् फ़लै-स अ़लैहिन्-न जुनाहुन् अंय्य-ज़अ़्-न सिया-बहुन्-न ग़ै-र मु-तबर्रिजातिम्- बिज़ी-नतिन्, व

قد افلح ١٨ ٣٢٣ النور ٢٤

وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا
الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ
بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ
بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ
لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ
وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ
الْعِشَاءِ ۚ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ
بَعْدَهُنَّ ۚ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ
الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ

منزل

अंय्यस्तअ्फ़िफ़्-न ख़ैरुल् लहुन्-न, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम **(60)** लै-स अ़लल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुंव्-व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़वातिकुम् औ बुयूति अअ्मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़्वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा मलक्तुम् मफ़ाति-हहू औ सदीक़िकुम्, लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन्, फ़-इज़ा दख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तहिय्य-तम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबार-कतन् तय्यि-बतन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून **(61)** ❖

इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही व इज़ा कानू म-अ़हू अ़ला अम्रिन् जामिअ़िल् लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु, इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क उलाइ-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इज़स्तअ्-ज़नू-क लिबअ्ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्ज़ल्-लिमन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम **(62)** ला तज्अ़लू दुआअर्रसूलि बैनकुम् क-दुआ-इ बअ्ज़िकुम् बअ्ज़न्, क़द् यअ्लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-तसल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् फ़ल्यह्ज़रिल्लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अ़न् अम्रिही अन् तुसी-बहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसी-बहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(63)** अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़द्

الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ
غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۞ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا
عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا
مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا
اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۞
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى
اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ
شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ
قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ
عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ

ع ٨ ١٤

यअ्लमु मा अन्तुम् अ़लैहि, व यौ-म युर्जअू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (64) ❖

25 सूरतुल्-फ़ुरक़ानि 42

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3919 अक्षर, 906 शब्द, 77 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी नज़्ज़-लल्-फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आलमी-न नज़ीरा (1) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्-मुल्कि व ख़ा-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द्द-रहू तक़्दीरा (2) वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतल्-ला यख़्लुक़ू-न शैअंव् व हुम् युख़्लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव्-व ला हयातंव्-व ला नुशूरा (3) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कु-निफ़्तराहु व अ-आ़नहू अ़लैहि क़ौमुन् आ-ख़रू-न फ़-क़द् जाऊ ज़ुल्मंव्-वज़ूरा (4) व क़ालू असातीरुल् अव्वलीनक्त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक्र-तंव्-व असीला (5) क़ुल् अन्ज़-लहुल्लज़ी यअ्लमुस्सिर्-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (6) व क़ालू मालि- हाज़र्रसूलि यअ्कुलुत्तआ़-म व यम्शी फ़िल्-अस्वाक़ि, लौ ला उन्ज़ि-ल इलैहि म-लकुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा (7) औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुंय्-यअ्कुलु मिन्हा, व

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ
اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَسَبْعُ وَسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَسِتُّ رُكُوْعَاتٍ
تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۝
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ
لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝
وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَ
لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً
وَّلَا نُشُوْرًا ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ نِ افْتَرٰىهُ
وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝ وَ
قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّ
اَصِيْلًا ۝ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ
الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ
مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا وَ
قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا

क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा **(8)** उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला **(9)** ❖

तबा-रकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ़-ल ल-क ख़ैरम्-मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व यज्अ़ल् ल-क क़ुसूरा **(10)** बल् कज़्ज़बू बिस्सा-अ़ति व अअ़्तद्ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्सा-अ़ति सअ़ीरा **(11)** इज़ा र-अत्हुम् मिम्-मकानिम्-बअ़ीदिन् समिअ़ू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा **(12)** व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मानन् ज़य्यिक़म्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा **(13)** ला तद्अुल्यौ-म सुबूरंव्-वाहिदंव्-वद्अ़ू सुबूरन् कसीरा **(14)** क़ुल् अ-ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्लती वुअि़दल् मुत्तक़ू-न, कानत् लहुम् जज़ा-अंव्-व मसीरा **(15)** लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न, का-न अ़ला रब्बि-क वअ़्दम् मस्ऊला **(16)** व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ-अन्तुम् अज़्लल्तुम् अ़िबादी हाउला-इ अम् हुम् ज़ल्लुस्सबील **(17)** क़ालू सुब्हान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन्-नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ़्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र व कानू क़ौमम्-बूरा **(18)** फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न फ़मा तस्ततीअ़ू-न सर्फ़ंव्-व ला नस्रन् व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अ़ज़ाबन् कबीरा **(19)** व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत्तआ़-म व यमशू-न फ़िल्-अस्वाक़ि, व जअ़ल्ना बअ़्-ज़कुम् लिबअ़्ज़िन फ़ित्-नतन् अ-तस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा **(20)** ❖

قد افلح ١٨ ٣٢٦ الفرقان ٢٥

لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبَارَكَ الَّذِي إِنْ
شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
وَيَجْعَلْ لَكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾ إِذَا رَأَتْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا
وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾
لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ
أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾
لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ﴿١٦﴾
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ
أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ
مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنْ
مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ
كَذَّبُوكُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ
يَظْلِمْ مِنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَ
جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

منزل

उन्नीसवाँ पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरतुल्-फ़ुरक़ानि (आयत 21 से 77)

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-मलाइ-कतु औ नरा रब्बना, ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अ़तौ अ़ुतुव्वन् कबीरा (21) यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-त ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न हिज्रम्-मह्जूरा (22) व क़दिम्ना इला मा अ़मिलू मिन् अ़-मलिन् फ़-जअ़ल्नाहु हबा-अम् मन्सूरा (23) अस्हाबुल्-जन्नति यौमइज़िन् ख़ैरुम्-मुस्त-क़र्रंव्-व अह्सनु मक़ीला (24) व यौ-म त-शक़्क़क़ुस्समा-उ बिल्-ग़मामि व नुज़्ज़िलल्-मलाइ-कतु तन्ज़ीला (25) अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्हक़्क़ु लिर्रह्मानि, व का-न यौमन् अ़लल्- काफ़िरी-न अ़सीरा (26) व यौ-म य-अ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला यदैहि यक़ूलु यालै-तनित्तख़ज़्तु मअ़र्-रसूलि सबीला (27) या वैलता लै-तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (28) ल-क़द् अज़ल्लनी अ़निज़्ज़िक्रि बअ़्-द इज़् जा-अनी, व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला (29) व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (30) व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वम् मिनल्-मुज्रिमी-न, व कफ़ा बिरब्बि-क हादियंव्-व नसीरा (31) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिल्-क़ुर्आनु जुम्ल-तंव्वाहि-दतन् कज़ालि-क लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु तर्तीला (32) व ला यअ्तून-क बि-म-सलिन्

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ
اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿۲۱﴾
يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ
حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۲۲﴾ وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ
هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ
مَقِيْلًا ﴿۲۴﴾ وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿۲۵﴾
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۣالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿۲۶﴾
وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ
الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿۲۷﴾ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿۲۸﴾
لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ
خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ
مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَ
كَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿۳۱﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَ
رَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ
تَفْسِيْرًا ﴿۳۳﴾ اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ

इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व अह्स-न तफ़्सीरा **(33)** अल्लज़ी-न युह्शरू-न अ़ला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म उलाइ-क शर्रुम्-मकानंव्-व अज़ल्लु सबीला **(34)** ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्ना म-अ़हू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा **(35)** फ़-क़ुल्नज़्हबा इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, फ़-दम्मर्नाहुम् तद्मीरा **(36)** व क़ौ-म नूहिल्-लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग़्रक़्नाहुम् व जअ़ल्नाहुम् लिन्नासि आ-यतन्, व अअ़्तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमा **(37)** व आ़दंव्-व समू-द व अस्हाबर्रस्सि व क़ुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा **(38)** व कुल्लन् ज़रब्ना लहुल्-अम्सा-ल व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा **(39)** व ल-क़द् अतौ अ़लल्-क़र्-यतिल्लती उम्ति-रत् म-तरस्सौ-इ, अ-फ़लम् यकूनू यरौनहा बल् कानू ला यर्जू-न नुशूरा **(40)** व इज़ा रऔ-क इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवा, अहाज़ल्लज़ी ब-अ़सल्लाहु रसूला **(41)** इन् का-द लयुज़िल्लुना अ़न् आलि-हतिना लौ ला अन् सबर्ना अ़लैहा, व सौ-फ़ यअ़्लमू-न ही-न यरौलन्-अ़ज़ा-ब मन् अज़ल्लु सबीला **(42)** अ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु, अ-फ़अन्-त तकूनु अ़लैहि वकीला **(43)** अम् तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअ़ू-न औ यअ़्क़िलू-न, इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आ़मि बल् हुम् अज़ल्लु सबीला **(44)** ❖

अलम् त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-ल व लौ शा-अ ल-ज-अ़-लहू साकिनन् सुम्-म जअ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला **(45)** सुम्-म क़बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा **(46)** व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्-वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़लन्नहा-र नुशूरा **(47)**

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ
جَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا
الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ
ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ؗ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾ وَ
لَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا
يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ
اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ
اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ
الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ
اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ
اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾ اَلَمْ
تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا
الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَهُوَ
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ

व हुवल्लज़ी अर्-सलर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् तहूरा **(48)** लिनुह्यि-य बिही बल्द-तम् मैतंव्-व नुस्कि-यहू मिम्मा ख़लक़्ना अन्आमंव्-व अनासिय्-य कसीरा **(49)** व ल-क़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा **(50)** व लौ शिअ्ना ल-बअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्-यतिन् नज़ीरा **(51)** फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा **(52)** व हुवल्लज़ी म-रजल्-बह्रैनि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व ज-अ़-ल बैनहुमा बर्-ज़ख़ंव्-व हिज्रम्-मह्जूरा **(53)** व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ मिनल्-मा-इ ब-शरन् फ़-ज-अ़-लहू न-सबंव्-व् सिहरन्, व का-न रब्बु-क क़दीरा **(54)** व यअ़्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्, व कानल्-काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा **(55)** व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा **(56)** क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला **(57)** व तवक्कल् अ़लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही, व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा **(58)** अल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, अर्रह्मानु फ़स्अल् बिही ख़बीरा **(59)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू लिर्रह्मानि क़ालू व मर्रह्मानु अ-नस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ा-दहुम् नुफ़ूरा ❑ **(60)** ❖

نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ
لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ
كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾
وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ
وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ
الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾ وَيَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ
ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ
خَبِيْرًا ﴿٥٨﴾ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ
ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۤ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ
زَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ

तबा-रकल्लज़ी ज-अ़-ल फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज-अ़-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-मरम् मुनीरा **(61)** व हुवल्लज़ी ज-अ़लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़-तल् लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा **(62)** व अ़िबादुर्रह्मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्-अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ा-त-बहुमुल्-जाहिलू-न क़ालू सलामा **(63)** वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्-व क़ियामा **(64)** वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़् अ़न्ना अ़ज़ा-ब जहन्न-म इन्-न अ़ज़ा-बहा का-न ग़रामा **(65)** इन्नहा साअत् मुस्त-क़र्रंव्-व मुक़ामा **(66)** वल्लज़ी-न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा **(67)** वल्लज़ी-न ला यद्अू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़ि व ला यज़्नू-न, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क यल्-क़ असामा **(68)** युज़ाअ़फ़् लहुल्-अ़ज़ाबु यौमल्-क़ियामति व यख़्लुद् फ़ीही मुहाना **(69)** इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल अ़-मलन् सालिहन् फ़-उलाइ-क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह-सनातिन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा **(70)** व मन् ता-ब व अ़मि-ल सालिहन् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा **(71)** वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्ज़ू-र व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू किरामा **(72)** वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अ़लैहा सुम्मंव्-व अ़ुम्याना **(73)** वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ़्युनिंव्-वज्अ़ल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा **(74)** उलाइ-क युज्ज़ौनल्-ग़ुरफ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न फ़ीहा तहिय्य-तंव्-

وقال الذين ١٩ ٣٣٠ الفرقان ٢٥

فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُّنِيرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً
لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ
يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا
سَلَامًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِينَ
يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ
غَرَامًا ﴿٦٥﴾ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا
لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِينَ
لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ
اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُضَاعَفْ
لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ إِلَّا مَن تَابَ
وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٧٠﴾ وَمَن تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ
إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ
مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا
صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا
وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾ أُولَٰئِكَ

منزل

व सलामा (75) ख़ालिदी-न फ़ीहा हसुनत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (76) क़ुल् मा यअ्-बउ बिकुम् रब्बी लौ ला दुआउकुम् फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ यकूनु लिज़ामा ◆ (77) ❖

26 सूरतुश्-शु-अ़रा-इ 47

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5689 अक्षर 1347 शब्द 227 आयतें और 11 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् (1) तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन (2) लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अल्-ला यकूनू मुअ्मिनीन (3) इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अ़लैहिम् मिनस्समा-इ आ-यतन् फ़-ज़ल्लत् अअ्नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िअ़ीन (4) व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिनर्रह़्मानि मुह़्दसिन् इल्ला कानू अ़न्हु मुअ्रिज़ीन (5) फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-सयअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (6) अ-व लम् यरौ इलल्-अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (7) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (8) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (9) ❖

الشعرآء ٢٦ ٣٣١ وقال الذين ١٩

يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾
خٰلِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ
رَبِّي لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾
سورة الشعراء مكية بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ
اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِينَ ﴿٤﴾ وَمَا يَاْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ
مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ﴿٥﴾ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَاْتِيهِمْ اَنْبٰٓؤُا
مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْبَتْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٩﴾ وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ
مُوسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ اَلَا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾
قَالَ رَبِّ اِنِّيٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا
يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُونَ ﴿١٣﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَاَخَافُ
اَنْ يَّقْتُلُونِ ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُونَ ﴿١٥﴾
فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَآ اِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٦﴾ اَنْ اَرْسِلْ

منزل ٥

व इज़् नादा रब्बु-क मूसा अनिअ्तिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (10) क़ौ-म फ़िर्औ-न, अला यत्तक़ून (11) क़ा-ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-कज़्ज़िबून (12) व यज़ीक़ु सद्री व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला हारून (13) व लहुम् अ़लय्-य ज़म्बुन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (14) क़ा-ल कल्ला फ़ज़्हबा बिआयातिना इन्ना म-अ़कुम् मुस्तमिअ़ून (15)

फ़अ्तिया फ़िर्औ़-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन **(16)** अन् अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राईल **(17)** क़ा-ल अलम् नुरब्बि-क फ़ीना वलीदंव्-व लबिस्-त फ़ीना मिन् अ़ुमुरि-क सिनीन **(18)** व फ़अ़ल्-त फ़अ्-ल-तकल्लती फ़अ़ल्-त व अन्-त मिनल्-काफ़िरीन **(19)** क़ा-ल फ़अ़ल्तुहा इज़ंव्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन **(20)** फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मंव्-व ज-अ़-लनी मिनल्-मुर्सलीन **(21)** व तिल्-क निअ़्-मतुन् तमुन्नुहा अ़लय्-य अन् अ़ब्बत्-त बनी इस्राईल **(22)** क़ा-ल फ़िर्औ़नु व मा रब्बुल्-आ़लमीन **(23)** क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् मूक़िनीन **(24)** क़ा-ल लिमन् हौलहू अला तस्तमिअ़ून **(25)** क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन **(26)** क़ा-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मज्नून **(27)** क़ा-ल रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् तअ़्क़िलून **(28)** क़ा-ल ल-इनित्त--ख़ज़्-त इलाहन् ग़ैरी ल-अज्अ़-लन्न-क मिनल्-मस्जूनीन **(29)** क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन **(30)** क़ा-ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(31)** फ़-अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ़्बानुम्-मुबीन **(32)** व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन **(33)** ❖

क़ा-ल लिल्म-लइ हौलहू इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम **(34)** युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिही फ़-माज़ा तअ्मुरून **(35)** क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु वब्अ़स् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन **(36)** यअ्तू-क बिकुल्लि सह्हारिन् अ़लीम **(37)** फ़जुमिअ़स्स-ह-रतु

وقال الذين ١٩ ٣٣٢ الشعرآء ٢٦

معنا بنی اسرآءیل ﴿١٧﴾ قال الم نربك فینا ولیدا ولبثت
فینا من عمرك سنین ﴿١٨﴾ وفعلت فعلتك التی فعلت و
انت من الكفرین ﴿١٩﴾ قال فعلتها اذا وانا من الضآلین ﴿٢٠﴾
ففررت منكم لما خفتكم فوهب لی ربی حكما وجعلنی
من المرسلین ﴿٢١﴾ وتلك نعمة تمنها علی ان عبدت بنی
اسرآءیل ﴿٢٢﴾ قال فرعون وما رب العلمین ﴿٢٣﴾ قال رب السموت
والارض وما بینهما ان كنتم موقنین ﴿٢٤﴾ قال لمن حوله
الا تستمعون ﴿٢٥﴾ قال ربكم ورب ابآئكم الاولین ﴿٢٦﴾ قال
ان رسولكم الذی ارسل الیكم لمجنون ﴿٢٧﴾ قال رب المشرق
والمغرب وما بینهما ان كنتم تعقلون ﴿٢٨﴾ قال لئن اتخذت
الها غیری لاجعلنك من المسجونین ﴿٢٩﴾ قال اولو جئتك
بشیء مبین ﴿٣٠﴾ قال فات به ان كنت من الصدقین ﴿٣١﴾
فالقی عصاه فاذا هی ثعبان مبین ﴿٣٢﴾ ونزع یده فاذا
هی بیضآء للنظرین ﴿٣٣﴾ قال للملا حوله ان هذا لسحر
علیم ﴿٣٤﴾ یرید ان یخرجكم من ارضكم بسحره فماذا
تامرون ﴿٣٥﴾ قالوا ارجه واخاه وابعث فی المدآئن حشرین ﴿٣٦﴾

منزل ٥

लिमीक़ाति यौमिम्-मअ्लूम (38) व क़ी-ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिअून (39) लअ़ल्लना नत्तबिअुस्स-ह-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (40) फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ालू लिफ़िर्औ-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्-ग़ालिबीन (41) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् इज़ल् लमिनल्-मुक़र्रबीन (42) क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (43) फ़-अल्क़ौ हिबा-लहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िर्औ-न इन्ना ल-नह्नुल्-ग़ालिबून (44) फ़-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (45) फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (46) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (47) रब्बि मूसा व हारून (48) क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्- सिह्-र फ़-लसौ-फ़ तअ्लमू-न, ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मअ़ीन (49) क़ालू ला ज़ै-र इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून (50) इन्ना नत्मअु अंय्यग़्फ़ि-र लना रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना अव्वलल्-मुअ्मिनीन (51) ❖

وقال الذين ١٩ ٣٣٣ الشعراء ٢٦

يأتوك بكل سحار عليم ۝ فجمع السحرة لميقات يوم معلوم ۝
وقيل للناس هل أنتم مجتمعون ۝ لعلنا نتبع السحرة
إن كانوا هم الغلبين ۝ فلما جاء السحرة قالوا لفرعون
أئن لنا لأجرا إن كنا نحن الغلبين ۝ قال نعم وإنكم
إذا لمن المقربين ۝ قال لهم موسى ألقوا ما أنتم ملقون ۝
فألقوا حبالهم وعصيهم وقالوا بعزة فرعون إنا لنحن
الغلبون ۝ فألقى موسى عصاه فإذا هي تلقف ما يأفكون ۝
فألقي السحرة سجدين ۝ قالوا آمنا برب العلمين ۝ رب
موسى وهرون ۝ قال آمنتم له قبل أن آذن لكم إنه
لكبيركم الذي علمكم السحر فلسوف تعلمون ۝ لأقطعن
أيديكم وأرجلكم من خلاف ولأصلبنكم أجمعين ۝
قالوا لا ضير إنا إلى ربنا منقلبون ۝ إنا نطمع أن يغفر لنا
ربنا خطيانا أن كنا أول المؤمنين ۝ وأوحينا إلى موسى
أن أسر بعبادي إنكم متبعون ۝ فأرسل فرعون في المدائن
حشرين ۝ إن هؤلاء لشرذمة قليلون ۝ وإنهم لنا
لغائظون ۝ وإنا لجميع حذرون ۝ فأخرجنهم من جنت

منزل ٥

व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी इन्नकुम मुत्त-बअ़ून (52) फ़-अर्स-ल फ़िर्औनु फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (53) इन्-न हाउला-इ लशिर्ज़ि-मतुन् क़लीलून (54) व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून (55) व इन्ना ल-जमीअुन् हाज़िरून (56) फ़-अख़्रज्नाहुम् मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयून (57) व कुनूज़िंव्-व मक़ामिन् करीम (58) कज़ालि-क, व औरस्नाहा

बनी इस्राईल (59) फ़-अत्बअूहुम् मुश्रिक़ीन (60) फ़-लम्मा तरा-अल्-जम्आनि क़ा-ल अस्हाबु मूसा इन्ना लमुद्-रकून (61) क़ा-ल कल्ला इन्-न मअि-य रब्बी स-यह्दीन (62) फ़-औहैना इला मूसा अनिज़्रिब् बिअ़साकल्-बह्-र, फ़न्फ़-ल-क़ फ़का-न कुल्लु फ़िर्किन् कत्तौदिल्-अ़ज़ीम (63) व अज़्लफ़्ना सम्मल्-आ-ख़रीन (64) व अन्जैना मूसा व मम्-म-अ़हू अज्मअ़ीन (65) सुम्-म अग़्रक़्नल्-आ-ख़रीन (66) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (67) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (68) ❖

वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अ इब्राही-म ✣ (69) इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही मा तअ्बुदून (70) क़ालू नअ्बुदु अस्नामन् फ़-नज़ल्लु लहा आ़किफ़ीन (71) क़ा-ल हल् यस्मअ़ूनकुम् इज़् तद्अ़ून (72) औ यन्फ़अ़ूनकुम् औ यज़ुर्रून (73) क़ालू बल् वजद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़्अ़लून (74) क़ा-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ्बुदून (75) अन्तुम् व आबाउकुमुल्-अक़्दमून (76) फ़-इन्नहुम् अ़दुव्वुल्-ली इल्ला रब्बल्-आलमीन (77) अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन (78) वल्लज़ी हु-व युत्अ़िमुनी व यस्क़ीन (79) व इज़ा मरिज़्तु फ़हु-व यश्फ़ीन (80) वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह्यीन (81) वल्लज़ी अत्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र ली ख़ाती-अती यौमद्दीन (82) रब्बि हब् ली हुक्मंव्-व अल्हिक़्नी

الشعرآء ٢٦ ٣٣٤ وقال الذين ١٩

وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ۭ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ
اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ
سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ
فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ
الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ
اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ
اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ
اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ
تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَاۗءَنَا
كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَ
اٰبَاۗؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾
الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾
وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾
وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْۗئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ

منزل ٥

बिस्सालिहीन (83) वज्अ़ल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्-आख़िरीन (84) वज्अ़ल्नी मिंव्-र-सति जन्नतिन्-नओ़म (85) वग़्फ़िर् लि-अबी इन्नहू का-न मिनज़्ज़ाल्लीन (86) व ला तुख़्ज़िनी यौ-म युब्असून (87) यौ-म ला यन्फ़अु मालुंव्-व ला बनून (88) इल्ला मन् अतल्ला-ह बि-क़ल्बिन् सलीम (89) व उज़्लि-फ़तिल्- जन्नतु लिल्मुत्तक़ीन (90) व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिल्ग़ावीन (91) व क़ी-ल लहुम् ऐ-नमा कुन्तुम् तअ्बुदून (92) मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्सुरूनकुम् औ यन्तसिरून (93) फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून (94) व जुनूदु इब्ली-स अज्मअ़ून (95) क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून (96) तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम् मुबीन (97) इज़् नुसव्वीकुम् बिरब्बिल्-आ़लमीन (98) व मा अज़ल्लना इल्लल्- मुज्रिमून (99) फ़मा लना मिन् शाफ़िअ़ीन (100) व ला सदीक़िन् हमीम (101) फ़लौ अन्-न लना कर्र-तन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (102) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (103) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (104) ❖

कज़्ज़बत् क़ौमु नूहि-निल्-मुर्सलीन (105) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तक़ून (106) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (107) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अ़तीअ़ून (108) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (109)

الشعراء ٢٦ ٣٣٥ وقال الذين ١٩

حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۙ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي
الْاٰخِرِيْنَ ۙ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۙ وَاغْفِرْ لِاَبِيْۤ
اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ۙ يَوْمَ لَا
يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۙ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۙ وَاُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۙ وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا
كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۙ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ؕ
فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۙ وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ؕ قَالُوْا
وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۙ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ اِذْ
نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ۙ فَمَا لَنَا
مِنْ شَافِعِيْنَ ۙ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ۙ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۙ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ
ِالْمُرْسَلِيْنَ ۚ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ اِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ
اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ؕ
قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ؕ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا

منزل ٥

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (110) क़ालू अनुअ्मिनु ल-क वत्त-ब-अ़कल्-अर्-ज़लून (111) क़ा-ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ़्मलून (112) इन् हिसाबुहुम् इल्ला अ़ला रब्बी लौ तश्अुरून (113) व मा अ-न बितारिदिल्-मुअ्मिनीन (114) इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (115) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या नूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन (116)

क़ा-ल रब्बि इन्-न क़ौमी कज़्ज़बून (117) फ़फ़्तह् बैनी व बैनहुम् फ़त्हंव्-व नज्जिनी व मम्-मअि-य मिनल्-मुअ्मिनीन ● (118) फ़-अन्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्किल्-मश्हून (119) सुम्-म अग़्रक़्ना बअ़्दुल्-बाक़ीन (120) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (121) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (122) ❖

कज़्ज़-बत् आ़दु-निल्-मुर्-सलीन (123) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तक़ून (124) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (125) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (126) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (127)

وقال الذين ١٩ | ٣٣٦ | الشعراء ٢٦

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَ
مَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِنْ
لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي
كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ
أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ
الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾ إِنِّي لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ
أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ
آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾ وَإِذَا
بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٣١﴾ وَاتَّقُوا
الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾ أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿١٣٣﴾ وَجَنَّاتٍ
وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾ قَالُوا سَوَاءٌ
عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴿١٣٦﴾ إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ
الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿١٣٨﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي

منزل

अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअिन् आ-यतन् तअ़्-बसून (128) व तत्तख़िज़ू-न मसानि-अ़ लअ़ल्लकुम् तख़्लुदून (129) व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम् जब्बारीन (130) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (131) वत्तक़ुल्लज़ी अ-मद्दकुम् बिमा तअ़्लमून (132) अ-मद्दकुम् बिअन्आ़मिंव्-व बनीन (133) व जन्नातिंव्-व अ़ुयून (134) इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (135) क़ालू सवाउन् अ़लैना अ-वअ़ज़्-त अम् लम् तकुम् मिनल्-

वाअिज़ीन **(136)** इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुक़ुल्-अव्वलीन **(137)** व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन **(138)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अह्लक्नाहुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन **(139)** व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम **(140)** ❖

कज़्ज़-बत् समूदुल्-मुर्सलीन **(141)** इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तक़ून **(142)** इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन **(143)** फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून **(144)** व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन **(145)** अ-तुतरकू-न फ़ी मा हाहुना आमिनीन **(146)** फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून **(147)** व ज़ुरूअिंव् व नख़्लिन् तल्अुहा हज़ीम **(148)** व तन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् फ़ारिहीन **(149)** फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून **(150)** व ला तुतीअू अम्रल्-मुस्रिफ़ीन **(151)** अल्लज़ी-न युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून **(152)** क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन **(153)** मा अन्-त इल्ला ब-शरुम् मिस्लुना फ़अ्ति बिआ-यतिन् इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन **(154)** क़ा-ल हाज़िही ना-क़तुल्-लहा शिर्बुंव्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-मअ्लूम **(155)** व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़ज़ीम **(156)** फ़-अ़-क़रूहा फ़-अस्बहू नादिमीन **(157)** फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन **(158)** व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम **(159)** ❖

कज़्ज़-बत् क़ौमु लूति-निल्-मुर्सलीन **(160)** इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला

وقال الذين ١٩ ٣٣٧ الشعرآء ٢٦

ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ
اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَ
مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ
وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۝ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ۝
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ
الْمُسَحَّرِيْنَ ۝ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ فَعَقَرُوْهَا
فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۗ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ
قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَآ اَسْئَلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ

منزل ٥

तत्तक़ून (161) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (162) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (163) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (164) अ-तअ्तूनज़्ज़ुक्रा-न मिनल्-आ़लमीन (165) व त-ज़रू-न मा ख़-ल-क़ लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वाजिकुम्, बल् अन्तुम् क़ौमुन् आ़दून (166) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या लूतु ल-तकूनन्-न मिनल्-मुख़्रजीन (167) क़ा-ल इन्नी लि-अ़-मलिकुम् मिनल्-क़ालीन (168) रब्बि नज्जिनी व अह्ली मिम्मा यअ्मलून (169) फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन (170) इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (171) सुम्-म दम्मर्नल् आख़रीन (172) व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन (173) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (174) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (175) ❖

कज़्ज़-ब अस्हाबुल्- ऐ-कतिल् मुर्-सलीन (176) इज़् क़ा-ल लहुम् शुअ़ैबुन् अला तत्तक़ून (177) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (178) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (179) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (180) औफ़ुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन (181) व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम (182) व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (183) वत्तक़ुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्- जिबिल्ल-तल्-अव्वलीन (184) क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन (185) व मा अन्-त इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु-क लमिनल्-काज़िबीन (186) फ़-अस्क़ित् अ़लैना कि-सफ़म्-मिनस्समा-इ इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (187) क़ा-ल रब्बी

مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾ وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَلْ اَنْتُمْ
قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾
قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾
فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ
لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوْا
بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾
قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ
نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ
فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

अअ्‌लमु बिमा तअ्‌मलून (188) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुम् अ़ज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति, इन्नहू का-न अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (189) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्‌मिनीन (190) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (191) ❖

व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-आ़लमीन (192) न-ज़-ल बिहिर्-रूहुल्-अमीन (193) अ़ला क़ल्बि-क लि-तकू-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (194) बिलिसानिन् अ़-रबिय्यिम्-मुबीन (195) व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल्-अव्वलीन (196) अ-व लम् यकुल्लहुम् आ-यतन् अंय्यअ्-ल-महू अ़ु-लमा-उ बनी इस्राईल (197) व लौ नज़्ज़ल्नाहु अ़ला बअ्‌ज़िल्-अअ्-जमीन (198) फ़-क़-र-अहू अ़लैहिम् मा कानू बिही मुअ्‌मिनीन (199) कज़ालि-क सलक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (200) ला युअ्‌मिनू-न बिही हत्ता य-रवुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (201) फ़-यअ्ति-यहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अ़ुरून (202) फ़-यक़ूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून (203) अ-फ़बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्‌जिलून (204) अ-फ़-रऐ-त इम् मत्तअ्‌नाहुम् सिनीन (205) सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यू-अ़दून (206) मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू युमत्तअ़ून (207) व मा अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून (208) ज़िक्रा व मा कुन्ना ज़ालिमीन (209) व मा तनज़्ज़-लत् बिहिश्शयातीन (210) व मा यम्बग़ी लहुम् व मा यस्ततीअ़ून (211) इन्नहुम् अ़निस्सम्अि ल-मअ्‌ज़ूलून (212) फ़ला तद्‌अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तकू-न मिनल्-मुअ़ज़्ज़बीन (213) व अन्ज़िर् अ़शी-र-तकल् अक़्रबीन (214) वख़्फ़िज़् जना-ह-क लि-मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-मुअ्‌मिनीन (215) फ़-इन् अ़सौ-क फ़क़ुल् इन्नी बरीउम्-मिम्मा

الشعرآء ٢٦ ٣٣٩ وقال الذين ١٩

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾ وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ
الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ
عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾ أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً
أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ
الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾ كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ
فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾
فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾
أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾ أَفَرَأَيْتَ إِن مَّتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَاءَهُم
مَّا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَا أَهْلَكْنَا
مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ
عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ
مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾ فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ
إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾ الَّذِي

منزل ٥

तअ्मलून (216) व त-वक्कल् अ़लल्-अ़ज़ीज़िर्रहीम (217) अल्लज़ी यरा-क ही-न तक़ूम (218) व तक़ल्लु-ब-क फ़िस्साजिदीन (219) इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (220) हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन् तनज़्ज़लुश्शयातीन (221) तनज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम (222) युल्क़ूनस्सम्-अ़ व अक्सरुहुम् काज़िबून (223) वश्शु-अ़रा-उ यत्तबिअुहुमुल्-ग़ावून (224) अलम् त-र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्-यहीमून (225) व अन्नहुम् यक़ूलू-न मा ला यफ़्अ़लून (226) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व ज़-करुल्ला-ह कसीरंव्-वन्त-सरू मिम्-बअ्दि मा ज़ुलिमू, व स-यअ्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़-लबिंय्- यन्क़लिबून (227) ❖

27 सूरतुन्-नम्लि 48

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4879 अक्षर, 1167 शब्द, 93 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तॉ-सीन्, तिल्-क आयातुल्-क़ुरआनि व किताबिम्- मुबीन (1) हुदंव् व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन (2) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (3) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ज़य्यन्ना लहुम् अअ्मालहुम् फ़हुम् यअ्महून (4) उलाइ-कल्लज़ी-न लहुम् सूउल्-अ़ज़ाबि व हुम् फ़िल्-आख़िरति हुमुल् अख़्सरून (5) व इन्न-क लतु-लक़्क़ल्-क़ुरआ-न मिल्लदुन् हकीमिन् अ़लीम ▲ (6) इज़् क़ा-ल मूसा लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन्, स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क़-बसिल् लअ़ल्लकुम् तस्तलून (7) फ़-लम्मा जा-अहा नूदि-य अम्बूरि-क मन्

النمل ٢٧ ٣٤٠ وقال الذين ١٩

يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾
هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ
اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْ
بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾ هُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ
اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ
حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ۭ سَاٰتِيْكُمْ
مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾
فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۭ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾

منزل ٥

फ़िन्नारि व मन् हौलहा, व सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आलमीन **(8)** या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(9)** व अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा र-आहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् युअ़क़्क़िब्, या मूसा ला तख़फ़्, इन्नी ला यख़ाफ़ु ल-दय्यल्-मुर्सलून **(10)** इल्ला मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्द-ल हुस्नम् बअ़्-द सूइन् फ़-इन्नी ग़फ़ूरुर्-रहीम **(11)** व अद्ख़िल् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन्, फ़ी तिस्अ़ि आयातिन् इला फ़िर्औ-न व क़ौमिही, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन **(12)** फ़-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-रतन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(13)** व ज-हदू बिहा वस्तै-क़नत्हा अन्फ़ुसुहुम् ज़ुल्मंव्-व अ़ुलुव्वन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुफ़्सिदीन **(14)** ❖

व ल-क़द् आतैना दावू-द व सुलैमा-न अ़िल्मन् व क़ालल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी फ़ज़्ज़-लना अ़ला कसीरिम् मिन् अ़िबादिहिल्-मुअ्मिनीन **(15)** व वरि-स सुलैमानु दावू-द व क़ा-ल या अय्युहन्नासु अ़ुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन्, इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ज़्लुल्-मुबीन **(16)** व हुशि-र लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़अ़ून **(17)** हत्ता इज़ा अतौ अ़ला वादिन्नम्लि क़ालत् नम्लतुंय्-या अय्युहन्-नम्लुद्ख़ुलू मसाकि-नकुम् ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अ़ुरून **(18)** फ़-तबस्स-म ज़ाहिकम्-मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-तकल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बि-रह्मति-क फ़ी अ़िबादिकस्-सालिहीन **(19)** व त-फ़क़्क़-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला

وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ
يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ۝١٠ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ
ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝١١ وَأَدْخِلْ يَدَكَ
فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ فِي تِسْعِ آيَاتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝١٢ فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً
قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝١٣ وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝١٤ وَلَقَدْ آتَيْنَا
دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَىٰ
كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝١٥ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُودَ وَقَالَ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ
هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ۝١٦ وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝١٧ حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ
قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ
وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝١٨ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِنْ قَوْلِهَا وَقَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ
وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ

❖ रु. 1/14/16

अरल्-हुद्हु-द अम् का-न मिनल्-ग़ाइबीन (20) ल-उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन् शदीदन् औ ल-अज़्ब-हन्नहू औ ल-यअ्ति-यन्नी बिसुल्तानिम्-मुबीन (21) फ़-म-क-स ग़ै-र बअ़ीदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा लम् तुहित् बिही व जिअ्तु-क मिन् स-बइम् बि-न-बइंय्-यक़ीन (22) इन्नी वजत्तुम्-र-अतन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव्-व लहा अ़र्शुन् अ़ज़ीम (23) वजत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अ़निस्सबीलि फ़हुम् ला यह्तदून (24) अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्लिनून (25) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम ❑ (26) क़ा-ल सनन्ज़ुरु अ-सदक़्-त अम् कुन्-त मिनल्-काज़िबीन (27) इज़्हब्-बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अ़न्हुम् फ़न्ज़ुर् माज़ा यर्जिअ़ून (28) क़ालत् या अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्कि-य इलय्-य किताबुन् करीम (29) इन्नहू मिन् सुलैमा-न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (30) अल्ला तअ़्लू अ़लय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन (31) ❖

क़ालत् या अय्युहल् म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति-अ़तन् अम्रन् हत्ता तश्हदून (32) क़ालू नह्नु उलू क़ुव्वतिंव्-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव्-वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा तअ्मुरीन (33) क़ालत् इन्नल्-मुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र्-यतन् अफ़्सदूहा व ज-अ़लू अअ़िज़्ज़-त-अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व कज़ालि-क यफ़्अ़लून (34) व इन्नी मुर्सि-लतुन्

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ
مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ
بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ
وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا
يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ
الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَ
مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ
اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ
ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ
اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾
اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ
اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ
اُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ
الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ

इलैहिम् बि-हदिय्यतिन् फ़नाज़ि-रतुम् बि-म यर्जिअुल्-मुर्सलून **(35)** फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दू-ननि बिमालिन् फ़मा आतानि-यल्लाहु ख़ैरुम् मिम्मा आताकुम् बल् अन्तुम् बि-हदिय्यतिकुम् तफ़्रहून **(36)** इर्जिअ् इलैहिम् फ़-लनअ्ति-यन्नहुम् बिजुनूदिल् ला क़ि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल-तंव्-व हुम् सागिरून **(37)** क़ा-ल या अय्युहल्-म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअ़र्शिहा क़ब्-ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमीन **(38)** क़ा-ल अ़िफ़रीतुम् मिनल्-जिन्नि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अन् तक़ू-म मिम्-मक़ामि-क व इन्नी अ़लैहि ल-क़विय्युन् अमीन **(39)** क़ालल्लज़ी अ़िन्दहू अ़िल्मुम् मिनल्-किताबि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अंय्यर्-तद्-द इलै-क तर्फ़ु-क, फ़-लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन् अ़िन्दहू क़ा-ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी, लि-यब्लु-वनी अ-अश्कुरु अम् अक्फ़ुरु, व मन् श-क-र फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्-न रब्बी ग़निय्युन् करीम **(40)** क़ा-ल नक्किरू लहा अ़र्-शहा नन्ज़ुर् अ-तह्तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह्तदून **(41)** फ़-लम्मा जाअत् क़ी-ल अहा-कज़ा अ़र्शुकि, क़ालत् क-अन्नहू हु-व व ऊतीनल्-अ़िल्-म मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन **(42)** व सद्दहा मा कानत् तअ्बुदु मिन् दूनिल्लाहि, इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन् काफ़िरीन **(43)** क़ी-ल ल-हद्ख़ुलिस्सर्-ह फ़-लम्मा र-अत्हु हसि-बत्हु लुज्जतंव्-व क-शफ़त् अ़न् साक़ैहा, क़ा-ल इन्नहू सर्हुम्-मुमर्रदुम मिन् क़वारी-र, क़ालत् रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी व अस्लम्तु म-अ़ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन **(44)** ❖

وقال الذين ١٩ ٣٤٣ النمل ٢٧

يَفْعَلُونَ ۝ وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتٰنِۦَ اللّٰهُ
خَيْرٌ مِّمَّا آتٰكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ اِرْجِعْ إِلَيْهِمْ
فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَا أَذِلَّةً وَّهُمْ
صٰغِرُونَ ۝ قَالَ يٰأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي
مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ
مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ
أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ
قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ءَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ وَمَنْ شَكَرَ
فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝ قَالَ نَكِّرُوا
لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝
فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهٰكَذَا عَرْشُكِ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ
مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ۝ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُونِ اللّٰهِ
إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِينَ ۝ قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ
لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ قَالَتْ
رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝

منزل ٥

व ल-क़द् अर्सल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् अनिअ्बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा हुम् फ़रीक़ानि यख़्तसिमून **(45)** क़ा-ल या क़ौमि लि-म तस्तअ्जिलू-न बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-स-नति लौ ला तस्तग्फ़िरूनल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(46)** क़ालुत्तय्यर्ना बि-क व बि-मम्-म-अ़-क, क़ा-ल ताइरुकुम् अ़िन्दल्लाहि बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून **(47)** व का-न फ़िल्मदी-नति तिस्अ़तु रह्तिंय्-युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून **(48)** क़ालू तक़ा-समू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्लहू सुम्-म ल-नक़ूलन्-न लि-वलिय्यिही मा शहिद्ना मह्लि-क अह्लिही व इन्ना ल-सादिक़ून **(49)** व म-करू मक्रंव्-व मकर्ना मक्रंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(50)** फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतु मक्रिहिम् अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौमहुम् अज्मअ़ीन **(51)** फ़-तिल्-क बुयूतुहुम् ख़ावि-यतम् बिमा ज़-लमू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्-यअ्लमून **(52)** व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून **(53)** व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल् फ़ाहि-श-त व अन्तुम् तुब्सिरून **(54)** अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्हलून **(55)** फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू आ-ल लूतिम्-मिन् क़र्-यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्-य-त-तह्हरून **(56)** फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू क़द्दर्नाहा मिनल्-ग़ाबिरीन **(57)** व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन **(58)** ❖

क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अ़ला इबादिहिल्लज़ीनस्-तफ़ा, आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून **(59)**

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ
فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ
الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَ
بِمَن مَّعَكَ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۝ وَ
كَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۝
قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا
مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَّا دَمَّرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ فَتِلْكَ بُيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ۝ وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ وَلُوطًا إِذْ قَالَ
لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ۝ أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ
شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوا آلَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ
يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ۝
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ۝ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ آللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

बीसवाँ पारः अम्मन् ख़-ल-क़्

सूरतुन्-नम्लि (आयत 60 से 93)

अम्मन् ख़ा-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् हुम् क़ौमुंय्-यअ़्दिलून **(60)** अम्मन् ज-अ़लल्-अर्-ज़ क़रारंव्-व ज-अ़-ल ख़िला-लहा अन्हारंव्-व ज-अ़-ल लहा रवासि-य व ज-अ़-ल बैनल्-बह्रैनि हाजिज़न्, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(61)** अम्-मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दआ़हु व यक्शिफ़ुस्सू-अ व यज्-अ़लुकुम् ख़ु-लफ़ाअल्-अर्ज़ि, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, क़लीलम् मा तज़क्करून **(62)** अम्-मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि व मंय्युर्सिलुर्-रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, तआ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून **(63)** अम्-मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू व मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, अ-इलाहुम् मअ़ल्लाहि, क़ुल् हातू बुर्हा-नकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(64)** क़ुल् ला यअ़्लमु मन् फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़िल्ग़ै-ब इल्लल्लाहु, व मा यश्अ़ुरू-न अय्या-न युब्अ़सून **(65)** बलिद्दार-क अ़िल्मुहुम् फ़िल्-आख़िरति, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन्हा, बल् हुम् मिन्हा अ़मून **(66)** ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू अ-इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व आबाउना अ-इन्ना

النمل ٢٧ ٣٤٥ امن خلق ٢٠

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا
ءَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ
قَرَارًا وَجَعَلَ خِلٰلَهَا أَنْهٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ
الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ءَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾
أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ
خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ءَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾
أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ
بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ءَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ
مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ءَإِلٰهٌ مَعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾ قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ
عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا بَلْ هُمْ
مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا
لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ

منزل ٥

ल-मुख़्रजून **(67)** ल-क़द् वुअिद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन **(68)** क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुज्रिमीन **(69)** व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून **(70)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(71)** क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न रदि-फ़ लकुम् बअ्ज़ुल्लज़ी तस्तअ्जिलून **(72)** व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून **(73)** व इन्-न रब्ब-क ल-यअ्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्लिनून **(74)** व मा मिन् ग़ाइ-बतिन् फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन **(75)** इन्-न हाज़ल्-क़ुर्आ-न यक़ुस्सु अ़ला बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लज़ी हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ून **(76)** व इन्नहू ल-हुदंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनीन **(77)** इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम बिहुक्मिही व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम **(78)** फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्न-क अ़लल्-हक़्क़िल्-मुबीन **(79)** इन्न-क ला तुस्मिअुल्मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन **(80)** व मा अन्-त बिहादिल्-अुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम्, इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून **(81)** व इज़ा व-क़अ़ल्-क़ौलु अ़लैहिम् अख़्रज्ना लहुम् दाब्बतम् मिनल्अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून **(82)** ❖

व यौ-म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम् मिम्मंय्युकज़्ज़िबु बिआयातिना फ़हुम्

هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ
فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ
تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ
صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاِنَّهٗ
لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ
بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى
الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ
اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ
اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاِذَا وَقَعَ
الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ اَنَّ
النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ

यू-ज़अून (83) हत्ता इज़ा जाऊ क़ा-ल अ-कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम् तुहीतू बिहा अ़िल्मन् अम्-मा ज़ा कुन्तुम् तअ़्मलून (84) व व-क़अल्-क़ौलु अ़लैहिम् बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिक़ून (85) अलम् यरौ अन्ना ज-अ़ल्नल्लै-ल लियस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (86) व यौ-म युन्फ़खु फ़िस्सूरि फ़-फ़ज़ि-अ़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (87) व तरल् -जिबा-ल तह्सबुहा जामि-दतंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि, सुन्-अ़ल्लाहिल्लज़ी अत्क़-न कुल्-ल शैइन्, इन्नहू ख़बीरुम् बिमा तफ़्अ़लून (88) मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व हुम् मिन् फ़-ज़अिंय्-यौमइज़िन् आमिनून (89) व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि, हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ़्मलून (90) इन्नमा उमिर्तु अन् अअ़्बु-द रब्-ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्- मुस्लिमीन (91) व अन् अत्लुवल्-क़ुरआ-न फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़क़ुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (92) व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ़-तअ़्रिफ़ूनहा, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून (93) ❖

فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ
قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ
شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً
وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۭ
اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ اٰمِنُوْنَ ۝ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ
وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۭ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ
كُلُّ شَيْءٍ ۡ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَتْلُوَا
الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ
فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ
فَتَعْرِفُوْنَهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

28 सूरतुल् क़-ससि 49

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6011 अक्षर, 1454 शब्द 88 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् **(1)** तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन **(2)** नत्लू अ़लै-क मिन् न-बइ मूसा व फ़िर्औ़-न बिल्हक़्क़ि लिक़ौमिंयू-युअ्मिनून **(3)** इन्-न फ़िर्औ़-न अ़ला फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ़-ल अह्लहा शि-यअ़ंय्- यस्तज़्अिफ़ु ताइ-फ़तम् मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब्ना-अहुम् व यस्तह्यी निसा-अहुम्, इन्नहू का-न मिनल्-मुफ़्सिदीन **(4)** व नुरीदु अन्-नमुन्-न अ़लल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज्अ़-लहुम् अ-इम्मतंव्-व नज्अ़-लहुमुल्-वारिसीन **(5)** व नुमक्कि-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व नुरि-य फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनू-दहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्ज़रून **(6)** व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िअ़ीहि फ़-इज़ा ख़िफ़्ति अ़लैहि फ़-अल्क़ीहि फ़िल्यम्मि व ला तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाअ़िलूहु मिनल्-मुर्सलीन **(7)** फ़ल्त-क़-तहू आलु फ़िर्औ़-न लि-यकू-न लहुम् अ़दुव्वंव्-व ह-ज़नन्, इन्-न फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनू-दहुमा कानू ख़ातिईन **(8)** व क़ालतिम्-र-अतु फ़िर्औ़-न क़ुर्रतु अ़ैनिल्-ली व ल-क, ला तक़्तुलूहु अ़सा अय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(9)** व अस्ब-ह फ़ुआदु उम्मि

القصص ٢٨ ٣٤٨ امن خلق ٢٠

سُوۡرَةُ الۡقَصَصِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوۡنَ اٰيَةً وَّتِسۡعُ رُكُوۡعَاتٍ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

طٰسٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ﴿۲﴾ نَتۡلُوۡا عَلَيۡكَ مِنۡ
نَّبَاِ مُوۡسٰى وَفِرۡعَوۡنَ بِالۡحَقِّ لِقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳﴾ اِنَّ
فِرۡعَوۡنَ عَلَا فِى الۡاَرۡضِ وَجَعَلَ اَهۡلَهَا شِيَعًا يَّسۡتَضۡعِفُ
طَآئِفَةً مِّنۡهُمۡ يُذَبِّحُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَيَسۡتَحۡىٖ نِسَآءَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ
كَانَ مِنَ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۴﴾ وَنُرِيۡدُ اَنۡ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيۡنَ اسۡتُضۡعِفُوۡا
فِى الۡاَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ اَئِمَّةً وَّنَجۡعَلَهُمُ الۡوٰرِثِيۡنَ ﴿۵﴾ وَ
نُمَكِّنَ لَهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَنُرِىَ فِرۡعَوۡنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوۡدَهُمَا
مِنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَحۡذَرُوۡنَ ﴿۶﴾ وَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰٓى اُمِّ مُوۡسٰٓى اَنۡ
اَرۡضِعِيۡهِ ۚ فَاِذَا خِفۡتِ عَلَيۡهِ فَاَلۡقِيۡهِ فِى الۡيَمِّ وَلَا تَخَافِىۡ
وَلَا تَحۡزَنِىۡ ۚ اِنَّا رَآدُّوۡهُ اِلَيۡكِ وَجَاعِلُوۡهُ مِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۷﴾
فَالۡتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرۡعَوۡنَ لِيَكُوۡنَ لَهُمۡ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ
فِرۡعَوۡنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوۡدَهُمَا كَانُوۡا خٰطِـِٕيۡنَ ﴿۸﴾ وَقَالَتِ امۡرَاَتُ
فِرۡعَوۡنَ قُرَّتُ عَيۡنٍ لِّىۡ وَلَكَ ؕ لَا تَقۡتُلُوۡهُ ۖ عَسٰٓى اَنۡ يَّنۡفَعَنَاۤ
اَوۡ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۹﴾ وَاَصۡبَحَ فُؤَادُ اُمِّ

منزل

मूसा फ़ारिग़न्, इन् कादत् लतुब्दी बिही लौ ला अर्र-बत्ना अ़ला क़ल्बिहा लि-तकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(10)** व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस्सीहि फ़-बसुरत् बिही अ़न् जुनुबिंव्-व हुम् ला यश्अुरून **(11)** व हर्रम्ना अ़लैहिल्-मराज़ि-अ़ मिन् क़ब्लु फ़क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अ़ला अह्लि बैतिंय्- यक्फ़ुलूनहू लकुम् व हुम् लहू नासिहून **(12)** फ़-रदद्नाहु इला उम्मिही कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न व लितअ्-ल-म अन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून ◆ **(13)** ❖

व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन्, कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(14)** व द-ख़लल्-मदी-न-त अ़ला हीनि ग़फ़्लतिम् मिन् अह्लिहा फ़-व-ज-द फ़ीहा रजुलैनि यक़्ततिलानि, हाज़ा मिन् शी-अ़तिही व हाज़ा मिन् अ़दुव्विही फ़स्तग़ा-सहुल्लज़ी मिन् शी-अ़तिही अ़लल्लज़ी मिन् अ़दुव्विही फ़-व-क-ज़हू मूसा फ़-क़ज़ा अ़लैहि, क़ा-ल हाज़ा मिन् अ़-मलिश्-शैतानि, इन्नहू अ़दुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन **(15)** क़ा-ल रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली फ़-ग़-फ़-र लहू, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम **(16)** क़ा-ल रब्बि बिमा अन्अ़म्-त अ़लय्-य फ़-लन् अकू-न ज़हीरल्-लिल्मुज्रिमीन **(17)** फ़-अस्ब-ह फ़िल्मदी-नति ख़ाइफ़ंय्य-तरक़्क़बु फ़-इज़ल्-लज़िस्तन्स-रहू बिल्अम्सि यस्तस्रिख़ुहू, क़ा-ल लहू मूसा इन्न-क ल-ग़विय्युम्-मुबीन **(18)** फ़-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श बिल्लज़ी हु-व अ़दुव्वुल्-लहुमा क़ा-ल या मूसा अतुरीदु

مُوسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى
قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ
فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ
الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ
يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ
تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَدَخَلَ
الْمَدِيْنَةَ عَلٰي حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا
رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ
الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَي الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى
فَقَضٰى عَلَيْهِ ۡ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ
مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ
اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ
اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝ فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَاۗىِٕفًا
يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ۭ قَالَ

अन् तक़्तु-लनी कमा क़तल्-त नफ़्सम्-बिल्अम्सि इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू-न मिनल्-मुस्लिहीन (19) व जा-अ रजुलुम्-मिन् अक़्सल्-मदी-नति यस्आ, क़ा-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क फ़ख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिहीन (20) फ़-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफ़ंय्-य-तरक़्क़बु क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (21) ❖

व लम्मा तवज्ज-ह तिल्क़ा-अ मद्-य-न क़ा-ल अ़सा रब्बी अंय्यह्दि-यनी सवा-अस्सबील (22) व लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अ़लैहि उम्म-तम् मिनन्नासि यस्क़ू-न, व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि क़ा-ल मा ख़त्बुकुमा, क़ा-लता ला नस्क़ी हत्ता युस्दिरर्-रिआ-उ, व अबूना शैख़ुन् कबीर (23) फ़-सक़ा लहुमा सुम्-म तवल्ला इलज़्ज़िल्लि फ़क़ा-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर (24)

لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا ۢ بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْاَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۡ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۡ قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۟ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۭ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۫ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۡ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۣ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

फ़जा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ़-लस्तिह्याइन् क़ालत् इन्-न अबी यद्अू-क लि-यज्ज़ि-य-क अज्-र मा सक़ै-त लना, फ़-लम्मा जा-अहू व क़स्-स अ़लैहिल्-क़-स-स क़ा-ल ला त-ख़फ़् नजौ-त मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (25) क़ालत् इह्दाहुमा या अ-बतिस्तअ्जिर्हु इन्-न ख़ै-र मनिस्तअ्जर्तल्-क़विय्युल्-अमीन (26) क़ा-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि-ह-क इह्दब्-नतय्-य

अ़ला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हि-जजिन् फ़-इन् अत्मम्-त अ़श्रन् फ़-मिन् अि़न्दि-क व मा उरीदु अन् अशुक़्-क़ अ़लै-क, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्सालिहीन **(27)** क़ा-ल ज़ालि-क बैनी व बैन-क, अय्यमल्-अ-जलैनि क़ज़ैतु फ़ला अुद्वा-न अ़लय्-य, वल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील **(28)** ❖

قَالَتْ إِحْدَىٰهُمَا يَٰٓأَبَتِ ٱسْتَـْٔجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ ٱسْتَـْٔجَرْتَ ٱلْقَوِىُّ
ٱلْأَمِينُ ۝ قَالَ إِنِّىٓ أُرِيدُ أَنْ أُنكِحَكَ إِحْدَى ٱبْنَتَىَّ هَٰتَيْنِ
عَلَىٰٓ أَن تَأْجُرَنِى ثَمَٰنِىَ حِجَجٍ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِندِكَ
وَمَآ أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ سَتَجِدُنِىٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ
ٱلصَّٰلِحِينَ ۝ قَالَ ذَٰلِكَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ أَيَّمَا ٱلْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ
فَلَا عُدْوَٰنَ عَلَىَّ وَٱللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝ فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى
ٱلْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِۦٓ ءَانَسَ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ نَارًا قَالَ
لِأَهْلِهِ ٱمْكُثُوٓا۟ إِنِّىٓ ءَانَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىٓ ءَاتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ
جَذْوَةٍ مِّنَ ٱلنَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝ فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِىَ مِن
شَٰطِئِ ٱلْوَادِ ٱلْأَيْمَنِ فِى ٱلْبُقْعَةِ ٱلْمُبَٰرَكَةِ مِنَ ٱلشَّجَرَةِ أَن
يَٰمُوسَىٰٓ إِنِّىٓ أَنَا ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا
رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَٰمُوسَىٰٓ أَقْبِلْ
وَلَا تَخَفْ إِنَّكَ مِنَ ٱلْءَامِنِينَ ۝ ٱسْلُكْ يَدَكَ فِى جَيْبِكَ
تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ وَٱضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ
ٱلرَّهْبِ فَذَٰنِكَ بُرْهَٰنَانِ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِي۟هِۦٓ
إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّى قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا

फ़-लम्मा क़ज़ा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्-तूरि नारन् क़ा-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ जज़्वतिम् मिनन्नारि लअ़ल्लकुम् तस्तलून **(29)** फ़-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शातिइल्-वादिल्-ऐमनि फ़िल्-बुक़्अ़तिल्-मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल्-अ़ालमीन **(30)** व अन् अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा रआहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् यु-अ़क़्क़िब्, या मूसा अक़्बिल् व ला तख़फ़्, इन्न-क मिनल्-आमिनीन **(31)** उस्लुक् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम् इलै-क जना-ह-क मिनर्रह्बि फ़ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फ़िर्औ़-न व म-लइही, इन्नहुम् **कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (32) क़ा-ल रब्बि इन्नी क़तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़-अख़ाफ़ु** अंय्यक़्तुलून **(33)** व अख़ी हारूनु हु-व अफ़्सहु मिन्नी लिसानन् फ़-अर्सिल्हु मअि़-य

रिद्अंय्-युसद्दिक़ुनी इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (34) क़ा-ल स-नशुद्दु अज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अ़लु लकुमा सुल्तानन् फ़ला यसिलू-न इलैकुमा बिआयातिना अन्तुमा व मनित्त-ब-अ़कुमल्-ग़ालिबून (35) फ़-लम्मा जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम्- मुफ़्तरंव्-व मा समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्- अव्वलीन (36) व क़ा-ल मूसा रब्बी अअ्लमु बिमन् जा-अ बिल्हुदा मिन् अिन्दिही व मन् तकूनु लहू आ़क़ि-बतुद्-दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (37) व क़ा-ल फ़िर्औनु या अय्युहल्-म-ल-उ मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी फ़-औक़िद् ली या हामानु अ़लत्तीनि फ़ज्अ़ल्ली सर्हल्-लअ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनल्-काज़िबीन (38) वस्तक्ब-र हु-व व जुनूदुहू फ़िल्- अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअून (39) फ़-अख़ज़्नाहु व जुनू-दहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुज़्ज़ालिमीन (40) व जअ़ल्ना-हुम् अ-इम्म-तंय्यद्अू-न इलन्नारि व यौमल्-क़ियामति ला युन्सरून (41) व अत्बअ्नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्-नतन् व यौमल्-क़ियामति हुम् मिनल् मक़्बूहीन (42) ❖

فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝ وَاَخِىْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّىْ لِسَانًا
فَاَرْسِلْهُ مَعِىَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِىْٓ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝
قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا
يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ
مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَالَ
مُوْسٰى رَبِّىْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِىْ ۚ فَاَوْقِدْ لِىْ
يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّىْ صَرْحًا لَّعَلِّىْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى
اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ
وَجُنُوْدُهٗ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا
لَا يُرْجَعُوْنَ ۝ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى
النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِىْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब मिम्-बअ़्दि मा अह्लक्नल्-क़ुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (43) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-

ग़र्बिय्यि इज़् क़ज़ैना इला मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन **(44)** व लाकिन्ना अन्शअ्ना क़ुरूनन् फ़-तता-व-ल अ़लैहिमुल्-अ़मुरु व मा कुन्-त सावि-यन् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू अ़लैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन **(45)** व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि इज़् नादैना व लाकिर्-रह्म-तम् मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम् मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून **(46)** व लौ ला अन् तुसी-बहुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन **(47)** फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य मूसा, अ-व लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति-य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू सिह्रानि तज़ा-हरा, व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून **(48)** क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि हु-व अह्दा मिन्हुमा अत्तबिअ्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(49)** फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ्लम् अन्नमा यत्तबिअू-न अह्वा-अहुम्, व मन् अज़ल्लु मिम्-मनित्त-ब-अ़ हवाहु बिग़ैरि हुदम्-मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन **(50)** ❖

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ
الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ
وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا
رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ
اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ۚ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى
مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۚ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ
اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ
اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۗ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ

व ल-क़द् वस्सल्ना लहुमुल्-क़ौ-ल लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून **(51)** अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ● **(52)** व इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्लिमीन **(53)** उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम् मर्रतैनि बिमा स-बरू व यद्रऊ-न बिल्ह-स-नतिस्-सय्यि-अ-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(54)** व इज़ा समिअुल्लग़्-व अअ्-रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् सलामुन् अ़लैकुम् ला नब्तग़िल्-जाहिलीन **(55)** इन्न-क ला तह्दी मन् अह्बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्-तदीन **(56)** व क़ालू इन् नत्तबिअिल्-हुदा म-अ़-क नु-तख़त्तफ़् मिन् अर्ज़िना, अ-व लम् नुमक्किल् लहुम् ह-रमन् आमिनंय्-युज्बा इलैहि स-मरातु कुल्लि शैइर्-रिज़्क़म् मिल्लदुन्ना व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून **(57)** व कम् अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिम् बतिरत् मअ़ी-श-तहा फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् मिम्-बअ्दिहिम् इल्ला क़लीलन्, व कुन्ना नह्नुल्-वारिसीन **(58)** व मा का-न रब्बु-क मुह्लिकल्-क़ुरा हत्ता यब्-अ़-स फ़ी उम्मिहा रसूलंय्-यत्लू अ़लैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्-क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून **(59)** व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व ज़ी-नतुहा व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा, अ-फ़ला तअ्क़िलून **(60)** ❖

هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَقَدْ
وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا
اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا
عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝ وَقَالُوْٓا
اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۗ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ
لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۢ بَطِرَتْ
مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ ۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا
قَلِيْلًا ۗ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى
حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا
مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ

अ-फ़मंव्-वअ़द्नाहु वअ़्दन् ह-सनन् फ़हु-व लाक़ीहि कमम्-मत्तअ़्नाहु मताअ़ल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल्-क़ियामति मिनल्-मुह्ज़रीन (61) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अ़ुमून (62) क़ालल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु रब्बना हा-उलाइल्लज़ी-न अग़्वैना अग़्वैनाहुम् कमा ग़वैना तबर्रअ्ना इलै-क मा कानू इय्याना यअ़्बुदून (63) व क़ीलद्अ़ू शु-रका-अकुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब लौ अन्नहुम् कानू यह्तदून (64) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल्-मुर्सलीन (65) फ़-अ़मियत् अ़लैहिमुल्- अम्बा-उ यौमइज़िन् फ़हुम् ला य-तसाअलून (66) फ़-अम्मा मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-अ़सा अंय्यकू-न मिनल्-मुफ़्लिहीन (67) व रब्बु-क यख़्लुक़ु मा यशा-उ व यख़्तारु, मा का-न लहुमुल् ख़ि-य-रतु, सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (68) व रब्बु-क यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून (69) व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-हम्दु फ़िल्-ऊला वल्- आख़िरति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून (70) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुल्-लै-ल सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन्, अ-फ़ला तस्-मअ़ून (71) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुन्नहा-र सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन्

امن خلق ٢٠ ٣٥٥ القصص ٢٨

شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
وَّاَبْقٰى ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ
مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ
عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَىِٕذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ
وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾
وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ۗ سُبْحٰنَ
اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْاُوْلٰى
وَالْاٰخِرَةِ ۖ وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ

منزل ٥

इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू-न फ़ीहि, अ-फ़ला तुब्सिरून (72) व मिर्रह्मतिही ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र लितस्कुनू फ़ीहि व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (73) व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (74) व न-ज़अ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़-क़ुल्ना हातू बुर्हा-नकुम् फ़-अ़लिमू अन्नल्-हक़्-क़ लिल्लाहि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (75) ❖

इन्-न क़ारू-न का-न मिन् क़ौमि मूसा फ़-बग़ा अ़लैहिम् व आतैनाहु मिनल्-कुनूज़ि मा इन्-न मफ़ाति-हहू ल-तनूउ बिल्अुस्बति उलिल्-क़ुव्वति, इज़् क़ा-ल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह् इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्- फ़रिहीन (76) वब्तग़ि फ़ीमा आताकल्लाहुद्-दारल्- आख़िर-त व ला तन्-स नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्ग़िल्-फ़सा-द फ़िल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (77) क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी, अ-व लम् यअ़्लम् अन्नल्ला-ह क़द् अह्ल-क मिन् क़ब्लिही मिनल्-क़ुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव्-व अक्सरु जम्अ़न्, व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्-मुज्रिमून (78) फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ी-नतिही, क़ालल्लज़ी-न युरीदूनल्-हयातद्दुन्या यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य क़ारूनु इन्नहू लज़ू

امن خلق ٢٠ ٣٥٦ القصص ٢٨

اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۱﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ
اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾
وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ
وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ
فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَنَزَعْنَا
مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ
لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ
قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ
مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ
لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿۷۶﴾ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ
اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ
كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۷۷﴾ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ
عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ
الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْئَلُ

منزل ٥

हज़्ज़िन् अ़ज़ीम **(79)** व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्-लिमन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून **(80)** फ़-ख़सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज़, फ़मा का-न लहू मिन् फ़ि-अतिंय्-यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि, व मा का-न मिनल्-मुन्तसिरीन **(81)** व अस्-बहल्लज़ी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लौ ला अम्-मन्नल्लाहु अ़लैना ल-ख़ा-स-फ़ बिना, वै-क-अन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून **(82)** ❖

तिल्कद्-दारुल्-आख़ि-रतु नज्अ़लुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अ़ुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन्, वल्-आ़क़ि-बतु लिल्-मुत्तक़ीन **(83)** मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ़्मलून **(84)** इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अ़लैकल्-क़ुर्आ-न ल-राद्दु-क इला मआ़दिन्, क़ुर्रब्बी अअ़्लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(85)** व मा कुन्-त तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल्-किताबु इल्ला रह़्म-तम् मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न ज़हीरल् लिल्-काफ़िरीन **(86)** व ला यसुद्दुन्न-क

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ
قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ
اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ
بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ
وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا
لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾ اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى
مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ

अ़न् आयातिल्लाहि बअ्-द इज़् उन्ज़िलत् इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन **(87)** व ला तद्अु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र ✣ ला इला-ह इल्ला हु-व, कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्-हहू, लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून ▲ **(88)** ❖

29 सूरतुल्-अ़न्कबूति 85

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4410 अक्षर, 990 शब्द, 69 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़लिफ़्-लाम्-मीम् **(1)** अ-हसिबन्-नासु अंय्युत्-रकू अंय्यक़ूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून **(2)** व ल-क़द् फ़तन्नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-लयअ्-लमन्नल्लाहुल्लज़ी-न स-दक़ू व ल-यअ्-लमन्नल्-काज़िबीन **(3)** अम् हसिबल्लज़ी-न यअ़्मलूनस्सय्यिआति अंय्यस्बिक़ूना, सा-अ मा यह्कुमून **(4)** मन् का-न यर्जू लिक़ा-अल्लाहि फ़-इन्-न अ-जलल्लाहि लआतिन्, व हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(5)** व मन् जा-ह-द फ़-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही, इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् अ़निल्-आ़लमीन **(6)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अह्-सनल्लज़ी कानू यअ़्मलून **(7)** व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि हुस्नन्, व इन् जा-हदा-क लितुश्रि-क

امن خلق ٢٠ ٣٥٨ العنكبوت ٢٩

إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ
إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ
إِلَٰهًا آخَرَ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ
لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

سورة العنكبوت مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ تسع وستون آية سبع ركوعات

الم ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَن يُتْرَكُوا أَن يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ
لَا يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ
اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ
الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَن يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾
مَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾ وَمَن جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ
إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ
الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾ وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ
حُسْنًا وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

منزل ٥

बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़्हुमा, इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (8) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुद्ख़िलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन (9) व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़-इज़ा ऊज़ि-य फ़िल्लाहि ज-अ़-ल फ़ित्-नतन्नासि क-अ़ज़ाबिल्लाहि, व लइन् जा-अ नस्रुम्-मिर्रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अ़कुम्, अ-व लैसल्लाहु बि-अअ़्ल-म बिमा फ़ी सुदूरिल्-आ़लमीन (10) व ल-यअ़्-ल-मन्नल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व ल-यअ़्-ल-मन्नल्-मुनाफ़िक़ीन (11) व क़ालल्-लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनुत्-तबिअ़ू सबीलना वल्नह्मिल् ख़तायाकुम्, व मा हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन्, इन्नहुम् ल-काज़िबून (12) व ल-यह्मिलुन्-न अस्क़ा-लहुम् व अस्क़ालम् म-अ़ अस्क़ालिहिम् व ल-युस्अलुन्-न यौमल्- क़ियामति अ़म्मा कानू यफ़्तरून (13) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि-स फ़ीहिम् अल्-फ़ स-नतिन् इल्ला ख़म्सी-न आ़मन्, फ़-अ-ख़-ज़हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून (14) फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्सफ़ी-नति व जअ़ल्नाहा आ-यतल् लिल्आ़लमीन (15) व इब्राही-म इज़् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ़्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु, ज़ालिकुम्

فَلَا تُطِعْهُمَا ۭ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ
فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ
لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ
خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَ
لَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا
اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ۭ فَاَخَذَهُمُ
الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَ
جَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ

ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(16)** इन्नमा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन्, इन्नल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़्क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ वअ्बुदूहु वश्कुरू लहू, इलैहि तुर्जअून **(17)** व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम्, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन **(18)** अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर **(19)** क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-दअल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन्-नश्-अतल्-आख़ि-र-त, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(20)** युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यर्-हमु मंय्यशा-उ व इलैहि तुक़्लबून **(21)** व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(22)** ❖

वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ा-इही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(23)** फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून **(24)** व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् म-वद्द-त बैनिकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्ज़ुकुम् बि-बअ्ज़िंव्-व यल्अ़नु बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़ंव्-व

وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ
كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾
اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ
اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ
بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ
بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ

मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन **(25)** फ़-आम-न लहू लूतुन् ✣ व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी, इन्नहू हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(26)** व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब व आतैनाहु अज्रहू फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन **(27)** व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही इन्नकुम् ल-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आ़लमीन **(28)** अ-इन्नकुम् लतअ्तूनर्-रिजा-ल व तक़्तअ़ूनस्सबी-ल व तअ्तू-न फ़ी नादीकुमुल्-मुन्क-र, फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बि-अ़ज़ाबिल्लाहि इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन **(29)** क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी अ़लल् क़ौमिल्-मुफ़्सिदीन **(30)** ❖

व लम्मा जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल्-क़र्यति इन्-न अह्लहा कानू ज़ालिमीन **(31)** क़ा-ल इन्-न फ़ीहा लूतन्, क़ालू नह्नु अअ़्लमु बि-मन् फ़ीहा ल-नुनज्जियन्नहू व अह्लहू इल्लम्-र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन **(32)** व लम्मा अन् जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अ़ंव्-व क़ालू ला तख़फ़् व ला तह्ज़न्, इन्ना मुनज्जू-क व अह्ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन **(33)** इन्ना मुन्ज़िलू-न अ़ला अह्लि हज़िहिल् क़र्यति रिज्ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून **(34)** व ल-क़त्तरक्ना मिन्हा आ-यतम् बय्यि-नतल्-लिक़ौमिंय्-

العنكبوت ٢٩ ٣٦١ امن خلق ٢٠

يعقوب وجعلنا في ذريته النبوة والكتب واتينه
اجره في الدنيا وانه في الاخرة لمن الصلحين ﴿٢٧﴾
ولوطا اذ قال لقومه انكم لتاتون الفاحشة ما
سبقكم بها من احد من العلمين ﴿٢٨﴾ ائنكم لتاتون
الرجال وتقطعون السبيل وتاتون في ناديكم
المنكر فما كان جواب قومه الا ان قالوا ائتنا
بعذاب الله ان كنت من الصدقين ﴿٢٩﴾ قال رب
انصرني على القوم المفسدين ﴿٣٠﴾ ولما جاءت رسلنا
ابرهيم بالبشرى قالوا انا مهلكوا اهل هذه القرية
ان اهلها كانوا ظلمين ﴿٣١﴾ قال ان فيها لوطا قالوا
نحن اعلم بمن فيها لننجينه واهله الا امراته
كانت من الغبرين ﴿٣٢﴾ ولما ان جاءت رسلنا لوطا سيء
بهم وضاق بهم ذرعا وقالوا لا تخف ولا تحزن
انا منجوك واهلك الا امراتك كانت من الغبرين ﴿٣٣﴾
انا منزلون على اهل هذه القرية رجزا من السماء
بما كانوا يفسقون ﴿٣٤﴾ ولقد تركنا منها اية بينة لقوم

منزل ٥

यअ्क़िलून **(35)** व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअैबन् फ़क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह वर्जुल्-यौमल्-आख़ि-र व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन **(36)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन **(37)** व आदंव्-व समू-द व क़त्-त-बय्य-न लकुम् मिम्-मसाकिनिहिम्, व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अ़निस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन **(38)** व क़ारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न, व ल-क़द् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन **(39)** फ़-कुल्लन् अख़ज़्ना बि-ज़म्बिही फ़-मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अ़लैहि हासिबन् व मिन्हुम् मन् अ-ख़ज़त्हुस्सै-हतु व मिन्हुम् मन् ख़सफ़्ना बिहिल्-अर्-ज़ व मिन्हुम् मन् अग़्रक़्ना व मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यज़्लिमून **(40)** म-सलुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म-सलिल्-अ़न्कबूति इत्त-ख़ज़त् बैतन्, व इन्-न औ-हनल्-बुयूति लबैतुल्- अ़न्कबूति ✣ लौ कानू यअ्लमून **(41)** इन्नल्ला-ह यअ्लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन् शैइन्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(42)** व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल्-आ़लिमून **(43)** ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन **(44)** ❖

يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾
وَعَادًا وَّثَمُوْدَا وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾
وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا
بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ
اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ وَمِنْهُمْ
مَّنْ اَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوْتِ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 4/14/16

इक्कीसवाँ पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरतुल्-अ़न्कबूति (आयत 45 से 69)

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्-किताबि व अक़िमिस्सला-त, इन्नस्सला-त तन्हा अ़निल् फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि, व ल-ज़िक्रुल्लाहि अक्बरु, वल्लाहु यअ़्लमु मा तस्नअ़ून **(45)** व ला तुजादिलू अह्लल्-किताबि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून **(46)** व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब, फ़ल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब युअ़्मिनू-न बिही व मिन् हाउला-इ मंय्युअ़्मिनु बिही, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल्-काफ़िरून **(47)** व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव्-व ला तख़ुत्तुहू बि-यमीनि-क इज़ल्-लर्ताबल्-मुब्तिलून **(48)** बल् हु-व आयातुम् बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लज़्ज़ालिमून **(49)** व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयातुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि, व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन **(50)** अ-व लम् यक्फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब युत्ला अ़लैहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-रह्म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्-युअ़्मिनून **(51)** ❖

क़ुल् कफ़ा बिल्लाही बैनी व बैनकुम् शहीदन् यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि,

العنكبوت٢٩ ٣٦٣ اتل مآ اوحي ٢١

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ۭ اِنَّ الصَّلٰوةَ
تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاۗءِ وَالْمُنْكَرِ ۭ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا تَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِىَ
اَحْسَنُ ڰ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ
اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ۭ وَمَا يَجْحَدُ
بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ
كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ
هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ۭ وَمَا يَجْحَدُ
بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ
بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

منزل ٥

वल्लज़ी-न आमनू बिल्बातिलि व क-फ़रू बिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (52) व यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व लौ ला अ-जलुम्-मुसम्मल्-लजा-अहुमुल्-अ़ज़ाबु, व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (53) यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम्- बिल्-काफ़िरीन (54) यौ-म यग़्शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्मलून (55) या अ़िबादि-यल्लज़ी-न आमनू इन्-न अर्ज़ी वासि-अ़तुन् फ़-इय्या-य फ़अ्बुदून (56) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्मौति, सुम्-म इलैना तुर्जअून (57) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्-जन्नति गु-रफ़न् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन (58) अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (59) व क-अय्यिम् मिन् दाब्बतिल्-ला तह्मिलु रिज़्-क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम् व हुवस्-समीअुल्-अ़लीम (60) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून (61) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (62) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ मिम्बअ्दि मौतिहा ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून (63) ❖

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ
الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ
بِالْعَذَابِ ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ
وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ
ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا
اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ڮ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ
مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

व मा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या इल्ला लह्वुंव्-व लअिबुन्, व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल् ह-यवानु ✣ लौ कानू यअ्लमून (64) फ़-इज़ा रकिबू फ़िल्-फ़ुल्कि द-अवुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून (65) लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् व लि-य-तमत्तअू, फ़सौ-फ़ यअ्लमून (66) अ-व लम् यरौ अन्ना जअ़ल्ना ह-रमन् आमिनंव्-व यु-तख़त्-त-फ़ुन्नासु मिन् हौलिहिम्, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (67) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्काफ़िरीन (68) वल्लज़ी-न जा-हदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना, व इन्नल्ला-ह ल-मअ़ल्मुह्सिनीन (69) ❖

لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۚ وَ
اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا
رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۚ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ
غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۗ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ
وَمِنْ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۚ يَنْصُرُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ۚ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ

30 सूरतुर्-रूमि 84

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3547 अक्षर, 827 शब्द, 60 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) ग़ुलि-बतिर्रूम (2) फ़ी अद्नल्-अर्ज़ि व हुम् मिम्बअ़्दि ग़-लबिहिम् स-यग़्लिबून (3) फ़ी बिज़्अि सिनी-न, लिल्लाहिल्-अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ़्दु, व यौमइज़िंय्-यफ़्रहुल्-मुअ्मिनून (4) बिनस्रिल्लाहि, यन्सुरु मंय्यशा-उ, व हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (5) वअ़्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ़्-दहू व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (6) यअ़्लमू-न ज़ाहिरम् मिनल्-हयातिद्दुन्या व हुम् अ़निल्-आख़िरति हुम्

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 7/6/13
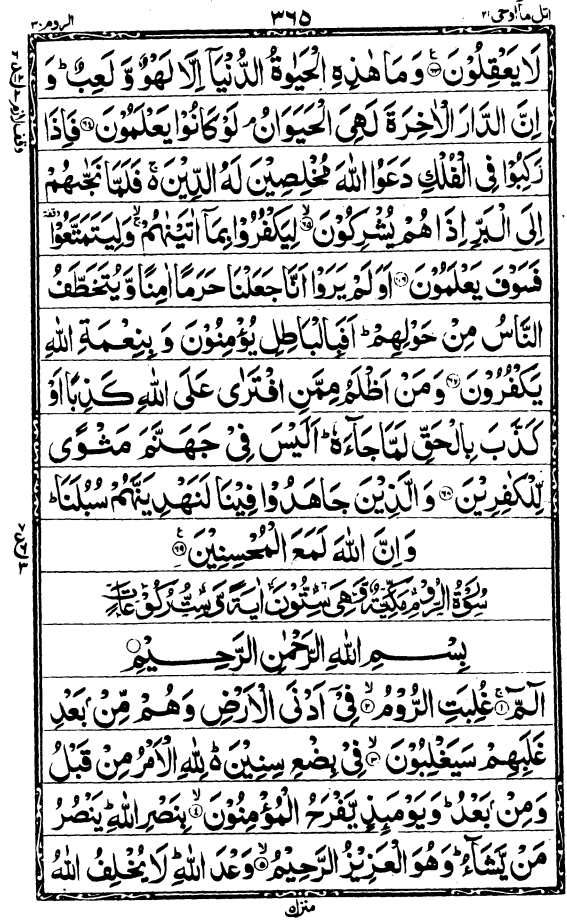
ग़ाफ़िलून **(7)** अ-व लम् य-तफ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम्, मा ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् लकाफ़िरून **(8)** अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व असारुल्-अर्-ज़ व अ़-मरूहा अक्स-र मिम्मा अ़-मरूहा व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति, फ़मा कानल्लाहु लियज़्लि--महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून **(9)** सुम्-म का-न आ़क़ि-बतल्लज़ी-न असाउस्सूआ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह्ज़िऊन **(10)** ❖

अल्लाहु यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून **(11)** व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु युब्लिसुल्-मुज्रिमून **(12)** व लम् यकुल्-लहुम् मिन् शु-रकाइहिम् शु-फ़अ़ा-उ व कानू बिशु-रकाइहिम् काफ़िरीन **(13)** व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु यौमइज़िंय्-य-तफ़र्रक़ून **(14)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़तिंय्-युह्-बरून **(15)** व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अ़ज़ाबि मुह्ज़रून **(16)** फ़सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून **(17)** व लहुल्-हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अ़शिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून **(18)**

الروم ٣٠ ٣٦٦ اتل ما اوحي ٢١

وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا
مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوْٓا اَشَدَّ
مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا
وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۗ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا
السُّوْٓآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝ اَللّٰهُ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا
بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝

منزل ٥

युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, व कज़ालि-क तुख़्रजून (19) ❖

व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-ककुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (20) व मिन् आयातिही अन् ख़ा-ल-क़ लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ्-ल बैनकुम् मवद्द-तंव्-व रह्म-तन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (21) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़ु-अल्सि-नतिकुम् व अल्वानिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्-आ़लमीन (22) व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्तिग़ा-उकुम् मिन् फ़ज़्लिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मअ़ून (23) व मिन् आयातिही युरीकुमुल्-बर्-क़ ख़ौफ़ंव्-व त-मअ़ंव्-व युनज़्ज़िलु मिनस्-समा-इ मा-अन् फ़युह्यी बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ़्क़िलून (24) व

الٰل ما اوحی ۲۱ ٣٦٧ الروم ٣٠

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ
اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمِنْ
اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ
وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ
مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ
بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ
الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ

منزل

मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समा-उ वल्अर्ज़ु बिअम्रिही, सुम्-म इज़ा दआ़कुम् दअ़्-वतम्-मिनल्अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून (25) व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्-लहू क़ानितून (26) व हुवल्लज़ी यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू व हु-व अह्वनु अ़लैहि, व लहुल्-म-सलुल्-अअ़्ला फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम ◆ (27) ❖

ज़-र-ब लकुम् म-सलम् मिन् अन्फ़ुसिकुम्, हल्-लकुम् मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन्

शु-रका-अ फ़ी मा रज़क़्नाकुम् फ़-अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ूनहुम् कख़ी-फ़तिकुम् अन्फ़ु-सकुम्, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यअ्क़िलून (28) बलित्-त--बअ़ल्लज़ी-न ज़-लमू अह्वा-अहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् फ़-मंय्यह्दी मन् अज़ल्लल्लाहु, व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (29) फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न्, फ़ित्-रतल्लाहिल्लती फ़-तरन्ना-स अ़लैहा, ला तब्दी-ल लिख़ल्क़िल्लाहि, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (30) मुनीबी-न इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्-सला-त व ला तकूनू मिनल्-मुश्रिकीन (31) मिनल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-यअ़न्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (32) व इज़ा मस्सन्ना-स ज़ुर्रुन् दऔ रब्बहुम् मुनीबी-न इलैहि सुम्-म इज़ा अज़ा--क़हुम् मिन्हु रह्म-तन् इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून (33) लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ तअ़्लमून (34) अम् अन्ज़ल्ना अ़लैहिम् सुल्तानन् फ़हु-व य-तकल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून (35) व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह्म-तन् फ़रिहू बिहा, व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़्नतून (36) अ-व लम् यारौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (37) फ़-आति ज़ल्क़ुरबा हक़्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न युरीदू-न वज्हल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (38) व मा आतैतुम् मिर्रिबल्- लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि

لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۚ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ
كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ
مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ
حَنِيْفًا ۚ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ
اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾
مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۚ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ
اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ
يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوْا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ
اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَآ
اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ

फ़ला यर्बू अिन्दल्लाहि व मा आतैतुम् मिन् ज़कातिन् तुरीदू-न वज्हल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुज़्अिफ़ून (39) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्, हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ़्अ़लु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन्, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (40) ❖

ज़-हरल्-फ़सादु फ़िल्-बर्रि वल्-बह्रि बिमा क-सबत् ऐदिन्नासि लियुज़ी-क़हुम् बअ्ज़ल्लज़ी अ़मिलू लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (41) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु, का-न अक्सरुहुम् मुश्रिकीन (42) फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनिल्-क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल् ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि यौमइज़िंय्-यस्सद्दअ़ून (43) मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू व मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिअन्फ़ुसिहिम् यम्हदून (44) लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू ला युहिब्बुल्-काफ़िरीन (45) व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर्-रिया-ह मुबश्शिरातिंव्-व लियुज़ी-क़कुम् मिर्रह्मतिही व लितज्रि-यल्फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (46) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्त-क़म्ना मिनल्लज़ी-न अज्-रमू, व का-न हक़्क़न् अ़लैना

ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَاۤ اٰتَيْتُمْ
مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۠ فِيْۤ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَاۤ
اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ
مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي
النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ قُلْ
سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ
كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ۝ فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ۝
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ
يَمْهَدُوْنَ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ
وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا

नस्रुल्-मुअ्मिनीन **(47)** अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर्-रिया-ह फ़तुसीरु सहाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समा-इ कै-फ़ यशा-उ व यज्-अ़लुहू कि-सफ़न् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही फ़-इज़ा असा-ब बिही मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून **(48)** व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैहिम् मिन् क़ब्लिही लमुब्लिसीन **(49)** फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न ज़ालि-क लमुह्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(50)** व ल-इन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्फ़र्रल् लज़ल्लू मिम्-बअ्दिही यक्फ़ुरून **(51)** फ़-इन्न-क ला तुस्मिअुल्-मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्-दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन **(52)** व मा अन्-त बिहादिल्-अुम्यि अ़न् ज़ला-लतिहिम्, इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून **(53)** ❖

اتل ما اوحی ۲۱ ۳۷۰ الروم ۳۰

إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَانتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ
فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا
فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَن يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلِ
أَن يُنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ۝ فَانظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ
اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا
لَّظَلُّوا مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝ فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ
الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن
ضَلَالَتِهِمْ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝
اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ ضَعْفٍ
قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ
وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ
مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ

منزل

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् ज़ुअ्फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ्दि ज़ुअ्फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्-बअ्दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ्फ़ंव्-व शै-बतन्, यख़्लुक़ु मा यशा-उ व हुवल्-अ़लीमुल्-क़दीर **(54)** व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु युक्सिमुल्-मुज्रिमू-न मा लबिसू ग़ै-र सा-अ़तिन्, कज़ालि-क कानू युअ्फ़कून **(55)** व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ्सि फ़-हाज़ा यौमुल्-बअ्सि व

❖ रु. 5/13/8

लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्लमून (56) फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़उ़ल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्ज़ि-रतुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (57) व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व ल-इन् जिअ्-तहुम् बिआयतिल् ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (58) कज़ालि-क यत्बउ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिल्लज़ी-न ला यअ्लमून (59) फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व ला यस्तख़िफ़्फ़न्न--कल्लज़ी-न ला यूक़िनून (60) ❖

31 सूरतु लुक़्मान 57

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2217 अक्षर, 554 शब्द, 34 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-हकीम (2) हुदंव्-व रह्म-तल् लिल्मुह्सिनीन (3) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्-सला-त व युअ्तूनज़्-ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (4) उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5) व मिनन्नासि मंय्यश्तरी लह्वल्-हदीसि लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (6) व इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्हा क-अन्-न फ़ी उज़ुनैहि वक़्रन् फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (7) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्-नअ़ीम (8)

فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا
لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۭ وَلَىِٕنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ
لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ
عَلٰي قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ
لَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الۗمّۗ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰۗىِٕكَ عَلٰي هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ڰ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ
عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ
لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ خٰلِدِيْنَ

ख़ालिदी-न फ़ीहा, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(9)** ख़-लक़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन्, व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम **(10)** हाज़ा ख़ल्क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-लक़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही, बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(11)** ❖

व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि, व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद **(12)** व इज़् क़ा-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअिज़ुहू या-बुनय्-य ला तुश्रिक् बिल्लाहि, इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अ़ज़ीम **(13)** व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ह-मलत्हू उम्मुहू वह्नन् अ़ला वह्निंव्-व फ़िसालुहू फ़ी आ़मैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क, इलय्यल्-मसीर ● **(14)** व इन् जा-हदा-क अ़ला अन् तुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़्हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ़्रूफ़ंव्-वत्तबिअ़् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून **(15)** या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम् मिन् ख़र्-दलिन् फ़-तकुन् फ़ी सख़्रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ़्ति बिहल्लाहु, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर **(16)** या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ़्मुर् बिल्मअ़्रूफ़ि वन्-ह अ़निल्-मुन्करि वस्बिर् अ़ला मा असा-ब-क, इन्-न ज़ालि-क मिन्

فيها وعد الله حقا وهو العزيز الحكيم ﴿٩﴾ خلق السموت
بغير عمد ترونها والقى في الارض رواسي ان تميد بكم
وبث فيها من كل دابة وانزلنا من السماء ماء فانبتنا
فيها من كل زوج كريم ﴿١٠﴾ هذا خلق الله فاروني ماذا خلق
الذين من دونه بل الظلمون في ضلل مبين ﴿١١﴾ ولقد
اتينا لقمن الحكمة ان اشكر لله ومن يشكر فانما يشكر
لنفسه ومن كفر فان الله غني حميد ﴿١٢﴾ واذ قال لقمن لابنه
وهو يعظه يبني لا تشرك بالله ان الشرك لظلم عظيم ﴿١٣﴾
ووصينا الانسان بوالديه حملته امه وهنا على وهن و
فصله في عامين ان اشكر لي ولوالديك الي المصير ﴿١٤﴾ و
ان جاهدك على ان تشرك بي ما ليس لك به علم فلا تطعهما
وصاحبهما في الدنيا معروفا واتبع سبيل من اناب الي
ثم الي مرجعكم فانبئكم بما كنتم تعملون ﴿١٥﴾ يبني انها
ان تك مثقال حبة من خردل فتكن في صخرة او في
السموت او في الارض يات بها الله ان الله لطيف خبير ﴿١٦﴾
يبني اقم الصلوة وامر بالمعروف وانه عن المنكر واصبر

अ़ज़्मिल्-उमूर **(17)** व ला तुसअ़्अ़िर् ख़द्द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर **(18)** वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्ज़ुज़् मिन् सौति-क, इन्-न अन्करल्-अस्वाति लसौतुल्-हमीर **(19)** ❖

अलम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अ़लैकुम् नि-अ़-महू ज़ाहि-रतंव्-व बाति-नतन्, व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम् मुनीर **(20)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ कानश्शैतानु यद्अ़ूहुम् इला अ़ज़ाबिस्- सअ़ीर **(21)** व मंय्युस्लिम् वज्हहू इलल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्अ़ुर्-वतिल्-वुस्क़ा, व इलल्लाहि आ़क़ि-बतुल्-उमूर **(22)** व मन् क-फ़-र फ़ला यह्ज़ुन्-क कुफ़्रुहू, इलैना मर्जिअ़ुहुम् फ़नुनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्- बिज़ातिस्-सुदूर **(23)** नुमत्तिअ़ुहुम् क़लीलन् सुम्-म नज़्तर्रुहुम् इला अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ **(24)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमून **(25)** लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(26)** व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक़्लामुंव्-वल्बह्रु यमुद्दुहू मिम्बअ़्दिही सब्अ़तु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम **(27)** मा ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ़्सुकुम् इल्ला क-नफ़्सिंव्-वाहि-दतिन्, इन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर **(28)** अलम् त-र

عَلٰى مَآ اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ
لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ
مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾ وَاقْصِدْ فِىْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ
اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ
مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ
بَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى
وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ
مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ
السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ
كُفْرُهٗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ
وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ اِنَّ

अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम् मुसम्मंव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ्मलू-न ख़बीर **(29)** ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिहिल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर **(30)** ❖

अलम् त-र अन्नल्-फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिनिअ्मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर **(31)** व इज़ा ग़शि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ुलिल द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसिदुन्, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर **(32)** या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्-ला यज्ज़ी वालिदुन् अंव्व-लदिही व ला मौलूदुन् हु-व जाज़िन् अंव्वालिदिही शैअन्, इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या, व ला यग़ुर्रन्न-कुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर **(33)** इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स व यअ्लमु मा फ़िल्-अर्हामि, व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़दन्, व मा तद्री नफ़्सुम् बिअय्यि अर्ज़िन् तमूतु, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर **(34)** ❖

الله عزيز حكيم ۝ ما خلقكم ولا بعثكم الا كنفس واحدة ان
الله سميع بصير ۝ الم تر ان الله يولج الليل في النهار ويولج النهار
في الليل وسخر الشمس والقمر كل يجري الى اجل مسمى و
ان الله بما تعملون خبير ۝ ذلك بان الله هو الحق وان ما
يدعون من دونه الباطل وان الله هو العلي الكبير ۝ الم تر
ان الفلك تجري في البحر بنعمت الله ليريكم من ايته ان في
ذلك لايت لكل صبار شكور ۝ واذا غشيهم موج كالظلل دعوا
الله مخلصين له الدين فلما نجىهم الى البر فمنهم مقتصد وما
يجحد بايتنا الا كل ختار كفور ۝ يايها الناس اتقوا ربكم واخشوا
يوما لا يجزي والد عن ولده ولا مولود هو جاز عن والده
شيئا ان وعد الله حق فلا تغرنكم الحيوة الدنيا ولا يغرنكم
بالله الغرور ۝ ان الله عنده علم الساعة وينزل الغيث و
يعلم ما في الارحام وما تدري نفس ماذا تكسب غدا وما تدري
نفس باي ارض تموت ان الله عليم خبير ۝

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ۝ تنزيل الكتب لا ريب فيه من رب العلمين ۝ ام يقولون

32 सूरतुस्-सज्दति 75

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1577 अक्षर, 274 शब्द, 30 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् **(1)** तन्ज़ीलुल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन **(2)** अम्

यक़ूलूनफ़्तराहु बल् हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् यह्तदून (3) अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-वला शफ़ीअ़िन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून (4) युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समा-इ इलल्-अर्ज़ि सुम्-म यअ़्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्-मिम्मा तअ़ुद्दून (5) ज़ालि-क आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (6) अल्लज़ी अह्स-न कुल्-ल शैइन् ख़-ल-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल्-इन्सानि मिन् तीन (7) सुम्-म ज-अ़-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम्-महीन (8) सुम्-म सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ़-ल लकुमुस्-सम्-अ़ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून (9) व क़ालू अ-इज़ा ज़लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् काफ़िरून (10) क़ुल् य-तवफ़्फ़ाकुम् म-लकुल्-मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअ़ून (11) ❖

افتراه بل هو الحق من ربك لتنذر قوما ما اتىهم من نذير
من قبلك لعلهم يهتدون ۝٣ الله الذي خلق السموت و
الارض وما بينهما في ستة ايام ثم استوى على العرش
ما لكم من دونه من ولي ولا شفيع افلا تتذكرون ۝٤ يدبر
الامر من السماء الى الارض ثم يعرج اليه في يوم كان
مقداره الف سنة مما تعدون ۝٥ ذلك علم الغيب والشهادة
العزيز الرحيم ۝٦ الذي احسن كل شيء خلقه وبدا خلق
الانسان من طين ۝٧ ثم جعل نسله من سللة من ماء مهين ۝٨
ثم سوىه ونفخ فيه من روحه وجعل لكم السمع والابصار
والافدة قليلا ما تشكرون ۝٩ وقالوا ءاذا ضللنا في الارض
ءانا لفي خلق جديد بل هم بلقاى ربهم كفرون ۝١٠ قل
يتوفىكم ملك الموت الذي وكل بكم ثم الى ربكم ترجعون ۝١١ ع ١ ١١ ١٤
ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم ربنا ابصرنا
وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا انا موقنون ۝١٢ ولو شئنا لاتينا
كل نفس هدىها ولكن حق القول مني لاملئن جهنم من
الجنة والناس اجمعين ۝١٣ فذوقوا بما نسيتم لقاء يومكم

व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अ़िन्-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सर्ना व समिअ़्ना फ़र्जिअ़्ना नअ़्मल् सालिहन् इन्ना मूक़िनून (12) व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-क़ौलु मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअ़ीन (13) फ़ज़ूक़ू बिमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (14) इन्नमा युअ़्मिनु

बिआयातिनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदंव्-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ❑ (15) त-तजाफ़ा जुनूबुहुम् अ़निल्-मज़ाजिअ़ि यद्अ़ू-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव्-व त-मअ़ंव्-व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (16) फ़ला तअ़्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्रति अअ़्युनिन् जज़ा-अम् बिमा कानू यअ़्मलून (17) अ-फ़-मन् का-न मुअ्मिनन् कमन् का-न फ़ासिक़न्, ला यस्तवून (18) अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल्-मअ्वा नुज़ुलम् बिमा कानू यअ़्मलून (19) व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्वाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उअ़ीदू फ़ीहा व क़ी-ल लहुम् ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (20) व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् अ़ज़ाबिल्-अद्ना दूनल् अ़ज़ाबिल्-अक्बरि लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (21) व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ़्र-ज़ अ़न्हा, इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून (22) ❖

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम् मिल्लिक़ा-इही व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राईल (23) व जअ़ल्ना मिन्हुम् अ-इम्मतंय्-यह्दू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरू, व कानू बिआयातिना यूक़िनून (24) इन्-न रब्ब-क हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (25) अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्- क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन्, अ-फ़ला यस्मअ़ून (26) अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़नुख़्रिजु बिही ज़रअ़न् तअ्कुलु

هٰذَا ۚ إِنَّا نَسِينَاكُمْ ۖ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا
يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ
رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ
نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾
أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾ أَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ
يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ
رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ
آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ
هُدًى لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا
لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ

मिन्हु अन्आ़मुहुम् व अन्फ़ुसुहुम्, अ-फ़ला युब्सिरून ▲ (27) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-फ़त्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (28) क़ुल् यौमल्-फ़त्हि ला यन्फ़अुल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून (29) फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून (30) ❖

33 सूरतुल्-अह्ज़ाबि 90

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5909 अक्षर, 1210 शब्द, 73 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्युत्-तक़िल्ला-ह व ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न वल्मुनाफ़िक़ी-न, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (1) वत्तबिअ़् मा यूहा इलै-क मिर्रब्बि-क, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा (2) व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (3) मा ज-अ़लल्लाहु लि-रजुलिम् मिन् क़ल्बैनि फ़ी जौफ़िही व मा ज-अ़-ल अज़्वा-जकुमुल्लाई तुज़ाहिरू-न मिन्हुन्-न उम्महातिकुम् व मा ज-अ़-ल अद्अ़िया-अकुम् अब्ना-अकुम्, ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि-अफ़्वाहिकुम्, वल्लाहु यक़ूलुल्-हक़्-क़ व हु-व यह्दिस्सबील (4) उद्अ़ूहुम् लिआबाइहिम् हु-व अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि फ़-इल्लम् तअ़्लमू आबा-अहुम् फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व मवालीकुम्, व लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् फ़ीमा अख़्तअ्तुम् बिही व लाकिम्-मा तअ़म्म-दत् क़ुलूबुकुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (5) अन्नबिय्यु औला बिल्मुअ्मिनी-न मिन्

أهلكنا من قبلهم من القرون يمشون في مساكنهم إن
في ذلك لآيات أفلا يسمعون ﴿٢٦﴾ أولم يروا أنا نسوق الماء إلى
الأرض الجرز فنخرج به زرعا تأكل منه أنعامهم وأنفسهم
أفلا يبصرون ﴿٢٧﴾ ويقولون متى هذا الفتح إن كنتم صادقين ﴿٢٨﴾
قل يوم الفتح لا ينفع الذين كفروا إيمانهم ولا هم ينظرون ﴿٢٩﴾
فأعرض عنهم وانتظر إنهم منتظرون ﴿٣٠﴾

سورة الأحزاب — بسم الله الرحمن الرحيم

يا أيها النبي اتق الله ولا تطع الكافرين والمنافقين إن الله
كان عليما حكيما ﴿١﴾ واتبع ما يوحى إليك من ربك إن الله
كان بما تعملون خبيرا ﴿٢﴾ وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ﴿٣﴾
ما جعل الله لرجل من قلبين في جوفه وما جعل أزواجكم
اللائي تظاهرون منهن أمهاتكم وما جعل أدعياءكم أبناءكم
ذلكم قولكم بأفواهكم والله يقول الحق وهو يهدي السبيل ﴿٤﴾
ادعوهم لآبائهم هو أقسط عند الله فإن لم تعلموا آباءهم
فإخوانكم في الدين ومواليكم وليس عليكم جناح فيما
أخطأتم به ولكن ما تعمدت قلوبكم وكان الله غفورا رحيما ﴿٥﴾

अन्फ़ुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम्, व उलुल्-अर्हामि बअ्जुहुम् औला बि-बअ्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि मिनल्-मुअ्मिनी-न वल्मुहाजिरी-न इल्ला अन् तफ़्अलू इला औलिया-इकुम् मअ्रूफ़न्, का-न ज़ालि-क फ़िल्-किताबि मस्तूरा **(6)** व इज़् अख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी-न मीसा-क़हुम् व मिन्-क व मिन् नूहिंव्-व इब्राही-म व मूसा व अीसब्नि-मर्य-म व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा **(7)** लियस्-अलस्सादिक़ी-न अन् सिद्क़िहिम् व अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन् अलीमा **(8)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहंव्-व जुनूदल्-लम् तरौहा, व कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीरा **(9)** इज़् जाऊकुम् मिन् फ़ौक़िकुम् व मिन् अस्-फ़-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ा-ग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल् क़ुलूबुल्-हनाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना **(10)** हुनालिकब्- तुलियल्- मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा **(11)** व इज़् यक़ूलुल्- मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुम् मा व-अ-दनल्लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा **(12)** व इज़् क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् या अह्-ल यस्रि-ब ला मुक़ा-म लकुम् फ़र्जिअ़ू व यस्तअ्ज़िनु फ़रीक़ुम् मिन्हुमुन्नबिय्-य यक़ूलू-न इन्-न बुयूतना औ़-रतुन्, व मा हि-य बिऔ़-रतिन्, इंय्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा **(13)** व लौ दुख़िलत् अ़लैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म सुइलुल्-फ़ित्-न-त लआतौहा व मा तलब्बसू बिहा

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَ
أُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا كَانَ
ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَ
مِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا
مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝ لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝ إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ
أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَ
تَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا
شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ
يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ
النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِن يُرِيدُونَ
إِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا

इल्ला यसीरा **(14)** व ल-क़द् कानू आ़-हदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-अद्बा-र, व का-न अ़ह्दुल्लाहि मस्ऊला **(15)** क़ुल् लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-फ़िरारु इन् फ़रर्तुम् मिनल्-मौति अविल्-क़त्लि व इज़ल् ला तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला **(16)** क़ुल् मन् ज़ल्लज़ी यअ़्सिमुकुम् मिनल्लाहि इन् अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम् रह़्म-तन्, व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(17)** क़द् यअ़्-लमुल्लाहुल्-मुअ़व्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लि-इख़्वानिहिम् हलुम्-म इलैना व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला **(18)** अशिह्ह-तन् अ़लैकुम् फ़-इज़ा जा-अल्-ख़ौफ़ु रऐ-तहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क तदूरु अअ़्युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अ़लैहि मिनल्-मौति फ़-इज़ा ज़-हबल्-ख़ौफ़ु स-लक़ूकुम् बि-अल्सि-नतिन् हिदादिन् अशिह्ह-तन् अ़लल्-ख़ैरि, उलाइ-क लम् युअ्मिनू फ़-अह्-बतल्लाहु अअ़्मालहुम्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा **(19)** यह़्सबूनल्-अह्ज़ा-ब लम् यज़्हबू व इंय्यअ्तिल्-अह्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-अअ़्राबि यस्अलू-न अ़न् अम्बा-इकुम्, व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ा-तलू इल्ला क़लीला **(20)** ❖

الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا
عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ
مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ
الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۶﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِیْ يَعْصِمُكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَ
لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۷﴾ قَدْ
يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ
اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۸﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا
جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِیْ
يُغْشٰی عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ
حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَی الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَی اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۹﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ
يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِی
الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۲۰﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ
كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا رَاَ

ع ۲/۱۲/۱۸

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र व ज़-करल्ला-ह कसीरा **(21)** व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल् अह्ज़ा-ब क़ालू हाज़ा मा व-अ़-दनल्लाहु व रसूलुहू व स-दक़ल्लाहु व रसूलुहू व मा ज़ा-दहुम् इल्ला

ईमानंव्-व तस्लीमा (22) मिनल्-मुअ्मिनी-न रिजालुन् स-दक़ू मा आ़-हदुल्ला-ह अ़लैहि फ़मिन्हुम् मन् क़ज़ा नह्-बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु व मा बद्दलू तब्दीला (23) लियज्ज़ि-यल्लाहुस्सादिक़ी-न बिसिद्क़िहिम् व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न इन् शा-अ औ यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (24) व रद्दल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन्, व कफ़ल्लाहुल्-मुअ्मिनीनल्-क़िता-ल, व कानल्लाहु क़विय्यन् अ़ज़ीज़ा (25) व अन्ज़लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् सयासीहिम् व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्-रुअ्-ब फ़रीक़न् तक़्तुलू-न व तअ्सिरू-न फ़रीक़ा (26) व औ-र-सकुम् अर्-ज़हुम् व दिया-रहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्-लम् त-तऊहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (27) ❖

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा फ़-तआ़लै-न उमत्तिअ्कुन्-न व उसर्रिह्कुन्-न सराहन् जमीला (28) व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह व रसूलहू वद्दारल्-आख़िर-त फ़-इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्मुह्सिनाति मिन्कुन्-न अज्रन् अ़ज़ीमा (29) या निसाअन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिंय्-युज़ा-अ़फ़् ल-हल्-अ़ज़ाबु ज़िअ्फ़ैनि, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (30)

الاحزاب ٣٣ ٣٨٠ اتل ما اوحی ٢١

الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَ
صَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ
قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ لِيَجْزِيَ
اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ
أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٤﴾ وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾ وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ
الْكِتَابِ مِنْ صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا
تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٦﴾ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَ
أَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَئُوهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٢٧﴾
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا
فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٨﴾ وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا
عَظِيمًا ﴿٢٩﴾ يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ مَنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ
يُضَاعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

منزل ٥

बाईसवाँ पारः व मंय्यक़्नुत्

सूरतुल्-अह्ज़ाबि (आयत 31 से 73)

व मंय्यक़्नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्मल् सालिहन् नुअ्तिहा अज्रहा मर्रतैनि व अअ्तद्ना लहा रिज़्क़न् करीमा **(31)** या निसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न क-अ-हदिम् मिनन्निसा-इ इनित्तक़ैतुन्-न फ़ला तख़्-ज़अ्-न बिल्क़ौलि फ़यत्म-अ़ल्लज़ी फ़ी क़ल्बिही म-रज़ुंव्-व क़ुल्-न क़ौलम् मअ्रूफ़ा **(32)** व क़र्-न फ़ी बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक़िम्नस्सला-त व आतीनज़्-ज़का-त व अतिअ्नल्ला-ह व रसूलहू, इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्हि-ब अ़न्कुमुर्-रिज्-स अह्लल्-बैति व यु-तह्हि-रकुम् ततह़ीरा **(33)** वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न मिन् आयातिल्लाहि वल्हिक्मति, इन्नल्ला-ह का-न लतीफ़न् ख़बीरा **(34)** ❖

इन्नल्-मुस्लिमी-न वल्मुस्लिमाति वल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति वल्क़ानिती-न वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी-न वस्सादिक़ाति वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्ख़ाशिअ़ी-न वल्ख़ाशिअ़ाति वल्मु-तसद्दिक़ी-न वल्मु-तसद्दिक़ाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्हाफ़िज़ी-न फ़ुरू-जहुम् वल्हाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह कसीरंव्-वज़्ज़ाकिराति अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा **(35)** व मा का-न लिमुअ्मिनिंव्-व ला मुअ्मि-नतिन् इज़ा क़ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्रन्

الاحزاب ٣٣ ٣٨١ ومن يقنت ٢٢

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ
اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ
كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ
بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ
وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ
وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ
وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ
فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ
اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا
مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ
مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا

منزل ٥

अंय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन् अम्रिहिम्, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-मुबीना **(36)** व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहि व अन्अ़म्-त अ़लैहि अम्सिक् अ़लै-क ज़ौ-ज-क वत्तक़िल्ला-ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व तख़्शन्ना-स वल्लाहु अ-हक़्क़ु अन् तख़्शाहु, फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्-मिन्हा व-तरन् ज़व्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अ़लल्-मुअ्मिनी-न ह-रजुन् फ़ी अज़्वाजि अद्अ़िया-इहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्-न व-तरन्, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला **(37)** मा का-न अ़लन्नबिय्यि मिन् ह-रजिन् फ़ीमा फ़-रज़ल्लाहु लहू, सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु, व का-न अम्रुल्लाहि क़-दरम् मक़्दूरा **(38)** अल्लज़ी-न युबल्लिग़ू-न रिसालातिल्लाहि व यख़्शौनहू व ला यख़्शौ-न अ-हदन् इल्लल्ला-ह, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा **(39)** मा का-न मुहम्मदुन् अबा अ-हदिम्-मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ा-तमन्-नबिय्यी-न, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा **(40)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरुल्ला-ह ज़िक्रन् कसीरा **(41)** व सब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला **(42)** हुवल्लज़ी युसल्ली अ़लैकुम् व मलाइ-कतुहू लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व का-न बिल्मुअ्मिनी-न रहीमा **(43)** तहिय्यतुहुम् यौ-म यल्क़ौनहू सलामुन् व अ-अ़द्-द लहुम् अज्रन् करीमा **(44)** या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा **(45)** व दाअि़-यन्

ومن يقنت ٢٢ ٣٨٢ الاحزاب ٣٣

مُّبِينًا ۝ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِيٓ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ
أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ
مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ ۖ فَلَمَّا قَضَىٰ
زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ
فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ
مَفْعُولًا ۝ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ ۖ
سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا
مَقْدُورًا ۝ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ
أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ
رِجَالِكُمْ وَلَٰكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝ وَ
سَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝ هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝
تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا
النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَدَاعِيًا إِلَى
اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ

منزل

इलल्लाहि बि-इज़्निही व सिराजम्-मुनीरा (46) व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्लन् कबीरा (47) व ला तुतिअिल्-काफ़िरी-न वल्-मुनाफ़िक़ी-न व दअ् अज़ाहुम् व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (48) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नकह्तुमुल् मुअ्मिनाति सुम्-म तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्-न मिन् अ़िद्दतिन् तअ्तद्दूनहा फ़-मत्तिअूहुन्-न व सर्रिहू-हुन्-न सराहन् जमीला (49) या अय्युहन्-नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-जकल्लाती आतै-त उजू-रहुन्-न व मा म-लकत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ाअल्लाहु अ़लै-क व बनाति अ़म्मि-क व बनाति अ़म्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्--लाती हाजर्-न म-अ़-क वम्-र-अतम् मुअ्मि-नतन् इंव्व-हबत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु अंय्यस्तन्कि-हहा, ख़ालि-सतल् ल-क मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, क़द् अ़लिम्ना मा फ़रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म-लकत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न

الاحزاب ٣٣ ٣٨٣ ومن يقنت ٢٢

اللهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِينَ وَالْمُنٰفِقِينَ وَدَعْ
اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ۗ وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيلًا ﴿٤٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ
اٰمَنُوٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا ۚ فَمَتِّعُوهُنَّ
وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿٤٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ
الّٰتِيٓ اٰتَيْتَ اُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّآ اَفَآءَ اللهُ عَلَيْكَ
وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ
الّٰتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ
اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۖ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ
قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ
لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٠﴾ تُرْجِي
مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۗ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ
مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۗ ذٰلِكَ اَدْنٰىٓ اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ
وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللهُ يَعْلَمُ
مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ
النِّسَآءُ مِنْ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ

منزل ٥

अ़लै-क ह-रजुन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (50) तुर्जी मन् तशा-उ मिन्हुन्-न व तुअ्वी इलै-क मन् तशा-उ, व मनिब्तग़ै-त मिम्मन् अ़ज़ल्-त फ़ला जुना-ह अ़लै-क, ज़ालि-क अद्ना अन् तक़र्-र अअ्युनुहुन्-न व ला यह्ज़न्-न व यर्ज़ै-न बिमा आतै-तहुन्-न कुल्लुहुन्-न, वल्लाहु यअ्लमु मा फ़ी क़ुलूबिकुम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हलीमा (51) ला

यहिल्लु लकन्निसा-उ मिम्बअ्दु व ला अन् तबद्द-ल बिहिन्-न मिन् अज़्वाजिंव्-व लौ अअ्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-लकत् यमीनु-क, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइर्-रक़ीबा (52) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्खुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ्-ज़-न लकुम् इला तअ़ामिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु व लाकिन् इज़ा दुईतुम् फ़द्खुलू फ़-इज़ा तइम्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्निसी-न लि-हदीसिन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ्ज़िन्नबिय्-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् वल्लाहु ला यस्तह्यी मिनल्-हक़्क़ि, व इज़ा सअल्तुमूहुन्-न मताअ़न् फ़स्अलूहुन्-न मिंव्वरा-इ हिजाबिन्, ज़ालिकुम् अत्हरु लिक़ुलूबिकुम् व क़ुलूबिहिन्-न, व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बअ्दिही अ-बदन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न अ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीमा (53) इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (54) ला जुना-ह अ़लैहिन्-न फ़ी आबा-इहिन्-न व ला इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ अ-ख़वातिहिन्-न व ला निसा-इहिन्-न व ला मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न वत्तक़ीनल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (55) इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि, या अय्युहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा (56) इन्नल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्ला-ह

اعجبك حسنهن الا ما ملكت يمينك وكان الله على
كل شيء رقيبا ﴿٥٢﴾ يا ايها الذين امنوا لا تدخلوا بيوت
النبي الا ان يؤذن لكم الى طعام غير نظرين انه ولكن
اذا دعيتم فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسين
لحديث ان ذلكم كان يؤذي النبي فيستحي منكم والله
لا يستحي من الحق واذا سالتموهن متاعا فسئلوهن من
وراء حجاب ذلكم اطهر لقلوبكم وقلوبهن وما كان لكم
ان تؤذوا رسول الله ولا ان تنكحوا ازواجه من بعده ابدا
ان ذلكم كان عند الله عظيما ﴿٥٣﴾ ان تبدوا شيئا او تخفوه
فان الله كان بكل شيء عليما ﴿٥٤﴾ لا جناح عليهن في ابائهن
ولا ابنائهن ولا اخوانهن ولا ابناء اخوانهن ولا ابناء
اخوتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت ايمانهن واتقين الله
ان الله كان على كل شيء شهيدا ﴿٥٥﴾ ان الله وملئكته
يصلون على النبي يا ايها الذين امنوا صلوا عليه وسلموا
تسليما ﴿٥٦﴾ ان الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله في
الدنيا والاخرة واعد لهم عذابا مهينا ﴿٥٧﴾ والذين

ع

व रसूलहू ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबम्-मुहीना **(57)** वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्त-मलू बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना **(58)** ❖

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क व बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न अ़लैहिन्-न मिन् जलाबीबिहिन्-न, ज़ालि-क अद्ना अंय्युअ्-रफ़्-न फ़ला युअ्ज़ै-न, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा **(59)** ल-इल्लम् यन्तहिल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िल्मदी-नति ल-नुग़्रियन्न-क सुम्-म ला युजाविरू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीला **(60)** मल्अूनी-न ऐ-नमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला **(61)** सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ◆ **(62)** यस्अलुकन्नासु अ़निस्सा-अ़ति, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि, व मा युद्री-क लअ़ल्लस्-सा-अ़-त तकूनु क़रीबा **(63)** इन्नल्ला-ह ल-अ़नल्-काफ़िरी-न व अ-अ़द्-द लहुम् सअ़ीरा **(64)** ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन् ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा **(65)** यौ-म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू-न या लै-तना अतअ्नल्ला-ह व अतअ्नर्रसूला **(66)** व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ्ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ़-अज़ल्लूनस्-सबीला **(67)** रब्बना आतिहिम् ज़िअ्फ़ैनि मिनल्-अ़ज़ाबि वल्अ़नहुम् लअ्नन् कबीरा **(68)** ❖

يؤذون المؤمنين والمؤمنت بغير ما اكتسبوا فقد احتملوا
بهتانا وإثما مبينا ۞ يايها النبي قل لأزواجك وبنتك
ونساء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن ذلك
أدنى أن يعرفن فلا يؤذين وكان الله غفورا رحيما
لئن لم ينته المنفقون والذين في قلوبهم مرض والمرجفون
في المدينة لنغرينك بهم ثم لا يجاورونك فيها إلا
قليلا ملعونين أينما ثقفوا أخذوا وقتلوا تقتيلا
سنة الله في الذين خلوا من قبل ولن تجد لسنة الله
تبديلا يسئلك الناس عن الساعة قل إنما علمها عند
الله وما يدريك لعل الساعة تكون قريبا إن الله
لعن الكفرين وأعد لهم سعيرا خلدين فيها أبدا
لا يجدون وليا ولا نصيرا يوم تقلب وجوههم في
النار يقولون يليتنا أطعنا الله وأطعنا الرسولا وقالوا
ربنا إنا أطعنا سادتنا وكبراءنا فأضلونا السبيلا ربنا
آتهم ضعفين من العذاب والعنهم لعنا كبيرا يايها
الذين آمنوا لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرأه الله مما

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा फ़-बर्र-अहुल्लाहु मिम्मा क़ालू, व का-न अिन्दल्लाहि वजीहा **(69)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदा **(70)** युस्लिह् लकुम् अअ्मा-लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम्, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा **(71)** इन्ना अ़रज़्नल्-अमान-त अ़लस्-समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़-अबै-न अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह-म-लहल्-इन्सानु, इन्नहू का-न ज़लूमन् जहूला **(72)** लि-युअ़ज़्ज़िबल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-मुनाफ़िक़ाति वल्-मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा **(73)** ❖

34 सूरतु स-बइन् 58

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3636 अक्षर, 896 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर **(1)** यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हुवर्रहीमुल्-ग़फ़ूर **(2)** व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्तीनस्सा-अ़तु क़ुल् बला व रब्बी ल-तअ्ति-यन्नकुम् आ़लिमिल्-ग़ैबि ला यअ्ज़ुबु अ़न्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व ला

ومن يقنت ٢٢ ٣٨٦ سبا ٣٤

قَالُوْا ۚ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا
اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝
اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ
اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ
ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ
الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي
الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيْهَا ۗ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۗ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ
لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَ

منزل

अस्-ग़रु मिन् ज़ालि-क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (3) लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्कुन् करीम (4) वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम् मिर्रिज़्ज़िन् अलीम (5) व यरल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क हुवल्-हक़्-क़ व यह्दी इला सिरातिल् अज़ीज़िल्-हमीद (6) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अ़ला रजुलिंय्-युनब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन् इन्नकुम् लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीद (7) अफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन्, बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल्अ़ज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बअ़ीद (8) अ-फ़लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्-समा-इ वल्अर्ज़ि, इन्न-शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्-अर्-ज़ औ नुस्क़ित् अ़लैहिम् कि-सफ़म् मिनस्समा-इ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब (9) ❖

व ल-क़द् आतैना दावू-द मिन्ना फ़ज़्लन्, या जिबालु अव्विबी म-अ़हू वत्तै-र व अलन्ना लहुल्-हदीद (10) अनिअ्मल् साबिग़ातिंव्-व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ्मलू-न बसीर (11) व लि-सुलैमानर्-री-ह ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव्-व रवाहुहा शह्रुन् व असल्ना लहू अ़ैनल्-क़ित्रि, व मिनल्-जिन्नि मंय्यअ्मलु बै-न यदैहि बि-इज़्नि रब्बिही, व मंय्यज़िग़् मिन्हुम् अ़न् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्-सअ़ीर (12)

لَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٣﴾ لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ
كَرِيمٌ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ﴿٥﴾ وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ
إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ﴿٦﴾
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا
مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٧﴾ أَفْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي
الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ﴿٨﴾ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ
الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا فَضْلًا ۖ
يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾ أَنِ اعْمَلْ
سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ
وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

यअ्मलू-न लहू मा यशा-उ मिम्-महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि व क़ुदूरिर्-रासियातिन्, इअ्मलू आ-ल दावू-द शुक्रन्, व क़लीलुम् मिन् अ़िबादि-यश्शकूर (13) फ़-लम्मा क़ज़ैना अ़लैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू फ़-लम्मा ख़र्-र तबय्य-नतिल्-जिन्नु अल्लौ कानू यअ्लमूनल्-ग़ै-ब मा लबिसू फ़िल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन (14) ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम् आ-यतुन् जन्नतानि अ़ंय्यमीनिंव्-व शिमालिन्, कुलू मिर्रिज़्क़ि-रब्बिकुम् वश्कुरू लहू, बल्दतुन् तय्यि-बतुंव्-व रब्बुन् ग़फ़ूर (15) फ़-अअ्रज़ू फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् सैलल्-अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्तिंव्-व अस्लिंव्-व शैइम्-मिन् सिद्रिन् क़लील (16) ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिमा क-फ़रू, व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर (17) व जअ़ल्ना बैनहुम् व बैनल्-क़ुरल्लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहि-रतंव्-व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-र, सीरू फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (18) फ़क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-जअ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्नाहुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (19) व ल-क़द् सद्द-क़ अ़लैहिम् इब्लीसु ज़न्नहू फ़त्त-बअूहु इल्ला फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनीन (20) व मा का-न लहू अ़लैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ्-ल-म मंय्युअ्मिनु बिल्-आख़िरति मिम्-मन्

بِإِذْنِ رَبِّهٖ ۭ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ
السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۗءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ مِّنْ
عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى
مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۗبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ
الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ
يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ڛ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ
طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ
مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ
اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا
قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا
اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾ فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ

हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन्, व रब्बु-क अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (21) ❖

क़ुलिद्अुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव्-व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर (22) व ला तन्फ़अुश्शफ़ा-अ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि-न लहू, हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ अ़न् क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा क़ा-ल रब्बुकुम्, क़ालुल्-हक़्-क़ व हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर (23) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़ुलिल्लाहु व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अ़ला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (24) क़ुल् ला तुस्अलू-न अ़म्मा अज्रम्ना व ला नुस्अलु अ़म्मा तअ्मलून (25) क़ुल् यज्-मअु बै-नना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बै-नना बिल्हक़्क़ि, व हुवल् फ़त्ताहुल्-अ़लीम (26) क़ुल् अरूनियल्लज़ी-न अल्हक़्तुम् बिही शु-रका-अ कल्ला, बल् हुवल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (27) व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़-तल् लिन्नासि बशीरंव्-व नज़ीरंव्-व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्लमून (28) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (29) क़ुल् लकुम् मीआ़दु यौमिल्-ला तस्तअ्ख़िरू-न अ़न्हु सा-अ़तंव्-व ला तस्तक़्दिमून ● (30) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्-नुअ्मि-न बिहाज़ल्-क़ुर्आनि व ला बिल्लज़ी बै-न यदैहि, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अ़िन्-द रब्बिहिम् यर्जिअु बअ्ज़ुहुम् इला

فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم
مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا
فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ
زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم
مِّن ظَهِيرٍ ۝ وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ
إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ
اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قُل
لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ
بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ
أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً
وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن نُّؤْمِنَ بِهَٰذَا الْقُرْآنِ

बअ्ज़ि-निल्क़ौ-ल यक़ूलुल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौ ला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन **(31)** क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू अ-नह्नु सदद्नाकुम् अ़निल्हुदा बअ्-द इज़् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन **(32)** व क़ालल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्-तक्बरू बल् मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़् तअ्मुरू-नना अन् नक्फ़ु-र बिल्लाहि व नज्-अ़-ल लहू अन्दादन्, व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा र-अवुल् अ़ज़ा-ब, व जअ़ल्नल्-अग़्ला-ल फ़ी अअ्नाक़िल्लज़ी-न क-फ़रू, हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्मलून **(33)** व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून **(34)** व क़ालू नह्नु अक्सरु अम्वालंव्-व औलादंव्-व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन **(35)** क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्लमून **(36)** ❖

व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अ़िन्-दना ज़ुल्फ़ा इल्ला मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज़्-ज़िअ्फ़ि बिमा अ़मिलू व हुम् फ़िल्-ग़ुरुफ़ाति आमिनून **(37)** वल्लज़ी-न यस्औ-न फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क फ़िल्-अ़ज़ाबि मुह्ज़रून **(38)** क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू, व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु-व युख़्लिफ़ुहू व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन **(39)** व यौ-म यह्शुरुहुम्

سبا ٣٤ — ٣٩٠ — ومن يقنت ٢٢

وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ
عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ
الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ
الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُم ۖ بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا
أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ۝ وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ
أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَ
مَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُم بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِندَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ
آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَ
هُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ
أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ

منزل

जमीअ़न् सुम्-म यक़ूलु लिल्मलाइ-कति अ-हाउला-इ इय्याकुम् कानू यअ़्बुदून **(40)** क़ालू सुब्हान-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् बल् कानू यअ़्बुदूनल्-जिन्-न अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ़्मिनून **(41)** फ़ल्यौ-म ला यम्लिकु बअ़्जुकुम् लि-बअ़्ज़िन् नफ़अ़ंव्-व ला ज़र्रन्, व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्-नारिल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून **(42)** व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्-युरीदु अंय्यसुद्दकुम् अ़म्मा का-न यअ़्बुदु आबाउकुम् व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम् मुफ़्तरन्, व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन **(43)** व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्-यद्रुसूनहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्ल-क मिन् नज़ीर **(44)** व कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ब-लग़ू मिअ़्शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू रुसुली, फ़कै-फ़ का-न नकीर **(45)** ❖

لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ
فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ
يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ
اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ
بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا
ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِیْ كُنْتُمْ بِهَا
تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰی عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا
رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ
اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًی ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ
هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾ وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ
اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ
وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِیْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ ع
قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰی وَفُرَادٰی ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ
يَدَیْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ
اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَی اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ

क़ुल् इन्नमा अअ़िज़ुकुम् बिवाहि-दतिन् अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्-म त-तफ़क्करू, मा बिसाहिबिकुम् मिन् जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नज़ीरुल्-लकुम् बै-न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद **(46)** क़ुल् मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु-व लकुम्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद **(47)** क़ुल इन्-न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि

अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब **(48)** क़ुल जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युई़द **(49)** क़ुल् इन् ज़लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी व इनिह्तदैतु फ़-बिमा यूही इलय्-य रब्बी, इन्नहू समीअ़ुन् क़रीब **(50)** व लौ तरा इज़् फ़ज़िअ़ू फ़ला फ़ौ-त व उख़िज़ू मिम्-मकानिन् क़रीब **(51)** व क़ालू आमन्ना बिही व अन्ना लहुमुत्-तनावुशु मिम्-मकानिम्-बई़द **(52)** व क़द् क-फ़रू बिही मिन् क़ब्लु व यक़्ज़िफ़ू-न बिल्ग़ैबि मिम्-मकानिम्-बई़द **(53)** व ही-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फ़ुअ़ि-ल बिअश्याअ़िहिम् मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम् मुरीब **(54)** ❖

35 सूरतु फ़ातिरिन् 43

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3289 अक्षर, 792 शब्द, 45 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि जाअ़िलिल्-मलाइ-कति रुसुलन् उली अज्नि-हतिम् मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़, यज़ीदु फ़िल्-ख़ल्क़ि मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(1)** मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह़्मतिन् फ़ला मुम्सि-क लहा व मा युम्सिक् फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ़्दिही, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(2)** या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम्, हल् मिन् ख़ालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ़्फ़कून **(3)** व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कुज़्ज़िबत्

فاطر ۳۵ ۳۹۲ ومن يقنت ۲۲

إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا
يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ
عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ
قَرِيبٌ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَكَانٍ
قَرِيبٍ ۝ وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَكَانٍ
بَعِيدٍ ۝ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ
مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ
بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

سورة فاطر مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا
أُولِي أَجْنِحَةٍ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبَاعَ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ
فَلَا مُمْسِكَ لَهَا وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ وَ
هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ

منزل ۵

रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर **(4)** या अय्युहन्नासु इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्- हयातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर **(5)** इन्नश्-शैता-न लकुम् अदुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अदुव्वन्, इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लि-यकूनू मिन् अस्हाबिस्सअीर **(6)** अल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(7)** ❖

अ-फ़-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ़-मलिही फ़-रआहु ह-सनन्, फ़-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ फ़ला तज़्हब् नफ़्सु-क अ़लैहिम् ह-सरातिन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्- बिमा यस्-नअून **(8)** वल्लाहुल्लज़ी अर्-सलर्- रिया-ह फ़-तुसीरु सहाबन् फ़-सुक़्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह्यैना बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, कज़ालिकन्-नुशूर **(9)** मन् का-न युरीदुल्-अ़िज़्ज़-त फ़लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु जमीअ़न्, इलैहि यस्-अ़दुल्-कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ़-मलुस्-सालिहु यर्-फ़अ़ुहू, वल्लज़ी-न यम्कुरूनस्सय्यिआति लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, व मक्रु उलाइ-क हु-व यबूर **(10)** वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ़-लकुम् अज़्वाजन्, व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअ़िल्मिही, व मा युअ़म्म-रु मिम्-मुअ़म्म-रिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अ़ुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर **(11)** व मा यस्तविल्-बह्रानि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुन् सा-इग़ुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन्, व

رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ
وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ
الْغَرُورُ ﴿٥﴾ إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو
حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ
كَبِيرٌ ﴿٧﴾ أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ
مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۖ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسَرَاتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٨﴾ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ
الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ
الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾ مَن كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ
فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا ۚ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ
يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَ
مَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ
وَمَا يُعَمَّرُ مِن مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ

मिन् कुल्लिन् तअ्कुलू-न लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू-न हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्-फ़ुल्-क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून **(12)** यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही मा यम्लिकू-न मिन् क़ित्मीर **(13)** इन् तद्अूहुम् ला यस्मअ़ू दुअ़ा-अकुम् व लौ समिअ़ू मस्तजाबू लकुम्, व यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरू-न बिशिर्किकुम् व ला युनब्बिउ-क मिस्लु ख़बीर ▲ **(14)** ❖

या अय्युहन्नासु अन्तुमुल्-फ़ु-क़रा-उ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(15)** इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद **(16)** व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बि-अ़ज़ीज़ **(17)** व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्मल् मिन्हु शैउंव्-व लौ का-न ज़ा-क़ुर्बा, इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्-सला-त, व मन् तज़क्का फ़-इन्नमा य-तज़क्का लि-नफ़्सिही, व इलल्लाहिल्-मसीर **(18)** व मा यस्तविल्-अअ़्मा वल्बसीर **(19)** व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर **(20)** व लज़्ज़िल्लु व लल्हरूर **(21)** व मा यस्तविल्-अह्या-उ व लल्अम्वातु, इन्नल्ला-ह युस्मिअ़ु मंय्यशा-उ व मा अन्-त बिमुस्मिअ़िम्-मन् फ़िल्क़ुबूर **(22)** इन् अन्-त इल्ला नज़ीर **(23)** इन्ना अर्सल्ना-क

سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا
وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ
وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ
لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا
دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ
بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ
اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ
جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ
اُخْرٰى ۚ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ
كَانَ ذَا قُرْبٰى ۗ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ۚ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾
وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾ وَ
لَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۚ اِنَّ
اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ

❖ रु. 2/7/14 ▲ सलासः 3/4

बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन्, व इम्-मिन् उम्म-तिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर **(24)** व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-मुनीर **(25)** सुम्-म अख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर **(26)** ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्रज्ना बिही स-मरातिम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा, व मिनल्-जिबालि जु-ददुम् बीज़ुंव्-व हुमुरुम् मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद **(27)** व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क, इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अु-लमा-उ, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर **(28)** इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-यतंय्-यर्जू-न तिजा-रतल् लन् तबूर **(29)** लियुवफ़्फ़ि-यहुम् उजू-रहुम् व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर **(30)** वल्लज़ी औहैना इलै-क मिनल्-किताबि हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि, इन्नल्ला-ह बिअिबादिही ल-ख़बीरुम्-बसीर **(31)** सुम्-म औरस्नल्-किताबल्लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अिबादिना फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही व मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् व मिन्हुम् साबिक़ुम् बिल्-ख़ैराति बि-इज़्निल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर **(32)** जन्नातु अद्निंय्-यद्ख़ुलूनहा युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन्

إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ
إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾ وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ
أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ۚ وَمِنَ
الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ﴿٢٧﴾
وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ ۗ
إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾
إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ
أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِي
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ
اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾
جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَ

ज़-हबिंव्-व लुअ्लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर **(33)** व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्नल्-ह-ज़-न, इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन् शकूर **(34)** अल्लज़ी अ-हल्लना दारल्-मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ला यमस्सुना फ़ीहा न-सबुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब **(35)** वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् नारु जहन्न-म ला युक़्ज़ा अ़लैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन् अ़ज़ाबिहा, कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर **(36)** व हुम् यस्तरिख़ू-न फ़ीहा रब्बना अख़्रिज्ना नअ्मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्मलु, अ-व लम् नुअ़म्मिर्कुम् मा य-तज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्क-र व जा-अकुमुन्नज़ीरु, फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर **(37)** ❖

इन्नल्ला-ह आ़लिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर **(38)** हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि, फ़-मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू, व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा **(39)** क़ुल् अ-रऐतुम् शु-रका-अकुमुल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यि-नतिम् मिन्हु बल् इंय्यअ़िदुज़्ज़ालिमू-न बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् इल्ला ग़ुरूरा **(40)** इन्नल्ला-ह युम्सिकुस्समावाति वल्अर्-ज़ अन् तज़ूला, व ल-इन् ज़ा-लता इन् अम्-स-कहुमा मिन् अ-हदिम् मिम्बअ्दिही, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा **(41)** व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जा-अहुम्

ومن يقنت ٢٢ ٣٩٦ فاطر ٣٥

لُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ
عَنَّا الْحَزَنَ ۭ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ
مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَ
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ
يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا
نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ
فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ
خَلٰۗىِٕفَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا
خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَاۗءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ
اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ
اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰي بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ
بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ڬ
وَلَىِٕنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا

منزل ٥

नज़ीरुल् ल-यकूननू-न अह्दा मिन् इह्दल्-उ-ममि फ़-लम्मा जा-अहुम् नज़ीरुम् मा ज़ा-दहुम् इल्ला नुफ़ूरा **(42)** इस्तिक्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मक्रस्सय्यि-इ व ला यहीकुल्-मक्रुस्सय्यि-उ इल्ला बि-अह्लिही, फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला सुन्नतल्-अव्वली-न फ़-लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला, व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला **(43)** अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतन्, व मा कानल्लाहु लियुअ्जि-ज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि, इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा **(44)** व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्-युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिअ़िबादिही बसीरा **(45)** ❖

36 सूरतु या-सीन 41

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3090 अक्षर, 739 शब्द, 83 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

يس ٣٦ — ٣٩٧ — ومن يقنت ٢٢

غفورا ﴿٤١﴾ وأقسموا بالله جهد أيمانهم لئن جاءهم نذير
ليكونن أهدى من إحدى الأمم فلما جاءهم نذير ما زادهم
إلا نفورا ﴿٤٢﴾ استكبارا في الأرض ومكر السيئ ولا يحيق المكر
السيئ إلا بأهله فهل ينظرون إلا سنت الأولين فلن تجد
لسنت الله تبديلا ولن تجد لسنت الله تحويلا ﴿٤٣﴾ أولم يسيروا
في الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين من قبلهم وكانوا
أشد منهم قوة وما كان الله ليعجزه من شيء في السماوات
ولا في الأرض إنه كان عليما قديرا ﴿٤٤﴾ ولو يؤاخذ الله الناس
بما كسبوا ما ترك على ظهرها من دابة ولكن يؤخرهم إلى أجل
مسمى فإذا جاء أجلهم فإن الله كان بعباده بصيرا ﴿٤٥﴾

سورة يس مكية وهي ثلاث وثمانون آية وخمس ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

يس ﴿١﴾ والقرآن الحكيم ﴿٢﴾ إنك لمن المرسلين ﴿٣﴾ على
صراط مستقيم ﴿٤﴾ تنزيل العزيز الرحيم ﴿٥﴾ لتنذر قوما
ما أنذر آباؤهم فهم غافلون ﴿٦﴾ لقد حق القول
على أكثرهم فهم لا يؤمنون ﴿٧﴾ إنا جعلنا في أعناقهم

منزل ٥

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या-सीन् **(1)** वल्क़ुरआनिल्-हकीम **(2)** इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन **(3)** अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(4)** तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर्-रहीम **(5)** लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून **(6)** ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून **(7)** इन्ना
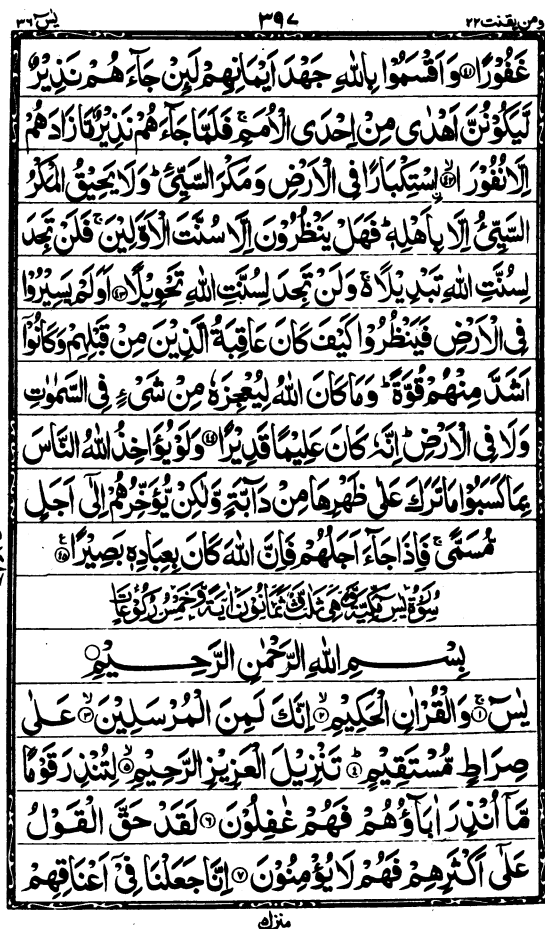
जअ़ल्ना फ़ी अअ़्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (8) व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून (9) व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (10) इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़्ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि फ़-बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि-रतिंव्-व अज्रिन् करीम (11) इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन (12) ❖

वज़्रिब् लहुम् म-सलन् अस्हाबल्-क़र्-यति ✣ इज़् जा-अहल्-मुर्-सलून (13) इज़् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ़क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्-सलून (14) क़ालू मा अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून (15) क़ालू रब्बुना यअ़्लमु इन्ना इलैकुम् ल-मुर्-सलून (16) व मा अ़लैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (17) क़ालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (18) क़ालू ताइरुकुम् म-अ़कुम् अ-इन् ज़ुक्किर्तुम्, बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (19) व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति रजुलुंय्-यस्आ, क़ा-ल या क़ौमित्तबिअ़ुल्-मुर्-सलीन (20) इत्तबिअ़ू मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व हुम् मुह्तदून (21)

أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝٨ وَجَعَلْنَا مِنْ
بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ
فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝٩ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ
تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝١٠ إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ
الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝١١ إِنَّا نَحْنُ
نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ
أَحْصَيْنٰهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ۝١٢ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحٰبَ
الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝١٣ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ
فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُرْسَلُونَ ۝١٤ قَالُوا
مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ
أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝١٥ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ۝١٦
وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ۝١٧ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ
تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝١٨ قَالُوا
طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ۝١٩
وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا
الْمُرْسَلِينَ ۝٢٠ اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝٢١

तेईसवाँ पारः व मा लि-य

सूरतु या-सीन् (आयत 22 से 83)

व मा लि-य ला अअ्बुदुल्लज़ी फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअून (22) अ-अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही आलि-हतन् इंय्युरिद्-निर्-रह्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग्नि अ़न्नी शफ़ा-अ़तुहुम् शैअंव्-व ला युन्क़िज़ून (23) इन्नी इज़ल्-लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (24) इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअून (25) क़ीलद्ख़ुलिल्-जन्न-त, क़ा-ल यालै-त क़ौमी यअ्लमून (26) बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी व ज-अ़-लनी मिनल्-मुक्रमीन (27) व मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही मिम्बअ्दिही मिन् जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन (28) इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (29) या हस्-रतन् अ़लल्-अ़िबादि, मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (30) अलम् यरौ कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअून (31) व इन् कुल्लुल्-लम्मा जमीअुल्-लदैना मुह्ज़रून (32) ❖

وما لي لا أعبد الذي فطرني وإليه ترجعون ءأتخذ من
دونه آلهة إن يردن الرحمن بضر لا تغن عني شفاعتهم
شيئا ولا ينقذون إني إذا لفي ضلال مبين إني آمنت
بربكم فاسمعون قيل ادخل الجنة قال يا ليت قومي
يعلمون بما غفر لي ربي وجعلني من المكرمين وما
أنزلنا على قومه من بعده من جند من السماء وما كنا
منزلين إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم خامدون
يا حسرة على العباد ما يأتيهم من رسول إلا كانوا به
يستهزءون ألم يروا كم أهلكنا قبلهم من القرون أنهم
إليهم لا يرجعون وإن كل لما جميع لدينا محضرون و
آية لهم الأرض الميتة أحييناها وأخرجنا منها حبا فمنه
يأكلون وجعلنا فيها جنات من نخيل وأعناب وفجرنا
فيها من العيون ليأكلوا من ثمره وما عملته أيديهم
أفلا يشكرون سبحان الذي خلق الأزواج كلها مما تنبت
الأرض ومن أنفسهم ومما لا يعلمون وآية لهم الليل
نسلخ منه النهار فإذا هم مظلمون والشمس تجري لمستقر لها

व आ-यतुल् लहुमुल्-अर्ज़ुल्-मै-ततु अह्यैनाहा व अख़्रज्ना मिन्हा हब्बन् फ़मिन्हु यअ्कुलून (33) व जअ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ़्नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अ़ुयून (34) लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मिलत्हु ऐदीहिम्, अ-फ़ला यश्कुरून (35) सुब्हानल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन्

अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्लमून **(36)** व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लखु मिन्हुन्नहा-र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून **(37)** वश्शम्सु तज्री लिमुस्त-क़र्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम **(38)** वल्क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ़-द कल्-अुर्जूनिल्-क़दीम **(39)** लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल् क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्-नहारि, व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्-यस्बहून **(40)** व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना ज़ुर्रिय्य- -तहुम् फ़िल्-फ़ुल्किल्-मश्हून **(41)** व ख़लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून **(42)** व इन्न-शअ् नुग़्रिक़्हुम् फ़ला सरी-ख़ा लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून **(43)** इल्ला रह्म-तम् मिन्ना व मताअ़न् इला हीन **(44)** व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् लअ़ल्लकुम् तुर्हमून **(45)** व मा तअ्तीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन **(46)** व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्अिमु मल्लौ यशाउल्लाहु अत्-अ़-महू इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(47)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(48)** मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सै-हतंव्-वाहि-दतन् तअ्ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून **(49)** फ़ला यस्ततीअू-न तौसि-यतंव्-व ला इला अह्लिहिम् यर्जिअून **(50)** ❖

व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून **(51)** क़ालू

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ
كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ
وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ
اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ
مَا يَرْكَبُوْنَ ۝ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝
اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا
بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ
اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ڰ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ مَا يَنْظُرُوْنَ
اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ
مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ
مَّرْقَدِنَا ۫ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝ اِنْ كَانَتْ
اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝ فَالْيَوْمَ

या वैलना मम्ब-अ़-सना मिम्-मर्क़दिना ✣ हाज़ा मा व-अ़-दर्रह्मानु व स-दक़ल्-मुर्सलून (52) इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् जमीअ़ुल्-लदैना मुह्ज़रून (53) फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ़्मलून (54) इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून (55) हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़लल्-अराइकि मुत्तकिऊन (56) लहुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-व लहुम् मा यद्-दऊन (57) सलामुन्, क़ौलम् मिर्रब्बिर्-रहीम (58) वम्ताजुल्-यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून (59) अलम् अअ़्हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ़्बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन (60) व अनिअ़्बुदूनी, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम (61) व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्, अ-फ़लम् तकूनू तअ़्क़िलून (62) हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून (63) इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (64) अल्यौ-म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून (65) व लौ नशा-उ ल-तमस्ना अ़ला अअ़्युनिहिम् फ़स्त-बक़ुस्सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून (66) व लौ नशा-उ ल-मसख़्नाहुम् अ़ला मका-नतिहिम् फ़-मस्तताअ़ू मुज़िय्यंव्-व ला यर्जिअ़ून (67) ❖

व मन् नुअ़म्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्क़ि अ-फ़ला यअ़्क़िलून (68) व मा अ़ल्लम्नाहुश्-शिअ़्-र व मा यम्बग़ी लहू, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्-व क़ुर्आनुम्-मुबीन (69) लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यंव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अ़लल्-काफ़िरीन (70) अ-व लम् यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम् मिम्मा अ़मिलत् ऐदीना अन्आ़मन् फ़हुम् लहा मालिकून (71)

لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون إلا ما كنتم تعملون ﴿٥٤﴾ إن أصحب
الجنة اليوم في شغل فكهون ﴿٥٥﴾ هم وأزوجهم في ظلل على
الأرائك متكئون ﴿٥٦﴾ لهم فيها فكهة ولهم ما يدعون ﴿٥٧﴾
سلم قولا من رب رحيم ﴿٥٨﴾ وامتزوا اليوم أيها المجرمون ﴿٥٩﴾
ألم أعهد إليكم يبني ءادم أن لا تعبدوا الشيطن إنه لكم
عدو مبين ﴿٦٠﴾ وأن اعبدوني هذا صرط مستقيم ﴿٦١﴾ ولقد
أضل منكم جبلا كثيرا أفلم تكونوا تعقلون ﴿٦٢﴾ هذه جهنم
التي كنتم توعدون ﴿٦٣﴾ اصلوها اليوم بما كنتم تكفرون ﴿٦٤﴾ اليوم
نختم على أفوههم وتكلمنا أيديهم وتشهد أرجلهم بما
كانوا يكسبون ﴿٦٥﴾ ولو نشاء لطمسنا على أعينهم فاستبقوا الصرط
فأنى يبصرون ﴿٦٦﴾ ولو نشاء لمسخنهم على مكانتهم فما استطعوا
مضيا ولا يرجعون ﴿٦٧﴾ ومن نعمره ننكسه في الخلق أفلا
يعقلون ﴿٦٨﴾ وما علمنه الشعر وما ينبغي له إن هو إلا ذكر
وقرءان مبين ﴿٦٩﴾ لينذر من كان حيا ويحق القول على
الكفرين ﴿٧٠﴾ أولم يروا أنا خلقنا لهم مما عملت أيدينا أنعما
فهم لها ملكون ﴿٧١﴾ وذللنها لهم فمنها ركوبهم ومنها

व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून (72) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु, अ-फ़ला यश्कुरून (73) वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल् लअ़ल्लहुम् युन्सरून (74) ला यस्ततीअू-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रून (75) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् ✣ इन्ना नअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून (76) अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (77) व ज़-र-ब लना म-सलंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू, क़ा-ल मंय्युह्यिल्-अ़िज़ा-म व हि-य रमीम (78) क़ुल् युह्यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्, व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अ़लीम (79) अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़-इज़ा अन्तुम् मिन्हु तूक़िदून (80) अ-व लैसल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम्, बला, व हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (81) इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून (82) फ़-सुब्हानल्लज़ी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व इलैहि तुर्जअून (83) ❖

37 सूरतुस्-साफ़्फ़ाति 56

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2951 अक्षर, 873 शब्द, 182 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा (1) फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्रा (2) फ़त्तालियाति ज़िक्रा (3) इन्-न इला-हकुम् लवाहिद् (4) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़् (5) इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ी-नति-निल्-कवाकिब (6) व हिफ़्ज़म् मिन् कुल्लि

शैतानिम्-मारिद (7) ला यस्सम्मअू-न इलल् म-लइल्-अअ्ला व युक़्ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब (8) दुहूरंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुंव्-वासिब् (9) इल्ला मन् ख़ातिफ़ल्-ख़त्फ़-त फ़-अत्ब-अ़हू शिहाबुन् साक़िब (10) फ़स्तफ़्तिहिम् अ-हुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़लक़्ना, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्-लाज़िब (11) बल् अ़जिब्-त व यस्ख़रून (12) व इज़ा ज़ुक्किरू ला यज़्कुरून (13) व इज़ा रऔ आ-यतंय्-यस्तस्ख़िरून (14) व क़ालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (15) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून (16) अ-व आबा-उनल्-अव्वलून (17) क़ुल् न-अ़म् व अन्तुम् दाख़िरून (18) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् फ़-इज़ा हुम् यन्ज़ुरून (19) व क़ालू या वै-लना हाज़ा यौमुद्दीन (20) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (21) ❖

उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वा-जहुम् व मा कानू यअ्बुदून (22) मिन् दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल्-जहीम ◆ (23) वक़िफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्अूलून (24) मा लकुम् ला तना-सरून (25) बल् हुमुल्-यौ-म मुस्तस्लिमून (26) व अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तसा-अलून (27) क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्तू-नना अ़निल्-यमीन (28) क़ालू बल्-लम् तकूनू मुअ्मिनीन (29) व मा का-न लना अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन (30) फ़-हक़्-क़ अ़लैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ा-इक़ून (31) फ़-अग़्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन (32) फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (33) इन्ना कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्रिमीन (34) इन्नहुम्

مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ
جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ
فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ
خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝
وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝ وَقَالُوْٓا اِنْ
هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝
اَوَاٰبَاۗؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۝ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ
وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝
هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ
اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝ مَا لَكُمْ
لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝
قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ اِنَّا لَذَاۗىِٕقُوْنَ ۝
فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝ فَاِنَّهُمْ يَوْمَىِٕذٍ فِي الْعَذَابِ

कानू इज़ा क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून **(35)** व यक़ूलू-न अ-इन्ना लतारिकू आलि-हतिना लिशाअ़िरिम्-मज्नून **(36)** बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्द-क़ल् मुर्-सलीन **(37)** इन्नकुम् लज़ा-इक़ुल् अ़ज़ाबिल्-अलीम **(38)** व मा तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ़्मलून **(39)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(40)** उलाइ-क लहुम् रिज़्क़ुम्-मअ़्लूम **(41)** फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून **(42)** फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम **(43)** अ़ला सुररिम् मु-तक़ाबिलीन **(44)** युताफ़ु अ़लैहिम् बिकअ्सिम् मिम्-मअ़ीन **(45)** बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन **(46)** ला फ़ीहा ग़ौलुंव्-व ला हुम् अ़न्हा युन्ज़फ़ून **(47)** व अ़िन्-दहुम् क़ासिरातुत्-तर्फ़ि अ़ीन **(48)** क-अन्नहुन्-न बैज़ुम्-मक्नून **(49)** फ़-अक़्ब-ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्-य-तसा-अलून **(50)** क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीन **(51)** यक़ूलु अ-इन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन **(52)** अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना ल-मदीनून **(53)** क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअ़ून **(54)** फ़त्त-ल-अ़ फ़-रआहु फ़ी सवाइल्-जहीम **(55)** क़ा-ल तल्लाहि इन् कित्-त ल-तुर्दीन **(56)** व लौ ला निअ़्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह्ज़रीन **(57)** अ-फ़मा नह्नु बिमय्यितीन **(58)** इल्ला मौत-तनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन **(59)** इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(60)** लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ़्मलिल्-आ़मिलून **(61)** अ-ज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन् अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम **(62)** इन्ना जअ़ल्नाहा फ़ित्-नतल् लिज़्ज़ालिमीन **(63)** इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फ़ी

مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا
قِيلَ لَهُمْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا لَتَارِكُوا
آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾
إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ أُولٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ
مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَاءَ
لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَ
عِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ
إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾ يَقُولُ أَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾
فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾
وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿٥٨﴾
إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿٥٩﴾ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿٦١﴾ أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا

अस्लिल्-जहीम **(64)** तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन **(65)** फ़-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फ़-मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून **(66)** सुम्-म इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम् मिन् हमीम **(67)** सुम्-म इन्-न मर्जि-अ़हुम् ल-इलल्-जहीम **(68)** इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन **(69)** फ़हुम् अ़ला आसारिहिम् युहरअून **(70)** व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन **(71)** व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन **(72)** फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुन्ज़रीन **(73)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(74)** ❖

व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ्मल्- मुजीबून **(75)** व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम **(76)** व जअ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन **(77)** व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन **(78)** सलामुन् अ़ला नूहिन् फ़िल्-आ़लमीन **(79)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्- मुह्सिनीन **(80)** इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(81)** सुम्-म अ़ग़्रक़्नल्-आ-ख़रीन **(82)** व इन्-न मिन् शी-अ़तिही ल-इब्राहीम ✣ **(83)** इज़् जा-अ रब्बहू बिक़ल्बिन् सलीम **(84)** इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ़्बुदून **(85)** अ-इफ़्कन् आलि-हतन् दूनल्लाहि तुरीदून **(86)** फ़मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्- आ़लमीन **(87)** फ़-न-ज़-र नज़्र-तन् फ़िन्नुजूम **(88)** फ़क़ा-ल इन्नी सक़ीम **(89)** फ़-तवल्लौ अ़न्हु मुद्बिरीन **(90)** फ़रा-ग़ इला आलि-हतिहिम् फ़क़ा-ल अला तअ्कुलून **(91)** मा लकुम् ला तन्तिक़ून **(92)** फ़रा-ग़ अ़लैहिम् ज़र्बम्-बिल्यमीन **(93)** फ़-अक़्बलू इलैहि

وَمَالِيَ ٢٣ ٨٠٥ الصّٰفّٰت ٣٧

اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ
تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾
فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾
اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ
ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾
وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ
الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ
فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾
وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ
اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي
النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى
اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

منزل

यज़िफ़्फ़ून (94) क़ा-ल अ-तअ्बुदू-न मा तन्हितून (95) वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् व मा तअ्मलून (96) क़ालुब्नू लहू बुन्यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्-जहीम (97) फ़-अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अस्-फ़लीन (98) व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (99) रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन (100) फ़-बश्शर्नाहु बिगुलामिन् हलीम (101) फ़-लम्मा ब-ल-ग़ म-अ़हुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िल्-मनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा, क़ा-ल या अ-बतिफ़्अ़ल् मा तुअ्मरु, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्साबिरीन (102) फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिल्जबीन (103) व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम (104) क़द् सद्दक़्तर्-रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (105) इन्-न हाज़ा ल-हुवल् बलाउल्-मुबीन (106) व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अ़ज़ीम (107) व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (108) सलामुन् अ़ला इब्राहीम (109) कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (110) इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (111) व बश्शर्नाहु बि-इस्हा-क़ नबिय्यम् मिनस्-सालिहीन (112) व बारक्ना अ़लैहि व अ़ला इस्हा-क़, व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन (113) ❖

الصّٰفّٰت ٣٧ — ٨٠٦ — ومالی ٢٣

ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا
تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ
يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ
يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾
فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ
الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي
الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ
وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾ ع
وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا
هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٦﴾ وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنَاهُمَا

منزل ٦

व ल-क़द् मनन्ना अ़ला मूसा व हारून (114) व नज्जैनाहुमा व क़ौमहुमा मिनल् करबिल्-अ़ज़ीम (115) व नसर्नाहुम् फ़कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (116) व आतैनाहुमल् किताबल्-मुस्तबीन (117) व हदैनाहुमस्सिरातल् मुस्तक़ीम (118) व तरक्ना अ़लैहिमा

फ़िल्-आख़िरीन **(119)** सलामुन् अ़ला मूसा व हारून **(120)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(121)** इन्नहुमा मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(122)** व इन्-न इल्या-स लमिनल् -मुर्-सलीन **(123)** इज़् का-ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून **(124)** अतद्अू-न बअ़्लंव्-व त-ज़रू-न अह्स-नल्-ख़ालिक़ीन **(125)** अल्ला-ह रब्बकुम् व रब्-ब आबा-इकुमुल् अव्वलीन **(126)** फ़-कज़्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून **(127)** इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन **(128)** व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन **(129)** सलामुन् अ़ला इल्यासीन **(130)** इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन **(131)** इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन **(132)** व इन्-न लूतल्-लमिनल्- मुर्-सलीन **(133)** इज़् नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन **(134)** इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन **(135)** सुम्-म दम्मर्नल्- आख़रीन **(136)** व इन्नकुम् ल-तमुर्रू-न अ़लैहिम् मुस्बिहीन **(137)** व बिल्लैलि, अ-फ़ला तअ़्किलून **(138)** ◆

व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्-सलीन **(139)** इज़् अ-ब-क़ इलल्-फ़ुल्किल्-मश्हून **(140)** फ़-सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्-हज़ीन **(141)** फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु व हु-व मुलीम **(142)** फ़-लौ ला अन्नू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन **(143)** ल-लबि-स फ़ी बत्निही इला यौमि युब्असून ● **(144)** फ़-नबज़्नाहु बिल्अ़रा-इ व हु-व सक़ीम **(145)** व अम्बत्ना अ़लैहि श-ज-रतम् मिंय्यक़्तीन **(146)** व अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून **(147)** फ़-आमनू फ़-मत्तअ़्नाहुम् इला हीन **(148)** फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व

الصراط المستقيم ﴿١١٨﴾ وتركنا عليهما في الاخرين ﴿١١٩﴾ سلم على
موسى وهرون ﴿١٢٠﴾ انا كذلك نجزي المحسنين ﴿١٢١﴾ انهما من
عبادنا المؤمنين ﴿١٢٢﴾ وان الياس لمن المرسلين ﴿١٢٣﴾ اذ قال لقومه
الا تتقون ﴿١٢٤﴾ اتدعون بعلا وتذرون احسن الخالقين ﴿١٢٥﴾ الله
ربكم ورب ابائكم الاولين ﴿١٢٦﴾ فكذبوه فانهم لمحضرون ﴿١٢٧﴾
الا عباد الله المخلصين ﴿١٢٨﴾ وتركنا عليه في الاخرين ﴿١٢٩﴾
سلم على ال ياسين ﴿١٣٠﴾ انا كذلك نجزي المحسنين ﴿١٣١﴾ انه
من عبادنا المؤمنين ﴿١٣٢﴾ وان لوطا لمن المرسلين ﴿١٣٣﴾ اذ
نجينه واهله اجمعين ﴿١٣٤﴾ الا عجوزا في الغبرين ﴿١٣٥﴾ ثم
دمرنا الاخرين ﴿١٣٦﴾ وانكم لتمرون عليهم مصبحين ﴿١٣٧﴾ وباليل
افلا تعقلون ﴿١٣٨﴾ وان يونس لمن المرسلين ﴿١٣٩﴾ اذ ابق الى
الفلك المشحون ﴿١٤٠﴾ فساهم فكان من المدحضين ﴿١٤١﴾ فالتقمه
الحوت وهو مليم ﴿١٤٢﴾ فلولا انه كان من المسبحين ﴿١٤٣﴾ للبث
في بطنه الى يوم يبعثون ﴿١٤٤﴾ فنبذنه بالعراء وهو سقيم ﴿١٤٥﴾
وانبتنا عليه شجرة من يقطين ﴿١٤٦﴾ وارسلنه الى مائة الف
او يزيدون ﴿١٤٧﴾ فامنوا فمتعنهم الى حين ﴿١٤٨﴾ فاستفتهم الربك

लहुमुल्-बनून (149) अम् ख़लक़्नल्-मलाइ-क-त इनासंव्-व हुम् शाहिदून (150) अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून (151) व-लदल्लाहु व इन्नहुम् ल-काज़िबून (152) अस्त-फ़ल्-बनाति अ़लल्-बनीन (153) मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून (154) अ-फ़ला तज़क्करून (155) अम् लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन (156) फ़अ्तू बिकिताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (157) व ज-अ़लू बैनहू व बैनल्-जिन्नति न-सबन्, व ल-क़द् अ़लि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून (158) सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (159) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (160) फ़-इन्नकुम् व मा तअ़्बुदून (161) मा अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन (162) इल्ला मन् हु-व सालिल्-जहीम (163) व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम् मअ़्लूम (164) व इन्ना ल-नह्नुस्-साफ़्फ़ून (165) व इन्ना ल-नह्नुल्-मुसब्बिहून (166) व इन् कानू ल-यक़ूलून (167) लौ अन्-न अ़िन्-दना ज़िक्रम् मिनल्-अव्वलीन (168) लकुन्ना अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (169) फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ़्लमून (170) व ल-क़द् स-बक़त् कलि-मतुना लिअ़िबादिनल्-मुर्-सलीन (171) इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून (172) व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून (173) फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीन (174) व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (175) अ-फ़ बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ़्जिलून (176) फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसा-हतिहिम् फ़सा-अ सबाहुल्-मुन्ज़रीन (177) व तवल्-ल अ़न्हुम् हत्ता हीन (178) व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (179) सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अ़िज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून (180) व सलामुन्

وما لی ۲۳ ۴۰۸ الصّٰفّٰت ۳۷

الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿۱۴۹﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵۶﴾ فَاْتُوْا
بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۷﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ
وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۵۹﴾
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۶۰﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ مَآ اَنْتُمْ
عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿۱۶۳﴾ وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ
مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿۱۶۴﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿۱۶۵﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿۱۶۶﴾
وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۱۶۷﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۶۸﴾
لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۷۰﴾
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۷۱﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿۱۷۲﴾
وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۱۷۴﴾ وَّاَبْصِرْهُمْ
فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۵﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ
فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۱۷۷﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۱۷۸﴾ وَّاَبْصِرْ
فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾

منزل ۶

अ़लल्-मुर्-सलीन (181) वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (182) ❖

38 सूरतु सॉद 38

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3107 अक्षर, 738 शब्द, 88 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सॉद् वल्-क़ुर्आनि ज़िज़्ज़िक्र (1) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी अिज़्ज़तिंव्-व शिक़ाक़ (2) कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निनन् फ़नादव्-व ला-त ही-न मनास (3) व अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् व क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा साहिरुन् कज़्ज़ाब (4) अ-ज-अ़लल् आलि-ह-त इलाहंव्-वाहिदन् इन्-न हाज़ा लशैउन् अुजाब (5) वन्त-लक़ल्-म-ल-उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अ़ला आलि-हतिकुम् इन्-न हाज़ा लशैउंय्-युराद (6) मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़िल्-मिल्लतिल्-आख़िरति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़ (7) अ-उन्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु मिम्बैनिना, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अ़ज़ाब (8) अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रह्मति रब्बिकल्-अ़ज़ीज़िल्-वह्हाब (9) अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, फ़ल्यर्तक़ू फ़िल्-अस्बाब (10) जुन्दुम्-मा हुनालि-क मह्ज़ूमुम् मिनल्-अह्ज़ाब (11) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व फ़िर्औनु ज़ुल्-औताद (12) व समूदु व क़ौमु लूतिंव्-व अस्हाबुल्-ऐ-कति, उलाइ-कल्-अह्ज़ाब (13) इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ अ़िक़ाब (14) ❖

ص ٣٨ ٤٠٩ ومالي ٢٣

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿۱﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿۲﴾
كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾ وَ
عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۴﴾
اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ
مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ﴿۶﴾
مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿۷﴾ ءَاُنْزِلَ
عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ بَلْ لَّمَّا
يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿۸﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ﴿۹﴾
اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿۱۰﴾
جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ
وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿۱۲﴾ وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ
اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿۱۳﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿۱۴﴾ وَ
مَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿۱۵﴾ وَقَالُوْا
رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۱۶﴾ اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ

منزل ٦

व मा यन्जुरु हा-उला-इ इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतम् मा लहा मिन् फ़वाक़ (15) व क़ालू रब्बना अ़ज्जिल्-लना क़ित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (16) इस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अ़ब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब (17) इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अ़हू युसब्बिह्-न बिल्-अ़शिय्यि वल्-इश्राक़ (18) वत्तै-र मह्शू-रतन्, कुल्लुल्लहू अव्वाब (19) व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-हिक्म-त व फ़स्लल्-ख़िताब (20) व हल् अता-क न-बउल्-ख़स्मि ✣ इज़् तसव्वरुल्-मिह्राब (21) इज़् द-ख़लू अ़ला दावू-द फ़-फ़ज़ि-अ़ मिन्हुम् क़ालू ला तख़फ़् ख़स्मानि बग़ा बअ़्ज़ुना अ़ला बअ़्ज़िन् फ़ह्कुम् बैनना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा-इस्सिरात (22) इन्-न हाज़ा अख़ी, लहू तिस्अुंव्-व तिस्अू-न नअ़्-जतंव्-व लि-य नअ़्-जतुंव्-वाहि-दतुन्, फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी फ़िल्-ख़िताब (23) क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क बिसुआलि-नअ़्जति-क इला निआ़जिही, व इन्-न कसीरम् मिनल्-ख़ु-लता-इ ल-यब्ग़ी बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व क़लीलुम्-मा हुम् व ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र राकिअंव्-व अनाब ❑ (24) फ़-ग़फ़र्ना लहू ज़ालि-क, व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (25) या दावूदु इन्ना जअ़ल्ना-क ख़ली-फ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़िल्हवा फ़युज़िल्ल-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नल्लज़ी-न यज़िल्लू-न अ़न् सबीलिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू यौमल्-हिसाब (26) ❖

व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन्, ज़ालि-क ज़न्नुल्लज़ी-न

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ
يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَ
شَدَدْنَا مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ أَتَاكَ
نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ
قَالُوا لَا تَخَفْ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَ
تِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي
الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا
مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَ
خَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَ
حُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾ يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ
الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ
الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ذَٰلِكَ ظَنُّ
الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ

क-फ़रू फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार **(27)** अम् नज्अ़लुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कल्-मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अ़लुल्-मुत्तक़ी-न कल्फ़ुज्जार **(28)** किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल्-लियद्-दब्बरू आयातिही व लि-य-तज़क्क-र उलुल्-अल्बाब **(29)** व व-हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न, निअ़्मल्-अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब **(30)** इज़् अ़ुरि-ज़ अ़लैहि बिल्अ़शिय्यिस्-साफ़िनातुल्-जियाद **(31)** फ़क़ा-ल इन्नी अह्बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि अ़न् ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत् बिल्-हिजाब **(32)** रुद्दूहा अ़लय्-य फ़-तफ़ि-क़ मस्हम्-बिस्सूक़ि वल्-अअ़्नाक़ **(33)** व ल-क़द् फ़तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अ़ला कुर्सिय्यिही ज-सदन् सुम्-म अनाब **(34)** क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्-ला यम्बग़ी लि-अ-हदिम् मिम्बअ़्दी इन्न-क अन्तल्-वह्हाब **(35)** फ़-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब **(36)** वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइंव्-व ग़व्वास **(37)** व आख़री-न मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद **(38)** हाज़ा अ़ता-उना फ़म्-नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब **(39)** व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब **(40)** ❖

वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब ✣ इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनि-यश्शैतानु बिनुस्बिंव्-व अ़ज़ाब **(41)** उर्कुज़् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्-त-सलुम् बारिदुंव्-व शराब **(42)** व व-हब्ना लहू अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्म-तम्-मिन्ना व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब **(43)** व ख़ुज़् बि-यदि-क ज़िग़्सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्नस्, इन्ना वजद्नाहु साबिरन्, निअ़्मल्-अ़ब्दु, इन्नहू अव्वाब **(44)** वज़्कुर् अ़िबा-दना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ
كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ اِذْ
عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ
الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ
مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى
كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا
يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ
تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ
غَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ
اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾
وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ
وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾
وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا
نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

منزل

उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार **(45)** इन्ना अख़्लस्नाहुम् बिख़ालि-सतिन् ज़िक्रद्दार **(46)** व इन्नहुम् अिन्दना लमिनल् मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार **(47)** वज़्कुर् इस्माअी-ल वल्य-स-अ व ज़ल्किफ़्लि, व कुल्लुम् मिनल्-अख़्यार **(48)** हाज़ा ज़िक्रुन्, व इन्-न लिल्-मुत्तक़ी-न लहुस्-न मआब **(49)** जन्नाति अ़द्निम्-मुफ़त्त-ह-तल् लहुमुल्-अब्वाब **(50)** मुत्तकिई-न फ़ीहा यद्अू-न फ़ीहा बिफ़ाकि-हतिन् कसी-रतिंव्-व शराब **(51)** व अिन्दहुम् क़ासिरातुत्तर्फ़ि अत्राब **(52)** हाज़ा मा तू-अ़दू-न लियौमिल्-हिसाब ▲ **(53)** इन्-न हाज़ा ल-रिज़्क़ुना मा लहू मिन्-नफ़ाद **(54)** हाज़ा व इन्-न लित्ताग़ी-न लशर्-र मआब **(55)** जहन्न-म यस्लौनहा फ़बिअ्सल्-मिहाद **(56)** हाज़ा फ़ल्यज़ूक़ूहु हमीमुंव्-व ग़स्साक़ **(57)** व आ-ख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज **(58)** हाज़ा फ़ौजुम्-मुक़्तहिमुम् म-अ़कुम् ला मर्-हबम् बिहिम्, इन्नहुम् सालुन्नार **(59)** क़ालू बल् अन्तुम्, ला मर्-हबम् बिकुम्, अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना फ़बिअ्सल्-क़रार **(60)** क़ालू रब्बना मन् क़द्द-म लना हाज़ा फ़ज़िद्हु अ़ज़ाबन् ज़िअ्फ़न् फ़िन्नार **(61)** व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम्-मिनल्- अश्रार **(62)** अत्त-ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन् अम् ज़ाग़त् अ़न्हुमुल्-अब्सार **(63)** इन्-न ज़ालि-क ल-हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार **(64)** ❖

ص ٣٨ — ٨١٢ — ومالي ٢٣

أُولِى الْأَيْدِى وَالْأَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ إِنَّا أَخْلَصْنٰهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾
وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ وَاذْكُرْ إِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ
وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ هٰذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ
مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا يَدْعُونَ
فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِندَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾
هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾
هٰذَا وَإِنَّ لِلطّٰغِينَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾
هٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ وَاٰخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ هٰذَا
فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ
لَا مَرْحَبًا بِكُمْ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا مَن
قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرٰى
رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ أَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ
الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَ
مَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾
مَا كَانَ لِىَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾ إِن يُوحٰى إِلَىَّ

منزل

क़ुल् इन्नमा अ-न मुन्ज़िरुंव्-व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार **(65)** रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार **(66)** क़ुल् हु-व न-बउन् अ़ज़ीम **(67)** अन्तुम् अ़न्हु मुअ़्रिज़ून **(68)** मा का-न लि-य मिन् अिल्मिम्-बिल्म-लइल्-अअ्ला इज़् यख़्तसिमून **(69)** इंय्यूहा इलय्-य इल्ला अन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन **(70)** इज़्

क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिक़ुम् ब-शरम्-मिन् तीन (71) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (72) फ़-स-जदल् मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअून (73) इल्ला इब्ली-स, इस्तक्ब-र व का-न मिनल्-काफ़िरीन (74) क़ा-ल या इब्लीसु मा म-न-अ़-क अन् तस्जु-द लिमा ख़लक़्तु बि-यदय्-य, अस्तक्बर्-त अम् कुन्-त मिनल्-आ़लीन (75) क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन्-नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन (76) क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (77) व इन्-न अ़लै-क लअ़्नती इला यौमिद्दीन (78) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (79) क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (80) इला यौमिल्- वक़्तिल्-मअ़्लूम (81) क़ा-ल फ़बिअ़िज़्ज़ति-क ल-उग़्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (82) इल्ला अ़िबा-द-क मिन्हुमुल्- मुख़्लसीन (83) क़ा-ल फ़ल्-हक़्क़ु वल्-हक़्-क़ अक़ूल (84) ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिन्-क व मिम्-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् अज्मअ़ीन (85) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिंव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफ़ीन (86) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्आ़लमीन (87) व लतअ़्-लमुन्-न न-ब-अहू बअ़्-द हीन (88) ❖

39 सूरतुज़्-ज़ु-मरि 59

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4965 अक्षर, 1184 शब्द, 75 आयतें और 8 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (1) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्- किता-ब बिल्-हक़्क़ि फ़अ़्बुदिल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन (2) अला लिल्लाहिद्- दीनुल्-ख़ालिसु,

वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ ✣ मा नअ्बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा, इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फ़ीमा हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ू-न, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व काज़िबुन् कफ़्फ़ार (3) लौ अरादल्लाहु अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदल्लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशा-उ सुब्हानहू, हुवल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार (4) ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि युकव्विरुल्-लै-ल अ़लन्नहारि व युकव्विरुन्-नहा-र अ़लल्-लैलि व सख़्ख़-रश्-शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम् मुसम्मन्, अला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार (5) ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् सुम्-म ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौ-जहा व अन्ज़-ल लकुम् मिनल्-अन्आ़मि समानि-य-त अज़्वाजिन्, यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् ख़ल्क़म्-मिम्बअ़्दि ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (6) इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़न्कुम्, व ला यर्ज़ा लिअ़िबादिहिल्-कुफ़्-र व इन् तश्कुरू यर्-ज़हु लकुम्, व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअ़ुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलू-न,

اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا
لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ
النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ
فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ اِنْ
تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ
تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ
مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً
مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ
عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝
اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا

इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (7) व इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ़ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ़्-मतम् मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अ़ू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ़-ल लिल्लाहि अन्दादल् लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअ़् बिकुफ़्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार (8) अम्मन् हु-व क़ानितुन् आना-अल्लैलि साजिदंव्-व क़ाइमंय्यह्-ज़रुल्-आख़िर-त व यर्जू रह्म-त रब्बिही, क़ुल् हल् यस्तविल्- लज़ी-न

✣ व. लाज़िम

यअ्लमू-न वल्लजी-न ला यअ्लमू-न, इन्नमा य-तज़क्करु उलुल्- अल्बाब (9) ❖

क़ुल् या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम्, लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्-दुन्या ह-स-नतुन्, व अर्ज़ुल्लाहि वासि-अतुन्, इन्नमा युवफ़्फ़स्-साबिरू-न अज्रहुम् बिग़ैरि हिसाब (10) क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन (11) व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल्-मुस्लिमीन (12) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (13) कुलिल्ला-ह अअ्बुदु मुख़्लिसल्-लहू दीनी (14) फ़अ्बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही, क़ुल् इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़ासिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन (15) लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ललुम्-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ललुन्, ज़ालि-क युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अिबादहू, या अिबादि फ़त्तक़ून (16) वल्लज़ीनज्-त-नबुत्ताग़ू-त अंय्यअ्बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्-बुश्रा फ़-बश्शिर् अिबाद (17) अल्लज़ी-न यस्तमिअूनल्-क़ौ-ल फ़-यत्तबिअू-न अह्स-नहू, उलाइ-कल्लज़ी-न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुल्-अल्बाब (18)

الزمر ٣٩　　٨١٥　　ومالي ٢٣

رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَالَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ؕ
اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۠ قُلْ یٰعِبَادِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ
لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوْا فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا
یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ۙ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ قُلْ
اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ۙ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ
الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِیْنُ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ
یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ وَالَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ
اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا اِلَی اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰی ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۙ الَّذِیْنَ
یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ
وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَیْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ
اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ۚ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ
فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِیَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ
اللّٰهُ الْمِیْعَادَ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ یَنَابِیْعَ فِی

منزل ٦

अ-फ़-मन् हक़्-क़ अ़लैहि कलि-मतुल्-अ़ज़ाबि, अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार (19) लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् ग़ु-रफ़ुम्-मिन् फ़ौक़िहा ग़ु-रफ़ुम्-मब्निय्यतुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, वअ्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहुल्-मीआ़द (20) अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-स-ल-कहू यनाबी-अ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म युख़्रिजु बिही ज़र्अ़म्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अ़लुहू हुतामन्,

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब (21) ❖

अ-फ़ मन् श-रहल्लाहु सद्-रहू लिल्इस्लामि फ़हु-व अ़ला नूरिम्-मिर्रब्बिही, फ़-वैलुल्-लिल्क़ासि-यति क़ुलूबुहुम् मिन् ज़िक्रिल्लाहि, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (22) अल्लाहु नज़्ज़-ल अह्स-नल्- हदीसि किताबम्-मु-तशाबिहम्-मसानि-य तक़्शअ़िर्रु मिन्हु जुलूदुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि, ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (23) अ-फ़ मंय्-यत्तक़ी बिवज्हिही सूअल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून (24) कज़्ज़बल्--लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (25) फ़-अज़ा-क़हुमुल्लाहुल्-ख़िज़्-य फ़िल्-हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्- आख़िरति अक्बरु ✣ लौ कानू यअ्लमून (26) व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिल्-लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (27) क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अ़ि-वजिल्-लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (28) ज़-रबल्लाहु म-सलर्-रजुलन् फ़ीहि शु-रका-उ मु-तशाकिसू-न व रजुलन् स-लमल्-लि-रजुलिन्, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (29) इन्न-क मय्यितुंव्-व इन्नहुम् मय्यितून (30) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति अ़िन्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून (31) ❖

الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا
ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ أَفَمَن
شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ
قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ
الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ
ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾ أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَقِيلَ
لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾ فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ
اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ
هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾ إِنَّكَ مَيِّتٌ
وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

चौबीसवाँ पारः फ़-मन् अज़्लमु

सूरतुज़्-ज़ु-मरि (आयत 32 से 75)

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज़-ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्-काफ़िरीन **(32)** वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्द-क़ बिही उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून **(33)** लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क जज़ाउल्-मुह्सिनीन **(34)** लि-युकफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्व-अल्लज़ी अ़मिलू व यज्ज़ि-यहुम् अज्रहुम् बि-अह्सनिल्लज़ी कानू यअ़्मलून **(35)** अ-लैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़ब्दहू, व युख़व्विफ़ून-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही, व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद **(36)** व मंय्यह्दिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुज़िल्लिन्, अ-लैसल्लाहु बि-अ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम **(37)** व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-नल्लाहु क़ुल् अ-फ़-रऐतुम् मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरा-दनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरा-दनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिही, क़ुल् हस्बियल्लाहु अ़लैहि य-तवक्कलुल्-मु-तवक्किलून **(38)** क़ुल् या क़ौमिअ़्मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ़्लमून **(39)** मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्-युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम्-मुक़ीम **(40)** इन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब लिन्नासि बिल्हक़्क़ि फ़-मनिह्तदा फ़लिनफ़्सिही व मन्

فمن اظلم ٢٤ — ٤١٧ — الزمر ٣٩

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ
بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾
وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا
وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾
أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن
دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾ وَمَن يَهْدِ
اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿٣٧﴾
وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ
اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ
اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ
هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ

منزل

ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील (41) ❖

अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल्-अन्फ़ु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अ़लैहल्-मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-तफ़क्करून (42) अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शु-फ़आ-अ, क़ुल् अ-व लौ कानू ला यम्लिकू-न शैअंव्-व ला यअ़्क़िलून (43) क़ुल् लिल्लाहिश्- शफ़ा-अ़तु जमीअ़न्, लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, सुम्-म इलैहि तुर्जअ़ून (44) व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्दहुश्-म-अज़्ज़त् क़ुलूबुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व इज़ा ज़ुकिरल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (45) क़ुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्ज़ि आ़लिमल्-ग़ैबि वश्शहा-दति अन्-त तह्कुमु बै-न अ़िबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (46) व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्-अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्-लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व बदा लहुम् मिनल्लाहि मा लम् यकूनू यह्तसिबून (47) व बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (48) फ़-इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ़ना सुम्-म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ़्-मतम् मिन्ना क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन्, बल् हि-य फ़ित्-नतुंव्-व लाकिन्-न

فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ
مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى
عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾
قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ
اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْۗءِ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ

अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (49) क़द् क़ा-लहल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग़्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (50) फ़-असा-बहुम् सय्यिआतु मा क-सबू, वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन (51) अ-व लम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (52) ❖

क़ुल् या अिबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्नतू मिर्रह्मतिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब जमीअ़न्, इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (53) व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून (54) वत्तबिअू अह्स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु बग़्-ततंव्-व अन्तुम् ला तश्अुरून (55) अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या-हस्-रता अ़ला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-मिनस्साख़िरीन (56) औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल्-मुत्तक़ीन (57) औ तक़ू-ल ही-न तरल्-अ़ज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्र-तन् फ़-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (58) बला क़द् जाअत्-क आयाती फ़-कज़्ज़ब्-त बिहा वस्तक्बर्-त व कुन्-त मिनल्-काफ़िरीन (59) व यौमल्-क़ियामति तरल्लज़ी-न क-ज़बू अ़लल्लाहि वुजूहुहुम्

نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ۭ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ فَاَصَابَهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۭ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ سَيُصِيْبُهُمْ
سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ
اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ
يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ
السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَاۗءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ

मुस्वद्द-तुन्, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-तकब्बिरीन (60) व युनज्जिल्लाहुल्-लज़ीनत्तक़ौ बि-मफ़ा-ज़तिहिम् ला यमस्सुहुमुस्सू-उ व ला हुम् यह्ज़नून (61) अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील (62) लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लज़ी-न क-फ़रू बि-आयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (63) ❖

क़ुल् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्बुदु अय्युहल्-जाहिलून (64) व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-क ल-इन् अश्रक्-त ल-यह्-बतन्-न अ़-मलु-क व ल-तकूनन्-न मिनल्- ख़ासिरीन (65) बलिल्ला-ह फ़अ्बुद् व कुम् मिनश्-शाकिरीन (66) व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही वल्अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्-ज़तुहू यौमल्-क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि-यमीनिही, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (67) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअि-क़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़-इज़ा हुम् क़ियामुंय्-यन्ज़ुरून (68) व अश्र-क़तिल्-अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअ़ल्-किताबु व जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-हदा-इ व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (69) व वुफ़्फ़ि-यत् कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हु-व

الزمر ٣٩ ٧٢٠ فمن اظلم ٢٤

بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى
الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝
قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ
اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ
عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ
مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا
قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ
اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ
رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا

منزل

अअ्लमु बिमा यफ़्अ़लून (70) ❖

व सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म ज़ु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यत्लू-न अ़लैकुम् आयाति रब्बिकुम् व युन्ज़िरू-नकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू बला व लाकिन् हक़्क़त् कलि-मतुल्-अ़ज़ाबि अ़लल्-काफ़िरीन (71) क़ीलद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़-बिअ्-स मस्वल्-मु-तकब्बिरीन (72) व सीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् इलल्-जन्नति ज़ु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अ़लैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन (73) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ्दहू व और-सनल्-अर्-ज़ न-तबव्व-उ मिनल्-जन्नति हैसु नशा-उ फ़निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन (74) व तरल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अ़र्शि युसब्बिहू-न बि-हम्दि रब्बिहिम् व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन ◆ (75) ❖

فمن اظلم ٢٤ ٤٢١ المؤمن ٤٠

عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۞ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى
جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ
وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ
الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۞ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۞ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ
اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ۞ وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ
مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۞ وَتَرَى
الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞
سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۞ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۞ غَافِرِ
الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۞ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ

منزل ٦

40 सूरतुल्-मुअ्मिनि 60

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5213 अक्षर, 1242 शब्द, 85 आयतें और 9 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (2) ग़ाफ़िरिज़्-ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्-अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि, ला इला-ह इल्ला हु-व, इलैहिल्-मसीर (3) मा

युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ला यग़रुर्-क त-क़ल्लुबुहुम् फ़िल्-बिलाद (4) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्वल्-अह्ज़ाबु मिम्बअ्दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्म-तिम्-बि-रसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जादलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क़ फ़-अख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब (5) व कज़ालि-क हक़्क़त् कलि-मतु रब्बि-क अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्-नार ✣ (6) अल्लज़ी-न यह्मिलूनल्-अ़र्-श व मन् हौलहू युसब्बिहू-न बिहम्दि-रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न बिही व यस्तग़्फ़िरू-न लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना वसिअ्-त कुल्-ल शैइर्रह्म-तंव्-व अ़िल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी-न ताबू वत्त-बअू सबील-क वक़िहिम् अ़ज़ाबल्-जहीम (7) रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अ़द्नि-निल्लती वअ़त्त-हुम् व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम्, इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल् हकीम (8) वक़िहिमुस्सय्यिआति, व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़-क़द् रहिम्-तहू, व ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (9) ❖

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युनादौ-न ल-मक़्तुल्लाहि अक्बरु मिम्मक़्तिकुम् अन्फ़ु-सकुम् इज़् तुद्औ-न इलल्-ईमानि फ़-तक्फ़ुरून (10) क़ालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यै-तनस्नतैनि फ़अ्-तरफ़्ना बिज़ुनूबिना फ़-हल् इला ख़ुरूजिम् मिन् सबील (11) ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि-यल्लाहु वह्दहू क-फ़र्तुम् व इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनू, फ़ल्-हुक्मु लिल्लाहिल् अ़लिय्यिल्-कबीर (12) हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम् मिनस्समा-इ रिज़्क़न्, व मा य-तज़क्करु इल्ला

كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ
نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ
لِيَأْخُذُوهُ وَجَادَلُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝ الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ
حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ
تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ
جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَ
أَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَقِهِمُ
السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ وَذَٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللَّهِ
أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۝
قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا
فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۝ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ
كَفَرْتُمْ وَإِنْ يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝ هُوَ

मंय्युनीब (13) फ़द्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (14) रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अ़र्शि युल्क़िर्रू-ह मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही लि-युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (15) यौ-म हुम् बारिज़ू-न, ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन्, लि-मनिल्-मुल्कुल्-यौ-म, लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (16) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत्, ला ज़ुल्मल्-यौ-म, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब (17) व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-आज़ि-फ़ति इज़िल्-क़ुलूबु ल-दल्-हनाजिरि काज़िमी-न, मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव्-व ला शफ़ीअिंय्-युता-अु (18) यअ़लमु ख़ाइ-नतल्-अअ़्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (19) वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन्, इन्नल्ला-ह हुवस्समीअुल्-बसीर (20) ❖

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम्, कानू हुम् अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्व-तंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनुबिहिम्, व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (21) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु, इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब (22) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन (23) इला फ़िर्औ़-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (24)

الذي يريكم آياته وينزل لكم من السماء رزقا وما يتذكر
إلا من ينيب فادعوا الله مخلصين له الدين ولو كره
الكافرون رفيع الدرجات ذو العرش يلقي الروح من أمره
على من يشاء من عباده لينذر يوم التلاق يوم هم بارزون
لا يخفى على الله منهم شيء لمن الملك اليوم لله الواحد
القهار اليوم تجزى كل نفس بما كسبت لا ظلم اليوم
إن الله سريع الحساب وأنذرهم يوم الآزفة إذ القلوب
لدى الحناجر كاظمين ما للظالمين من حميم ولا شفيع
يطاع يعلم خائنة الأعين وما تخفي الصدور والله
يقضي بالحق والذين يدعون من دونه لا يقضون
بشيء إن الله هو السميع البصير أولم يسيروا في
الأرض فينظروا كيف كان عاقبة الذين كانوا من قبلهم
كانوا هم أشد منهم قوة وآثارا في الأرض فأخذهم الله
بذنوبهم وما كان لهم من الله من واق ذلك بأنهم كانت
تأتيهم رسلهم بالبينات فكفروا فأخذهم الله إنه قوي
شديد العقاب ولقد أرسلنا موسى بآياتنا وسلطان مبين

फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू वस्तह्यू निसा-अहुम्, व मा कैदुल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल **(25)** व क़ा-ल फ़िर्औनु ज़रूनी अक़्तुल् मूसा वल्यद्अु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-बद्दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्अर्ज़िल्-फ़साद **(26)** व क़ा-ल मूसा इन्नी उ़ज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-तकब्बिरिल्-ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब **(27)** ❖

व क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्औ-न यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्-बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम्, व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अ़लैहि कज़िबुहू व इंय्यकु सादिक़ंय्-युसिब्कुम् बअ्ज़ुल्लज़ी यअ़िदुकुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब **(28)** या क़ौमि लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्सिल्लाहि इन् जा-अना, क़ा-ल फ़िर्औनु मा उरीकुम् इल्ला मा अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर्-रशाद **(29)** व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् मिस्-ल यौमिल्-अह्ज़ाब **(30)** मिस्-ल दअ्बि क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ्दिहिम्, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्-लिल्अ़िबाद **(31)** व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु

فمن أظلم ٢٤ ٤٢٤ المؤمن ٤٠

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا
جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝
وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ
أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝ وَقَالَ
مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ
بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم
بِالْبَيِّنَاتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن
يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ
فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ اللَّهِ إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ
فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ
الرَّشَادِ ۝ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ
يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝ مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ
مِن بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝ وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ

منزل

अ़लैकुम् यौमत्तनाद (32) यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (33) व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम् मिम्मा जा-अकुम् बिही, हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-अ़सल्लाहु मिम्बअ्दिही रसूलन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताब (34) अल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम्, कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्दल्लज़ी-न आमनू, कज़ालि-क यत्बअ़ुल्लाहु अ़ला कुल्लि क़ल्बि मु-तकब्बिरिन् जब्बार (35) व क़ा-ल फ़िर्औनु या हामानुब्नि-ली सर्हल्-लअ़ल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब (36) अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ़ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन्, व कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्औ़-न सू-उ अ़-मलिही व सुद्-द अ़निस्सबीलि, व मा कैदु फ़िर्औ़-न इल्ला फ़ी तबाब (37) ❖

عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ
يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۖ
حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ
اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝
وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝
اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا كَيْدُ
فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ
اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۖ
وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى
اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَ
يٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝

व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअ़ूनि अह्दिकुम् सबीलर्रशाद (38) या क़ौमि इन्नमा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या मताअ़ुंव्-व इन्नल्-आख़िर-त हि-य दारुल्-क़रार (39) मन् अ़मि-ल सय्यि-अतन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब (40) व या क़ौमि मा ली अद्अ़ूकुम् इलन्नजाति व तद्अ़ूननी इलन्नार ● (41) तद्अ़ूननी

लि-अक्फ़ु-र बिल्लाहि व उशि-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मुंव्-व अ-न अद्अूकुम् इलल् अ़ज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (42) ला ज-र-म अन्नमा तद्अूननी इलैहि लै-स लहू दअ्-वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्-आख़िरति व अन्-न मरद्-दना इलल्लाहि व अन्नल्-मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (43) फ़-सतज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि, इन्नल्ला-ह बसीरुम्-बिल्अिबाद (44)

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि-आलि फ़िर्औ़-न सूउल्-अ़ज़ाब (45) अन्नारु युअ्-रज़ू-न अ़लैहा ग़ुदुव्वंव्-व अ़शिय्यन् व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु, अद्ख़िलू आ-ल फ़िर्औ-न अशद्दल्-अ़ज़ाब (46) व इज़् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि फ-यक़ूलुज़्-ज़ु-अ़फ़ा-उ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना नसीबम्-मिनन्नार (47) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा इन्नल्ला-ह क़द् ह-क-म बैनल्- अ़िबाद (48) व क़ालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़ा-ज़-नति जहन्न-मद्अू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अ़न्ना यौमम् मिनल्-अ़ज़ाब (49) क़ालू अ-व लम् तकु तअ्तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति, क़ालू बला, क़ालू फ़द्अू व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (50) ❖

فمن اظلم ۲۴ ۴۲۶ المؤمن

تَدْعُوْنَنِیْ لِاَکْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِکَ بِهٖ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ وَّاَنَا
اَدْعُوْکُمْ اِلَی الْعَزِیْزِ الْغَفَّارِ ﴿۴۲﴾ لَاجَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَیْهِ لَیْسَ
لَهٗ دَعْوَةٌ فِی الدُّنْیَا وَلَا فِی الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَی اللّٰهِ وَاَنَّ
الْمُسْرِفِیْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿۴۳﴾ فَسَتَذْکُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَکُمْ
وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَی اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰىهُ
اللّٰهُ سَیِّاٰتِ مَا مَکَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْۤءُ الْعَذَابِ ﴿۴۵﴾
اَلنَّارُ یُعْرَضُوْنَ عَلَیْهَا غُدُوًّا وَّعَشِیًّا وَیَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾ وَاِذْ یَتَحَآجُّوْنَ فِی النَّارِ
فَیَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِیْنَ اسْتَکْبَرُوْۤا اِنَّا کُنَّا لَکُمْ تَبَعًا فَهَلْ
اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِیْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِیْنَ اسْتَکْبَرُوْۤا
اِنَّا کُلٌّ فِیْهَاۤ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَکَمَ بَیْنَ الْعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ
فِی النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّکُمْ یُخَفِّفْ عَنَّا یَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوْۤا اَوَلَمْ تَکُ تَاْتِیْکُمْ رُسُلُکُمْ بِالْبَیِّنٰتِ قَالُوْا
بَلٰی قَالُوْا فَادْعُوْا وَمَا دُعٰٓؤُا الْکٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾ اِنَّا
لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَیَوْمَ یَقُوْمُ
الْاَشْهَادُ ﴿۵۱﴾ یَوْمَ لَا یَنْفَعُ الظّٰلِمِیْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ

منزل ۶

इन्ना ल-नन्सुरु रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद (51) यौ-म ला यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न मअ़्ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्-लअ़्-नतु व लहुम् सूउद्-दार (52) व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल्-किताब (53)

हुदंव्-व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब **(54)** फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क बिल्अशिय्यि वल्-इब्कार **(55)** इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि फ़स्तअिज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर **(56)** ल-ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून **(57)** व मा यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व लल्-मुसी-उ, क़लीलम्-मा त-तज़क्करून **(58)** इन्नस्सा-अ-त लआति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून **(59)** व क़ा-ल रब्बुकुमुद्-अूनी अस्तजिब् लकुम्, इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अ़न् अिबादती स-यद्ख़ुलू-न जहन्न-म दाख़िरीन **(60)** ❖

فمن اظلم ٢٤ ۴٢٧ المؤمن ٤٠

وَلَهُمْ سُوٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾ هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ
بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۥ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾
اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

منزل٦

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून **(61)** ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ✣ ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ्फ़कून **(62)** कज़ालि-क युअ्-फ़कुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून **(63)** अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल

लकुमुल्-अर्-ज़ क़रारंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़-तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन **(64)** हुवल्-हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन **(65)** क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी व उमिर्तु अन् उस्लि-म लि-रब्बिल्-आ़लमीन **(66)** हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लि-तकूनू शुयूख़न् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लि-तब्लुग़ू अ-जलम्-मुसम्मंव्-व लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून **(67)** हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु फ़-इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून **(68)** ❖

يَجْحَدُونَ ۝ اللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ
بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۖۚ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِينَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَآ إِلٰهَ
إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا
أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوٓا أَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي يُحْيِ
وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضٰٓى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ أَلَمْ
تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِيٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ أَنّٰى يُصْرَفُونَ ۝ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝
إِذِ الْأَغْلٰلُ فِيٓ أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ يُسْحَبُونَ ۝ فِي الْحَمِيمِ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ؕ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوا

अलम् त-र इलल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि, अन्ना युस्रफ़ून **(69)** अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसु-लना, फ़सौ-फ़ यअ्लमून **(70)** इज़िल्-अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्हबून **(71)** फ़िल्हमीमि सुम्-म फ़िन्नारि युस्जरून **(72)** सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐ-न मा कुन्तुम् तुश्रिकून **(73)** मिन्

दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना बल्-लम् नकुन्-नद्अू मिन् क़ब्लु शैअन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहुल्-काफ़िरीन (74) ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्रहून (75) उद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़बिअ्-स मस्वल्- मु-तकब्बिरीन (76) फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना युर्जअून (77) व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क मिन्हुम् मन् क़सस्ना अ़लै-क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अ़लै-क, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआ-यतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि फ़-इज़ा जा-अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि-य बिल्-हक़्क़ि व ख़सि-र हुनालिकल्-मुब्तिलून (78) ❖

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अन्आ़-म लि-तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून (79) व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु व लि-तब्लुग़ू अ़लैहा हा-जतन् फ़ी सुदूरिकुम् व अ़लैहा व अ़लल्-फ़ुल्कि तुह्मलून (80) व युरीकुम् आयातिही फ़-अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून (81) अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (82) फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू बिमा अ़िन्दहुम् मिनल्-अ़िल्मि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (83) फ़-लम्मा रऔ बअ्-सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन (84)

مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَفْرَحُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿۷۵﴾ اُدْخُلُوْٓا
اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۶﴾
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ
نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ
لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ
هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا
حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿۸۰﴾
وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿۸۱﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا
فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

फ़-लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ बअ्-सना, सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् फ़ी अिबादिही व ख़सि-र हुनालिकल्-काफ़िरून (85) ❖

41 सूरतु हा-मीम् अस्सज्दति 61

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3406 अक्षर, 809 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुम्-मिनर्रह्मा-निर्रहीम (2) किताबुन् फ़ुस्सिलत् आयातुहू क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल् लिक़ौमिंय्-यअ़्लमून (3) बशी-रंव्-व नज़ीरन् फ़-अअ़्-र-ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्मअ़ून (4) व क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अ़ूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना वक़रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि-क हिजाबुन् फ़अ़्मल् इन्नना आ़मिलून ▲ (5) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरूहु, व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन (6) अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् काफ़िरून (7) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (8) ❖

يستهزءون ﴿٨٣﴾ فلما رأوا بأسنا قالوا آمنا بالله وحده و
كفرنا بما كنا به مشركين ﴿٨٤﴾ فلم يك ينفعهم إيمانهم
لما رأوا بأسنا سنت الله التي قد خلت في عباده و
خسر هنالك الكافرون ﴿٨٥﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

حم ﴿١﴾ تنزيل من الرحمن الرحيم ﴿٢﴾ كتاب فصلت آياته
قرآنا عربيا لقوم يعلمون ﴿٣﴾ بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم
فهم لا يسمعون ﴿٤﴾ وقالوا قلوبنا في أكنة مما تدعونا إليه
وفي آذاننا وقر ومن بيننا وبينك حجاب فاعمل إننا
عاملون ﴿٥﴾ قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلي أنما إلهكم إله
واحد فاستقيموا إليه واستغفروه وويل للمشركين ﴿٦﴾
الذين لا يؤتون الزكاة وهم بالآخرة هم كافرون ﴿٧﴾ إن
الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم أجر غير ممنون ﴿٨﴾ قل
أئنكم لتكفرون بالذي خلق الأرض في يومين وتجعلون
له أندادا ذلك رب العالمين ﴿٩﴾ وجعل فيها رواسي من
فوقها وبارك فيها وقدر فيها أقواتها في أربعة أيام سواء

क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-लक़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्अ़लू-न लहू अन्दादन्, ज़ालि-क रब्बुल्-आ़लमीन (9) व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य मिन् फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा अक़्वा-तहा फ़ी अर्-ब-अ़ति अय्यामिन्, सवा-अल्-

लिस्सा-इलीन (10) सुम्मस्तवा इलस्समा-इ व हि-य दुख़ानुन् फ़क़ा-ल लहा व लिल्-अर्ज़िअ्तिया तौअन् औ कर्हन्, क़ा-लता अतैना ता-इअ़ीन (11) फ़-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ़ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन् अम्-रहा, व ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बि-मसाबी-ह व हिफ़्ज़न्, ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (12) फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअ़ि-क़तम् मिस्-ल साअ़ि-क़ति आ़दिंव्-व समूद (13) इज़् जा-अत्हुमुर् -रसुलु मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह, क़ालू लौ शा-अ रब्बुना ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतन् फ़-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (14) फ़-अम्मा आ़दुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना क़ुव्वतन्, अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़हुम् हु-व अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन्, व कानू बिआयातिना यज्हदून (15) फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी अय्यामिन्-नहिसातिल्-लिनुज़ी-क़हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (16) व अम्मा समूदु फ़-हदैनाहुम् फ़स्तहब्बुल्-अ़मा अ़लल्-हुदा फ़-अ-ख़ज़त्हुम् साअ़ि-क़तुल्-अ़ज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून (17) व नज्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (18) ◆
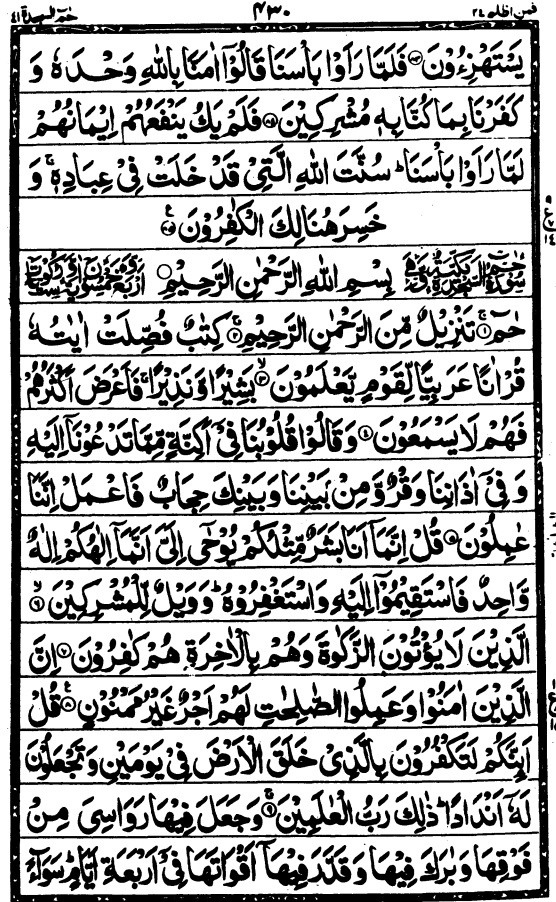
لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَ
لِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾ فَقَضٰىهُنَّ
سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۭ وَزَيَّنَّا
السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ
الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ
عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً
فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۭ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى
عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

व यौ-म युह्शरु अअ्दाउल्लाहि इलन्नारि फ़हुम् यू-ज़अून (19) हत्ता इज़ा मा जाऊहा शहि-द अ़लैहिम् सम्अुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (20) व क़ालू

लिजुलूदिहिम् लि-म शहित्तुम् अ़लैना, क़ालू अन्त-क़नल्लाहुल्लज़ी अन्त-क़ कुल्-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व इलैहि तुर्जअ़ून (21) व मा कुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अ़लैकुम् सम्अ़ुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला यअ़्लमु कसीरम्-मिम्मा तअ़्मलून (22) व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़नन्तुम् बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़-अस्बह्तुम् मिनल्-ख़ासिरीन (23) फ़-इंय्यस्बिरू फ़न्नारु मस्वल्-लहुम्, व इंय्यस्तअ़्तिबू फ़मा हुम् मिनल्-मुअ़्तबीन (24) व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु-रना-अ फ़-ज़य्यनू लहुम् मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (25) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तस्मअ़ू लिहाज़ल्- क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तग़्लिबून (26) फ़-लनुज़ीक़न्नल्लज़ी-न क-फ़रू अ़ज़ाबन् शदीदंव्-व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अस्व-अल्लज़ी कानू यअ़्मलून (27) ज़ालि-क जज़ा-उ अअ़्दा-इल्लाहिन्नारु लहुम् फ़ीहा दारुल्-ख़ुल्दि जज़ा-अम् बिमा कानू बिआयातिना यज्हदून (28) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अज़ल्लाना मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि नज्अ़ल्हुमा तह्-त अक़्दामिना लि-यकूना

عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾
وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي
أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا
أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ
كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَهُمْ ۖ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ ﴿٢٤﴾ وَ
قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ
الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾
فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ
النَّارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ

मिनल्-अस्फ़लीन (29) इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू त-तनज़्ज़लु अ़लैहिमुल्-मलाइ-कतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून (30) नह्नु औलिया-उकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दअ़ून (31) नुज़ुलम् मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम (32) ❖

व मन् अह्सनु क़ौलम् मिम्-मन् दआ़ इलल्लाहि व अ़मि-ल सालिहंव्-व क़ा-ल इन्ननी मिनल्-मुस्लिमीन (33) व ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यि-अतु इद्फ़अ् बिल्लती हि-य अह्सनु फ़-इज़ल्-लज़ी बैन-क व बैनहू अ़दा-वतुन् क-अन्नहू वलिय्युन् हमीम (34) व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न स-बरू व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीम (35) व इम्मा यन्-ज़ग़न्न-क मिनश्-शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (36) व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्शम्सु वल्क़-मरु, ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़हुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून (37) फ़-इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्-अमून ☐ (38) व मिन् आयातिही अन्न-क तरल्-अर्-ज़ ख़ाशि-अ़तन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल्

أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا
مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا
تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا
بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَ
مَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ
إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ
ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ
كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَ
مَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾ وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ
الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾
وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا
لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِنْ
كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ
رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ﴿٣٨﴾

मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत्, इन्नल्लज़ी अह्याहा ल-मुह्यिल्-मौता, इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(39)** इन्नल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अ़लैना, अ-फ़-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्-मंय्यअ्ती आमिनंय्यौमल्-क़ियामति, इअ्मलू मा शिअ्तुम् इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर **(40)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा-अहुम् व इन्नहू ल-किताबुन् अ़ज़ीज़ **(41)** ला यअ्तीहिल्-बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही, तन्ज़ीलुम्-मिन् हकीमिन् हमीद **(42)** मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क, इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिंव्-व ज़ू अ़िक़ाबिन् अलीम **(43)** व लौ जअ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अअ़्-जमिय्यल्-लक़ालू लौ ला फ़ुस्सिलत् आयातुहू अ-अअ़्-जमिय्युंव्-व अ़-रबिय्युन्, क़ुल् हु-व लिल्लज़ी-न आमनू हुदंव्-व शिफ़ाउन्, वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रुंव्-व हु-व अ़लैहिम् अ़-मन्, उलाइ-क युनादौ-न मिम्-मकानिम्-बअ़ीद **(44)** ◆

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ फ़ीहि, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम्, इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब **(45)** मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा, व मा रब्बु-क बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद **(46)**

حٰمٓ السجدة ٤١ ٤٣٤ فمن اظلم ٢٤

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ
عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا
لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۭ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا
يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۝
لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۭ تَنْزِيْلٌ
مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ۝ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ
مِنْ قَبْلِكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَلَوْ
جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ۭ ءَاَعْجَمِيٌّ
وَّعَرَبِيٌّ ۭ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاۗءٌ ۭ وَالَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۭ اُولٰۗىِٕكَ
يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَاۗءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝

منزل

पच्चीसवाँ पारः इलैहि युरद्दु

सूरतु हा-मीम् अस्सज्दति (आयत 47 से 54)

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्सा-अति व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही, व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई क़ालू आज़न्ना-क मा मिन्ना मिन् शहीद **(47)** व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यद्अू-न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम्-महीस **(48)** ला यस्-अमुल् -इन्सानु मिन् दुआ-इल्ख़ैरि व इम्-मस्सहुश्-शर्रु फ-यऊसुन् क़नूत **(49)** व ल-इन् अज़क़्नाहु रह्म-तम् मिन्ना मिम्-बअ्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न हाज़ा ली व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्-रुजिअ्तु इला रब्बी इन्-न ली अिन्दहू लल्हुस्ना फ़-लनुनब्बि-अन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिमा अमिलू व लनुज़ीक़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ **(50)** व इज़ा अन्अम्ना अलल्-इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अरीज़ **(51)** क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्-म कफ़र्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु-व फ़ी शिक़ाक़िम्-बअीद **(52)** सनुरीहिम् आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-तबय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़ु, अ-व लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद **(53)** अला इन्नहुम् फ़ी मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ा-इ रब्बिहिम्, अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत **(54)** ❖

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَ
مَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي
قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ
مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ
الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا
مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٠﴾ وَإِذَا أَنْعَمْنَا
عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ
عَرِيضٍ ﴿٥١﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ
أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَ
فِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ
أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ
رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ﴿٥٤﴾

سورة الشورى مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وهي ثلاث وخمسون آية وخمس ركوعات

حم ﴿١﴾ عسق ﴿٢﴾ كَذَٰلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ

42 सूरतुश्-शूरा 62

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3585 अक्षर, 869 शब्द, 53 आयतें और 5 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** अ़ैन्-सीन्-क़ाफ़् **(2)** कज़ालि-क यूही इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(3)** लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम **(4)** तकादुस्-समावातु य-तफ़त्तर्-न मिन् फ़ौक़िहिन्-न वल्मलाइ-कतु युसब्बिहू-न बिहम्दि-रब्बिहिम् व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फ़िल्-अर्ज़ि, अला इन्नल्ला-ह हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम **(5)** वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अ़लैहिम् व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील **(6)** व कज़ालि-क औहैना इलै-क क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्-क़ुरा व मन् हौ-लहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अ़ि ला रै-ब फ़ीहि, फ़रीक़ुन् फ़िल्-जन्नाति व फ़रीक़ुन् फ़िस्सअ़ीर **(7)** व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लहुम् उम्म-तंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिंय्युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(8)** अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ फ़ल्लाहु हुवल्-वलिय्यु व हु-व युह्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(9)** ❖

व मख़्त-लफ़्तुम् फ़ीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब **(10)** फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व मिनल्-अन्आ़मि अज़्वाजन् यज़्-रउकुम् फ़ीहि, लै-स कमिस्लही

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ
الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ
اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ
حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ
اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ
الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ
شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى
اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ
الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ شَرَعَ لَكُمْ

शैउन् व हुवस्समीअुल्-बसीर (11) लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्-यशा-उ व यक़्दिरु, इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (12) श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व अ़ीसा अन् अक़ीमुद्-दी-न व ला त-तफ़र्रक़ू फ़ीहि, कबु-र अ़लल्-मुश्रिकी-न मा तद्अूहुम् इलैहि, अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (13) व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जा-अहुमुल्-अ़िल्मु बग़्यम् बैनहुम्, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क इला अ-जलिम् मुसम्मल्-लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नल्लज़ी-न ऊरिसुल्-किता-ब मिम्-बअ़्दिहिम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (14) फ़-लिज़ालि-क फ़द्अु वस्तक़िम् कमा उमिर्-त व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अहुम् व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज़-ल्लाहु मिन् किताबिन् व उमिर्तु लि-अअ़्दि-ल बैनकुम्, अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम्, लना अअ़्मालुना व लकुम् अअ़्मालुकुम्, ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम्, अल्लाहु यज्मअु बैनना व इलैहिल्-मसीर (15) वल्लज़ी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्-बअ़्दि मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अ़िन्-द रब्बिहिम् व अ़लैहिम् ग़-ज़बुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (16) अल्लाहुल्लज़ी अन्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न, व मा युद्री-क लअ़ल्लस्सा-अ़-त क़रीब (17) यस्तअ़्जिलु बि-हल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिहा वल्लज़ी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा व यअ़्लमू-न अन्नहल्-हक़्क़ु, अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्सा-अ़ति लफ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (18) अल्लाहु लतीफ़ुम्-बिअ़िबादिही यर्ज़ुक़ु

مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا
وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ
لَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ
اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا
مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا
الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ
وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَآ
اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا
وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا
اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ
وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ
وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا وَيَعْلَمُوْنَ
اَنَّهَا الْحَقُّ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝

मंय्यशा-उ व हुवल्-क़विय्युल्-अ़ज़ीज़ (19) ❖

मन् का-न युरीदु हर्सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही व मन् का-न युरीदु हर्सद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन्-नसीब (20) अम् लहुम् शु-रका-उ श-रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्ज़म्-बिहिल्लाहु, व लौ ला कलि-मतुल्-फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नज़्-ज़ालिमीन-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (21) तरज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअुम् बिहिम्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति लहुम्-मा यशाऊ-न अि़न्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर (22) ज़ालिकल्लज़ी युबश्शिरुल्लाहु अि़बा-दहुल्-लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, क़ुल्-ला अस्-अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् इल्लल्-म-वद्द-त फ़िल्क़ुर्बा, व मंय्-यक़्तरिफ़् ह-स-नतन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्नन्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर (23) अम् यक़ूलूनफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़-इंय्य-श-इल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-क, व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व युहिक़्क़ुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (24) व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अि़बादिही व यअ्फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ्लमु मा तफ़्अ़लून (25) व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम्-मिन् फ़ज़्लिही, वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (26) व लौ ब-सतल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअि़बादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्-युनज़्ज़िलु बि-क़-दरिम्-मा यशा-उ, इन्नहू बिअि़बादिही ख़बीरुम्-बसीर (27) व

اللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ
يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾
اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۚ
وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ
وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ
الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾
ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۚ
قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۚ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ
يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى
قَلْبِكَ ۚ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ
يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَالْكٰفِرُوْنَ

हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स मिम्बअ्दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह्म-तहू, व हुवल् वलिय्युल्-हमीद **(28)** व मिन् आयातिही ख़ल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन्, व हु-व अ़ला जम्अिहिम् इज़ा यशा-उ क़दीर ◆ **(29)** ❖

व मा असाबकुम् मिम्-मुसी-बतिन् फ़बिमा क-सबत् ऐदीकुम् व यअ्फ़ू अ़न् कसीर **(30)** व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर **(31)** व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्-बहिर कल्-अअ्लाम **(32)** इंय्य-शअ् युस्किनिर्-री-ह फ़-यज़्लल्-न रवाकि-द अ़ला ज़ह्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर **(33)** औ यूबिक़्हुन्-न बिमा क-सबू व यअ्फ़ु अ़न् कसीर **(34)** व यअ्-ल--मल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिना, मा लहुम् मिम्-महीस **(35)** फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व

الشورى ٤٢ ٤٣٩ اليه يرده ٢٥

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا
فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ۚ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌ
بَصِيْرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ
رَحْمَتَهٗ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ
اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۝ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ
اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۝ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهِ
الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝
اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۝ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ
يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۚ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ
شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ
الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ
اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ

منزل ٦

अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून **(36)** वल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबा-इरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून **(37)** वल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून **(38)** वल्लज़ी-न इज़ा असा-बहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून **(39)** व जज़ा-उ सिय्य-अतिन्

सय्यि-अतुम्-मिस्लुहा फ़-मन् अ़फ़ा व अस्ल-ह फ़-अज्रुहू अ़लल्लाहि, इन्नहू ला युहिब्बुज़्-ज़ालिमीन **(40)** व ल-मनिन्त-स-र बअ़्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा अ़लैहिम् मिन् सबील **(41)** इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(42)** व ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल्-उमूर **(43)** ❖

व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिंव्-वलिय्यिम्- मिम्-बअ़्दिही, व तरज़्-ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला मरद्दिम्-मिन् सबील **(44)** व तराहुम् युअ़्रज़ू-न अ़लैहा ख़ाशिअ़ी-न मिनज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन्, व क़ालल्लज़ी-न आमनू इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम्-मुक़ीम **(45)** व मा का-न लहुम् मिन् औलिया-अ यन्सुरूनहुम् मिन् दूनिल्लाहि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबील **(46)** इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि, मा लकुम् मिम्-मल्ज-इंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन्-नकीर **(47)** फ़-इन् अअ़्रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न्, इन् अ़लै-क इल्लल्-बलाग़ु, व इन्ना इज़ा अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् फ़रि-ह बिहा व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-

5

وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ
هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا
وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَنِ
انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ اِنَّمَا
السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ
اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ۭ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا
خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۭ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ لَهُمْ
مِّنْ اَوْلِيَاۗءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ۝ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ
يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ
مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۭ اِنْ

इन्सा-न कफ़ूर **(48)** लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यख़्लुकु मा यशा-उ, य-हबु लिमंय्यशा-उ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशा-उज़्-ज़ुकूर **(49)** औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक्रानंव्-व इनासन् व यज्अ़लु मंय्यशा-उ अ़क़ीमन्, इन्नहू अ़लीमुन् क़दीर **(50)** व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लि-महुल्लाहु इल्ला वह्यन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बि-इज़्निही मा यशा-उ, इन्हू अ़लिय्युन् हकीम **(51)** व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्-मिन् अम्रिना, मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल्-ईमानु व लाकिन् ज-अ़ल्नाहु नूरन्-नह्दी बिही मन् नशा-उ मिन् अ़िबादिना, व इन्न-क ल-तह्दी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(52)** सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, अला इलल्लाहि तसीरुल्-उमूर **(53)** ❖

الزخرف ٤٣ ۔ ۸۸۱ ۔ الیہ یرد ٢٥

علیک الا البلغ وانا اذا اذقنا الانسان منا رحمۃ فرح بہا
وان تصبہم سیئۃ بما قدمت ایدیہم فان الانسان کفور
للہ ملک السموت والارض یخلق ما یشاء یہب لمن یشاء
اناثا ویہب لمن یشاء الذکور او یزوجہم ذکرانا واناثا
ویجعل من یشاء عقیما انہ علیم قدیر وما کان لبشر
ان یکلمہ اللہ الا وحیا او من ورای حجاب او یرسل رسولا
فیوحی باذنہ ما یشاء انہ علی حکیم وکذلک اوحینا
الیک روحا من امرنا ما کنت تدری ما الکتب ولا الایمان
ولکن جعلنہ نورا نہدی بہ من نشاء من عبادنا وانک
لتہدی الی صراط مستقیم صراط اللہ الذی لہ ما فی
السموت وما فی الارض الا الی اللہ تصیر الامور

سورۃ الزخرف مکیۃ وہی تسع وثمانون ایۃ وسبع رکوعات

بسم اللہ الرحمن الرحیم

حم والکتب المبین انا جعلنہ قرءنا عربیا لعلکم
تعقلون وانہ فی ام الکتب لدینا لعلی حکیم افنضرب
عنکم الذکر صفحا ان کنتم قوما مسرفین وکم ارسلنا

منزل ٦

43 सूरतुज़्-ज़ुख़्रुफ़ि 63

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3656 अक्षर, 848 शब्द, 89 आयतें और 7 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** वल्-किताबिल्-मुबीन **(2)** इन्ना जअ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(3)** व इन्नहू फ़ी उम्मिल्-किताबि लदैना ल-अ़लिय्युन् हकीम **(4)** अ-फ़ नज़्रिबु अ़न्कुमुज़्ज़िक्-र सफ़्हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन **(5)** व कम् अर्सल्ना मिन्-नबिय्यिन् फ़िल्-अव्वलीन **(6)** व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही
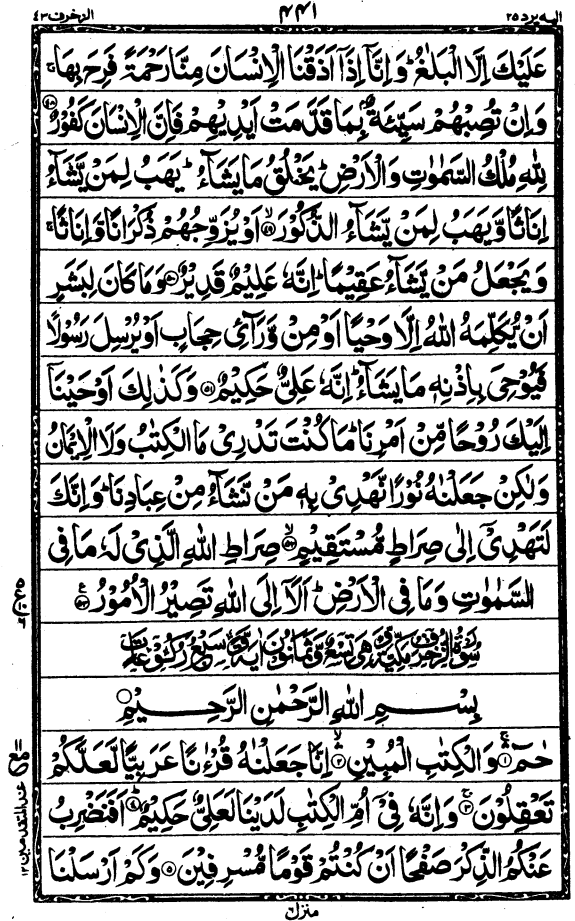
यस्तह्ज़िऊन (7) फ़-अह्लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत्शंव्-व मज़ा म-सलुल्-अव्वलीन (8) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम (9) अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (10) वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अम्-बि-क़-दरिन् फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् कज़ालि-क तुख़्रजून (11) वल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आ़मि मा तर्-कबून (12) लि-तस्तवू अ़ला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ़्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तक़ूलू सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन (13) व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून (14) व ज-अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्अन्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूरुम्-मुबीन (15) ❖

अमित्त-ख़-ज़ मिम्मा यख़्लुक़ु बनातिंव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्-बनीन (16) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा ज़-र-ब लिर्रह्मानि म-सलन् ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम (17) अ-व मंयुनश्श-उ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (18) व ज-अ़लुल् मलाइ-कतल्लज़ी-न हुम् अ़िबादुर्रह्मानि इनसान्, अ-शहिदू ख़ल्क़हुम्, स-तुक्तबु शहा-दतुहुम् व युस्-अलून (19) व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु मा अ़बद्नाहुम्, मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (20) अम्

مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ
الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١ وَالَّذِيْ
خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا
تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا
كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝١٣ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝١٤ وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ
عِبَادِهٖ جُزْءًا اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ
بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ۝١٦ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ
لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝١٧ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا
فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ۝١٨ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ
الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ
شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ۝١٩ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ

आतैनाहुम् किताबम्-मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून (21) बल् क़ा-लू इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम् मुह्तदून (22) व कज़ालि-क मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी क़र्-यतिम् मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम्-मुक़्तदून (23) क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तुकुम् बि-अह्दा मिम्मा वजत्तुम् अ़लैहि आबा-अकुम्, क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (24) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन ● (25) ❖

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लि-अबीहि व क़ौमिही इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्बुदून (26) इल्लल्लज़ी फ़-त-रनी फ़-इन्नहू स-यह्दीन (27) व ज-अ़-लहा कलि-मतम्- बाक़ि-यतन् फ़ी अ़क़िबिही लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (28) बल् मत्तअ्तु हाउला-इ व आबा-अहुम हत्ता जा-अहुमुल्-हक़्क़ु व रसूलुम्-मुबीन (29) व लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु क़ालू हाज़ा सिह्रुंव्-व इन्ना बिही काफ़िरून (30) व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल हाज़ल्-क़ुर्आनु अ़ला रजुलिम्-मिनल् क़र्-यतैनि अ़ज़ीम (31) अ-हुम् यक़्सिमू-न रह्म-त रब्बि-क, नह्नु क़सम्ना बैनहुम् मअ़ी-श-तहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व रफ़अ्ना बअ्-ज़हुम् फ़ौ-क़ बअ्ज़िन् द-रजातिल्-लि-यत्तख़ि-ज़ बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् सुख़्रिय्यन्, व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअ़ून (32) व लौ ला अंय्यकूनन्नासु

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا
مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ
قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ
اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ
بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۗ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِلَّا
الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ
عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى
جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا
سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ
مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۗ نَحْنُ قَسَمْنَا
بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ

उम्म-तंव्वहि-दतल् ल-जअ़ल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह्मानि लि-बुयूतिहिम् सुक़ुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव् व मआ़रि-ज अ़लैहा यज़्हरून (33) व लिबुयूतिहिम् अब्वाबंव्-व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन (34) व ज़ुख़्रुफ़न्, व इन् कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअ़ुल्-हयातिद्दुन्या, वल्-आख़िरतु अ़िन्-द रब्बि-क लिल्-मुत्तक़ीन (35) ❖

व मंय्यअ़्शु अ़न् ज़िक्रिर्-रह्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू क़रीन (36) व इन्नहुम् ल-यसुद्दूनहुम् अ़निस्सबीलि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (37) हत्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल या लै-त बैनी व बैन-क बुअ़्दल् -मश्रिक़ैनि फ़-बिअ्सल्-क़रीन (38) व लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-यौ-म इज़् ज़लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (39) अ-फ़-अन्-त तुस्मिअ़ुस्सुम्-म औ तह्दिल्-अ़ुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (40) फ़-इम्मा नज़्ह-बन्-न बि-क फ़-इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून (41) औ नुरि-यन्नकल्लज़ी व-अ़द्नाहुम् फ़-इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदिरून (42) फ़स्तम्सिक् बिल्लज़ी ऊहि-य इलै-क इन्न-क अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (43) व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्-ल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्अलून (44) वस्अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना, अ-जअ़ल्ना मिन् दूनिर्रह्मानि आलि-हतंय् -युअ़्बदून (45) ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़क़ा-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन (46) फ़-लम्मा जा-अहुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्हकून (47) व

يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها يظهرون ﴿٣٣﴾
ولبيوتهم أبوابا وسررا عليها يتكئون ﴿٣٤﴾ وزخرفا وإن كل
ذلك لما متاع الحيوة الدنيا والآخرة عند ربك للمتقين ﴿٣٥﴾
ومن يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين ﴿٣٦﴾
وإنهم ليصدونهم عن السبيل ويحسبون أنهم مهتدون ﴿٣٧﴾
حتى إذا جاءنا قال يليت بيني وبينك بعد المشرقين فبئس
القرين ﴿٣٨﴾ ولن ينفعكم اليوم إذ ظلمتم أنكم في العذاب
مشتركون ﴿٣٩﴾ أفأنت تسمع الصم أو تهدي العمي ومن كان
في ضلل مبين ﴿٤٠﴾ فإما نذهبن بك فإنا منهم منتقمون ﴿٤١﴾ أو
نرينك الذي وعدنهم فإنا عليهم مقتدرون ﴿٤٢﴾ فاستمسك
بالذي أوحي إليك إنك على صراط مستقيم ﴿٤٣﴾ وإنه لذكر لك
ولقومك وسوف تسئلون ﴿٤٤﴾ وسئل من أرسلنا من قبلك
من رسلنا أجعلنا من دون الرحمن آلهة يعبدون ﴿٤٥﴾ ولقد
أرسلنا موسى بآيتنا إلى فرعون وملائه فقال إني رسول رب
العلمين ﴿٤٦﴾ فلما جاءهم بآيتنا إذا هم منها يضحكون ﴿٤٧﴾ وما
نريهم من آية إلا هي أكبر من أختها وأخذنهم بالعذاب

मा नुरीहिम् मिन् आ-यतिन् इल्ला हि-य अक्बरु मिन् उख़्तिहा व अख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(48)** व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अ़ु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क इन्नना ल-मुह्तदून **(49)** फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून **(50)** व नादा फ़िर्औनु फ़ी क़ौमिही क़ा-ल या क़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्-र व हाज़िहिल्-अन्हारु तज्री मिन् तह्ती अ-फ़ला तुब्सिरून **(51)** अम् अ-न ख़ैरुम् मिन् हाज़ल्लज़ी हु-व महीनुंव्-व ला यकादु युबीन **(52)** फ़-लौ ला उल्कि-य अ़लैहि अस्वि-रतुम् मिन् ज़-हबिन् औ जा-अ म-अ़हुल्-मलाइ--कतु मुक़्तरिनीन **(53)** फ़स्तख़फ़्-फ़ क़ौमहू फ़-अताअ़ूहु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ी-न **(54)** फ़-लम्मा आ-सफ़ूनन्-त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन **(55)** फ़-जअ़ल्नाहुम् स-लफ़ंव्-व म-सलल्-लिल्आख़िरीन **(56)** ❖

व लम्मा ज़ुरिबब्नु मर्य-म म-सलन् इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून **(57)** व क़ालू अ-आलि-हतुना ख़ैरुन् अम् हु-व, मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-दलन्, बल् हुम् क़ौमुन् ख़सिमून **(58)** इन् हु-व इल्ला अ़ब्दुन् अन्अ़म्ना अ़लैहि व ज-अ़ल्नाहु म-सलल्-लि-बनी इस्राईल **(59)** व लौ नशा-उ ल-जअ़ल्ना मिन्कुम् मलाइ-कतन् फ़िल्अर्ज़ि यख़्लुफ़ून **(60)** व इन्नहू ल-अ़िल्मुल्-लिस्सा-अ़ति फ़ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिअ़ूनि, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम **(61)** व ला यसुद्दन्नकुमुश्-शैतानु इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन **(62)** व लम्मा जा-अ ईसा बिल्बय्यिनाति क़ा-ल क़द् जिअ्तुकुम् बिल्-हिक्मति व लि-उबय्यि-न

الیه یرد ۲۵ ۸۲۵ الزخرف ۴۳

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ
إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿٥٠﴾
وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَ
هَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٥١﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ
هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ
مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ
فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾ ع
وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾ وَ
قَالُوا أَآلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ
خَصِمُونَ ﴿٥٨﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنكُم مَّلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ﴿٦٠﴾
وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُونِ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطَانُ ۖ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا
جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم
بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ

منزل

लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी तख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (63) इन्नल्ला-ह हु-व रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (64) फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अज़ाबि यौमिन् अलीम (65) हल् यन्जुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततंव्-व हुम् ला यश्अुरून (66) अल्-अख़िल्ला-उ यौमइज़िम्-बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् अदुव्वुन् इल्लल्-मुत्तक़ीन (67) ❖

या अिबादि ला ख़ौफ़ुन् अलैकुमुल्-यौ-म व ला अन्तुम् तह्ज़नून (68) अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (69) उद्ख़ुलुल्- जन्न-त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह्बरून (70) युताफ़ु अलैहिम् बिसिहाफ़िम्-मिन् ज़-हबिंव्-व अक्वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्युनु व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून (71) व तिल्कल्- जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (72) लकुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुन् कसी-रतुम् मिन्हा तअ्कुलून (73) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी अज़ाबि जहन्न-म ख़ालिदून (74) ला युफ़त्-तरु अन्हुम्

الزخرف ٤٣ ٤٤٦ اليه يرد ٢٥

رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦٤ فَاخْتَلَفَ
الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ
اَلِيْمٍ ۝٦٥ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٦٦ اَلْاَخِلَّاۗءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا
الْمُتَّقِيْنَ ۝٦٧ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝٦٨ اَلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٦٩ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ
تُحْبَرُوْنَ ۝٧٠ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا
مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٧١ وَ
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧٢ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ
كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٧٣ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝٧٤
لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٥ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا
هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٦ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۭ قَالَ اِنَّكُمْ
مّٰكِثُوْنَ ۝٧٧ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٨
اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ۝٧٩ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ
نَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ۝٨٠ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ
وَلَدٌ ڰ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ۝٨١ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ

منزل ٦

व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून (75) व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्ज़ालिमीन (76) व नादौ या मालिकु लि-यक़्ज़ि अलैना रब्बु-क, क़ा-ल इन्नकुम् माकिसून (77) ल-क़द् जिअ्नाकुम् बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (78) अम् अब्रमू अम्रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून (79) अम् यह्सबू-न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम् व नज्वाहुम्, बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून (80) क़ुल् इन् का-न लिर्रह्मानि व-लदुन्

फ़-अ-न अव्वलुल्-आ़बिदीन **(81)** सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून **(82)** फ़-ज़रहुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून **(83)** व हुवल्लज़ी फ़िस्समा-इ इलाहुंव्-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन्, व हुवल् हकीमुल्-अ़लीम **(84)** व तबा-रकल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व इलैहि तुर्जअ़ून **(85)** व ला यम्लिकुल्-लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिहिश्-शफ़ा-अ़-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ़्लमून **(86)** व ल-इन स-अल्-तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून **(87)** व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हा-उला-इ क़ौमुल्-ला युअ्मिनून ✣ **(88)** फ़स्फ़ह् अ़न्हुम् व क़ुल् सलामुन्, फ़सौ-फ़ यअ़्लमून **(89)** ❖

44 सूरतुद्-दुख़ानि 64

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1495 अक्षर, 349 शब्द, 59 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** वल्-किताबिल्-मुबीन **(2)** इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन **(3)** फ़ीहा यफ़रक़ु कुल्लु अम्रिन् हकीम **(4)** अम्रम् मिन् अ़िन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन **(5)** रह्म-तम् मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम **(6)** रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ✣ इन् कुन्तुम् मूक़िनीन **(7)** ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन **(8)** बल् हुम् फ़ी शक्किंय्-यल्-अ़बून **(9)** फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समा-उ बिदुख़ानिम्-मुबीन **(10)** यग़्शन्ना-स, हाज़ा अ़ज़ाबुन् अलीम **(11)**

الدخان ٤٤ ۸۴۷ اليه يرد ٢٥

الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا
يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي
الْاَرْضِ اِلٰهٌ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾
وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ
بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ
فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ فَاصْفَحْ
عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۭ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾ فَارْتَقِبْ
يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٠﴾ يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ

منزل ٦

रब्बनक्शिफ़् अ़न्नल्-अ़ज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून **(12)** अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन **(13)** सुम्-म तवल्लौ अ़न्हु व क़ालू मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून ✣ **(14)** इन्ना काशिफ़ुल्-अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ़-इदून ✣ **(15)** यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा इन्ना मुन्तक़िमून **(16)** व ल-क़द् फ़तन्ना क़ब्लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ़-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम **(17)** अन् अद्दू इलय्-य अ़िबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन **(18)** व अल्-ला तअ्लू अ़लल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन **(19)** व इन्नी अ़ुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून **(20)** व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्तज़िलून **(21)** फ़-दआ रब्बहू अन्-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ▲ **(22)** फ़-अस्रि बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बअून **(23)** वत्रुकिल्-बह्-र रह्वन्, इन्नहुम् जुन्दुम् मुग़्-रक़ून **(24)** कम् त-रकू मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयून **(25)** व ज़ुरूअ़िंव्-व मक़ामिन् करीम **(26)** व नअ़्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन **(27)** कज़ालि-क, व औरस्नाहा क़ौमन् आ-ख़रीन **(28)** फ़मा ब-कत् अ़लैहिमुस्समा-उ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन **(29)** ❖

व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन **(30)** मिन् फ़िर्औ़-न, इन्नहू का-न आ़लि-यम् मिनल्-मुस्रिफ़ीन **(31)** व ल-क़दिख़्तर्नाहुम् अ़ला अ़िल्मिन् अ़लल्-आ़लमीन **(32)** व आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन **(33)** इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून **(34)** इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन **(35)** फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(36)** अ-हुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअ़िंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, अह्लक्नाहुम्

الدخان ٤٤

جاءهم رسول مبين ۝ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ۝ إنا
كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون ۝ يوم نبطش البطشة
الكبرى إنا منتقمون ۝ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم
رسول كريم ۝ أن أدوا إلي عباد الله إني لكم رسول أمين ۝ و
أن لا تعلوا على الله إني آتيكم بسلطان مبين ۝ وإني عذت
بربي وربكم أن ترجمون ۝ وإن لم تؤمنوا لي فاعتزلون ۝
فدعا ربه أن هؤلاء قوم مجرمون ۝ فأسر بعبادي ليلا إنكم
متبعون ۝ واترك البحر رهوا إنهم جند مغرقون ۝ كم تركوا
من جنات وعيون ۝ وزروع ومقام كريم ۝ ونعمة كانوا فيها
فاكهين ۝ كذلك وأورثناها قوما آخرين ۝ فما بكت عليهم السماء
والأرض وما كانوا منظرين ۝ ولقد نجينا بني إسرائيل من
العذاب المهين ۝ من فرعون إنه كان عاليا من المسرفين ۝
ولقد اخترناهم على علم على العالمين ۝ وآتيناهم من الآيات
ما فيه بلاء مبين ۝ إن هؤلاء ليقولون ۝ إن هي إلا موتتنا
الأولى وما نحن بمنشرين ۝ فأتوا بآبائنا إن كنتم صادقين ۝
أهم خير أم قوم تبع والذين من قبلهم أهلكناهم إنهم كانوا

منزل

5

इन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (37) व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (38) मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (39) इन्-न यौमल्-फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्मअ़ीन (40) यौ-म ला युग़्नी मौलन् अ़म्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (41) इल्ला मर्रहिमल्लाहु, इन्नहू हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (42) ❖

इन्-न श-ज-रतज़्ज़क़्क़ूम (43) तआमुल्-असीम (44) कल्मुह्लि यग्ली फ़िल्बुतून (45) क-ग़ल्यिल्-हमीम (46) ख़ुज़ूहु फ़अ्तिलूहु इला सवाइल्-जहीम (47) सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अ़ज़ाबिल्-हमीम (48) ज़ुक़् इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-करीम (49) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (50) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (51) फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (52) यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम् मु-तक़ाबिलीन (53) कज़ालि-क, व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (54) यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकि-हतिन् आमिनीन (55) ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वक़ाहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम (56) फ़ज़्लम्-मिर्रब्बि-क, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (57) फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (58) फ़र्-तक़िब् इन्नहुम् मुर्-तक़िबून (59) ❖

مُّجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا
خَلَقْنٰهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقٰتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْـًٔا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللّٰهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ
رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ
هٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾
فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ
مُّتَقٰبِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا
بِكُلِّ فٰكِهَةٍ ءَامِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ
الْأُولٰى ۖ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾
فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
حٰمٓ ﴿١﴾ تَنزِيلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

منزل

45 सूरतुल्-जासि-यति 65

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2131 अक्षर, 492 शब्द, 37 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (2) इन्-न फ़िस्समावाति

वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिल्-मुअ्मिनीन (3) व फ़ी ख़ल्किकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (4) वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर्-रियाहि आयातुल् लिक़ौमिंय् -यअ्क़िलून (5) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि फ़बि-अय्यि हदीसिम्-बअ्दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (6) वैलुल्- लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम (7) यस्-मअु आयातिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्हा फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (8) व इज़ा अ़लि-म मिन् आयातिना शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (9) मिंव्वरा-इहिम् जहन्नमु व ला युग़्नी अ़न्हुम् मा क-सबू शैअंव्-व ला मत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (10) हाज़ा हुदन् वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम (11) ❖

अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़-र लकुमुल्-बह्-र लितज्रि-यल्-फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (12) व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मिन्हु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (13) क़ुल् लिल्लज़ी-न आमनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्ज़ि-य क़ौमम्-बिमा कानू यक्सिबून (14) मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा सुम्-म इला रब्बिकुम्

اليه يرد ٢٥ ٤٥٠ الجاثية ٤٥

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ
اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٤ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ
الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ
فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧
يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا
كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠
هٰذَا هُدًى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١ ع ١٧
اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝١٢ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١٣ قُلْ لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝١٤ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ
اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١٥ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ

منزل

तुर्-जअून (15) व ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-हुक्-म वन्नुबुव्व-त व रज़क्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़लल्-आ़लमीन (16) व आतैनाहुम् बय्यिनातिम् मिनल्-अम्रि फ़-मख़्त-लफ़ू इल्ला मिम्बअ्दि मा जा-अहुमुल्-अ़िल्मु बग़्यम्-बैनहुम्, इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (17) सुम्-म जअ़ल्ना-क अ़ला शरी-अ़तिम्-मिनल्-अम्रि फ़त्तबिअ़्हा व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ़्लमून (18) इन्नहुम् लंय्युग़्नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअ़न्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (19) हाज़ा बसा-इरु लिन्नासि व हुदंव्-व रह्मतुल्- लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (20) अम् हसिबल्लज़ीनज्त-रहुस्-सय्यिआति अन् नज्अ़-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, सवा-अम्-मह्याहुम् व ममातुहुम्, सा-अ मा यह्कुमून (21) ❖

व ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (22) अ-फ़-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु व अज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्मिंव्-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही ग़िशा-वतन्, फ़-मंय्-यह्दीहि मिम्बअ़्दिल्लाहि, अ-फ़ला तज़क्करून (23) व क़ालू मा हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्रु व मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (24) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्ज-तहुम्

الجاثية ٤٥ ٧٥١ اليه يرد ٢٥

وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾
وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ
اللّٰهِ شَيْـًٔا وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾
هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ حَسِبَ
الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾
اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى
سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ
اللّٰهِ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا
وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ
قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ

منزل

इल्ला अन् क़ालुअ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(25)** क़ुलिल्लाहु युह्यीकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअ़ुकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि व लाकिन्-न अक्सरन्--नासि ला यअ़्लमून **(26)** ❖

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु यौमइज़िंय्-यख़्-सरुल्-मुब्तिलून **(27)** व तरा कुल्-ल उम्म-तिन् जासि-यतन्, कुल्लु उम्म-तिन् तुद्अ़ा इला किताबिहा, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून **(28)** हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम् बिल्हक़्क़ि, इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम् तअ़्मलून **(29)** फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़-युद्ख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह्मतिही, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-मुबीन **(30)** व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू, अ-फ़ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन **(31)** व इज़ा क़ी-ल इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्सा-अ़तु ला रै-ब फ़ीहा क़ुल्तुम्-मा नद्री मस्सा-अ़तु इन्-नज़ुन्नु इल्ला ज़न्नंव्-व मा नह्नु बिमुस्तैक़िनीन **(32)** व बदा लहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम्-मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(33)** व क़ीलल्-यौ-म ननूसाकुम् कमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन **(34)** ज़ालिकुम् बि-अन्न-कुमुत्तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व ग़र्रत्कुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म ला युख़्रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ़्-तबून **(35)** फ़लिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आ़लमीन **(36)** व लहुल्-किब्रिया-उ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(37)** ❖

ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾ وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ
تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ هَٰذَا كِتَابُنَا
يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَمَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ
ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي
تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا قِيلَ
إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا
السَّاعَةُ إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِينَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ
سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٣﴾ وَقِيلَ
الْيَوْمَ نَنْسَاكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَ
مَا لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٤﴾ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا وَغَرَّتْكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾
فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾ وَلَهُ
الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

छब्बीसवाँ पारः हा-मीम

46 सूरतुल्-अह्काफ़ि 66

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 2709 अक्षर, 750 शब्द, 35 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् **(1)** तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-हकीम **(2)** मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, वल्लज़ी-न क-फ़रू अ़म्मा उन्ज़िरू मुअ्रिज़ून **(3)** क़ुल् अ-रऐतुम्-मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति, ईतूनी बिकिताबिम् मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असा-रतिम्-मिन् अ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(4)** व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मल्-ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अ़न् दुअ़ा-इहिम् ग़ाफ़िलून **(5)** व इज़ा हुशिरन्नासु कानू लहुम् अअ्दाअंव्-व कानू बिअ़िबा-दति-हिम् काफ़िरीन **(6)** व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(7)** अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्, हु-व अअ्लमु बिमा तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, व हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम **(8)** क़ुल् मा कुन्तु बिद्अ़म्-मिनर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ़्अ़लु बी व ला बिकुम्,

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ
غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ
كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ
اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا
تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ
بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝

इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (9) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अ़िन्दिल्लाहि व कफ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम् मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला मिस्लिही फ़-आम-न वस्तक्बर्तुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्- क़ौमज़्ज़ालिमीन (10) ❖

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्-मा स-बक़ूना इलैहि, व इज़् लम् यह्तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (11) व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्म-तन्, व हाज़ा किताबुम् मुसद्दिक़ुल् -लिसानन् अ़-रबिय्यल् लियुन्ज़िरल्लज़ी-न ज़-लमू व बुश्रा लिल्-मुह्सिनीन (12) इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (13) उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा जज़ा-अम् बिमा कानू यअ़्मलून (14) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि इह्सानन्, ह-मलत्हु उम्मुहू कुर्हंव्-व व-ज़अ़त्हु कुर्हन्, व हम्लुहू व फ़िसालुहू सलासू-न शह्रन्, हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू व ब-ल-ग़ अर्बअ़ी-न स-नतन् क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-त-कल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती, इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन (15) उलाइ-कल्लज़ी-न न-तक़ब्बलु अ़न्हुम् अह्स-न मा अ़मिलू व न-तजा-वज़ु अ़न् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्हाबिल्-जन्नति, वअ़्दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यू-अ़दून (16) वल्लज़ी क़ा-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्-लकुमा अ-तअ़िदानिनी अन् उख़्र-ज व क़द्

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِۦ وَشَهِدَ
شَاهِدٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِۦ فَـَٔامَنَ وَٱسْتَكْبَرْتُمْ
إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠﴾ وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلَّذِينَ
ءَامَنُوا۟ لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَآ إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا۟ بِهِۦ فَسَيَقُولُونَ
هَٰذَآ إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾ وَمِن قَبْلِهِۦ كِتَٰبُ مُوسَىٰٓ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَ
هَٰذَا كِتَٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ وَبُشْرَىٰ
لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُوا۟ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسْتَقَٰمُوا۟ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ خَٰلِدِينَ
فِيهَا جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾ وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ
إِحْسَٰنًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُۥ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُۥ وَفِصَٰلُهُۥ
ثَلَٰثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُۥ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِىٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ ٱلَّتِىٓ أَنْعَمْتَ عَلَىَّ
وَعَلَىٰ وَٰلِدَىَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَٰلِحًا تَرْضَىٰهُ وَأَصْلِحْ لِى فِى
ذُرِّيَّتِىٓ ۖ إِنِّى تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّى مِنَ ٱلْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾ أُو۟لَٰٓئِكَ
ٱلَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا۟ وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّـَٔاتِهِمْ
فِىٓ أَصْحَٰبِ ٱلْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ ٱلصِّدْقِ ٱلَّذِى كَانُوا۟ يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَٱلَّذِى

ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वैल-क आमिन् इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (17) उलाइ-कल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम्-मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि, इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (18) व लि-कुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू व लियुवफ़्फ़ि-यहुम् अअ़्मालहुम् व हुम् ला युज़्लमून (19) व यौ-म युअ़्रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्-नारि, अज़्हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फ़ी हयातिकुमुद्-दुन्या वस्तम्तअ़्तुम् बिहा फ़ल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्-हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ून (20) ❖

वज़्कुर् अख़ा आ़दिन्, इज़् अन्ज़-र क़ौमहू बिल्-अह्क़ाफ़ि व क़द् ख़-लतिन्-नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (21) क़ालू अजिअ्-तना लितअ़्फ़ि-कना अ़न् आलि-हतिना फ़अ़्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (22) क़ा-ल इन्नमल्-अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून (23) फ़-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदि-यतिहिम् क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम् मुम्तिरुना, बल् हु-व मस्तअ़्जल्तुम् बिही, रीहुन् फ़ीहा अ़ज़ाबुन् अलीम (24) तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-बि-अम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम्, कज़ालि-क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (25) व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्-मक्कन्नाकुम् फ़ीहि व जअ़ल्ना

قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَآ أَتَعِدَانِنِيٓ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ
مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ ءَامِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ
حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ
حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ
الْجِنِّ وَالْإِنسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَٰسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجَٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَٰلَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَٰتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم
بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ
أَنذَرَ قَوْمَهُۥ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَ
مِنْ خَلْفِهِۦٓ أَلَّا تَعْبُدُوٓا إِلَّا اللَّهَ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوٓا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن
كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّآ
أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَلَٰكِنِّيٓ أَرَىٰكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا
مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُم بِهِۦ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ

❖ रु. 2/10/2

लहुम् सम्-अंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इ-दतन् फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् सम्अ़ुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ़्इ-दतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्हदू-न बिआयातिल्लाहि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन **(26)** ❖

ल-क़द् अह्लक्ना मा हौलकुम् मिनल्-क़ुरा व सर्रफ़्नल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून **(27)** फ़-लौ ला न-स-रहुमुल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि-हतन्, बल् ज़ल्लू अ़न्हुम् व ज़ालि-क इफ़्कुहम् व मा कानू यफ़्तरून **(28)** व इज़् सरफ़्ना इलै-क न-फ़रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअ़ूनल्-क़ुर्आ-न फ़-लम्मा ह-ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ़-लम्मा क़ुज़ि-य वल्लौ इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन **(29)** क़ालू या क़ौमना इन्ना समिअ़्ना किताबन् उन्ज़ि-ल मिम्बअ़्दि मूसा मुसद्दि-क़ल्लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्-हक़्क़ि व इला तरीक़िम्-मुस्तक़ीम **(30)** या क़ौमना अजीबू दाअि़-यल्लाहि व आमिनू बिही यग़्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम **(31)** व मल्-ला युजिब् दाअि़-यल्लाहि फ़लै-स बिमुअ़्जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै-स लहू मिन् दूनिही औलिया-उ, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(32)** अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व लम् यअ़्-य बिख़ल्क़िहिन्-न बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्मौता, बला इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर **(33)** व यौ-म

حم ٢٦ ٨٥٦ الاحقاف ٤٦

ربها فاصبحوا لا يرى الا مسكنهم كذلك نجزي القوم
المجرمين ۝ ولقد مكنهم فيما ان مكنكم فيه وجعلنا
لهم سمعا وابصارا وافدة فما اغنى عنهم سمعهم ولا
ابصارهم ولا افدتهم من شيء اذ كانوا يجحدون بايت
الله وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝ ولقد اهلكنا ما
حولكم من القرى وصرفنا الايت لعلهم يرجعون ۝ فلولا
نصرهم الذين اتخذوا من دون الله قربانا الهة بل ضلوا
عنهم وذلك افكهم وما كانوا يفترون ۝ واذ صرفنا اليك
نفرا من الجن يستمعون القران فلما حضروه قالوا انصتوا
فلما قضي ولوا الى قومهم منذرين ۝ قالوا يقومنا انا
سمعنا كتبا انزل من بعد موسى مصدقا لما بين يديه
يهدي الى الحق والى طريق مستقيم ۝ يقومنا اجيبوا داعي
الله وامنوا به يغفر لكم من ذنوبكم ويجركم من عذاب
اليم ۝ ومن لا يجب داعي الله فليس بمعجز في الارض و
ليس له من دونه اولياء اولئك في ضلل مبين ۝ اولم
يروا ان الله الذي خلق السموت والارض ولم يعي بخلقهن

منزل ٦

युअ्रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि, अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून **(34)** फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्-रुसुलि व ला तस्तअ्जिल्-लहुम्, क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यू-अ़दू-न लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिन्-नहारिन्, बलाग़ुन् फ़-हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुल्-फ़ासिक़ून ◆ **(35)** ❖

47 सूरतु मुहम्मदिन् 95

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2475 अक्षर, 558 शब्द, 38 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अज़ल्-ल अअ्मालहुम् **(1)** वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अ़ला मुहम्मदिंव्-व हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-हिम् कफ़्फ़-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्ल-ह बालहुम् **(2)** ज़ालि-क बिअन्नल्लज़ी-न क-फ़रुत्त-बअुल्-बाति-ल व अन्नल्लज़ी-न आमनुत्-ब-अुल्-हक़्-क़ मिर्-रब्बिहिम्, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् **(3)**

حٰمٓ ٢٦ ۸۵۷ محمد ٤٧

بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۚ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾
وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ
قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ
بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا
الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾ فَاِذَا لَقِيْتُمُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا
الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا
ذٰلِكَ ۭ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ
بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

منزل ٦

फ़-इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ज़र्बर्रिक़ाबि, हत्ता इज़ा अस्ख़न्तुमूहुम् फ़शुद्दुल्-वसा-क़ फ़-इम्मा मन्नम्-बअ्दु व इम्मा फ़िदा-अन् हत्ता त-ज़अल्-हर्बु औज़ा-रहा, ज़ालि-क, व लौ यशा-उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिल्-लियब्लु-व बअ्-ज़कुम् बिबअ्ज़िन्, वल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-लंय्युज़िल्-ल अअ्मालहुम् **(4)** स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम **(5)** व युद्ख़िलुहुमुल्-जन्न-त अ़र्र-फ़हा लहुम् **(6)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्
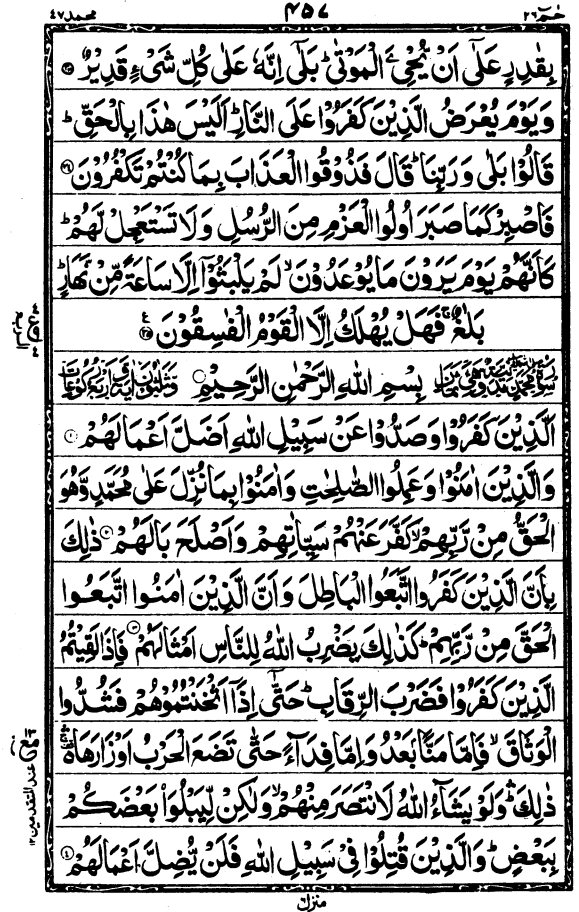
तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्कुम् व युसब्बित् अक्दामकुम् **(7)** वल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-तअ्सल्-लहुम् व अज़ल्-ल अअ्मालहुम **(8)** ज़ालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज़लल्लाहु फ़-अह्ब-त अअ्मालहुम **(9)** अ-फ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, दम्म-रल्लाहु अ़लैहिम् व लिल्काफ़िरी-न अम्सालुहा **(10)** ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह मौलल्लज़ी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम **(11)** ❖

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्- अन्हारु, वल्लज़ी-न क-फ़रू य-तमत्तअू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आ़मु वन्नारु मस्वल्-लहुम **(12)** व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् क़र्-यतिकल्लती अख़्र-जत्-क अह्लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम **(13)** अ-फ़ मन् का-न अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बिही क-मन् ज़ुय्यि-न लहू सू-उ अ़-मलिही वत्त-बअू अह्वा-अहुम **(14)** म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअि़दल्-मुत्तक़ू-न, फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् व अन्हारुम् मिल्-ल-बनिल्- लम् य-तग़य्यर् तअ्मुहू व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल् लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबी-न व अन्हारुम्-मिन् अ़-सलिम् मुसफ़्फ़न्, व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम्, क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सुक़ू मा-अन् हमीमन् फ़-क़त्त-अ़ अम्आ-अहुम **(15)** व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क हत्ता इज़ा ख़-रजू मिन् अि़न्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न ऊतुल्-अि़ल्-म माज़ा क़ा-ल

محمد ٤٧ ٤٥٨ حم ٢٦

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾
وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ
أَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ
لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿١١﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ع
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَ
يَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ﴿١٢﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ
هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجَتْكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا نَاصِرَ
لَهُمْ ﴿١٣﴾ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ
وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ
مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ
خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا
مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ
وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾ وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ

منزل ٦

आनिफ़न्, उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त-बअ़ू अह्वा-अहुम **(16)** वल्लज़ीनह्-तदौ ज़ा-दहुम् हुदंव्-व आताहुम् तक़्वाहुम **(17)** फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्-सा-अ़-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततन् फ़-क़द् जा-अ अश्रातुहा फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम **(18)** फ़अ़्लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लाहु वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, वल्लाहु यअ़्लमु मु-तक़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् **(19)** ❖

व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू लौ ला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सू-रतुम् मुह्क-मतुंव्-व ज़ुकि-र फ़ीहल्-क़ितालु रऐतल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंय्-यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़रल्-मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्-मौति, फ़-औला लहुम **(20)** ता-अ़तुंव्-व क़ौलुम्-मअ़्रूफ़ुन्, फ़-इज़ा अ़-ज़मल्-अम्रु फ़लौ स-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्-लहुम **(21)** फ़-हल् अ़सैतुम् इन् तवल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअ़ू अर्हा-मकुम **(22)** उलाइ-कल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़-असम्म-हुम् व अअ़्मा अब्सा-रहुम **(23)** अ-फ़ला य-तदब्बरूनल्-क़ुरआ-न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्फ़ालुहा **(24)** इन्नल्-लज़ीनर्-तद्दू अ़ला अद्बारिहिम् मिम्बअ़्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदश्शैतानु सव्व-ल लहुम्, व अम्ला लहुम **(25)** ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु सनुतीअ़ुकुम् फ़ी बअ़्ज़िल्-अम्रि वल्लाहु यअ़्लमु इस्रा-रहुम **(26)** फ़कै-फ इज़ा तवफ़्फ़त्हुमुल्-मलाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम **(27)** ज़ालि-क

حٰمٓ ٢٦ ٩٥٩ محمد ٤٧

حتى اذا خرجوا من عندك قالوا للذين اوتوا العلم ماذا قال انفا
اولئك الذين طبع الله على قلوبهم واتبعوا اهواءهم ﴿١٦﴾ والذين
اهتدوا زادهم هدى واتىهم تقوىهم ﴿١٧﴾ فهل ينظرون الا
الساعة ان تاتيهم بغتة فقد جاء اشراطها فانى لهم اذا جاءتهم
ذكرىهم ﴿١٨﴾ فاعلم انه لا اله الا الله واستغفر لذنبك وللمؤمنين
والمؤمنت والله يعلم متقلبكم ومثوىكم ﴿١٩﴾ ويقول الذين
امنوا لولا نزلت سورة فاذا انزلت سورة محكمة وذكر فيها
القتال رايت الذين في قلوبهم مرض ينظرون اليك نظر
المغشي عليه من الموت فاولى لهم ﴿٢٠﴾ طاعة وقول معروف
فاذا عزم الامر فلو صدقوا الله لكان خيرا لهم ﴿٢١﴾ فهل عسيتم
ان توليتم ان تفسدوا في الارض وتقطعوا ارحامكم ﴿٢٢﴾ اولئك
الذين لعنهم الله فاصمهم واعمى ابصارهم ﴿٢٣﴾ افلا يتدبرون
القران ام على قلوب اقفالها ﴿٢٤﴾ ان الذين ارتدوا على ادبارهم
من بعد ما تبين لهم الهدى الشيطن سول لهم واملى لهم ﴿٢٥﴾
ذلك بانهم قالوا للذين كرهوا ما نزل الله سنطيعكم في بعض
الامر والله يعلم اسرارهم ﴿٢٦﴾ فكيف اذا توفتهم الملئكة يضربون

منزل ٦

बिअन्नहुमुत्त-बअू मा अस्ख़तल्ला-ह व करिहू रिज़्वानहू फ़-अह्ब-त अअ्मालहुम **(28)** ❖

अम् हसिबल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम्-म-रजुन् अल्-लंय्युख़्रिजल्लाहु अज़्ग़ा-नहुम **(29)** व लौ नशा-उ ल-अरैना-कहुम् फ़-ल-अ़रफ़्तहुम् बिसीमाहुम्, व ल-तअ़्रिफ़न्नहुम् फ़ी लह़्निल्-क़ौलि, वल्लाहु यअ़्लमु अअ़्मालकुम **(30)** व ल-नब्लुवन्नकुम् हत्ता नअ़्-लमल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम् वस्साबिरी-न व नब्लु-व अख़्बा-रकुम **(31)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि व शाक़्क़ुर्रसू-ल मिम्बअ़्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदा लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन्, व स-युह्बितु अअ़्मालहुम **(32)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्रसू-ल व ला तुब्तिलू अअ़्मालकुम **(33)** इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्-यग़्फ़िरल्लाहु लहुम **(34)** फ़ला तहिनू व तद्अ़ू इलस्सल्मि व अन्तुमुल्-अअ़्लौ-न वल्लाहु म-अ़कुम् व लंय्यति-रकुम् अअ़्मालकुम **(35)** इन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअिबुंव्-व लह्वुन्, व इन् तुअ़्मिनू व तत्तक़ू युअ़्तिकुम् उजू-रकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्वालकुम **(36)** इंय्यस्अल्कुमूहा फ़-युह्फ़िकुम् तब्ख़लू व युख़्रिज् अज़्ग़ा-नकुम **(37)** हा-अन्तुम् हा-उला-इ तुद्औ़-न लितुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मंय्यब्ख़लु व मंय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अ़न्- नफ़्सिही, वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़रा-उ व इन् त-तवल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम **(38)** ❖

وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا
رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم
بِسِيمَاهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ وَنَبْلُوَ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ
فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ
وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَن يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ
وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾
إِن يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنتُمْ
هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَ
مَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِ ۚ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ
وَإِن تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُم ﴿٣٨﴾

48 सूरतुल्-फ़त्हि 111

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2555 अक्षर, 568 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना फ़-तह्ना ल-क फ़त्हम्-मुबीना (1) लि-यग़्फ़ि-र लकल्लाहु मा तक़द्द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ्-म-तहू अ़लै-क व यह्दि-य-क सिरातम्- मुस्तक़ीमा (2) व यन्सु-रकल्लाहु नस्रन् अ़ज़ीज़ा (3) हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकि-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ् ईमानिहिम्, व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (4) लियुद्ख़िलल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अ़न्हुम् सय्यिआ-तिहिम्, व का-न ज़ालि-क अ़िन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (5) व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्-मुश्रिकी-न वल्मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्लाहि ज़न्नस्सौइ, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्-सौइ व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् व ल-अ़-नहुम् व अ-अ़द्-द लहुम् जहन्न-म, व साअत् मसीरा (6) व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (7) इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (8) लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअ़ज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहु, व तुसब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला (9) इन्नल्लज़ी-न युबायिअू-न-क इन्नमा युबायिअूनल्ला-ह, यदुल्लाहि फ़ौ-क़ ऐदीहिम् फ़-मन्-न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही व मन् औफ़ा

حٰمٓ ٢٦ — ٩٦١ — الفتح ٤٨

سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ — وَهِيَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنۢبِكَ
وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُۥ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَٰطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿٢﴾ وَ
يَنصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِىٓ أَنزَلَ السَّكِينَةَ فِى قُلُوبِ
الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوٓا۟ إِيمَٰنًا مَّعَ إِيمَٰنِهِمْ ۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَٰوَٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَٰتِ
جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ
سَيِّـَٔاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٥﴾ وَيُعَذِّبَ الْمُنَٰفِقِينَ
وَالْمُنَٰفِقَٰتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَٰتِ الظَّآنِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ
عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ
جَهَنَّمَ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا ﴿٦﴾ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ
اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٧﴾ إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾
لِّتُؤْمِنُوا۟ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَ
أَصِيلًا ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ
أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا
عَٰهَدَ عَلَيْهُ اللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ

बिमा आ़-ह-द अ़लैहुल्ला-ह फ़-सयुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (10) ❖

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ़्राबि श-ग़लत्ना अम्वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना यक़ूलू-न बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्अ़न्, बल् कानल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न ख़बीरा (11) बल् ज़नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-बदंव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी क़ुलूबिकुम् व ज़नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (12) व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ़्तद्ना लिल्काफ़िरी-न सअ़ीरा (13) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (14) स-यक़ूलुल्- मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त-लक़्तुम् इला मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ़्कुम् युरीदू-न अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि, क़ुल्-लन् तत्तबिअ़ूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सुदू-नना बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (15) क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ़्राबि स-तुद्औ़-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ़-इन् तुतीअ़ू युअ्तिकुमुल्लाहु अज्रन् ह-सनन् व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् क़ब्लु युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (16) लै-स अ़लल्-अअ़्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ़्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुन्, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू

مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ
بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۭ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ⑪ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ
اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ
وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ⑫ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ⑬ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑭ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ
اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۭ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۭ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ⑮
قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ
شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ⑯
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ
حَرَجٌ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा ● (17) ❖

ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज़् युबायिअ़ून-क तह्तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्सकी-न-त अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्हन् क़रीबा (18) व मग़ानि-म कसी-रतंय्-यअ्ख़ुज़ूनहा, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (19) व-अ़-दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-रतन् तअ्ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम् व लितकू-न आ-यतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्- मुस्तक़ीमा (20) व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अहातल्लाहु बिहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (21) व लौ क़ात-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल् -अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव् व ला नसीरा (22) सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (23) व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत्नि मक्क-त मिम्-बअ़्दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अ़लैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीरा (24) हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअ्कूफ़न् अंय्यब्लु-ग़ महिल्-लहू, व लौ ला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम् मुअ्मिनातुल्-लम् तअ़्लमूहुम् अन् त-तऊहुम् फ़तुसी-बकुम् मिन्हुम् म-अ़र्रतुम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् लियुद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशा-उ लौ तज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (25)

الْأَنْهٰرُ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيْمًا ۟ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ
الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ
فَأَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۟ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً
يَّأْخُذُوْنَهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۟ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً
تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ
اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۟ وَّأُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا
عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۟
وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيْرًا ۟ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ
اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۟ وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۟ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا أَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۭ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ
وَنِسَاۗءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ أَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ
مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا
لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ۟ إِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

इज़् ज-अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यतल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-मतत्-तक़्वा व कानू अ-हक़्-क़ बिहा व अह्लहा, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (26) ❖

ल-क़द् स-दक़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्या बिल्हक़्क़ि ल-तद्ख़ुलुन्नल्-मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊ-सकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न, फ़-अ़लि-म मा लम् तअ्लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्हन् क़रीबा (27) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (28) मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि, वल्लज़ी-न म-अ़हू अशिद्दा-उ अ़लल्-कुफ़्फ़ारि रु-हमा-उ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अ़न् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि, ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम् फ़िल्-इन्जीलि, क-ज़र्अ़िन् अख़्र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्तवा अ़ला सूक़िही युअ्जिबुज़्ज़ुर्रा-अ़ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र, व-अ़द--ल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा (29) ❖

49 सूरतुल्-हुजुराति 106

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1573 अक्षर, 350 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह,

इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम **(1)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर्फ़अू अस्वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्-नबिय्यि व ला तज्हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि बअ्ज़िकुम् लि-बअ्ज़िन् अन् तह्ब-त अअ्मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अुरून **(2)** इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अिन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्लज़ीनम्-त-हनल्लाहु क़ुलू-बहुम् लित्तक़्वा, लहुम्-मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अज़ीम **(3)** इन्नल्लज़ी-न युनादून-क मिंव्वरा-इल्-हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ्क़िलून **(4)** व लौ अन्नहुम् स-बरू हत्ता तख़्रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्-लहुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(5)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिक़ुम् बि-न-बइन् फ़-तबय्यनू अन् तुसीबू क़ौमम्-बि-जहालतिन् फ़तुस्बिहू अला मा फ़-अ़ल्तुम् नादिमीन **(6)** वअ्लमू अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि, लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम् मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम् व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र-ह इलैकुमुल्-कुफ़्-र वल्फ़ुसू-क़ वल्-अिस्या-न, उलाइ-क हुमुर्-राशिदून **(7)** फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व निअ्-मतन्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम **(8)** व इन् ताइ-फ़तानि मिनल्-मुअ्मिनीनक़्त-तलू फ़-अस्लिहू बैनहुमा फ़-इम् ब-ग़त् इह्दाहुमा अलल्-उख़्रा फ़क़ातिलुल्लती तब्ग़ी हत्ता तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि फ़-इन् फ़ाअत् फ़-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व अक़्सितू, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन **(9)** इन्नमल्-मुअ्मिनू-न इख़्वतुन् फ़-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह लअल्लकुम्

حٰمٓ ٢٦ ۴٦٥ الحجرٰت ٤٩

اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ
اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٢ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ
اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ
لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٣ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ
وَّرَاۗءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى
تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اِنْ جَاۗءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ
فَتُصْبِحُوْا عَلٰي مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ
اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ
الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَ
الْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ۙ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨ وَاِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا
فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ
تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَاۗءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا
بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ

منزل ٦

तुर्‌हमून ▲ (10) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यस्ख़र् क़ौमुम्-मिन् क़ौमिन् असा अंय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसा-उम् मिन्-निसाइन् असा अंय्यकुन्-न ख़ैरम्-मिन्हुन्-न व ला तल्मिज़ू अन्फ़ु-सकुम् व ला तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाबि, बिअ्-स लिस्मुल्-फ़ुसूक़ु बअ्‌दल्-ईमानि व मल्-लम् यतुब् फ़-उलाइ-क हुमुज़्-ज़ालिमून (11) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू कसीरम् मिनज़्ज़न्नि इन्-न बअ्‌ज़ज़्ज़न्नि इस्मुंव्-व ला तजस्स-सू व ला यग़्तब् बअ्‌ज़ुकुम् बअ्‌ज़न्, अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्‌कु-ल लह्-म अख़ीहि मैतन् फ़-करिह्तुमूहु, वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह तव्वाबुर्रहीम (12) या अय्युहन्नासु इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव्-व उन्सा व ज-अ़ल्नाकुम् शुअूबंव्-व क़बाइ-ल लि-तआ-रफ़ू, इन्-न अक्र-मकुम् अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर (13) क़ालतिल्-अअ्‌राबु आमन्ना, क़ुल्-लम् तुअ्‌मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्लम्ना व लम्मा यद्‌ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम्, व इन् तुतीअुल्ला-ह व रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्‌मालिकुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (14) इन्नमल्-मुअ्‌मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जा-हदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (15) क़ुल् अ-तुअ़ल्लिमूनल्ला-ह बिदीनिकुम्, वल्लाहु यअ्‌लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु

إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٠﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا
مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّن نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا
تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۖ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ
بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ
وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن
يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ
شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا وَلَٰكِن
قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا
اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٤﴾ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا
وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ

बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(16)** यमुन्नू-न अ़लै-क अन् अस्लमू, क़ुल्-ला तमुन्नू अ़लय्-य इस्लामकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिल्ईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(17)** इन्नल्ला-ह यअ़्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु बसीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(18)** ❖

50 सूरतु क़ाफ़ 34

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1525 अक्षर, 376 शब्द, 45 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ाफ़्। वल्-क़ुर्आनिल्-मजीद **(1)** बल् अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अ़जीब **(2)** अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि-क रज्अुम्-बअ़ीद **(3)** क़द् अ़लिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम् व अ़िन्दना किताबुन् हफ़ीज़ **(4)** बल् कज़्ज़बू बिल्-हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज **(5)** अ-फ़लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन् फ़ुरूज **(6)** वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज **(7)** तब्सि-रतंव्-व ज़िक्रा लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब **(8)** व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रकन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद **(9)** वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्-लहा तल्अुन्-नज़ीद **(10)** रिज़्क़ल्-लिल्अ़िबादि व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मैतन्, कज़ालिकल्-ख़ुरूज **(11)** कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद **(12)** व आ़दुंव्-व फ़िर्औ़नु

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ
أَسْلَمُوا ۖ قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ
هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قٓ ۚ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ
ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَ
عِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ
فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ﴿٥﴾ أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَ
زَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ﴿٦﴾ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا
رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ
لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ﴿٨﴾ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ
جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَهَا طَلْعٌ نَضِيدٌ ﴿١٠﴾ رِزْقًا
لِلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ

व इख़्वानु लूत **(13)** व अस्हाबुल्-ऐ-कति व क़ौमु तुब्बअिन्, कुल्लुन् कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वअ़ीद **(14)** अ-फ़-अ़यीना बिल्ख़ल्क़िल्-अव्वलि, बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद **(15)** ❖

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न व नअ़्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद **(16)** इज़् य-तलक़्क़ल्-मु-तलक़्क़ियानि अ़निल्-यमीनि व अ़निश्शिमालि क़अ़ीद **(17)** मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अ़तीद **(18)** व जाअत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद **(19)** व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि, ज़ालि-क यौमुल्-वअ़ीद **(20)** व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम् म-अ़हा सा-इक़ुंव्-व शहीद **(21)** ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-कशफ़्ना अ़न्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद **(22)** व क़ा-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अ़तीद **(23)** अल्क़िया फ़ी जहन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अ़नीद **(24)** मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ़्तदिम्-मुरीब **(25)** अल्लज़ी ज-अ़-ल मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अ़ज़ाबिश्-शदीद **(26)** क़ा-ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद **(27)** क़ा-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्-वअ़ीद **(28)** मा युबद्दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद **(29)** ❖

यौ-म नक़ूलु लि-जहन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद **(30)** व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिल्मुत्तक़ी-न ग़ै-र बअ़ीद **(31)** हाज़ा मा तू-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन्

قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّاَصۡحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوۡدُ ۙ وَعَادٌ وَّفِرۡعَوۡنُ وَاِخۡوَانُ
لُوۡطٍ ۙ وَّاَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ وَقَوۡمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ
وَعِيۡدِ ۚ اَفَعَيِيۡنَا بِالۡخَلۡقِ الۡاَوَّلِ ؕ بَلۡ هُمۡ فِىۡ لَبۡسٍ مِّنۡ خَلۡقٍ
جَدِيۡدٍ ۚ وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ وَنَعۡلَمُ مَا تُوَسۡوِسُ بِهٖ نَفۡسُهٗ ۖ ۚ
وَنَحۡنُ اَقۡرَبُ اِلَيۡهِ مِنۡ حَبۡلِ الۡوَرِيۡدِ ۚ اِذۡ يَتَلَقَّى الۡمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ
الۡيَمِيۡنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيۡدٌ ۚ مَا يَلۡفِظُ مِنۡ قَوۡلٍ اِلَّا لَدَيۡهِ
رَقِيۡبٌ عَتِيۡدٌ ۚ وَجَآءَتۡ سَكۡرَةُ الۡمَوۡتِ بِالۡحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنۡتَ
مِنۡهُ تَحِيۡدُ ۚ وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمُ الۡوَعِيۡدِ ۚ وَجَآءَتۡ كُلُّ
نَفۡسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيۡدٌ ۚ لَقَدۡ كُنۡتَ فِىۡ غَفۡلَةٍ مِّنۡ هٰذَا
فَكَشَفۡنَا عَنۡكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الۡيَوۡمَ حَدِيۡدٌ ۚ وَقَالَ قَرِيۡنُهٗ
هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيۡدٌ ؕ اَلۡقِيَا فِىۡ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيۡدٍ ۙ مَّنَّاعٍ
لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ مُّرِيۡبِ ۙ الَّذِىۡ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلۡقِيٰهُ فِى
الۡعَذَابِ الشَّدِيۡدِ ۚ قَالَ قَرِيۡنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطۡغَيۡتُهٗ وَلٰكِنۡ كَانَ فِىۡ
ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ۚ قَالَ لَا تَخۡتَصِمُوۡا لَدَىَّ وَقَدۡ قَدَّمۡتُ اِلَيۡكُمۡ
بِالۡوَعِيۡدِ ۚ مَا يُبَدَّلُ الۡقَوۡلُ لَدَىَّ وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ۚ يَوۡمَ
نَقُوۡلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امۡتَلَـئْتِ وَتَقُوۡلُ هَلۡ مِنۡ مَّزِيۡدٍ ۚ وَاُزۡلِفَتِ

हफ़ीज़ (32) मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ बिक़ल्बिम्-मुनीब (33) उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन्, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुलूद (34) लहुम्-मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद (35) व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्-बिलादि, हल् मिम्-महीस (36) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू क़ल्बुन् औ अल्क़स्सम्-अ़ व हु-व शहीद (37) व ल-क़द् ख़लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्लुग़ूब (38) फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्लल्-ग़ुरूब (39) व मिनल्लैलि फ़-सब्बिह्हु व अद्बारस्-सुजूद (40) वस्तमिअ़् यौ-म युनादिल्-मुनादि मिम्-मकानिन् क़रीब (41) यौ-म यस्मअ़ूनस्-सै-ह-त बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज (42) इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल्-मसीर (43) यौ-म त-शक़्क़-क़ुल्-अर्ज़ु अ़न्हुम् सिराअ़न्, ज़ालि-क हश्रुन् अ़लैना यसीर (44) नह्नु अअ़्लमु बिमा यक़ूलू-न व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-जब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्-क़ुरआनि मंय्यख़ाफ़ु वअ़ीद (45) ❖

الذّٰرِيٰت ٥١ ٩٦٩ حٰمٓ ٢٦

الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ
حَفِيْظٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝
ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا
مَزِيْدٌ ۝ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا
فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى
لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَ
قَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ
يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ
يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝
سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝ فَالْمُقَسِّمٰتِ

منزل

51 सूरतुज़्-ज़ारियाति 67

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1559 अक्षर, 360 शब्द, 60 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन् (1) फ़ल्-हामिलाति विक़्रन् (2) फ़ल्-जारियाति युस्रन् (3)

फ़ल्-मुक़स्सिमाति अम्रन् (4) इन्नमा तू-अ़दू-न लसादिक़ (5) व इन्नद्दी-न ल-वाकिअ़् (6) वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकि (7) इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़ (8) युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक् (9) क़ुतिलल्-ख़र्रासून (10) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्-रतिन् साहून (11) यस्अलू-न अय्या-न यौमुद्दीन (12) यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (13) ज़ूक़ू फ़ित्न-तकुम्, हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून (14) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (15) आख़िज़ी-न मा आताहुम् रब्बुहुम्, इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह्सिनीन (16) कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा यह्जअ़ून (17) व बिल्-अस्हारि हुम् यस्तग्फ़िरून (18) व फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुल्-लिस्सा-इलि वल्-मह्रूम (19) व फ़िल्अर्ज़ि आयातुल्-लिल्मूक़िनीन (20) व फ़ी अन्फ़ुसिकुम् अ-फ़ला तुब्सिरून (21) व फ़िस्समा-इ रिज़्क़ुकुम् व मा तू-अ़दून (22) फ़-वरब्बिस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-हक़्क़ुम्- मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिक़ून (23) ❖

हल् अता-क हदीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन ✣ (24) इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् क़ौमुम्-मुन्करून (25) फ़रा-ग़ इला अह्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन् समीन (26) फ़-क़र्र-बहू इलैहिम् क़ा-ल अला तअ्कुलून (27) फ़-औज-स मिन्हुम् ख़ी-फ़तन्, क़ालू ला तख़फ़्, व बश्श-रूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (28) फ़-अक़्ब-लतिम्-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम (29) क़ालू कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि, इन्नहू हुवल् हकीमुल्-अ़लीम (30)

أَمْرًا ۙ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۙ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۙ وَالسَّمَاءِ
ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُخْتَلِفٍ ۙ يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ
أُفِكَ ۙ قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۙ الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۙ
يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ۙ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۙ
ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۙ إِنَّ الْمُتَّقِينَ
فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۙ آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَبْلَ ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ۙ كَانُوا قَلِيلًا مِنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۙ وَ
بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۙ وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ
وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُوقِنِينَ ۙ وَفِي أَنْفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۙ
وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۙ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ
لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ۙ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ
الْمُكْرَمِينَ ۙ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ۙ
فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۙ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا
تَأْكُلُونَ ۙ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ
عَلِيمٍ ۙ فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ
عَقِيمٌ ۙ قَالُوا كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۙ

सत्ताईसवाँ पारः क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम्

सूरतुज़्-ज़ारियाति (आयत 31 से 60)

क़ा-ल फ़मा ख़ात्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (31) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (32) लिनुर्सि-ल अ़लैहिम् हिजा-रतम्-मिन् तीन (33) मुस्व्व-मतन् अि़न्-द रब्बि-क लिल्-मुस्रिफ़ीन (34) फ़-अख़्रज्ना मन् का-न फ़ीहा मिनल्-मुअ्मिनीन (35) फ़मा वजद्ना फ़ीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (36) व तरक्ना फ़ीहा आ-यतल्-लिल्लज़ी-न यख़ाफ़ूनल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (37) व फ़ी मूसा इज़् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन (38) फ़-तवल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहिरुन् औ मज्नून (39) फ़-अख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि व हु-व मुलीम (40) व फ़ी आ़दिन् इज़् अर्सल्ना अ़लैहिमुर्-रीहल्-अ़क़ीम (41) मा त-ज़रु मिन् शैइन् अतत् अ़लैहि इल्ला ज-अ़लत्हु कर्रमीम (42) व फ़ी समू-द इज़् क़ी-ल लहुम् त-मत्तअू हत्ता हीन (43) फ़-अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअि़-क़तु व हुम् यन्ज़ुरून (44) फ़मस्तताअू मिन् क़ियामिंव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (45) व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (46) ❖

वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिंव्-व इन्ना ल-मूसिअून (47) वल्अर्-ज़ फ़रश्नाहा फ़निअ्मल्-माहिदून (48) व मिन् कुल्लि शैइन् ख़लक़्ना ज़ौजैनि लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (49) फ़-फ़िर्रू इलल्लाहि, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (50) व ला तज्अ़लू

قال فما خطبكم ايها المرسلون ۝ قالوا انا ارسلنا الى قوم
مجرمين ۝ لنرسل عليهم حجارة من طين ۝ مسومة عند
ربك للمسرفين ۝ فاخرجنا من كان فيها من المؤمنين ۝
فما وجدنا فيها غير بيت من المسلمين ۝ وتركنا فيها اية
للذين يخافون العذاب الاليم ۝ وفي موسى اذ ارسلنه الى
فرعون بسلطن مبين ۝ فتولى بركنه وقال سحر او مجنون ۝
فاخذنه وجنوده فنبذنهم في اليم وهو مليم ۝ وفي عاد اذ
ارسلنا عليهم الريح العقيم ۝ ما تذر من شيء اتت عليه
الا جعلته كالرميم ۝ وفي ثمود اذ قيل لهم تمتعوا حتى حين ۝
فعتوا عن امر ربهم فاخذتهم الصعقة وهم ينظرون ۝ فما
استطاعوا من قيام وما كانوا منتصرين ۝ وقوم نوح من
قبل انهم كانوا قوما فسقين ۝ والسماء بنينها بايد وانا
لموسعون ۝ والارض فرشنها فنعم الماهدون ۝ ومن كل شيء
خلقنا زوجين لعلكم تذكرون ۝ ففروا الى الله اني لكم منه نذير
مبين ۝ ولا تجعلوا مع الله الها اخر اني لكم منه نذير مبين ۝
كذلك ما اتى الذين من قبلهم من رسول الا قالوا سحر او

मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (51) कज़ालि-क मा अ़तल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून (52) अ-तवासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् ताग़ून (53) फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् फ़मा अन्-त बि-मलूम (54) व ज़क्किर् फ़-इन्नज़्ज़िक्रा तन्फ़अुल्-मुअ्मिनीन (55) व मा ख़लक़्तुल्-जिन्-न वल्-इन्-स इल्ला लि-यअ़्बुदून (56) मा उरीदु मिन्हुम् मिर्रिज़्क़िंव्-व मा उरीदु अंय्युत्अिमून (57) इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्-क़ुव्वतिल्-मतीन (58) फ़-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नूबम्-मिस्-ल ज़नूबि-अस्हाबिहिम् फ़ला यस्तअ्जिलून (59) फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिंय्यौमि--हिमुल्लज़ी यू-अ़दून (60) ❖

52 सूरतुत्-तूरि 76

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1334 अक्षर, 319 शब्द, 49 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वत्तूरि (1) व किताबिम्-मस्तूरिन् (2) फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव्- (3) -वल्-बैतिल्-मअ़्मूर (4) वस्सक़्फ़िल्-मर्फ़ूअ़ि (5) वल्-बह़्रिल्-मस्जूर (6) इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क लवाक़िअ़् (7) मा लहू मिन् दाफ़िअ़िंय्- (8) -यौ-म तमूरुस्-समा-उ मौरंव्- (9) -व तसीरुल्-जिबालु सैरा (10) फ़वैलुंय्यौ-मइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (11) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ख़ौज़िंय्यल्-अ़बून ✣ (12) यौ-म युदअ़्अ़ू-न इला नारि जहन्न-म दअ़्अ़ा (13) हाज़िहिन्नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (14) अ-फ़सिह़्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्सिरून (15) इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अ़लैकुम्, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (16) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ ٢٧ ٨٦٢ الطُّور ٥٢

مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾ أَتَوَاصَوْا بِهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنتَ
بِمَلُومٍ ﴿٥٤﴾ وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ
وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن
يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ﴿١﴾ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ﴿٣﴾ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾
وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾
مَّا لَهُ مِن دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾
فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾
يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا
تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾ أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا
أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ﴿١٧﴾ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَ
وَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿١٨﴾ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ

منزل ٧

❖ रु. 3/14/2 ✣ व. लाज़िम

व नअ़ीम (17) फ़ाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम (18) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (19) मुत्तकिई-न अ़ला सुरुरिम्-मस्फ़ू-फ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (20) वल्लज़ी-न आमनू वत्त-बअ़त्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्हक़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व मा अलत्नाहुम् मिन् अ़-मलिहिम् मिन् शैइन्, कुल्लुम्-रिइम् बिमा क-स-ब रहीन (21) व अम्दद्नाहुम् बिफ़ाकि-हतिंव्-व लह्मिम्-मिम्मा यश्तहून (22) य-तनाज़अू-न फ़ीहा कअ्सल्-ला लग्वुन् फ़ीहा व ला तअ्सीम (23) व यतूफ़ु अ़लैहिम् ग़िल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून (24) व अक़्ब-ल बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िंय्य-तसा-अलून (25) क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन (26) फ़-मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्-समूम (27) इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्अूहु, इन्नहू हुवल् बर्रुर्-रहीम (28) ❖

फ़-ज़क्किर् फ़मा अन्-त बिनिअ़्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून (29) अम् यक़ूलू-न शाअ़िरुन् न-तरब्बसु बिही रैबल्-मनून (30) क़ुल् त-रब्बसू फ़-इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मु-तरब्बिसीन (31) अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामुहुम् अम् हुम् क़ौमुन् ताग़ून

تعملون ۝ متكـٔين على سرر مصفوفة وزوجنهم بحور عين ۝
والذين امنوا واتبعتهم ذريتهم بايمان الحقنا بهم ذريتهم
وما التنهم من عملهم من شيء كل امرئ بما كسب رهين ۝
وامددنهم بفاكهة ولحم مما يشتهون ۝ يتنازعون فيها كاسا
لا لغو فيها ولا تاثيم ۝ ويطوف عليهم غلمان لهم كانهم لؤلؤ
مكنون ۝ واقبل بعضهم على بعض يتساءلون ۝ قالوا انا كنا
قبل في اهلنا مشفقين ۝ فمن الله علينا ووقنا عذاب السموم ۝
انا كنا من قبل ندعوه انه هو البر الرحيم ۝ فذكر فما انت بنعمت
ربك بكاهن ولا مجنون ۝ ام يقولون شاعر نتربص به ريب
المنون ۝ قل تربصوا فاني معكم من المتربصين ۝ ام تامرهم
احلامهم بهذا ام هم قوم طاغون ۝ ام يقولون تقوله بل
لا يؤمنون ۝ فلياتوا بحديث مثله ان كانوا صدقين ۝ ام
خلقوا من غير شيء ام هم الخالقون ۝ ام خلقوا السموت
والارض بل لا يوقنون ۝ ام عندهم خزاين ربك ام هم
المصيطرون ۝ ام لهم سلم يستمعون فيه فليات مستمعهم
بسلطن مبين ۝ ام له البنت ولكم البنون ۝ ام تسئلهم اجرا

(32) अम् यक़ूलू-न तक़व्व-लहू बल्-ला युअ्मिनून (33) फ़ल्यअ्तू बि-हदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन (34) अम् ख़ुलिक़ू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल्-ख़ालिक़ून (35) अम् ख़-लक़ुस्समावाति वल्अर्-ज़ बल्-ला यूक़िनून (36) अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून (37) अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअू-न फ़ीहि फ़ल्यअ्ति मुस्तमिअ़ुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (38) अम् लहुल्-बनातु व लकुमुल्-बनून (39) अम् तस्-अलुहुम्

अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़रमिम्-मुस्क़लून (40) अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (41) अम् युरीदू-न कैदन्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-मकीदून (42) अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून (43) व इंय्यरौ किस्फ़म्-मिनस्समा-इ साक़ितंय्-यक़ूलू सहाबुम्-मर्कूम (44) फ़-ज़र्हुम् हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्-अ़क़ून (45) यौ-म ला युग़्नी अ़न्हुम् कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (46) व इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू अ़ज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून (47) वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फ़-इन्न-क बि-अअ़्युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ही-न तक़ूम (48) व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व इद्बारन्-नुजूम (49) ❖

53 सूरतुन्-नज्मि 23

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1450 अक्षर, 365 शब्द, 62 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नज्मि इज़ा हवा (1) मा ज़ल्-ल साहिबुकुम् व मा ग़वा (2) व मा यन्तिक़ु अ़निल्-हवा (3) इन् हु-व इल्ला वह्युंय्यूहा (4) अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा (5) ज़ू मिर्रतिन् फ़स्तवा (6) व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ़्ला (7) सुम्-म दना फ़-तदल्ला (8) फ़का-न क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना (9) फ़-औहा इला अ़ब्दिही मा औहा (10) मा क-ज़बल्-फ़ुआदु मा रआ (11) अ-फ़तुमारूनहू अ़ला मा यरा (12) व ल-क़द् रआहु नज़्ल-तन् उख़रा (13) अिन्-द सिद्-रतिल्-मुन्तहा (14) अिन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा (15) इज़् यग़्शस्-सिद्-र-त

النجم ٥٣ ٨٢٧ قال فما خطبكم ٢٧

فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾ أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾
أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾ أَمْ لَهُمْ
إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾ وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ
السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

سورة النجم مكية — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ﴿٢﴾ وَمَا يَنطِقُ عَنِ
الْهَوَىٰ ﴿٣﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ﴿٤﴾ عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ﴿٥﴾ ذُو مِرَّةٍ
فَاسْتَوَىٰ ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ
قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿٩﴾ فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ﴿١٠﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ
مَا رَأَىٰ ﴿١١﴾ أَفَتُمَارُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ﴿١٣﴾
عِندَ سِدْرَةِ الْمُنتَهَىٰ ﴿١٤﴾ عِندَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ﴿١٥﴾ إِذْ يَغْشَى
السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ

منزل ٧

❖ रु. 2/21/4

मा यग़्शा (16) मा ज़ाग़ल्-ब-सरु व मा तग़ा (17) ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (18) अ-फ़-रऐतुमुल्ला-त वल्उज़्ज़ा (19) व मनातस्सालि-सतल्-उख़्रा (20) अ-लकुमुज़्-ज़-करु व लहुल्-उन्सा (21) तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा (22) इन् हि-य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व मा तह्वल्-अन्फ़ुसु व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-हिमुल्-हुदा (23) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना (24) फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-ऊला (25) ❖

व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ा-अ़तुहुम् शैअन् इल्ला मिम्बअ़्दि अंय्यअ्-ज़नल्लाहु लिमंय्यशा-उ व यर्ज़ा (26) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ल-युसम्मूनल्-मलाइ-क-त तस्मि-यतल्-उन्सा (27) व मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन्, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन्नज़्-ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैआ (28) फ़-अअ़्रिज़् अ़म्-मन् तवल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल्-हयातद्दुन्या (29) ज़ालि-क मब्लग़ुहुम् मिनल्-अ़िल्मि, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ़्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ़्लमु बि-मनिह्तदा ◆ (30) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्सनू बिल्हुस्ना (31) अल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्-फ़वाहि-श इल्लल्-ल-मम्, इन्-न रब्ब-क वासिअुल्-मग़्फ़ि-रति, हु-व अअ़्लमु बिकुम् इज़् अन्श-अकुम् मिनल्-अर्ज़ि व इज़् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् फ़ला तुज़क्कू अन्फ़ु-सकुम्, हु-व अअ़्लमु बि-मनित्तक़ा (32) ❖

أٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾ أَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ
الْأُخْرٰى ﴿٢٠﴾ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾
إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوْهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَّا أَنْزَلَ اللّٰهُ
بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ
وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾
فَلِلّٰهِ الْآخِرَةُ وَالْأُوْلٰى ﴿٢٥﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَّأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾
إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى ﴿٢٧﴾
وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ
مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾ فَأَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ أَسَاءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ
أَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا
اللَّمَمَ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِّنَ
الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ أُمَّهٰتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ

अ-फ़-रएेतल्लज़ी तवल्ला **(33)** व अअ्ता क़लीलंव्-व अक्दा **(34)** अ-अिन्दहू अिल्मुल्-ग़ैबि फ़हु-व यरा **(35)** अम् लम् युनब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसा **(36)** व इब्राहीमल्लज़ी वफ़्फ़ा **(37)** अल्ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा **(38)** व अल्लै-स लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआ **(39)** व अन्-न सअ्-यहू सौ-फ़ युरा **(40)** सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ाअल्-औफ़ा **(41)** व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहा **(42)** व अन्नहू हु-व अज़्ह-क व अब्का **(43)** व अन्नहू हु-व अमा-त व अह्या **(44)** व अन्नहू ख़ा-लक़ज़्ज़ौजैनिज़्ज़-क-र वल्-उन्सा **(45)** मिन्-नुत्फ़तिन् इज़ा तुम्ना **(46)** व अन्-न अ़लैहिन्-नश-अतल्-उख़्रा **(47)** व अन्नहू हु-व अग्ना व अक़्ना **(48)** व अन्नहू हु-व रब्बुश्-शिअ्रा **(49)** व अन्नहू अह्ल-क आ-द-निल्ऊला **(50)** व समू-द फ़मा अब्क़ा **(51)** व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू हुम् अज़्ल-म व अत्ग़ा **(52)** वल्-मुअ्तफ़ि-क-त अह्वा **(53)** फ़-ग़श्शाहा मा ग़श्शा **(54)** फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-क त-तमारा **(55)** हाज़ा नज़ीरुम् मिनन्-नुज़ुरिल्-ऊला **(56)** अज़ि-फ़तिल्-आज़िफ़ह् **(57)** लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ह् **(58)** अ-फ़-मिन् हाज़ल्-हदीसि तअ्जबून **(59)** व तज़्हकू-न व ला तब्कून (60) व अन्तुम् सामिदून (61) फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्बुदू ❑ (62) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ ۴۷۶ القمر ٥٤

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۝ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ۝ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ
اَكْدٰى ۝ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ
صُحُفِ مُوْسٰى ۝ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰى ۝ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ
اُخْرٰى ۝ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ
يُرٰى ۝ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝ وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝ وَ
اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝ وَاَنَّهٗ خَلَقَ
الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝ وَاَنَّ عَلَيْهِ
النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ
الشِّعْرٰى ۝ وَاَنَّهٗ اَهْلَكَ عَادَا الْاُوْلٰى ۝ وَثَمُوْدَا فَمَا اَبْقٰى ۝ وَقَوْمَ
نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۝ وَالْمُؤْتَفِكَةَ
اَهْوٰى ۝ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝ هٰذَا
نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۝ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝ وَتَضْحَكُوْنَ وَ
لَا تَبْكُوْنَ ۝ وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝
سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا

منزل ٧

54 सूरतुल् क़-मरि 37

इस सूरः में अ़रबी के 1482 अक्षर, 348 शब्द, 55 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्त-र-बतिस्सा-अ़तु वन्शक़्क़ल्-क़मर् (1) व इंय्यरौ आ-यतंय्-युअ्‌रिज़ू व यक़ूलू

सिह्रुम्-मुस्तमिर्रं (2) व कज़्ज़बू वत्त-बअ़ू अह्वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (3) व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बा-इ मा फ़ीहि मुज़्-दजर् (4) हिक्मतुम् बालि-ग़तुन् फ़मा तुग़्निन्-नुज़ुर (5) फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् ✣ यौ-म यद्अुद्-दाअि इला शैइन्-नुकुर (6) ख़ुश्श-अ़न् अब्सारुहुम् यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर (7) मुह्तिअ़ी-न इलद्-दाअि, यक़ूलुल्-काफ़िरू-न हाज़ा यौमुन् अ़सिर (8) कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिन् फ़-कज़्ज़बू अ़ब्-दना व क़ालू मज्नूनुंव्-वज़्दुजिर (9) फ़-दआ़ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन् फ़न्तसिर (10) फ़-फ़तह्ना अब्वाबस्-समा-इ बिमाइम्-मुन्हमिर (11) व फ़ज्जर्नल्-अर्-ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्तक़ल्-मा-उ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर (12) व हमल्नाहु अ़ला ज़ाति अल्वाहिंव्-व दुसुर (13) तज्री बि-अअ़्युनिना जज़ाअल्-लिमन् का-न कुफ़िर (14) व लक़त्त-रक्नाहा आ-यतन् फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (15) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (16) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (17) कज़्ज़बत् आ़दुन् फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (18) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी यौमि नह्सिम्-मुस्तमिर्र (19) तन्ज़िअ़ुन्ना-स क-अन्नहुम् अअ़्जाज़ु नख़्लिम्-मुन्क़अ़िर (20) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (21) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (22) ❖

कज़्ज़बत् समूदु बिन्नुज़ुर (23) फ़क़ालू अ-ब-शरम् मिन्ना वाहिदन् नत्तबिअ़ुहू इन्ना इज़ल्-लफ़ी ज़लालिंव्-व सुअ़ुर (24) अ-उल्क़ि-यज़्ज़िक्रु अ़लैहि मिम्बैनिना बल् हु-व

سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝
وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّنَ الْأَنبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا
تُغْنِ النُّذُرُ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝
خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ
مُّنتَشِرٌ ۝ مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝
فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ۝ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ
مُّنْهَمِرٍ ۝ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ
قُدِرَ ۝ وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً
لِّمَن كَانَ كُفِرَ ۝ وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن
مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝ تَنزِعُ النَّاسَ
كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَ
لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝
فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَأُلْقِيَ

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 1/22/8

कज़्ज़ाबुन् अशिर (25) स-यअ्लमू-न ग़दम्- मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (26) इन्ना मुर्सिलुन्ना-क़ति फ़ित्न-तल्-लहुम् फ़र्तक़िब्हुम् वस्तबिर (27) व नब्बिअ्हुम् अन्नल्-मा-अ क़िस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिर्बिम्-मुह्त-ज़र (28) फ़नादौ साहि-बहुम् फ़-तआता फ़-अक़र (29) फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (30) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् सै-हतंव्-वाहि-दतन् फ़कानू क-हशीमिल्-मुह्तज़िर (31) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (32) कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (33) इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् हासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन्, नज्जैनाहुम् बि-स-हर (34) निअ्-मतम्-मिन् अिन्दिना, कज़ालि-क नज्ज़ी मन् शकर् (35) व ल-क़द् अन्ज़-रहुम् बत्श-तना फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (36) व ल-क़द् रा-वदूहु अ़न् ज़ैफ़िही फ़-तमस्ना अअ्यु-नहुम् फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (37) व ल-क़द् सब्ब-हहुम् बुक्र-तन् अ़ज़ाबुम् मुस्तक़िर्र (38) फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (39) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (40) ❖

व ल-क़द् जा-अ आ-ल फ़िर्औनन्-नुज़ुर (41) कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा फ़-अख़ज़्नाहुम् अख़्-ज़ अ़ज़ीज़िम्-मुक़्तदिर (42) अ-कुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्-मिन् उलाइकुम् अम् लकुम् बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर (43) अम् यक़ूलू-न नह्नु जमीअुम्-मुन्तसिर (44) सयुह्ज़-मुल् जम्अु व युवल्लूनद्-दुबुर (45) बलिस्सा-अ़तु मौअिदुहुम् वस्सा-अ़तु अद्हा व अमर्र (46) इन्नल्- मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव्-व सुअुर ✣ (47) यौ-म युस्हबू-न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम्, ज़ूक़ू मस्-स सक़र् (48) इन्ना कुल्-ल

القمر ٥٤ ٤٧٨ قال فما خطبكم ٢٧

الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ
الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ
وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾
فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾
إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ
بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾
نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي مَن شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم
بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا
أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ
مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا
فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ أَمْ لَكُم
بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ
الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ
وَأَمَرُّ ﴿٤٦﴾ إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي

منزل ٧

❖ रु. 2/18/9 ✣ व. लाज़िम

शैइन् ख़लक़्नाहु बि-क़्-दर **(49)** व मा अम्रुना इल्ला वाहि-दतुन् क-लम्हिम्-बिल्ब-सर **(50)** व ल-क़द् अह्लक्ना अश्या-अ़कुम् फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर **(51)** व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर **(52)** व कुल्लु सग़ीरिंव्-व कबीरिम्-मुस्त-तर **(53)** इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व न-हर **(54)** फ़ी मक़्अ़दि सिद्क़िन् अ़िन्-द मलीकिम्-मुक़्तदिर **(55)** ❖

55 सूरतुर्-रह्मानि 97

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1683 अक्षर, 351 शब्द, 78 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अर्रह्मानु **(1)** अ़ल्ल-मल्-क़ुर्आन **(2)** ख़-लक़ल्-इन्सा-न **(3)** अ़ल्ल-म-हुल्-बयान **(4)** अश्शम्सु वल्क़-मरु बिहुस्बानिंव्- **(5)** -वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान **(6)** वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़अ़ल्-मीज़ान **(7)** अल्ला ततृग़ौ फ़िल्मीज़ान **(8)** व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान **(9)** वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल्-अनाम **(10)** फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-वन्नख़्लु ज़ातुल् अक्माम **(11)** वल्हब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ वर्-रैहान **(12)** फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान **(13)** ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्-फ़ख़्ख़ार **(14)** व ख़-लक़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार **(15)** फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान **(16)** रब्बुल्-मश्रिक़ैनि व रब्बुल्-मग़्रिबैन **(17)** फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान **(18)** म-रजल्-बहरैनि यल्तक़ियान **(19)** बैनहुमा बर्-ज़ख़ुल्-ला यब्ग़ियान **(20)** फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान **(21)**

النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ
بِقَدَرٍ ۝ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ۝ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ
اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ۝ وَ
كُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝
فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝

سورة الرحمن — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝
اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝ وَالسَّمَآءَ
رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝ وَاَقِيْمُوا
الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝
فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ
وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ
صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ
لَّا يَبْغِيٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ

❖ रु. 3/15/10

यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जान (22) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (23) व लहुल्-जवारिल्-मुन्श-आतु फ़िल्बह्रि कल्-अअ्लाम ● (24) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (25) ❖

कुल्लु मन् अ़लैहा फ़ानिंव्- (26) -व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम (27) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (28) यस्अलुहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फ़ी शअ्निन् (29) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (30) स-नफ़्रुग़ु लकुम् अय्युहस्स-क़लान (31) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (32) या मअ्-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फ़ुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू, ला तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान (33) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (34) युर्-सलु अ़लैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फ़ला तन्तसिरान (35) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (36) फ़-इज़न् शक़्क़तिस्समा-उ फ़-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान (37) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (38) फ़यौमइज़िल्-ला युस्अलु अ़न् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न (39) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (40) युअ्-रफ़ुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल्-अक़्दाम (41) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (42) हाज़िही जहन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ✣ (43) यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन (44) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (45) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ — ٤٨٠ — الرحمٰن ٥٥

والمرجان ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ وله الجوار المنشآت
في البحر كالأعلام ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ كل من
عليها فان ۚ ويبقى وجه ربك ذو الجلال والإكرام ۚ فبأي
آلاء ربكما تكذبان ۞ يسأله من في السماوات والأرض ۚ كل يوم
هو في شأن ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ سنفرغ لكم أيه
الثقلان ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ يا معشر الجن والإنس
إن استطعتم أن تنفذوا من أقطار السماوات والأرض فانفذوا ۚ
لا تنفذون إلا بسلطان ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ يرسل
عليكما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران ۚ فبأي آلاء
ربكما تكذبان ۞ فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان ۚ
فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ فيومئذ لا يسأل عن ذنبه إنس
ولا جان ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ يعرف المجرمون
بسيماهم فيؤخذ بالنواصي والأقدام ۚ فبأي آلاء ربكما
تكذبان ۞ هذه جهنم التي يكذب بها المجرمون ۞ يطوفون
بينها وبين حميم آن ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ ولمن خاف
مقام ربه جنتان ۚ فبأي آلاء ربكما تكذبان ۞ ذواتا أفنان ۚ

منزل ٧

व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान (46) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (47) ज़वाता अफ़्नान (48) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (49) फ़ीहिमा अ़ैनानि तज्रियानि (50) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (51) फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फ़ाकि-हतिन् ज़ौजान (52) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (53) मुत्तकिई-न अ़ला फ़ुरुशिम्-बता-इनुहा मिन् इस्तब्-रक़िन्, व जनल्-जन्नतैनि दान (54) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़ि--बान (55) फ़ीहिन्-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (56) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (57) क-अन्न-हुन्नल्-याक़ूतु वल्-मर्जान (58) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (59) हल् जज़ाउल्-इह्सानि इल्लल्-इह्सान (60) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (61) व मिन् दूनिहिमा जन्नतान (62) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (63) मुद्हाम्मतानि (64) फ़बि-अय्यि आला--इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (65) फ़ीहिमा अ़ैनानि नज़्ज़ा-ख़तानि (66) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (67) फ़ीहिमा फ़ाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (68) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (69) फ़ीहिन्-न ख़ैरातुन् हिसान (70) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (71) हूरुम्-मक़्सूरातुन् फ़िल्-ख़ियाम (72) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (73) लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (74) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (75) मुत्तकिई-न अ़ला रफ़्रफ़िन् ख़ुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान (76) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (77) तबा-रकस्मु रब्बि-क ज़िल्-जलालि वल्-इक्राम (78) ❖

قال فما خطبكم ٢٧ | ٤٨١ | الرحمٰن ٥٥

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

منزل ٧

56 सूरतुल्-वाकि-अ़ति 46

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1768 अक्षर, 384 शब्द, 96 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा व-क़-अ़तिल्-वाकि-अ़तु (1) लै-स लिवक़्अ़तिहा काज़िबह् ✣ (2) ख़ाफ़ि-ज़तुर्-राफ़ि-अ़ः (3) इज़ा रुज्जतिल्-अर्ज़ु रज्जंव्-(4) -व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा (5) फ़-कानत् हबा-अम् मुम्-बस्संव-(6) -व कुन्तुम् अज़्वाजन् सलासः (7) फ़-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः (8) व अस्हाबुल्-मश्-अ-मति मा अस्हाबुल्-मश्-अमः (9) वस्साबिक़ूनस्-साबिक़ून (10) उलाइ-कल्-मुक़र्रबून (11) फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (12) सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन (13) व क़लीलुम् मिनल्-आख़िरीन (14) अ़ला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम्- (15) -मुत्ताकिई-न अ़लैहा मु-तक़ाबिलीन (16) यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मु-ख़ल्लदून (17) बिअक्वाबिंव्-व अबारी-क़ व कअ्सिम्-मिम्-मअ़ीन (18) ला युसद्-दअू-न अ़न्हा व ला युन्ज़िफ़ून (19) व फ़ाकि-हतिम्-मिम्मा य-तख़य्यरून (20) व लह्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून (21) व हूरुन् अ़ीन (22) क-अम्सालिल्-लुअ्लुइल्-मक्नून (23) जज़ा-अम् बिमा कानू यअ़्मलून (24) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग्वंव्-व ला तअ्सीमा (25) इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (26) व अस्हाबुल्-यमीनि मा अस्हाबुल्-यमीन (27) फ़ी सिद्रिम्-मख़्ज़ूदिंव्- (28) -व तल्हिम्-मन्ज़ूदिंव्- (29) -व ज़िल्लिम् मम्दूदिंव्- (30) -व माइम्-मस्कूब (31) व फ़ाकि-हतिन् कसी-रतिल्- (32) -ला मक्तू-अ़तिंव्-व ला

الواقعة ٥٦ ‏ ٧٨٢ ‏ قال فما خطبكم ٢٧

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ ﴿٣﴾
إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَاءً
مُنْبَثًّا ﴿٦﴾ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ﴿٧﴾ فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ
الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿٩﴾ وَالسَّابِقُونَ
السَّابِقُونَ ﴿١٠﴾ أُولَٰئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ﴿١١﴾ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِنَ
الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿١٤﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مَوْضُونَةٍ ﴿١٥﴾ مُتَّكِئِينَ
عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ﴿١٦﴾ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ﴿١٧﴾ بِأَكْوَابٍ
وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ ﴿١٨﴾ لَا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُونَ ﴿١٩﴾
وَفَاكِهَةٍ مِمَّا يَتَخَيَّرُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٢١﴾ وَ
حُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾ جَزَاءً بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا
سَلَامًا ﴿٢٦﴾ وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ فِي سِدْرٍ
مَخْضُودٍ ﴿٢٨﴾ وَطَلْحٍ مَنْضُودٍ ﴿٢٩﴾ وَظِلٍّ مَمْدُودٍ ﴿٣٠﴾ وَمَاءٍ مَسْكُوبٍ ﴿٣١﴾
وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٣﴾ وَفُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ ﴿٣٤﴾

منزل ٧

✣ व. लाज़िम

मन्नू-अ़तिंव्- **(33)** -व फ़ुरुशिम्-मर्फ़ूअ़: **(34)** इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् **(35)** फ़-जअ़ल्नाहुन्-न अब्कारा **(36)** अ़ुरुबन् अतराबल्- **(37)** -लिअस्हाबिल्-यमीन **(38)** ❖

सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन **(39)** व सुल्लतुम्-मिनल्-आख़िरीन **(40)** व अस्हाबुश्-शिमालि मा अस्हाबुश्-शिमाल **(41)** फ़ी समूमिंव्-व हमीमिंव्- **(42)** -व ज़िल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- **(43)** -ला बारिदिंव्-व ला करीम **(44)** इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुत्-रफ़ीन **(45)** व कानू युसिर्रू-न अ़लल्-हिन्सिल्-अ़ज़ीम **(46)** व कानू यक़ूलू-न अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना ल-मब्अ़ूसून **(47)** अ-व आबाउनल्-अव्वलून **(48)** क़ुल् इन्नल्-अव्वली-न वल्-आख़िरीन **(49)** ल-मज्मूअ़ू-न इला मीक़ाति यौमिम्-मअ़्लूम **(50)** सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ाल्लूनल्-मुकज़्ज़िबून **(51)** ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क़्क़ूम **(52)** फ़मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून **(53)** फ़शारिबू-न अ़लैहि मिनल्-हमीम **(54)** फ़शारिबू-न शुर्बल्-हीम **(54)** हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन **(56)** नह्नु ख़लक़्नाकुम् फ़लौ ला तुसद्दिक़ून **(57)** अ-फ़-रऐतुम्-मा

الواقعة ٥٦ — ۴۸۳ — قال فما خطبكم ٢٧

إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ۝ فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝
لِّأَصْحَٰبِ ٱلْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ ٱلْءَاخِرِينَ ۝
وَأَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ۝ فِى سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَبْلَ
ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا۟ يُصِرُّونَ عَلَى ٱلْحِنثِ ٱلْعَظِيمِ ۝
وَكَانُوا۟ يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَٰمًا أَءِنَّا
لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَءَابَآؤُنَا ٱلْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ إِنَّ ٱلْأَوَّلِينَ وَٱلْءَاخِرِينَ ۝
لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا
ٱلضَّآلُّونَ ٱلْمُكَذِّبُونَ ۝ لَءَاكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ۝ فَمَالِـُٔونَ
مِنْهَا ٱلْبُطُونَ ۝ فَشَٰرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ ٱلْحَمِيمِ ۝ فَشَٰرِبُونَ
شُرْبَ ٱلْهِيمِ ۝ هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ ٱلدِّينِ ۝ نَحْنُ خَلَقْنَٰكُمْ
فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۝ أَفَرَءَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُۥٓ
أَمْ نَحْنُ ٱلْخَٰلِقُونَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ ٱلْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ۝ عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَٰلَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِى مَا
لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلنَّشْأَةَ ٱلْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝
أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝ ءَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلزَّٰرِعُونَ ۝

منزل ٧

तुम्नून **(58)** अ-अन्तुम् तख़्लुक़ूनहू अम् नह्नुल्-ख़ालिक़ून **(59)** नह्नु क़द्दर्ना बैनकुमुल्-मौ-त व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन **(60)** अ़ला अन्-नुबद्दि-ल अम्सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ़्लमून **(61)** व ल-क़द् अ़लिम्तुमुन्-नश्अ-तल्-ऊला फ़लौ ला तज़क्करून **(62)** अ-फ़-रऐतुम्-मा तह्रुसून **(63)** अ-अन्तुम् तज़्-रअ़ूनहू अम् नह्नुज़्-ज़ारिअ़ून **(64)** लौ नशा-उ ल-जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून **(65)** इन्ना

ल-मुग्रमून (66) बल् नह्नु मह्रूमून (67) अ-फ़-रऐतुमुल् मा-अल्लज़ी तश्रबून (68) अ-अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्-मुज़्नि अम् नह्नुल्-मुन्ज़िलून (69) लौ नशा-उ जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौ ला तश्कुरून (70) अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून (71) अ-अन्तुम् अन्शअ्तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल्-मुन्शिऊन (72) नह्नु जअ़ल्नाहा तज़्कि-रतंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक़्वीन (73) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम ▲ (74) ❖

फ़ला उक़्सिमु बि-मवाक़िअ़िन्-नुजूम (75) व इन्नहू ल-क़-समुल्-लौ तअ़्लमू-न अ़ज़ीम (76) इन्नहू ल-क़ुर्आनुन् करीम (77) फ़ी किताबिम् मक्नून (78) ला य-मस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून (79) तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (80) अ-फ़बिहाज़ल्-हदीसि अन्तुम् मुद्हिनून (81) व तज्अ़लू-न रिज़्-क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (82) फ़लौ ला इज़ा ब-ल-ग़तिल्-हुल्क़ूम (83) व अन्तुम् ही-न-इज़िन् तन्ज़ुरून (84) व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्-ला तुब्सिरून (85) फ़लौ ला इन् कुन्तुम् ग़ै-र मदीनीन (86) तर्जिअ़ूनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (87)

قال فما خطبكم ٢٧ ٤٨٤ الواقعة ٥٦

لو نشاء لجعلنه حطاما فظلتم تفكهون ﴿٦٥﴾ انا لمغرمون ﴿٦٦﴾
بل نحن محرومون ﴿٦٧﴾ افرءيتم الماء الذي تشربون ﴿٦٨﴾ ءانتم
انزلتموه من المزن ام نحن المنزلون ﴿٦٩﴾ لو نشاء جعلنه
اجاجا فلولا تشكرون ﴿٧٠﴾ افرءيتم النار التي تورون ﴿٧١﴾ ءانتم
انشاتم شجرتها ام نحن المنشئون ﴿٧٢﴾ نحن جعلنها تذكرة و
متاعا للمقوين ﴿٧٣﴾ فسبح باسم ربك العظيم ﴿٧٤﴾ فلا اقسم بموقع
النجوم ﴿٧٥﴾ وانه لقسم لو تعلمون عظيم ﴿٧٦﴾ انه لقران كريم ﴿٧٧﴾
في كتب مكنون ﴿٧٨﴾ لا يمسه الا المطهرون ﴿٧٩﴾ تنزيل من رب
العلمين ﴿٨٠﴾ افبهذا الحديث انتم مدهنون ﴿٨١﴾ وتجعلون
رزقكم انكم تكذبون ﴿٨٢﴾ فلولا اذا بلغت الحلقوم ﴿٨٣﴾ وانتم
حينئذ تنظرون ﴿٨٤﴾ ونحن اقرب اليه منكم ولكن لا تبصرون ﴿٨٥﴾
فلولا ان كنتم غير مدينين ﴿٨٦﴾ ترجعونها ان كنتم
صدقين ﴿٨٧﴾ فاما ان كان من المقربين ﴿٨٨﴾ فروح وريحان
وجنت نعيم ﴿٨٩﴾ واما ان كان من اصحب اليمين ﴿٩٠﴾ فسلم
لك من اصحب اليمين ﴿٩١﴾ واما ان كان من المكذبين
الضالين ﴿٩٢﴾ فنزل من حميم ﴿٩٣﴾ وتصلية جحيم ﴿٩٤﴾ ان هذا لهو

منزل ٧

फ़-अम्मा इन् का-न मिनल्-मुक़र्रबीन (88) फ़-रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नअ़ीम (89) व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन (90) फ़-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन (91) व अम्मा इन् का-न मिनल् मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन (92) फ़-नुज़ुलुम्-मिन् हमीमिंव्-(93) -व तस्लि-यतु जहीम (94) इन्-न हाज़ा लहु-व हक़्क़ुल्-यक़ीन (95) फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम (96) ❖

57 सूरतुल्-हदीदि 94

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2599 अक्षर, 586 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (1) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (2) हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (3) हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, यअ़्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ़्रुजु फ़ीहा, व हु-व म-अ़कुम् ऐ-नमा कुन्तुम्, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीर (4) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-उमूर (5) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन् नहा-र फ़िल्लैलि, व हु-व अ़लीमुम् बिज़ातिस्-सुदूर (6) आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अ़-लकुम् मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि, फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्रुन् कबीर (7) व मा लकुम् ला तुअ़्मिनू-न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्अ़ूकुम् लितुअ़्मिनू बि-रब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज़ मीसा-क़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ़्मिनीन (8) हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अ़ला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल्-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व इन्नल्ला-ह बिकुम्

حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

سورة الحديد مدنية — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ
الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ هُوَ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ
مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝
وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَ
قَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ
عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ
بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ

ल-रऊफ़ुर्रहीम (9) व मा लकुम् अल्-ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल्-फ़त्हि व क़ात-ल, उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-जतम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्बअ्दु व क़ातलू, व कुल्लंव्-व-अदल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (10) ❖

मन् ज़ल्लज़ी युक्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअि-फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम (11) यौ-म तरल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् बुश्राकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अज़ीम (12) यौ-म यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्-मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन्-नूरिकुम् क़ीलर्जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन्, फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्, बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन् क़ि-बलिहिल्-अ़ज़ाब (13) युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अकुम्, क़ालू बला व लाकिन्नकुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ु-सकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल्-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (14) फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-यतुंव्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू, मअ्वाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअ्सल्-मसीर (15) अलम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्श-अ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्-हक़्क़ि व

مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ
الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ
وَقٰتَلُوْا ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝۱۰
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ
اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝۱۱ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۲ يَوْمَ يَقُوْلُ
الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ
قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَاۗءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ
بَابٌ ۭ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝۱۳
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ
وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۱۴ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝۱۵
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लु फ़ता-ल अ़लैहिमुल्-अ-मदु फ़-क़सत् क़ुलूबुहुम्, व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून **(16)** इअ़्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ़्-द मौतिहा, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून **(17)** इन्नल्-मुस्सद्दिक़ी-न वल्-मुस्सद्दिक़ाति व अक़्रज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ा-अ़फ़ु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम **(18)** वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्-सिद्दीक़ू-न वश्शु-हदा-उ अ़िन्-द रब्बिहिम्, लहुम् अज्रुहुम् व नूरुहुम्, वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम **(19)** ❖

इअ़्-लमू अन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअ़िबुंव्-व लह्वुंव्-व ज़ी-नतुंव्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि ग़ैसिन् अअ़्-जबल्-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन्, व फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन्, व मल्-हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअ़ुल्-ग़ुरूर **(20)** साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहा क-अ़र्ज़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि उअ़िद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ़्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(21)** मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन्- नब्र-अहा, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर **(22)** लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर **(23)**

عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(24)** ल-क़द् अर्सल्ना रुसु-लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल्-किता-ब वल्मीज़ा-न लि-यक़ूमन्नासु बिल्-क़िस्ति व अन्ज़ल्नल्-हदी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु-लहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ **(25)** ❖

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्राहीं-म व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहि-मन्नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून **(26)** सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि-अ़ीसब्नि मर्य-म व आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीनत्-त-बअ़ूहु रअ्-फ़तंव्-व रह्म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्त-दअ़ूहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रऔहा हक़्-क़ रिआ-यतिहा फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू मिन्हुम् अज्रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून **(27)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रह्मतिही व यज्अ़ल्-लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम **(28)** लि-अल्ला यअ्ल-म अह्लुल्-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(29)** ❖

بِمَآ ءَاتٰىكُمْ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَأْسٌ
شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّإِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْإِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَأْفَةً وَّرَحْمَةً ۗ
وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ
بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتٰبِ
أَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ
اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

منزل ٧

(पिछले पृष्ठ का शेष) 2. यानी मोमिनों में से ख़ास लोग, अ़वाम मोमिनीन और कुफ़्फ़ार, और अगली आयतों में मोमिनों में से ख़ास लोगों को मुक़र्रबीन और साबिक़ीन कहा है और अ़वाम मोमिनीन को 'दाहिने वाले' और काफ़िरों को 'बाएँ वाले'।

3. मुराद इससे वे हैं जिनके नामा-ए-आमाल दाहिने हाथ में दिए जाएँगे। और अगरचे मुक़र्रबीन का भी यही मतलब है लेकिन इस सिफ़त पर इक्तिफ़ा करना इस तरफ़ इशारा है कि उनमें 'दाहिने वालों' से ज़ायद कोई और ख़ुसूसी निकटता की सिफ़त नहीं पाई जाती, इस तरह इससे अ़वाम मोमिनीन मुराद हो गए।

4. मुराद इससे वे हैं जिनके नामा-ए-आमाल बाएँ हाथ में दिए जाएँगे यानी काफ़िर लोग। और इसमें मुख़्तसर तौर पर उनकी हालत का बुरा होना भी बतला दिया।

5. इसमें आला दर्जे के तमाम बन्दे शामिल हैं यानी अम्बिया, औलिया, सिद्दीक़ीन और कामिल मुत्तक़ी हज़रात, और इसमें मुख़्तसर तौर पर उनकी हालत का बुलन्द और ऊँचा होना बतला दिया।

6. अगलों से मुराद पहले गुज़रे हुए हज़रात हैं, आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पहले तक। और पिछलों से मुराद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के वक़्त से लेकर क़ियामत तक।

7. चूँकि अ़रब गर्म मुल्क और रेगिस्तान है, वहाँ के लोग आ़म तौर पर बेरी, केले और लम्बे साये से ज़्यादा रग़बत और लगाव रखते थे। मक्का मुअ़ज़्ज़मा से थोड़े फ़ासले पर 'ताइफ़' नाम का एक शहर हरा-भरा और उपजाऊ जगह है। एक बार मुसलमानों ने ताइफ़ की एक वादी देखी जिसमें बेरी के पेड़ ज़्यादा थे और छाँव घनी थी, उसको देखकर बोले काश! हमको जन्नत में इतना ही मिल जाए। उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।

(तफ़सीर पृष्ठ 966) 1. जब पहली आयत "सुल्लतुम् मिनल् अव्वली-न व क़लीलुम् मिनल् आख़िरी-न" नाज़िल हुई जिसका मन्शा यह था कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह के मुक़र्रब अगली उम्मतों में से ज़्यादा और पिछली उम्मत यानी उम्मते मुहम्मदिया में से थोड़े लोग होंगे, तो यह सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु रो दिए और सहाबा-ए-किराम पर यह बात भारी गुज़री कि उम्मते मरहूमा के थोड़े से लोग शामिल होंगे। तो ख़ुदा-ए-रहीम ने पहली आयत के नाज़िल होने के साल भर बाद इस सूरः का आख़िरी हिस्सा नाज़िल फ़रमाया, जिसमें यह आयत भी थी "सुल्लतुम् मिनल् अव्वली-न व सुल्लतुम् मिनल् आख़िरी-न" इसमें उस गिरोह के अन्दर उम्मते मुहम्मदिया की भी एक बड़ी जमाअ़त के दाख़िल होने की ख़ुशख़बरी थी। और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि चूँकि पहले अम्बिया की उम्मतें मजमूई हैसियत से ज़्यादा हैं और पहली उम्मतों के शुरू में ईमान लाने वाले अफ़राद उम्मते मुहम्मदी के इब्तिदाई ईमान वाले हज़रात से बढ़े हुए हैं इसलिए निस्बतन उन्हीं की तादाद ज़्यादा होगी, हाँ दोनों गिरोह के आ़म मोमिन जिनके आमालनामे उनके दाहिने हाथों में मिलेंगे बहुत ज़्यादा तादाद में और दर्जे में बराबर होंगे।

2. यानी साए से एक जिस्मानी नफ़ा होता है राहत और ठंडक, और एक रूहानी नफ़ा होता है लज़्ज़त और ख़ुशी। दोज़ख़ वाले दोनों से फ़ायदा न उठा सकेंगे।

3. यानी उस मनी (यानी वीर्य) पर एक के बाद दूसरी मुख़्तलिफ़ हालतें तारी करना कि अब 'मनी' है और चन्द दिन में जमा हुआ ख़ून हो गया, फिर थोड़े दिनों में लोथड़ा बन गया, फिर बोटी हो गई। फिर उसमें अंग और हिस्से निकल आए यहाँ तक कि वह मुकम्मल तौर पर पूरे जिस्मानी अंगों वाला आदमी बन गया। ये हालतें तुम पैदा करते हो या हम? ज़ाहिर है कि हम ही बनाते हैं।

4. मतलब यह है कि बनाना और बनाए हुए को एक ख़ास वक़्त तक बाक़ी रखना यह सब हमारा ही काम है।

5. यानी जैसे आदमी से जानवर की सूरत में बदल डालें जिसका गुमान भी न हो।

6. यानी यह कि वह हमारी क़ुदरत से है।

(तफ़सीर पृष्ठ 968) 1. ये सब नेमतें साफ़ बताती हैं कि इबादत के लायक़ सिर्फ़ एक ज़ात है, और ये इस अ़क़ीदे के वाजिब होने की दलीलें भी हैं कि जो इन सब बातों पर क़ादिर है वह इसपर भी क़ादिर है कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर दे।

2. इसके मज़ामीन पर मुत्तला होने का क्या मतलब? पस वहाँ से यहाँ ख़ास तौरपर आना फ़रिश्ते ही के ज़रिए से है और यही नुबुव्वत है। और शैतान इसको नहीं ला सकते कि यह एतिराज़ व शुब्हा पैदा हो कि कहीं जिन्नात से मालूम करके ग़ैब की बातें बता रहे हों।

3. यानी इसकी तस्दीक़ करने को वाजिब नहीं जानते।

4. यानी तुमसे ज़्यादा उस शख़्स के हाल से वाक़िफ़ होते हैं, क्योंकि तुम तो सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत देखते हो और हम उसकी अन्दरूनी हालत की भी ख़बर रखते हैं।

5. मतलब यह कि क़ुरआन सच्चा है और वह मरने के बाद ज़िन्दा होने को बता रहा है। पस उसका होना साबित हुआ। और कोई चीज़ उसके लिए रुकावट है नहीं, तो मरने के बाद ज़िन्दा होना साबित हो गया। और इसपर भी तुम्हारा इनकार करते रहना, इससे यह लाज़िम आता है कि गोया तुम रूह को अपने बस में समझते हो कि अगर क़ियामत में ख़ुदा दोबारा रूह डालना चाहे जैसा कि क़ुरआन का फ़रमान है, मगर हम न डालने देंगे, और दोबारा ज़िन्दा न होने देंगे, तभी तो इतनी सख़्ती से इनकार करते हो, वरना जो अपने को आ़जिज़ समझता हो वह दलीलें आने के बाद ऐसी सख़्ती से और ज़ोरदार बात क्यों कहे।

(तफ़सीर पृष्ठ 970) 1. अ़र्श पर क़ायम होने की कोई सूरत और कैफ़ियत तजवीज़ करना **(शेष अगले पृष्ठ पर)**

अट्ठाईसवाँ पारः क़द् समिअ़ल्लाहु

58 सूरतुल्-मुजाद-लति 105

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2103 अक्षर, 479 शब्द, 22 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَّثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ
اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝
اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ
اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا
مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ
مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۝ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ
ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ
اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ

क़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजादिलु-क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि वल्लाहु यस्-मअु तहावु-रकुमा, इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर **(1)** अल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन्-निसा-इहिम् मा हुन्-न उम्महाति--हिम्, इन् उम्महातुहुम् इल्लल्-लाई व-लद्-नहुम्, व इन्नहुम् ल-यक़ूलू-न मुन्करम् मिनल्-क़ौलि वज़ूरन्, व इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर **(2)** वल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन् निसा-इहिम् सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा क़ालू फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम्-मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, ज़ालिकुम् तू-अ़ज़ू-न बिही, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर **(3)** फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शहरैनि मु-तताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, फ़-मल्-लम् यस्ततिअ् फ़-इत्आमु सित्ती-न मिस्कीनन्, ज़ालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम **(4)** इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन **(5)** यौ-म यब्अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा

अ़मिलू, अह्साहुल्लाहु व नसूहु, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (6) ❖

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्‌अर्ज़ि, मा यकूनु मिन्-नज्वा सला-सतिन् इल्ला हु-व राबिअुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु-व सादिसुहुम् व ला अद्‌ना मिन् ज़ालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा कानू सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (7) अलम् त-र इलल्लज़ी-न नुहू अ़निन्-नज्वा सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा नुहू अ़न्हु व य-तनाजौ-न बिल्‌इस्मि वल्-अ़ुद्‌वानि व मअ़्सि-यतिर्रसूलि व इज़ा जाऊ-क हय्यौ-क बिमा लम् युहय्यि-क बिहिल्लाहु व यक़ूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौ ला युअ़ज़्ज़िबुनल्लाहु बिमा नक़ूलु, हस्बुहुम् जहन्नमु यस्लौनहा फ़-बिअ्सल्-मसीर (8) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त-तनाजौ बिल्‌इस्मि वल्‌अ़ुद्‌वानि व मअ़्सि-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्-बिर्‌रि वत्तक़्वा, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (9) इन्नमन्- नज्वा मिनश्- शैतानि लियह्ज़ुनल्लज़ी-न आमनू व लै-स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून (10) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ी-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िल्-मजालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् व इज़ा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्‌फ़अ़िल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् वल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म द-रजातिन्, वल्लाहु बिमा

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۖ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى
مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ
يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ
عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ
لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ
يَقُوْلُوْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ۗ حَسْبُهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْٓ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝٩ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ
تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ

منزل ٧

तअ़्मलू-न ख़बीर **(11)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नाजैतुमुर्रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़तन्, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लकुम् व अत्हरु, फ़-इल्लम् तजिदू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम **(12)** अ-अश्फ़क़्तुम् अन् तुक़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़ातिन्, फ़-इज़् लम् तफ़्अ़लू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअ़ुल्ला-ह व रसूलहू, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(13)** ❖

अमल् त-र इलल्लज़ी-न तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम्, मा हुम्-मिन्कुम् व ला मिन्हुम् व यह्लिफ़ू-न अ़लल्-कज़िबि व हुम् यअ़्लमून **(14)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ़्मलून **(15)** इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि फ़-लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन **(16)** लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, उलाइ-क अस्हाबुन्-नारि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून **(17)** यौ-म यब्-अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-यह्लिफ़ू-न लहू कमा यह्लिफ़ू-न लकुम् व यह्सबू-न

قد سمع الله ٢٨ ٧٩١ المجادلة ٥٨

انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ فَاِنْ لَّمْ
تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ
فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١٣ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُوْنَ
عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝١٤ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا
اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٥ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً
فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝١٦ لَنْ
تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اُولٰٓىِٕكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١٧ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا
فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى
شَيْءٍ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٨ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ

منزل ٧

अन्नहुम् अ़ला शैइन्, अला इन्नहुम् हुमुल्-काज़िबून **(18)** इस्तह्-व-ज़ अ़लैहिमुश्शैतानु फ़-अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि, उलाइ-क हिज़्बुश्-शैतानि, अला इन्-न हिज़्बश्शैतानि हुमुल्-ख़ासिरून **(19)** इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क

फ़िल्-अज़ल्लीन **(20)** क-तबल्लाहु ल-अग्लिबन्-न अ-न व रसुली, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अज़ीज़ **(21)** ला तजिदु क़ौमंय्-युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि युवाद्दू-न मन् हाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़्वा-नहुम् औ अ़शी-र-तहुम्, उलाइ-क क-त-ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-ईमा-न व अय्य-दहुम् बिरूहिम्-मिन्हु, व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, उलाइ-क हिज़्बुल्लाहि, अला इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-मुफ़्लिहून **(22)** ❖

59 सूरतुल्-हश्रि 101

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2016 अक्षर, 455 शब्द, 24 आयतें और 3 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(1)** हुवल्लज़ी अख़्-रजल्लज़ी-न

فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ
الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿١٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُحَآدُّونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗٓ
أُولٰٓئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ﴿٢٠﴾ كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ
إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ يُوَآدُّونَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ وَلَوْ كَانُوٓا آبَآءَهُمْ
أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۚ أُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِي
قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلٰثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾
هُوَ الَّذِيٓ أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوٓا أَنَّهُمْ
مَّانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَأَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ

क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल्-हश्रि, मा ज़नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मानि-अ़तुहुम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ़-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्तसिबू व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ़्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअ्मिनी-न, फ़अ्तबिरू या उलिल्-अब्सार **(2)** व लौ ला अन् क-तबल्लाहु अ़लैहिमुल्-जला-अ
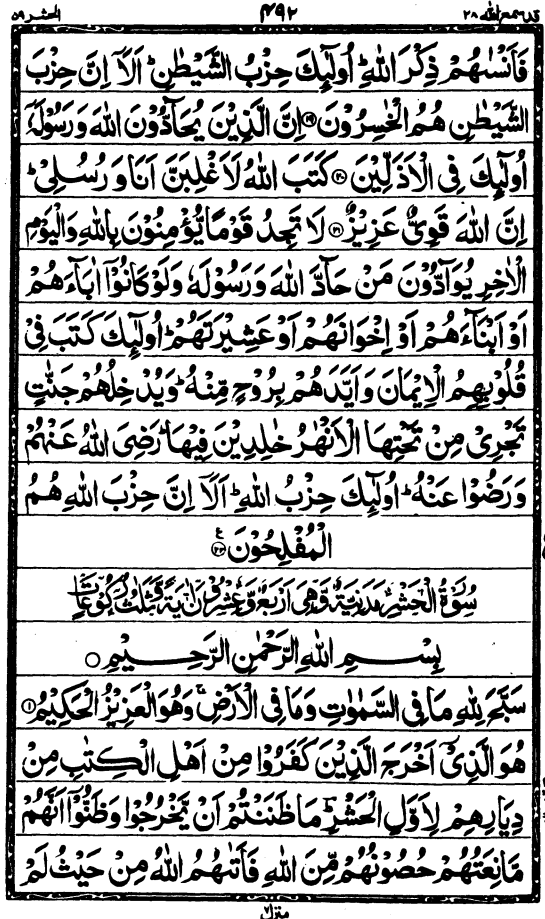
ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या, व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार (3) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़्क़िल्ला-ह फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब (4) मा क़-तअ्तुम् मिल्ली-नतिन् औ तरक्तुमूहा क़ाइ-मतन् अ़ला उसूलिहा फ़बि-इज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल्-फ़ासिक़ीन (5) व मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव्-व ला रिकाबिंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहू अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (6) मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल्-क़ुरा फ़-लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्-क़ुरबा वल्यतामा वल्-मसाकीनि वब्निस्सबीलि कै ला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-अग़्निया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब ✣ (7) लिल्फ़ु-क़राइल्-मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानंव्-व यन्सुरूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (8) वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् ख़सा-सतुन्, व

يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ
بِأَيْدِيْهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰأُولِي الْأَبْصَارِ ۝
وَلَوْلَآ أَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى أُصُوْلِهَا
فَبِإِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَمَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ
مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ
اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
مَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ أَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ
كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ وَمَآ اٰتٰىكُمُ
الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ
إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ
أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ
اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ أُولٰٓئِكَ هُمُ

✣ व. लाज़िम

मंय्यू-क़् शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(9)** वल्लज़ी-न जाऊ मिम्बअ़्दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-बक़ूना बिल्-ईमानि व ला तज्अ़ल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफ़ुर्रहीम ◆ **(10)** ❖

अलम् त-र इलल्लज़ी-न नाफ़क़ू यक़ूलू-न लि-इख़्वानिहिमुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि ल-इन् उख़्रिज्तुम् ल-नख़्रुजन्-न म-अ़कुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ-हदन् अ-बदंव्-व इन् क़ूतिल्तुम् ल-नन्सुरन्नकुम्, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून **(11)** ल-इन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू-न म-अ़हुम् व ल-इन् क़ूतिलू ला यन्सुरूनहुम् व ल-इन्-न-सरूहुम् लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून **(12)** ल-अन्तुम् अशद्दु रह्-बतन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून **(13)** ला युक़ातिलूनकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी क़ुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअ्सुहुम् बैनहुम् शदीदुन्, तह्सबुहुम् जमीअ़ंव्-व क़ुलूबुहुम् शत्ता, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यअ़्क़िलून **(14)** क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम **(15)** क-म-सलिश्शैतानि इज़् क़ा-ल लिल्-इन्सानिक्फ़ुर् फ़-लम्मा

قد سمع الله ٢٨ ۷۹۴ الحشر ٥٩

الصّٰدِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ
يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ
خَصَاصَةٌ ۭ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ
لِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى
الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ لَىِٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ
اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝ لَىِٕنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَىِٕنْ قُوْتِلُوْا
لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَىِٕنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
اَوْ مِنْ وَّرَاۗءِ جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ
جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝

منزل

क-फ़-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन **(16)** फ़का-न आ़क़ि-ब-तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन **(17)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर् नफ़सुम्-मा क़द्द-मत् लि-ग़दिन् वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-हं ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून **(18)** व ला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम्, उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून **(19)** ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति, अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फ़ाइज़ून **(20)** लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल्-क़ुर्आ-न अ़ला ज-बलिल्-ल-रऐ-तहू ख़ाशिअ़म् मु-तसद्दिअ़म् मिन् ख़श्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून **(21)** हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दति हुवर्-रह्मानुर्रहीम **(22)**

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल्-क़ुद्दूसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल्-अ़ज़ीज़ुल्-जब्बारुल्- मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून **(23)** हुवल्लाहुल् ख़ालिक़ुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(24)** ❖

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ
اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا
وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ
وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ
اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ
وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا
هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ
اللّٰهِ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ
الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ
الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

60 सूरतुल्-मुम्तहि-नति 91

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1593 अक्षर, 370 शब्द, 13 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्क़ू-न इलैहिम् बिल्-म-वद्दति व क़द् क-फ़रू बिमा जा-अकुम् मिनल्-हक़्क़ि युख़्रिजूनर्-रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम्, इन् कुन्तुम् ख़रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा-अ मर्ज़ाती तुसिर्रू-न इलैहिम् बिल्म-वद्दति व अ-न अअ्लमु बिमा अख़्फ़ैतुम् व मा अअ्लन्तुम्, व मंय्यफ़्अ़ल्हु मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (1) इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सू-इ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून (2) लन् तन्फ़-अ़कुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्-क़ियामति यफ़्सिलु बैनकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (3) क़द् कानत् लकुम् उस्वतुन् ह-स-नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अ़हू इज़् क़ालू लिक़ौमिहिम् इन्ना बु-रआ-उ मिन्कुम् व मिम्मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि कफ़र्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल्-अ़दा-वतु वल्-बग़्ज़ा-उ अ-बदन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्-दहू इल्ला क़ौ-ल इब्राही-म लि-अबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन्, रब्बना अ़लै-क तवक्कल्ना व इलै-क अनब्ना व

قد سمع الله ٢٨ — ٧٩٦ — الممتحنة ٦٠

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثَ عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ
تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ
يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ
تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ
اَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ①
اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ
وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ
وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ
وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا
قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَاۤ اَمْلِكُ لَكَ

منزل

इलैकल्-मसीर **(4)** रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्-नतल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर् लना रब्बना इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(5)** ल-क़द् का-न लकुम् फ़ीहिम् उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद **(6)** ❖

अ़सल्लाहु अंय्यज्अ़-ल बैनकुम् व बैनल्लज़ी-न आ़देतुम् मिन्हुम् मवद्द-तन्, वल्लाहु क़दीरुन्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम **(7)** ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न लम् युक़ातिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन **(8)** इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न क़ा-तलूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-रजूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ा-हरू अ़ला इख़्राजिकुम् अन् तवल्लौहुम् व मंय्य-तवल्लहुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून **(9)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा जा-अकुमुल् मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन्-न, अल्लाहु अअ्लमु बि-ईमानिहिन्-न फ़-इन् अ़लिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्-कुफ़्फ़ारि, ला हुन्-न हिल्लुल् लहुम् व ला हुम् यहिल्लू-न लहुन्-न, व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू, व ला जुना-ह अ़लैकुम् अन् तन्किहूहुन्-न इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजू-रहुन्-न, व ला तुम्सिकू बिअ़ि-समिल्-कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्-यस्अलू मा अन्फ़क़ू, ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि, यह्कुमु बैनकुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम **(10)** व इन् फ़ा-तकुम् शैउम्-मिन् अज़्वाजिकुम् इलल्-कुफ़्फ़ारि फ़-आ़क़ब्तुम्

مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا
رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ
أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَن
يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللّٰهُ أَن يَجْعَلَ
بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً ۚ وَاللّٰهُ قَدِيرٌ ۚ
وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ لَا يَنْهَاكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ
يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن
تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا
يَنْهَاكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَن
يَتَوَلَّهُمْ فَأُولٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا
جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۖ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۖ
فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۖ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا ۚ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ

फ़-आतुल्लज़ी-न ज़-हबत् अज़्वाजुहुम् मिस्-ल मा अन्फ़क़ू, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून **(11)** या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा-अकल्-मुअ्मिनातु युबायिअ्-न-क अ़ला अल्-ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअंव्-व ला यस्रिक़्-न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औला-दहुन्-न व ला यअ्ती-न बिबुह्तानिंय्-यफ़्तरीनहू बै-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ्सी-न-क फ़ी मअ्रूफ़िन् फ़-बायिअ्हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(12)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त-तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् य-इसू मिनल्-आख़िरति कमा य-इसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल्-क़ुबूर ● **(13)** ❖

61 सूरतुस्-सफ़्फ़ 109

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 991 अक्षर, 223 शब्द, 14 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(1)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़्अ़लून **(2)** कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्अ़लून **(3)** इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क-अन्नहुम् बुन्यानुम्-मर्सूस **(4)** व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्-तअ्लमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम्, फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम्, वल्लाहु ला

وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوا مَا أَنفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوا
مَا أَنفَقُوا ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝١٠ وَإِن فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ
فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُم مِّثْلَ مَا أَنفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝١١ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ
يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ
وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ
أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ
وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٢ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ
الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝١٣

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ۝١ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝٢
كَبُرَ مَقْتًا عِندَ اللَّهِ أَن تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝٣ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन **(5)** व इज़् क़ा-ल ईसब्नु मर्-य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि-रसूलिंय्-यअ्ती मिम्बअ्दिस्मुहू अह्मदु, फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन **(6)** व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन **(7)** युरीदू-न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्-काफ़िरून **(8)** हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून **(9)** ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम **(10)** तुअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून **(11)** यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(12)** व उख़्रा

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ④
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ
اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑤ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ
اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑥
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى
اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑦ يُرِيْدُوْنَ
لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ⑧ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ⑨ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ⑩ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑪
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन्, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन **(13)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्य-म लिल्-हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़-आ-मनत् ताइ-फ़तुम् मिम्-बनी इस्राई-ल व क-फ़रत् ताइ-फ़तुन् फ़-अय्यद्नल्लज़ी-न अमानू अ़ला अ़दुव्विहिम् फ़-अस्बहू ज़ाहिरीन **(14)** ❖

62 सूरतुल्-जुमु-अ़ति 110

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 787 अक्षर, 176 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िल्-मलिकिल्-क़ुद्दूसिल्-अ़ज़ीज़िल्-हकीम **(1)** हुवल्लज़ी ब-अ़-स फ़िल्-उम्मिय्यी-न रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अ़लैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन **(2)** व

الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢
وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ قَالَ
الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى
عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ
اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا
يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤ مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا
التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا بِئْسَ

आ-ख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(3)** ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम **(4)** म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन्, बिअ्-स

❖ रु. 2/5/10
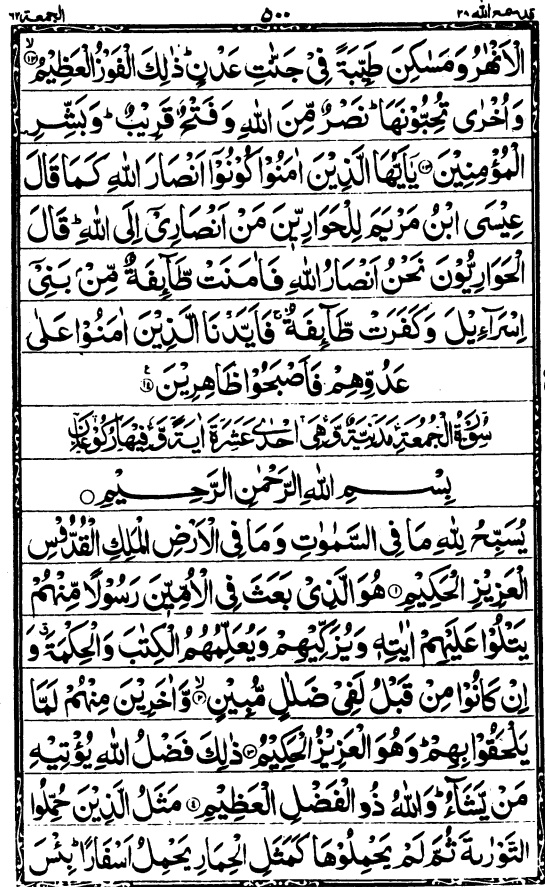
म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (5) क़ुल् या अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अ़म्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (6) व ला य-तमन्नौनहू अ-बदम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (7) क़ुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लिमिल्- ग़ैबि वश्शहा-दति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (8) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमु-अ़ति फ़स्‌औ़ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्-बै-अ़, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून (9) फ़-इज़ा क़ुज़ि-यतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्‌अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्- लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (10) व इज़ा रऔ तिजा-रतन् औ लह्-व-‑निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-रकू-क क़ाइमन्, क़ुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम्-मिनल्-लह्वि व मिनत्तिजा-रति, वल्लाहु ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (11) ❖

المنفقون ٦٣ ٥٠١ قد سمع الله ٢٨

مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ
لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧ قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ
ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى
الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا
وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِىَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ

منزل

63 सूरतुल्-मुनाफ़िक़ून 104

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 821 अक्षर, 183 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा-अकल्-मुनाफ़िक़ू-न क़ालू नश्हदु इन्न-क ल-रसूलुल्लाहि ✣ वल्लाहु यअ़्लमु
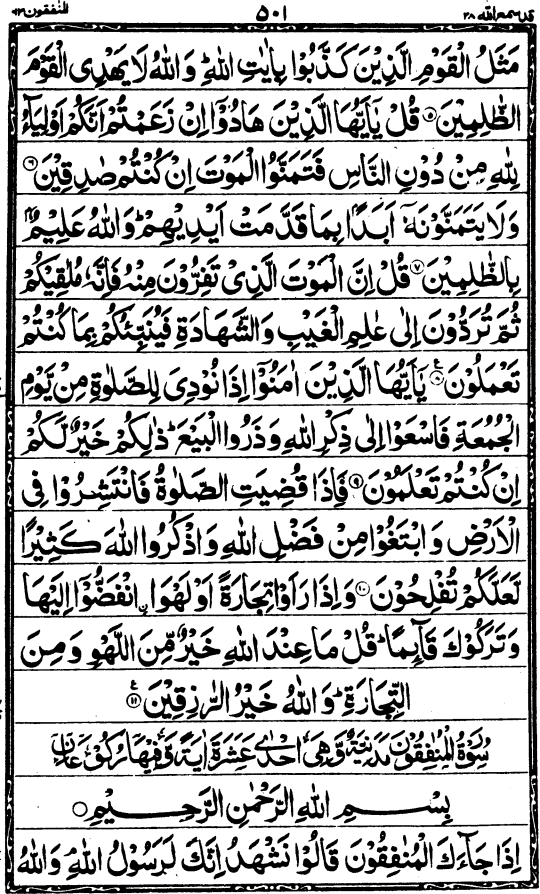
इन्न-क ल-रसूलुहू, वल्लाहु यश्हदु इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न लकाज़िबून (1) इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ़्मलून (2) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् आमनू सुम्-म क-फ़रू फ़-तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (3) व इज़ा रऐ-तहुम् तुअ़्जिबु-क अज्सामुहुम्, व इंय्यक़ूलू तस्मअ़् लिक़ौलिहिम्, क-अन्नहुम् ख़ुशुबुम् मुसन्न-दतुन्, यह्सबू-न कुल्-ल सै-हतिन् अ़लैहिम्, हुमुल्-अ़दुव्वु फ़ह्ज़र्हुम्, क़ा-त-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ़्फ़कून (4) व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊ-सहुम् व रऐ-तहुम् यसुद्दू-न व हुम्-मुस्तक्बिरून (5) सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र्-त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम्, लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (6) हुमुल्लज़ी-न यक़ूलू-न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि हत्ता यन्फ़ज़्ज़ू, व लिल्लाहि ख़ज़ा-इनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यफ़्क़हून (7) यक़ूलू-न ल-इर्रजअ़्ना इलल्-मदीनति लयुख़्रिजन्नल्-अ-अ़ज़्ज़ु

قد سمع الله ٢٨ ٥٠٢ المنفقون ٦٣

يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۚ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ①
اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ اِنَّهُمْ سَآءَ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ② ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ③ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۗ
وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۗ
يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قٰتَلَهُمُ
اللّٰهُ ۖ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ④ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ⑤
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۗ لَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ⑥ هُمُ الَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۗ
وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَا يَفْقَهُوْنَ ⑦ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ
الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ۗ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ
اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

منزل ٧

मिनूहल्-अ-ज़ल्-ल, व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मुअ़्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यअ़्लमून (8) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (9) व अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ़ति-य अ-ह-दकुमुल्-मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि लौ ला अख़्ख़र्-तनी

❖ रु. 1/8/13

इला अ-जलिन् क़रीबिन् फ़-अस्सद्द-क़ व अकुम्-मिनस्सालिहीन (10) व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा-अ अ-जलुहा, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (11) ❖

64 सूरतुत्-तग़ाबुनि 108

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1122 अक्षर, 247 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् फ़-मिन्कुम् काफ़िरुंव्-व मिन्कुम् मुअ़मिनुन्, वल्लाहु बिमा तअ़्मूल-न बसीर (2) ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर (3) यअ़्लमु मा फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़ि व यअ़्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ़्लिनू-न, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (4) अलम् यअ़्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु फ़-ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (5) ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत्-तअ़्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालू अ-ब-शरुंय्-यह्दूनना फ़-क-फ़रू व तवल्लौ वस्तग़्नल्लाहु, वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद (6) ज़-अ़मल्लज़ी-न क-फ़रू अल्लंय्युब्-अ़सू, क़ुल् बला व रब्बी ल-तुब्अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अ़मिल्तुम्, व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (7) फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना,

فأولئك هم الخسرون ۝٩ وأنفقوا من ما رزقنكم من قبل
أن يأتي أحدكم الموت فيقول رب لولا أخرتني إلى أجل
قريب فأصدق وأكن من الصلحين ۝١٠ ولن يؤخر الله
نفسا إذا جاء أجلها ۚ والله خبير بما تعملون ۝١١ ع
سورة التغابن مدنية وهي ثمان عشرة آية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يسبح لله ما في السموت وما في الأرض ۚ له الملك و
له الحمد وهو على كل شيء قدير ۝١ هو الذي خلقكم
فمنكم كافر ومنكم مؤمن ۚ والله بما تعملون بصير ۝٢
خلق السموت والأرض بالحق وصوركم فأحسن صوركم
وإليه المصير ۝٣ يعلم ما في السموت والأرض ويعلم
ما تسرون وما تعلنون ۚ والله عليم بذات الصدور ۝٤
ألم يأتكم نبؤا الذين كفروا من قبل فذاقوا وبال
أمرهم ولهم عذاب أليم ۝٥ ذلك بأنه كانت تأتيهم
رسلهم بالبينت فقالوا أبشر يهدوننا فكفروا وتولوا
واستغنى الله ۚ والله غني حميد ۝٦ زعم الذين كفروا أن

वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर **(8)** यौ-म यज्मअुकुम् लियौमिल्-जम्अि ज़ालि-क यौमुत्-तग़ाबुनि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्-युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम **(9)** वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा, व बिअ्सल्-मसीर ▲ **(10)** ❖

मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम **(11)** व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्-रसू-ल फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन **(12)** अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून **(13)** या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्-लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ्फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम **(14)** इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्, वल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम **(15)** फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-तअ्तुम् वस्-मअू व अतीअू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्- लिअन्फ़ुसिकुम्, व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून **(16)** इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु

لَن يُبْعَثُوا ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ
وَذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝٧ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝٨ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ
ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۗ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ
عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝٩ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝١٠ مَا أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَمَن
يُؤْمِن بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١١ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ۝١٢ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٣
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ
فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِن تَعْفُوا وَتَصْفَحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝١٤ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِندَهُ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ۝١٥ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَأَنفِقُوا
خَيْرًا لِّأَنفُسِكُمْ ۗ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝١٦

शकूरुन् हलीम **(17)** आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम **(18)** ❖

65 सूरतुत्-तलाकि 99

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1237 अक्षर, 298 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्-निसा-अ फ़-तल्लिक़ूहुन्-न लिअ़िद्-दति-हिन्-न व अह्सुल्- अ़िद्-द-त वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिन्, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्य-त-अ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, ला तद्री लअ़ल्लल्ला-ह युह्दिसु बअ़्-द ज़ालि-क अम्रा **(1)** फ़-इज़ा बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बि-मअ़्रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बि-मअ़्रूफ़िंव्-व अशिहदू ज़वै अ़द्लिम्-मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहा-द-त लिल्लाहि, ज़ालिकुम् यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अ़ल्-लहू मख़्-रजा **(2)** व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्तसिबु, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु-व हस्बुहू, इन्नल्ला-ह बालिग़ु अम्रिही, क़द् ज-अ़लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा **(3)** वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीज़ि मिन्-निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़-अ़िद्दतुहुन्-न सला-सतु अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज़्-न, व उलातुल्-अह्मालि अ-जलुहुन्-न अंय्यज़अ़्-न हम्ल-हुन्-न, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह

إِن تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضَاعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ
شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾
سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً فِيهَا رُكُوعَانِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا
الْعِدَّةَ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ ۖ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِن بُيُوتِهِنَّ وَلَا
يَخْرُجْنَ إِلَّا أَن يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللَّهِ ۚ وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ لَا تَدْرِي
لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَٰلِكَ أَمْرًا ﴿١﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِّنكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ
مَخْرَجًا ﴿٢﴾ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ
شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾ وَاللَّائِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِن نِّسَائِكُمْ إِنِ
ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَاللَّائِي لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ
الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل

यजूअ़ल्-लहू मिन् अम्रिही युस्रा **(4)** ज़ालि-क अम्रुल्लाहि अन्ज़-लहू इलैकुम्, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युअ़्ज़िम् लहू अज्रा **(5)** अस्किनूहुन्-न मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्रूहुन्-न लि-तुज़य्यिक़ू अ़लैहिन्-न, व इन् कुन्-न उलाति हम्लिन् फ़-अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्-न हत्ता यज़अ़्-न हम्-लहुन्-न फ़-इन् अर्ज़अ़्-न लकुम् फ़-आतूहुन्-न उजू-रहुन्-न वअ्तमिरू बैनकुम् बि-मअ़्रूफ़िन् व इन् तआसर्तुम् फ़-सतुर्ज़िअु लहू उख़्रा **(6)** लियुन्फ़िक़् ज़ू स-अ़तिम्-मिन् स-अ़तिही, व मन् क़ुदि-र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़् मिम्मा आताहुल्लाहु, ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा, स-यज्-अ़लुल्लाहु बअ़्-द अ़ुस्रिंय्-युस्रा **(7)** ❖

व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अ़तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन् शदीदंव्-व अ़ज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन्-नुक्रा **(8)** फ़-ज़ाक़त् व बा-ल अम्रिहा व का-न आ़क़ि-बतु अम्रिहा ख़ुस्रा **(9)** अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबिल्लज़ी-न आमनू क़द् अन्ज़लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रा **(10)** रसूलंय्-यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल्-लियुख़्रिजल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व मंय्युअ़्मिम् बिल्लाहि व यअ़्मल् सालिहंय्-युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, क़द् अह्-सनल्लाहु लहू रिज़्क़ा **(11)** अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़

قد سمع الله ٢٨ ٥٠٦ الطلاق ٦٥

لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝ ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَن يَتَّقِ
اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝ أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ
حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا
عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا
بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ۝
لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ
فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ
سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝ وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا وَعَذَّبْنَاهَا
عَذَابًا نُّكْرًا ۝ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا
خُسْرًا ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي
الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝ رَّسُولًا
يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَن يُؤْمِن بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

منزل ٧

सब्-अ़ समावातिंव्-व मिनल्-अर्ज़ि मिस्-लहुन्-न, य-तनज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ़्लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अहा-त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा (12) ❖

66 सूरतुत्-तह्रीमि 107

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1124 अक्षर, 253 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क तब्तग़ी मर्ज़ा-त अज़्वाजि-क, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम (1) क़द् फ़-रज़ल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (2) व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ़्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन् फ़-लम्मा नब्ब-अत् बिही व अज़्ह-र--हुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र-फ़ बअ़्-ज़हू व अअ़्र-ज़ अ़म्-बअ़्ज़िन् फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा, क़ा-ल नब्ब-अनि-यल् अ़लीमुल्-ख़बीर (3) इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् सग़त् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ा-हरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ़्मिनी-न वल्मलाइ-कतु बअ़्-द ज़ालि-क ज़हीर (4) अ़सा रब्बुहू इन् तल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि लहू अज़्वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न मुस्लिमातिम्-मुअ़्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आ़बिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबातिंव्-व अब्कारा (5) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ु-सकुम् व अह्लीकुम्

أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ﴿١١﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَ
مِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۖ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۚ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٢﴾ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ
بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ
عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ
مَنْ أَنْبَأَكَ هَٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٣﴾ إِنْ تَتُوبَا إِلَى
اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ
مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ
ظَهِيرٌ ﴿٤﴾ عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا
مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ
ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ
نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

नारंव्-व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु अ़लैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल्-ला यअ़्सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ़्अ़लू-न मा युअ़्मरून (6) या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ़्तज़िरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (7) ❖

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ-बतन्-नसूहन्, अ़सा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि-र अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला युख़्ज़िल्लाहुन्-नबिय्-य वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू नूरुहुम् यस्आ बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नू-रना वग़्फ़िर् लना इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (8) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्-मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ़्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ़्सल्-मसीर (9) ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रुम्-र-अ-त नूहिंव्-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह्-त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम् युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्-व क़ीलद्ख़ुलन्ना-र मअ़द्-दाख़िलीन (10) व ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ़-न ✣ इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन् फ़िल्-जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ़-न व अ़-मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (11) व मर्-य-मब्न-त अ़िम्रानल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्द-क़त् बि-कलिमाति-रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-क़ानितीन (12) ❖

قد سمع الله ٢٨ ٥٠٨ التحريم ٦٦

لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ
امْرَاَتَ لُوْطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝

منزل ٧

(पिछले पृष्ठ का शेष) 7. इन मुनाफ़िक़ों के ज़िक्र वाली आयतों के नाज़िल होने का सबब यह है कि किसी लड़ाई में किसी मुहाजिर और अन्सारी में तकरार हो गया, उसपर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई बिगड़ा कि तुमने इन परदेसियों को रोटी खिला-खिलाकर बिगाड़ दिया। अबके मदीना पहुँचकर उन लोगों को ख़र्च देना बन्द कर दो, खुद ही चले जाएँगे। और यह भी कहा कि हम इज़्ज़त वाले हैं इन ज़िल्लत वालों को निकाल देंगे। यह बात ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु सहाबी ने सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जाकर कही, आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों को बुलाकर पूछा, वह साफ़ मुकर गया और क़स्में खा गया। ज़ैद बिन अर्क़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बड़ा रंज हुआ, उसपर ये आयतें नाज़िल हुईं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1006) 1. यानी जिस तरह लकड़ियाँ चौड़ी और मोटी मगर बेजान होती हैं, इसी तरह मुनाफ़िक़ों की हालत है। यानी बातूनी ऐसे कि आदमी ख़्वाह-मख़्वाह उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बात सुनने लगे, और मोटे-ताज़े ऐसे जैसे कोई ताक़तवर पहलवान होता है। लेकिन हक़ीक़त में बिलकुल बुज़दिल कि जहाँ कोई चीख़ा-चिल्लाया तो समझे कि हमपर कोई बला आई।

2. जब पिछली आयतें मुनाफ़िक़ों के सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में नाज़िल हुईं तो उसकी क़ौम के लोगों ने उससे कहा कि खुदा तआ़ला ने तुम्हारे मुताल्लिक़ बहुत सख़्त आयतें नाज़िल की हैं, बेहतर यह है कि तौबा कर लो और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुज़ूर में हाज़िर होकर ख़ता माफ़ कराओ। वह कहने लगा, वाह जनाब वाह! पहले तो तुमने ईमान लाने की तरग़ीब दी और मैं ईमान ले आया, फिर कहा कि ज़कात दिया करो, ख़ैर ज़ोर-ज़बरदस्ती से उसे भी मन्ज़ूर किया। अब सिर्फ़ यह कसर रह गई है कि तुम्हारे कहने से मुहम्मद को सज्दा करने लगूँ, मुझसे यह हरगिज़ न हो सकेगा। इसपर यह आयत नाज़िल हुई।

3. मतलब यह कि अगर वे आपके पास आते भी और आप उनकी ज़ाहिरी हालत के एतिबार से इस्तिग़फ़ार भी फ़रमाते तब भी उनको कुछ नफ़ा न होता। यहाँ से बेएतिक़ाद और सही अ़क़ीदे वाले गुनाहगार का फ़र्क़ निकलता है। जब बेएतिक़ाद को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस्तिग़फ़ार भी फ़ायदा बख़्श नहीं तो कोई ऐसा बेएतिक़ाद जिसके अ़क़ीदे इस्लामी तौहीद के ख़िलाफ़ हों, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफ़ाअ़त पर किस तरह भरोसा कर सकता है?

4. यानी दुनिया में मुन्हमिक मत हो जाना कि दीन में ख़लल पड़ने लगे।

5. क्योंकि दुनियावी नफ़ा तो ख़त्म हो जाएगा और आख़िरत का नुक़सान देरपा और हमेशा के लिए रह जाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1008) 1. यानी हिक्मत से पुर और फ़ायदे वाला बनाया।

2. चुनाँचे इनसान के जिस्मानी आज़ा (अंगों और हिस्सों) के बराबर किसी जानदार के आज़ा में तनासुब नहीं।

3. ये तमाम बातें इस बात को चाहती हैं कि तुम उसकी इताअ़त किया करो।

4. वह ख़बर पहुँचना भी इताअ़त के वाजिब होने का तक़ाज़ा करता है।

5. यानी उसको न किसी की नाफ़रमानी से नुक़सान, और न किसी की बन्दगी व इबादत से नफ़ा है। खुद फ़रमाँबरदार और नाफ़रमानी करने वाले ही का नफ़ा और नुक़सान है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1010) 1. यानी नफ़े व नुक़सान के ज़ाहिर होने का मतलब यह है कि मुसलमानों का नफ़ा और काफ़िरों का नुक़सान उस दिन अ़मली तौर पर ज़ाहिर हो जाएगा।

2. और यह समझकर सब्र व रिज़ा इख़्तियार करना चाहिए।

3. यानी वह जानता है कि किसने सब्र व रिज़ा इख़्तियार किया, और किसने नहीं किया। और हर एक को अपनी हिक्मत के मुताबिक़ जज़ा व सज़ा देता है।

4. चूँकि वह इस तब्लीग़ के फ़रीज़े को अच्छे तरीक़े से अदा कर चुके। पस उनका तो कोई नुक़सान नहीं, तुम्हारा ही नुक़सान होगा।

5. पस उसी को माबूद समझना चाहिए।

6. जब मक्का मुअ़ज़्ज़मा से दारुल-अमान मदीना को हिजरत शुरू हुई तो बाज़ सहाबा हिजरत के इरादे से घर से निकले, उनके घर वालों और बाल-बच्चों ने रोना शुरू किया और हाय-वावेला मचाने लगे, कि यहाँ हमको किसके सहारे छोड़े जाते हो? उन्होंने बाल-बच्चों का यह रोना व फ़रियाद करना सुनकर हिजरत का इरादा मुल्तवी (स्थगित) कर दिया। जब चन्द साल के बाद हिजरत करके मदीना पहुँचे तो अपने साथियों को जो उनसे पहले हिजरत करके चले आए थे देखा कि उम्मत के पेशवा की सोहबत में रहकर बड़े फ़ैज़ान हासिल किए हैं, तो उन्होंने अपने बाल-बच्चों को जो उस नेक काम में रुकावट बने थे सज़ा देनी चाही, तो यह आयत नाज़िल हुई कि उनका जुर्म तो वाक़ई सज़ा के क़ाबिल है लेकिन तुमको दरगुज़र करनी मुनासिब है अलबत्ता आगे के लिए एहतियात करनी चाहिए।

7. इससे कुछ ज़माने पहले आयत "फ़त्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही" नाज़िल हुई थी, जिसका मन्शा यह था कि अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, लेकिन कमज़ोर बन्दे की इतनी ताक़त कहाँ कि अपने मौला का पूरा हक़ अदा कर सके। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इस आयत के नाज़िल होने के बाद रात-दिन इबादत व रियाज़त में मश्ग़ूल रहने लगे। पैर सूज गए, पेशानियाँ सज्दा करते-करते ज़ख़्मी हो गईं। आख़िर कुछ मुद्दत के बाद खुदा-ए-मेहरबान ने रहम फ़रमाकर कमी और नरमी करने की ग़रज़ से यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि हमारा हक़ तो तुमसे किसी सूरत में भी अदा नहीं हो सकता, इसलिए जितना तुमसे हो सके उतना डरो और तक़्वा और तहारत इख़्तियार किए रहो।

(तफ़सीर पृष्ठ 1012) 1. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपनी बीवी को **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

उन्तीसवाँ पारः ताब-रकल्लज़ी

67 सूरतुल्-मुल्कि 77

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1359 अक्षर, 335 शब्द, 30 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1) अल्लज़ी ख़ा-लक़ल्-मौ-त वल्हया-त लि-यब्लु-वकुम् अय्युकुम् अहसनु अ़-मलन्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़ूर (2) अल्लज़ी ख़-ल-क़ सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़न्, मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन्, फ़र्जिअ़िल्-ब-स-र हल् तरा मिन् फ़ुतूर (3) सुम्मर्जिअ़िल्-ब-स-र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल्-ब-सरु ख़ासिअंव्-व हु-व हसीर (4) व ल-क़द् ज़य्यन्नस्समाअद्-दुन्या बि-मसाबी-ह व ज-अ़ल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ़्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबस्सअ़ीर (5) व लिल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अ़ज़ाबु जहन्न-म, व बिअ्सल्-मसीर (6) इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव्-व हि-य तफ़ूर (7) तकादु त-मय्यज़ु मिनल्-ग़ैज़ि, कुल्लमा उल्क़ि-य फ़ीहा फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् नज़ीर (8) क़ालू बला क़द् जा-अना नज़ीरुन्, फ़-कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर (9) व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअ़ु औ नअ़्क़िलु मा कुन्ना फ़ी असहाबिस्सअ़ीर (10) फ़अ़्-त-रफ़ू बिज़म्बिहिम्

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۝١
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝٢ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا
مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ
تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝٤ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ
وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥
وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦
اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧ تَكَادُ تَمَيَّزُ
مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ
اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا
نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ
فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ

फ़-सुह्क़ल्-लि-अस्हाबिस्-सअीर **(11)** इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर **(12)** व असिर्रू क़ौलकुम् अविज्-हरू बिही, इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर **(13)** अला यअ्लमु मन् ख़-ल-क़, व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर **(14)** ❖

हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही, व इलैहिन्-नुशूर **(15)** अ-अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ़ बिकुमुल्-अर्-ज़ फ़-इज़ा हि-य तमूर **(16)** अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन्, फ़-सतअ्लमू-न कै-फ़ नज़ीर **(17)** व ल-क़द् कज़्ज़-बल्--लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़कै-फ़ का-न नकीर **(18)** अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व यक़्बिज़्-न ✣ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु, इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर **(19)** अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल्-लकुम् यन्सुरुकुम् मिन् दूनिर्रह्मानि, इनिल्-काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर **(20)** अम्-मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू बल्-लज्जू फ़ी अ़ुतुव्विंव्-व नुफ़ूर **(21)** अ-फ़मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही अह्दा अम्-मंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम **(22)** क़ुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अ़ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून **(23)** क़ुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून **(24)** व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन **(25)** क़ुल् इन्नमल्-अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन **(26)** फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल

لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿١٢﴾ وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ۖ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٣﴾ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ
الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا
وَكُلُوا مِنْ رِّزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾ ءَأَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ أَن
يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنتُم مَّن فِي السَّمَاءِ
أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ
كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ
فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُندٌ لَّكُمْ يَنصُرُكُم مِّن دُونِ
الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ
إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ بَل لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَن يَمْشِي مُكِبًّا
عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّن يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾
قُلْ هُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَ
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾
قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِندَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ

❖ रु. 1/14/1 ✣ व. लाज़िम इख़्तिलाफ़ी

हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्द-अून (27) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अह्ल-कनियल्लाहु व मम्-मअि-य औ रहि-मना फ़-मंय्युजीरुल्- काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् अलीम (28) क़ुल् हुवर्-रह्मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि तवक्कल्ना फ़-स-तअ्लमू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (29) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम्-मअ़ीन (30) ❖

68 सूरतुल्-क़-लमि 2

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1295 अक्षर, 306 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून (1) मा अन्-त बिनिअ्मति रब्बि-क बि-मज्नून (2) व इन्-न ल-क ल-अज्रन् ग़ै-र मम्नून (3) व इन्न-क ल-अ़ला खुलुकिन् अ़ज़ीम (4) फ़-सतुब्सिरु व युब्सिरून (5) बि-अय्यिकुमुल्-मफ़्तून (6) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्-मुह्तदीन (7) फ़ला तुतिअ़िल्-मुकज़्ज़िबीन (8) वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून (9) व ला तुतिअ् कुल्-ल हल्लाफ़िम्-महीन (10) हम्माज़िम्-मश्शाइम् बि-नमीम (11) मन्नाअ़िल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (12) अ़ुतुल्लिम् बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (13) अन् का-न ज़ा मालिंव्-व बनीन (14) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (15) स-नसिमुहू अ़लल्-खुर्तूम (16) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना

تبٰرك الذي ٢٩ — ٥١١ — القلم ٦٨

زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِيَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِيَ اَوْ
رَحِمَنَا فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ
الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ
يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾
وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾
فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ
بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ
الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ
حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ﴿١١﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ
اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿١٣﴾ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٤﴾
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَى
الْخُرْطُوْمِ ﴿١٦﴾ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اِذْ اَقْسَمُوْا

منزل ٧

असहाबल्-जन्नति इज़् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन **(17)** व ला यस्तस्नून **(18)** फ़ता-फ़ अ़लैहा ता-इफ़ुम्-मिर्रब्बि-क व हुम् ना-इमून **(19)** फ़-अस्-बहत् कस्सरीम् **(20)** फ़-तनादौ मुस्बिहीन **(21)** अनिग़्दू अ़ला हर्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन **(22)** फ़न्त-लक़ू व हुम् य-तख़ा-फ़तून **(23)** अल्-ला यद्ख़ुलन्न-हल्यौ-म अ़लैकुम्-मिस्कीन **(24)** व ग़दौ अ़ला हर्दिन् क़ादिरीन **(25)** फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना ल-ज़ाल्लून **(26)** बल् नह्नु महरूमून **(27)** क़ा-ल औसतुहुम् अलम् अक़ुल्-लकुम् लौ ला तुसब्बिहून **(28)** क़ालू सुब्हा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन **(29)** फ़-अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तला-वमून **(30)** क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना तागीन **(31)** अ़सा रब्बुना अंय्युब्दि लना ख़ैरम्-मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून **(32)** कज़ालिकल्-अ़ज़ाबु, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ✣ लौ कानू यअ्लमून **(33)** ❖

इन्-न लिल्-मुत्तक़ी-न अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातिन्-नअ़ीम **(34)** अ-फ़-नज्-अ़लुल्-मुस्लिमी-न कल्-मुज्रिमीन **(35)** मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून **(36)** अम् लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून **(37)** इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून **(38)** अम् लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़तुन् इला यौमिल्-क़ियामति इन्-न लकुम् लमा तह्कुमून **(39)** सल्हुम् अय्युहुम् बिज़ालि-क ज़अ़ीम **(40)** अम् लहुम् शु-रका-उ फ़ल्यअ्तू बिशु-रका-इहिम् इन् कानू सादिक़ीन **(41)**

لِيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ
مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا
مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾
فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم
مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا
لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل
لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾ قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾
فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا
كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾ عَسَىٰ رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
رَاغِبُونَ ﴿٣٢﴾ كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾
أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ
لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا
تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَن

✣ व. लाज़िम ❖ रु. 1/33/3

यौ-म युक्शफ़ु अ़न् साक़िंव्-व युद्औ़-न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअ़ून (42) ख़ाशि-अ़तन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, व क़द् कानू युद्औ़-न इलस्सुजूदि व हुम् सालिमून (43) फ़-ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल्-हदीसि, स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ़्लमून (44) व उम्ली लहुम्, इन्-न कैदी मतीन (45) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्-रमिम् मुस्क़लून (46) अम् अि़न्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (47) फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहिबिल्-हूति ✣ इज़् नादा व हु-व मक्ज़ूम (48) लौ ला अन् तदा-र-कहू निअ़्मतुम्-मिर्रब्बिही लनुबि-ज़ बिल्-अ़रा-इ व हु-व मज़्मूम (49) फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ़-लहू मिनस्सालिहीन (50) व इंय्- यकादुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-युज़्लिक़ून-क बि-अब्सारिहिम् लम्मा समिअ़ुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मजनून ✣ (51) व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आ़लमीन ◆ (52) ❖

الحاقة ٦٩ ٥١٣ تبارك الذي ٢٩

سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
وَهُمْ سَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهَٰذَا الْحَدِيثِ ۖ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ
كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾ أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾
أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ
لَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾ لَوْلَا أَنْ
تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾
فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ
إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الْحَاقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ
وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَأَمَّا عَادٌ
فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ
وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ

منزل ٧

69 सूरतुल्-हाक़्क़ति 78

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1134 अक्षर, 260 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्-हाक़्क़तु (1) मल्-हाक़्क़ह् (2) व मा अद्रा-क मल्-हाक़्क़ह् (3) कज़्ज़बत् समूदु व आ़दुम्-बिल्-क़ारिअ़ह् (4) फ़-अम्मा समूदु फ़-उह्लिकू बित्ताग़ियह् (5) व अम्मा आ़दुन् फ़-उह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आ़तियह् (6) सख़्ख़-रहा अ़लैहिम् सब्-अ़ लयालिंव्-व
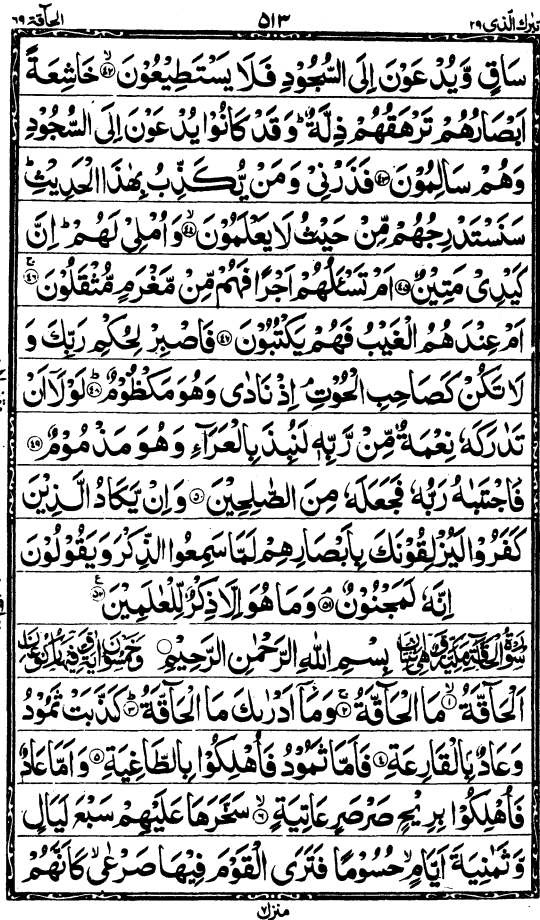
समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् फ़-तरल्-क़ौ-म फ़ीहा सर्-आ क-अन्नहुम् अअ्-जाजु नख़्लिन् ख़ावियह् (7) फ़-हल् तरा लहुम् मिम्-बाक़ियह् (8) व जा-अ फ़िर्-औनु व मन् क़ब्लहू वल्-मुअ्-तफ़िकातु बिल्-ख़ातिअह् (9) फ़-अ़सौ रसू-ल रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़हुम् अख़्ज़-तर्-राबियह् (10) इन्ना लम्मा तग़ल्-मा-उ हमल्नाकुम् फ़िल्जारियह् (11) लिनज्-अ़-लहा लकुम् तज़्कि-रतंव्-व तअि-यहा उज़ुनुंव्-वाअियह् (12) फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्-वाहि-दतुन् (13) व हुमि-लतिल्-अर्ज़ु वल्जिबालु फ़-दुक्कता दक्क-तंव्-वाहि-दह् (14) फ़यौमइज़िंव्-व-क़-अ़तिल्- वाक़िअ़ह् (15) वन्-शक़्क़तिस्-समा-उ फ़हि-य यौमइज़िंव्-वाहि-यतुंव्- (16) -वल्-म-लकु अ़ला अर्जा-इहा, व यह्मिलु अ़र्-श रब्बि-क फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियह् (17) यौमइज़िन् तुअ्-रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़ियह् (18) फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही फ़-यक़ूलु हाउ-मुक्रऊ किताबियह् (19) इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् हिसाबियह् (20) फ़हु-व फ़ी अ़ी-शतिर्-राज़ियह् (21) फ़ी जन्नतिन् आ़लियह् (22) क़ुतूफ़ुहा दानियह् (23) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा अस्लफ़्तुम् फ़िल्-अय्यामिल्-ख़ालियह् (24) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बिशिमालिही फ़-यक़ूलु या लैतनी लम् ऊ-त किताबियह् (25) व लम् अद्रि मा हिसाबियह् (26) या लैतहा कानतिल्-क़ाज़ियह् (27) मा अग़्ना अ़न्नी मालियह् (28) ह-ल-क अ़न्नी सुल्तानियह् (29) ख़ुज़ूहु फ़-ग़ुल्लूहु (30) सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (31)

أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ
فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ
رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ
فِى الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾
فَإِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَ
الْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾
وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى
أَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾
يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَأَمَّا مَنْ أُوْتِىَ كِتٰبَهٗ
بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ إِنِّىْ ظَنَنْتُ أَنِّىْ
مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾
قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى
الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَأَمَّا مَنْ أُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِىْ لَمْ أُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا
كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ أَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّىْ
سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِىْ

सुम्-म फ़ी सिल्सि-लतिन् ज़र्अुहा सब्अू-न ज़िराअ़न् फ़स्लुकूहु (32) इन्नहू का-न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल्-अ़ज़ीम (33) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (34) फ़लै-स लहुल्-यौ-म हाहुना हमीम (35) व ला तआ़मुन् इल्ला मिन् ग़िस्लीन (36) ला यअ्कुलुहू इल्लल्-ख़ातिऊन (37) ❖

फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (38) व मा ला तुब्सिरून (39) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम (40) व मा हु-व बिक़ौलि शाअ़िर्, क़लीलम्-मा तुअ्मिनून (41) व ला बिक़ौलि काहिन्, क़लीलम्-मा तज़क्करून (42) तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (43) व लौ तक़व्व-ल अ़लैना बअ्ज़ल्-अक़ावील (44) ल-अख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (45) सुम्-म ल-क़तअ्ना मिन्हुल्-वतीन (46) फ़मा मिन्कुम्-मिन् अ-हदिन् अ़न्हु हाजिज़ीन (47) व इन्नहू ल-तज़्कि-रतुल् लिल्-मुत्तक़ीन (48) व इन्ना ल-नअ्लमु अन्-न मिन्कुम् मुकज़्ज़िबीन (49) व इन्नहू ल-हस्-रतुन् अ़लल्-काफ़िरीन (50) व इन्नहू ल-हक़्क़ुल्-यक़ीन (51) फ़-सब्बिह् बिस्मि-रब्बिकल्-अ़ज़ीम (52) ❖

تبارك الذي ٢٩ ٥١٥ المعارج ٧٠

سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ﴿٣٢﴾ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ الْعَظِيمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ
لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيمٌ ﴿٣٥﴾ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ﴿٣٦﴾
لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ﴿٣٧﴾ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا
لَا تُبْصِرُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿٤٠﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ
قَلِيلًا مَا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾
تَنْزِيلٌ مِنْ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ
الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾
فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾ وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾ وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ
عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٥٠﴾ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾ لِلْكٰفِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾
مِنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي
يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا

منزل ٧

70 सूरतुल्-मआ़रिजि 79

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 677 अक्षर, 260 शब्द, 44 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

स-अ-ल साइलुम्-बि-अ़ज़ाबिंव्-वाक़िअ़िल्- (1) -लिल्-काफ़िरी-न लै-स लहू दाफ़िअुम्- (2) -मिनल्लाहि ज़िल्-मआ़रिज (3) तअ्रुजुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी
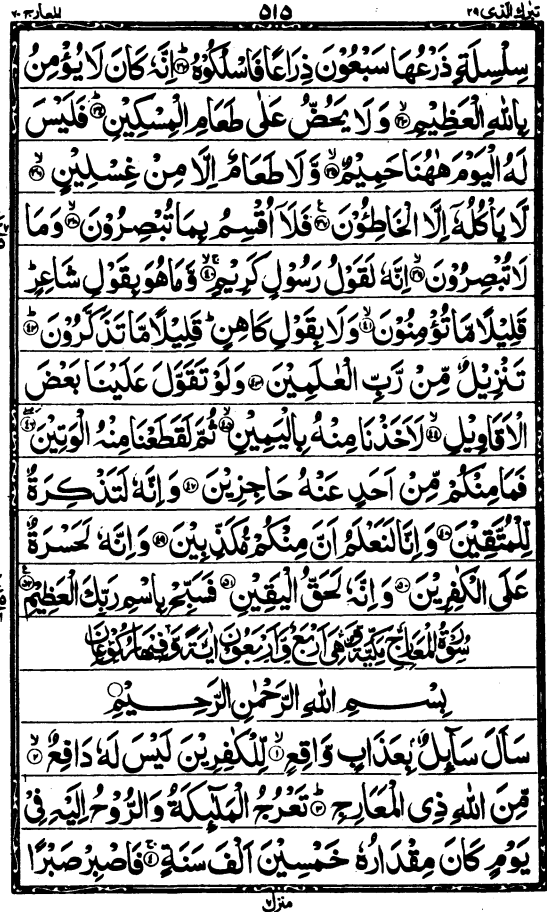
यौमिन् का-न मिक्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् **(4)** फ़स्बिर सब्रन् जमीला **(5)** इन्नहुम् यरौनहू बअ़ीदंव्- **(6)** व नराहु क़रीबा **(7)** यौ-म तकूनुस्समा-उ कल्मुह्लि **(8)** व तकूनुल्-जिबालु कल्अि़ह्नि **(9)** व ला यस्अलु हमीमुन् हमीमंय्- **(10)** -युबस्सरू-नहुम्, य-वद्दुल्-मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन् अ़ज़ाबि यौमिइज़िम् बि-बनीहि **(11)** व साहि-बतिही व अख़ीहि **(12)** व फ़सी-लतिहिल्लती तुअ्वीहि **(13)** व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्-म युन्जीहि **(14)** कल्ला, इन्नहा लज़ा **(15)** नज़्ज़ा-अ़तल्-लिश्शवा **(16)** तद्अू मन् अद्ब-र व त-वल्ला **(17)** व ज-म-अ़ फ़औआ़ **(18)** इन्नल्-इन्सा-न ख़ुलि-क़ हलूआ़ **(19)** इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ़ **(20)** व इज़ा मस्सहुल्-ख़ैरु मनूआ़ **(21)** इल्लल्-मुसल्लीन **(22)** अल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् दा-इमून **(23)** वल्लज़ी-न फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुम्-मअ़्लूम **(24)** लिस्सा-इलि वल्-मह्रूम **(25)** वल्लज़ी-न युसद्दिक़ू-न बियौमिद्-दीन **(26)** वल्लज़ी-न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून **(27)** इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून **(28)** वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून **(29)** इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन **(30)** फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून **(31)** वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राअू़न **(32)** वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादातिहिम् क़ा-इमून **(33)** वल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून **(34)** उलाइ-क फ़ी जन्नातिम्-मुक्रमून **(35)** ❖

جَمِيلًا ﴿٥﴾ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ﴿٦﴾ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُونُ
السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ﴿٨﴾ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ﴿٩﴾ وَلَا يَسْأَلُ
حَمِيمٌ حَمِيمًا ﴿١٠﴾ يُبَصَّرُونَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ
عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ﴿١١﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ﴿١٢﴾ وَفَصِيلَتِهِ
الَّتِي تُؤْوِيهِ ﴿١٣﴾ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ﴿١٤﴾ كَلَّا إِنَّهَا
لَظَىٰ ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِلشَّوَىٰ ﴿١٦﴾ تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ
فَأَوْعَىٰ ﴿١٨﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ
جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ
هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ
مَعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ
الدِّينِ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾
إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ
حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ
غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْعَادُونَ ﴿٣١﴾ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾
وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ

फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू क़ि-ब-ल-क मुह्तिओन (36) अ़निल्-यमीनि व अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (37) अ-यत्मअ़ु कुल्लुम्रिइम्-मिन्हुम् अय्युद्ख़-ल जन्न-त नओम (38) कल्ला, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिम्मा यअ़्लमून (39) फ़ला उक़्सिमु बिरब्बिल्-मशारिकि वल्-मग़ारिबि इन्ना ल-क़ादिरून (40) अ़ला अन् नुबद्दि-ल ख़ैरम्-मिन्हुम् व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन (41) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अबू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून (42) यौ-म यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि सिराअ़न् क-अन्नहुम् ,इला नुसुबिंय्- यूफ़िज़ून (43) ख़ाशि-अ़तन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, ज़ालिकल्-यौमुल्लज़ी कानू यू-अ़दून (44) ❖

71 सूरतु नूहिन् 71

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 974 अक्षर, 231 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौम-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (1) क़ा-ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-

تبارك الذى ٢٩ — ٥١٧ — نوح ٧١

يُحَافِظُونَ ۟ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۟ فَمَالِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۟ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ۟
اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۟ كَلَّا ؕ
اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۟ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ
اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۟ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوْقِيْنَ ۟ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ
الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ۟ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۟ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۟

سُوْرَةُ نُوْحٍ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۟ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۟
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۟ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ
وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ
لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۟ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۟
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىْٓ اِلَّا فِرَارًا ۟ وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ

منزل ٧

मुबीन (2) अनिअ़्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु व अतीअ़ून (3) यग़्फ़िर् लकुम्-मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िर्कुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न अ-जलल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु ✣ लौ कुन्तुम् तअ़्लमून (4) क़ा-ल रब्बि इन्नी दऔतु क़ौमी लैलंव्-व नहारा (5) फ़-लम् यज़िद्हुम् दुआ़ई इल्ला फ़िरारा (6) व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़्फ़ि-र लहुम् ज-अ़लू

असाबि-अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा **(7)** सुम्-म इन्नी दअ़ौतुहुम् जिहारा **(8)** सुम्-म इन्नी अअ़्लन्तु लहुम् व अस्रर्तु लहुम् इस्रारा **(9)** फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम्, इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारा **(10)** युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्- **(11)** -व युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व यज्अ़ल्-लकुम् जन्नातिंव्-व यज्अ़ल्-लकुम् अन्हारा **(12)** मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा **(13)** व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा **(14)** अलम् तरौ कै-फ ख़-लक़ल्लाहु सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़ा **(15)** व ज-अ़लल् क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अ़लश्शम्-स सिराजा **(16)** वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्ज़ि नबाता **(17)** सुम्-म युअ़ीदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा **(18)** वल्लाहु ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ बिसाता **(19)** लि-तस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा (20) ❖

क़ा-ल नूहुर्-रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त-बअ़ू मल्-लम् यज़िद्हु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा **(21)** व म-करू मक्रन् कुब्बारा **(22)** व क़ालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअ़ंव्-व ला यग़ू-स व यअ़ू-क़ व नस्रा **(23)** व क़द् अज़ल्लू कसीरन्, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला **(24)** मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा **(25)** व क़ा-ल नूहुर्-रब्बि ला तज़र् अ़लल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा **(26)** इन्न-क इन् तज़र्हुम् युज़िल्लू अ़िबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा **(27)**

جعلوا اصابعهم في اذانهم واستغشوا ثيابهم واصروا
واستكبروا استكبارا ۝ ثم اني دعوتهم جهارا ۝ ثم اني
اعلنت لهم واسررت لهم اسرارا ۝ فقلت استغفروا ربكم
انه كان غفارا ۝ يرسل السماء عليكم مدرارا ۝ ويمددكم
باموال وبنين ويجعل لكم جنت ويجعل لكم انهرا ۝
ما لكم لا ترجون لله وقارا ۝ وقد خلقكم اطوارا ۝ الم
تروا كيف خلق الله سبع سموت طباقا ۝ وجعل القمر
فيهن نورا وجعل الشمس سراجا ۝ والله انبتكم من
الارض نباتا ۝ ثم يعيدكم فيها ويخرجكم اخراجا ۝ والله
جعل لكم الارض بساطا ۝ لتسلكوا منها سبلا فجاجا ۝ ع
قال نوح رب انهم عصوني واتبعوا من لم يزده ماله و
ولده الا خسارا ۝ ومكروا مكرا كبارا ۝ وقالوا لا تذرن
الهتكم ولا تذرن ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق و
نسرا ۝ وقد اضلوا كثيرا ولا تزد الظلمين الا ضللا ۝
مما خطيئتهم اغرقوا فادخلوا نارا فلم يجدوا لهم
من دون الله انصارا ۝ وقال نوح رب لا تذر على الارض

68

रब्बिग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ● (28) ❖

72 सूरतुल्-जिन्नि 40

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1126 अक्षर, 287 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्-त-म-अ़ न-फ़रुम् मिनल्-जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ्ना क़ुरआनन् अ़-जबा (1) यह्दी इलर्-रुश्दि फ़-आमन्ना बिही, व लन्-नुश्रि-क बिरब्बिना अ-हदा (2) व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-बतंव्-व ला व-लदा (3) व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-तता (4) व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा (5) व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सि यअूज़ू-न बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादूहुम् र-हक़ा (6) व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़नन्तुम् अल्लंय्-यब्-असल्लाहु अ-हदा (7) व अन्ना ल-मस्नस्समा-अ फ़-वजद्नाहा मुलिअत् ह-रसन् शदीदंव्-व शुहुबा (8) व अन्ना कुन्ना नक़्अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि, फ़-मंय्यस्तमिअिल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-सदा (9) व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा (10) व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना

مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ
لَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَ
لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا
تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا
قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ
اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ
تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝ وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ
الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝ وَّاَنَّهُمْ
ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ
فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝ وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ
مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝
وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ
رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ كُنَّا

तराइ-क़ क़ि-ददा **(11)** व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-रबा **(12)** व अन्ना लम्मा समिअ्नल्-हुदा आमन्ना बिही, फ़-मंय्युअ्मिम् बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव्-व ला र-हक़ा **(13)** व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल्-क़ासितू-न, फ़-मन् अस्ल-म फ़-उलाइ-क त-हर्रौ र-शदा **(14)** व अम्मल्-क़ासितू-न फ़कानू लि-जहन्न-म ह-तबा **(15)** व अल्-लविस्तक़ामू अ़लत्तरी-क़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-दक़ा **(16)** लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व मंय्युअ्रिज़् अ़न् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अ़ज़ाबन् स-अ़दा **(17)** व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्अ़ू मअ़ल्लाहि अ-हदा **(18)** व अन्नहू लम्मा क़ा-म अ़ब्दुल्लाहि यद्अ़ूहु कादू यकूनू-न अ़लैहि लि-बदा **(19)** ❖

क़ुल् इन्नमा अद्अ़ू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-हदा **(20)** क़ुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-शदा **(21)** क़ुल् इन्नी लंय्युजी-रनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा **(22)** इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालातिही, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदा **(23)** हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न फ़-सयअ्लमू-न मन् अज़्अ़फ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ़-ददा **(24)** क़ुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम्-मा तू-अ़दू-न अम् यज्अ़लु लहू रब्बी अ-मदा **(25)** आ़लिमुल्-ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अ़ला ग़ैबिही अ-हदा **(26)**

طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ
نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْ
بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا
الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ
فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ
مَّآءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ
عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝
وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝
قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۝ قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ
لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۝ قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِىْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ
وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ
نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۝ قُلْ اِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ
يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّىْٓ اَمَدًا ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ
اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ

(तफ़सीर पृष्ठ 1032) 1. चुनाँचे फट जाना कमज़ोरी की दलील है। यानी जैसा इस वक़्त वह मज़बूत है और उसमें कहीं कोई नुक़्स और फटन नहीं, उस दिन उसमें यह बात न रहेगी बल्कि कमज़ोरी और फटन हो जाएगी।

2. आसमान बोदा और कमज़ोर हो जाएगा। चुनाँचे बीच में से फटकर चार तरफ़ सिमट जाएगा और वे फ़रिश्ते जो इस वक़्त उसमें हर तरफ़ फैले हुए हैं उसके किनारों पर आ जाएँगे।

3. हदीस में है कि अब अ़र्श को चार फ़रिश्ते उठाए हुए हैं।

4. चूँकि उसको नजात हासिल हुई और वह शुरू ही में जन्नत में दाख़िल होने वाला है इसलिए वह ख़ुशी-ख़ुशी अपना नामा-ए-आमाल हर किसी को दिखाएगा।

5. यानी क़ियामत व हिसाब का एतिक़ाद रखता था। मतलब यह कि मैं ईमान व तस्दीक़ रखता था, ख़ुदा ने उसकी बरकत से आज मुझको नवाज़ा।

6. आमालनामे का बाएँ हाथ में मिलना उसके मातूब (कोप पात्र) होने की निशानी है इसलिए अपनी बदनसीबी और बदहाली पर बहुत ही ज़्यादा रंज व हसरत और हाय-तौबा मचाएगा कि हाय! यहाँ न मेरी दौलत व मालदारी कुछ काम आई और न रुतबे व इज़्ज़त ही ने कुछ फ़ायदा दिया, सब दुनिया का दुनिया ही में रह गया।

(तफ़सीर पृष्ठ 1034) 1. उस गज़ की मिक़्दार (मात्रा) ख़ुदा को मालूम है। क्योंकि यह गज़ वहाँ का होगा।

2. यानी जिस तरह ईमान लाना अम्बिया की तालीम के मुताबिक़ ज़रूरी था, वह ईमान न रखता था।

3. यहाँ "इत्आ़म" और "हज़" (यानी ख़ुद खाना-खिलाने और दूसरों को उसपर तरग़ीब देने) से मुराद वह हालत है जिसमें ऐसा करना वाजिब है, और मुराद उससे वह छोड़ना है जिसका सबब ईमान न लाना हो। हासिल यह कि ख़ुदा की अ़ज़्मत और मख़्लूक़ की शफ़्क़त जो अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ से मुताल्लिक़ असल इबादतें हैं, ये दोनों का छोड़ने वाला और इनकारी था, इसलिए अ़ज़ाब का हक़दार हुआ।

4. यानी सिवाय एक ऐसी चीज़ के जो देखने और बुरा होने में ज़ख़्मों के धोवन के जैसा होगा। और यह कहना कि इसके सिवा कुछ न मिलेगा यह क़ैद इज़ाफ़ी है और मक़सूद इससे इसका इनकार है कि पसन्दीदा खाने नहीं मिलेंगे, वरना 'ज़क़्क़ूम' वग़ैरह का होना ख़ुद आयतों से साबित है।

5. इस क़सम को मक़सूद से एक ख़ास मुनासबत है कि क़ुरआन मजीद का लाने वाला तो नज़र नहीं आता था और जिनपर क़ुरआन आता था वे नज़र आते थे, यानी तमाम मख़्लूक़ की क़सम है।

6. रसूल से या तो हुज़ूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुराद हैं या जिबराईल अ़लैहिस्सलाम। यानी क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जो अल्लाह के अमानतदार रसूले मक़बूल की ज़बान से अदा कराया जाता है, जिसकी ज़िम्मेदारी है कि उसको हर्फ़-ब-हर्फ़ (यानी जूँ का तूँ) मख़्लूक़ तक पहुँचाएँ और बीच में तसर्रुफ़ करने की न ख़ुद उनको इजाज़त है न वह ऐसा कर सकते हैं। और यह किसी शायर का कलाम भी नहीं। ग़रज़ यह कि क़ुरआन जिसके ज़रिए से तुम तक पहुँचा है वह अल्लाह का सच्चा और अमानतदार रसूल है, कोई शायर नहीं है।

7. क़त्ल के वक़्त जल्लाद अपने बाएँ हाथ से मुज्रिम का दाहिना हाथ पकड़कर उसकी गर्दन उड़ाता है, और गर्दन की वह रग जो दिल से मिली हुई है 'वतीन' कहलाती है, उसके कटने से इनसान हलाक हो जाता है। मतलब यह है कि अगर हमारा रसूल हमारी तरफ़ कोई ग़लत बात मन्सबू करता तो झूठ घड़ने की सज़ा में हम उसको फ़ौरन हलाक कर देते। याद रहे कि नुबुव्वत का सिलसिला हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते ग्रामी पर ख़त्म हो चुका, अगर किसी नुबुव्वत का दावा करने वाले का कोई पैरोकार इस आयत से दलील पकड़ कर कहने लगे कि "अगर मेरा मुक़्तदा झूठा नबी होता तो फ़ौरन हलाक कर दिया जाता", तो यह उसकी समझ के टेढ़ा होने पर दलालत करता है क्योंकि यह एतिमाद का इज़्हार सिर्फ़ नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते ग्रामी पर किया गया है न कि किसी झूठा दावा करने वाले पर। क़ायदे की बात है कि कोई शख़्स किसी के लायक़ बेटे पर ऐब लगाने लगे तो बाप फ़ौरन कहने लगता है कि हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता, अगर मेरा लड़का ऐसा करे तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूँ। लेकिन अगर उसके किसी नालायक़ बेटे के मुताल्लिक़ कोई शिकायत पहुँचती है तो वह शर्मिन्दा होता है और माज़िरत करने लगता है कि हाय मैं क्या करूँ! उसकी बदकिरदारियों से तो मैं तंग आ चुका हूँ। ग़रज़ जिस तरह फ़ासिक़ व बद-चलन बेटे के मुताल्लिक़ कभी कोई शख़्स एतिमाद का इज़्हार नहीं किया करता उसी तरह इस आयत में ख़ुदा तआ़ला ने सिर्फ़ अपने सच्चे रसूल के सच्चा और साफ़ होने पर एतिमाद का इज़्हार फ़रमाया है। किसी दज्जाल झूठे के बारे में नहीं फ़रमाया कि अगर वह मुझपर झूठ घड़े तो उसके दिल की रग को काट दूँ। झूठा दावा करने वालों और बोहतान बाँधने वालों के बारे में हक़ तआ़ला का उसूल अलग है, और वह यह है "व उम्ली लहुम इन्-न कैदी मतीन" **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1046 पर)**

(पिछले पृष्ठ का शेष) ज़िन्दगी गुज़ारनी नसीब होगी। बाक़ी वह वक़्ते मुक़र्ररा जो मोमिन और काफ़िर हर शख़्स के लिए तजवीज़ हो चुका है, तो वह किसी हाल में भी टल नहीं सकता। लेकिन काफ़िर और मोमिन के मरने में यह फ़र्क़ है कि मोमिन की मौत इज़्ज़त की मौत है कि आइन्दा के लिए राहत है, लेकिन काफ़िर दुनियावी ज़िन्दगी में हर तरह ऐश व आराम में भी रहा तो मरने के बाद उसको 'बरज़ख़ के अ़ज़ाब' और जहन्नम की सज़ा का सामना है। मोमिन आइन्दा के अ़ज़ाब से तो महफ़ूज़ ही है मगर कभी-कभी उसको दुनियावी परेशानियाँ पेश आ जाती हैं। लेकिन नूह अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह की वह्य से इत्तिला पाकर क़ौम को यक़ीन दिलाया कि ईमान ले आने की सूरत में तुम इन दुनिया में पेश आने वाली मुसीबतों से भी महफ़ूज़ रहोगे, लेकिन उन बदनसीबों ने फिर भी कोई तवज्जोह न की।

(तफ़सीर पृष्ठ 1040) **1.** जब नूह अ़लैहिस्सलाम सदियों तक क़ौम को समझाते और नसीहतें करते रहे और इनकार व मुँह मोड़ने के सिवा हक़ की दावत का कोई जवाब न मिला तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ किया, इलाहुल आ़लमीन! मैंने दावत में कोई कसर नहीं छोड़ी मगर क़ौम ने नसीहत पर अ़मल करना तो दरकिनार उसका सुनना भी गवारा न किया। ये लोग हमेशा कुफ़्र पर जमे रहे और गुरूर व तकब्बुर को अपना शिआ़र बनाए रखा। इसपर भी मैं अपने नसीहत करने और समझाने में बराबर मसरूफ़ रहा। आख़िर जब देखा कि आख़िरत के फ़ायदे व कामयाबी पर क़तई कान नहीं धरते तो उन्हें ईमान के क़बूल करने के दुनियावी फ़ायदे समझाए और ईमान की फ़ौरी बरकतें बयान कीं, तन्हाई में और खुलेआ़म रग़बत दिलाने और डराने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से उनको सही रास्ते पर लाने की कोशिश की मगर ये लोग न समझे बिलकुल न समझे।

2. मुराद इससे वअ़ज़ (यानी नसीहत के तौर पर तक़रीर करना) और आ़म ख़िताब है जिसमें आ़दतन आवाज़ बुलन्द होती है।

3. इन नेमतों के ज़िक्र करने से शायद यह फ़ायदा हो कि अक्सर तबीयतों में फ़ौरन मिलने वाले फ़ायदों की तलब ज़्यादा है, चुनाँचे दुर्रे मन्सूर में हज़रत क़तादा का क़ौल है कि वे लोग दुनिया के ज़्यादा लालची थे इसलिए यह फ़रमाया।

4. यहाँ तक सारा का सारा वह कलाम है जिसका ज़िक्र नूह अ़लैहिस्सलाम ने हक़ तआ़ला से बतौर फ़रियाद के किया।

5. मुराद उन शख़्सों से सरदार हैं जिनकी अ़वाम पैरवी करते हैं, और माल और औलाद का उन सरदारों को नुक़सान पहुँचाना इस मायने में है कि माल व औलाद सरकशी और नाफ़रमानी के बढ़ने का सबब हो गये।

6. यूँ तो नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम ने अपने पूजने के लिए सैकड़ों बुत बना रखे थे मगर ख़ास बड़े बुत जो सब मख़्लूक़ के रुजू होने का मर्कज़ बने हुए थे पाँच थे- मर्द की शक्ल पर जो देवता था उसका नाम 'वुद' था, और जो औ़रत के जैसी मूरत देवी बना रखी थी, उसका नाम 'सुवाअ़' रख छोड़ा था। एक शेर की मूरत थी जिसका नाम 'यग़ूस' था, एक मूर्ती घोड़े की हमशक्ल थी उसका नाम 'यऊक़' था, एक गिध की शक्ल पर थी उसको 'नस्र' के नाम से जानते थे।

7. ताकि ये लोग हलाकत के मुस्तहिक़ हो जाएँ। पस दुआ़ करने का मक़सद गुमराही बढ़ाना नहीं बल्कि हलाकत का मुस्तहिक़ होना है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1042) **1.** बज़ाहिर मालूम होता है कि नूह अ़लैहिस्सलाम के माँ-बाप मोमिन थे। और अगर इसके ख़िलाफ़ साबित हो जाए तो माँ-बाप से मुराद दूर के माँ-बाप लेंगे और दूर के माँ-बाप में मोमिन होने का वजूद यक़ीनी है।

2. यानी उनकी नजात की कोई सूरत न रहे, हलाक ही हो जाएँ। और यही मक़सूद था गुमराही की दुआ़ से। नूह अ़लैहिस्सलाम की तब्लीग़ी उम्र साढ़े नौ सौ साल थी, उन्होंने इतनी लम्बी उम्र तब्लीग़ ही में खपा दी, लेकिन जब इतनी लम्बी मुद्दत में भी सिर्फ़ चन्द आदमियों के अ़लावा किसी पर हिदायत का असर न देखा तो अपने ईमानी नूर से महसूस किया कि इन चन्द आदमियों के सिवा जो अब तक ईमान ला चुके मौजूदा नस्ल में से कोई और शख़्स इस्लाम के दायरे में दाख़िल न होगा। बल्कि आपको यह भी मालूम हो गया कि उनकी आने वाली नस्ल में भी किसी को ईमान लाने की तौफ़ीक़ न होगी, तो उनके ईमान क़बूल करने की तरफ़ से क़तई मायूसी के बाद आपने तूफ़ाने आ़म की बद-दुआ़ की।

3. हज़रत सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नबी की हैसियत से तशरीफ़ लाने से पहले जिन्नात आसमान तक चले जाते थे। जो अहकाम फ़रिश्तों पर नाज़िल होते और फ़रिश्तों में आपस में उनका तज़्किरा होता तो जिन्नात वे बातें सुनकर काहिनों को ला सुनाते थे, और 'काहिन' उसमें अपनी तरफ़ से बीस झूठ मिलाकर ग़ैब जानने के मुद्दई बन बैठते। जब क़ुरआन नाज़िल होने लगा तो फ़रिश्तों की ज़बरदस्त चौकियाँ बिठा दी गईं ताकि जिन्नात कोई आसमानी कलाम न सुन सकें और हक़ व बातिल आपस में गड्-मड् न हों और आसमानी वह्य और शैतानी कलाम एक-दूसरे से अलग रहें। उसके बाद जो जिन्न आसमान तक पहुँचने की कोशिश करता वह 'शिहाबे साक़िब' से हलाक कर दिया जाता। ग़रज़ जिन्नात ने आसमान तक अपनी रसाई न देखी तो उसकी वजह मालूम करने के लिए इधर-उधर फैल पड़े। जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मक्का शहर से बाहर **(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1048 पर)**

इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ-इन्नहू यस्लुकु मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र-सदा (27) लियअ्ल-म अन् क़द् अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्-ल शैइन् अ़-ददा (28) ❖

يديه ومن خلفه رصدا ﴿٢٧﴾ ليعلم ان قد ابلغوا رسلت ربهم
واحاط بما لديهم واحصى كل شيء عددا ﴿٢٨﴾
سورة المزمل مكية وهي بسم الله الرحمن الرحيم عشرون اية وفيها ركوعان
يايها المزمل ﴿١﴾ قم اليل الا قليلا ﴿٢﴾ نصفه او انقص
منه قليلا ﴿٣﴾ او زد عليه ورتل القران ترتيلا ﴿٤﴾ انا سنلقي
عليك قولا ثقيلا ﴿٥﴾ ان ناشئة اليل هي اشد وطا واقوم
قيلا ﴿٦﴾ ان لك في النهار سبحا طويلا ﴿٧﴾ واذكر اسم ربك و
تبتل اليه تبتيلا ﴿٨﴾ رب المشرق والمغرب لا اله الا هو
فاتخذه وكيلا ﴿٩﴾ واصبر على ما يقولون واهجرهم هجرا
جميلا ﴿١٠﴾ وذرني والمكذبين اولي النعمة ومهلهم قليلا ﴿١١﴾
ان لدينا انكالا وجحيما ﴿١٢﴾ وطعاما ذا غصة وعذابا اليما ﴿١٣﴾
يوم ترجف الارض والجبال وكانت الجبال كثيبا مهيلا ﴿١٤﴾
انا ارسلنا اليكم رسولا شاهدا عليكم كما ارسلنا الى
فرعون رسولا ﴿١٥﴾ فعصى فرعون الرسول فاخذنه اخذا
وبيلا ﴿١٦﴾ فكيف تتقون ان كفرتم يوما يجعل الولدان
شيبا ﴿١٧﴾ السماء منفطر به كان وعده مفعولا ﴿١٨﴾ ان هذه

73 सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि 3

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 864 अक्षर, 200 शब्द, 20 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल्- मुज़्ज़म्मिलु (1) क़ुमिल्-लै-ल इल्ला क़लीला (2) निस्फ़हू अविन्क़ुस् मिन्हु क़लीला (3) औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल्-क़ुर्आ-न तर्तीला (4) इन्ना सनुल्क़ी अ़लै-क क़ौलन् सक़ीला (5) इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशद्दु वत्अंव्-व अक़्वमु क़ीला (6) इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला (7) वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला (8) रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु वकीला (9) वस्बिर अ़ला मा यक़ूलू-न वह्जुर्हुम् हज्रन् जमीला (10) व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ्मति व मह्हिल्हुम् क़लीला (11) इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमा (12) व तआमन् ज़ा गुस्सतिंव्-व अ़ज़ाबन् अलीमा (13) यौ-म तर्जुफ़ुल्-अर्ज़ु वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला (14) इन्ना अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ-न रसूला (15) फ-असा फ़िर्औनुर्-रसू-ल फ-अख़ज़्नाहु
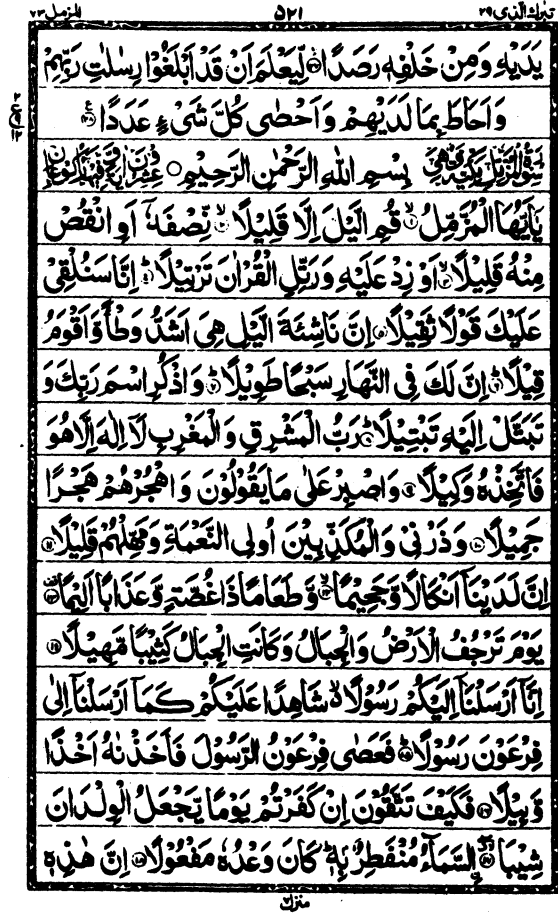
अख़्ज़ंव्-वबीला (16) फ़कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज्-अलुल्-विल्दा-न शीबा (17) अस्समा-उ मुन्फ़तिरुम् बिही, का-न वअ़्दुहू मफ़्अ़ूला (18) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (19) ❖

इन्-न रब्ब-क यअ़्लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताइ-फ़तुम् मिनल्लज़ी-न म-अ़-क, वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अ़लि-म अल्-लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अ़लैकुम् फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुर्आनि, अ़लि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ-ख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व आ-ख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्-ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन्, व मा तुक़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ़्-ज़-म अज्रन्, वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (20) ❖

المزمل ٧٣ ٥٢٢ تبٰرك الذي ٢٩

تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ
أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ
مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَنْ لَنْ
تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ
أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ
خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا
اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾ قُمْ فَأَنْذِرْ ﴿٢﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿٧﴾
فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ﴿٨﴾ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ﴿٩﴾ عَلَى
الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ﴿١٠﴾ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ﴿١١﴾ وَجَعَلْتُ
لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ﴿١٢﴾ وَبَنِينَ شُهُودًا ﴿١٣﴾ وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ﴿١٤﴾

منزل

74 सूरतुल्-मुद्दस्सिरि 4

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1145 अक्षर, 256 शब्द, 56 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल् मुद्दस्सिरु (1) क़ुम् फ़-अन्ज़िर् (2) व रब्ब-क फ़-कब्बिर (3) व सिया-ब-क फ़-तह्हिर् (4) वर्रुज्-ज़ फ़ह्जुर (5) व ला तम्नुन् तस्तक्सिर (6) व लि-रब्बि-क फ़सबिर (7) फ़-इज़ा नुक़ि-र फ़िन्नाक़ूरि (8) फ़-ज़ालि-क यौमइज़िंय्-यौमुन्
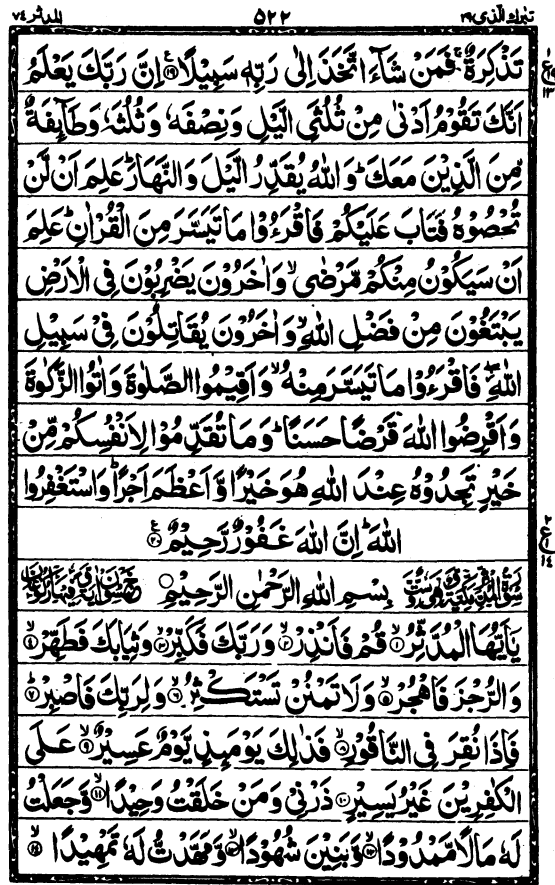
अ़सीर **(9)** अ़लल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर **(10)** ज़र्नी व मन् ख़लक़्तु वहीदा **(11)** व जअ़ल्तु लहू मालम्-मम्दूदा **(12)** व बनी-न शुहूदा **(13)** व मह्हत्तु लहू तम्हीदा **(14)** सुम्-म यत्मअ़ु अन् अज़ी-द **(15)** कल्ला, इन्नहू का-न लिआयातिना अ़नीदा **(16)** स-उर्हिक़ुहू सअ़ूदा **(17)** इन्नहू फ़क्क-र व क़द्द-र **(18)** फ़क़ुति-ल कै-फ क़द्द-र **(19)** सुम्-म क़ुति-ल कै-फ क़द्द-र **(20)** सुम्-म न-ज़-र **(21)** सुम्-म अ़-ब-स व ब-स-र **(22)** सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र **(23)** फ़क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्-युअ्सर **(24)** इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-ब-शर **(25)** स-उस्लीहि स-क़र **(26)** व मा अद्रा-क मा स-क़र **(27)** ला तुब्क़ी व ला त-ज़र **(28)** लव्वा-हतुल् लिल्ब-शर **(29)** अ़लैहा तिस्-अ़-त अ़-शर **(30)** व मा जअ़ल्ना अस्हाबन्नारि इल्ला मलाइ-कतंव्-व मा जअ़ल्ना अ़िद्द-तहुम् इल्ला फ़ित्-नतल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू लि-यस्तैक़िनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब व यज़्दादल्लज़ी-न आमनू ईमानंव्-व ला यर्ताबल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब वल्-मुअ्मिनू-न व लि-यक़ूलल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्-वल्- काफ़िरू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन्, क-ज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व मा यअ़्लमु जुनू-द

تبارك الذي ٢٩ ٥٢٣ المدثر ٧٤

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ﴿١٥﴾ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ﴿١٦﴾ سَأُرْهِقُهُ
صَعُودًا ﴿١٧﴾ إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﴿١٨﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿١٩﴾ ثُمَّ قُتِلَ
كَيْفَ قَدَّرَ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿٢١﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﴿٢٣﴾
فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ﴿٢٤﴾ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾ سَأُصْلِيهِ
سَقَرَ ﴿٢٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾ لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾
عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً
وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾
وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ
شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ﴿٣٨﴾
إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ﴿٣٩﴾ فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾
مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ

منزل

रब्बि-क इल्ला हु-व, व मा हि-य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब-शर **(31)** ◆

कल्ला वल्क़-मरि **(32)** वल्लैलि इज़् अद्-ब-र **(33)** वस्सुब्हि इज़ा अस्-फ़-र **(34)** इन्नहा ल-इह्दल्-कु-बरि **(35)** नज़ीरल् लिल्ब-शर **(36)** लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्य-तक़द्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र **(37)** कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् रही-नतुन् **(38)** इल्ला अस्हाबल्-यमीन **(39)** फ़ी जन्नातिन्, य-तसा-अलून **(40)** अ़निल्-मुज्रिमीन **(41)**

मा स-ल-ककुम् फ़ी स-क़र (42) क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन (43) व लम् नकु नुत्‌अिमुल्-मिस्कीन (44) व कुन्ना नख़ूज़ु म-अ़ल्-ख़ा-इज़ीन (45) व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन (46) हत्ता अतानल्-यक़ीन (47) फ़मा तन्फ़अ़ुहुम् शफ़ा-अ़तुश्शाफ़िअ़ीन (48) फ़मा लहुम् अ़नित्तज़्कि-रति मुअ़्‌रिज़ीन (49) क-अन्नहुम् हुमुरुम्-मुस्तन्‌फ़िरह् (50) फ़र्रत् मिन् क़स्-वरह् (51) बल् युरीदु कुल्लुम्‌रिइम्-मिन्हुम् अंय्युअ्ता सुहुफ़म् मुनश्श-रतन् (52) कल्ला, बल्-ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िरह् (53) कल्ला इन्नहू तज़्कि-रतुन् (54) फ़-मन् शा-अ ज़-करह् (55) व मा यज़्कुरू-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, हु-व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल्-मग़्फ़िरह् ▲ (56) ❖

75 सूरतुल्-क़ियामति 31

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 682 अक्षर, 164 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (1) व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वामह् (2) अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ़ अ़िज़ामह् (3) बला क़ादिरी-न अ़ला अन्-नुसव्वि-य बनानह् (4) बल् युरीदुल्-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह् (5) यस्अलु अय्या-न यौमुल्-क़ियामह् (6) फ़-इज़ा बरिक़ल्-ब-सरु (7) व ख़-सफ़ल्-क़-मरु (8) व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु (9) यक़ूलुल्-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल्-म-फ़र्रु (10) कल्ला ला व-ज़र (11) इला रब्बि-क यौमइज़िनिल्-मुस्तक़र्र (12) युनब्बउल्-इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र (13) बलिल्-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसी-रतुंव्- (14) -व लौ अल्क़ा मआज़ीरह् (15) ला

تبٰرك الذي ٢٩ ٥٢٤ القيمة ٧٥

نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ (٤٤) وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ (٤٥) وَكُنَّا نُكَذِّبُ
بِيَوْمِ الدِّيْنِ (٤٦) حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ (٤٧) فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ
الشّٰفِعِيْنَ (٤٨) فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ (٤٩) كَاَنَّهُمْ
حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ (٥٠) فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ (٥١) بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ
مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً (٥٢) كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ (٥٣)
كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ (٥٤) فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ (٥٥) وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ (٥٦)

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ (١) وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ (٢) اَيَحْسَبُ
الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ (٣) بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ
بَنَانَهٗ (٤) بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ (٥) يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيٰمَةِ (٦) فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ (٧) وَخَسَفَ الْقَمَرُ (٨) وَجُمِعَ الشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ (٩) يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ (١٠) كَلَّا لَا وَزَرَ (١١)
اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ﹰالْمُسْتَقَرُّ (١٢) يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ
وَاَخَّرَ (١٣) بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ (١٤) وَّلَوْ اَلْقٰى
مَعَاذِيْرَهٗ (١٥) لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ (١٦) اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ

منزل ٧

69

तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ्-ज-ल बिह् (16) इन्-न अ़लैना जम्-अ़हू व क़ुर्आनहू (17) फ़-इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुर्आनह् (18) सुम्-म इन्-न अ़लैना बयानह् (19) कल्ला बल् तुहिब्बूनल्-आ़जि-ल-त (20) व त-ज़रूनल्-आख़िरह् (21) वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाज़ि-रतुन् (22) इला रब्बिहा नाज़िरह् (23) व वुजूहुंय्-यौमइज़िम् बासि-रतुन् (24) तज़ुन्नु अंय्युफ़्अ़-ल बिहा फ़ाक़िरह् (25) कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित्-तराक़ि-य (26) व क़ी-ल मन्-राक़िंव- (27) -व ज़न्-न अन्नहुल् फ़िराक़ (28) वल्-तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्साक़ि (29) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मसाक़ (30) ❖

फ़ला सद्-द-क़ व ला सल्ला (31) व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (32) सुम्-म ज़-ह-ब इला अह्लिही य-तमत्ता (33) औला ल-क फ़-औला (34) सुम्-म औला ल-क फ़-औला (35) अ-यह्सबुल्-इन्सानु अंय्युत्-र-क सुदा (36) अलम् यकु नुत्फ़-तम् मिम्-मनिय्यिंय्-युम्ना (37) सुम्-म का-न अ़-ल-क़तन् फ़-ख़ा-ल-क़ फ़-सव्वा (38) फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल्-उन्सा (39) अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्-मौता (40) ❖

الدهر ٧٦ ٥٢٥ تبارك الذي ٢٩

وَقُرْاٰنَهٗ ۚ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۚ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۗ
كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۗ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
نَّاضِرَةٌ ۙ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ۙ تَظُنُّ
اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۗ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ وَقِيْلَ مَنْ ۜ
رَاقٍ ۙ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ اِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمَسَاقُ ۗ فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ وَلٰكِنْ
كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۗ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۙ
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۗ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ۗ
اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ
فَسَوّٰى ۙ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۗ اَلَيْسَ
ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۧ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝
اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا
بَصِيْرًا ۝ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝ اِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ

منزل ٧

76 सूरतुद्-दह्रि 98

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1099 अक्षर, 246 शब्द, 31 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता अ़लल्-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दह्रि लम् यकुन् शैअम्-मज़्कूरा (1) इन्ना ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्-नब्तलीहि फ़-जअ़ल्नाहु समीअ़म्-बसीरा (2) इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा (3) इन्ना अअ़्तद्ना लिल्-काफ़िरी-न
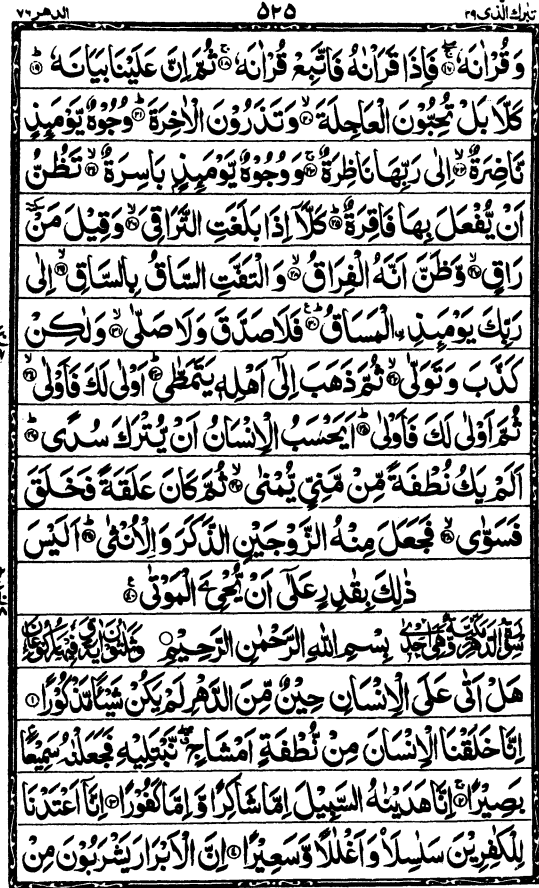
सलासि-ल व अग्लालंव्-व सअ़ीरा **(4)** इन्नल्-अब्रा-र यश्रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ाजुहा काफ़ूरा **(5)** अ़ैनंय्-यश्रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरूनहा तफ़्जीरा **(6)** यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मुस्ततीरा **(7)** व युत्अि़मूनत्तआ़-म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा **(8)** इन्नमा नुत्अि़मुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा **(9)** इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्-तरीरा **(10)** फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्-र ज़ालिकल्-यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्रतंव्-व सुरूरा **(11)** व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व हरीरा **(12)** मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल्-अरा-इकि ला यरौ-न फ़ीहा शम्संव्-व ला ज़म्-हरीरा **(13)** व दानि-यतन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला **(14)** व युताफ़ु अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क़वारी-र **(15)** क़वारी-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्दरूहा तक़्दीरा **(16)** व युस्क़ौ-न फ़ीहा कअ्सन् का-न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला **(17)** अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्-सबीला **(18)** व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐ-तहुम् हसिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा **(19)** व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअ़ीमंव्-व मुल्कन् कबीरा **(20)** आ़लि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव्-व इस्तबरक़ुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा **(21)** इन्-न हाज़ा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्युकुम्-मश्कूरा **(22)** ❖

كأس كان مزاجها كافورا ۝٥ عينا يشرب بها عباد الله يفجرونها
تفجيرا ۝٦ يوفون بالنذر ويخافون يوما كان شره مستطيرا ۝٧
ويطعمون الطعام على حبه مسكينا ويتيما وأسيرا ۝٨ إنما
نطعمكم لوجه الله لا نريد منكم جزاء ولا شكورا ۝٩ إنا نخاف
من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ۝١٠ فوقاهم الله شر ذلك اليوم
ولقاهم نضرة وسرورا ۝١١ وجزاهم بما صبروا جنة وحريرا ۝١٢
متكئين فيها على الأرائك لا يرون فيها شمسا ولا زمهريرا ۝١٣
ودانية عليهم ظلالها وذللت قطوفها تذليلا ۝١٤ ويطاف
عليهم بآنية من فضة وأكواب كانت قواريرا ۝١٥ قواريرا
من فضة قدروها تقديرا ۝١٦ ويسقون فيها كأسا كان مزاجها
زنجبيلا ۝١٧ عينا فيها تسمى سلسبيلا ۝١٨ ويطوف عليهم ولدان
مخلدون إذا رأيتهم حسبتهم لؤلؤا منثورا ۝١٩ وإذا رأيت ثم
رأيت نعيما وملكا كبيرا ۝٢٠ عاليهم ثياب سندس خضر و
إستبرق وحلوا أساور من فضة وسقاهم ربهم شرابا
طهورا ۝٢١ إن هذا كان لكم جزاء وكان سعيكم مشكورا ۝٢٢
إنا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا ۝٢٣ فاصبر لحكم ربك و

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुरआ-न तन्ज़ीला **(23)** फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ़् मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा **(24)** वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्र-तंव्-व असीला **(25)**

व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (26) इन्-न हा-उला-इ युहिब्बूनल् आजि-ल-त व य-ज़रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला (27) नह्नु ख़लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (28) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (29) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (30) युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमी-न अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (31) ❖

77 सूरतुल्-मुर्सलाति 33

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 846 अक्षर, 181 शब्द, 50 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-मुर्सलाति .अुर्फ़न् (1) फ़ल्-आसिफ़ाति अ़स्फ़न् (2) वन्नाशिराति नश्रन् (3) फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न् (4) फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन् (5) .अुज़्रन् औ नुज़्रन् (6) इन्नमा तू-अ़दू-न लवाक़िअ़् (7) फ़-इज़न्नुजूमु तुमिसत् (8) व इज़स्समा-उ .फ़ुरिजत् (9) व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त् (10) व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत् (11) लि-अय्यि यौमिन् उज्जिलत् (12) लियौमिल्-फ़स्लि (13) व मा अद्रा-क मा यौमुल्-फ़स्लि (14) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (15) अलम् नुह्लिकिल्-अव्वलीन (16) सुम्-म नुत्बिअ़ुहुमुल्-आख़िरीन (17) कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्रिमीन (18) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (19) अलम् नख़्लुक़्कुम् मिम्-माइम्-महीन (20) फ़-जअ़ल्नाहु फ़ी क़रारिम्-मकीन (21) इला क़-दरिम्

لَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ
الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَ
شَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ
تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ
اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ
فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اٰيَاتُهَا ٥٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾ اِنَّمَا
تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ
الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ

मअ़्लूम (22) फ़-क़दर्ना फ़निअ़्मल्-क़ादिरून (23) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (24) अलम् नज्अ़लिल्-अर्-ज़ किफ़ाता (25) अह्याअंव्-व अम्वाता (26) व जअ़ल्ना फ़ीहा रवासि-य शामिख़ातिंव्-व अस्क़ैनाकुम्-माअन् फ़ुराता (27) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (28) इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (29) इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु-अ़ब् (30) ला ज़लीलिंव्-व ला युग़्नी मिनल्-ल-हब् (31) इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-क़स्र (32) क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र (33) वैलुंय्-यौमइज़िल्- लिल्-मुकज़्ज़िबीन (34) हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून (35) व ला युअ्-ज़नु लहुम् फ़-यअ़्तज़िरून (36) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (37) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लि जमअ़्नाकुम् वल्-अव्वलीन (38) फ़-इन् का-न लकुम् कैदुन् फ़कीदून (39) वैलुंय्-यौमइज़िल्- लिल्-मुकज़्ज़िबीन (40) ❖

इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी ज़िलालिंव्-व अ़ुयून (41) व फ़वाकि-ह मिम्मा यश्तहून (42) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (43) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (44) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (45) कुलू व त-मत्तअ़ू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून (46) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (47) व इज़ा क़ी-ल लहुमुर्-कअ़ू ला यर्-कअ़ून (48) वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (49) फ़बि-अय्यि हदीसिम् बअ़्-दहू युअ्मिनून (50) ❖

تبٰرك الذی ٢٩ ٥٢٨ المرسلٰت ٧٧

قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿٢١﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾
اَحْيَآءً وَّ اَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ
مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى
مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ
شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ
كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾
هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ
وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ
مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا
كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوْا
وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ
لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

منزل ٧

(तफ़सीर पृष्ठ 1054) 1. दोज़ख़ में एक पहाड़ का नाम 'सऊद' है। दोज़ख़ वालों को दूसरे अज़ाबों के साथ एक अज़ाब यह होगा कि उन्हें 'सऊद' पहाड़ पर चढ़ने के लिए मजबूर किया जाएगा। सत्तर साल में उसकी चोटी पर पहुँचेंगे। वहाँ से फिर दोज़ख़ में आ गिरेंगे, फिर चढ़ेंगे और फिर फिस्लेंगे और जहन्नम में गिरेंगे। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

2. चन्द यहूदियों ने किसी सहाबी से इम्तिहान के तौर पर पूछा कि बताओ दोज़ख़ पर कितने फ़रिश्ते मुतैयन हैं? उन्होंने नबी करीम की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसका ज़िक्र किया। फ़ौरन यह आयत नाज़िल हुई। हासिल यह कि फ़रिश्ते जिनकी ताक़त मालूम है, इसके बावजूद कि उनमें का एक भी तमाम जहन्नमियों को अज़ाब देने के लिए काफ़ी है, फिर उन्नीस फ़रिश्तों के मुक़र्रर होने से ज़ाहिर है कि अज़ाब का बहुत ही एहतिमाम होगा।

3. जब अल्लाह के कलाम ने दोज़ख़ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों की तादाद उन्नीस बताई तो अबुल असद क़ुरैशी नाम का बुतपरस्त कहने लगा कि ऐ क़ुरैश की जमाअ़त! कुछ घबराने की बात नहीं मुझ जैसे ताक़तवर पहलवान के सामने उन्नीस फ़रिश्ते क्या हक़ीक़त रखते हैं? अपने दाहिने कन्धे को हरकत दूँगा तो दस को धकेल दूँगा, और नौ को बाएँ कन्धे से दूर कर दूँगा। उसपर यह आयत नाज़िल हुई। जहन्नम का हाल बयान करने से असल मक़सद यह है कि काफ़िर व गुमराह लोग वहाँ की हौलनाकियों को सुनकर डरें और ईमान पर माईल हों।

4. मतलब यह कि तमाम मुकल्लफ़ लोगों के लिए डराने वाला है, और चूँकि इस डराने के परिणाम क़ियामत में ज़ाहिर होंगे इसलिए क़सम ऐसी चीज़ों की खाई गई है जो क़ियामत के बहुत ही मुनासिब है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1056) 1. यानी ख़ात्मा उसी नाफ़रमानी पर हुआ इस वजह से हम दोज़ख़ में आए।

2. इस नफ़ा न होने का सुबूत शफ़ाअ़त के न होने के सुबूत से होगा। यानी शफ़ाअ़त ही न होगी।

3. दुर्रे मन्सूर में क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि बाज़े काफ़िरों ने आपसे कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आपकी पैरवी करें तो ख़ास हमारे नाम ऐसी लिखी हुई तहरीरें लाएँ जिनमें आपकी पैरवी करने का हुक्म लिखा हो।

4. अगर इनसान का नफ़्स खेलकूद की तरफ़ माईल हो, उसको न नेकी की तरफ़ रग़बत हो और न नेक काम पर उसका जी लगे, तो ऐसे नफ़्स को "नफ़्से अम्मारा बिस्सू-इ" कहते हैं। अगर नेकी व बदी और अच्छाई व बुराई का एहसास करे, कभी-कभी बुराई कर बैठे लेकिन फ़ौरन ही सचेत होकर अपनी ख़ता का इक़रार कर ले और नाफ़रमानी हो जाने पर अपने आपको मलामत करे, उस नफ़्स का नाम "नफ़्से लव्वामा" है। अगर नेकी का शौक़ रखने वाला हो और बदी से बेज़ार हो, इबादत व रियाज़त पर माईल, सब्र व तहम्मुल का आ़दी और अच्छे अख़्लाक़ का गरवीदा हो तो ऐसे पाक नफ़्स का नाम "नफ़्से मुत्मइन्ना" है।

5. यानी चूँकि तमाम उम्र गुनाहों और नफ़्स की ख़्वाहिशों में गुज़ारने का इरादा कर रखा है इसलिए उसको हक़ को तलब करने की नौबत ही नहीं आती कि क़ियामत का होना उसको साबित हो, इसलिए इनकार पर अड़ा हुआ है, और इनकार करने के तौर पर पूछता है कि क़ियामत कब आएगी?

6. इनसान अपने तमाम हालात और वाक़िआ़त को खुद अच्छी तरह जानता होगा इसलिए जतलाना ख़बर देने की ग़रज़ से न होगा बल्कि उसका मक़सद हुज्जत पूरी करना और लाजवाब करना होगा।

7. यानी अगर इनसान खुद अपने ऊपर ग़ौर करे तो अपने पैदा करने वाले के एक होने का क़ायल हो जाए। और अगर यह कहे कि मेरी समझ में नहीं आता तो यह सिर्फ़ उसकी हुज्जतबाज़ी और बहाने बनाना है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1058) 1. हक़ तआ़ला ने जिबराईल अ़लैहिस्सलाम के पढ़ने को अपना पढ़ना क़रार दिया, क्योंकि जिबराईल अ़लैहिस्सलाम हक़ तआ़ला के पयाम्बर (दूत) और क़ुरआन लाने में सिर्फ़ वास्ता थे। मतलब यह कि जब जिबराईल आकर क़ुरआन पढ़ा करें तो आप ख़ामोशी से सुना करें और उनके सुना चुकने के बाद आप दोबारा पढ़ लिया करें। जिबराईल के पढ़ने के दौरान आपको ज़बान के हरकत देने की ज़रूरत नहीं। क़ुरआन का आपके सीने में जमा कर देना यानी याद करा देना और आपके लिए इसका पढ़ना आसान कर देना और इसका साफ़-साफ़ मतलब व मफ़हूम समझा देना सब कुछ हमारे ज़िम्मे है।

2. पस तुम्हारे इस इनकार की बिना महज़ फ़ासिद है। सो क़ियामत ज़रूर होगी और हर एक को उसके आमाल पर बाख़बर करके उनके आमाल के मुनासिब बदला मिलेगा।

3. मुराद आ़म इलाज करने वाला है, चूँकि अ़रब में झाड़-फूँक का ज़्यादा चर्चा था इसलिए "राक़" (यानी झाड़ने वाले) से ताबीर किया।

4. मुराद इससे मौत के वक़्त की तकलीफ़ है। तवज्जोह करने की कुछ तख़्सीस नहीं, उसका ज़िक्र मिसाल देने के लिए है।

(शेष तफ़सीर पृष्ठ 1066 पर)

तीसवाँ पारः अ़म्-म य-तसा-अलून

78 सूरतुन्-न-बइ 80

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 801 अक्षर, 174 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़म्-म य-तसा-अलून **(1)** अ़निन्-न-बइल्-अ़ज़ीम **(2)** अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून **(3)** कल्ला स-यअ़्लमून **(4)** सुम्-म कल्ला स-यअ़्लमून **(5)** अलम् नज्अ़लिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- **(6)** -वल्-जिबा-ल औतादंव्- **(7)** -व ख़लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्- **(8)** -व जअ़ल्ना नौमकुम् सुबातंव्- **(9)** -व जअ़ल्नल्लै-ल लिबासंव्- **(10)** -व जअ़ल्नन्-नहा-र मआ़शा **(11)** व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्अ़न् शिदादंव्- **(12)** -व जअ़ल्ना सिराजंव्-वह्हाजा **(13)** व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ़्सिराति मा-अन् सज्जाजल्- **(14)** -लिनुख़्रि-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- **(15)** -व जन्नातिन् अल्फ़ाफ़ा **(16)** इन्-न यौमल्-फ़स्लि का-न मीक़ातंय्- **(17)** -यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ्तू-न अफ़्वाजा **(18)** व फ़ुति-हतिस्-समा-उ फ़-कानत् अब्वाबंव्- **(19)** -व सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ़-कानत् सराबा **(20)**

٥٢٩ النبا ٧٨ عم ٣٠

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ
مُخْتَلِفُوْنَ ؕ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ اَلَمْ نَجْعَلِ
الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۙ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ وَّجَعَلْنَا
نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۪
وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۪ وَّاَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۙ وَّجَنّٰتٍ
اَلْفَافًا ؕ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۙ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ
فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۙ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۙ وَّسُيِّرَتِ
الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ؕ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۙ لِّلطّٰغِيْنَ
مَاٰبًا ۙ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَاۤ اَحْقَابًا ۚ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۙ
اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۙ جَزَآءً وِّفَاقًا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
حِسَابًا ۙ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ؕ وَكُلَّ شَیْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ۙ
فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ۠ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ۙ
حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ۙ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ۙ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ۙ

منزل ٧

इन्-न जहन्न-म कानत् मिर्सादल्- **(21)** -लित्ताग़ी-न म-आबल्- **(22)** -लाबिसी-न फ़ीहा अह्क़ाबा **(23)** ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बर्दंव्-व ला शराबा **(24)** इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साक़न् **(25)** जज़ाअंव्-विफ़ाक़ा **(26)** इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबा **(27)** व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा **(28)** व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् **(29)** फ़ज़ूक़ू फ़-लन् नज़ी-दकुम् इल्ला अ़ज़ाबा **(30)** ❖

इन्-न लिल्मुत्तक़ी-न मफ़ाज़न् (31) हदाइ-क़ व अअ़्नाबंव्- (32) -व कवाअि-ब अत्राबंव्- (33) -व कअ्सन् दिहाक़ा (34) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा (35) जज़ाअम्-मिर्रब्बि-क अ़ताअन् हिसाबा (36) रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा (37) यौ-म यक़ूमुर्रूहु वल्मलाइ-कतु सफ़्फ़ल् ला य-तकल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व क़ा-ल सवाबा (38) ज़ालिकल् यौमुल्-हक़्क़ु फ़-मन् शाअत्त-ख़ा-ज़ इला रब्बिहि मआबा (39) इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अ़ज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्-मरउ मा क़द्द-मत् यदाहु व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा (40) ❖

79 सूरतुन्-नाज़िआ़ति 81

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 791 अक्षर, 181 शब्द, 46 आयतें और 2 रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नाज़िआ़ति ग़र्क़ंव्- (1) -वन्नाशि-ताति नश्तंव्- (2) -वस्साबिहाति सब्हन् (3) फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (4) फ़ल्मुदब्बि-राति अम्रा ✣(5) यौ-म तर्जुफ़ुर्राजि-फ़तु (6) तत्बअ़ुहर्-रादिफ़ह् (7) क़ुलूबुंय्-यौमइज़िंव्-वाजि-फ़तुन् (8) अब्सारुहा ख़ाशिअ़ह् ✣ (9) यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-मर्दूदू-न फ़िल्-हाफ़िरह् (10) अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामन्-नख़िरह् (11) क़ालू तिल्-क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरह् ✣ (12) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् (13) फ़-इज़ा हुम् बिस्साहिरह् (14) हल् अता-क हदीसु मूसा ✣ (15) इज़् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (16) इज़्हब् इला फ़िर्औ़-न इन्नहू तग़ा (17) फ़क़ुल् हल्-ल-क इला अन् तज़क्का (18) व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख़्शा (19) फ़-अराहुल् आ-यतल्-कुबरा (20)

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذّٰبًا ۚ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا
رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ
خِطَابًا ۚ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۖ لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا
مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۚ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۖ فَمَن
شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَـَٔابًا ۚ إِنَّآ أَنذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۚ يَوْمَ
يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرٰبًا

سورة النّٰزعٰت مكية وهي ست وأربعون آية وفيها ركوعان

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ وَالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا
فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ فَالْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا ۘ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ
تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۗ قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۙ أَبْصٰرُهَا خٰشِعَةٌ
يَقُولُونَ أَءِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِى الْحَافِرَةِ ۗ أَءِذَا كُنَّا عِظٰمًا
نَّخِرَةً ۗ قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ فَإِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وٰحِدَةٌ
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۗ هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ مُوسٰىٓ ۘ إِذْ نَادٰىهُ
رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ اذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى
فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلٰىٓ أَن تَزَكّٰى ۙ وَأَهْدِيَكَ إِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى

फ़-कज़्ज़-ब व अ़सा **(21)** सुम्-म अद्‌ब-र यस्आ़ **(22)** फ़-ह-श-र, फ़नादा **(23)** फ़क़ा-ल अ-न रब्बुकुमुल्-अअ्‌ला **(24)** फ़-अ-ख़-ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्-ऊला **(25)** इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अ़िब्-रतल् लिमंय्यख़्शा **(26)** ❖

अ-अन्तुम् अशद्‌दु ख़ल्क़न् अमिस्समा-उ बनाहा **(27)** र-फ़-अ़ सम्कहा फ़-सव्वाहा **(28)** व अग़्त-श लैलहा व अख़्र-ज ज़ुहाहा **(29)** वल्अर्-ज़ बअ्‌-द ज़ालि-क दहाहा **(30)** अख़्र-ज मिन्हा मा-अहा व मर्आ़हा **(31)** वल्-जिबा-ल अर्साहा **(32)** मताअ़ल्-लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम् **(33)** फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल्-कुब्रा **(34)** यौ-म य-तज़क्करुल्- इन्सानु मा सआ़ **(35)** व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिमंय्यरा **(36)** फ़-अम्मा मन् तग़ा **(37)** व आ-सरल् हयातद्दुन्या **(38)** फ़-इन्नल्-जही-म हि-यल् -मअ्‌वा **(39)** व अम्मा मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही व नहन्-नफ़्-स अ़निल्-हवा **(40)** फ़-इन्नल् जन्न-त हि-यल्-मअ्‌वा **(41)** यस्अलू-न-क अ़निस्सा-अ़ति अय्या-न मुर्साहा **(42)** फ़ी-म अन्-त मिन् ज़िक्राहा **(43)** इला रब्बि-क मुन्तहाहा **(44)** इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरु मंय्यख़्शाहा **(45)** क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम् यल्बसू इल्ला अ़शिय्य-तन् औ ज़ुहाहा **(46)** ❖

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝ فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝
فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ
الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِمَنْ يَخْشَىٰ ۝ أَأَنْتُمْ
أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا ۝ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ۝ وَ
أَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ۝
أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۝ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝ مَتَاعًا لَكُمْ
وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝ فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ
الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَىٰ ۝ فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ ۝
وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ وَأَمَّا مَنْ
خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۝ فَإِنَّ الْجَنَّةَ
هِيَ الْمَأْوَىٰ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۝ فِيمَ أَنْتَ
مِنْ ذِكْرَاهَا ۝ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۝ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ۝
كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ۝ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ۝ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ ۝

80 सूरतु अ़-ब-स 24

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 553 अक्षर, 113 शब्द, 42 आयतें और 1 रुकूअ़ है।

(नोटः इस सूरः से लेकर पारः के आख़िर तक हर सूरः एक ही रुकूअ़ की है)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ़-ब-स व तवल्ला **(1)** अन् जा-अहुल् अअ्‌मा **(2)** व मा युद्‌री-क ल-अ़ल्लहू

यज़्ज़क्का **(3)** औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़-अ़हुज़्ज़िक्रा **(4)** अम्मा मनिस्तग़्ना **(5)** फ़-अन्-त लहू तसद्दा **(6)** व मा अ़लै-क अल्ला यज़्ज़क्का **(7)** व अम्मा मन् जा-अ-क यस्आ़ **(8)** व हु-व यख़्शा **(9)** फ़-अन्-त अ़न्हु त-लह्हा **(10)** कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन् **(11)** फ़-मन् शा-अ ज़-करह् ✣ **(12)** फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्र-मतिम्- **(13)** -मर्फ़ू-अ़तिम् मुतह्ह-रतिम् **(14)** बिऐदी स-फ़-रतिन् **(15)** किरामिम् ब-र-रह् **(16)** क़ुतिलल्-इन्सानु मा अक्-फ़रह् **(17)** मिन् अय्यि शैइन् ख़-लक़ह् **(18)** मिन् नुत्फ़तिन्, ख़-ल-क़हू फ़-क़द्द-रहू **(19)** सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू **(20)** सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू **(21)** सुम्-म इज़ा शा-अ अन्श-रह् **(22)** कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-मरह् **(23)** फ़ल्यन्ज़ुरिल्- इन्सानु इला तआ़मिही **(24)** अन्ना स-बब्नल्-मा-अ सब्बा **(25)** सुम्-म शक़क़्नल्-अर्-ज़ शक़्क़ा **(26)** फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्- **(27)** -व अ़ि-नबंव्-व क़ज़्बंव्- **(28)** -व ज़ैतूनंव्-व नख़्लंव्- **(29)** -व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्- **(30)** व फ़ाकि-हतंव्-व अब्बम्- **(31)** -मताअ़ल्-लकुम् व लि-अन्आ़मिकुम् **(32)** फ़-इज़ा जा-अतिस्साख़्ख़ह् **(33)** यौ-म यफ़िर्रुल्-मर्उ मिन् अख़ीहि **(34)** व उम्मिही व अबीहि **(35)** व साहि-बतिही व बनीह् **(36)** लि-कुल्लिम्-रिइम् मिन्हुम् यौमइज़िन् शअ्नुंय्-युग़्नीह् **(37)** वुजूहुंय्-यौमइज़िम् मुस्फ़ि-रतुन् **(38)** ज़ाहि-कतुम् मुस्तब्शि-रतुन् **(39)** व वुजूहुंय्-यौमइज़िन् अ़लैहा ग़-ब-रतुन् **(40)** तर्-हक़ुहा क-तरह् **(41)** उलाइ-क हुमुल् क-फ़-रतुल् फ़-जरह् **(42)** ❖

عبس ٨٠ ٥٣٢ عمّ ٣٠

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٤﴾ أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾ فَأَنتَ لَهُ
تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾
وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾ فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾ كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَن
شَاءَ ذَكَرَهُ ﴿١٢﴾ فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ بِأَيْدِي
سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾ قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ﴿١٧﴾ مِنْ أَيِّ
شَيْءٍ خَلَقَهُ ﴿١٨﴾ مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيلَ
يَسَّرَهُ ﴿٢٠﴾ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ﴿٢١﴾ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا
يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ﴿٢٤﴾ أَنَّا صَبَبْنَا
الْمَاءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾
وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَفَاكِهَةً
وَأَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾
يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَ
بَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوهٌ
يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

منزل ٧

81 सूरतुत्-तक्वीरि 7

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 436 अक्षर, 104 शब्द और 29 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़श्शम्सु कुव्विरत् **(1)** व इज़न्नुजूमुन्-क-दरत् **(2)** व इज़ल्-जिबालु सुय्यिरत् **(3)** व इज़ल्-अ़िशारु अ़ुत्तिलत् **(4)** व इज़ल्-वुहूशु हुशिरत् **(5)** व इज़ल्-बिहारु सुज्जिरत् **(6)** व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् **(7)** व इज़ल्-मौऊ-दतु सुअिलत् **(8)** बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् **(9)** व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् **(10)** व इज़स्समा-उ कुशितत् **(11)** व इज़ल्-जहीमु सुअ़्अ़िरत् **(12)** व इज़ल्-जन्नतु उज़्लिफ़त् **(13)** अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा अह्-ज़रत् **(14)** फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्- **(15)** -जवारिल्-कुन्नस **(16)** वल्-लैलि इज़ा अ़स्-अ़-स **(17)** वस्सुब्हि इज़ा त-नफ़्फ़-स **(18)** इन्नहू ल-क़ौलु रसूलिन् करीम **(19)** ज़ी क़ुव्वतिन् अ़िन्-द ज़िल्-अ़र्शि मकीन **(20)** मुताअ़िन् सम्-म अमीन **(21)** व मा साहिबुकुम् बिमज्नून **(22)** व ल-क़द् रआहु बिल्-उफ़ुक़िल्-मुबीन **(23)** व मा हु-व अ़लल्-ग़ैबि बि-ज़नीन **(24)** व मा हु-व बिक़ौलि शैतानिर्-रजीम **(25)** फ़ऐ-न तज़्हबून **(26)** इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्-आ़लमीन **(27)** लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम **(28)** व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन **(29)** ❖

التكوير ٨١ الانفطار ٨٢ ٥٣٣ عم ٣٠

سورة التكوير مكية ٨١ بسم الله الرحمن الرحيم وهي تسع وعشرون اية
إذا الشمس كورت ۝ وإذا النجوم انكدرت ۝ وإذا الجبال
سيرت ۝ وإذا العشار عطلت ۝ وإذا الوحوش حشرت ۝ و
إذا البحار سجرت ۝ وإذا النفوس زوجت ۝ وإذا الموءدة
سئلت ۝ بأي ذنب قتلت ۝ وإذا الصحف نشرت ۝ وإذا
السماء كشطت ۝ وإذا الجحيم سعرت ۝ وإذا الجنة أزلفت ۝
علمت نفس ما أحضرت ۝ فلا أقسم بالخنس ۝ الجوار
الكنس ۝ والليل إذا عسعس ۝ والصبح إذا تنفس ۝ إنه
لقول رسول كريم ۝ ذي قوة عند ذي العرش مكين ۝
مطاع ثم أمين ۝ وما صاحبكم بمجنون ۝ ولقد رآه
بالأفق المبين ۝ وما هو على الغيب بضنين ۝ وما هو
بقول شيطان رجيم ۝ فأين تذهبون ۝ إن هو إلا ذكر
للعالمين ۝ لمن شاء منكم أن يستقيم ۝ وما تشاءون
إلا أن يشاء الله رب العالمين ۝ ع
سورة الانفطار مكية ٨٢ بسم الله الرحمن الرحيم وهي تسع عشرة اية
إذا السماء انفطرت ۝ وإذا الكواكب انتثرت ۝ وإذا البحار

منزل ٧

82 सूरतुल्-इन्फ़ितारि 82

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 334 अक्षर, 80 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समा-उन्-फ़-तरत् **(1)** व इज़ल्-कवाकिबुन् त-सरत् **(2)** व इज़ल्-बिहारु

फ़ुज्जिरत् (3) व इज़ल्-क़ुबूरु बुअ्सिरत् (4) अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा क़द्द-मत् व अख़्ख़-रत् (5) या अय्युहल्-इन्सानु मा ग़र्-र-क बिरब्बिकल्-करीम (6) अल्लज़ी ख़-ल-क्-क फ़-सव्वा-क फ़-अ़-द-लक् (7) फ़ी अय्यि सू-रतिम् मा शा-अ रक्क-बक् (8) कल्ला बल् तुकज़्ज़िबू-न बिद्दीनि (9) व इन्-न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन (10) किरामन् कातिबीन (11) यअ्लमू-न मा तफ़्अ़लून (12) इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (13) व इन्नल् फ़ुज्जा-र लफ़ी जहीम (14) यस्लौनहा यौमद्दीन (15) व मा हुम् अ़न्हा बिग़ा-इबीन (16) व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (17) सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (18) यौ-म ला तम्लिकु नफ़्सुल्-लिनफ़्सिन् शैआ, वल्अम्रु यौमइज़िल्-लिल्लाह् ◆ (19) ❖

83 सूरतुल्-मुतफ़्फ़िफ़ी-न 86

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 758 अक्षर, 172 शब्द और 36 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल्-लिल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन (1) अल्लज़ी-न इज़क्तालू अ़लन्नासि यस्तौफ़ून (2) व इज़ा कालूहुम् अव्व-ज़नूहुम् युख़्सिरून (3) अला यज़ुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्अूसून (4) लियौमिन् अ़ज़ीम (5) यौ-म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल्-आ़लमीन (6) कल्ला इन्-न किताबल्-फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन (7) व मा अद्रा-क मा सिज्जीन (8) किताबुम्-मरक़ूम (9) वैलुंय्यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (10) अल्लज़ी-न युकज़्ज़िबू-न बियौमिद्दीन (11) व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मअ्-तदिन् असीम (12) इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (13) कल्ला बल्-रा-न अ़ला क़ुलूबिहिम्-मा कानू यक्सिबून (14) कल्ला इन्नहुम् अ़र्रब्बिहिम् यौमइज़िल्-लमह्जूबून (15) सुम्-म इन्नहुम्

عمّ ٣٠ ٥٣٤ المطففين ٨٣

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ
أَخَّرَتْ ﴿٥﴾ يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿٦﴾ الَّذِي
خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾
كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ ﴿٩﴾ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا
كَاتِبِينَ ﴿١١﴾ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾ وَ
إِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ عَنْهَا
بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ
الدِّينِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿١٩﴾
سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ سِتٌّ وَثَلَاثُونَ آيَةً
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾ الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿٢﴾
وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿٣﴾ أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُم
مَّبْعُوثُونَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥﴾ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ﴿٨﴾
كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ
بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ إِذَا
تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ رَانَ

منزل

लसालुल्-जहीम (16) सुम्-म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (17) कल्ला इन्-न किताबल्- अब्रारि लफ़ी अ़िल्लिय्यीन (18) व मा अद्रा-क मा अ़िल्लिय्यून (19) किताबुम्-मर्क़ूम (20) यश्-हदुहुल्- मुक़र्रबून (21) इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (22) अ़लल् अरा-इकि यन्ज़ुरून (23) तअ़्रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्-रतन्-नअ़ीम (24) युस्क़ौ-न मिर्रहीक़िम्-मख़्तूम (25) ख़ितामुहू मिस्क, व फ़ी ज़ालि-क फ़ल्य-तनाफ़सिल्-मु-तनाफ़िसून (26) व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम (27) अ़ैनंय्-यश्रबु बिहल्- मुक़र्रबून (28) इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आमनू यज़्-हकून (29) व इज़ा मर्रू बिहिम् य-तग़ा-मज़ून (30) व इज़न्-क़-लबू इला अह्लिहिमुन्क़्-लबू फ़किहीन (31) व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हा-उला-इ लज़ाल्लून (32) व मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन (33) फ़ल्यौमल्लज़ी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज़्हकून (34) अ़लल्-अरा-इकि यन्ज़ुरून (35) हल् सुव्विबल्-कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्अ़लून (36) ❖

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِیْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِیْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۚ وَفِیْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هِیَ خَمْسٌ وَّعِشْرُوْنَ اٰيَةً

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾

منزل ٧

84 सूरतुल्-इन्शिक़ाक़ि 83

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 448 अक्षर, 108 शब्द और 25 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़स्समाउन्-शक़्क़त् (1) व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त (2) व इज़ल्-अर्ज़ु मुद्दत् (3) व अल्क़त् मा फ़ीहा व त-ख़ल्लत् (4) व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त् (5) या अय्युहल्-इन्सानु इन्न-क कादिहुन् इला रब्बि-क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि (6) फ़-अम्मा मन्

(पिछले पृष्ठ का शेष) 4. यानी एतिक़ाद के साथ अ़मल भी नेक होगा। और नेक अ़मल जन्नत का रास्ता है, जन्नत उसपर मौक़ूफ़ नहीं।
5. काफ़िर लोग इनकार के मक़सद से क़ियामत का मुक़र्ररा वक़्त पूछा करते थे। आगे उसका जवाब है कि उसके बयान करने से आपका क्या ताल्लुक़? क्योंकि बयान तब किया जा सकता है जब इल्म हो, और जब उसका अल्लाह के अ़लावा किसी को इल्म नहीं तो कोई दूसरा उसका मुक़र्ररा वक़्त कैसे बयान कर सकता है?
6. यानी दुनिया की लम्बी मुद्दत छोटी-सी मालूम होगी और समझेंगे कि अ़ज़ाब जल्दी आ गया जिसकी ये दरख़्वास्त करते हैं। हासिल यह कि जल्दी क्यों करते हैं जब वह आएगा उसको जल्दी ही समझोगे, और जिस देर को अब देर समझ रहे हो यह देर मालूम न होगी।
7. जो लोग अपने कुफ़्र में ज़्यादा सख़्त थे उनको समझाने और सही राह पर लाने की कोशिश करने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कोफ़्त होती थी, यहाँ तक कि एक बार इसी बिना पर एक नाबीना (अंधे) सहाबी का ऐसे मौक़े पर आकर बोलना नागवारी का सबब हुआ था। इसलिए सूरः के शुरू में एक महबूबाना अन्दाज़ के साथ जिसको लोग नाराज़गी कहते हैं, इस क़द्र एहतिमाम व कोशिश से मना किया गया। और हक़ के सच्चे तालिबों के हाल पर तवज्जोह फ़रमाने का हुक्म फ़रमाते हैं।
8. एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुश्रिकों के बाज़ सरदारों को समझा रहे थे कि इतने में अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम नाबीना (यानी आँखों से महरूम) सहाबी हाज़िर हुए और कुछ पूछना शुरू किया। यह बात काटना आपको नागवार हुआ और आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई और नागवारी की वजह से आपके मुबारक चेहरे पर सलवटें पड़ गईं। जब आप उस मजलिस से उठकर घर जाने लगे तो ये आयतें नाज़िल हुईं। उसके बाद जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम आपके पास आते तो आप बड़ी ख़ातिर करते। (ये सारी रिवायतें दुर्रे मन्सूर से नक़ल की गई हैं)। इन आयतों में आपकी इज्तिहादी लग़ज़िश पर आपको अवगत करा दिया गया है। मन्शा इस इज्तिहाद का यह था कि यह बात तो यक़ीनी और साबित है कि अहम मुक़द्दम होता है, आपने कुफ़्र के सख़्त होने को अहमियत का सबब समझा। जैसे दो बीमारों में एक को हैज़ा और दूसरे को ज़ुकाम है, तो हैज़ा वाले का इलाज मुक़द्दम होगा। लेकिन अ़ल्लाह तआ़ला के इरशाद का हासिल यह है कि बीमारी का सख़्त होना उस वक़्त अहम है जब मरीज़ इलाज का मुख़ालिफ़ न हो, वरना जो इलाज का तालिब हो वह अहम और मुक़द्दम होगा चाहे बीमारी मामूली हो। इन आयतों से यह भी साबित होता है कि जिस शख़्स से उज़्र या जानकारी न होने के सबब कोई बेतमीज़ी सादिर हो जाए उससे मुँह फेरना या नाराज़ न होना चाहिए। और 'अअ़्मा' यानी अन्धे से ताबीर करना इस तरफ़ इशारा है कि वह ज़्यादा मेहरबानी और तवज्जोह के हक़दार हैं।

(तफ़सीर पृष्ठ 1076) **1.** यह छह वाक़िए तो पहली बार सूर फूँकने के वक़्त होंगे जबकि दुनिया आबाद होगी, और उस सूर फूँकने से ये तब्दीलियाँ होंगी, और उस वक़्त ऊँटनियाँ वग़ैरह भी अपनी-अपनी हालत पर होंगी जिनमें बाज़ बच्चा देने के क़रीब होंगी, जो कि अ़रब वालों के नज़दीक सबसे ज़्यादा प्यारा माल है। मगर उस वक़्त हलचल में किसी को कहीं का होश न रहेगा। और जंगली जानवर भी घबराहट के मारे सब गड्-मड् हो जाएँगे। और दरियाओं में पहले उफान आएगा और ज़मीन में दरारें पड़ जाएँगी जिससे सब मीठे और खारे दरिया एक हो जाएँगे। फिर सख़्त गर्मी के सबब सबका पानी एक तरह से आग बन जाएगा। उसके बाद आ़लम फ़ना हो जाएगा। और अगले छह वाक़िआत दूसरी बार सूर फूँकने के बाद होंगे।
2. यानी फ़रिश्ते उसका कहना मानते हैं।
3. अमानतदार है कि वह्य को सही-सही कुछ कमी-ज्यादती किए बग़ैर पहुँचा देता है। पस वह्य लाने वाला तो ऐसा है। आगे जिनपर वह्य नाज़िल हुई उनके बारे में इरशाद है कि......(आगे तर्जुमा देखो)
4. साफ़ किनारे से बुलन्द किनारा मुराद है कि साफ़ नज़र आता है, इसका तफ़सीली बयान सूरः नज्म में गुज़रा है।
5. जैसा कि काहिनों की आ़दत थी कि रक़म लेकर कोई बात बतलाते थे, इससे आपके काहिन होने और इस्लाम की तब्लीग़ पर अज्र लेने की नफ़ी और इनकार भी हो गया।
6. इससे काहिन होने की नफ़ी और ताकीद हो गई। हासिल यह कि न आप मजनूँ हैं, न काहिन (यानी ग़ैब की झूठी-सच्ची ख़बरें देने वाले) हैं, न आपको कोई ग़रज़ है। और वह्य लाने वाले को पहचानते भी हैं जो अमानतदार है। पस ज़रूर यह अल्लाह का कलाम और आप अल्लाह के रसूल हैं। और ये क़िस्में जो ऊपर ज़िक्र हुईं इस मक़ाम के मतलब के बहुत ही मुनासिब हैं। चुनाँचे सितारों का सीधा चलना और लौटना और छुप जाना फ़रिश्तों के आने और वापस जाने और आ़लमे मलकूत में जा छुपने के मुशाबह है। और रात का गुज़रना और सुबह का आना क़ुरआन के मुशाबह है। इस सबब से कि इसके ज़रिए भी कुफ़्र का अंधेरा दूर होता और हिदायत की रोशनी फैलती है।
7. यानी अपने आपमें तो नसीहत है लेकिन इसकी तासीर अल्लाह की चाहत पर मौक़ूफ़ है, जो बाज़ लोगों के लिए मुताल्लिक़ होती है और बाज़ के लिए किसी हिक्मत से मुताल्लिक़ नहीं होती। **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही (7) फ़सौ-फ़ युहा-सबु हिसाबंय्-यसीरा (8) व यन्क़लिबु इला अह्लिही मसूरूरा (9) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ ज़ह्रिही (10) फ़सौ-फ़ यद्‌अू सुबूरा (11) व यस्ला सअ़ीरा (12) इन्नहू का-न फ़ी अह्लिही मसूरूरा (13) इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (14) बला इन्-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (15) फ़ला उक़्सिमु बिश्श-फ़क़ि (16) वल्लैलि व मा व-स-क़ (17) वल्क़-मरि इज़त्त-स-क़ (18) ल-तर्कबुन्-न त-बक़न् अ़न् त-बक़ (19) फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून (20) व इज़ा क़ुरि-अ अ़लैहिमुल्-क़ुर्आनु ला यस्जुदून ❑ (21) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू युकज़्ज़िबून (22) वल्लाहु अअ्लमु बिमा यूअून (23) फ़-बश्शिर्हुम् बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (24) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (25) ❖

يٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيهِ فَأَمَّا مَنْ
أُوتِيَ كِتٰبَهُ بِيَمِينِهِ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا وَيَنْقَلِبُ
إِلٰٓى أَهْلِهِ مَسْرُورًا وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتٰبَهُ وَرَآءَ ظَهْرِهِ فَسَوْفَ
يَدْعُوا ثُبُورًا وَيَصْلٰى سَعِيرًا إِنَّهُ كَانَ فِيٓ أَهْلِهِ مَسْرُورًا
إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ بَلٰىٓ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا
فَلَآ أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ وَإِذَا قُرِئَ
عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُونَ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ
وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ إِلَّا الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ
قُتِلَ أَصْحٰبُ الْأُخْدُودِ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا
قُعُودٌ وَهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ وَمَا
نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّآ أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ الَّذِي
لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

85 सूरतुल्-बुरूजि 27

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 475 अक्षर, 109 शब्द और 22 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समा-इ ज़ातिल्-बुरूजि (1) वल्यौमिल्-मौअूदि (2) व शाहिदिंव्-व मश्हूद (3) क़ुति-ल अस्हाबुल् उख़्दूदि- (4) -न्नारि ज़ातिल्-वक़ूदि (5) इज़् हुम् अ़लैहा क़ुअूद (6) व हुम् अ़ला मा यफ़्अ़लू-न बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद (7) व मा न-क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद (8) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (9) इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति सुम्-म लम् यतूबू फ़-लहुम् अ़ज़ाबु जहन्न-म व लहुम् अ़ज़ाबुल्-हरीक़ (10) इन्नल्लज़ी-न आमनू

व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्- अन्हारु, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-कबीर (11) इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद (12) इन्नहू हु-व युब्दिउ व युई़द (13) व हुवल्-ग़फ़ूरुल्-वदूद (14) ज़ुल्-अ़र्शिल्-मजीद (15) फ़अ़्आ़लुल्-लिमा युरीद (16) हल् अता-क हदीसुल्-जुनूद (17) फ़िर्औ़-न व समूद (18) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव- (19) -वल्लाहु मिंव्वरा-इहिम्-मुहीत (20) बल् हु-व क़ुर्आनुम् मजीद (21) फ़ी लौहिम्-मह़्फ़ूज़ (22) ❖

86 सूरतुत्-तारिक़ि 36

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 254 अक्षर, 61 शब्द और 17 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वस्समा-इ वत्तारिक़ि (1) व मा अद्रा-क मत्तारिक़ु (2) अन्नज्मुस्-साक़िब (3) इन् कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा अ़लैहा हाफ़िज़ (4) फ़ल्यन्ज़ुरिल्-इन्सानु मिम्-म ख़ुलिक़ (5) खुलि-क़ मिम्माइन् दाफ़िक़िंय्- (6) -यख़्रुजु मिम्-बैनिस्सुल्बि वत्तरा-इब (7) इन्नहू अ़ला रज्अ़िही लक़ादिर (8) यौ-म तुब्लस्सरा-इरु (9) फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव्-व ला नासिर (10) वस्समा-इ ज़ातिर्-रज्अ़ (11) वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्अ़ि (12) इन्नहू ल-क़ौलुन् फ़स्लुंव्- (13) -व मा हु-व बिल्-हज़्लि (14) इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- (15) -व अकीदु कैदा (16) फ़-महहिलिल्-काफ़िरी-न अम्हिल्हुम् रुवैदा (17) ❖

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ
عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝ إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَ
يُعِيدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝ فَعَّالٌ
لِمَا يُرِيدُ ۝ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝ فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝
بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ۝ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ ۝
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝
إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝
خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝
إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَ
لَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝
وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

87 सूरतुल्-अअ्ला 8

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 299 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ्ला (1) अल्लज़ी ख़-ल-क़ फ-सव्वा (2) वल्लज़ी क़द्द-र फ़-हदा (3) वल्लज़ी अख़्र-जल्-मर्आ (4) फ़-ज-अ़-लहू गुसाअन् अह्वा (5) सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा (6) इल्ला मा शा-अल्लाहु, इन्नहू यअ्लमुल्-जह्-र व मा यख़्फ़ा (7) व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा (8) फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अतिज़्-ज़िक्रा (9) स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा (10) व य-तजन्नबुहल्-अश्क़- (11) -ल्लज़ी यस्लन्-नारल्-कुब्रा (12) सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या (13) क़द् अफ़्ल-ह मन् तज़क्का (14) व ज़-करस्-म रब्बिही फ़-सल्ला (15) बल् तुअ्सिरूनल्- हयातद्-दुन्या (16) वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा (17) इन्-न हाज़ा लफ़िस्-सुहुफ़िल्-ऊला (18) सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा (19) ❖
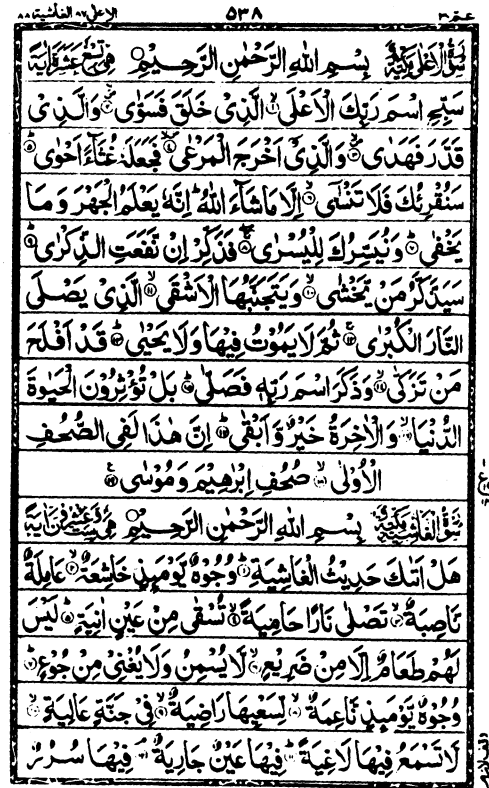
88 सूरतुल्-ग़ाशि-यति 68

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 384 अक्षर, 93 शब्द और 26 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हल् अता-क हदीसुल्-ग़ाशियह् (1) वुजूहुंय्-यौमइज़िन् ख़ाशिअ़ह् (2) आमि-लतुन् नासि-बतुन् (3) तस्ला नारन् हामि-यतन् (4) तुस्क़ा मिन् अ़ैनिन् आनियह् (5) लै-स लहुम् तआमुन् इल्ला मिन् ज़रीअ़िल्- (6) -ला युस्मिनु व ला युग़्नी मिन् जूअ़् (7) वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाअ़ि-मतुल्- (8) -लिसअ्यिहा राज़ि-यतुन् (9) फ़ी जन्नतिन्

आलियह् (10) ला तस्मअु फ़ीहा लाग़ियह् (11) फ़ीहा अैनुन् जारियह् ✣ (12) फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ू-अ़तुंव्- (13) -व अक्वाबुम्-मौज़ू-अ़तुंव्- (14) -व नमारिक़ु मस्फ़ू-फ़तुंव्- (15) -व ज़राबिय्यु मब्सूसह् (16) अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल्-इबिलि कै-फ़ ख़ुलिक़त् (17) व इलस्समा-इ कै-फ़ रुफ़िअ़त् (18) व इलल्-जिबालि कै-फ़ नुसिबत् (19) व इलल्-अर्ज़ि कै-फ़ सुतिहत् (20) फ़ज़क्किर्, इन्नमा अन्-त मुज़क्किर (21) लस्-त अ़लैहिम् बि-मुसैतिरिन् (22) इल्ला मन् तवल्ला व क-फ़र (23) फ़युअ़ज़्ज़िबुहुल्लाहुल्-अ़ज़ाबल्-अक्बर (24) इन्-न इलैना इया-बहुम् (25) सुम्-म इन्-न अ़लैना हिसा-बहुम ● (26) ❖

89 सूरतुल्-फ़ज्र 10

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 585 अक्षर, 137 शब्द और 30 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-फ़ज्रि (1) व लयालिन् अ़शिंरव्- (2) -वश्शफ़्अि वल्वत्रि (3) वल्लैलि इज़ा यस्रि (4) हल् फ़ी ज़ालि-क क़-समुल्लिज़ी हिज्र् (5) अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बिआ़द (6) इर-म-ज़ातिल्-अ़िमादि- (7) -ल्लती लम् युख़्लक़् मिस्लुहा फ़िल्-बिलाद (8) व समूदल्लज़ी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (9) व फ़िर्औ-न ज़िल्-औताद (10) अल्लज़ी-न तग़ौ फ़िल्-बिलाद (11) फ़-अक्सरू फ़ीहल्-फ़साद (12) फ़-सब्-ब अ़लैहिम् रब्बु-क सौ-त अ़ज़ाब (13) इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिर्साद (14) फ़-अम्मल्-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्र-महू व नअ़्अ़-महू फ़-यक़ूलु रब्बी अक्र-मन् (15) व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क़्-द-र अ़लैहि रिज़्क़हू फ़-यक़ूलु रब्बी अहानन् (16) कल्ला बल्-ला तुक्रिमूनल्-यती-म (17) व ला तहाज़्ज़ू-न अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (18)

مَرْفُوعَةٌ ۝ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝ وَزَرَابِيُّ
مَبْثُوثَةٌ ۝ أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ وَإِلَى السَّمَاءِ
كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ وَإِلَى الْأَرْضِ
كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝ لَّسْتَ عَلَيْهِم
بِمُصَيْطِرٍ ۝ إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ۝ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ
الْأَكْبَرَ ۝ إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝
سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَلَاثُونَ آيَةً
وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ۝
هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝
إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝ وَثَمُودَ
الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۝ الَّذِينَ
طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ
سَوْطَ عَذَابٍ ۝ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا
ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۝ وَأَمَّا
إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۝ كَلَّا
بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا تَحَاضُّونَ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝

व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्लल् लम्मंव्- (19) -व तुहिब्बूनल्-मा-ल हुब्बन् जम्मा (20) कल्ला इज़ा दुक्कतिल्-अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (21) -व जा-अ रब्बु-क वल्म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (22) व जी-अ यौमइज़िम्-बि-जहन्न-म यौमइज़िंय्य-तज़क्करुल्-इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िकरा (23) यक़ूलु या लैतनी क़द्दम्तु लि-हयाती (24) फ़यौमइज़िल्-ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ाबहू अ-हदुंव्- (25) -व ला यूसिक़ु व साक़हू अ-हद (26) या अय्यतुहन्-नफ़्सुल्-मुत्मइन्नतु- (27) -र्जिई इला रब्बिकि राज़ि-यतम् मर्ज़िय्यह् (28) फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (29) वद्ख़ुली जन्नती (30) ❖

90 सूरतुल्-ब-लदि 35

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 347 अक्षर, 82 शब्द और 20 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्-ब-लदि (1) व अन्-त हिल्लुम् बिहाज़ल्-ब-लदि (2) व वालिदिंव्-व मा व-लद् (3) ल-क़द् ख़लक़्नल्- इन्सा-न फ़ी क-बद् (4) अ-यह्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अ़लैहि अ-हद् ✣ (5) यक़ूलु अह्लक्तु मालल्-लु-बदा (6) अ-यह्सबु अल्लम् य-रहू अ-हद् (7) अलम् नज्अ़ल्-लहू अ़ैनैनि (8) व लिसानंव्-व श-फ़तैनि (9) व हदैनाहुन्-नज्दैन (10) फ़-लक़्त-ह-मल् अ़-क़-ब-त (11) व मा अद्रा-क मल्अ़-क़-बह् (12) फ़क्कु र-क़-बतिन् (13) औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्-ग़-बतिंय्- (14) -यतीमन् ज़ा मक़्र-बतिन् (15) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-बह् (16) सुम्-म का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व तवासौ बिस्सब्रि व तवासौ बिल्-मर्-ह-मह् (17) उलाइ-क अस्हाबुल् मैं-म-नह् (18) वल्लज़ी-न क-फ़रू

البلد ٩٠ — عم ٣٠

وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا
إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾
وَجِايْءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ
الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِي
فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾
سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ — وَهِيَ عِشْرُونَ آيَةً
لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ
وَمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ ﴿٤﴾ أَيَحْسَبُ أَن
لَّن يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾
أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ﴿٧﴾ أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا
وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي
مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ
كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا

منزل ٧

(पिछले पृष्ठ का शेष) मगर जो लोग उसको लेकर आए थे वे ख़ुद गिरकर हलाक हो गए और लड़का सही सालिम वापस आया। फिर बादशाह ने समुद्र में ग़र्क़ करने का हुक्म दिया, वह उससे भी बच गया और जो लोग उसको डुबोने ले गए थे वे सब ग़र्क़ हो गए। यह देखकर बादशाह सख़्त परेशान और चिंतित हुआ। लड़का बादशाह से कहने लगा कि मुझको बिस्मिल्लाह कहकर तीर मारो तो मैं मर जाऊँगा। चुनाँचे ऐसा ही किया गया तो लड़का जन्नत को पहुँच गया। यह हालत देखकर एकदम आ़म लोगों की ज़बान से नारा बुलन्द हुआ कि हम सब अल्लाह पर ईमान लाते हैं। यह देखकर बादशाह बद-हवास हुआ और गुस्से की हालत में हुकूमत के सलाहकारों से मश्विरा किया। चुनाँचे उनकी सलाह से बड़ी-बड़ी ख़न्दक़ें आग से भरवाकर ऐलान कर दिया कि जो शख़्स इस्लाम से न फिरेगा उसको आग में जला दिया जाएगा।

(तफ़सीर पृष्ठ 1086) **1.** मतलब यह कि इन आमाल पर मुहासबा होने वाला है। और इस क़सम को मक़सूद से मुनासबत यह है कि जैसे आसमान पर सितारे हर वक़्त मौजूद हैं मगर वे ख़ास रात ही में ज़ाहिर होते हैं, इसी तरह आमाल सब आमालनामे में इस वक़्त भी महफ़ूज़ हैं मगर उनका ज़ुहूर ख़ास क़ियामत में होगा।

2. इस पानी से 'मनी' (यानी वीर्य) मुराद है, चाहे सिर्फ़ मर्द की या मर्द और औ़रत दोनों की हो। और औ़रत की 'मनी' में अगरचे पतलापन मर्द की 'मनी' के बराबर नहीं होता लेकिन कुछ न कुछ पतलापन ज़रूर होता है। और दूसरी तक़दीर पर लफ़्ज़ ''मा'' का मुफ़रद लाना इस बिना पर है कि दोनों माद्दे मिश्रित होकर एक चीज़ की तरह हो जाते हैं, और पुश्त और सीना चूँकि बदन के दो किनारे हैं इसलिए इससे तमाम बदन मुराद हो सकता है। और यह इसलिए मुराद लिया गया कि 'मनी' तमाम बदन में पैदा होकर फिर मुन्फ़इल (यानी असर क़बूल करने वाली) होती है। और इस किनाये में पुश्त और सीने की तख़्सीस शायद इसलिए हो कि 'मनी' यानी वीर्य के माद्दे के हासिल होने में मुख्य अंगों यानी दिल, दिमाग़ और जिगर को ख़ास दख़ल है, और दिल और जिगर का ताल्लुक़ सीने से और दिमाग़ का ताल्लुक़ पुश्त से ज़ाहिर है। हासिल यह कि नुत्फ़े से इनसान बना देना दोबारा पैदा करने से ज़्यादा अ़जीब है।

3. यानी बातिल अ़क़ीदों और फ़ासिद नीयतों की जितनी छुपी हुई बातें हैं सब ज़ाहिर हो जाएँगी, और दुनिया में जिस तरह मौक़े पर जुर्म से मुकर जाते हैं यह बात वहाँ मुम्किन न होगी।

4. जिस तरह क़ुरआन अपनी दलालत से असलियत और ग़ैर-असलियत में फ़ैसला कर देने वाला है इसी तरह अपने मोजिज़ा होने की सिफ़त से इन दो एहतिमालों का भी कि यह अल्लाह की तरफ़ से है या नहीं फ़ैसला कर देने वाला है। और इसके अल्लाह की तरफ़ से होने की शिक को मुतैयन कर देने वाला है। और आख़िर की क़सम को आख़िर के मज़मून से यह मुनासबत है कि क़ुरआन आसमान से आता है और जिसमें क़ाबलियत होती है उसको हिदायत व सआ़दत से मालामाल करता है। जैसे बारिश आसमान से आती है और अच्छी ज़मीन को फ़ैज़ पहुँचाती है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1088) **1.** पहले आ़म तसुर्रुफ़ात मज़कूर हैं, फिर हैवानों के मुताल्लिक़, फिर घास-फूँस और पेड़-पौधों के मुताल्लिक़। मतलब यह है कि नेक कामों के ज़रिए आख़िरत का इरादा करना चाहिए जहाँ जज़ा व सज़ा होने वाली है। और इसी ताअ़त व नेकी का तरीक़ा बतलाने के लिए हमने क़ुरआन नाज़िल किया है और आपको उसकी तब्लीग़ के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है।

2. पस उससे किसी चीज़ की मस्लहत छुपी नहीं। इसलिए जब महफ़ूज़ रखना मस्लहत होता है तो महफ़ूज़ रखते हैं, जब भुला देना मस्लहत होती है तो भुला देते हैं।

3. पस हासिल यह हुआ कि चूँकि नसीहत नफ़े की चीज़ है इसलिए आप नसीहत किया कीजिए, मगर इसके बावजूद कि वह अपनी ज़ात के एतिबार से नफ़ा देने वाली है यह न समझिए कि सबको मुफ़ीद होती है और सब ही मान लेंगे।

4. तफ़सीर रूहुल-मआ़नी में अ़ब्द बिन हमीद की रिवायत से हदीसे मरफ़ूअ़ ज़िक्र की गई है कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर दस सहीफ़े नाज़िल हुए और मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस।

5. यानी न उसमें ग़िज़ाईयत है और न भूख को दूर करने की क़ाबलियत है। और मुसीबत झेलने से मुराद हश्र में परेशान फिरना और दोज़ख़ में ज़न्जीरों और तौक़ों को लादना, दोज़ख़ के पहाड़ों पर चढ़ना और उसके असर से हालत का ख़स्ता होना ज़ाहिर है, और खौलता हुआ चश्मा वही जिसको दूसरी आयतों में 'हमीम' फ़रमाया है। और इस आयत से मालूम होता है कि वहाँ उसका भी चश्मा होगा, और ''ज़रीअ़'' में खाने को सीमित करना एक इज़ाफ़ी चीज़ है, यानी पसन्दीदा और मज़ेदार खाने का इनकार करना मक़सूद है। पस ज़क़्क़ूम (थूहर) और ज़ख़्मों के धोवन के साबित होने से इसका कोई टकराव नहीं। यह दोज़ख़ियों का हाल हुआ। आगे जन्नत वालों का हाल है।

(तफ़सीर पृष्ठ 1090) **1.** ताकि जहाँ चाहें आराम कर लें। एक जगह से दूसरी जगह जाना भी न पड़े।

2. इन चार चीज़ों की तख़्सीस इसलिए है कि अ़रब के लोग अक्सर जंगलों में चलते-फिरते रहते थे। **(शेष तफ़सीर अगले पृष्ठ पर)**

बिआयातिना हुम् अस्हाबुल् मश-अ-मह् (19) अ़लैहिम् नारुम् मुअ्-स-दह् (20) ❖

91 सूरतुश्-शम्सि 26

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 254 अक्षर, 56 शब्द और 15 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वश्शम्सि व ज़ुहाहा (1) वल्क़-मरि इज़ा तलाहा (2) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा (3) वल्लैलि इज़ा यग्शाहा (4) वस्समा-इ व मा बनाहा (5) वल्अर्ज़ि व मा तहाहा (6) व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा (7) फ़-अल्ह-महा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा (8) क़द् अफ़्ल-ह मन् ज़क्काहा (9) व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा (10) कज़्ज़बत् समूदु बितग्वाहा (11) इज़िम् ब-अ़-स अश्क़ाहा (12) फ़क़ा-ल लहुम् रसूलुल्लाहि ना-क़तल्लाहि व सुक़्याहा (13) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ़-क़रूहा फ़-दम्-द-म अ़लैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़-सव्वाहा (14) व ला यख़ाफ़ु अ़ुक़्बाहा (15) ❖

بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾
سورة الشمس مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ خمس عشرة آية
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ﴿٣﴾
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ﴿٥﴾ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ﴿٦﴾
وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ﴿٧﴾ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ﴿٨﴾ قَدْ
أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ﴿٩﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ﴿١٠﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ
بِطَغْوَاهَا ﴿١١﴾ إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ
نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ فَسَوَّاهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ﴿١٥﴾
سورة الليل مكية بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ إحدى وعشرون آية
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ﴿١﴾ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿٢﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ
وَالْأُنْثَىٰ ﴿٣﴾ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤﴾ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ﴿٥﴾
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٦﴾ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٧﴾ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ
وَاسْتَغْنَىٰ ﴿٨﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٩﴾ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ﴿١٠﴾
وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ﴿١١﴾ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿١٢﴾

92 सूरतुल्-लैलि 9

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 314 अक्षर 71 शब्द और 21 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्लैलि इज़ा यग्शा (1) वन्नहारि इज़ा त-जल्ला (2) व मा ख़-लक़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा (3) इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता (4) फ़-अम्मा मन् अअ्ता वत्तक़ा (5) व सद्द-क़ बिल्हुस्ना (6) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्युस्रा (7) व अम्मा मम्-बख़ि-ल वस्तग्ना (8) व कज़्ज़-ब बिल्हुस्ना (9) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-अुस्रा (10) व मा युग्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा
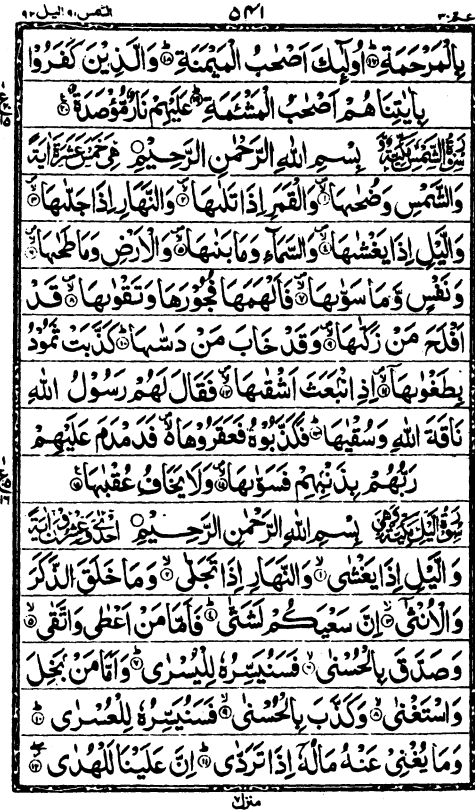
त-रद्दा (11) इन्-न अ़लैना लल्हुदा (12) व इन्-न लना लल्-आख़िर-त वल्ऊला (13) फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा (14) ला यस्लाहा इल्लल् अश्क़- (15) -ल्लज़ी कज़्ज़-ब व त-वल्ला (16) व स-युजन्नबुहल् अत्क़- (17) -ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-तज़क्का (18) व मा लि-अ-हदिन् अि़न्दहू मिन्-निअ़्मतिन् तुज्ज़ा (19) इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-अअ़्ला (20) व लसौ-फ़ यर्ज़ा (21) ❖

93 सूरतुज़्-ज़ुहा 11

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 166 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा (1) वल्लैलि इज़ा सजा (2) मा वद्द-अ़-क रब्बु-क व मा क़ला (3) व लल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-ल-क मिनल्-ऊला (4) व लसौ-फ़ युअ़्ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा (5) अलम् यजिद्-क यतीमन् फ़-आवा (6) व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा (7) व व-ज-द-क आ-इलन् फ़-अग़्ना (8) फ़-अम्मल्-यती-म फ़ला तक़्हर् (9) व अम्मस्-सा-इ-ल फ़ला तन्हर् (10) व अम्मा बिनिअ़्-मति रब्बि-क फ़-हद्दिस् (11) ❖

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝ فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝
لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا
الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝ وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُ
مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝
وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝

سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ هِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ وَ
لَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝
أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَ
وَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا
السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

سُورَةُ الْانْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي
أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ
يُسْرًا ۝ إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَ
إِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

94 सूरतुल्-इन्शिराहि 12

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 103 अक्षर, 27 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् नश्रह् ल-क सद्र-क (1) व व-ज़अ़्ना अ़न्-क विज़्र-क- (2) -ल्लज़ी अन्क़-ज़ ज़ह्-र-क (3) व र-फ़अ़्ना ल-क ज़िक्रक् (4) फ़-इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रन् (5) इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रा (6) फ़-इज़ा फ़रग़्-त फ़न्सब् (7) व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब् (8) ❖

95 सूरतुत्-तीनि 28

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 165 अक्षर, 34 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि (1) व तूरि सीनी-न (2) व हाज़ल् ब-लदिल्-अमीन (3) ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न फ़ी अह्सनि तक़्वीम (4) सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ़-ल साफ़िलीन (5) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (6) फ़मा युकज़्ज़िबु-क बअ़्दु बिद्दीन (7) अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन (8) ❖

96 सूरतुल् अ़-लक़ि 1

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 290 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़् (1) ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् अ़-लक़् (2) इक़्रअ् व रब्बुकल् अक्रमु- (3) -ल्लज़ी अ़ल्ल-म बिल्क़-लमि (4) अ़ल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ़्लम् (5) कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत्ग़ा (6) अर्-रआहुस्तग़्ना (7) इन्-न इला रब्बिकर्-रुजूआ़ (8) अ-रऐतल्लज़ी यन्हा (9) अ़ब्दन् इज़ा सल्ला (10) अ-रऐ-त इन् का-न अ़लल्-हुदा (11) औ अ-म-र बित्तक़्वा (12) अ-रऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (13) अलम् यअ़्लम् बिअन्नल्ला-ह यरा (14) कल्ला ल-इल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़-अ़म् बिन्नासि-यति (15) नासि-यतिन् काज़ि-बतिन् ख़ाति-अह् (16) फ़ल्यद्अु नादि-यह् (17) स-नद्अ़ुज़्-ज़बानियह् (18) कल्ला, ला तुतिअ़्हु वस्जुद् वक़्तरिब् ❑ (19) ❖

سورة التين مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثمان آيات

والتين والزيتون ۝ وطور سينين ۝ وهذا البلد الأمين ۝
لقد خلقنا الإنسان في أحسن تقويم ۝ ثم رددناه أسفل
سافلين ۝ إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات فلهم أجر
غير ممنون ۝ فما يكذبك بعد بالدين ۝ أليس الله
بأحكم الحاكمين ۝

سورة العلق مكية بسم الله الرحمن الرحيم وهي تسع عشرة آية

اقرأ باسم ربك الذي خلق ۝ خلق الإنسان من علق ۝
اقرأ وربك الأكرم ۝ الذي علم بالقلم ۝ علم الإنسان
ما لم يعلم ۝ كلا إن الإنسان ليطغى ۝ أن رآه استغنى ۝
إن إلى ربك الرجعى ۝ أرأيت الذي ينهى ۝ عبدا إذا
صلى ۝ أرأيت إن كان على الهدى ۝ أو أمر بالتقوى ۝
أرأيت إن كذب وتولى ۝ ألم يعلم بأن الله يرى ۝
كلا لئن لم ينته لنسفعا بالناصية ۝ ناصية كاذبة
خاطئة ۝ فليدع ناديه ۝ سندع الزبانية ۝ كلا
لا تطعه واسجد واقترب ۝

97 सूरतुल्-क़द्रि 25

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 30 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्रि (1) व मा अद्रा-क मा लैलतुल्-क़द्र (2) लैलतुल्-क़द्रि ख़ैरुम्-मिन् अल्फ़ि शह्र् (3) त-नज़्ज़लुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (4) सलामुन्, हि-य हत्ता मत्-लअ़िल्-फ़ज्र ▲ (5) ❖

98 सूरतुल् बय्यि-नति 100

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 413 अक्षर, 95 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्- किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फ़क्की-न हत्ता तअ्ति-यहुमुल्- बय्यिनह् (1) रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्ह-रतन् (2) फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमह् (3) व मा त-फ़र्रक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जाअत्हुमुल्-बय्यिनह् (4) व मा उमिरू इल्ला लियअ़्बुदुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल्-क़य्यिमह् (5) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, उलाइ-क हुम् शर्रुल्-बरिय्यह् (6) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क हुम् ख़ैरुल्-बरिय्यह् (7) जज़ाउहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालि-क लिमन् ख़शि-य रब्बह् (8) ❖

القدر ٩٧ البينة ٩٨ — ٥٩٤

سورة القدر مكية ٢٥ بسم الله الرحمن الرحيم وهي خمس آيات
إنا أنزلناه في ليلة القدر ۝١ وما أدراك ما ليلة القدر ۝٢ ليلة
القدر خير من ألف شهر ۝٣ تنزل الملائكة والروح فيها
بإذن ربهم من كل أمر ۝٤ سلام هي حتى مطلع الفجر ۝٥
سورة البينة مدنية ١٠٠ بسم الله الرحمن الرحيم وهي ثمان آيات
لم يكن الذين كفروا من أهل الكتاب والمشركين
منفكين حتى تأتيهم البينة ۝١ رسول من الله يتلوا
صحفا مطهرة ۝٢ فيها كتب قيمة ۝٣ وما تفرق الذين أوتوا
الكتاب إلا من بعد ما جاءتهم البينة ۝٤ وما أمروا إلا
ليعبدوا الله مخلصين له الدين حنفاء ويقيموا الصلاة
ويؤتوا الزكاة وذلك دين القيمة ۝٥ إن الذين كفروا من
أهل الكتاب والمشركين في نار جهنم خالدين فيها أولئك
هم شر البرية ۝٦ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات
أولئك هم خير البرية ۝٧ جزاؤهم عند ربهم جنات
عدن تجري من تحتها الأنهار خالدين فيها أبدا رضي
الله عنهم ورضوا عنه ذلك لمن خشي ربه ۝٨

منزل ٧

99 सूरतुल्-ज़िल्ज़ालि 93

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 158 अक्षर, 37 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिल्-अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा **(1)** व अख़्र-जतिल्-अर्ज़ु अस्क़ालहा **(2)** व क़ालल्-इन्सानु मा लहा **(3)** यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा **(4)** बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा **(5)** यौमइज़िंय्-यस्दुरुन्नासु अश्तातल्-लियुरौ अअ़्मालहुम् **(6)** फ़-मंय्यअ़्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्-यरहू **(7)** व मंय्-यअ़्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् शर्रंय्-यरहू **(8)** ❖

الزلزال ٩٩ العديت ١٠٠ القارعة ١٠١ ‏ ٥٤٥ ‏ عم ٣٠

سورة الزلزال مدنية ‏ بسم الله الرحمن الرحيم ‏ وهي ثمان آيات

إذا زلزلت الأرض زلزالها ١ وأخرجت الأرض أثقالها ٢

وقال الإنسان ما لها ٣ يومئذ تحدث أخبارها ٤ بأن

ربك أوحى لها ٥ يومئذ يصدر الناس أشتاتا ليروا

أعمالهم ٦ فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ٧ ومن

يعمل مثقال ذرة شرا يره ٨

سورة العديت مكية ‏ بسم الله الرحمن الرحيم ‏ وهي إحدى عشرة آية

والعديت ضبحا ١ فالموريت قدحا ٢ فالمغيرت صبحا ٣

فأثرن به نقعا ٤ فوسطن به جمعا ٥ إن الإنسان لربه

لكنود ٦ وإنه على ذلك لشهيد ٧ وإنه لحب الخير لشديد ٨

أفلا يعلم إذا بعثر ما في القبور ٩ وحصل ما في الصدور ١٠

إن ربهم بهم يومئذ لخبير ١١

سورة القارعة مكية ‏ بسم الله الرحمن الرحيم ‏ وهي إحدى عشرة آية

القارعة ١ ما القارعة ٢ وما أدرىك ما القارعة ٣ يوم

يكون الناس كالفراش المبثوث ٤ وتكون الجبال كالعهن

المنفوش ٥ فأما من ثقلت موازينه ٦ فهو في عيشة

منزل ٧

100 सूरतुल्-आ़दियाति 14

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 170 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-आ़दियाति ज़ब्हन् **(1)** फ़ल्मूरियाति क़द्हन् **(2)** फ़ल्-मुग़ीराति सुब्हन् **(3)** फ़-असर्-न बिही नक़्अ़न् **(4)** फ़-वसत्-न बिही जम्अ़न् **(5)** इन्नल्-इन्सा-न लिरब्बिही ल-कनूद **(6)** व इन्नहू अ़ला ज़ालि-क ल-शहीद **(7)** व इन्नहू लिहुब्बिल्-ख़ैरि ल-शदीद **(8)** अ-फ़ला यअ़्लमु इज़ा बुअ़्सि-र मा फ़िल्क़ुबूरि **(9)** व हुस्सि-ल मा फ़िस्सुदूरि **(10)** इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल् ल-ख़बीर **(11)** ❖
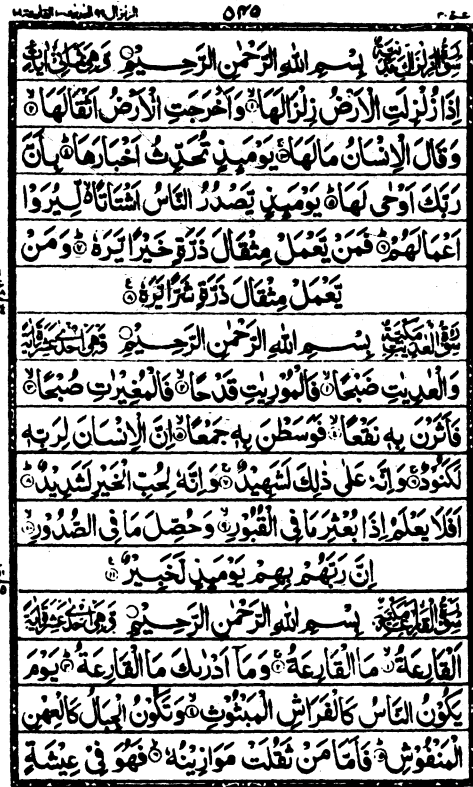
101 सूरतुल्-क़ारि-अ़ति 30

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 160 अक्षर, 35 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्क़ारि-अ़तु **(1)** मल्क़ारि-अ़तु **(2)** व मा अद्रा-क मल्क़ारिअ़ह् **(3)** यौ-म

72

यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल्-मब्सूसि (4) व तकूनुल्-जिबालु कल्-अ़िह्निल्-मन्फ़ूश (5) फ़-अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू (6) फ़हु-व फ़ी अ़ी-शतिर्-राज़ियह् (7) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू (8) फ़-उम्मुहू हावियह् (9) व मा अद्रा-क मा हियह् (10) नारुन् हामियह् (11) ❖

102 सूरतुत्-तकासुरि 16

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 123 अक्षर, 28 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हाकुमुत्-तकासुरु (1) हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर (2) कल्ला सौ-फ़ तअ़्लमून (3) सुम्-म कल्ला सौ-फ़ तअ़्लमून (4) कल्ला लौ तअ़्लमू-न अ़िल्मल्-यक़ीन (5) ल-त-र-वुन्नल्-जहीम (6) सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अ़ैनल्-यक़ीन (7) सुम्-म लतुस्-अलुन्-न यौमइज़िन् अ़निन्-नअ़ीम (8) ❖

103 सूरतुल्-अ़स्रि 13

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 74 अक्षर, 14 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वल्-अ़स्रि (1) इन्नल्-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र (2) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व तवासौ बिल्हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र (3) ❖

104 सूरतुल् हु-म-ज़ति 32

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 135 अक्षर, 33 शब्द और 9 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वैलुल्-लिकुल्लि हु-म-ज़तिल् लु-मज़ह् (1) अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव्-व अ़द्-द-दहू (2) यह्सबु अन्-न मालहू अख़्ल-दह् (3) कल्ला लयुम्ब-ज़न्-न फ़िल्-हु-त-मति (4) व मा

अद्रा-क मल्हु-त-मह् (5) नारुल्लाहिल् मू-क़्-दतु- (6) -ल्लती तत्तलिअ़ु अ़लल्-अफ़्इदह् (7) इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन् (8) फ़ी अ़-मदिम्-मुमद्-द-दह् (9) ❖

105 सूरतुल्-फ़ीलि 19

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 94 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलम् त-र कै-फ़ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिल्-फ़ील (1) अलम् यज्अ़ल् कै-दहुम् फ़ी तज़्लीलिंव- (2) -व अर्-स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील (3) तर्मीहिम् बिहिजा-रतिम्- मिन् सिज्जील (4) फ़-ज-अ़-लहुम् क-अ़स्फ़िम् मअ्कूल (5) ❖

106 सूरतु कुरैशिन् 29

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 79 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

लि-ईलाफ़ि क़ुरैशिन् (1) ईलाफ़िहिम् रिह्-ल-तश्शिता-इ वस्सैफ़ (2) फ़ल्-यअ्बुदू रब्-ब हाज़ल्-बैति- (3) -ल्लज़ी अत्-अ़-म-हुम् मिन् जूअिंव्-व अ-म-नहुम् मिन् ख़ौफ़ (4) ❖

سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ خَمْسُ آيَاتٍ
أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝
سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ أَرْبَعُ آيَاتٍ
لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ ۝ إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّن جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ ۝
سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ سَبْعُ آيَاتٍ
أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝ فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝
سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ ثَلَاثُ آيَاتٍ
إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

107 सूरतुल्-माऊनि 17

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 25 शब्द और 7 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अ-रऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन (1) फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ़्अ़ुल्-यतीम (2) व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (3) फ़वैलुल् लिल्-मुसल्लीन (4) अल्लज़ी-न हुम अ़न् सलातिहिम् साहून (5) अल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न (6) व यम्-नअ़ूनल्-माअ़ून (7) ❖
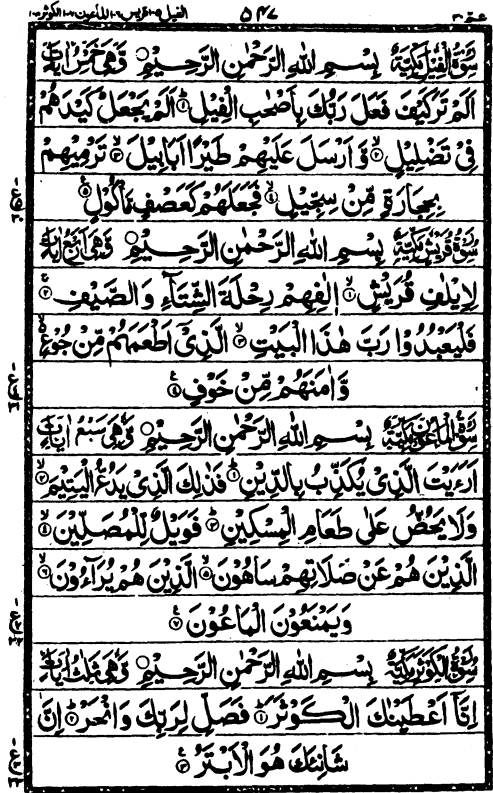
108 सूरतुल्-कौसरि 15

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 37 अक्षर, 10 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इन्ना अअ़्तैनाकल्-कौ-सर् **(1)** फ़-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर् **(2)** इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अब्तर् **(3)** ❖

سورة الكافرون بسم الله الرحمن الرحيم

قل يايها الكفرون ۝ لا اعبد ما تعبدون ۝ ولا انتم

عبدون ما اعبد ۝ ولا انا عابد ما عبدتم ۝ ولا انتم

عبدون ما اعبد ۝ لكم دينكم ولي دين ۝

سورة النصر

بسم الله الرحمن الرحيم

اذا جاء نصر الله والفتح ۝ ورايت الناس يدخلون في دين

الله افواجا ۝ فسبح بحمد ربك واستغفره انه كان توابا ۝

سورة اللهب

بسم الله الرحمن الرحيم

تبت يدا ابي لهب وتب ۝ ما اغنى عنه ماله وما كسب ۝

سيصلى نارا ذات لهب ۝ وامراته حمالة الحطب ۝

في جيدها حبل من مسد ۝

سورة الاخلاص بسم الله الرحمن الرحيم

قل هو الله احد ۝ الله الصمد ۝ لم يلد ولم يولد ۝

ولم يكن له كفوا احد ۝

109 सूरतुल्-काफ़िरून 18

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 99 अक्षर, 26 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून **(1)** ला अअ़्बुदु मा तअ़्बुदून **(2)** व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ़्बुद **(3)** व ला अ-न आ़बिदुम्-मा अ़बत्तुम् **(4)** व ला अन्तुम् आ़बिदू-न मा अअ़्बुद **(5)** लकुम् दीनुकुम् व लि-य दीन **(6)** ❖

110 सूरतुन्-नस्रि 114

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 19 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्-फ़त्हु **(1)** व रऐतन्ना-स यद्ख़ुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा **(2)** फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर्हु, इन्नहू का-न तव्वाबा **(3)** ❖

111 सूरतुल् ल-हबि 6

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तब्बत् यदा अबी ल-हबिंव्-व तब्ब **(1)** मा अग़्ना अ़न्हु मालुहू व मा क-सब् **(2)** स-यस्ला नारन् ज़ा-त ल-हबिंव्- **(3)** -वम्-र-अतुहू हम्मा-लतल् ह-तब **(4)** फ़ी जीदिहा
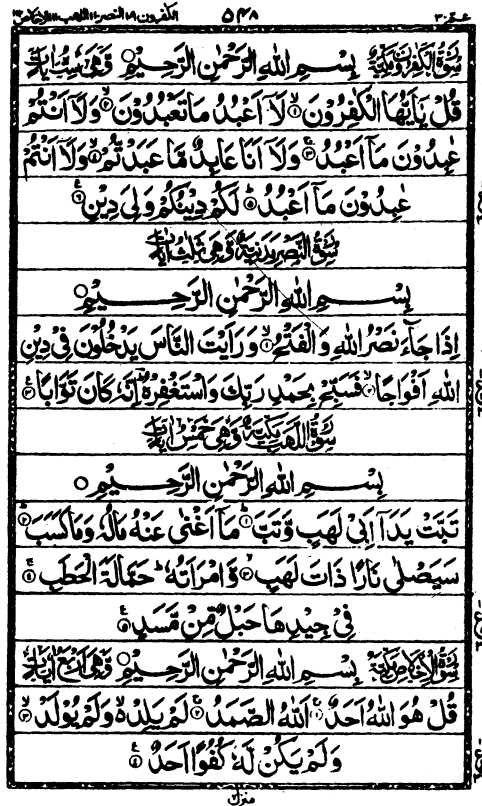
हब्लुम् मिम्-म-सद् (5) ❖

112 सूरतुल्-इख़्लासि 22

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 49 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् हुवल्लाहु अ-हद (1) अल्लाहुस्-समद् (2) लम् यलिद् व लम् यूलद् (3) व लम् यकुल्-लहू कुफ़ुवन् अ-हद (4) ❖

113 सूरतुल्-फ़-लक़ि 20

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 73 अक्षर, 23 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ि (1) मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़ (2) व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् (3) व मिन् शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-अ़ु-क़द् (4) व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह-सद् (5) ❖

٥٤٩

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

سُوْرَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ سِتُّ اٰيٰتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ اِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

بسم الخير

دُعَاءُ خَتْمِ الْقُرْاٰنِ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِىْ فِىْ قَبْرِىْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِىْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِىْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِىْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِىْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِىْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَاءَ الَّيْلِ وَاٰنَاءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِىْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ

114 सूरतुन्-नासि 21

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 20 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

क़ुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नासि (1) मलिकिन्नासि (2) इलाहिन्नासि (3) मिन् शर्रिल् वस्वासिल्-ख़न्नास (4) अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (5) मिनल्-जिन्नति वन्नास (6) ❖

दुआ-ए-ख़त्मे क़ुरआन

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्शती फ़ी क़ब्री। अल्लाहुम्मर्हम्नी बिल्-क़ुरआनिल्-अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्म-तन्। अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिला-व-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि। वज्अ़ल्हु ली हुज्जतंय्-या रब्बल्-आ़लमीन।
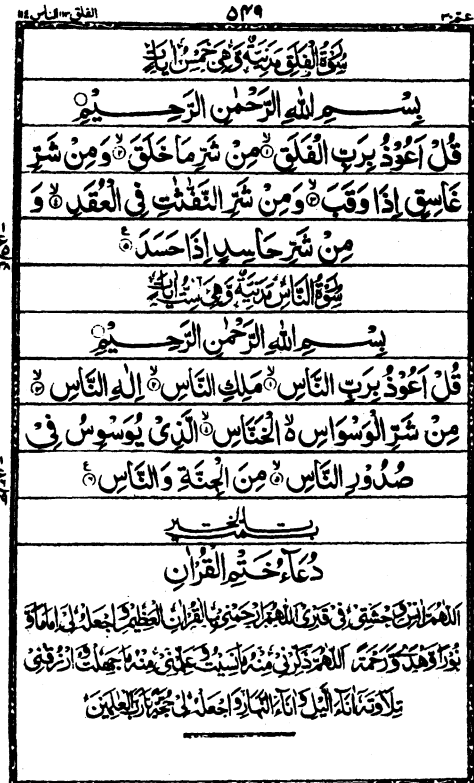
यह ऐसी किताब है जिसमें कोई शुब्हा नहीं

क़ुरआन मजीद
(मय तर्जुमा व अ़रबी मतन)

तर्जुमा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह०

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी एम. ए. (अ़लीग०)
मौहल्ला महमूद नगर, मुज़फ़्फ़र नगर (उ० प्र०)

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०
नई दिल्ली

क़ुरआन मजीद

मय हिन्दी तर्जुमा, अरबी मतन एवं लिपियंतरण

Translation by
Hakimul Ummat Hadhrat Maulana Ashraf Ali Thanvi Rah.

Rendered in Hindi by
Maulana Mohammad Imran Qasmi Bigyanvi

ISBN 978-81-7231-456-9

First Published 2003
Nineteenth Impression 2021

Published by *Abdus Sami* for
Islamic Book Service (P) Ltd.
1516-18, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002 (India)
Tel.: +91-11-23244556, 23253514, 23286551
e-mail: info@ibsbookstore.com
Website: www.ibsbookstore.com

Our Associates
Husami Book Depot, Hyderabad (India)

Printed in India

अपनी बात

अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र व एहसान है कि उसने इस नाचीज़ को एक अहम और अज़ीमुश्शान दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं, आप चौदहवीं सदी के ज़बरदस्त आ़लिमे दीन गुज़रे हैं। ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर (उ. प्र.) के क़सबा 'थाना भवन' में **5** रबीउस्सानी **1280** हिजरी में पैदा होने वाले इस आ़लिमे दीन ने इस्लाम की वे ख़िदमात अन्जाम दीं कि जिनसे क़ियामत तक उम्मते मुस्लिमा फ़ायदा उठाती रहेगी और अपने दीन को सँवारती रहेगी। मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह. ने क़रीब बीस साल की उम्र में इस्लामी दुनिया की अ़ज़ीम दीनी दर्सगाह दारुल उलूम देवबन्द से फ़राग़त हासिल की, आपने क़रीब चौदह साल कानपुर में पढ़ाया और फ़तवे लिखने की ख़िदमत अन्जाम दी। उसके बाद हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. की हिदायत के मुताबिक़ ख़ानक़ाह इमदादिया 'थाना भवन' में रिहाइश इख़्तियार की, और उम्र की आख़िरी साँस तक यहीं रहकर दीनी ख़िदमात अन्जाम देते रहे। आपका इन्तिक़ाल **17** रजब **1362** हिजरी (**19** जौलाई **1943** ई.) में हुआ।

हज़रत थानवी रह. की किताबों की तायदाद तक़रीबन एक हज़ार तक पहुँचती है, जिनमें इस्लामी उलूम और दीनी व इल्मी मौज़ूआत के तक़रीबन हर गोशे में आपने उम्मत की रहनुमाई फ़रमाई। दो बातों पर आपका ध्यान ख़ास तौर पर रहा- एक **समाज का सुधार** और इस सिलसिले में इस्लामी तालीमात का प्रसार और उनको आ़म करना। दूसरे **तसव्वुफ़** यानी इनसान का अपनी हक़ीक़त को पहचान कर दुनिया में आने और पैदा किए जाने के मक़सद को सामने रखकर उन तक़ाज़ों को पूरा करना जिनका उसके पैदा करने वाले और मालिक ने उससे मुतालबा किया है।

आपने उम्मते मुस्लिमा की हर-हर मैदान में रहनुमाई फ़रमाई और इस्लामी तालीमात को दुनिया के सामने उनके असली रंग में पेश किया। उम्मत के अन्दर जो बिगाड़ और ख़राबियाँ हैं आपने उनकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई और उनके सुधार की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया इसी लिए आपका लक़ब **"हकीमुल उम्मत"** मशहूर हुआ।

आप हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह. के ख़लीफ़ा थे, मख़्लूक़ की रहनुमाई और बैअ़त की लाईन से भी आपने ज़बरदस्त ख़िदमतें अन्जाम दीं। आपके ख़लीफ़ाओं में बड़ी-बड़ी हस्तियाँ शामिल हैं, जिनमें बड़े-बड़े अ़ल्लामा, दीनी रहनुमा, सूफ़िया और समाज सुधारक शामिल हैं।

जिन दीनी किताबों का प्रकाशन हर साल लाखों में होता है उनमें हज़रत थानवी रह. की दो किताबें पहली सफ़ में अपना दर्जा रखती हैं- **बहिश्ती ज़ेवर** और **तर्जुमा-ए-क़ुरआन**। ये दोनों किताबें हर साल लाखों की तायदाद में छपती हैं, और मुस्लिम क़ौम की दीनी रहनुमाई और हिदायत का ज़रिया बन रही हैं।

मुझे हज़रत थानवी रह. की शख़्सियत और आपकी किताबों से बचपन ही से मुनासबत और ताल्लुक़ रहा। मेरे उस्ताज़े मोहतरम हज़रत मौलाना **क़ारी अ़ब्दुल ग़फ़ूर** साहिब (मोहतमिम **मदरसा मसीहुल उलूम** ग्रा. बिझाना ज़िला मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.) को हज़रत थानवी रह. की किताबों ख़ास तौर पर उनके **मवाइ़ज़** (यानी तक़रीरों) से एक तरह का इश्क़ है। मैंने होश संभाला तो अपनी बस्ती में इस मदरसे को क़ायम होता देखा, यही मेरी पहली दर्सगाह (शिक्षा स्थान) है। मौलाना **क़ारी अ़ब्दुल ग़फ़ूर** साहिब के इस ज़ौक़ का थोड़ा बहुत हिस्सा इस नाचीज़ को भी हासिल हुआ, और हज़रत थानवी रह. की ज़ात व शख़्सियत से बचपन ही में एक अ़क़ीदत व मुहब्बत क़ायम हो गयी जो अल्हम्दु लिल्लाह दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली गयी।

पिछले कई सालों से मुझे दीनी किताबों की प्रूफ़ रीडिंग और हिन्दी अनुवाद का मौक़ा मिलता रहा है, कई

बार मेरी ख़्वाहिश हुई कि हज़रत थानवी रह. की कुछ अहम किताबों का हिन्दी में अनुवाद किया जाए ताकि हिन्दी पढ़ने और जानने वाले हज़रात भी उनसे फ़ायदा उठा सकें।

क़रीब दो साल पहले की बात है कि मेरे करम-फ़रमा जनाब **अ़ब्दुल मुईन ख़ाँ** साहिब डायरेक्टर **इस्लामिक बुक सर्विस** ने नाचीज़ बन्दे से हिन्दी में तर्जुमा-ए-क़ुरआन छापने का इरादा ज़ाहिर किया और मुझसे फ़रमाइश की कि हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी या हज़रत मौलाना महमूदुल हसन शैख़ुल-हिन्द के तर्जुमों में से कोई एक तर्जुमा को हिन्दी में करने की ख़िदमत मैं अन्जाम दूँ। चूँकि काम अहम था इसलिए एक बार को मेरी हिम्मत नहीं हुई मगर फिर भाई **अ़ब्दुल मुईन ख़ाँ** के इसरार (जिसमें इस नाचीज़ के साथ उनका बिरादराना ताल्लुक़ और ख़ुलूस शामिल था) के सबब मैंने अल्लाह का नाम लेकर काम शुरू किया और नमूने के तौर पर एक पारः करके ले गया, ताकि वह किसी माहिर और ज़िम्मेदार शख़्स को दिखला कर यह तय कर लें कि हिन्दी अनुवाद में ज़बान का मेयार क्या रहे। अल्लाह का शुक्र व एहसान है कि उनको इस नाचीज़ का किया हुआ काम पसन्द आया और उन्होंने फ़ौरन मुझे इस काम की तकमील (यानी पूरा करने) का हुक्म दिया और उसूल व ज़ाब्ते के तहत एक मुआ़हदा उसी वक़्त तैयार कराकर बन्दे को इनायत फ़रमाया।

तर्जुमा का काम शुरू किया तो बहुत-सी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। हज़रत थानवी रह. की ज़बान व तहरीर बड़ी ही नपी-तुली और इल्मी अन्दाज़ की है, उनकी तहरीर के मफ़्हूम व मतलब को हिन्दी में मुन्तक़िल करना कोई आसान बात नहीं। मैंने अपनी बिसात-भर पूरी कोशिश की है कि उनकी तहरीर का मफ़्हूम व मतलब ज़रूर निकल आये और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे इसमें काफ़ी हद तक कामयाबी भी मिली है। तफ़सीर में कहीं-कहीं ज़बान और अन्दाज़े बयान इस क़द्र इल्मी है कि पूरी कोशिश के बावजूद शायद सौ फ़ीसद उसे आसान ज़बान में बयान करने में नाचीज़ को कामयाबी न मिली हो मगर मफ़्हूम व मतलब को पकड़ने की भरपूर कोशिश की है, ऐसे मक़ामात (स्थान) चन्द ही नज़र आयेंगे। अल्लाह का शुक्र है कि यह तर्जुमा इतना आसान हो गया है कि उर्दू तर्जुमा इसके सामने मुश्किल मालूम हो सकता है मगर इससे आसानी से फ़ायदा उठाया जा सकता है।

हज़रत थानवी रह. ने अपने तर्जुमा में मक़सद व मफ़्हूम को स्पष्ट और वाज़ेह करने के लिए ब्रेकेट को इस्तेमाल किया है, ऐसे में मुझे जहाँ यह महसूस हुआ कि यहाँ तर्जुमा का असल लफ़्ज़ बाक़ी रहना चाहिए या यह कि हिन्दी का जो मुतबादिल लफ़्ज़ हम इस्तेमाल कर रहे हैं वह उस उर्दू लफ़्ज़ की सौ फ़ीसद नुमायन्दगी और तर्जुमानी नहीं करता, तो अगर हम भी वहाँ ब्रेकेट में इबारत बढ़ाते तो फिर यह पहचान करनी दुश्वार हो जाती कि कौनसी इज़ाफ़े वाली इबारत हज़रत थानवी रह. की है और कौनसी इबारत इस नाचीज़ (यानी हिन्दी अनुवादक) की है। इस मुश्किल को हमने इस तरह हल किया कि हज़रत थानवी रह. की ब्रेकेट वाली इबारतों को ब्रेकेट ही में रहने दिया और जहाँ कहीं इस नाचीज़ (हिन्दी अनुवादक) को इज़ाफ़े की ज़रूरत महसूस हुई तो तर्जुमा के अन्दर उद्धरण चिन्ह (“ ”) के दरमियान उस इबारत का इज़ाफ़ा किया, अब पढ़ने वाला अच्छी तरह समझ सकता है कि कौनसी इबारत हज़रत थानवी की है और कौनसा इज़ाफ़ा हिन्दी अनुवादक का। तफ़सीर के अन्दर चूँकि उर्दू अनुवादक (हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रह.) ने ब्रेकेट का इस्तेमाल नहीं किया है, शायद ही पूरी तफ़सीर में दो-चार जगह हो, इसलिए तफ़सीर में बन्दे ने अगर कहीं किसी बात को वाज़ेह करने की ज़रूरत पेश आई है तो ब्रेकेट का इस्तेमाल किया है।

मैं बहुत आभारी हूँ जनाब **प्रोफ़ेसर मुहम्मद सुलैमान साहिब** (देवबन्द) और जनाब **प्रोफ़ेसर अ़ब्दुर्-रशीद आगवान साहिब** (देहली) का, जिन्होंने मेरे इस काम को तवज्जोह की नज़र से देखा और प्रशंसा व दुआ़ओं और मुफ़ीद मश्विरों के ज़रिये मेरी हिम्मत बढ़ाई। इसी तरह मुझे **जनाब ख़ालिद निज़ामी साहिब** (देहली) का

भी शुक्रिया अदा करना है जिन्होंने बड़ी मेहनत से इस तर्जुमा की प्रूफ़ रीडिंग की और अपने तजुर्बात से मुझ नाचीज़ की रहनुमाई फ़रमाई, अल्लाह तआ़ला उनको इसका दोनों जहान में बेहतरीन बदला इनायत फ़रमाये। साथ ही दिल से दुआ़ निकलती है अपनी बच्ची **ज़ैनब ख़ातून** के लिए जो अगरचे अपनी उम्र की सिर्फ़ बारहवीं मन्ज़िल में है मगर अल्लाह तआ़ला ने उसको एक ख़ास सलीक़े से नवाज़ा है, ग़लतियों के बनाने और प्रूफ़ रीडिंग में इस बच्ची ने भी मेरा बहुत सहयोग किया।

मैंने इस तर्जुमा को हिन्दी का रूप देने में इस बात का पूरा ख़्याल रखा कि हिन्दी के मुश्किल अल्फ़ाज़ न आने पायें बल्कि आ़म बोल-चाल में जो उर्दू-हिन्दी की मिली-जुली ज़बान इस्तेमाल होती है, कोशिश की है कि उसी आ़म बोल-चाल के स्तर की ज़बान इस्तेमाल की जाए ताकि उसको हर शख़्स आसानी से समझ सके। क्योंकि उर्दू ज़बान भले ही तालीमी इदारों से नापैद होती जा रही हो, भले ही उसके लिखने-पढ़ने वालों की तायदाद में कमी आ रही हो, मगर इसकी अदायगी में आसानी, मिठास और मतलब के समझने-समझाने में असरदार होने के सबब आ़म बोल-चाल और मीडिया पर अस्सी फ़ीसद तक आज भी इस ज़बान का क़ब्ज़ा बरक़रार है।

मैं एक बार फिर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता हूँ जिसने मुझे अपनी पवित्र और क़ियामत तक रहने वाली और इनसानियत की रहनुमाई करनी वाली किताब **क़ुरआन मजीद** की इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई। न सिर्फ़ हिन्दी अनुवाद बल्कि इसकी कम्पोज़िंग और सैटिंग भी मेरी ही निगरानी में अन्जाम पाई और अल्हम्दु लिल्लाह मुझे ख़ुद इसकी सैटिंग करने और तरतीब देने का मौक़ा मिला। यह काम क़रीब डेढ़ साल की मुद्दत में पूरा हुआ।

क़ुरआन पाक के अ़रबी मतन को किसी दूसरी ज़बान में मुन्तक़िल करने के बारे में मैं अपनी राय **"एक ज़रूरी तंबीह"** के उन्वान में लिख चुका हूँ। क़ुरआन पाक के हुरूफ़ को देखना और इज़्ज़त व अदब से वुज़ू की हालत में छूना भी इबादत का दर्जा रखता है, ऐसे में वह फ़ज़ीलत किसी और ज़बान में कैसे हासिल हो सकती है जो अ़रबी ज़बान में है। मेरी तमाम मुसलमानों से गुज़ारिश है कि क़ुरआन पाक की तिलावत की सआ़दत और अ़ज़ीम दौलत को हासिल करने के लिए क़ुरआन पाक को अ़रबी ही में सीखें और पढ़ें, इससे हमें दोनों जहान की कामयाबी हासिल होगी।

इनसान अपनी कोशिश का मुकल्लफ़ है, हमने भी पूरी कोशिश की है कि हमारा यह काम ग़लतियों से पाक हो जाए, मगर इनसान की कोई कोशिश ग़लती से पाक नहीं हो सकती, यह मक़ाम अल्लाह तआ़ला ने सिर्फ़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को बख़्शा है कि अल्लाह तआ़ला ख़ताओं और ग़लतियों से उनकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। हमने पूरी कोशिश की है कि इस हिन्दी मतन, तर्जुमा और तफ़सीर में कोई ग़लती न रहे, अगर आपकी नज़र से कोई ग़लती गुज़रे तो मेहरबानी फ़रमा कर प्रकाशक को उसकी सूचना दें ताकि अगले संस्करण में उसको दुरुस्त किया जा सके। शुक्रिया।

आख़िर में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह हमारी इस मेहनत में इख़्लास पैदा फ़रमाये और इसको क़बूल फ़रमाये आमीन। इसके प्रकाशन का बन्दोबस्त करने वाले इदारे **'इस्लामिक बुक सर्विस/समी पब्लीकेशंस प्रा. लि.'** के मालिकान, अधिकारियों और कारकुनान सभी को इसकी ख़ैर व बरकत से नवाज़े, आमीन।

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी (एम. ए. अ़लीग.)

79 महमूद नगर, गली न. 6 मुज़फ़्फ़र नगर यू. पी.

25.12.2002

क़ुरआन मजीद के नाज़िल होने, इकट्ठा किए जाने और तरतीब देने के हालात

जानते हो क़ुरआन मजीद क्या चीज़ है? एक मुक़द्दस और पवित्र किताब है जो सबसे आख़िरी नबी तमाम पैग़म्बरों के सरदार मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई। यह अ़र्श व कुर्सी के मालिक का कलाम है, जो उसने अपने एक सम्मानित पैग़म्बर और मुकर्रम बन्दे से किया। इस्लाम की बिना इसी पाक आसमानी फ़रमान पर है। जिसने फ़रमाँबरदारी की वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी सरकशी और नाफ़रमानी की वह उस पाकीज़ा जमाअ़त से ख़ारिज हो गया और अल्लाह जल्ल शानुहू के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई उस वक़्त आपको नुबुव्वत अ़ता फ़रमाई गई और रिसालत का ताज आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सर पर रखा गया। उसी ज़माने से क़ुरआन पाक के नाज़िल होने की शुरूआ़त हुई। वक़्त वक़्त पर ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा-थोड़ा तेईस (23) साल तक नाज़िल होता रहा। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नाज़िल नहीं किया गया। (1)

सही यह है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नुबुव्वत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा क़ुरआन मजीद लौहे-महफ़ूज़ से इस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म के मुताबिक़ नाज़िल हो गया और उसके बाद हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को जिस वक़्त जिस क़द्र हुक्म हुआ उन्होंने इस मुक़द्दस कलाम को बिलकुल उसी हालत में बिना किसी कमी-बेशी और बिना किसी बदलाव और अदल-बदल के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक पहुँचा दिया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें, कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें, कभी-कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअ़त में 'वह्य' कहते हैं। उलमा ने **'वह्य'** के अनेक तरीक़े हदीसों से निकाल कर पेश किये हैं।

1. फ़रिश्ता 'वह्य' लेकर आये और एक आवाज़ घन्टी जैसी मालूम हो। यह कैफ़ियत बहुत-सी हदीसों से साबित है, और यह क़िस्म 'वह्य' की तमाम क़िस्मों में सख़्त थी। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बहुत तकलीफ़ होती थी, यहाँ तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी 'वह्य' आती है तो मैं समझता हूँ कि अब मेरी जान निकल जायेगी।

2. फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फ़रिश्ता आदमी की शक्ल में आकर बात-चीत करे। यह क़िस्म बहुत आसान थी, इसमें तकलीफ़ न होती थी।

4. अल्लाह तआ़ला बिना किसी वास्ते के जागने की हालत में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कलाम फ़रमाये, जैसा कि शबे-मेराज में।

5. अल्लाह तआ़ला ख़्वाब की हालत में कलाम फ़रमाए। यह क़िस्म भी सही हदीसों से साबित है।

---

1. जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तौरात और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर इन्जील और हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर ज़बूर। ये सब किताबें पूरी एक ही दफ़ा में नाज़िल हो गईं। और इसपर सबका इत्तिफ़ाक़ है कि ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं। (इतक़ान)

6. फ़रिश्ता ख़्वाब की हालत में आकर कलाम करे। मगर याद रहे कि अख़ीर की दो क़िस्मों (5. 6.) की 'वह्य' से क़ुरआन मजीद ख़ाली है। पूरा क़ुरआन जागने की हालत में नाज़िल हुआ। अगरचे बाज़ उलमा ने सूरः कौसर को अख़ीर की क़िस्म से क़रार दिया है मगर मुहक़्क़िक़ उलमा ने इसको रद्द कर दिया है और उनके शुब्हे का काफ़ी जवाब दे दिया है। (इत्क़ान)

क़ुरआन मजीद के थोड़ा-थोड़ा नाज़िल होने में यह भी हिक्मत थी कि उसमें बाज़ आयतें वे थीं जिनका किसी वक़्त मन्सूख़ (यानी निरस्त और रद्द) कर देना ख़ुदा-ए-तआला को मन्ज़ूर था। क़ुरआन मजीद में तीन क़िस्म के मन्सूख़ात हैं। बाज़ वह जिनका हुक्म भी मन्सूख़ और तिलावत भी मन्सूख़।

मिसालः 1. सूरः 'लम् यकुन्' में "**लौ का-न लि-इब्नि आद-म वादियम् मिम्-मालिन् ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलैहिस्-सानी, व लौ का-न लहुस्-सानी ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलैहिमस्-सालिसु व ला यम्लउ जौफ़ब्नि आद-म इल्लत्-तुराबु व यतूबुल्लाहु अ़ला मन् ता-ब**" भी था।

मिसालः 2. **दुआ़-ए-क़नूत** भी क़ुरआन मजीद की दो सूरतें थीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गयी मगर हुक्म बाक़ी है। जैसे 'आयते रज्म' कि हुक्म उसका बाक़ी है मगर तिलावत उसकी नहीं होती। ये दोनों क़िस्में क़ुरआन मजीद से निकाल दी गईं और इनका लिखना भी क़ुरआन मजीद में जायज़ नहीं।

बाज़ वे हैं जिनकी तिलावत बाक़ी है मगर हुक्म मन्सूख़ हो गया है। यह क़िस्म क़ुरआन मजीद में दाख़िल है और इसकी बहुत-सी मिसालें हैं। बाज़ आ़लिमों ने मुस्तक़िल किताबें लिखकर उनको जमा किया है। तफ़सीर के फ़न में उनसे बहुत बहस होती है मगर यह मक़ाम उनकी तफ़सील का नहीं। (तफ़सीरे इत्क़ान)

जब नबी-ए-करीम हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने हक़ीक़ी मालिक से जा मिले और इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया और वह्य के नाज़िल होने का सिलसिला बन्द हो गया, क़ुरआन मजीद किसी किताब में, जैसा कि आजकल है, जमा न था, विभिन्न चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे मुख़्तलिफ़ लोगों के पास थीं। अक्सर सहाबा को पूरा क़ुरआन मजीद ज़बानी याद था। सबसे पहले क़ुरआन मजीद के इकट्ठा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल-मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल में पैदा हुआ और हक़ तआ़ला ने उनके ज़रिये से अपने उस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था, यानी यह कि क़ुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ है, इसका जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल-मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उनकी ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि क़ुरआन के हाफ़िज़ शहीद हो जाते हैं, और बहुत-से यमामा की लड़ाई में शहीद हो गये। मुझे डर है कि अगर यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा क़ुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा। इसलिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि आप इस तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और क़ुरआन मजीद के जमा करने का एहतिमाम कीजिये। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको तुम कैसे कर सकते हो? हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम! यह बहुत अच्छा काम है। फिर वक़्त वक़्त

पर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस तरफ़ तवज्जोह दिलाते रहे। यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दिल में यह बात जम गयी। उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु को तलब किया और यह सब क़िस्सा बयान करके फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद के जमा करने के लिये मैंने आपको चुना है। आप 'वह्य' के लिखने वाले थे और नेक जवान हैं। उन्होंने भी वही उ़ज़्र किया कि जो काम नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं किया उसको आप लोग कैसे कर सकते हैं? आख़िरकार वह भी राज़ी हो गये और उन्होंने बहुत ही एहतिमाम और हद दर्जा एहतियात से क़ुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु को चुनने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे, (1) और वफ़ात के साल में दो बार क़ुरआन मजीद का दौर हुआ और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु उस अख़ीर दौरे में शरीक थे और अख़ीर दौरे के बाद फिर कोई आयत मन्सूख़ नहीं हुई। जिस क़द्र क़ुरआन उस दौरे में पढ़ा गया वह सब बाक़ी रहा, इसलिये उनको मन्सूख़ हुई आयतों का ख़ूब इल्म था। (शरहे सुन्नह्)

जब क़ुरआन मजीद सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के निहायत एहतिमाम से जमा हो चुका, हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उसकी नज़रे-सानी की और जहाँ कहीं लिखने में ग़लती हो गयी थी उसको दुरुस्त किया। कई साल तक इस फ़िक्र में रहे और अक्सर समय सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मुनाज़रा भी किया। फिर जब इस एहतिमाम व पाबन्दी और एहतियात के बाद यह काम पूरा हो गया तो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उसके पढ़ने-पढ़ाने का सख़्त एहतिमाम किया। जो सहाबा हाफ़िज़ थे उनको दूर-दराज़ मुल्कों में क़ुरआन व फ़िक़्ह (यानी मसाइल) की तालीम के लिये भेजा जिसका सिलसिला हम तक पहुँचा।

हक़ यह है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का एहसान इस बारे में तमाम उम्मते मुहम्मदिया पर है, उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास क़ुरआन मजीद मौजूद है और हम इसकी तिलावत से फ़ायदा उठाते हैं। इस एहसान का बदला किससे हो सकता है। ऐ अल्लाह! तू उनके दर्जे बुलन्द फ़रमा और उनको अपनी रिज़ा व निकटता का आला मक़ाम अ़ता फ़रमा, आमीन।

फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस एहसान को और भी कामिल कर दिया। अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में उन्होंने क़ुरआन मजीद के उस नुस्ख़े (प्रति) की सात नक़्लें कराकर दूर-दराज़ के मुल्कों में भेज दीं और क़िराअत (पढ़ने) के इख़्तिलाफ़ की वजह से जो फ़सादात बरपा हो रहे थे और एक-दूसरे की क़िराअत को ख़िलाफ़े हक़ और बातिल समझता था उन सब झगड़ों से दीने इस्लाम को पाक कर दिया। सिर्फ़ एक क़िराअत पर सबको मुत्तफ़िक़ कर दिया। अब अल्हम्दु लिल्लाह जैसी मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत तो ख़स्ता है, उनके अन्दर वह

1. हदीस में 'मुआ़रज़े' का लफ़्ज़ है जिसका मतलब यह हुआ कि कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको सुनाते थे कभी वह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सुनाते थे। (फ़तहुल-बारी)

तब्दीली और कमी-बेशी हुई कि अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त में रखे। कुरआन मजीद के बारे में मुख़ालिफ़ों को भी इक़रार है कि हाँ यह वही किताब है जिसके बारे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अल्लाह का कलाम होने का दावा फ़रमाया था। इसमें किसी क़िस्म की कमी-ज़्यादती उनके बाद नहीं हुई। इसपर अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए।

कुरआन मजीद में आयतों और सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने दी है, मगर अपनी राय और किसी अन्दाज़े से नहीं बल्कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस तरतीब से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक ज़माने में थी उसके ज़रा भी ख़िलाफ़ नहीं किया। सिर्फ़ दो सूरतों की तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अपने क़ियास से दी है। सूरः बराअत और सूरः अन्फ़ाल। तो यह भी यक़ीनन लौहे-महफ़ूज़ के ख़िलाफ़ न होगी, जिसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआ़ला ने ली हो उसमें तरतीब भी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं हो सकती।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशानात वग़ैरह कुछ न थे बल्कि हर्फ़ों पर नुक़्ते भी न दिये गये थे, बल्कि बाज़ सहाबा इसको बुरा समझते थे, वे चाहते थे कि मुस्हफ़ में सिवाय कुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाये। अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल-अस्वद या इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इसमें नुक़्ते बनाये और उसके बाद फिर ख़ुम्स (पाँचवाँ) और उश्र (दसवाँ) लिखे गये और सूरतों और पारों के नाम भी लिख दिये गये। उलमा इन सब चीज़ों के जायज़ होने पर मुत्तफ़िक़ हैं इसलिये कि ये ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिनके कुरआन होने का शुब्हा हो, और उन चीज़ों का लिखना मना है जिनके कुरआन होने का शुब्हा पैदा हो।

कुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसकी तिलावत वग़ैरह का सवाब

कुरआन मजीद की अ़ज़मत, बुज़ुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत और बुलन्दी के लिये इसी क़द्र काफ़ी है कि वह तमाम मख़्लूक़ात के ख़ालिक़ व मालिक का कलाम है, तमाम ऐबों और कमियों से बरी और पाक है, ज़बान और बयान के एतिबार से इसकी बुलन्द और बेमिसाल हैसियत को तमाम अ़रब ने मान ली, बड़े-बड़े फ़साहत व बलाग़त के दावे करने वाले इसके जैसे दो-तीन जुमले भी वर्षों की कोशिशों में भी न बना सके। सरेआ़म ऐलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले ख़िताब से कहा गया कि अगर तुम इसके ख़ुदा का कलाम होने में शक करते हो और इसको इनसानी कलाम समझते हो तो तुम इसकी छोटी से छोटी सूरः के जैसी कोई इबारत बना लाओ और अपने तमाम मददगारों और सहयोगियों को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे, हरगिज़ न बना सकोगे। जिन्नों की क़ौम ने जब इस कलाम को सुना, बेसाख़्ता कह उठे कि "इन्ना समिअ्ना कुरआनन् अ़-जबा, यह्दी इलर्रुश्दि फ़-आमन्ना बिही व लन् नुश्रि-क बि-रब्बिना अ-हदन्" (यानी बेशक हमने एक अ़जीब कुरआन सुना जो नेकी की तरफ़ हिदायत करता है, हम उसपर ईमान लाये और अपने परवर्दिगार का किसी को शरीक हरगिज़ न समझेंगे) ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू इस मुक़द्दस कलाम की तारीफ़ फ़रमाता है फिर हम लोगों की ज़बान व क़लम में क्या ताक़त है कि इसकी ख़ूबियाँ और फ़ज़ाइल का एक मामूली-सा हिस्सा भी

बयान कर सकें।

इसकी तिलावत और पढ़ने-पढ़ाने का सवाब किसी बयान का मोहताज नहीं। तमाम उलमा-ए-उम्मत मुत्तफ़िक़ हैं कि कोई ज़िक्र क़ुरआन मजीद के पढ़ने से ज़्यादा सवाब नहीं रखता। इस बारे में बहुत ज़्यादा हदीसें हैं, नमूने के लिये बरकत के तौर पर चन्द हदीसें नक़ल की जाती हैं।

1. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हक़ तआ़ला फ़रमाता है कि जो कोई क़ुरआन मजीद के पढ़ने में मश्गूल हो और दुआ़ या किसी दूसरे ज़िक्र की उसको फ़ुरसत न मिले, मैं उसको दुआ़ माँगने वालों से भी ज़्यादा दूँगा और कलामुल्लाह की बुज़ुर्गी तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे ख़ुदा की बुज़ुर्गी तमाम मख़्लूक़ पर। (दारमी शरीफ़)

2. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़्यादा महबूब है तमाम आसमानों और ज़मीनों और उन चीज़ों से जो उनमें हैं। (दारमी शरीफ़)

3. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर क़ुरआन मजीद किसी खाल में हो तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। (दारमी शरीफ़)

खाल से मुराद मोमिन का दिल है, कि अगर उसमें क़ुरआन मजीद हो तो वह दोज़ख़ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा।

4. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि तीन क़िस्म के लोगों को क़ियामत में ख़ौफ़ न होगा, न उनसे हिसाब लिया जायेगा, और उन तीन में से क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले को आपने बयान फ़रमाया। (दारमी शरीफ़)

5. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक बार अपने ख़ुतबे में फ़रमाया कि ऐ लोगो! मैं भी एक आदमी हूँ क़रीब है कि मेरे रब की तरफ़ से कोई मुझको बुलाने आये और मैं चला जाऊँ। मैं तुममें दो बहुत क़ीमती और बड़ाई वाली चीज़ें छोड़े जाता हूँ- एक ख़ुदा की मुक़द्दस किताब, इसमें हिदायत व नूर है, पस तुम लोग अल्लाह की किताब को मज़बूत पकड़ लो और उसपर अ़मल करो। (रिवायत करने वाले कहते हैं कि फिर आपने लोगों को इसपर बहुत रग़बत दिलाई)। दूसरे मेरे अहले-बैत हैं, (यानी घर वाले और आल-औलाद), तुमको ख़ुदा का ख़ौफ़ याद दिलाता हूँ अपने अहले-बैत के हुक़ूक़ की रियायत करने में। (दारमी शरीफ़)

6. क़ुरआन मजीद की तिलावत के वक़्त फ़रिश्ते और रहमत नाज़िल होते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि एक रात को वह सूरः ब-क़रः पढ़ रहे थे और उनका घोड़ा क़रीब ही बँधा हुआ था, वह भड़कने लगा। वह चुप हो गये, घोड़े को भी सुकून हो गया। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया, फिर उसकी वही हालत हुई। फिर उन्होंने पढ़ना शुरू किया फिर उसकी वही हालत हुई। तब उन्होंने तिलावत बन्द कर दी, इस ख़्याल से कि उनके साहिबज़ादे यह्या क़रीब ही थे, कहीं घोड़ा ज़्यादा भड़के और वह कुचल न जायें। सुबह को यह वाक़िआ़ हज़रत नबी-ए-करीम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, आपने फ़रमाया, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ, ऐ इब्ने हज़ीर! पढ़े जाओ। तब उन्होंने अपना वह ख़ौफ़ उज़्र में पेश किया और कहा कि तिलावत ख़त्म करने के बाद मैंने सर उठाकर देखा तो बादल का एक टुकड़ा था जिसमें चिराग़

रोशन थे। यहाँ तक कि वह मेरी नज़र से ग़ायब हो गया। हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जानते हो यह क्या चीज़ थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं! आपने फ़रमाया कि ये फ़रिश्ते थे, तुम्हारी क़िराअत की वजह से नज़दीक आ गये थे। अगर तुम पढ़े जाते तो वे फ़रिश्ते तुम्हारे पास आ जाते और सुबह को सब लोग उनको देखते। इसी क़िस्म का वाक़िआ़ कई सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को क़ुरआन मजीद के पढ़ने के वक़्त पेश आया जो सही हदीसों में बयान किया गया है। कई क़िस्से तो बुख़ारी शरीफ़ में हैं।

7. नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हसद की इजाज़त नहीं मगर दो शख़्सों पर- एक वह जो क़ुरआन मजीद पढ़ता हो और वह उसकी तिलावत में रातों को मश्ग़ूल रहता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वह उसको दिन-रात अल्लाह की राह में ख़र्च करता हो। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस में हसद से मुराद रश्क करना है। दोनों में फ़र्क़ यह है कि किसी शख़्स की नेमत के ख़त्म हो जाने की ख़्वाहिश करना हसद है, और उस नेमत की अपने लिये ख़्वाहिश करना बग़ैर इसके कि दूसरे शख़्स से ख़त्म हो, यह रश्क है। रश्क करना मुतलक़न जायज़ है, हसद मुतलक़न नाजायज़। इस हदीस में रश्क करने की इजाज़त सिर्फ़ इन्हीं दोनों चीज़ों में मुन्हसिर (सीमित) करना मक़सूद नहीं बल्कि मतलब यह है कि कोई नेमत इन दोनों नेमतों से बढ़कर नहीं, जिसके हासिल होने की ख़्वाहिश की जाये।

8. हज़रत अबू सालेह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया गया है कि क़ुरआन मजीद अपने पढ़ने वालों की क़ियामत में सिफ़ारिश करेगा। पस उसको बुज़ुर्गी का लिबास पहनाया जायेगा। फिर क़ुरआन मजीद कहेगा कि ऐ अल्लाह! और ज़्यादा इसके ऊपर इनाम फ़रमा, तब उसको बुज़ुर्गी का ताज पहनाया जायेगा। फिर कहेगा ऐ अल्लाह! और ज़्यादा दे, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपनी रज़ामन्दी का परवाना उस शख़्स को अ़ता फ़रमायेगा। (दारमी शरीफ़)

9. जो शख़्स अच्छी तरह क़ुरआन मजीद पढ़े और उसके हलाल को हलाल और हराम को हराम जाने, अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और उसके दस अ़ज़ीज़ों (रिश्तेदारों) के हक़ में जो दोज़ख़ के मुस्तहिक़ होंगे, उसकी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमायेगा। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

10. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद पढ़ने से हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियाँ मिलती हैं। मैं नहीं कहता कि 'अलिफ़, लाम, मीम,' एक हर्फ़ है, बल्कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है, 'लाम' एक हर्फ़ है, 'मीम' एक हर्फ़ है। (दारमी शरीफ़)

मक़सद यह है कि सिर्फ़ 'अलिफ़-लाम-मीम' कहने से तीस नेकियाँ मिलती हैं। अल्लाहु अकबर।

11. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम सबमें बेहतर वह शख़्स है जिसने क़ुरआन मजीद को पढ़ा और पढ़ाया। यह हदीस अबू अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सुनकर क़ुरआन मजीद पढ़ाना शुरू किया। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़िलाफ़त के वक़्त से हज्जाज के ज़माने तक पढ़ाते रहे और फ़रमाते थे कि इसी हदीस ने मुझे इस जगह बिठला दिया हैं कि क़ुरआन पढ़ाने में मश्ग़ूल हूँ। (बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़)

12. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स अपने लड़के को क़ुरआन की तालीम करता है, हक़ तआ़ला उसको क़ियामत में जन्नत का एक ताज पहनायेगा। (तिबरानी)

13. मुआ़ज़ इब्ने अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स अच्छी तरह क़ुरआन पढ़े और उसपर अ़मल करे, क़ियामत के दिन उसके माँ-बाप को एक ताज पहनाया जायेगा जिसकी रोशनी सूरज की रोशनी से कहीं ज़्यादा होगी। फिर क्या कहना उस शख़्स का जिसने पढ़ा और अ़मल किया। (अबू दाऊद)

14. अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि यह क़ुरआन अल्लाह का नेमत-ख़ाना है, इससे लो जिस क़द्र ले सको, मेरे नज़दीक उस घर से ज़्यादा बेबरकत कोई मक़ाम नहीं जिस घर में ख़ुदा की किताब न हो, और बेशक वह दिल जिसमें कुछ भी क़ुरआन न हो एक वीरान घर है जिसमें कोई रहने वाला नहीं। (दारमी शरीफ़)

15. नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद याद करके भूल जाये वह क़ियामत के दिन कोढ़ी होगा। (बुख़ारी शरीफ़) अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

16. ख़ालिद बिन मअ़्दान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े उसको इकहरा सवाब मिलेगा और जो उसको सुने उसको दोहरा सवाब मिलेगा। (दारमी शरीफ़) इसी हदीस से उलमा ने यह बात निकाली है कि क़ुरआन मजीद के सुनने में पढ़ने से भी ज़्यादा सवाब है। (कबीरी)

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी बहुत पसन्दीदा था कि कोई दूसरा शख़्स क़ुरआन मजीद पढ़े और आप सुनें। एक बार अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से इर्शाद हुआ कि तुम पढ़कर मुझको सुनाओ। उन्होंने कहा कि मैं आपको सुनाऊँ? आप ही पर नाज़िल हुआ है। इर्शाद हुआ कि मुझे अच्छा मालूम होता है कि किसी दूसरे से सुनूँ। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सूरः निसा पढ़ना शुरू की यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचेः **"फकै-फ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा"** (1) हुज़ुरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया बस बस। इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि आपकी मुबारक आँखों से आँसू बह रहे थे।

(बुख़ारी शरीफ़, दारमी शरीफ़) (2)

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब कभी हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखते तो फ़रमाते कि ऐ मूसा! हमको अपने परवर्दिगार की याद दिलाओ। वह क़ुरआन पढ़ना शुरू कर देते। (दारमी शरीफ़)

यह अबू मूसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत अच्छी आवाज़ के मालिक थे। क़ुरआन मजीद बहुत अच्छा पढ़ते थे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनके पढ़ने की बहुत तारीफ़ फ़रमाई है।

---

(1) तर्जुमाः क्या हाल होगा उस वक़्त जब हम हर उम्मत के लिये उनमें से एक गवाह निकालेंगे और उन लोगों पर तुमको गवाह बनायेंगे। यह ज़िक्र क़ियामत का है कि उस दिन ख़ुदा तआ़ला हर उम्मत पर उनके पैग़म्बर को गवाह बनायेगा और हम लोगों पर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को।

(2) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम शायद इस सबब से रोये कि इस आयत में आपके गवाह बनाने का ज़िक्र है और आपको अपनी उम्मत के तमाम अच्छे-बुरे हालात बयान करने पड़ेंगे, और उम्मत की बुराई आपको नागवार है। इसके अ़लावा आपकी आ़दत भी थी कि क़ुरआन मजीद के पढ़ने में अक्सर रोया करते थे।

इसी तरह क़ुरआन मजीद की ख़ास-ख़ास सूरतों की फ़ज़ीलतें भी सही हदीसों में बहुत आई हैं। मुख़्तसर तौर पर चन्द हदीसें नक़ल की जाती हैं।

सूरः फ़ातिहा के बारे में हदीसों में आया है कि 'सबूअे-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' यही है। (बुख़ारी शरीफ़) (1) ऐसी सूरः किसी नबी पर नहीं नाज़िल हुई। (मुस्तद्रक)

सूरः ब-क़रः के हक़ में आया है कि जिस घर में यह सूरः पढ़ी जाये वहाँ से शैतान भाग जाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ़) उसको पढ़ो बरकत होगी वरना हसरत होगी। (मुस्लिम शरीफ़) दो तरोताज़ा चीज़ों को पढ़ा करो, सूरः ब-क़रः और सूरः आलि इमरान। ये दोनों क़ियामत में अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेंगी और ख़ुदा तआ़ला से झगड़ा करके उसको बख़्शवायेंगी। **आयतुल-कुर्सी** तमाम क़ुरआनी आयतों की बुज़ुर्ग और सरदार है। (मुस्लिम शरीफ़) सूरः ब-क़रः के आख़िर की दो आयतें जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस घर के क़रीब नहीं जाता। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः अन्आ़म जब उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तस्बीह पढ़ी और फ़रमाया कि इस क़द्र फ़रिश्ते उसके साथ थे कि आसमान के किनारे भर गये। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः कहफ़ जुमा के दिन जो शख़्स पढ़े उसके लिये एक नूर होगा दूसरे जुमा तक। (मुस्तद्रक) उसके लिये नूर होगा क़ियामत के दिन। (हिस्ने हसीन)

सूरः यासीन क़ुरआन मजीद का दिल है। जो कोई शख़्स इसको ख़ुदा के लिये पढ़े वह बख़्श दिया जायेगा, इसको अपने मुर्दों पर पढ़ो। (मुस्तद्रक, हाकिम)

सूरः फ़त्ह मुझको तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। (बुख़ारी शरीफ़)

सूरः मुल्क ने एक शख़्स की सिफ़ारिश की यहाँ तक कि बख़्श दिया गया। (सिहाहे-सित्ता) यह अपने पढ़ने वालों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करती है यहाँ तक कि वह बख़्श दिया जायेगा। (इब्ने हब्बान)

मैं चाहता हूँ कि यह सूरः हर मोमिन के दिल में रहे। (मुस्तद्रक, हाकिम) यह सूरः अपने पढ़ने वाले को क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाती है। जो इसको रात को पढ़ ले उसने बहुत नेकी की और अच्छा काम किया। (मुस्तद्रक)

सूरः ज़िल्ज़ाल आधे क़ुरआन के बराबर सवाब रखती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः काफ़िरून में चौथाई क़ुरआन के बराबर सवाब है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः नस्र का सवाब चौथाई क़ुरआन का सवाब है। (बुख़ारी शरीफ़) एक शख़्स इस सूरः को हर नमाज़ में पढ़ा करते थे, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनसे कह दो कि अल्लाह उनको दोस्त रखता है। (बुख़ारी शरीफ़) उसकी मुहब्बत तुमको जन्नत में दाख़िल करेगी। (बुख़ारी शरीफ़)

एक शख़्स को यह सूरः पढ़ते हुए आपने सुना तो फ़रमाया कि जन्नत ज़रूरी होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

सूरः फ़लक़ और **सूरः नास** अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्तद्रक) इससे बढ़कर कोई

(1) क़ुरआन मजीद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ख़िताब है कि हमने तुमको 'सबूअे-मसानी' और 'क़ुरआने अ़ज़ीम' इनायत फ़रमाया है। उसी को आपने फ़रमा दिया कि सबूअे-मसानी और क़ुरआने अ़ज़ीम से यही सूरः मुराद है।

दुआ या इस्तिग़फ़ार नहीं है। (निसाई शरीफ़) यानी यह बहुत आला दर्जे की दुआ है और इसके पढ़ने से तमाम बलाओं से नजात मिलती है। जब से ये दोनों सूरतें नाज़िल हुईं नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन्हीं को विर्द कर लिया और दूसरी दुआएँ जो जिन्न और हसद वग़ैरह के शर और बुराई से बचने के लिए पढ़ते थे, छोड़ दीं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

क़ुरआन मजीद तमाम जिस्मानी और रूहानी बीमारियों की दवा है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है **"शिफ़ाउंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न, व शिफ़ाउल्-लिमा फ़िस्सुदूरि"**। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई सच्चे दिल से क़ुरआन मजीद पढ़े तो पहाड़ भी हिल जाये। अ़ल्लामा सुयूती इत्क़ान में लिखते हैं कि क़ुरआन मजीद रूहानी तिब (दवा और इलाज) है बशर्ते कि नेक लोगों की ज़बान से अदा हो। अल्लाह के हुक्म से हर बीमारी और रोग की शिफ़ा इससे हासिल होती है, मगर चूँकि नेक लोग कम हैं और हर किसी की ज़बान में असर नहीं होता इसलिये लोगों ने जिस्मानी तिब की तरफ़ रुजू किया।

ख़ास-ख़ास सूरतों के ख़्वास भी सही हदीसों में बहुत आये हैं, सैकड़ों मरीज़ों को इससे शिफ़ा हुई है, हज़ारों बलायें इससे दूर हुई हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में अनेक तरीक़ों से रिवायत किया गया है कि एक शख़्स को साँप ने काट लिया था, कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वहाँ सफ़र की हालत में उतरे हुए थे। उन लोगों ने आकर कहा कि यहाँ के सरदार को साँप ने काट लिया है, आप लोगों में अगर कोई झाड़ते हों तो चलें। उनमें से एक सहाबी चले गये और उन्होंने सूरः फ़ातिहा पढ़कर फूँक दी, वह अच्छा हो गया।

क़श्ती पर सवार होते वक़्त **"बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम"** पढ़ लेने से कश्ती डूबने से महफ़ूज़ रहती है। (इत्क़ान)

"क़ुलिद्उल्ला-ह अविद्उर्-रह्मा-न" आख़िर सूरः तक पढ़ लेने से चोरी से अमान होता है। (इत्क़ान)

रात को जिस बक़्त उठना मन्ज़ूर हो सोते वक़्त सूरः कह्फ़ का आख़िरी हिस्सा पढ़ ले, उस वक़्त ज़रूर आँख खुल जायेगी। इस हदीस के एक रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह मेरा आज़माया हुआ है। (इत्क़ान)

"क़ुलिल्लाहुम्-म मालिकल् मुल्कि तुअ्तिल्-मुल्-क............**बिग़ैरि हिसाब"** तक पढ़ लेना क़र्ज़ की अदायगी के लिये मुफ़ीद है। (इत्क़ान) यह आयत इस नाचीज़ बन्दे की आज़माई हुई है मगर मुझे एक ख़ास तरीक़ा इसके पढ़ने का बतलाया गया है, वह यह कि नमाज़ के बाद शुरू व आख़िर में तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर सात बार यह आयत पढ़े। वाक़ई बहुत जल्द अपना असर दिखाती है। चालीस दिन भी नहीं गुज़रने पाते कि असर ज़ाहिर होने लगता है।

"रब्बि हब्-ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-बतन्" जिस औरत के लड़का न होता हो, चालीस दिन तक पढ़ने से कामयाब हो जाती है, यह भी मेरे सामने कई मर्तबा आज़माई गई है।

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल और उसके पढ़ने-पढ़ाने का सवाब मुख़्तसर तौर पर बयान हो चुका। ग़ालिबन इस क़द्र सवाब व फ़ज़ीलत मालूम करने के बाद फिर कोई मुसलमान जुर्रत नहीं कर सकता कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और इसके पढ़ने-पढ़ाने से ग़फ़लत करे।

ऐ अल्लाह! ऐ अ़र्श व कुर्सी के मालिक! ऐ तौरात, ज़बूर, इन्जील और क़ुरआन को नाज़िल करने वाले! ऐ क़ुरआन को तमाम किताबों पर फ़ज़ीलत देने वाले, ऐ नेमत देने वाले! अपने फ़ज़्ल व करम, अपनी रहमते कामिला और करम के सदक़े में हम सब मुसलमानों को इस अपनी मुक़द्दस किताब से फ़ैज़याब फ़रमा। इसकी तिलावत की हमें तौफ़ीक़ दे, हमारे आमाल व अफ़आ़ल को इसके मुवाफ़िक़ कर, क़ियामत के दिन जब हमारे बुरे आमाल हमें दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बना दें तो क़ुरआन मजीद को हमारा सिफ़ारिशी कर और क़ुरआन पढ़ने वालों के सदक़े में हमें बख़्श दे, आमीन। कितना ख़ुशनसीब है वह शख़्स जिसको हर दिन क़ुरआन मजीद की ज़ियारत और तिलावत नसीब होती हो। सो उस नेक बन्दे पर फ़िदा होना पसन्दीदा जानें जिसका वज़ीफ़ा ऐसी मुक़द्दस किताब हो, बेशक इन्शा-अल्लाह तआ़ला उन लोगों की यह उम्मीद पूरी होगी जिसको अ़ल्लामा शातबी अपने इन शे'रों में ज़ाहिर फ़रमाते हैं:

ल-अ़ल्-ल इलाहल्-अ़र्शि या इख़्वती यक़ी — जमा-अ़-तना कुल्लल्-मकारिहि हुव्वला
व यज्अ़लुना मिम्-मंय्यकूनु किताबुहू — शफ़ीअ़न् लहू इज़् मा नसूहु फ़ियम्हला

तर्जुमाः उम्मीद है कि ऐ भाइयो! अ़र्श व कुर्सी का मालिक हमारी जमाअ़त को तमाम बुराइयों और ख़ौफ़ की चीज़ों से बचा ले, और हमको उन लोगों में शामिल फ़रमाये जिनके लिये उसकी मुक़द्दस किताब क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेगी। इसलिये कि हमने उसकी मुक़द्दस किताब को भुलाया नहीं जो वह नाख़ुश होकर हमसे कुछ बुराई करे। आख़िरी जुमले में उस हदीस की तरफ़ इशारा है जिसका मज़मून यह है कि जो लोग क़ुरआन मजीद से ग़फ़लत करते हैं क़ुरआन मजीद उनको दोज़ख़ में भिजवायेगा। जमाअ़त से मुराद वे लोग हैं जो क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं और उसके उलूम हासिल करते हैं।

यह भी जान लेना चाहिए कि क़ुरआन मजीद की तिलावत का सवाब इसपर मौक़ूफ़ नहीं कि उसके मायने समझकर तिलावत की जाये, जो शख़्स अ़रबी ज़बान न जानता हो, क़ुरआन के मायने न समझ सकता हो उसको भी क़ुरआन मजीद की तिलावत का सवाब मिलेगा और वह भी इस आ़म फ़ैज़ से महरूम न रहेगा, इसलिये कि क़ुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ भी तासीर और फ़ायदे से ख़ाली नहीं हैं। (1) यह दूसरी बात है कि अगर मायने समझकर तिलावत की जाये तो ज़्यादा सवाब मिलेगा।

(1) शैख़ अ़ब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी ने 'शरह स-फ़रुस्-सआ़दत' के दीबाचे में लिखा है कि मैंने इस किताब में दुआ़ व अज़्कार का तर्जुमा नहीं किया इसलिये कि इनके असल अल्फ़ाज़ में ख़ासियत है, मायने मालूम हों या न हों, अगरचे मायने मालूम हो जाने से एक क़िस्म की ख़ुशी और ताज़गी हासिल हो जाती है। पस क़ुरआन मजीद जो तमाम ज़िक्रों से अफ़ज़ल है इसके अल्फ़ाज़ तासीर व फ़ैज़ से कैसे ख़ाली रह सकते हैं?।

क़ुरआन मजीद की तिलावत वग़ैरह के आदाब

जब क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल मालूम हो चुके और उसकी अ़ज़मत दिल में बैठ गई तो यह बात क़ाबिले बयान न रही कि इसकी ताज़ीम व अदब में किस दर्जा कोशिश करनी चाहिये और इसके पढ़ने और सुनने में कैसा अदब और एहतिमाम पेशे नज़र रखना चाहिये। मगर चन्द ज़रूरी और मुफ़ीद बातें हम बयान किये देते हैं।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिये किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं, हाँ इस क़द्र ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद सही पढ़ता हो, अगर इतनी क़ाबलियत अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे या उससे पढ़ ले। (इत्क़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि क़ुरआन मजीद के मायने समझ लेता हो, और अगर क़ुरआन मजीद में ऐराब (यानी ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह) न हों तब भी उसके सही ऐराब पढ़ लेने पर क़ादिर हो। (1)

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत की नेमत सिर्फ़ इनसान को दी गयी है, शयातीन वग़ैरह इसकी तिलावत पर क़ादिर नहीं, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई, वे भी इस आरज़ू में रहते हैं कि कोई इनसान तिलावत करे और वे सुनें। हाँ मोमिनीन जिनको अलबत्ता यह नेमत नसीब है और वे क़ुरआन की तिलावत पर क़ादिर हैं। (इत्क़ान)

शायद इससे हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम अलग हों, इसलिये कि उनके बारे में हदीस में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हज्र अ़स्क़लानी ने फ़तहुल्-बारी में इसका खुलासा किया है कि कभी वह पढ़ते थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सुनते थे और कभी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पढ़ते थे और वह सुनते थे। और अल्लाह ही को ख़ूब इल्म है।

बेहतर यह है कि क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके पाक-साफ़ निहायत अदब से किसी पाकीज़ा जगह पर बैठकर क़ुरआन मजीद पढ़ा जाये, सबसे बेहतर इस काम के लिये मस्जिद है। जो लोग हर वक़्त या अक्सर वक़्त इसकी तिलावत में मश्गूल रहना चाहें उनके लिये हर हाल में क़ुरआन मजीद पढ़ना बेहतर है, लेटे हों या बैठे हों, वुज़ू के साथ हों या बे-वुज़ू हों। हाँ मगर नापाकी की हालत में न पढ़ना चाहिये।

हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कैफ़ियत बयान फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर हाल में तिलावत फ़रमाया करते थे, वुज़ू की हालत में भी, बे-वुज़ू भी, हाँ अलबत्ता नापाकी की हालत में न करते थे।

क़ुरआन मजीद की तिलावत के लिए एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर कर लेना भी दुरुस्त है। अक्सर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़ज्र की नमाज़ के बाद क़ुरआन मजीद पढ़ा करते थे। वक़्त मुक़र्रर कर लेने में नाग़ा भी नहीं होता।

(1) अ़ल्लामा सुयूती वग़ैरह की इबारत से यह मुद्दआ़ बख़ूबी ज़ाहिर है और इस शर्त की कोई वजह भी नहीं मालूम होती। इन सब के अ़लावा अगर यह शर्त लगाई जाए तो तिलावत बिलकुल ही बन्द हो जायेगी। और अल्लाह ही ख़ूब जानते हैं।

सुन्नत यह है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम" पढ़ ले। और अगर पढ़ने के दरमियान में कोई दुनियावी बात करे तो उसके बाद फिर इस अ़मल को दोहरा ले।

क़ुरआन मजीद की तिलावत ज़बानी पढ़ने के मुक़ाबले में मुसह़फ़ में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है इसलिये कि वहाँ दो इबादतें होती हैं- एक तिलावत, दूसरे मुसह़फ़ शरीफ़ की ज़ियारत। (1)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई कलाम करना या और किसी ऐसे काम में मसरूफ़ होना जो दिल को दूसरी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, मक्रूह है। क़ुरआन मजीद पढ़ते वक़्त अपने को पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह कर दे, न यह कि ज़बान से अल्फ़ाज़ जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्यालात।

क़ुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में **'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम'** कह लेना मुस्तहब है मगर सूरः बराअत के शुरू पर बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिये।

बेहतर यह है कि क़ुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से मुसह़फ़ शरीफ़ में लिखी हैं, हाँ बच्चों के लिये आसानी की ग़रज़ से सूरतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारः अ़म्-म य-तसा-अलून में दस्तूर है, बिना किसी कराहत के जायज़ है। (दुर्रे मुख़्तार) और आयतों का तरतीब के ख़िलाफ़ पढ़ना सबके नज़दीक मना है। (इत्क़ान)

क़ुरआन मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों की आयतों को एक साथ मिलाकर पढ़ने को उलमा ने मक्रूह लिखा है, इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु को आपने इससे मना फ़रमाया था। (इत्क़ान वग़ैरह)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत उस वक़्त होगी जब उन आयतों की तिलावत सवाब की ग़रज़ से हो, इसलिये कि झाड़-फूँक के वास्ते मुख़्तलिफ़ आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उनके सहाबा से सही तौर पर नक़ल किया गया है। और हर एक आयत के ख़्वास अलग-अलग हैं, इसलिये जो ख़ास असर हमें मतलूब है वह जिन-जिन आयतों में होगा हमको उनका पढ़ना ज़रूरी है।

क़ुरआन मजीद ख़ूब अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ना चाहिये जिससे जिस क़द्र भी हो सके। सही हदीसों में आया है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ुरआन मजीद अच्छी आवाज़ से न पढ़े वह हममें से नहीं है। (दारमी शरीफ़) मगर जिसकी आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है और क़िराअत (2) के क़ायदों की पाबन्दी से क़ुरआन मजीद पढ़ना चाहिये। और इसपर तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि क़ुरआन मजीद को राग से पढ़ना और उसको गाने की तरह गाना मक्रूहे तहरीमी है।

क़ुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े बहुत तेज़ी से पढ़ना सब उलमा के नज़दीक मक्रूह है। (3)

---

(1) अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इत्क़ान में चन्द मरफ़ूअ़ हदीसें भी इस बारे में नक़ल की हैं। जैसे यह कि मुसहफ़ में बेदेखे तिलावत करने से एक हज़ार दर्जा सवाब मिलता है और देखकर पढ़ने से दो हज़ार दर्जा।

(2) यह (यानी क़िराअत) एक मुस्तक़िल फ़न है जिसमें क़ुरआन मजीद के पढ़ने के क़ायदे बयान किये जाते हैं और उन मुख़्तलिफ़ क़िराअतों का ज़िक्र होता है जिनमें क़ुरआन नाज़िल हुआ। इस फ़न में बहुत-सी किताबें हैं, मगर हक़ यह है कि उस्ताद के बग़ैर नहीं आता।

(3) ऐसी तेज़ी और जल्दबाज़ी कि जिससे अल्फ़ाज़ के समझने में दिक़्क़त हो मक्रूह है। ठहर-ठहर कर पढ़ने में असर भी ज़्यादा होता है, इसीलिये अ़जमी (यानी ग़ैर-अ़रबी) लोग जो क़ुरआन मजीद के मायने नहीं समझे उनको भी ठहर-ठहर कर पढ़ना मुफ़ीद है। (इत्क़ान)

अफ़सोस! हमारे ज़माने में क़ुरआन मजीद की सख़्त बे-अदबी होती है, पढ़ने में ऐसी तेज़ी की जाती है कि सिवाय बाज़-बाज़ अल्फ़ाज़ के और कुछ समझ में नहीं आता। तरावीह में अक्सर हाफ़िज़ों को ऐसा ही देखा गया। खुदा जाने उनपर किसने ज़बरदस्ती की जो ये तरावीह पढ़ने आये, इससे बेहतर होता कि ऐसे हज़रात न पढ़ते, क़ुरआन मजीद की बे-अदबी तो न होती।

जो शख़्स क़ुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उसको क़ुरआन मजीद पढ़ते वक़्त उसके मायनों पर ग़ौर करना और हर मज़मून के मुवाफ़िक़ अपने में उसका असर ज़ाहिर करना मसनून है। जैसे जब कोई ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत माँगे, और अ़ज़ाब का ज़िक्र हो तो उससे पनाह माँगे। कोई जवाब-तलब मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सूरः वत्तीनि के आख़िर में पहुँचते तो **"बला व अ-न अ़ला ज़ालि-क मिनश्शाहिदी-न"** पढ़ लेते। (1) (तिर्मिज़ी शरीफ़)

या सूरः क़ियामह् के आख़िर में जब पहुँचते तो फ़रमाते **"बला"** (तिर्मिज़ी शरीफ़)। सूरः फ़ातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते, लेकिन यह जवाब देना या दुआ़ माँगना उस वक़्त मसनून है कि क़ुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो, अगर फ़र्ज़ नमाज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिये। (रद्दुल्-मुह्तार)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। अगर रोना न आये तो अपनी संगदिली पर रन्ज व अफ़सोस करे।

सूरः वज़्ज़ुहा के बाद से अख़ीर तक हर सूरः के ख़त्म होने के बाद **"अल्लाहु अकबर"** कहना मुस्तहब (अच्छा और पसन्दीदा) है। क़ुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ़ माँगना मुस्तहब है। इसलिये कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि हर ख़त्म के बाद दुआ़ मक़बूल होती है। (इत्क़ान)

क़ुरआन मजीद ख़त्म करते वक़्त **सूरः इख़्लास** को तीन बार पढ़ना मुतअख़्ख़िरीन (बाद के उलमा) के नज़दीक बेहतर है, बशर्ते कि क़ुरआन मजीद नमाज़ से बाहर पढ़ा जाये।

जब एक बार क़ुरआन मजीद ख़त्म कर चुके तो मसनून है कि फ़ौरन दूसरा शुरू कर दे, नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से रिवायत किया गया है कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बहुत ही महबूब है कि जब क़ुरआन एक मर्तबा ख़त्म हो जाये तो दूसरा शुरू कर दिया जाये और दूसरे को सिर्फ़ **"उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून"** तक पहुँचाकर छोड़ दे, उसके बाद दुआ़ वग़ैरह माँगे। इसी तरह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सही हदीसों में रिवायत किया गया है।

जहाँ क़ुरआन मजीद पढ़ा जाता हो वहाँ सब लोगों को चाहिये कि पूरी तरह उसी तरफ़ मुतवज्जह रहें। किसी दूसरे काम में, जो सुनने में हर्ज पैदा करने वाला हो, मश्ग़ूल न हों, इसलिये कि क़ुरआन मजीद का सुनना फ़र्ज़ है। हाँ अगर हाज़िरीन को कोई ज़रूरी काम हो जिसकी वजह से वे उस तरफ़ मुतवज्जह न हो सकें तो पढ़ने वाले को चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ से पढ़े, और अगर ऐसी हालत में बुलन्द आवाज़ से पढ़ेगा तो गुनाह उसी पर होगा।

अगर कोई लड़का क़ुरआन मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो और लोग अपने ज़रूरी कामों में मश्ग़ूल हों तो कुछ हर्ज नहीं, इसलिये कि शरीअ़त में तंगी नहीं है। अगर लड़का आहिस्ता आवाज़ से पढ़े तो आ़दतन् याद नहीं होता। (रद्दुल्-मुह्तार)

(1) हाँ, और हम इसपर गवाह हैं। चूँकि इस सूरः के अख़ीर में हक़ तआ़ला पूछता है कि क्या हम सब हाकिमों के हाकिम नहीं हैं? इसलिये उसके जवाब में यह जुमला अ़र्ज़ किया गया।

सुनने वालों को तमाम उन बातों की रियायत करनी चाहिये जो ऊपर ज़िक्र हुई हैं, सिवाय "**अऊज़ु बिल्लाहि** और **बिस्मिल्लाह** के।

अगर कोई शख़्स अच्छी आवाज़ वाला हो, क़ुरआन अच्छा पढ़ता हो, उससे क़ुरआन मजीद पढ़ने की दरख़्वास्त करना मसनून है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु से क़ुरआन सुनाने की फ़रमाइश की, हज़रत फ़ारूक़े आज़म अबू मूसा अश्अ़री से दरख़्वास्त फ़रमाया करते थे, रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

सज्दा-ए-तिलावत का बयान

सज्दा-ए-तिलावत के वाजिब होने के तीन सबब हैं:

1. सज्दे वाली आयत की तिलावत, चाहे पूरी आयत की तिलावत की जाये या सिर्फ़ उस लफ़्ज़ की जिसमें सज्दा है और उसके साथ पहले या बाद का कोई लफ़्ज़, और चाहे सज्दे की आयत के असल अल्फ़ाज़ के साथ तिलावत की जाये या उसका तर्जुमा किसी और ज़बान में, और चाहे तिलावत करने वाला ख़ुद अपनी तिलावत को सुने या न सुने, जैसे कोई बहरा तिलावत करे। सही यह है कि अगर रुकूअ़ या सज्दे या तशह्हुद (यानी अत्तहिय्यात पढ़ने की हालत) में सज्दे की आयत तिलावत की जाये तब भी सज्दा वाजिब हो जायेगा और उसी हालत में उसकी भी नीयत कर ली जायेगी। (रद्दुल-मुह्तार)

अगर कोई शख़्स सोने की हालत में सज्दा की आयत तिलावत करे उसपर भी इत्तिला मिलने के बाद सज्दा वाजिब है।

2. आयते सज्दा का किसी इनसान से सुनना, चाहे पूरी आयत सुने या सिर्फ़ लफ़्ज़े सज्दा मय एक लफ़्ज़ उसके पहले या उसके बाद के, और चाहे अ़रबी ज़बान में सुने या और किसी ज़बान में, और चाहे सुनने वाला यह जानता हो कि यह तर्जुमा आयते सज्दा का है या न जानता हो, लेकिन न जानने से सज्दा अदा करने में जिस क़द्र ताख़ीर और देरी होगी उसमें वह माज़ूर समझा जायेगा। (फ़तावा आ़लमगीरी)

किसी जानवर से जैसे तोते वग़ैरह से अगर आयते सज्दा सुनी जाये तो सही यह है कि सज्दा वाजिब न होगा, इसी तरह अगर किसी ऐसे मजनूँ से आयते सज्दा सुनी जाये जिसका जुनून यानी पागलपन एक दिन रात से ज़्यादा हो जाये और ख़त्म न हो तो सज्दा वाजिब न होगा।

3. ऐसे शख़्स की इक़्तिदा करना (यानी नमाज़ में उसकी पैरवी करना) जिसने आयते सज्दा की तिलावत की हो कि चाहे उसकी इक़्तिदा से पहले या इक़्तिदा के बाद, और चाहे उसने ऐसी आहिस्ता आवाज से तिलावत की हो कि किसी मुक़्तदी ने न सुना हो या बुलन्द आवाज़ से की हो। अगर कोई शख़्स किसी इमाम से आयते सज्दा सुने उसके बाद उसकी इक़्तिदा करे तो उसको इमाम के साथ सज्दा करना चाहिये और अगर इमाम सज्दा कर चुका हो तो उसमें दो सूरतें हैं- जिस रक्अ़त में इमाम ने आयते सज्दा की तिलावत की हो वही रक्अ़त उसको अगर मिल जाये तो उसको सज्दे की ज़रूरत नहीं, उस रक्अ़त के मिल जाने से समझा जायेगा कि वह सज्दा भी मिल गया। और अगर वह रक्अ़त न मिले तो फिर उसको नमाज़ पूरी करने के बाद

नमाज़ से बाहर सज्दा करना वाजिब है। (बहरुर्-राइक़, रद्दुल-मुह्तार)

मुक़्तदी से अगर सज्दे की आयत सुनी जाये तो सज्दा वाजिब न होगा, न उसपर न इमाम पर, न उन लोगों पर जो उस नमाज़ में शरीक हैं। हाँ जो लोग उस नमाज़ में शरीक नहीं, चाहे वे लोग नमाज़ ही न पढ़ते हों या कोई दूसरी नमाज़ पढ़ रहे हों तो उनपर सज्दा वाजिब होगा। (रद्दुल-मुह्तार)

ये तीन सबब जो सज्दे के वाजिब होने के बयान किये गये इनके सिवा किसी और चीज़ से सज्दा वाजिब नहीं होता, जैसे कोई शख़्स आयते सज्दा लिखे या दिल में पढ़े, ज़बान से न कहे, या एक-एक हर्फ़ करके पूरी पढ़े, पूरी आयत एक दम न पढ़े, या इसी तरह किसी से सुने तो उन सब सूरतों में सज्दा वाजिब न होगा। (रद्दुल-मुह्तार)

(1) सज्दा-ए-तिलावत उन्हीं लोगों पर वाजिब है जिनपर नमाज़ वाजिब है। हैज़ वाली (माहवारी की हालत में होने वाली औ़रत) और निफ़ास वाली (यानी ज़च्चा होने की हालत वाली) औ़रत पर वाजिब नहीं, न उस वक़्त और न बाद में उसकी क़ज़ा की ज़रूरत है। नाबालिग़ पर और ऐसे मजनूँ पर वाजिब नहीं जिसका जुनून एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजनूँ का जुनून एक दिन रात से कम रहे उसपर वाजिब है, इसी तरह मस्त और नापाकी की हालत में होने वाले पर भी।

(2) सज्दा-ए-तिलावत के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं, यानी तहारत (पाकी) और सत्रे औ़रत (यानी वह हिस्सा जिसका छुपाना ज़रूरी है जो मर्द के लिए नाफ़ से घुटनों तक और औ़रत के लिए हाथ, पाँव और चेहरे के अ़लावा पूरा बदन है) और नीयत और क़िब्ला की तरफ़ रुख़ होना। तकबीरे तहरीमा उसमें शर्त नहीं। उसकी नीयत में आयत का मुतैयन करना शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लाँ आयत के सबब से है। और अगर नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी जाये और फ़ौरन सज्दा किया जाये तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल-मुह्तार)

(3) जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है उन चीज़ों से सज्दा-ए-तिलावत में भी फ़साद आ जाता है और फिर उसका लौटाना वाजिब हो जाता है, हाँ इस क़द्र फ़र्क़ है कि नमाज़ में क़ह्क़हा मारकर हँसने से वुज़ू जाता रहता है और इसमें क़ह्क़हा मारने से वुज़ू नहीं जाता, और औ़रत के मुक़ाबिल होने से भी यहाँ कोई ख़राबी नहीं आती।

(4) सज्दा-ए-तिलावत अगर नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि फ़ौरन अदा कर ले और अगर उस वक़्त अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मक्रूहे तन्ज़ीही है। और अगर नमाज़ में वाजिब हुआ हो तो उसका अदा करना फ़ौरन वाजिब है, देर करने की इजाज़त नहीं। (रद्दुल-मुह्तार)

(5) नमाज़ से बाहर वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ में और नमाज़ में वाजिब हुआ सज्दा नमाज़ से बाहर बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। पस अगर कोई शख़्स नमाज़ में आयते सज्दा पढ़े और सज्दा करना भूल जाये तो उसका गुनाह उसके ज़िम्मे होगा जिसकी तदबीर इसके सिवा कोइ नहीं कि तौबा करे, अर्रहमुर्-राहिमीन अपने फ़ज़्ल व करम से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरुर्-राइक़)

नमाज़ का सज्दा नमाज़ से बाहर उस वक़्त अदा नहीं हो सकता जबकि नमाज़ फ़ासिद न हो, अगर

नमाज़ फ़ासिद हो जाये और उसका फ़ासिद करने वाला हैज़ (यानी माहवारी) का आना न हो तो वह सज्दा ख़ारिज में यानी नमाज़ से बाहर अदा कर लिया जाये। और अगर हैज़ की वजह से नमाज़ में फ़साद आया हो तो वह सज्दा माफ़ हो जाता है। (बहरुर्-राइक़, दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह)

(6) अगर कोई शख़्स नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से आयते सज्दा सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो तो यह सज्दा नमाज़ से बाहर का समझा जायेगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा न किया जायेगा बल्कि नमाज़ से बाहर अदा किया जाएगा।

(7) अगर एक आयते सज्दा की तिलावत एक ही मज्लिस में कई बार की जाये तो एक ही सज्दा वाजिब होगा। और एक आयते सज्दा की तिलावत की जाये फिर वही आयत मुख़्तलिफ़ लोगों से सुनी जाये तब भी एक ही सज्दा वाजिब होगा। अगर सुनने वाले की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब होगा चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदल जाये या न बदले। अगर सुनने वाले की मज्लिस बदल जाए तो उसपर भी मज्लिस बदलने के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वाले की मज्लिस बदले या न बदले। और अगर पढ़ने वाले की मजलिस बदल जायेगी तो उसपर भी मज्लिस के एतिबार से अलग-अलग सज्दे वाजिब होंगे। (बहरुर्-राइक़)

(8) अगर एक आयते सज्दा कई मर्तबा एक ही मज्लिस में पढ़ी जाये तो इख़्तियार है कि सबके बाद सज्दा किया जाये या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने से पहले और बाद में की जाने वाली तिलावत के लिये काफ़ी है, मगर एहतियात इसमें है कि सबके बाद किया जाये। (बहरुर्-राइक़)

अगर आयते सज्दा नमाज़ में पढ़ी जाये और फ़ौरन रुकूअ़ किया जाये या दो तीन आयतों के बाद, और रुकूअ़ में झुकते वक़्त सज्दा-ए-तिलावत की भी नीयत कर ली जाये तो सज्दा अदा हो जायेगा। और इसी तरह अगर आयते सज्दा की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाये तब भी यह सज्दा अदा हो जायेगा और उसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल-मुह्तार वग़ैरह)

(9) जुमा और ईदों और आहिस्ता आवाज़ की नमाज़ों में आयते सज्दा न पढ़ना चाहिये, इसलिये कि सज्दा करने में मुक़्तदियों के शुब्हे में पड़ने का ख़ौफ़ है। (बहरुर्-राइक़)

(10) किसी सूरः का पढ़ना और ख़ासकर आयते सज्दा को छोड़ देना मक्रूह है। (बहरुर्-राइक़)

(11) अगर हाज़िरीन वुज़ू के साथ सज्दे के लिये मुस्तैद न बैठे हों तो आयते सज्दा का आहिस्ता आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है, इसलिये कि वे लोग उस वक़्त सज्दा न करेंगे और दूसरे वक़्त शायद भूल जायें तो गुनाहगार होंगे। (दुर्रे मुख़्तार)

सज्दा-ए-तिलावत का तरीक़ा

सज्दा-ए-तिलावत का तरीक़ा यह है कि क़िब्ला-रू होकर नीयत करके **'अल्लाहु अकबर'** कहे और सज्दा करे, फिर उठते वक़्त **'अल्लाहु अकबर'** कहकर उठे और खड़े होकर सज्दा करना मुस्तहब है। सज्दा-ए-तिलावत कई आदमी मिलकर भी कर सकते हैं, इस तरह कि एक शख़्स को इमाम की तरह आगे खड़ा करें और खुद मुक़्तदियों की तरह सफ़ बाँधकर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी करें। यह सूरत हक़ीक़त

में जमाअत की नहीं है, इसी लिये अगर इमाम का सज्दा किसी वजह से फ़ासिद हो जाये तो मुक़्तदियों का सज्दा फ़ासिद न होगा, और इसी सबब से औ़रत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

आयते सज्दा अगर फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में नमाज़ के सज्दे की तरह **'सुब्हा-न रब्बियलु अअ़्ला'** कहना बेहतर है, और नफ़िल नमाज़ों में या नमाज़ से बाहर अगर पढ़ी जाये तो उसके सज्दे में इख़्तियार है कि **'सुब्हा-न रब्बियलु अअ़्ला'** कहें या और तस्बीहें जो हदीसों में आई हैं वे पढ़ें, जैसे यह तस्बीह **"स-ज-द वज्ही लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व सव्व-रहू व शक़्-क़ सम्अ़हू व ब-स-रहू बिहौलिही व क़ुव्वतिही फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन"** और दोनों को जमा कर लें तो और भी बेहतर है।

उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख़्स सज्दे की तमाम आयतों को एक ही मज्लिस में तिलावत करे तो हक़ तआ़ला उसकी मुश्किल को दूर फ़रमाता है। और ऐसी हालत में इख़्तियार है कि सब आयतें एक दफ़ा पढ़ ले और उसके बाद चौदह सज्दे करे, या हर आयत को पढ़कर उसका सज्दा करता जाये। (रद्दुल-मुह्तार)

रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़्यादा। औ़र उस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़ल है। क़ुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में है इसी लिये आ़लिमों ने इसके ठहरने न ठहरने की निशानियाँ मुक़र्रर कर दी हैं, जिनको **"रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद"** कहते हैं। ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ का पूरा ख़्याल रखें। रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद की तायदाद तक़रीबन पन्द्रह है, लेकिन चूँकि हमने उनमें से सिर्फ़ दो चीज़ों की निशानियाँ मुक़र्रर की हैं इसलिए उन्हीं का बयान किया जाता है।

वक़्फ़े लाज़िमः वक़्फ़े लाज़िम का एक निशान है उसपर ज़रूर ठहरना चाहिये, अगर न ठहरा जाये तो अन्देशा है कि मतलब कुछ-का-कुछ हो जाये। इसकी मिसाल हिन्दी में यूँ समझनी चाहिये कि जैसे किसी को यह कहना हो कि: **उठो, मत बैठो**। जिसमें उठने का हुक्म और बैठने की मनाही है। तो **'उठो'** पर ठहरना लाज़िम और ज़रूरी है, अगर ठहरा न जाये तो **'उठो मत बैठो'** हो जायेगा। जिसमें उठने की मनाही और बैठने के हुक्म का एहतिमाल और अन्देशा है। यानी सामने वाला इससे यह भी समझ सकता है कि उठने की मनाही की जा रही है। और अगर ऐसा हो जाए तो यह कहने वाले के मतलब और मन्शा के ख़िलाफ़ हो जायेगा। अ़रबी में इसकी निशानी (م) यह हर्फ़ है, हमने पढ़ने वालों की सहूलत के लिए अ़रबी के हिन्दी मतन में (⁘) यह निशानी मुक़र्रर की है।

निशान सज्दाः क़ुरआन पाक में चौदह स्थान ऐसे हैं जहाँ सज्दा करने का हुक्म है और वहाँ सज्दा करना लाज़िमी है। सज्दा से मुताल्लिक़ मसाइल और उसका तरीक़ा हमने इस मुक़द्दिमा के पृष्ठ **19-22** पर बयान किया है वहाँ तफ़सील देख लें। इसी तरह सज्दों के स्थानों की एक सूचि पृष्ठ **24** पर दी गयी है। हमने सज्दा के स्थान को बताने के लिए यह निशान (❑ सज्दा) मुक़र्रर किया है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

आयत नम्बरः जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ (अ़रबी मतन में) एक गोल दायरा बना देते हैं। यह पूरी तरह ठहरने की अ़लामत (निशानी) है। इसको आयत कहते हैं। हमने पढ़ने वालों की आसानी और सहूलत के लिए ब्रेकेट के अन्दर आयत का नम्बर लिख दिया है। इसपर ठहरना चाहिये।

निशान रुकूअ़ः यह (❖) रुकूअ़ का निशान है। अगर हाशिए पर ऐसा निशान लगा है तो इसका मतलब है कि रुकूअ़ का निशान है। इसमें जो संख्याओं की तरतीब है वह क़ुरआन पाक में जो रुकूअ़ के निशान लगे हैं उन्हीं के मुताबिक़ है। जैसे (❖ रु. 12/3/10) इस तरह लिखा है तो इसका मतलब है कि वह उस सूरः का बारहवाँ रुकूअ़ है और उसके अन्दर तीन आयतें हैं और वह उस पारः का दसवाँ रुकूअ़ है।

निशान रुबूअ़ः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। उनमें से पहले हिस्से को रुबूअ़ 1/4 यानी चौथाई कहते हैं। उसके लिए हमने यह निशान (◆ रुबूअ़ 1/4) मुक़र्रर किया है।

निशान निस्फ़ः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ आधा पारः हो जाता है उसको निस्फ़ कहते हैं। आधे की निशानी के लिए हमने यह निशान (● निस्फ़ 1/2) मुक़र्रर किया है।

निशान सलासहः हर पारः को उलमा ने चार हिस्सों में बाँट दिया है। जहाँ पारः का तीन चौथाई हिस्सा मुकम्मल हो गया है वहाँ हमने यह निशान (▲ सलासः 3/4) मुक़र्रर किया है।

निशान आधा क़ुरआनः हर्फ़ों की तायदाद के एतिबार से जहाँ क़ुरआन आधा हुआ है वहाँ हमने अ़रबी मतन में यह (✪) निशान लगाया है। इसको पारः 15 में सूरः कह्फ़ की आयत 19 में देखा जा सकता है।

क़ुरआन मजीद की मन्ज़िलें

क्रम. सं.	सूरः	सूरः सं.	पृष्ठ सं.	पारः सं.	नाम पारः
1	फ़ातिहः	1	1- 190		अलिफ़-लाम्-मीम्
2	मा-इदः	5	192- 371	6	ला युहिब्बुल्लाहु
3	यूनुस	10	373- 507	11	यअ्तज़िरू-न
4	बनी इस्राईल	17	509- 659	15	सुब्हानल्लज़ी
5	शु-अ़रा-इ	26	661- 801	19	व क़ालल्लज़ी-न
6	वस्साफ़्फ़ात	37	803- 931	23	व मा लि-य
7	क़ाफ़	50	933- 1111	26	हा-मीम

कुरआन मजीद में सज्दा-ए-तिलावत के स्थान

क्रम. सं.	पारः	सूरः	सज्दे वाले शब्द	सज्दे का स्थान	पृष्ठ सं.	आयत सं.
1	9	सूरः आराफ़	यस्जुदून	यस्जुदून	317	206
2	13	सूरः रअ़द	व लिल्लाहि यस्जुदु	वल्-आसाल	451	15
3	14	सूरः नह्ल	व लिल्लाहि यस्जुदु	मा युअ्मरून	491	49-50
4	15	सूरः बनी इस्राईल	यख़िर्रू-न लिल् अज़्क़ानि सुज्ज-दन्	ख़ुशूआ़	529	107-109
5	16	सूरः मरियम	ख़र्रू सुज्जदन्	व बुकिय्या	557	58
6	17	सूरः हज	यस्जुदु लहू	मा यशा-उ	603	18
7	17	सूरः हज[1]	वस्जुदू	तुफ़्लिहून	615	77
8	19	सूरः फ़ुरक़ान	उस्जुदू	नुफ़ूरा	651	60
9	19	सूरः नमूल	अल्ला यस्जुदू	रब्बिल्-अ़र्शिल् अ़ज़ीम	683	25-26
10	21	सूरः सज्दा	ख़र्रू सुज्जदन्	ला यस्तक्बिरून	751	15
11	23	सूरः सॉद[2]	व ख़र्-र राकिअ़न्	व अनाब	819	24
12	24	सूरः हा-मीम सज्दा	वस्जुदू लिल्लाहि	ला यस्अमून	865	37-38
13	27	सूरः नज्म	फ़स्जुदू	वअ्बुदू	951	62
14	30	सूरः इन्शिक़ाक़	ला यस्जुदून	ला यस्जुदून	1083	21
15	30	सूरः अ़लक़	वस्जुद्	वक़्तरिब्	1099	19

1. 2. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूरः **22** आयत **77** पर इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़दीक नहीं है। और सूरः **38** आयत **24** पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नहीं है। बहरहाल दोनों इमामों के नज़दीक सज्दों की कुल तायदाद **14** ही है।

क़ुरआन मजीद को कितने समय में ख़त्म किया जाए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने तीन दिन से कम में कुरआन मजीद ख़त्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफ़ा से नक़ल किया गया है कि जिसने हर साल में दो बार कुरआन मजीद ख़त्म किया उसने हक़ अदा किया। इसलिये कि हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात (इन्तिक़ाल) के साल में दो ही बार कुरआन ख़त्म किया था। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस इबादत में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो, औ न उस क़िराअत (पढ़ने) में जिसमें फ़िक्र (सोच-समझ) न हो। इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अपने आपको कुरआन मजीद के ख़त्म करने की गिनती पर हावी न करो, बल्कि एक आयत का सोचकर पढ़ना सारी रात में दो कुरआन ख़त्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमारे साथ खड़े हुए तो आप यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे:

"इन तुअ़ज़्ज़िब्हुम फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क"

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे पाँच दिन से कम समय में पूरा कुरआन मजीद ख़त्म करने की इजाज़त नहीं दी।

ज़रूरी तंबीह

कुरआन मजीद के मतन को अ़रबी के अ़लावा हिन्दी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलख़त (लिपि) में रुपान्तर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख़्याल है कि इस तरह करने से कुरआन मजीद के हर्फ़ों की तहरीफ़ (कमी-बेशी) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इन्जील और तौरात तहरीफ का शिकार हो गईं वैसे ही खुदा न करे इसका भी वही हाल हो, जबकि यह नामुम्किन है। करोड़ों हाफ़िज़ों को कुरआन मजीद ज़बानी याद है।

इस सिलसिले में नाचीज़ **मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी** (इस कुरआन का हिन्दी अनुवादक) अ़र्ज़ करता है कि हक़ीक़त यह है कि अ़रबी रस्मुलख़त के अ़लावा दूसरी भाषा में कुरआन मजीद को क़तई तौर पर सौ फ़ीसद सही नहीं पढ़ा जा सकता। इसलिए कि हर्फ़ों की बनावट के एतिबार से भी किसी दूसरी भाषा में यह गुन्जाइश नहीं कि वह अ़रबी ज़बान के तमाम हुरूफ़ का मुतबादिल (विकल्प) पेश कर सके। फिर अगर किसी तरह कोई निशानी मुक़र्रर करके इस कमी को पूरा करने की कोशिश भी की जाए तो **'मख़ारिजे हुरूफ़'** यानी हुरूफ़ के निकालने का जो तरीक़ा और इल्म है वह उस वैकल्पिक तरीक़े से हासिल नहीं किया जा सकता। जबकि यह सबको मालूम है कि सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के निकालने में फ़र्क़ होने से अ़रबी ज़बान में मायने बदल जाते हैं। मैं यहाँ सिर्फ़ तीन मिसालें बयान करके अपनी बात की ताईद पेश करूँगा:

(1) कुरआन पाक में एक लफ़्ज़ जगह-जगह आता है **"अलीम"**। इस लफ़्ज़ में अगर **"अ"** को हलक़ के अगले हिस्से से निकाला जाए तो इसके मायने होंगे **"तकलीफ़ देने वाला"** जैसे **'अ़ज़ाबुन् अलीम'** यानी

तकलीफ़ देने वाला अ़ज़ाब। और अगर इस लफ़्ज़ को हलक़ के दरमियानी हिस्से से निकाला जाए यानी **"अ़"** तो अब **"अ़लीम"** के मायने होंगे **"जानने वाला"**।

(2) क़ुरआन पाक में **"अ़सा"** का लफ़्ज़ आया है। यह दो तरह लिखा है- एक **"अ़ैन, सीन और या"** के साथ। **"सीन"** को ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारे से निकाला जाता है तो उस सूरत में इसके मायने होंगे **"उम्मीद है, शायद"**। और दूसरे **"अ़ैन, सॉद और या"** के साथ, **"सॉद"** को ज़बान की नोक और अगले दाँतों के बीच से निकाला जाता है। अब **"अ़सा"** के मायने होंगे **"नाफ़रमानी की, ग़लती की"**।

(3) तीसरी मिसाल यह है कि क़ुरआन पाक में **"मुन्-ज़रून"** का लफ़्ज़ भी कई जगह आया है। यह भी दो तरह लिखा जाता है- एक **"मीम, नून, ज़ाल, रा और नून"** से, और दूसरे **"मीम, नून, ज़ोए, रा और नून"** के साथ, यानी दोनों में एक हर्फ़ का फ़र्क़ है, एक तरफ़ **"ज़ाल"** है और दूसरी तरफ़ **"ज़ोए"** है। यह फ़र्क़ भी और इस लफ़्ज़ के निकालने और अदा करने का तरीक़ा भी **किराअत** का इल्म पढ़े और सीखे बग़ैर नहीं आ सकता। **"ज़ाल"** ज़बान की नोक और दाँतों के अगले किनारों से अदा किया जाता है। और **"ज़ोए"** को भी इसी स्थान से निकाला जाता है मगर जो माहिर हैं वह इसको अलग अन्दाज़ से अदा करने की मश्क़ कराते हैं। अब जिस लफ़्ज़ में **"ज़ाल"** है, उसके मायने हैं **"जिन लोगों को डराया गया हो"** और जिस लफ़्ज़ में **"ज़ोए"** है उसके मायने हैं **"जिसको मोहलत दी गयी हो, जिसको छोड़ दिया गया हो"**।

इन मिसालों के बाद यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि जब तक अ़रबी के हुरूफ़ की सही पहचान और उनकी अदायगी का सही तरीक़ा नहीं सीखा जाएगा उस वक़्त तक क़ुरआन पाक की सही तिलावत मुम्किन नहीं। और यह सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरआन मजीद को अ़रबी ज़बान के अन्दर सीखने से आ सकता है, किसी दूसरी ज़बान के ज़रीए इसको सीख पाना तैराकी का फ़न पानी से बाहर सीखने वाली बात होगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि हमने यह सब जानते हुए अ़रबी मतन को हिन्दी में तब्दील करने की कोशिश क्यों की? सो इसका एक जवाब तो यह है कि आपके अन्दर इस चीज़ का शौक़ पैदा करने के लिए कि आप इस अ़ज़ीम दौलत को हासिल करने की कोशिश करें और आपको इस तरफ़ तवज्जोह हो। दूसरी बात यह है कि अ़रबी ज़बान में एक मिठास है और फिर क़ुरआन तो तमाम जहानों के ख़ालिक़ व मालिक का कलाम है इसके अन्दर तो एक क़ुदरती कशिश भी है जो अपनी तरफ़ खींचे बग़ैर नहीं रहती, इसलिए हो सकता है किसी अल्लाह के बन्दे के क़ुरआन सीखने का यही ज़रिया बन जाए।

अगर आप मेरी इस बात से इत्तिफ़ाक़ न करें कि क़ुरआन पाक को अ़रबी के अ़लावा सही नहीं पढ़ा जा सकता तो मैं आपको इसकी आज़माइश का भी एक तरीक़ा बतलाता हूँ। वह यह कि आप हिन्दी या किसी और ज़बान में मतन तब्दील शुदा क़ुरआन खोलकर बैठें और किसी अच्छे क़ारी के पढ़े हुए क़ुरआन की कैसिट लें और उसी जगह से उसको चलाएँ जहाँ आप क़ुरआन पाक में कोई मक़ाम खोले बैठे हैं, फिर जो आवाज़ उस रिकार्ड से निकलती जाए उसको अल्फ़ाज़ पर फिट करते जाएँ और देखें कि क्या मैं इस लिखी हुई इबारत को इस तरह अदा कर सकता हूँ? और जो हुरूफ़ ज़बान से निकल रहे हैं क्या मैं उनके इस तरह निकालने पर क़ादिर हूँ? देखने में तो **"स"** एक हर्फ़ है मगर अ़रबी के तीन हर्फ़ों की नुमायन्दगी करता है।

बहरहाल इस अ़र्ज़ करने का मक़सद यह है कि आप सिर्फ़ इस भरोसे पर न बैठ जाएँ कि हम अ़रबी के अ़लावा दूसरी भाषाओं में जो क़ुरआन पाक पढ़ते हैं वह सही तौर पर अदा हो जाता है, बल्कि डर है कि किसी जगह ऐसा न हो जाए कि मायने ही बदल जाएँ और बजाय सवाब के गुनाह के हक़दार बन जाएँ। अल्लाह तआ़ला इस से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमें क़ुरआन को हासिल करने और उसको पढ़ने और उसपर अ़मल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए, आमीन।

क़ुरआन मजीद की सूरतों की ख़ासियतें और असरात

अगर कोई यह अ़क़ीदा रखे कि क़ुरआन अ़मलियात और तावीज़ों के लिये नाज़िल हुआ है तो यह जहालत और बड़ा गुनाह है। क्योंकि क़ुरआन हक़ीक़त में ख़ुदा के हुक़ूक़ जो लोगों पर हैं और साथ ही लोगों के जो आपस में एक-दूसरे पर हुक़ूक़ हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो परिणाम दुनिया में और मरने के बाद सामने आयेंगे उन सबके बयान के लिये ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। मगर इसके साथ ही बहुत-सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, सहाबा-ए-किराम और बुज़ुर्गाने दीन अ़मलियात के तौर पर मुसीबतों के दूर करने के लिये भी पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी, मगर जो शख़्स किसी मतलब के लिये कोई अ़मल पढ़ता हो और असबाब की दुनिया के तक़ाज़े के मुताबिक़ ज़ाहिरी कोशिश न करता हो तो वह यक़ीनन नाकाम होगा, क्योंकि उसकी मिसाल एक ऐसे बीमार के जैसी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो, बल्कि अ़मल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अ़मल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। अब आगे हम सूरतों के ख़्वास (ख़ासियतें और असरात) लिखते हैं जो रसूले करीम की हदीसों, सहाबा-ए-किराम के आसार और नक़्शबन्दी, चिश्तिया, क़ादिरिया और सहरूवरदिया ख़ानदान के बुज़ुर्गों के तजुर्बों के मुताबिक़ हैं, और उन सब बुज़ुर्गाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़मून को जिस काम से मुनासबत पाई जाये तो वह आयत उस काम के लिये अ़मल के तौर पर पढ़ी जा सकती है। जैसे क़ुरआन में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ़ की "क़ा-ल रब्बिश्रह् ली सद्री व यस्सिर् ली अम्री, वह्लुल् उक़्द-तम् मिल्लिसानी, यफ़्क़हू क़ौली"

तर्जुमाः मूसा अ़लैहिस्सलाम ने (फ़िरऔ़न को हिदायत की तरफ़ बुलाने के लिए जाते वक़्त) कहा ऐ ख़ुदा! मेरे सीने को खोल और मेरे काम को मेरे लिये आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वे लोग मेरी बात को समझें।

इस आयत को हर शख़्स मुश्किल कामों की आसानी के लिये पढ़ सकता है और इस मतलब के लिये पढ़ सकता है कि उसकी ज़बान में तासीर हो ताकि दूसरे लोग उसकी बात और फ़ैसले को मान लें। और अपने ज़ेहन व अ़क़्ल के बढ़ने के लिये पढ़ सकता है। और तथा सूरः नूह में जहाँ हज़रत नूह ने कुफ़्फ़ार की तबाही के लिये दुआ़ की है कि ऐ ख़ुदा! किसी काफ़िर को ज़मीन पर ज़िन्दा न छोड़, इन आयतों को दुश्मन की तबाही के लिये पढ़ सकता है।

क़ुरआन के अ़मल के मामले में वक़्त का निश्चित करना और पढ़ने की तायदाद की क़ैद नहीं है, बल्कि

हर शख़्स को चाहिये कि वह ख़ुद इशा, या सुबह की नमाज़ के बाद, या कोई और वक़्त मुक़र्रर करके, और पढ़ने की तायदाद भी अपनी तरफ़ से क़ायम करके पढ़ा करे, अव्वल व आख़िर में दुरूद हो और हर चीज़ को पाक रखे। मगर यह बात तजुर्बों से साबित हुई है कि अगर कोई शख़्स क़ुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिये अ़मल के तौर पर इस्तेमाल में लाये तो वह सरसब्ज़ नहीं होता और पागल हो जाता है।

सूरः फ़ातिहः की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी शख़्स पर कोई मुसीबत पड़ती देखते तो आप सूरः फ़ातिहः पढ़ने का हुक्म करते। और जो शख़्स फ़ज्र की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान बिस्मिल्लाह के साथ चालीस (40) बार पढ़कर किसी बीमार के मुँह पर दम करे तो अल्लाह तआ़ला इस सूरः की बरकत से उसको मुकम्मल सेहत अ़ता फ़रमायेगा। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्फ़ाति-हतु शिफ़ाउ कुल्लि दाइन्" यानी सूरः फ़ातिहः हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। चुनाँचे एक शख़्स बीमार हुआ तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सूरः फ़ातिहः को पढ़कर उसके मुँह पर दम किया, उसको बिलकुल आराम हो गया।

सूरः ब-क़रः की ख़ासियतें:- हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि यह सूरः जिस घर में पढ़ी जाती है उस घर में शैतान दाख़िला नहीं पाता। और एक हदीस में फ़रमाया कि सूरः ब-क़रः को पढ़ो कि उसमें ख़ैर व बरकत है।

सूरः आलि इमरान की ख़ासियतें:- इस सूरः शरीफ़ का विर्द रखने वाला क़र्ज़ के बोझ से छुटकारा पायेगा। और जो शख़्स सात मर्तबा पढ़े तो तमाम क़र्ज़ा दूर हो जाये और उसको मालूम न हो कि उसके लिये रिज़्क़ किस जगह से आता है।

सूरः निसा की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स हर दिन सात मर्तबा इस सूरः शरीफ़ का विर्द करे तो बीवी को उससे मुहब्बत ज़्यादा हो। और अगर बीवी पढ़े तो मर्द ज़्यादा मुवाफ़क़त करे।

सूरः मा-इदः की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स क़हत-साली (अकाल) के दिनों में सूरः मा-इदः को पढ़े तो वह शख़्स क़हत से महफ़ूज़ रहे।

सूरः अन्आ़म की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को एक मर्तबा पढ़े तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करते हैं और हर क़िस्म की ज़रूरतों और हाजतों में पढ़ने से मुश्किलात में आसानी होती है, और जो मुश्किल होती है वह हल हो जाती है।

सूरः आराफ़ की ख़ासियतें:- जो शख़्स सूरः आराफ़ को पढ़े तो क़ियामत के दिन उसका हाथ जनाब आदम अ़लैहिस्सलाम के हाथ में होगा। और अगर किसी बादशाह का ख़ौफ़ दिल पर तारी हो या किसी ज़ालिम बादशाह से वास्ता पड़े तो तीन बार पढ़े, ज़ालिम अपने ज़ुल्म से बाज़ आयेगा और मेहरबानी से पेश आयेगा।

सूरः अन्फ़ाल की ख़ासियतें:- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ के पढ़ने पर पाबन्दी रखेगा तो क़ियामत के दिन मैं गवाही दूँगा कि यह शख़्स निफ़ाक़ से बेज़ार है। और अगर कोई शख़्स क़ैद में मुब्तला हो तो वह इस सूरः को पढ़ा करे। अगर वह बेक़ुसूर है तो अल्लाह तआ़ला इसकी बरकत से उसको नजात देगा। अगर ख़ुद न पढ़ सके तो कोई रिश्तेदार पढ़ लिया करे। और

हाकिम उसपर मेहरबान होगा।

सूरः तौबा की ख़ासियतें:- इस सूरः का हर दिन एक बार पढ़ना ईमान की सलामती का सबब होता है। चुनाँचे बुज़ुर्गाने दीन इसकी तिलावत से ऐसे-ऐसे फ़ायदे उठाते रहे हैं कि ज़ाहिरी आँखें उनको नामुम्किन ख़्याल करती हैं। किसी हाकिम के सामने पढ़कर जाये तो वह मेहरबान हो जाता है। और अगर कोई ख़ता हो तो उसकी बख़्शिश हो जाती है।

सूरः यूनुस की ख़ासियतें:- इस सूरः का जो हमेशा विर्द रखे उसपर जान निकलने की सख़्ती और क़ब्र का अज़ाब न होगा। और जो शख़्स इक्कीस (21) मर्तबा पढ़े वह दुश्मनों पर ग़ल्बा और फ़त्ह पाएगा। और अगर कोई सख़्ती या मुसीबत पेश आए तो तेरह (13) बार पढ़ें, वह सख़्ती और मुसीबत दूर हो जाती है। इन्शा-अल्लाह।

सूरः यूसुफ़ की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स अपने ओहदे (पद) से हटा दिया गया हो तो वह इसकी तिलावत की पाबन्दी इख़्तियार करे, इस सूरः की बरकत से बहाल हो जायेगा। और अगर किसी हाकिम से कोई हाजत हो तो तेरह (13) बार पढ़कर उसके पास जाये अपने मक़सद में ज़रूर कामयाब होगा।

सूरः कह्फ़ की ख़ासियतें:- जो शख़्स क़र्ज़ में मुब्तला हो, जुमा की नमाज़ के बाद सूरः कह्फ़ सात बार पाढ़े और अल्लाह के सामने रो-रोकर दुआयें करे, उसका क़र्ज़ा उतर जायेगा और वह हैरान हो जायेगा। और जो कोई इसको जुमा की रात में पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उसको ऐसा नूर अता करेगा कि जिसकी रोशनी बैतुल्लाह शरीफ़ तक पहुँचे और उसके गुनाह माफ़ किये जायेंगे। और इस सूरः को पाबन्दी के साथ पढ़ने वाला ताऊन, सफ़ेद कोढ़, ख़ून ख़राब होने की बीमारी और दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रहेगा। और उसकी शुरू की दस आयतों के पढ़ने की सख़्त ताकीद है। और ज़बान बन्दी, बलाओं और मुसीबतों से हिफ़ाज़त रिज़्क़ में बढ़ोतरी व बरकत के लिए रोज़ाना सुबह को पढ़ें।

सूरः मरियम की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़गार और काम-धन्धे की कमी के सबब परेशान हो तो सूरः मरियम को सात बार पढ़कर दुआ करे। और अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो तीन बार पढ़े।

सूरः तॉ-हा की ख़ासियतें:- इसके आमिल पर जादू या सेहर कोई असर नहीं करता और रिज़्क़ की फ़राग़त होती है।

सूरः अम्बिया की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स परेशान हाल हो और अक्सर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की परेशानियों में घिरा रहता हो तो रोज़ाना तीन बार सूरः अम्बिया को पढ़े, अल्लाह तआला उसके तमाम ग़म और परेशानियों को दूर कर देगा। जो सूरः अम्बिया पढ़ेगा क़ियामत के दिन उसका हिसाब न होगा।

सूरः सबा की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को दस बार पढ़ेगा तो वह आफ़तों और बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा। और फ़रमाया हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जो आदमी इस सूरः को पढ़ता रहे वह ख़ुशनसीब है क्योंकि क़ियामत के दिन कोई ऐसा नबी न होगा जो उसके साथ मुसाफ़ा न करे।

सूरः यासीन की ख़ासियतें:- इस सूरः की ख़ासियतें और असरात इस क़द्र हैं कि क़लम उनको लिखने की ताक़त नहीं रखता, क्योंकि यह क़ुरआन का दिल है। चुनाँचे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फ़रमाया कि हर चीज़ का दिल होता है और क़ुरआन मजीद का दिल सूरः यासीन है। और जो शख़्स इसको किसी हाजत के लिये एक बार पढ़े तो उसकी हाजत पूरी हो। और अगर बाँझ औ़रत को किसी चीनी के बरतन पर लिखकर और अर्क़े गुलाब से धोकर पिलाते रहें तो उसके नरीना औलाद हो। और मोहताज पढ़े तो मालदार हो जाये। और अगर किसी ऐसे शख़्स पर पढ़ी जाए जिसपर जादू का असर हो तो वह सेहर और जादू दूर हो जाये। अगर किसी ऐसे शख़्स पर पढ़कर दम की जाए जिसपर कोई जिन्न भूत वग़ैरह का असर हो तो वह असर भाग जाए। अगर कोई शख़्स रात को नीयत के ख़ुलूस के साथ पढ़े तो वह जन्नती है और दीन व दुनिया की तमाम मुश्किलें उसपर आसान हो जाती हैं। और हर मुहिम और हर मतलब के लिये इसका पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। और अगर किसी शख़्स की जान अटक जाये तो उसपर इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दम करें, उसकी रूह फ़ौरन निकल जाये। और अगर बीमार पर पढ़कर फूँकें तो वह सेहत पाये।

सूरः सॉद की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः को बुरी नज़र के दूर करने के लिये सात बार पढ़कर दम करें तो नज़रे-बद दूर होगी।

सूरः ज़ुमर की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सात बार इस सूरः को पढ़े तो इज़्ज़त और रुतबे का मालिक हो, और उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी और रुतबे में बुलन्दी हो और हमेशा राहत रहे।

सूरः मुहम्मद की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़े या लिखकर गुलाब से धोकर पिये तो वह रुतबे व पद में बुलन्द हो। और अगर लिखकर गले में डाले तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। अगर सख़्त मुहिम दरपेश हो तो शुरू और आख़िर में ग्यारह (11) बार दुरूद शरीफ़ को पढ़े, इन्शा-अल्लाह नजात हासिल हो और उस मुहिम पर ग़ालिब आये।

सूरः फ़त्ह की ख़ासियतें:- जो शख़्स सूरः फ़त्ह को इक्तालीस (41) बार पढ़े तो दुश्मनों पर फ़त्ह पाये। और अगर रमज़ान का चाँद देखकर खड़े-खड़े तीन बार पढ़े तो तमाम साल अमन में रहे। जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः शरीफ़ को पढ़ता है गोया कि वह मेरे साथ जिहाद में शामिल है।

सूरः क़ाफ़ की ख़ासियतें:- अगर इस सूरः शरीफ़ को लिखें और बारिश के पानी से धोकर पेटदर्द के मरीज़ को पिलायें तो सेहत हो। और जिस लड़के के दाँत मुश्किल से निकलते हों उसको पिलायें बहुत आसानी से दाँत निकल आयें। और इस सूरः के पढ़ने की पाबन्दी करने वाले पर मौत के वक़्त की सख़्ती में आसानी हो जाती है, और इस सूरः का आ़मिल जब मर जाता है तो उसकी क़ब्र में एक रोशनी पैदा हो जाती है।

सूरः क़मर की ख़ासियतें:- अगर किसी को हाकिम का ख़ौफ़ पैदा हो, या उससे कोई तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा लगा हुआ हो तो सूरः क़मर को सात बार पढ़े।

सूरः रहमान की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स सूरः रहमान को पढ़ता है गोया वह अल्लाह तआ़ला की तमाम नेमतों का शुक्र अदा करता है। और आँख के दर्द में पढ़कर दम करें तो अल्लाह तआ़ला शिफ़ा बख़्शे। और तिल्ली के मरीज़ पर दम करें तो सेहत हो जाये। और अगर कोई ग्यारह (11) बार पढ़े तो अपने मतलब को पहुँचे।

सूरः वाक़िआ की ख़ासियतें:- 'तब्अ़े ताबिईन' में बाज़ बुज़ुर्गों ने मालदारी हासिल करने के लिए सूरः वाक़िआ का अ़मल इस तरह लिखा है कि जुमा के दिन से सात दिन तक बिना नाग़ा किए हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर जब जुमा की रात आये तो इस सूरः को मग़रिब की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार पढ़े, फिर इशा की नमाज़ के बाद पच्चीस (25) बार हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजे, उसके बाद रोज़ाना सुबह व शाम एक बार नमाज़ के बाद पढ़ा करे तो अल्लाह तआ़ला उसको मालदार कर देगा। या जिस मतलब के वास्ते पढ़ेगा वह मतलब पूरा होगा।

सूरः मुजादला की ख़ासियतें:- अगर किसी क़ौम में झगड़ा फ़साद बरपा हो तो सूरः मुजादला पढ़ें क्योंकि इस सूरः शरीफ़ का पढ़ना आपसी निफ़ाक़ और बुग़्ज़ व कीना को दूर करता है। और दुश्मनों को नीचा करने के लिए भी आज़माई हुई है।

सूरः हश्र की ख़ासियतें:- अगर कोई ज़रूरत सामने हो तो चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ें और हर रक्अ़त में फ़ातिहः (यानी अल्हम्दु) के बाद सूरः हश्र एक बार पढ़ें, फिर सलाम फेरकर जो दुआ़ करें क़बूल होगी।

सूरः जुमा की ख़ासियतें:- जिन मियाँ-बीवी के दरमियान में नाइत्तिफ़ाक़ी हो उनमें से कोई जुमा के दिन इस सूरः शरीफ़ को तीन बार पढ़कर दुआ़ माँगे। उनमें मुहब्बत बढ़ जायेगी और आपस का झगड़ा दूर होगा। और कोई शख़्स अच्छी तरह कलाम न कर सकता हो तो इसका विर्द रखे, उसकी ज़बान दुरुस्त हो जायेगी।

सूरः मुनाफ़िक़ून की ख़ासियतें:- अगर कोई शख़्स किसी चुग़लख़ोर की तरफ़ से तकलीफ़ में हो तो सूरः मुनाफ़िक़ून को एक सौ साठ (160) बार पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके हाल पर रहम करेगा और उस तकलीफ़ से बचालेगा। या उस चुग़लख़ोर की ज़बान को बन्द कर देगा।

सूरः तग़ाबुन की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई सूरः तग़ाबुन को रोज़ाना एक बार पढ़े तो वह आदमी नागहानी और अचानक की मौत से महफ़ूज़ रहे। और अगर कोई शख़्स तीन बार पढ़ा करे तो उसके माल में ख़ैर व बरकत हो।

सूरः मुल्क की ख़ासियतें:- हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन में एक सूरः है जिसमें तीस आयतें हैं। उसने एक शख़्स की शफ़ाअ़त की यहाँ तक कि वह शख़्स बख़्शा गया। और इब्ने हब्बान से रिवायत है कि यह सूरः अपने पढ़ने वाले के लिए इस्तिग़फ़ार करती है यहाँ तक कि वह बख़्शा जाता है। और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यह लफ़्ज़ है कि यह सूरः नजात देने वाली है, क़ब्र के अ़ज़ाब से नजात देती है। मैं चाहता हूँ कि यह सूरः हर मोमिन के दिल में हो। और जो शख़्स इसको इक्तालीस (41) बार पढ़े तो उसकी तमाम मुश्किलें हल हों और वह तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहे। और अगर क़र्ज़दार हो तो उसका क़र्ज़ा उतर जाये।

सूरः मआ़रिज की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सूरः मआ़रिज को पढ़े वह तमाम दिन शैतानी वस्वसों से बचा रहे। और जिस शख़्स को एहतिलाम (स्वपनदोष) कसरत से होता हो वह आठ बार सूरः मआ़रिज को पढ़े, या सोते वक़्त रोज़ाना एक बार पढ़ लिया करे, इन्शा-अल्लाह तआ़ला वह शख़्स महफ़ूज़ रहेगा।

सूरः नूह की ख़ासियतें:- अगर किसी सख़्त दुश्मन से पाला पड़ जाये और उसको दफ़ा करना नामुम्किन

हो तो एक हज़ार बार सूरः नूह पढ़ें या बहुत-से आदमी जिनकी तायदाद ताक़ (यानी बेजोड़ हो.जैसे पाँच, सात, नौ, ग्यारह) हो, एक ही मजलिस में बैठकर ख़त्म करें या दो तीन दिन में ख़त्म करें, दुश्मन हलाक हो जायेगा।

सूरः जिन्न की ख़ासियतें:- अगर किसी शख़्स को आसेब (जिन्न भूत वग़ैरह का असर) हो गया हो तो सूरः जिन्न को सात बार पढ़कर सात दिन तक दम करें, आसेब भाग जायेगा। और जिन्न व परी को क़ब्ज़े में करने के वास्ते सात सौ (**700**) बार पढ़ें, जिन्न क़ाबू में आ जायेगा।

सूरः मुज़्ज़म्मिल की ख़ासियतें:- जो शख़्स रोज़ाना सूरः मुज़्ज़म्मिल को अपना विर्द बनाये तो वह हज़रत नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत पाये और ख़ैर व बरकत का सबब है। अगर इस सूरः को पढ़कर हाकिम के पास जाये तो हाकिम मेहरबान हो जाये। और ज़बान बन्दी और तलवार बन्दी के वास्ते आज़माई हुई है। और अगर लिखकर मरीज़ के गले में लटकाये तो उसको सेहत हो और हर दिन सात बार पढ़े तो रिज़्क़ में फ़राख़ी हो।

सूरः इन्शिराह की ख़ासियतें:- अगर किसी शख़्स के सीने में दर्द हो तो इस सूरः पाक से दम किया हुआ पानी छाती पर मले। और दिल के दर्द के वास्ते अक्सीर है। और अगर कोई काम अनेक कारणों से बन्द हो गया हो तो इस सूरः को बीस (**20**) बार पढ़े, वह काम खुल जायेगा। और जो शख़्स कुछ माल ख़रीदे उसपर पढ़कर दम करे तो बरकत हो।

सूरः क़द्र की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को सुबह व शाम तीन-तीन बार पढ़े तो सब दोस्त व आश्ना उसकी इज़्ज़त करें और बुलन्द रुतबे हासिल करने के लिए हमेशा इसका विर्द रखना अ़जीब व ग़रीब असर रखता है। और चीनी के बरतन पर लिखकर और उसे गुलाब या बारिश के पानी से धोकर मरीज़ को पिलायें तो इन्शा-अल्लाह शिफ़ा हो।

सूरः इख़्लास की ख़ासियतें:- हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स तीन बार सूरः इख़्लास को पढ़े तो उसको एक क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब हासिल होगा और जन्नत उसपर वाजिब हो जाती है। और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "क़ुल् हुवल्लाहु शरीफ़" का पढ़ने वाला अपनी मुरादों को पहुँचेगा चाहे दुनियावी हों या दीनी। और अगर इशा की नमाज़ के बाद खड़े होकर एक सौ एक (**101**) बार पढ़े तो तमाम गुनाह उसके माफ़ किये जायें। और अगर बीमार को लिखकर और धोकर पिलायें तो उसे सेहत हासिल हो। यह हर बला को दूर करने वाली है।

सूरः फ़लक़ की ख़ासियतें:- इस सूरः को हर दिन बिना नाग़ा तिलावत करने वाला हर तरह की आफ़तों से महफ़ूज़ रहता है। और हासिदों और दुश्मनों के शर और बुराई से बचा रहता है। और अगर किसी शख़्स पर सेहर या जादू असर कर गया हो तो इस सूरः को पढ़कर दम करें, और जिसपर जादू का असर हुआ है अगर वह सौ (**100**) बार पढ़े तो उससे छुटकारा पाये, और घोलकर पिये और लिखकर गले में बाँधे।

सूरः नास की ख़ासियतें:- जो शख़्स इस सूरः को अपने ऊपर पढ़कर दम करे उसपर किसी का जादू न चले और हर बला से महफ़ूज़ रहे। और जादू के वास्ते सौ (**100**) बार पढ़ें। और अगर हर रोज़ पढ़ें तो तमाम गुनाह माफ़ किये जाते हैं। और जिस आदमी पर जादू कर दिया गया हो या उसपर किसी जिन्न भूत वग़ैरह का असर हो उसपर दम करें तो उसे नजात हासिल हो।

सूरतों की तरतीब

क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
1	सूरः फ़ातिहः		1	31	सूरः लुक़मान	21	741-747
2	सूरः ब-क़रः	1-2-3	3-87	32	सूरः सज्दा	21	747-753
3	सूरःआलि इमरान	3-4	89-137	33	सूरः अहज़ाब	21-22	753-771
4	सूरः निसा	4-5-6	137-189	34	सूरः सबा	22	771-783
5	सूरः मा-इदः	6-7	191-229	35	सूरः फ़ातिर	22	783-793
6	सूरः अन्आम	7-8	229-269	36	सूरः यासीन	22-23	793-803
7	सूरः आराफ़	8-9	271-317	37	सूरः साफ़्फ़ात	23	803-817
8	सूरः अन्फ़ाल	9-10	317-335	38	सूरः सॉद	23	817-825
9	सूरः तौबा	10-11	335-371	39	सूरः जुमर	23-24	825-841
10	सूरः यूनुस	11	373-397	40	सूरः मुअ्मिन	24	841-859
11	सूरः हूद	11-12	397-423	41	सूरः हा-मीम सज्दा	24-25	859-869
12	सूरः यूसुफ़	12-13	423-445	42	सूरः शूरा	25	871-881
13	सूरः रअ़द	13	447-461	43	सूरः जुख़रुफ़	25	881-893
14	सूरः इब्राहीम	13	461-471	44	सूरः दुख़ान	25	893-897
15	सूरः हिज्र	13-14	471-481	45	सूरः जासियः	25	897-903
16	सूरः नह्ल	14	481-507	46	सूरः अहक़ाफ़	26	905-913
17	सूरः बनी इस्राईल	15	509-529	47	सूरः मुहम्मद	26	913-919
18	सूरः कह्फ़	15-16	529-549	48	सूरः फ़त्ह	26	921-927
19	सूरः मरियम	16	551-563	49	सूरः हुजुरात	26	927-933
20	सूरः तॉ-हा	16	563-579	50	सूरः क़ाफ़	26	933-937
21	सूरः अम्बिया	17	581-597	51	सूरः ज़ारियात	26-27	937-943
22	सूरः हज	17	599-615	52	सूरः तूर	27	943-947
23	सूरः मुअ्मिनून	18	617-631	53	सूरः नज्म	27	947-951
24	सूरः नूर	18	631-649	54	सूरः क़मर	27	951-957
25	सूरः फ़ुरक़ान	18-19	649-661	55	सूरः रहमान	27	957-961
26	सूरः शु-अरा	19	661-679	56	सूरः वाक़िआ	27	963-967
27	सूरः नम्ल	19-20	679-693	57	सूरः हदीद	27	969-975
28	सूरः क़सस्	20	695-715	58	सूरः मुजादला	28	979-985
29	सूरः अ़न्कबूत	20-21	715-729	59	सूरः हश्र	28	985-991
30	सूरः रूम	21	729-741	60	सूरः मुम्तहिना	28	993-997

क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर	क्र. स.	नाम सूरः	पारा नम्बर	पृष्ठ नम्बर
61	सूरः सफ़्फ़	28	997-1001	88	सूरः ग़ाशयः	30	1087-89
62	सूरः जुमुअ़ः	28	1001-03	89	सूरः फ़ज्र	30	1089-91
63	सूरः मुनाफ़िक़ून	28	1003-07	90	सूरः बलद	30	1091-95
64	सूरः तग़ाबुन	28	1007-11	91	सूरः शम्स	30	1095
65	सूरः तलाक़	28	1011-15	92	सूरः लैल	30	1095-97
66	सूरः तहरीम	28	1015-17	93	सूरः जुहा	30	1097
67	सूरः मुल्क	29	1021-25	94	सूरः इन्शिराह	30	1097
68	सूरः क़लम	29	1025-29	95	सूरः तीन	30	1099
69	सूरः हाक़्क़ः	29	1029-33	96	सूरः अ़लक़	30	1099
70	सूरः मआ़रिज	29	1033-37	97	सूरः क़द्र	30	1101
71	सूरः नूह	29	1037-41	98	सूरः बय्यिनः	30	1101
72	सूरः जिन्न	29	1041-49	99	सूरः ज़िल्ज़ाल	30	1103
73	सूरः मुज़्ज़म्मिल	29	1049-51	100	सूरः आ़दियात	30	1103
74	सूरः मुद्दस्सिर	29	1051-55	101	सूरः क़ारिअः	30	1103-05
75	सूरः क़ियामः	29	1055-57	102	सूरः तकासुर	30	1105
76	सूरः दहर	29	1057-61	103	सूरः अ़स्र	30	1105
77	सूरः मुर्सलात	29	1061-63	104	सूरः हु-मज़ः	30	1105-07
78	सूरः नबा	30	1067-69	105	सूरः फ़ील	30	1107
79	सूरः नाज़िआ़त	30	1069-71	106	सूरः कुरैश	30	1107
80	सूरः अ़-ब-स	30	1071-73	107	सूरः माऊ़न	30	1107
81	सूरः तकवीर	30	1075	108	सूरः कौसर	30	1109
82	सूरः इन्फ़ितार	30	1075-77	109	सूरः काफ़िरून	30	1109
83	सूरः ततफ़ीफ़	30	1077-79	110	सूरः नस्र	30	1109
84	सूरः इन्शिक़ाक़	30	1079-83	111	सूरः ल-हब	30	1109-11
85	सूरः बुरूज	30	1083-85	112	सूरः इख़्लास	30	1111
86	सूरः तारिक़	30	1085	113	सूरः फ़लक़	30	1111
87	सूरः अअ़्ला	30	1087	114	सूरः नास	30	1111

नोटः यहाँ सूरतों की तरतीब उसी तरह है जिस तरह कुरआन पाक में है। वैसे हमने सूरतों के साथ उनके नाज़िल होने की तरतीब का नम्बर भी लिखा है, चुनाँचे आप देखेंगे कि हमने हर सूरः के साथ दो नम्बर लिखे हैं जैसेः (2 सूरः ब-क़रः 87---- 96 सूरः अ़लक़ 1) इसका मतलब यह है कि कुरआन पाक में स्थान की हैसियत से सूरः ब-क़रः का नम्बर 2 वाँ और सूरः अ़लक़ का नम्बर 96 वाँ है, और इनके नाज़िल होने के एतिबार से सूरः ब-क़रः का नम्बर 87 वाँ और सूरः अ़लक़ का नम्बर 1 वाँ है। **(मुहम्मद इमरान क़ासमी)**

व क़ालर्-रसूलु या रब्बि

इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुरआ-न मह्जूरा

तर्जुमाः और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवर्दिगार! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।

फ़ायदाः जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ियामत के दिन ख़ुदा से शिकायत करेंगे कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरी क़ौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई सूरतें हैं- इसको न मानना और इसपर ईमान न लाना भी छोड़ देना है, इसमें ग़ौर न करना और सोच समझकर न पढ़ना भी छोड़ देना है, और इसके अवामिर (यानी जिन चीज़ों का हुक्म फ़रमाया गया है) पर अ़मल न करना और मन्हियात (यानी जिन चीज़ों और कामों से रोका गया है उन) से न बचना भी छोड़ देना है। क़ुरआन पाक की परवाह न करके दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नाविलों, शायरी की किताबों, बेमक़सद बातों, खेल-तमाशों, राग-रंग में मसरूफ़ (व्यस्त) होना भी छोड़ देना है।

अफ़सोस है कि आजकल के मुसलमान क़ुरआन की तरफ़ से बहुत ही ग़ाफ़िल हो रहे हैं। इसके पढ़ने, सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला क़ुरआन पाक को छोड़ देना है। ख़ुदा तआ़ला उनको इसकी तरफ़ राग़िब और इसकी तिलावत में मश्ग़ूल होने की तौफ़ीक़ बख़्शे, ताकि वे इसपर अ़मल करें और दोनों जहान की कामयाबी और फ़लाह हासिल हो।